नमो नमो निम्मलदंसणस्स
पूज्य श्रीआनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरूभ्यो नम:

"आवश्यक" निर्युक्ति एवं चूर्णि: [भाग:-१]

[मूलं + भद्रबाहुस्वामी कृत् निर्युक्ति; + भाष्यं + जिनदासगणि रचिता चूर्णि:]

[आद्य संपादक: - पूज्य आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी म. सा.]
(किञ्चित् वैशिष्ठ्यं समर्पितेन सह)

पुन: संकलनकर्ता→ मुनि दीपरत्नसागर (M.Com., M.Ed., Ph.D., श्रुतमहर्षि)

01/02/2017, बुधवार, २०७३ महा शुक्ल ५ jain_e_library's Net Publications

<table>
<tr><td>आगम
(४०)</td><td>“आवश्यक”- मूलसूत्र-१ (निर्युक्ति:+चूर्णि:)
अध्ययनं [-], मूलं [- /गाथा-], निर्युक्ति: [-], भाष्यं [-]</td></tr>
<tr><td>प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]</td><td>मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] “आवश्यक” निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1
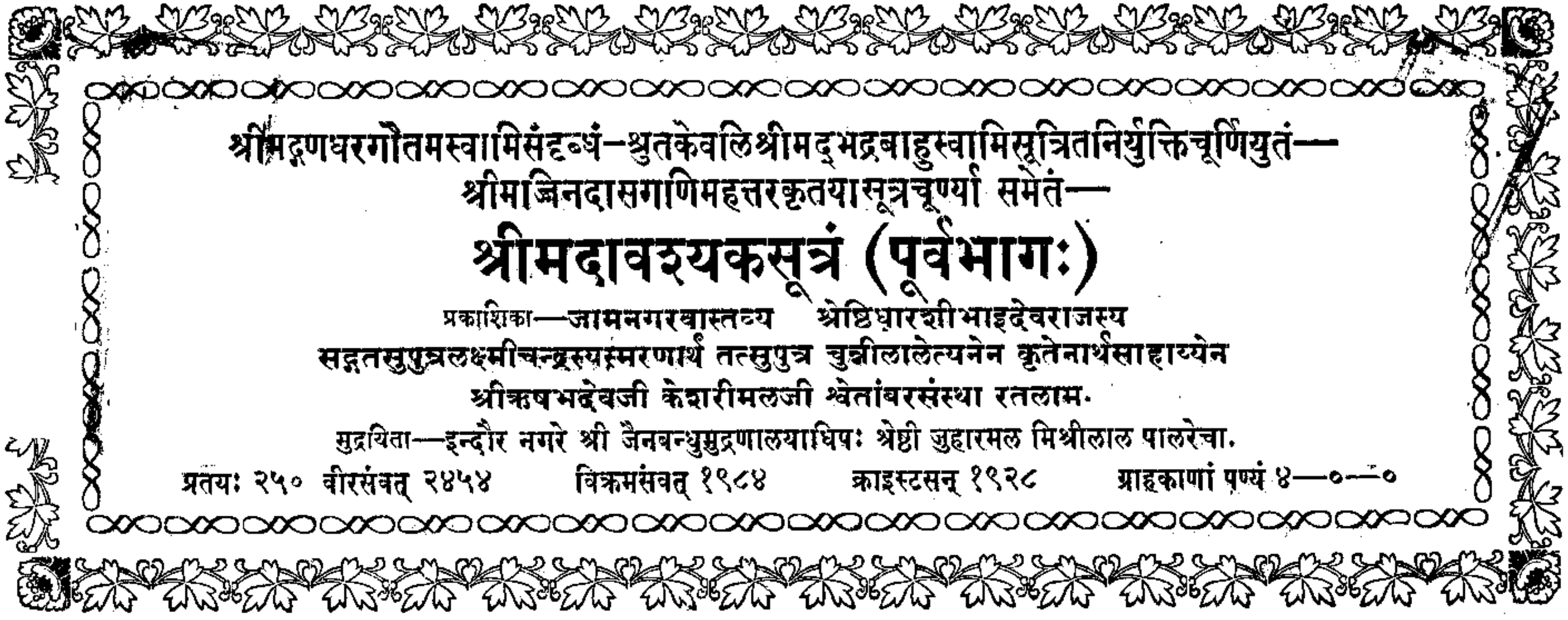
श्रीमद्गणधरगौतमस्वामिसंदृब्धं-श्रुतकेवलिश्रीमद्भद्रबाहुस्वामिसूत्रितनिर्युक्तिचूर्णियुतं—
श्रीमाज्जिनदासगणिमहत्तरकृतया सूत्रचूर्ण्या समेतं—
श्रीमदावश्यकसूत्रं (पूर्वभागः)
प्रकाशिका—जामनगरवास्तव्य श्रेष्ठिधारशीभाइदेवराजस्य
सद्वृत्तसुपुत्रलक्ष्मीचन्द्रस्यस्मरणार्थं तत्सुपुत्र चुन्नीलालेत्यनेन कृतेनार्थसाहाय्येन
श्रीऋषभदेवजी केशरीमलजी श्वेतांबरसंस्था रतलाम.
मुद्रयिता—इन्दौर नगरे श्री जैनबन्धुमुद्रणालयाधिपः श्रेष्ठी जुहारमल मिश्रीलाल पालरेचा.
प्रतयः २५० वीरसंवत् २४५४ विक्रमसंवत् १९८४ क्राइस्टसन् १९२८ ग्राहकाणां पण्यं ४—०—०</td></tr>
<tr><td></td><td>***आवश्यक-चूर्णि: मूल “टाइटल पेज”</td></tr>
</table>

आवश्यक चूर्णे: मूल संपादने लिखित: विषयानुक्रम:

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता...........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

विषयः	पृष्ठ	विषय.	पृष्ठ	विषय.	पृष्ठ	विषय.	पृष्ठ
मतिज्ञानं	१४	अनुयोगनिक्षेपाः	११४	नयाः	३८४	रागद्वेषकषायपरीषहोप	५१९
श्रुतज्ञानं	३१	उपोद्घाते–उद्देशनि	१३१	वज्रस्वाम्यार्यरक्षितौ	३८७	र्गाः सदृष्टान्ताः	---
अवधिज्ञानं	४२	निर्गमे श्रीवीरचरित्रं	१३४	गोष्ठामाहिलश्च	४१७	सिद्धभेदाः बुद्धिभेदाः	५४५
मनःपर्यायः	७५	कराः ऋषभजन्मोत्सव	१४२	निह्नवाः	४२२	समुद्घातादि	५७६
केवलज्ञानं	७८	श्रेयांसः भरतः मरीचि	१७०	नयतः सामायिकं	४३६	आचार्यादयः	५९१
आवश्यकनिक्षेपाः	८४	चक्रिवासुदेवादयः ऋष	२२७	सामायिकस्य भेदाः	४४२	फले दृष्टान्ताः	५९५
उपक्रमादयः	८६	निर्वाणं भवाः दीक्षा-	२७४	स्वामिक्षेत्रादयः	४५२	सूत्रानुगमः	५९८
निर्युक्तौ मंगलं	८९	मह उपसर्गाः	३३१	चोल्लकादयः आलस्याद	४५९	करणपदं	६०१
मृगावतीकथा	९४	समवसरणं	३३५	सामायिकस्य हेतवः	४६०	कृताकृतादयः	६०५
ज्ञानचरणसिद्धिः	१००	गणधराः	३४१	तद्दृष्टान्ताश्च स्थित्यादय	----	भयं सामायिकं सर्वम	६०६
सम्यक्त्वलाभः	१०४	क्षेत्रकालौ	३५७	पर्यायेषु दृष्टान्ताश्च	५१६	प्रत्याख्यानं योगाः(१	६१६
चारित्रभेदाः	१०७	सामाचार्यः	३७२	नमस्कारे–उत्पत्त्यादयः	----	भेदाः)	६२०
उपशमश्रेणिः	११०	आयुर्भेदादि	३७९	सार्थवाहनिर्यामकमहागो		चालनाप्रसिद्धी निन्दा	----
क्षपकश्रेणिः		कारणादयः		पत्वं		इत्यावश्यकचूर्णिपूर्वार्ध	

***चूर्णि के मूल संपादकने ये अनुक्रम बनाया था परंतु यहां दिये गये पृष्ठांको के मुद्रण या प्रूफ़-रीडिंगमे विसंवादिता दिखाई दी।
इसीलिए हमने यहाँ शुद्धिकरण कर के नया बॉक्स बनाकर उसमे सही पृष्ठांक दे दिये है।

मूलाङ्का: ५०+२१	आवश्यक मूल-सूत्रस्य विषयानुक्रम (भाग-१)	दीप-अनुक्रमा: ९२

मूलांक:	अध्ययनं	पृष्ठांक		मूलांक:	अध्ययनं			मूलांक:	अध्ययनं	पृष्ठांक:
				०१-०२	१-सामायिकं	५९७				

आवश्यक सटीकं (संक्षिप्त) विषयानुक्रम

निर्युक्ति / भाष्य	पीठिका →→→	००७	¤	नि./भा.	--उपोद्घात-निर्युक्ति:	पृष्ठांक		नि./भा.	अध्ययनं-१- सामायिकं	पृष्ठांक:
		----	¤	०८१	--वीरआदिजिनवक्तव्यता	१३४		८९०	नमस्कार-व्याख्या	५०९
---	--मंगलं	००९	¤	३४३	--भरतचक्री-कथानकं	१८८		९१९	अर्हत्, सिद्धादे: निर्युक्ति:	५४३
			¤	भा.०३९	--बलदेव-वासुदेव कथानकं	२२२		९६०	सिद्धशिला वर्णनं	५८९
००१	--ज्ञानस्य पञ्चप्रकारा:	०१२	¤	५४३	--समवसरण वक्तव्यता	३३१		९९३	आचार्य-आदीनाम निक्षेपा:	५९१
			¤	५८८	--गणधर वक्तव्यता	३३५				
०१३	--उपक्रम-आदि:	०८१	¤	६६६	--दशधा सामाचारी	३४७		१०१३	सामायिक- व्याख्या,	५९८
			¤	७५४	--निक्षेप, नय, प्रमाणादि	३८३		-----	उद्देश-वाचना-अनुज्ञा आदि:	---
			¤	७७८	--निह्नव वक्तव्यता	४१७		-----	सूत्र स्पर्श भङ्गा:	---
			¤	७८९	--सामायिकस्वरुपम्	४३६		-----	सामायिक-उपसंहार:	---
			¤	८१२	--गति आदि द्वाराणि	४४६				
			¤							
			¤							
			¤							
			¤							
			¤							
			¤							
			¤							

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता...........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

मूलांक:	अध्ययनं	पृष्ठांक		मूलांक:	अध्ययनं	पृष्ठांक		मूलांक:	अध्ययनं	पृष्ठांक:
---	---------------	---		०३-०९	२-चतुर्विंशतिस्तव:	०९८४		१०- --	३-वंदनकं	
११-३६	४-प्रतिक्रमणं	\	¤	३७-६२	५-कायोत्सर्गं	१५२९		६३-९२	६-प्रत्याख्यानं	

आवश्यक सटीकं (संक्षिप्त) विषयानुक्रम

निर्युक्ति / भाष्य	अध्ययनं	पृष्ठांक:	नि./भा.	अध्ययनं	पृष्ठांक:	नि./भा.	अध्ययनं	पृष्ठांक:
				अध्ययनं-४- प्रतिक्रमणं				
	अध्ययनं-२-			नमस्कार व सामायिक-सूत्रं			अध्ययनं-५- कायोत्सर्ग:	
	सूत्रपाठ:, कीर्तनं, प्रतिज्ञा,			चत्वार: लोकोतम-मङ्गल			सूत्रपाठ:, कायोत्सर्गस्थापना	
	--अर्हत: विशेषणं,			एवं --------------शरणभूत			श्रुतस्तव, सिद्धस्तवादि	
	--ऋषभादि नामानि,			संक्षिप्त व ईर्यापथ				
				शयन संबंधी प्रतिक्रमणं				
	अध्ययनं-३- वन्दनं			भिक्षाचर्याया: प्रतिक्रमणं			अध्ययनं-६- प्रत्याख्यानं	
	--गुरुवन्दन सूत्रपाठ:			स्वाध्याय,			सम्यक्त्व एवं श्रावकव्रत-	
	--मितावग्रह प्रवेशयाचना			असंयम आदि ३३-			प्रतिज्ञा	
	--क्षमापना, प्रतिक्रमण-			सूत्रोच्चारणे मिथ्यादुष्कृतम्			विविध प्रत्याख्यानादि:	
				प्रवचनस्तुति, वंदना,				

*** आवश्यक-चूर्णि के इस विषयानुक्रम के पृष्ठांक हमने दुसरे भाग मे दिये है

[आवश्यक-चूर्णि] इस प्रकाशन की विकास-गाथा

यह प्रत सबसे पहले "आवश्यकसूत्र (पूर्वभाग)" के नामसे सन १९ २८ (विक्रम संवत १९ ८४) में रुषभदेवजी केशरमलजी श्वेताम्बर संस्था द्वारा प्रकाशित हुई, इस के संपादक-महोदय थे पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंदसागरसूरीश्वरजी (सागरानंदसूरिजी) महाराज साहेब |

वृत्ति की तरह चूर्णी के भी दुसरे प्रकाशनों की बात सुनी है, जिसमे ऑफसेट-प्रिंट और स्वतंत्र प्रकाशन दोनों की बात सामने आयी है, मगर मैंने अभी तक कोई प्रत देखी नहीं है |

✤ - हमारा ये प्रयास क्यों? - ✤ आगम की सेवा करने के हमें तो बहोत अवसर मिले, ४५-आगम सटीक भी हमने ३० भागोमे १२५०० से ज्यादा पृष्ठोमें प्रकाशित करवाए है, किन्तु लोगो की पूज्य श्री सागरानंदसूरीश्वरजी के प्रति श्रद्धा तथा प्रत स्वरुप प्राचीन प्रथा का आदर देखकर हमने उन सभी प्रतो को स्केन करवाई, उसके बाद एक स्पेशियल फोरमेट बनवाया, जिसके बीचमे पूज्यश्री संपादित प्रत ज्यों की त्यों रख दी, ऊपर शीर्षस्थानमे आगम का नाम, फिर श्रुतस्कंध-अध्ययन-उद्देशक-मूलसूत्र-निर्युक्ति आदि के नंबर लिख दिए, ताकिँ पढ़नेवाले को प्रत्येक पेज पर कौनसा अध्ययन, उद्देशक आदि चल रहे है उसका सरलतासे ज्ञान हो शके, बायीं तरफ आगम का क्रम और इसी प्रत का सूत्रक्रम दिया है, उसके साथ वहाँ 'दीप अनुक्रम' भी दिया है, जिससे हमारे प्राकृत, संस्कृत, हिंदी गुजराती, इंग्लिश आदि सभी आगम प्रकाशनोमें प्रवेश कर शके| हमारे अनुक्रम तो प्रत्येक प्रकाशनोमें एक सामान और क्रमशः आगे बढते हुए ही है, इसीलिए सिर्फ क्रम नंबर दिए है, मगर प्रत में गाथा और सूत्रों के नंबर अलग-अलग होने से हमने जहां सूत्र है वहाँ कौंस [-] दिए है और जहां गाथा है वहाँ ||-|| ऐसी दो लाइन खींची है|

इस आगम चूर्णि के प्रकाशनोमें भी हमने उपरोक्त प्रकाशनवाली पद्धत्ति ही स्वीकार करने का विचार किया था , परंतु चूर्णि और वृत्ति की संकलन पद्धत्ति एक-समान नही है, चूर्णिमे मुख्यतया सूत्रों या गाथाओ के अपूर्ण अंश दे कर ही सूत्रो या गाथाओ को सूचित कर के पूरी चूर्णि तैयार हुई है, कईं निर्युक्तियां और भाष्य दिखाई नही देते, कोइ-कोइ निर्युक्ति या भाष्य के शब्दो के उल्लेख है, उनकी चूर्णि भी है पर उस निर्युक्ति या भाष्य स्पष्टरूप से अलग दिखाई नहि देते | इसीलिए हमें यहाँ सम्पादन पद्धत्ति बदलनी पड़ी है | हमने यहाँ उद्देशक आदि के सूत्रो या गाथाओ का क्रम, [१-१४, १५-२४] इस तरह साथमे दिया है, निर्युक्ति तथा भाष्यो के क्रम भी इसी तरह साथमे दिये है और बायीं तरफ़ उपर आगम-क्रम और नीचे इस चूर्णि के सूत्रक्रम और दीप-अनुक्रम दिए है, जिससे आप हमारे आगम प्रकाशनोंमे प्रवेश कर शकते है|

अभी तो ये jain_e_library.org का 'इंटरनेट पब्लिकेशन' है, क्योंकि विश्वभरमें अनेक लोगो तक पहुँचने का यहीं सरल, सस्ता और आधुनिक रास्ता है, आगे जाकर ईसिको मुद्रण करवाने की हमारी मनीषा है|

......मुनि दीपरत्नसागर.

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता..........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] “आवश्यक” निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णिः-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ

॥ १ ॥

प्रस्तावना

॥ श्रीजिनदासगणिमहत्तरकृता श्रीआवश्यकचूर्णिः ॥

नमो अरहंताणं । नमो सिद्धाणं । नमो आयरिआणं । नमो उवज्झायाणं । नमो लोए सव्वसाहूणं ।

काउण णमोक्कारं तित्थकराणं तिलोकमहिताणं । आयरिउज्झायाणं णमिऊणं सव्वसाहूणं ॥ १ ॥

कोति सुसीसो आयरियकुलवासी जातिकुलरूवसुयायारसत्तविणयसंपण्णो ण दुगुंछिओ अभीरू सत्तिजुओ विणीतो गंभीरो अदीणो ण रूसणो ण कुसीलो ण चवलो ण बहुभासी ण गारविओ ण तुरिओ असंपसारो ण पिसुणो ण परोपतापी ण अत्तट्ठगुरुओ ण मच्छरी ण अकयण्णू ण अहच्छंदो ण मंदो ण संदिद्धवादी ण सढो ण दिण्णकयपसंसी ण दिण्णकयपच्छाणुतावी णातिणिद्दो ण पडिकूलो णालसो ण तण्हालू ण छुहालू ण असंतुट्ठो नादेसकालण्णू ण थद्धो ण लुद्धो णाकालचारी ण मूढो ण णिल्लज्जो ण नाणस्स कारणे विप्पसवति एकाकी ण कंदप्पितो ण कोऊहतो ण मोहरितो ण आयारभावसुतवइतेणो उज्जुभावो विसुद्धसमत्तो दढचरित्तो दढाभिग्गहो सुगुत्तो समिओ समतण्णू दढोग्गहो दढीहो दढावाओ दढधारणो णायरियपरिभासी भत्तिजुत्तो अणुरत्तो अपडिरूवो हितओ अणुलोमो गणसोभी संघसोभी छंदण्णू अवायण्णू सुहदुक्खण्णू अमुई अणुयत्तओ विसेसण्णू उज्जुत्तो अपरितंतो बहुसुतो ण अंतरकहापुच्छी ण समइच्छियपुच्छी ण उड्डियपुच्छी सुहासणविणयपुच्छी मेधावी मितिमं विसुद्धवक्को पियधम्मो दढ- ॥ १ ॥

पंच नमस्कार, चूर्णिकारेण कृतं आद्य मंगलं

प्रत सूत्रांक [-] दीप अनुक्रम [-]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता..........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] “आवश्यक” निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णिः-1

श्री आवश्यक चूर्णौ ॥ २ ॥

प्रस्तावना

धम्मो संविग्गो मद्दवितो अमाई चिरपव्वइतो सुपडिचोइओ अविसाई अपरिस्सावी पच्चतभूतो अणुण्णयमाणो सुत्तत्थभावपरिणामतो एवमाइएहिं गुणेहिं उववेओ बहुपुरिसपरंपरागयं चिरपरूढं जिणिंदवरसासणं काले आवस्सगं सोउकामो कंचि आयरियं आयारकुसलं एवं संजमपवयणसंगहउवग्गहऽणुग्गहकप्पववहारपण्णत्तिदिट्ठिवायससमयपरसमयकुसलं ओयंसिं तेयंसिं वच्चंसिं जसंसिं दुद्धरिसं अलहुगविर्त्ति जितकोहपयारं ४ जितिंदियं जीवियासंसमरणभयविप्पमुक्कं जितपरिसहं पुव्वरयपुव्वकीलियपुव्वसंथवविरहितं णिम्ममं णिरहंकारं अणाणुतावि सक्कारासक्कारलाभालाभसुहदुक्खमाणावमाणसहं अचवलं असबलं असंकिलिट्ठं णिव्वणचरित्तं दसविहआलोयणादोसविहण्णू अट्ठारसआयारट्ठाणजाणगं अट्ठविहालोयणारिहगुणोवएसगं आलोयणारिहं सुतरहस्सं अपरिस्साइं पायच्छित्तकुसलं मग्गामग्गविणायगं उग्गहईहाअपायधारणापवरबुद्धिकुसलं अणुओगजाणयं णयविहिण्णूं आहरणहेउकारणणिदरिसणुवमाणनिरुत्तलद्धट्ठं अट्ठदरिसिं बहुविहओपायायारोवएसगं इंगियायारणेगमभिलसितमूगत्तमणुवइट्ठावाइयसच्छंदविकप्पविहिविहिन्नू लिविगणियसद्दत्थणिमित्तुप्पायपोराणपंडिच्चसहावजाणगं वसुहसमं सीतघरसमाणं पुक्खरपत्तमिव निरुवलेवं वायुमिव अपडिबद्धं पव्वयमिव णिप्पकंपं सागरमिव अक्खोभं कुम्मो इव गुत्तिन्दियं जच्चकणगमिव जाततेयं चंदमिव सोम्मं सूरमिव दित्ततेयं सलिलमिव सव्वजगनिव्वुइकरं गयणमिव अपरिमितणाणं मतिकेतुं सुतकेतुं सुदिट्ठत्थं सुपरिणिट्ठितत्थं एगआयतसुहगवेसगं दुद्दोसजढं तिदंडविरतं तिगारवरहितं तिसल्लनिसल्लं तिगुत्तिगुत्तं तिकरणविसुद्धं चउव्विहविकथाविवज्जितमतिं चउक्कसायविजढं चउविधविसुद्धबुद्धिं चतुव्विधाधारनिरालंबमतिं पंचसमियं पंचमहव्वयधारगं पंचणियंठणिदाणजाणगं पंचविहचरित्तजाणगं पंचलक्खणसंपण्णं छव्विहविकहविवज्जियं छव्विहदव्वविधिवित्थर-

॥ २ ॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ ॥ ३ ॥

आदि मध्यान्त मंगलानि

जाणगं छट्टाणविसुद्धपच्चक्खाणदेसगं छज्जीवकायदयापरं सत्तभयविप्पमुक्कं सत्तविहसंसारजाणगं सत्तविहगोत्तोवदेसगं अट्ठविहमाणमहणं अट्ठविहबाहिरज्झाणजोगरहितं अट्ठविधब्भंतरज्झाणजुत्तं अट्ठविहकम्मगंठिभेदगं णवबंभचेरवावत्तिधातगं दसविहसमणधम्मजाणगं एक्कारसमातियक्खरविहिवियाणगं एक्कारसउवासगपडिमोवएसगं बारसभिक्खुपडिमाफासगं बारसंगतवभावणाभावियमतिं बारसंगसुत्तत्थधारगं एवमादिगुणोववेयस्स णिग्गंथमहरिसिस्स सगलसकम्मं किइकम्मं काऊणं भणति—भगवं ! बहुपुरिसपरंपरागतं संसारणित्थरणोपायं आवस्सयाणुओगं सोतुमिच्छामि, तस्सायरिओ गुणमाहप्पं णच्चा आवस्सयाणुओगं परिकहेति। तत्थ आवस्सगं छव्विहं, तंजहा-सामाइयं चउवीसत्थओ वंदणं पडिक्कमणं काउस्सग्गो पच्चक्खाणमिति। एसा पुव्वायरिएहिं रइया पुव्वाणुपुव्वी इति।

तस्स य पुव्वामेव मंगलमिच्छावेति, जम्हा 'मंगलाईणि सत्थाणि मंगलमज्झाणि मंगलावसाणाणि, मंगलपरिग्गहिया सिस्सा उग्गहेहावायधारणासमत्था य अविग्घेणं सत्थस्स पारगा भवंति, ताणि य सत्थाणि लोए विरायंति, वित्थारं च गच्छन्ति,' एतेण कारणेणं आदिमि मज्झंमि अवसाणे य मंगलं कीरइत्ति। तत्थ आइमंगलेण सीसा अविग्घेण तस्स सत्थस्स पारगा भवंति, मज्झमंगलेण पउत्तेण तं सत्थं थिरपरिचितं भवति, अवसाणमंगलेण तं सत्थं सिस्सपसिस्साणं अव्वोच्छित्तिकरं भवति, अतो मंगलतियमिच्छिज्जति, तत्थ आदिमंगलं सामाइयज्झयणं, कम्हा ?, जम्हा तंसि सामाइयज्झयणे तित्थकरगणहरउप्पत्तिमाइणो बहवे अत्था परूविया, ते य जो सद्दहति, सद्दहित्ता य जो करणिज्जे करेति अकरणिज्जे य परिहरति सो तं सव्वमंगलनिहाणं निव्वाणं पाविहितित्तिकाऊण सामाइयज्झयणं मंगलं भवति। सुत्ततोऽवि मंगलं 'करेमि भंते ! सामाइय'न्ति, कहं ?, जम्हा

॥ ३ ॥

***आदि-मध्य-अंत्य मंगलानां स्पष्टिकरणं

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

आदि-मध्यान्त मंगलानि

तत्थ सव्वसत्तेसु समता कायव्वत्ति एतं पइण्णमारूहति साधू, अतो तमवि सामाइयसुत्तं व मंगलं चेव, जो य समभावो सो कहं सव्वमंगलनिधाणं ण भविस्सति ?, तम्हा करेमि भंते ! सामाइयंति एयमादिसुत्तं मंगलं चेव। मज्झेऽवि मंगलं वंदणज्झयणं, कहं ?, जम्हा वंदमाणस्स णीयागोयकम्मक्खओ भवति, विनयमूलो जिणसासणे धम्मो परूविओ, अओ वंदणज्झयणं मज्झे मंगलं भवति, सुत्तौवि 'इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं' ति एसो सद्दो मंगलिओ दट्ठव्वो, अहवा मज्झे मंगलं चउवीसत्थयादि, कहं ?, जम्हा तित्थगरत्थयादि परूविज्जति, तेण य सम्मइत्ताइसुद्धी जायतित्ति, दरिसणादिविसुद्धो य जीवो सव्वप्पवरमंगलणिधाणो भवइ। अवसाणेऽवि पच्चक्खाणज्झयणं मंगलं, कम्हा ?, जम्हा संवरियासवदुवारस्स णवस्स पावस्स आगमो ण भवति, ततो पुव्वसंचितं लहुं चेव बारसविधेण तवसा झोसिज्जति, अतो पच्चक्खाणज्झयणं मंगलं, सुत्ततोऽवि 'नमोक्कारसहियं पच्चक्खामि'-त्ति, एवमाई अवसाणियं मंगलं भवति।

आह-जति आदी मज्झं अवसाणं च इमस्स सत्थस्स मंगलं तो जाणि पुण इमस्स अंतरालाणि ताणि किं अमंगलियाणि भवंतु ?, आयरितो आह-ताणिवि मंगालियाणि, कहं ?, जम्हा ताणिवि परूवणालक्खणाणि सव्वण्णुभासियाणि य, अतो ताणिवि मंगलियाणि भवंति, एत्थ दिट्ठंतो मोयगो- जहा अविरोधिदव्वाणं समवाएण मोदगो णिप्फण्णो सव्वो चेव मधुरो भवति, एवं ताणिवि अंतरालाणि सुयणाणाइसामत्थजुत्ताणि चेव काऊणं मंगलियाणि दट्ठव्वाणि। ॥ ४ ॥

तं च मंगलं ४, तंजहा-णाममंगलं ठवणामंगलं दव्वमंगलं भावमंगलमिति, तत्थ णाममंगलं जस्स णं जीवस्स वा अजीवस्स वा जीवाण वा अजीवाण वा तदुभयस्स वा तदुभयाण वा मंगलंति णामं कीरइ से तं णाममंगलं, तत्थ जीवस्स जधा कस्सति मणूसस्स मंग-

मंगलस्य नाम-आदि निक्षेपाः

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ

॥ ५ ॥

नामादि-मंगलानि

लोत्ति णामं कीरइ, अथवा अग्गिस्स मंगलोत्ति णामं केसुवि देसेसु भवति, अजीवस्स जहा-वेणुपव्वमज्झस्स देसाविक्खाए, तदुभयस्स जहा तस्सेव मणूसस्स मुंजेसीयदलमज्झसाहियस्स, अहवा तस्स अग्गिणो वेणुपव्वमज्झसहियस्स, एवं पुहुत्तेऽवि विभासा १। इयाणिं ठवणामंगलं, तं च दुविहं, तं०-सब्भावतो असब्भावतो य, तत्थ सब्भावओ जथा-चित्तकम्मादिसु अरहंतसाधुणाणमादिणो ठाविता ते ठवणामंगलं भवंति, असब्भावओ. जथा-अक्खमादि णिवेसिज्जंति, इंदलट्ठीवि इंदंमि णिवेसिज्जइ, एवमादि। आह- णामठवणाणं को पइविसेसो ?, उच्यते, णामं पायसो आवकथितं, ठवणा इत्तिरिया वा होज्जा आवकहिया वा, तत्थ इत्तिरिया जथा-अक्खो इंदो वा सरतकालभूसितो, एवमादि, आवकहिता जथा जे देवलोकादिसु घडसुत्थियादिणो चित्तकम्मलिहिया, अहवा इमो विसेसो-जहा ठवणाइंदो अणुग्गहत्थीहिं अभिथुव्वाति ण एवं णामिंदोत्ति २।

दव्वमंगलं दुविहं-आगमतो णोआगमतो य, तत्थ आगमतो जाणए अणुवउत्ते, णोआगमतो पुण तिविहं, तंजहा-जाणगसरीरदव्वमंगलं भवियसरीर० तव्वतिरित्त०, तत्थ जाणगसरीरं जो जीवो मंगलपदत्थाधिकारजाणओ तस्स जं सरीरं ववगयजीवं, पुव्वभावपण्णवणं पडुच्च, जहा-अयं घयकुंभे आसी, अयं महुकुंभे भविस्सति, एवं भवियसरीरविभासा कायव्वा, तव्वतिरित्तं जहा-सोत्थियसिरिवच्छादिणो अट्ठमंगलया सुवण्णदधिअक्खयमादीणि य भावमंगलनिमित्ताणित्ति दव्वमंगलं ३।

भावमंगलंपि दुविहं, तं०-आगमतो णोआगमतो य, तत्थ आगमतो जहा जाणए उवउत्ते, णोआगमतो पसत्थो आयपरिणामो जह णाणादि, अहवा 'वंदे उसभं अजितं संभवं' एवमादि जे यावण्णे भगवंते, अहवा 'जयइ जगजीवजोणीवियाणओ' इत्यादि, अहवा 'सुधम्मं अग्गिवेसाणं' एवमादि जाव अप्पणो आयरियत्ति, अहवा पंचनमुक्कारो, अहवा जावतिया थया थुतीतो

॥ ५ ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता..........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] “आवश्यक” निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

॥ ६ ॥

य, अहवा भावनंदी, सव्वं तं नोआगमतो भावमंगलंति ॥ एत्थ चोअओ चोअयइ, जहा-अहो भगवं ! तुब्भेहिं अतिसुद्धं भासितंति, कहं णाम जो जस्स उवओगो सो सो चेव भविस्सइ ?, णो य खलु अग्गिंमि उवउत्तो देवदत्तो अग्गी चेव भवति, आयरिओ भणति-अहो वच्छ ! तुमं चेव अतिसुद्धाणि वयणाणि उल्लावयसि, णणु णाणंति वा संवेदणंति वा अहिगमोत्ति वा वेयणित्ति वा भावोत्ति वा एगट्ठा, जीवलक्खणं च णाणं, ण उ णाणाओ वतिरित्तो आया, जदि य चेयणातो जीवो अण्णो भवेज्ज ततो जीवदव्वं अलक्खणं चेव भविज्ज, ण वा बंधो मोक्खो वा अचेयणस्स जुत्तो, तेण जो सो णाता सो जं तं अग्गिस्स सामत्थं दहणपयणपगासणादि तं जाणति, तओ अग्गिणाणाओ सो णाता अवतिरित्तो, तेण सो अग्गिसामत्थजाणओ भावग्गी चेव लब्भति, जम्हा य उप्पायट्ठितिभंगजुत्तो आता अओ जम्मि उवउत्तो सो सो चेव भण्णइ ॥ आह-दव्वभावमंगलाणं को पइविसेसो ?, भण्णइ, दव्वमंगलं अणेगंतियं अणच्चंतियं च भवति, तत्थ अणेगंतियं णाम जं किं (केसिं) चि तारिसं मंगलं भवति तं चेव अण्णेसिं न भवइ, अमंगलं वा भवइ, अणच्चंतियं णाम जं पडिहणिज्जति, भावमंगलं पुण एगंतियं अच्चंतियं च भवति, इमं पुण सत्थजायं भावमंगलं समोयरइ-जओ भावणंदीए अंतग्गतं, कहं एवं ?, णंदी चतुव्विधा, तं०-णामनंदी ठवणानंदी दव्वनंदी भावनंदी, णामठवणाओ परूवियव्वाओ, दव्वणंदी दुविहा तिविहा य, केवलं तव्वइरित्ता संखबारसंगाणि तूराणि, भावणंदी दुविहा-आगमओ जाणए उवउत्ते, णोआगमओ पुण पंचाविधं णाणं, तंजहा—

आभिणिबोहियनाणं० ॥ १ ॥ एतं पंचविधमवि णाणं समासओ दुविहं-पच्चक्खं च परोक्खं च, पच्चक्खं ताव अच्छतु, परोक्खं पुण अप्पतरंगतिकाऊण पुव्वं वण्णिज्जइ ॥ आह-कः अनयोर्विशेषः ?, उच्यते, अक्खो-जीवो तस्स जं ॥ ६ ॥

‘नन्दी’ चतुर्विध-भेदे, ज्ञानस्य द्वि-भेदा: (प्रत्यक्षं-परोक्षं च)

प्रत सूत्रांक [-] दीप अनुक्रम [-]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता...........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णिः-1

श्री आवश्यक चूर्णौ ज्ञानानि ॥ ७ ॥

प्रत्यक्ष परोक्षे

परतो तं परोक्खं, जं णो विणा इंदिएहिं जाणतित्ति वुत्तं भवति, जं सयं चेव जीवो इंदिएण विणा जाणति तं पच्चक्खं भण्णति, लोइआणं पुण अक्खाणि इंदियाणि भण्णति, तासिं परतो परोक्खं, जं पुण तेहिं उवलब्भति तं पच्चक्खं, तं च ण युज्जते, जेण इंदियाणि रूवाईणं विसयाणं अगाहगाणि, जीवो च्चेव चक्खुमादिएहिं रूवाईणं विसयसत्थाणं गाहतो, कहं?, जम्हा जीवोवओग-विरहियाणि इंदियाणि णो उवलभंति, अओ जं इंदिएहिं उवलब्भति तं णाणं लिंगितं,लिंगियंति वा चिंधणिप्फण्णंति वा करणनि-प्फण्णंति वा परनिमित्तणिप्फण्णंति वा एगट्ठं, एस विसेसो।

तं च परोक्खं दुविहं- तं०-आभिणिबोहियणाणं सुयणाणं च, जत्थ आभिणिबोहितं तत्थ सुयणाणं, जत्थ सुतं तत्थ आभिणि-बोहियं, कहं ?, जंमि चेव पुरिसे आभिणिबोहियं तंमि चेव पुरिसे सुतमवि अत्थि, जंमि सुतं तंमि आभिणिबोहियतं अत्थि चेव, एवं एयाइं दोऽवि अण्णमण्णमणुगयाइं तहाऽवऽत्थ आयरिया एतेण कारणेणं तेसिं णाणत्तं पण्णवयंति, तं०-अभिणिबुज्झतीति आभिणिबोहिअं, सुणेतीति सुतं, अविसेसिया मती, विसेसिया सम्मदिट्ठिस्स मती आभिणिबोहियणाणं, मिच्छदिट्ठिस्स मती माति-अण्णाणं, अविसेसितं सुतं, विसेसितं सम्मदिट्ठिस्स सुयं सुत्तनाणं, मिच्छदिट्ठिस्स सुतं सुयअण्णाणं। एत्थ सीसो आह- भगवं! किं भणितं होति अभिणिबुज्झतीति आभिणिबोहियं सुणेतीति सुतं ?, आयरिओ आह-जमत्थं ऊहिऊण णो निद्दिसति तं आभिणि-बोहियणाणं भण्णति, एत्थ निदरिसणं, जहा- कस्सइ मंदपगासाए रयणीए पुरिसप्पमाणमेत्तं खाणुं दट्ठूण चिंता समुप्पज्जति-'किं पुण एस पुरिसो भविज्ज उदाहु खाणुत्ति ?, ततो तं खाणुं वल्लीविणद्धं दट्ठूण पक्खिं वा तहिं णिलीणं पासिऊणं आभिणि-बोधो भवति जहा एतं खाणुत्ति, तं च जइ अभिमुहमत्थं जाणति णो विवरीयं ततो आभिणिबोहियं भवति। अभिमुहम-

॥ ७ ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता...........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ ज्ञानानि ॥ ८ ॥

त्थं णाम जो खाणुं खाणुं चेव अभिणिबुज्झति, ण पुण खाणुं पुरिसं मण्णति, एयं अभिमुहमत्थं भण्णात्ति, जं च अभिमुहमत्थं तं आभिणिबोहियं, णो विवरीयंति । जो पुण अत्थं ऊहिऊण निद्दिसइ तं सुयणाणं भण्णइ, जम्हा सुयणाणेऽवि ऊहा अत्थि ततो सुतणाणं आभिणिबोहितणाणसहितं चेव दट्ठव्वान्ति १ ॥ अहवा आभिणिबोहियणाणसुतणाणाणं इमो विसेसो, तं०-आभिणिबोहियणाणं ताव मतिविसयं परिणायव्वंति, सुयणाणं पुण मइपुव्वगं चेव दुभेयं दट्ठव्वंति, तं०-अंगपविट्ठं अंगबाहिरं च, तत्थ जं तं अंगबाहिरं तं अणेगभेयं, आवस्सयं दसवेयालियं उत्तरज्झयणाइं दसाओ कप्पो एवमादि, तत्थ जं तं अंगपविट्ठं तं दुवालसविहं, तंजहा- आयारो जाव दिट्ठिवादो । आह-भगवं ! तुल्ले चेव सव्वण्णुमते को विसेसो जहा इमं अंगपविट्ठं इमं अंगबाहिरन्ति ?, आयरिओ आह- जे अरहंतेहिं भगवंतेहिं अईयाणागयवट्टमाणदव्वखेत्तकालभावजथावत्थितदंसीहिं अत्था परूविया ते गणहरेहिं परमबुद्धिसन्निवायगुणसंपण्णेहिं सयं चेव तित्थगरसगासाओ उवलभिऊणं सव्वसत्ताणं हितट्ठयाय सुतत्तेण उवणिबद्धा तं अंगपविट्ठं, आयाराइ दुवालसविहं । जं पुण अण्णेहिं विसुद्धागमबुद्धिजुत्तेहिं थेरेहिं अप्पाउयाणं मणुयाणं अप्पबुद्धिसत्तीणं च दुग्गाहं तिणाऊण तं चेव आयाराइ सुयणाणं परंपरागतं अत्थतो गंथतो य अतिबहुंतिकाऊण अणुकंपाणिमित्तं दसवेतालियमादि परूवियं तं अणेगभेदं अणंगपविट्ठं, जम्हा य सुयणाणस्सवि अत्थो अणूहितो णो णज्जइ अओ मतिपुव्वगं सुयणाणं भण्णतित्ति २ ।

मतिश्रुत-योर्नानात्वं

अहवा आभिणिबोहियसुतणाणाणं इमो विसेसो तंजहा-'सोइंदिओवलद्धी भवति सुतं, सेसयं तु मतिणाणं । मोत्तूणं दव्वसुतं अक्खरलंभो य सेसेसु ॥ १ ॥ जे सोइंदिएवि अत्था उवलब्भंति तं सुतं, सेसेसु पुण चक्खुमादीहिं जे अत्था उवलब्भंति तं मतिणाणं भण्णति, जा य सा सोइंदिओवलद्धी तत्थ दव्वसुतं मोत्तूण मतिसहितं सुयणाणं भण्णति, दव्वसुयं णाम जं भावसुय-

॥ ८ ॥

'आभिणिबोहिय(मति)'ज्ञानस्य स्वरुपादि वर्णनं आरभ्यते

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ ज्ञानानि ॥ ९ ॥

आभिनिबोधिक-श्रुतयोर्विशेषः

निबंधणभूतं तं दव्वसुयं भण्णति, जेऽविय सेसेहिं चक्खुमाईहिं इंदिएहिं अत्था उवलब्भंति तत्थवि भयणाए मतिणाणं भवति, कहं ?, जे चक्खुमाईहिं अत्थे उवलहिऊण अक्खरलद्धीए भासति तं सुतं मतिसहितं भण्णति, जाव ण भासइ ताव मइणाणं चेव भण्णइ ३

अहवा 'बुद्धीदिट्ठे अत्थे ज भासत्ति तं सुतं मतीसहियं। इयरत्थवि होज्ज सुतं उवलद्धिसमं जदि भणिज्जा ॥ २ ॥ जे बुद्धीए दिट्ठे अत्थे भासति तं सुतं मतिसहितं भण्णति, मतिसहितं नाम मतिसहितंतिवा मतिअणुगयंति वा एगट्ठा, 'इयरत्थवि' आहिणिबोहियणाणे सुतं हविज्जा जदि उवलद्धिमेत्तमेव अत्थं भासेज्जा, अहवा उवलद्धिसमं णाम जे उवलद्धा अत्था ते जति सक्केज्जा भासेउं तं सुतं भवति। आह- उवलद्धावि अत्था किं न सक्कंति भासितुंति ?, उच्यते, आमं, 'पण्णवणिज्जा भावा अणन्तभागो उ अणभिलप्पाणं। पण्णवणिज्जाणं पुण, अणंतभागो सुयणिबद्धो ॥ ३ ॥ जे पण्णवणिज्जा भावा ते अणभिलप्पाणं भावाणं अणंतभागो, तेसिं पुण पण्णवणिज्जाणं भावाणं अणंतइमो भागो सुयनिबद्धो, कहं ?- जं चोद्दसपुव्वधरा छट्ठाणगया परोप्परं होंति। तेण उ अणंतभागो पण्णवणिज्जाण जं सुत्तं ॥ १ ॥ अक्खरलंभेण समा ऊणहिता होंति मइविसेसेणं। तेऽवि य हु मतिविसेसे, सुअणाणब्भंतरे जाण ॥ ५ ॥ दोऽवि एयाओ गाथाओ कंठाओ ४।

अहवा इमो विसेसो फुडो चेव- जे अभिनिबुद्धे अत्थे ण ताव भासति तं आभिणिबोहियनाणं भण्णति, तं चेव भासिउं पवत्तो ततो सुयणाणं भवति, एत्थ सुंबवलगदिट्ठंतो, जारिसगा वलगा तारिसं आभिणिबोहितं, जारिसयं सुंबं तारिसं सुतं, एवं जाव परिण्णाता अत्था ण भासति ताव आभिणिबोहियं भण्णति, जाहे भासिउं पवत्तो ताहे सुतं भण्णति ५। ॥ ९ ॥

अहवा अणक्खरं आभिणिबोहितं, सुयं अक्खरं वा होज्ज अणक्खरं वा, एस विसेसो ६।

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

मतिश्रुत-विशेषः श्रुतनिश्रित मतिश्च

अथवा आभिणिबोहियं अत्ताणं चेव एक्कं पगासेति, सुतणाणं पुण अत्ताणं परं च दोऽवि पगासेति, पगासेतित्ति वा बुज्झावेति वा पच्चाणेतित्ति वा एगत्था, एत्थ दिंडुतो- मूका अमूका, जहा मूको अत्ताणं चेव एगं पगासेति, अमूको पुण अत्ताणं परं च दोऽवि पगासेति, एवं आभिणिबोहियणाणं मूकसरिसं दट्ठव्वं, सुयणाणं पुण अमूकसरिसंति ७।

भणितो आभिणिबोहियणाणसुतणाणविसेसो, इयाणिं एतेसिं चेव दोण्हवि परूवणा भाणियव्वा। तत्थ पढमं ताव आभिणिबोहियणाणस्स परूवणं काहामि, जम्हा सुत्ते एतस्स चेव पढममुच्चारणं कतं, तं च दुविधं- सुयणिस्सितं असुतनिस्सितं च, तत्थ जं तं असुतनिस्सियं तं चउव्विहं- तंजहा-उप्पत्तिया १ वेणइया २ कम्मया ३ पारिणामिया ४, एसा चउव्विहा बुद्धी उवरि णमोक्कारनिज्जुत्तीए भण्णिहिति, इह गंथलाघवत्थं ण भण्णति। तत्थ जं तं सुयणिस्सितं तस्सिमा परूवणगाथा-

उग्गह ईहाऽवाओ य० ॥ २ ॥ सुतनिस्सितं आभिणिबोहियणाणं चउव्विहं भवति, तंजहा- उग्गहो ईहा अवाओ धारणा, एयाणि उग्गहाईणि चत्तारि आभिणिबोहियणाणस्स भेदवत्थूणि समासेण दट्ठव्वाणीति। तत्थ भेदो णाम भेउत्ति वा विकप्पोत्ति वा पगारोत्ति वा एगट्ठा, वत्थुणाम मूलदारभेदोत्ति वुत्तं भवति, समासो णाम संखेवो ॥ २ ॥ इदाणिं एतेसिं चेव उग्गहाईणं चउण्हं दाराणं विभागं भणामि-

अत्थाणं उग्गहंमी० ॥ ३ ॥ तत्थ अत्था सुत्ता असुत्ता पयत्था भण्णंति, एतेसिं जं ओगिण्हणं तंमि उग्गहो, वियालणा पुण ईहा, तत्थ वियालणंति वा मग्गणंति वा ईहणंति वा एगट्ठं, अवादो ववसाओ भण्णति, तत्थ ववसातो णाम ववसाउत्ति वा णिच्छयत्थपडिवत्तित्ति वा अवबोहोत्ति वा एगट्ठा, धारणा णाम धरणंति वुत्तं भवति, धारणं णाम जो उग्गहादीहिं जाणितो ॥ १० ॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ ज्ञानानि

॥ ११ ॥

अत्थो तं चेव अण्णंमि काले पुणोऽवि संभरति, तत्थ जो सो उग्गहो तं अत्थालोयणं भण्णति, अत्थालोयणं णाम जं अत्थस्स सामण्णेण गहणं, सो य उग्गहो दुविहो—अत्थोग्गहो वंजणोग्गहो य, तत्थ अत्थोग्गहो छव्विहो, तंजहा-सोइंदियअत्थोग्गहो चक्खुइंदियअत्थोग्गहो घाणिंदियअत्थो० जिब्भिंदियअत्थो० फासेंदियअत्थो० णोइंदियअत्थो०, वंजणोग्गहो पुण चउव्विहो, तंजहा-सोइंदियवंजणोग्गहो घाणिंदिय० जिब्भिंदिय० फासिंदिय० । ईहाअवायधारणाओऽवि एवं चेव छव्विहाओ, चउव्विहाओ ण भाणियव्वाओ ॥ ३ ॥ इयाणिं एतेसिं उग्गहाईणं चउण्हं दाराणं वित्थरतरएण कालस्स परूवणत्थं इमं गाहासुत्तं भण्णइ, तंजहा—

उग्गह एक्कं समयं० ॥ ४ ॥ एत्थ पुव्वं ता उग्गहस्स परूवणं करिस्सामि दोहिं दिट्ठंतेहिं, तंजहा- पडिबोहगदिट्ठंतेणं मल्लगदिट्ठंतेण य । से किं तं पडिबोहगदिट्ठंतेणं?, २ से जहा नामए केइ पुरिसे सुत्तं पुरिसं पडिबोहिज्जा ‘अमुया अमुय’त्ति, तत्थ चोदए पण्णवयं एवं वयासी–किं एगसमयपविट्ठा पोग्गला गहणमागच्छंति दुसमय० तिसमय० जाव दससमय० संखेज्जसमय० असंखेज्जसमयपविट्ठा पोग्गला गहणमागच्छंति?, एवं वदंतं चोदयं पण्णवए एवं वयासी-णो एगसमयपविट्ठा पोग्गला गहणमागच्छंति जाव णो संखेज्जसमयपविट्ठा०, असंखेज्जसमयपविट्ठा पोग्गला गहणमागच्छंति, जहा को दिट्ठंतो?, से जहा णाम एकेइ पुरिसे आवागसीसाओ मल्लगं गहाय तत्थ एगं उदयबिंदुं पक्खिविज्जा, से णट्ठे, णट्ठित्ति वा विगएत्ति वा अतथाभूएत्ति वा एगट्ठा, अण्णं पक्खिवेज्जा, सेवि णट्ठे, अण्णंपि, सेवि णट्ठे, एवं पक्खिप्पमाणेहिं २ होहिति से उदगबिंदू जेणं तं मल्लगं रावेहिति, होहिति से उदगबिंदू जे मल्लगं पवाहेहित्ति, एवामेव कलंबुयापुप्फसंठियं सोइंदियं तं जाहे अणंतेहिं पोग्गलेहिं पूरितं भवति ताहे हुंति करेइ, ण पुण जाणति केवि एस सद्दाति, एस एगसमइओ सोइंदियओग्गहो भण्णइ, ततो अंतोमुहुत्तियं ईहं पविसइ, जहा

अवग्रहाद्या मतिभेदाः

॥ ११ ॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ ज्ञानानि ॥ १२ ॥

प्रतिबोधक-मल्लक-दृष्टान्तौ

केस णं पुण एस सद्दे भवेज्जात्ति ?, ततो अंतोमुहुत्तियं अवायं गच्छइ, ततो से उवगयं भवइ, ततो धारणं पडइ, ततो धारेति संखेज्जं वा असंखेज्जं वा कालं, संखेज्जवासाउए संखेज्जं कालं असंखेज्जवासाउए असंखेज्जं कालं धरेइ, एसो सोइंदियवुग्गहो। एत्थ सीसो चोदेति, जहा-हेट्ठा सोइंदियउग्गहो दुविहो भणितो, तंजहा- अत्थोवग्गहो वंजणवग्गहो य, ण पुण एएसिं विसेसो भणितोत्ति, आयरिओ आह- जो कलंबुयापुप्फसंठियस्स सोइंदियस्स सद्दपोग्गलेहिं सह संजोगो एस सोइंदियवंजणग्गहो, अत्थोग्गहो पुण जो सो सद्दो तेण कलंबुयापुप्फागितिणा इंदियएणं जीवस्स उवणीओ, तस्स अत्थस्स जं सामण्णगहणं एस सोइंदियअत्थोग्गहो भण्णइ, अत्थोग्गहस्स ईहाअवायधारणातो अत्थि, वंजणोग्गहस्स पुण अवग्गहणमेत्तमेव, ण तु ईहाअवायधारणाओ तंमि अत्थित्ति।

इदाणिं चक्खिदियस्स उग्गहादीणं परूवणा भण्णति, से जहा णामए केइ पुरिसे चक्खिदिएण मसूरगचंदगसंठाणसंठिएणं अव्वत्तं रूवं पासिज्जा, णो चेव णं जाणति-किं खाणुं पुरिसोत्ति, एस एकसमतितो चक्खिदियउग्गहो, ततो अंतोमुहुत्तियं ईहं पविसति, जहा-'किं पुण एतं खाणुं होज्ज? उदाहु पुरिसोत्ति', ततो सो अंतोमुहुत्तियं अवायं गच्छति, ततो से अवगयं भवति जहा-खाणुमेयं, णो पुरिसोत्ति', ततो धारणं पडति, ततो धरेति संखेज्जं असंखेज्जं वा कालं, संखेज्जवासाउए संखिज्जं कालं, असंखेज्जवासाउए असंखेज्ज कालं, एस चक्खिदियअत्थोग्गहो, एयस्स पुण चक्खिदियस्स वंजणोग्गहो णत्थित्ति ।

इदाणिं घाणिंदियस्स उग्गहादीणि परूवेयव्वाणि, से जहा णामए कोइ पुरिसे घाणिंदिएणं अतिमुत्तगपुप्फचंदगसंठाणसंठिएणं अव्वत्तं गंधं आघाएज्ज, ण पुण जाणइ कस्सेस गंधोत्ति, 'किं उप्पलस्स? उदाहु अन्नस्स कस्सइ दव्वस्स ?' स इक्कसमइतो घाणिंदियउग्गहो, एवं तेणेव कमेण जहा सोइंदियस्स, णवरं घाणाभिलावो भाणियव्वो, अत्थोग्गहवंजणोग्गहविसेसोऽवि तहेव । ॥ १२ ॥

श्री आवश्यक चूर्णौ ज्ञानानि ॥ १३ ॥

अवग्रहादीनां क्रमः प्राप्ताप्राप्त-विषयता

इयाणिं जिब्भिदियस्स उग्गहेहादीण परूवणा, से जहा णामए केइ पुरिसे खुरुप्पसंठाणसंठिएणं जिब्भिदिएणं अव्वत्तं रसमासाएज्जा, ण पुण जाणइ-किमेस खीररसो? उदाहु अन्नस्स कस्सति दव्वस्सत्ति, सेसं जहा सोइंदियस्स तहेव अहीणमइरित्तं भाणियव्वं।

इदाणिं फासिंदियस्स, से जहा णामए केइ पुरिसे अणित्थंत्थसंठाणसंठिएणं फासिंदिएण अव्वत्तं फासं वेदिज्जा, ण पुण जाणइ-किमेस सप्पस्स फरिसो? उदाहु उप्पलणालस्सत्ति, सेसं जहा सोइंदियस्स।

इयाणिं णोइंदियस्स, से जहा णामए केइ पुरिसे अव्वत्तं सुमिणं पासेज्जा, ण पुण जाणति—किंपि मए दिट्ठंति, ततो अंतोमुहुत्तियं ईहं पविसति, ततो जाणति अंतोमुहुत्तेण जहा देवे मए दिट्ठोत्ति, ततो अवातो, ततो धारणं पडइ, ततो धरेति संखिज्जं असंखेज्जं वा कालं, संखेज्जवासाउए संखेज्जं कालं, असंखे० असंखे०, एस णोइंदियस्स अत्थोग्गहो। एयस्सऽवि वंजणोग्गहो णत्थित्ति।

एत्थ सीसो आह-णो एस सव्वत्थ तरतमजोगो विज्जए, जहा पुव्विं उग्गहो ततो ईहा ततो अवाओ ततो धारणं, आयरिओ आह-कहं ?, सीसो आह-जहा कोइ कंचि पुरिसं सहसत्ति पासिज्जा, तंमि उग्गहादयो जुगवमुप्पज्जंति, आयरिओ आह-तंमिवि अत्थि चेव, कहं ?, जहा उप्पलपत्तसतवेहे कालणाणत्तं अत्थि, अहवा सुहुमत्तणेण णज्जए जहा एककालमेव विद्धंति, ण उवरिल्ले पत्ते अविद्धे हेट्ठिल्लस्स वेधो जुज्जए, एवं सहसत्ति दिट्ठे पुरिसे उग्गहादीणं तरतमजोगो अत्थि चेव, ण पुण कालस्स सुहुमत्तणेण जाणितुं सक्किज्जतित्ति ॥ ताणि य इंदियाणि काणिइ पत्तविसयाणि काणिवि अपत्तविसयाणि, कहं ?— ॥ १३ ॥

पुट्ठं सुणेइ सद्दं० ॥५॥ पुट्ठं णाम फरिसितं, जाहे तं सोइंदियं अणंतेहिं सद्दपोग्गलेहिं पूरियं भवति तदा सुणेइ, जं पुण पासति तं अपुट्ठं, कहं ?, जइ पुट्ठं पासिज्जा तो अग्गिं दट्ठूण णयणाणं दाहो भवेज्जा, सूलं वा दट्ठूण णयणाणं वेहो भवेज्जा ॥

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

श्री आवश्यक चूर्णौ ज्ञानानि

॥ १४ ॥

भाषायाः समविषम-श्रेणयः

एत्थ सीसो आह-जति अपुट्ठं पासइ तो कहं देवलोयं ण पासाति ?, आयरियो आह-विसए इंदियाणं णाणं दंसणं वा भवति। सीसो आह-भगवं ! को पुण एतेसिं विसउत्ति?, आयरिओ आह-सोइंदियस्स जहण्णेण अंगुलस्स असखेज्जतिभागो, उक्कोसेणं बारस जोयणाइं, चक्खिदियस्स जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जतिभागं उक्कोसेणं जोयणसयसहस्सं साइरेगं, गंधरसफासाणं जहण्णो अंगुलस्स असंखेज्जतिभागो, उक्कोसेणं नव जोयणाइंति। गंधरसफासिंदिया बद्धपुट्ठं वियाकरेज्जा, कहं?, जाहे घाणपोग्गला घाणिंदियं पविट्ठा भवंति ताहे पुट्ठा, जाहे पुण घाणिंदिएण सह गाढं संजुत्ता भवंति ताहे बद्धा भण्णंति, एवं पुट्ठं बद्धं च गंधमग्घायइत्ति, तहा जिब्भिदिएवि, मुखे जया पक्खित्तो आहारो भवति तदा पुट्ठो, जया लालाए सद्धिं एकीभूओ भवति जिब्भिदियत्ताए य परिणामिओ तदा बद्धो, एवं पुट्ठं बद्धं च रसं आसादयतित्ति। जाहे फासपोग्गला ईसिं फासिंदिएण सह समागया भवंति तदा पुट्ठा भवंति, जदा पुण गाढं फासिंदिएण सह परिणामिया भवंति तदा बद्धा भण्णंति, एवं पुट्ठं बद्धं च फरिसं वेदेतित्ति ॥ ५ ॥ एत्थ सीसो आह-भगवं ! जे पुण निसिरिया भासापोग्गला ते किं ते चेव सुणेति उआहु अण्णेत्ति?, आयरिओ आह—

भासासमसेढीयं० ॥६॥ जाओ एयाओ लोगागासपएसाणं सेढीओ पाईणपडिणायताओ उत्तरदक्खिणउद्धमधायताओ य तासिं सेढीणं जो सोइंदियस्स समसेढीए ठितो भासति ते पोग्गला अण्णेहिं सद्दपोग्गलपाओग्गेहिं सह मीसगा सुव्वइ, जो पुण विसेढी भासइ ते पोग्गला णो सोइंदियं पविसंति, णियमा अण्णे सद्दपोग्गलपाउग्गपोग्गला तेहिं पोग्गलेहिं परंपराघाएण णोल्लिज्जमाणा २ सोइंदियं पविसंति, जे य ते पोग्गला णिसट्ठा भासंतेणं तेहिंतो बहुतरगा जे सोइंदियं पविसंति। आह-एकओमुहेऽवि ते कह विसेढी सुणेति?, उच्यते, ते पुण णियमा छद्दिसिं पविसंति ॥६॥ सीसो आह-भगवं! भणितं तुब्भेहिं जहा 'जं सद्दं ॥ १४ ॥

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता..........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

श्री आवश्यक चूर्णौ ज्ञानानि

॥ १५ ॥

भाषाद्रव्य-ग्रहणादि

समसेढीए सुणेइ तं मीसगं सुणोतित्ति' कत्थ पुण ताणि भासादव्वाणि कयरेण जोगेण गेण्हति ? कतरेण वा णिसरातित्ति ?, आयरिओ आह—

गेण्हइ य काइएण० ॥ ७ ॥ भासालद्धीओ जीवो भासागहणपाउग्गाणि दव्वाणि कायजोगेण घेत्तूण भासत्ताए परिणामेउं वयजोगेण णिसिरति, णिसिरइ णाम भासइत्ति वुत्तं भवति, सो पुण ताणि दव्वाणि एगंतरेण गेण्हति एक्कन्तरं च णिस्सिराचिति, कहं?, एगसमएण जया भासापोग्गलामहिया भवंति तदा एगेण चेव समएण णिसिरति, एवं गहणणिस्सिरणं काउं कोइ तंमि चेवट्ठितो भवति, ठितिक्खयं वा करेज्जा, एवं गहणानिसिरणाणं कालो जहण्णेण दुसमइओ उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तितो, ते पुण अंतोमुहुत्तस्स समया असंखेज्जा णायव्वा, तेसु एक्कंतरं गेण्हति णिसिरति य, कहं ?, जो भासंतो-णो उवरमति सो जंमि समए णिस्सरति तंमि चेव समए भासं भासंतो अण्णाणि भासादव्वाणि पुणो गेण्हति, घेत्तूण य तइए समए णिसिरति, ताणि य बितियसमयगहिताणि तइए समए णिसिरमाणो अण्णाणि भासादव्वाणि पुणो गेण्हति, ताणि चउत्थे णिसरति, ताणि य तइयसमयगहियकाणि चउत्थे समए णिसिरमाणो अण्णाणि भासादव्वाणि पुणो गेण्हति, ताणि पंचमे समए णिसरति, एवं एगंतरं गेण्हंतस्स एगंतरं णिस्सिरं-तस्स य अब्भंतरेसु मुहुत्तस्स असंखेज्जा समया भवंति ॥७॥ जाणि पुण ताणि भासादव्वाणि गेण्हइ काइएण जोगेण ताणि पंचण्हं सरीराणं कतरेणं गेण्हतित्ति?, एत्थ भण्णातित्ति—

॥ १५ ॥

तिविहंमि सरीरंमि०॥८॥तिविहसरीरग्गहणेण ओरालियवेउव्वियआहारगाणं गहणं कयं, इयराणि पुण तेयाकम्मगाणि तदंतरग-याणि चेव काऊण ण भणियाणि, जस्स ओरालियसरीरं सो जीवपएसेहिं गेण्हिऊण ओरालियसरीरेण णिसिरति, जस्स वेउव्वियसरीरं

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

श्री आवश्यक चूर्णौ ज्ञानानि

॥ १६ ॥

भाषायाः प्रकारालोक न्याप्तिश्च

सो जीवपएसेहिं गेण्हिऊण वेउव्वियसरीरेण णिसिरति, एवं आहारगेणऽवि, 'तो भासति भासतो भासति भासं' ति णाम जति भासतो भवति तो भासति, किं कारणं?, अण्णेसिं ओरालियवेउव्वियआहारगा अत्थि, ण पुण भासंति। कम्हा?, पज्जत्तिअभावा, कारणं वा किंचि पडुच्च ण भासंतित्ति ॥ ८ ॥ तं पुण भासं कतिप्पगारं गेण्हति?, एत्थ भण्णति–

ओरालियवेउव्विय० ॥ ९ ॥ ओरालियवेउव्वियआहारगसरीरी चउव्विहं भासं गेण्हति य मुंचइ य, तंजहा- सच्चं असच्चं सच्चामोसं असच्चामोसं च, जाए भासाए गेण्हति ताए चेव णिसिरति, णो अण्णाए घेत्तूण अण्णाए णिसिरइत्ति ॥९॥ एत्थ सीसो आह- **कतिहिं समएहिं लोगो०'** ॥ १० ॥ गाहा कंठा । आयरिओ आह–

चउहिं समएहिं० ॥११॥ जीवो जाइं दव्वाइं भासत्ताए गहियाइं णिसरति ताणि भिण्णाणि वा णिसिरति अभिन्नाणि वा, जाइं भिन्नाइं णिसिरति ताइं अणंतगुणपरिवुड्ढीए परिवड्ढमाणाइं २ चउहिं समतेहिं समंतओ लोगंतं फुसंति, फुसंति णाम पावंतित्ति वुत्तं भवति, जाइं अभिण्णाइं णिसिरति ताइं असंखेज्जाओ उग्गाहणवग्गणाओ गंता भेदमावज्जंति, संखेज्जाइं जोयणाइं गंता विद्धंसमागच्छंति, विद्धंसमागच्छाति णामाभासीभवंतित्ति वुत्तं भवति। एवमेव जाइं भिण्णाइं णिसिरति ताइं महंतलेट्टुकसमाइं चउहिं समएहिं लोगंतं पावंति, जाणि पुण अभिण्णाणि णिसिरति ताणि खुड्डलगलेट्टुगसमाणाइं अंतरा चेव विद्धंसमागच्छंति, तेहि य भिण्णेहिं भासादव्वेहिं चउहिं समएहिं लोगो निरंतरं सव्वो चेव फुडीकओ, जो य लोगस्स चरिमो अन्तो सो चेव भासाएऽवि चरिमो अंतोत्ति । कहं ?, जेण अलोए जीवाजीवदव्वाणं धम्मत्थिकायदव्वस्स अभावे गती चेव णत्थि, अतो लोगस्स चरिमंते भासाएऽवि चरिमंतो भण्णतित्ति ॥११॥ इयाणिं एयस्स आभिणिबोहियस्स एगट्ठिया भण्णंति, तंजहा–

॥ १६ ॥

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

श्री आवश्यक चूर्णौ ज्ञानानि

॥ १७ ॥

ईहाऽपोह वीमंसा० ॥ १२ ॥ ईधत्ति वा अपोहोत्ति वा विमंसत्ति वा मग्गणात्ति वा गवेसणत्ति वा सण्णत्ति वा सइत्ति वा मइत्ति वा पण्णात्ति वा सव्वमेतं आभिणिबोहियं, एतेहिं एगट्ठिएहिं भणितंति ॥ तं पुण इमेहि अणुओगदारेहिं अणुगन्तव्वं, तंजहा—

संतपय परूवणया दव्वपमाणं च खित्तफुसणा य। कालो अंतर भागो भावो अप्पाबहुंकंति ॥ १३ ॥

तत्थ संतपयपरूवणया पढमदारन्तिकाऊण पुव्विं भण्णति, तत्थ संतं णाम संतंति वा अत्थित्ति वा विज्जमाणंति वा एगट्ठा, संतं च तं पयं च संतपदं तस्स परूवणा संतपयपरूवणा, परूवणात्ति वा कहणंति वा वक्खाणमग्गोत्ति वा एगट्ठा, सा य इमेण पगारेण भवति, जहा- कोइ सीसो कंचि आयरियं पुच्छेज्जा, जहा आभिणिबोहियस्स किं संतस्स परूवणं असंतस्स वा?, आयरिओ आह- वत्थ! कतो ते संदेहो?, सीसो आह- संताणं असंताणं च परूवणा दिट्ठा, घडादिणं असंभवे भं(सिं)गादीणं च अतो मम संसओ, आयरिओ आह-संतस्स, कहं?, जम्हा ओहिणाणादीहिं पच्चक्खेहिं जे दिट्ठा अत्था सुत्तनिबद्धा असुत्तनिबद्धा वा ते आभिणिबोहियणाणसामत्थजुत्तो जीवो संतं गिण्हइ परं च गाहेति, अतो णियमा अत्थि आभिणिबोहियणाणंत्ति, सीसो आह- जइ अत्थि तो कहिं मग्गितव्वं?, आयरिओ आह- इमेहिं ठाणेहिं मग्गियव्वं, तंजहा-

गइ इंदिए य काए जोगे वेए कसाय लेसा य। संमत्त णाण दंसण संजय उवओग आहारे ॥ १४ ॥

भासग परित्त पज्जत्त सुहुम सण्णी य हुंति भवचरिमे। एतेहिं तु पदेहिं संतपदे होंति वक्खाणं ॥ १५ ॥

तत्थ पढमं गतित्ति दारं, सा णिरयगतिआदी चउव्विहा, तत्थ पडिवज्जमाणयं पडुच्च चउसुवि गतिओ (सु) आभिणिहियणाणं भवेज्जा, पुव्वपडिवण्णसंपि पडुच्च चउसुयि भवेज्जा, तत्थ पडिवज्जमाणओ णाम जो तप्पढमताए चेव आभिणि-

मतेरेकार्थिकानि सदादीनि द्वाराणि

॥ १७ ॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ ज्ञानानि ॥ १८ ॥

सत्पदे गत्यादीनि

बोहियणाणं पडिवज्जइ, सो य एगसमयइओ लब्भति, सेसेसु समएसु पुव्वपडिवण्णओ लब्भति, गइत्तिदारं गयं १ ॥

इदाणिं इंदिएत्ति दारं, तत्थ पुढवीकाइयाइणो वणप्फतिकायावसाणा पंच काया एगिंदिया, तेसु दोवि णत्थि, बितिचउरिंदिएसु णत्थि पडिवज्जमाणओ, पुव्वपडिवण्णओ पुण भवेज्जा, कहं ?, जो कोई अविरयसम्मद्दिट्ठी विगलिंदिएसु उववज्जति सो जाव अपज्जत्ततो ताव घंटालालादिट्ठंतेण पुव्वपडिवण्णओ लब्भति, पंचिंदिएसु पुव्वपडिवण्णतो पडिवज्जमाणोऽवि आभिणिबोहियणाणी हविज्जा, इंदिएत्ति गयं २ ॥

काएत्ति, पुढविकाए जाव वणप्पफतिकाए ण पुव्वपडिवण्णओ ण वा पडिवज्जमाणओ, तसकाए उभयं होज्जा ३ ॥

जोगेत्ति जोगो तिविहो, तंजहा-मणवइकायजोगित्ति, एतेसु तिसुवि पुव्वपडिवन्नो पडिवज्जमाणतो वा होज्जा ४ ॥

वेदेत्ति, सो तिविहो तंजहा-इत्थी, पुरिसो णपुंसगात्ति, एतेसु तिसुवि दुविहोऽवि होज्जा ५ ॥

कसाएत्ति, ते य कोहादिणो चउरो, तेसु दुविहोऽवि होज्जा ६ ॥

लेसात्ति, तत्थ उवरिल्लासु तिसु विसुद्धलेसासु पुव्वपडिवन्नतो पडिवज्जमाणओ वा होज्जा, हेट्ठिल्लासु अविसुद्धलेसासु पुव्वपडिवण्णओ होज्जा, पडिवज्जमाणओ णत्थि ७ ॥

सम्मत्तेत्ति, तं आभिणिबोहियणाणं किं सम्मद्दिट्ठी पडिवज्जति मिच्छद्दिट्ठी सम्ममिच्छद्दिट्ठी ?, एत्थ दो णया समोतरंति, तंजहा-णिच्छतिए य वावहारिए य, तत्थ णिच्छइयनयस्स सम्मद्दिट्ठी पडिवज्जइ, पुव्वपडिवन्नओऽवि सम्मद्दिट्ठी चेव, वावहारियस्स मिच्छादिट्ठी पडिवज्जति, पुव्वपडिवण्णओ से णत्थि, सम्ममिच्छद्दिट्ठी ण वा पुव्वपडिवण्णओ ण वा पडिवज्जमाणओ ८ ॥

॥ १८ ॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ ज्ञानानि ॥ १९ ॥

सत्पदे गत्यादीनि

णाणत्ति, तं आभिणिबोहियणाणं किं णाणी पडिवज्जति उदाहु अण्णाणी ?, एत्थ दो णया, तंजहा-णिच्छतिए य वावहारिए य, णिच्छतियस्स णाणी पडिवज्जति, पुव्वपडिवण्णओऽवि णाणी चेव हवेज्जा, जति णाणी पडिवज्जति किं आभिणिबोहियणाणी सुयणाणी ओहिणाणी मणपज्जवणाणी केवलणाणी पडिवज्जति ?, तत्थ आभिणिबोहियणाणी आभिणिबोहियणाणउप्पत्तिसमकालमेव पडिवज्जमाणतो भवति, ततो कालतो पच्छा णत्थि पडिवज्जमाणतो, पुव्वपडिवण्णओ पुण भवेज्ज, सुतणाणी णत्थि पुव्वपडिवण्णओ, पडिवज्जमाणस्स पुण आभिणिबोहियसुयणाणाणं जुगवं चेव समुप्पत्ती भवति, ओहिणाणी पुव्वपडिवण्णओ भवेज्जा पडिवज्जमाणओऽवि, कहं ?, जम्हा जुगवं चेव आभिणिबोहियसुतओहिणाणाणं समुप्पत्ती भवति, अओ पडिवज्जमाणतो हवेज्जा, मणवज्जवणाणे पुव्वपडिवण्णओ हवेज्जा, पडिवज्जमाणओ णत्थि, केवलणाणे दोऽवि णत्थि, वावहारियस्स विभासा ९ ॥

दंसणेत्ति दारं, किं चक्खुदंसणी पडिवज्जति अचक्खुदंसणी० ओहिदंसणी० केवलदंसणी पडिवज्जइ ?, तत्थ चक्खु० अचक्खु० ओहिदंसणी य पुव्वपडिवण्णओ वा होज्जा पडिवज्जमाणओ वा, केवलदंसणे दोऽवि णत्थि १० ॥

संजमेत्ति-आभिणिबोहियं किं संजओ पडिवज्जति?, असंजओ० संजयासजओ०?, संजओ पुव्वपडिवण्णओ वा पडिवज्जमाणओ वा होज्जा, पडिवज्जमाणओ जो सम्मत्तं चरित्तं जुगवं पडिवज्जति तस्सेतं गहणं कतंति, भणितं च-'णत्थि चरित्तं सम्मत्तविहूणं दंसणं तु भयणिज्जं । सम्मत्तचरित्ताइं जुगवं पुव्विं व सम्मत्तं ॥ १ ॥ असंजतोऽवि पुव्वपडिवण्णओ वा पडिवज्जमाणओ वा होज्जा, संजतासंजतोऽवि एवं चेव ११ ॥ ॥ १९ ॥

उवओगित्ति, आभिणिबोहियं किं सागारोवउत्ते पडिवज्जति उआहु अणागारोवउत्ते पडिवज्जति ?, सागारोवउत्ते पडिव-

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ ज्ञानानि ॥ २० ॥

सत्पदे उपयोगादीनि-द्वाराणि

ज्जति, णो अणागारोवउत्तो, जम्मि समए पडिवण्णो आभिणिबोहियणाणं तंमि समए सो जीवो सागारोवउत्तो लब्भति, पुव्वपडिवण्णओवि सागारोवउत्तो हुज्जा, अणागारोवउत्तो पुव्वपडिवण्णओ होज्जा, णो पडिवज्जमाणतो १२ ॥

आहारेत्ति, आभिणि० किं आहारतो पडिवज्जति अणाहारतो वा ?, आहारतो पडिवज्जति, णो अणाहारतो, जति आहारतो तो किं पुव्वपडिवण्णओ पडिवज्जमाणो वा होज्जा ?, दोऽवि होज्जा, अणाहारओ पुण पुव्वपडिवण्णओ होज्जा, णो पडिवज्जमाणओ १३ ॥

भासत्ति, किं भासतो पडिवज्जति अभासतो वा ?, जस्स भासालद्धी अत्थि सो भासंतोऽवि अभासंतोऽवि पडिवज्जति, जस्स णत्थि सो ण चेव पडिवज्जति १४ ॥

परित्तत्ति, किं परित्तो पडिवज्जति अपरित्तो वा ?, परित्तो पुव्वपडिवण्णतो वा पडिवज्जमाणओ वा होज्जा, अपरित्तो दुविहो-कायापरित्तो संसारापरित्तो य, एस दुविहोऽवि ण वा पुव्वपडिवण्णओ ण वा पडिवज्जमाणतो १५ ॥

पज्जत्तत्ति, किं पज्जत्ततो पडिवज्जति अपज्जत्ततो वा?, पज्जत्ततो, पुव्वपडिवण्णओ पडिवज्जमाणओ वा होज्जा, अपज्जत्ततो पुव्वपडिवण्णओ होज्जा, णो पडिवज्जमाणतो १६ ॥

सुहुमेत्ति, किं सुहुमो पडिवज्जति बायरो वा?, बायरो पडिवज्जति, णो सुहुमो, सो य बायरो पुव्वपडिवण्णओ पडिवज्जमाणओ वा होज्जा १७ ॥

॥ २० ॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ ज्ञानानि ॥ २१ ॥

सण्णित्ति, किं सण्णी पडिवज्जति असण्णी वा?, सण्णी पडिवज्जति, णो असण्णी, सो य सण्णी पडिवज्जमाणओ वा पुव्वपडिवण्णओ वा होज्जा, असण्णी पुण पुव्वपडिवण्णओ होज्जा, णो पडिवज्जमाणओ १८ ॥

भवसिद्धिएत्ति, किं भवसिद्धिओ पडिवज्जति अभवसिद्धिओ वा पडिवज्जति ?, भवसिद्धिओ, णो अभवसिद्धिओ, सो भवसिद्धिओ दुविहोऽवि होज्जा १९ ॥

चरिमेत्ति, किं चरिमे पडिवज्जति अचरिमे वा ?, चरिमे पडिवज्जति, णो अचरिमे, से य चरिमे पडिवज्जमाणए वा होज्जा, पुव्वपडिवण्णए वा होज्जा २० ॥ १ ॥

गतं संतपदपरूवणत्तिदारं, इयाणिं दव्वपमाणंति दारं, तंजहा-आभिणिबोहियणाणपडिवण्णगा जीवा दव्वपमाणेण केवइआ ?, पडिवज्जमाणए पडुच्च सिय अत्थि सिय नत्थि, जति अत्थि जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागे जावतिया वालग्गा, पुव्वपडिवण्णए पडुच्च जहण्णपदे असंखेज्जा उक्कोसपदेऽवि असंखेज्जा, जहण्णपयातो उक्कोसपदे विसेसाहिया २ ॥

खेत्तत्ति दारं, आभिणिबोहियपडिवण्णया जीवा लोगस्स कतिभागे होज्जा ?, किं संखेज्जतिभागे असंखेज्जतिभागे संखेज्जेसु भागेसु असंखिज्जेसु भागेसु सव्वलोए वा होज्जा ?, असंखेज्जइभागे वा होज्जा, सेसपडिसेहो, थूरगणणाए विसयं पडुच्च लोगस्स चोद्दसखंडीकतस्स सत्तसु चोद्दसभागेसु होज्जा, विसओ णाम विसओत्ति वा संभवोत्ति वा उववत्तित्ति वा एगट्ठा, पडुच्च नाम पडुच्चात्ति वा पप्पत्ति वा अहिकिच्चात्ति वा एगट्ठा ३ ॥

सत्पदे सूक्ष्मादीनि द्वाराणि द्रव्य प्रमाणं च ॥ २१ ॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ ज्ञानानि ॥ २२॥

मतिज्ञाने क्षेत्रादीनि द्वाराणि

फुसणत्ति दारं, आभिणिबोहियणाणपडिवण्णगा जीवा लोगस्स किं संखेज्जतिभागं फुसंति ? तहेव उच्चारणा, एकं जीवं पडुच्च संखेज्जतिभागं वा फुसंति असंखेज्जतिभागं वा संखेज्जे वा भागे, णो असंखेज्जे भागे फुसति, णो सव्वलोगं फुसति, एमेव पुहुत्तेणवि जीवा भाणियव्वा ४ ॥

कालेत्ति दारं, आभिणिबोहियणाणी जीवा लद्धिं पडुच्च केवतियं कालं होज्जा ?, एगं जीवं पडुच्च जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण छावट्ठि सागरोवमाइं सातिरेगाइं, कहं ?, जो आभिणिबोहितं लद्धूणं तक्खणा चेव ततो परिपडति केव(का)लं वा करेज्जा तस्स आभिणिबोहियलद्धी अंतोमुहुत्तं संभवति, जो पुण अणुत्तरविमाणेसु दो वारा उववज्जति उक्कोसठितितो तस्स छावट्ठि सागरोवमा सातिरेगा, सातिरेगं तु जं मणुस्सभवे आउयं देसूणा वा पुव्वकोडी अप्पयरं वा कालं, णाणाजीवे पडुच्च सव्वद्धा । उवओगं पडुच्च एकजीवस्स जहण्णेणऽवि उक्कोसेणऽवि अंतोमुहुत्तं, णाणाजीवे पडुच्च जहण्णेणऽवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं ५ ॥

अंतरेत्ति दारं-आभिणिबोहियणाणस्स णं भंते ! केवइयं कालं अंतरं होति ?, अंतरं णाम जो आभिणिबोहियणाणी भवित्ता पुणोवि कालंतरेण आभिणिबोहियणाणी चेव भवति, एत्थ एगं जीवं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अवड्ढं पोग्गलपरियट्टं देसूणं, णाणाजीवे पडुच्च णत्थि अंतरं ६ ॥

भागेत्ति दारं, आभिणिबोहियणाणी णं भंते ! जीवा सेसजीवाणं कतिभागे होज्जा ?, गोयमा ! अणन्तभागे ७ ॥

भावेत्ति, आभिणिबोहियणाणी णं भंते ! जीवे ओदइयओवसमियादीणं पंचण्हं भावाणं कतरंमि भावे होज्जा ?, खओवसमिए होज्जा ८ ॥ ॥ २२ ॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ ज्ञानानि ॥ २३ ॥

मागादीनि सत्पदादौ अन्यमतं

अप्पबहुत्ति दारं, एतेसिं णं भंते ! जीवाणं आभिणिबोहियणाणीणं णोआभिणिबोहियणाणीणं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा बहुया वा ?, सव्वत्थोवा आभिणिबोहियणाणी, णोआभिणिबोहियणाणी अणंतगुणा । अप्पाबहुयत्ति दारं गतं ९ ॥

अण्णे एवं भणंति-किं सम्मद्दिट्ठी पडिवज्जति मिच्छादिट्ठी० सम्मामिच्छादिट्ठी?, एत्थ दो णया-णिच्छइए य वावहारिए य, तत्थ वावहारियस्स मिच्छद्दिट्ठी पडिवज्जाति, णेच्छतियस्स सम्मद्दिट्ठी पडिवज्जति, सम्मामिच्छो ण एकेऽवि, किं णाणी पडिवज्जइ उआहु अण्णाणी ?, एत्थऽवि एमेव । किं चक्खुदंसणी पडिव० ?, केवलदंसणवज्जे पुव्वपडिवण्णणो वा पडिवज्जमाणओ वा । किं संजओ प० असंजओ वा प० संजयासंजतो वा ?, 'णत्थि चरित्तं०' गाहा । किं सागरोवउत्ते प० अणागारोवउत्ते पडिवज्जइ?, सागारोवउत्ते पडि०, णो अणागारोवउत्ते, जंमि पडिवण्णो सो सागारोवउत्तो, सेसेसु सागारोवओगेसु य अणागारोवओगेसु य पुव्वपडिवण्णओ। किं आहारओ प० अणाहारओ प० ?, आहारओ प०, नो अणा० प०, दोऽवि पुण पुव्वपडिवण्णगा होज्जा। किं भासतो प० अभासतो प० ?, जस्स भासालद्धी अत्थि सो भासंतोऽवि अभासंतोऽवि, जस्स णत्थि सो ण पडिव० । किं परित्तो प० अपरित्तो प० ?, दुविधोऽवि परित्तो प०, अपरित्तो ण पडि०, ण पुव्वपडि० । नोपरित्तोनोअपरित्तो ण प०, ण पुव्वपडि० । पज्जत्तओ पडिवज्जइत्ति २, अपज्जे पुव्वप० होज्जा । बायरो प०, २ । सुहुमो ण प०, ण पुव्व० । सण्णी पडि० २, असण्णी पुव्वप० । भवसिद्धिओ पडि० २, णो अभवसिद्धिओ । चरिमो पडिवज्जति अचरिमो प०, पुव्वपडिवण्णगं च पडिवज्जमाणगं च पडुच्च चरिमो, अचरिमो ण । सेत्तं संतपदपरूवणा १ । ॥ २३ ॥

दव्वपमाणं आभिणिबोहियणाणपडिवण्णगा जीवा दव्वपमाणेण केवइया होज्जा ?, पडिवज्जमाणए सिय अत्थि सिय

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता..........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णिः-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ ज्ञानानि

॥ २४ ॥

मतांतरेण सत्पदादीनि

णत्थि, जति अत्थि एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागो, पुव्वपडिवण्णए पडुच्च जहण्णपए असंखेज्जा उक्कोसपएवि असंखेज्जा, जहण्णपयाओ उक्कोसे विसेसाधिका २। खेत्तंति, लोयस्स किं संखेज्जइभागे होज्जा जाव सव्वलोए?, णो संखेज्जतिभागे होज्जा, नो संखेज्जेसु णो असंखेज्जेसु णो सव्वलोए ३। फुसणावि एमेव ४। कालतो एगजीवं पडुच्च लद्धी जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं छावट्ठिसागरोवमाइं पुव्वकोडिपुहुत्तहियाणि, णाणाजीवे पडुच्च सव्वद्धं ५। सेसं तहेव ।

तं च आभिणिबोहियणाणं समासओ चउव्विहं पण्णत्तं, तंजहा-दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ, दव्वतो णं आभिणिबोहियणाणी आदेसोणं सव्वदव्वाइं जाणति, ण पासति, खेत्ततो णं आदेसेणं सव्वखेत्तं जाणति, ण पासति, कालतो णं आएसेणं सव्वकालं जाणति, ण पासति, भावओ आएसेणं सव्वभावे जाणति, न पासति ॥ इयाणिं एतस्स आभिणिबोहियणाणस्स पगाडिभेदपयरिसणत्थं इमं गाहापुव्वद्धं भण्णति, तंजहा-

आभिणिबोहिय नाणे, अट्ठावीसं भवंति पगडीओ ॥ १६ अ ॥ ता य इमा, तं०- छव्विहो अत्थोग्गहो सोइंदियाई, तंमि छव्विहा चेव सोइंदियाई ईहा पक्खित्ता, तासिं मज्झे सोइंदियाई छव्विहो अवाओ पक्खित्तो, तासु छव्विहा धारणा तहेव पक्खित्ता, तासु सोइंदियघाणिंदियजिब्भिंदियफासिंदियवंजणोग्गहो चउव्विहो पक्खित्तो, जाया पगडी अट्ठावीसंति ॥ एवमेते आभिणिबोहियणाणं अट्ठावीसंति, पगतिभेदं गयं ॥ इयाणिं सुतणाणस्स पगडिभेयपदरिसणत्थं इमं गाहापच्छद्धं भण्णति–

सुतणाणे पगडीओ वित्थरओ यावि वोच्छामि ॥ १६ ब ॥ जातो सुयणाणे पगडीओ भवंति तातो वित्थरओ वण्णेहामि, अविसद्दो संभावणे, किं संभावयति?, दुविधो वक्खाणधम्मो, तंजहा-संखेवओ वित्थरतो य, तत्थ संखेवओ भणिहामि, ॥ २४ ॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ श्रुतज्ञाने

॥ २५ ॥

वित्थरओ पुण तासिं पगडीणं भेदा चेव दरिसावेउं अहं समत्थो, ण पुण पत्तेयं पत्तेयं जो तासिं अत्थो तं समत्थो दंसिउंति संभावयति ॥ ते य तासिं भेदा वित्थरओ इमे-

पत्तेयमक्खराइं० ॥ १७ ॥ जावइयाइं पत्तेयं पत्तेयं असंजुत्ताणि अक्खराइं लोए जावइया य तेसिं अक्खराणं परोप्परतो संजोगा एवइयाओ सुयणाणे पगडीओ भवंति णायव्वाओत्ति ॥ एयाओ पगडीओ वित्थरेण अहं ण सक्कोमि परूवेउं णाउं वा, जतो परिमियमाऊ णाणसंपत्ती य इतिकाऊण इमं गाहासुत्तं भणामि—

कत्तो मे० ॥ १८ ॥ अण्णे पुण भणंति- एयाओ पगडीओ वित्थरेण चोद्दसपुव्वधरा जाणंति परूवेंति य, अभिण्णदसपुव्विणो वा, अहं पुण असमत्थोत्तिकाउं इमं गाहासुत्तं भणामि 'कत्तो मे वण्णेउं' गाहा, पुव्वद्धं गयं, संखेवेण पुण अहं जहा आभिणिबोहियणाणं अट्ठावीसपगडिभेदं परूवितं तहा सुयणाणे यावि चोद्दसविहं णिक्खेवं वण्णेहामित्ति । तंजहा—

अक्खर०१९॥ अक्खरसुतं सण्णिसुतं सम्मसुतं सादिसुयं सपज्जवासियं गमितं अंगपविट्ठं, एते सत्त भेदा सह पडिवक्खेहिं मेलिया चोद्दस भवंति, तत्थ पढमं दारं अक्खरसुतंति, एत्थ क्खरसद्दो संचलणे वट्टइ, अकारो पडिसेहे, जम्हा णो क्खरति अओ अक्खरं, ण क्खरति णाम सव्वविसुद्धणेगमणयादेसेण ण कयाइवि जीवेण सह विजुज्जइत्ति वुत्तं भवति, ये पुण अत्था अक्खरेहिं अहिलप्पंति ते क्खरा अक्खरा य भणंति, तत्थ अमुत्तदव्वाणि धम्मत्थिकायादीणि अक्खराणि, सासयाणि।त्ति वुत्तं भवति, तेसिंपि परियच्च- ॥ २५ ॥
इतो असासयभावो भवति चेव, जहा आगासस्स पडागाससंजुत्तस्स पडागासत्तेण विगमो घडाकासत्तेण उप्पाओ, आगासत्तेणावट्ठिती चेव, जीवपोग्गलावि दव्वट्ठयाए अक्खरा, पज्जवट्ठयाए पुण क्खरा, कहं ?, जहा जीवस्स मणुस्सत्तादिणा उप्पाओ

अक्षरश्रुतेऽक्षरस्वरूपं

'श्रुत'ज्ञानस्य स्वरुपादि वर्णनं आरभ्यते

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ श्रुतज्ञाने

॥ २६ ॥

देवत्तादिणा विगमो, जीवत्तेण अवट्ठिती चेव, तहा अजीवदव्वस्सवि दुपदेसितादित्तेण उप्पाओ परमाणुमादित्तेण विगमो पोग्गलत्तेण अवट्ठिती चेव। जो अविणासीभावो तस्स निच्छयतो अक्खरंति सन्ना।

तं पुण अक्खरं तिविहं, तंजहा- सन्नक्खरं वंजनक्खरं लद्धिअक्खरं च, से किं तं सन्नक्खरं ?, जा अक्खरस्स संठाणागिती, जहा वट्टो ठकारो वज्जागिती वकारो, एवमादि सण्णक्खरं भण्णति।

वंजणक्खरं णाम जो अक्खरस्स आहिलावो, जेण य अत्था णिव्वंजीयंति, णिव्वंजीयंति णाम विभाविज्जंति फुडीकज्जंतीत्यर्थः, जहा अंधकारे वट्टमाणो घडो पदीवेण णिव्वंजिज्जति, एवं जम्हा अभिहाणेण उच्चारिएण अत्था णिव्वंजीयंति अतो वंजणक्खरं भण्णति, ते य एवं णिव्वंजीयंति जहा गोणित्ति भणिए तीए चेव ककुहणंगुलाविसाणाइगुणजुत्ताए संपच्चओ भवति, ण पुण आसहात्थिमाईसुत्ति। तं च वंजणक्खरं दुविहं- जहत्थाणियय अजहत्थाणियय च, तत्थ जहत्थाणियतं जहा दहतीति दहणो तवतीति तवणो एवमाइ, अजहत्थणियतं णाम जहा अमाइवाहगो माइवाहगो, णो पलं असईति पलासो एवमादी १। तहा वंजणक्खरं अणेणावि पगारेण दुविहं भवति, तंजहा- एगपरियं च अणेगपरियं च, एगपडिरयंति वा एगपज्जायंति वा एगणामभेदंति वा एगट्ठा, तंजहा-कस्सइ दव्वस्स एगं चेव नामं भवति, णो बितियं, अणेगपरियंति वा अणेगपज्जायंति वा अणेगणामभेदंति वा एगट्ठा, तं च जहा कस्सइ दव्वस्स अणेगाइं णामाइं भवंति, जहा घडस्स 'घडकुडकुंभा' हत्थिणो 'हत्थिदंतिकुंजरा' एवमादी २। अहवा तं वंजणक्खरं दुविहं- एगक्खरं अणेगक्खरं, एगक्खरं जहा श्रीः ह्रीः धीः स्त्रीः एवमादि, अणेगक्खरं जहा- 'सहस्सक्खो ईसाणोत्ति'एवमादि ३। अहवा तं वंजणक्खरं दुविहं- सक्कयं पागयं च, सक्कयं जहा- आत्मा पुद्गलः एवमादि,

संज्ञाक्षरं व्यंजनाक्षरं च

॥ २६ ॥

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

श्री आवश्यक चूर्णौ श्रुतज्ञाने ॥ २७ ॥

लब्ध्यक्षराधिकारः

पागयं जहा- आया पोग्गला एवमादि ४। तं च वंजणक्खरं देसिओ अणेगविहं भवति, जहा- जं खीरं लाडाणं तं चेव कुडुकाणं पीलुं भण्णति, तं च अभिधेयातो भिन्नं अभिन्नं च, कहं ?, जम्हा मोदउत्ति भणिए णो वयणस्स पूरणं भवति, अतो णज्जति जहा भिन्नया, जम्हा पुण मोदउत्ति भणिते तंमि चेव संपच्चतो भवति, णो तव्वतिरित्तेसु घडादिसु, अतो अभिन्नया, से तं वंजणक्खरं।

से किं तं लद्धिअक्खरं?, लद्धिअक्खरं पंचविधं पण्णत्तं, तंजहा- सोइंदियलद्धिक्खरं जाव फासिंदियलद्धिक्खरं, से किं तं सोइंदियलद्धिअक्खरं ?, २ जहा केणइ संखसद्दो सुतो, तओ तस्स तप्पच्चइया दोण्हं अक्खराणं लद्धी भवति, ताणि य अक्खराणि इमाणि, तंजहा-संखोत्ति, से तं सोइंदियलद्धिअक्खरं १। से किं तं चक्खिदियलद्धि० ?, चक्खिदियलद्धि० जहा केणइ उड्ढकुंडलायतवट्टगीवो घडो दिट्ठो, ततो तस्स तप्पच्चइया दोण्हं अक्खराणं लद्धी भवति, ताणि य इमाणि, तं० घडोत्ति, एवं गंधरसफासाणवि भाणियव्वं। किं च-एयस्स इंदियपच्चक्खस्स सोइंदियमादिणो लद्धिअक्खरप्पमाणस्स य अणेगंतिकी अक्खरलद्धी भवति, कहं ?, जम्हा पुव्वमदिट्ठमसुतं किंचि अत्थं दट्ठूण णो अक्खरलाभो भवति, जहा पणसफलं पारसिगा दट्ठूणवि पणसमेतंति एताणि अक्खराणि णो उवलभंति, तहा पुव्वं सुतं दिट्ठं च किंचि अत्थं दट्ठूण णो अक्खरलंभो भवति, कहं ?, जम्हा मंदप्पगासे खाणुं दट्ठूण किं पुण एस पुरिसो उदाहु खाणुत्ति संसतो समुप्पज्जति जाव णो विभावयति पक्खिणिलयादीहिं कारणेहिं ताव खाणुत्ति एतेसिं दोण्हं अक्खराणं णो लाभो भवति, तहा कस्सइ पुरिसस्स कोई पुरिसो णामं असरमाणो जाव ईहं पविट्ठो अच्छति ण ताव संभरति जहा अमुगणामधेज्जोत्ति ताव तेसिं णामक्खराणं णो उवलद्धी भवति। तहा कस्सति पुण परोक्खेऽवि अत्थे सारिक्खं दट्ठूण तव्विपक्खं वा दट्ठूणं अक्खरलंभो भवति, तत्थ सारिक्खओ जहा कोइ पुरिसो अण्णस्स ॥ २७ ॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ श्रुतज्ञाने

॥ २८ ॥

स्वपर-पर्यायाः

कस्सइ पुरिसस्स अणुसरिसो भवति, ततो तं दट्ठूण अक्खरलंभो भवति, जहा- अहो इमो अमुगणामधेज्जस्स सरिसोत्ति?, तहा विपक्खतो, जहा अहिं दट्ठूण तव्विपक्खस्स णउलस्स णामक्खरोवलंभो भवति, कहं ?, जइ पुण इदाणिं एत्थ णउलो भवेज्जा ततो एयं अहिं खंडाखंडिं करेज्जा, अहिस्स वा णउलो पडिसत्तुत्तिकाऊण कस्सति दयाजुत्तस्स अहिदरिसणाणुसमयमेव णउलक्खरोवलंभो भवति, जहा- अहो एतेसिं अहिणउलाणं अणवराहेऽवि भवपच्चतितो वेराणुभवो बंधोत्ति २। एवं इंदिओवलद्धिं पडुच्च अक्खरलंभो जहा भवति जहा वा ण भवति तहा परूवितंति। एतेण य सोइंदियादिणा पंचविहेण लद्धिअक्खरगहणेण इंदियपच्चक्खप्पमाणं गहियं भवति। एगग्गहणे तज्जातियाण गहणं भवतित्तिकाउं अणुमाणउवम्मआगमावि गहिता चेव भवंति, तत्थ अणुमाणमवि पडुच्च इमेण पगारेण अक्खरोवलंभो भवति, जहा-कोई अत्थो पुव्वोवलद्धो, तम्मि अ काले अदिस्समाणो अणुमाणेण घेप्पति, एत्थ दिट्ठंतो, जहा- धूमं दट्ठूण अपच्चक्खस्स अग्गिस्स अक्खरोवलंभो भवति, जहा- एत्थ एस धूमो एत्थ अग्गिणा भवितव्वं, तहा रत्तं णिद्धं च संझं दट्ठूण वरिसिउकामो अंतरिक्खोत्ति एतेसिं अक्खराणं उवलद्धी भवति, एवमादी अणुमाणिओ अक्खरोवलंभो भवतित्ति। तहा उवम्ममवि पडुच्च अक्खरोवलंभो भवतित्ति, कहं ?, जहा-जारिसो गौः तारिसो गवतोत्ति। तहा आगममवि पडुच्च अक्खरोवलंभो भवति, तत्थ आगमो णाम अत्तवयणं, तंमि भव्वाभव्वदेवकुरुत्तरकुरादीणं भावाणं अक्खरोवलंभो भवति। एवमादि जो य एसो अक्खरोवलंभो इदाणिं चिंतितो एस पायेण सण्णीण जीवाण भवति, णो असण्णीणत्ति, कथं ?, असण्णिणो पंचेंदिया पासंतावि अत्थे घडपडादिणो णोऽभिजाणंति-किमवि एयंति, तम्हा पायसो एसो लद्धिअक्खरलंभो सण्णीणं भवति, णो असण्णीणंति। सेत्तं लद्धिअक्खरं, तस्स पुण एगमेगस्स अक्खरस्स दुविहा पज्जाया भवंति,

॥ २८ ॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ श्रुतज्ञाने ॥ २९ ॥

गुरुलघ्वादिपर्यायाः

तंजहा- सपज्जाया असपज्जाया य, तत्थ सपज्जायत्ति वा अत्थिभावोत्ति वा विज्जमाणभावोत्ति वा एगट्ठा, असपज्जायत्ति वा णत्थिभावोत्ति वा अविज्जमाणभावोत्ति वा एगट्ठा, तत्थ जे ते सपज्जाया ते दुविहा, तंजहा-संबद्धा असंबद्धा य, जेऽवि ते असपज्जाया तेऽवि दुविहा, तं०-संबद्धा असंबद्धा य, एत्थ णियरिसणं अकारो, अकारस्स जे सपज्जाया ते अत्थित्तेण संबद्धा, णत्थित्तेण असंबद्धा, ते चेव अकारपज्जाया अण्णेसिं अत्थित्तेण असंबद्धा णत्थित्तेणं संबद्धा, तहा जे असपज्जाया अकारस्स ते णत्थित्तेण संबद्धा, अत्थित्तेण असंबध्धा ते चेव अकारस्स असपज्जाया अन्नेसिं अत्थित्तेण संबद्धा, णत्थि० असं० एवं एतेण पगारेण सव्वत्थ सपज्जाया असपज्जाया संबद्धा असंबद्धा य चारेयव्वा। अक्खरग्गहणेण णाणस्स गहणं कतं, णाणं च णेयाओ अव्वतिरित्तं, कहं?, जाव जाणियव्वा भावा ताव णाणं, अतो एतेसिं णाणणेयाणं परिमाणं इमं भण्णति, तंजहा-सव्वागासपदेसग्गं अणंतगुणितं पज्जवग्गं अक्खरं लब्भति, तत्थ सव्वसद्दो णिरवसेसिए अत्थे वट्टइ, आगासं पसिद्धं चेव, तस्स जं पएसग्गं, अग्गंति वा परिमाणंति वा पमाणंति वा एगट्ठा, तेण चेव सव्वागासपदेसग्गेण अणंतगुणितं पज्जवग्गं अक्खरं लब्भति, पज्जायाणं च एगमेगस्स आगासपदेसस्स जावइया अगुरुलहुपज्जाया तेसिं संपिंडियाणं जं अग्गं एतं परिमाणं अक्खरस्सत्ति, णाणपमाणंति वुत्तं भवति ।

इयाणिं एतेसिं अगुरुलहुदव्वाणं परूवणा भण्णति, गुरुलहुदव्वाणि य पडुच्च अगुरुलहू भवंति अतो पुव्विं तेसिं परूवणं काहामो, यच्छा अगुरुलहुदव्वाणंति, णिच्छयणयस्स णत्थि सव्वगुरुं दव्वं, णावि सव्वलहुं, ववहारणयादेसेण पुण बायरखंधेसु सव्वेसु दोऽवि अत्थि, जहा सव्वगुरू कोडियसिला, सव्वलहु मूलगपत्तं तूलं वा, आह-केसु खंधेसु बादरसन्ना लब्भतित्ति?, उच्यते, परमाणुतो आढत्तं जाव अणंतपदेसितो खंधो एते सुहुमा खंधा भण्णंति, अगुरुलहुपज्जाया य णिच्छयतो एतेसिं भवंति, जे णो गुरू णो ॥ २९ ॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ श्रुतज्ञाने ॥ ३० ॥

लहुगा ते अगुरुलहुपज्जाया भण्णंति, जे पुण सुहुमातो अणंतपदेसितातो आरब्भ अणंताणंतपदेसिया खंधा तेसिं जे पज्जाया ते गुरुया लहुया य णिच्छयतो णातव्वत्ति, जे य गुरुदव्वाणं गुरुलहुयपज्जाया जे य अगुरुलहू ते बुद्धीए पिंडेतुं तेण चेव रासिणा जाहे अणंते वारे गुणिया भवंति ताहे एगस्स अमुत्तदव्वस्स अगुरुलहुपज्जवेहिं समा न भवंति, एत्थ सीसो चोदेति-एवं केवइएहिं मुत्तदव्वाणं पिंडियपज्जाएहिंतो अमुत्तदव्वाणं अगुरुलहुयपज्जाया अणंतगुणा भवंति ?, आयरिओ आह- बहुयावि अणंतएण गुणेज्जमाणे णत्थि परिमाणंति, तम्हा एतेण कारणेण अमुत्तदव्वस्स अगुरुलहुपज्जाया अणंता भवंति, जावइया य अमुत्तदव्वस्स अगुरुलहुपज्जाया एवइयं पमाणं अक्खरस्सत्ति ॥ एयस्स य अक्खरस्स सव्वजीवाणं अणंतभागोऽवि णिच्चुग्घाडियतो, कहं ?, अणुत्तरोववाइयाणं देवाणं सव्वविसुद्धं सुतणाणं, तयणंतरं असंखेज्जगुणपरिहीणं उवरिमगेवेज्जगाणं, एवं च जाव पुढविकाइयाणं ताव असंखेज्जगुणपरिहीणा सेढी, जइ य तेसिं तंपि थोवगं आवरियं होंतं ततो तेसिं अजीवभावतो होंतो, जं च तेसिं तं थोवगं णावरितं से अणंततमो भागो अक्खरस्स णातव्वोत्ति । एत्थ दिट्ठंतो रविपहा, जहा-सुट्ठुवि मेहच्छण्णं णहं तहावि रविणो पभा अत्थि चेव, एवं णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स अणंतेहिं अविभागपलिच्छेदेहिं जतिवि एक्कक्को जीवपदेसो आवेढितो परिवेढितो भवति तहावि णाणभावो अत्थि चेव पुढविकाइयादीणंति । अक्खरसुतं गतं, इयाणिं अणक्खरसुतं भण्णति, तंजहा

ऊससितं० ॥२०॥ उस्ससियादीणि सिंघितावसाणाणि कंठाणि, अणुस्सारं णाम पम्हुट्ठे अत्थे सतं वा संभरिते अण्णेण वा संभारिते जं अक्खरविरहितं सद्दकरणं तमणुस्सारं भण्णइ, छीलितं णाम सिंटी, आदिग्गहणेण य पुप्फसिकिडिकारजड्डिमुड्डिप्पहारसद्दादिणोऽवि भेदा गहिता भवंति, से तं अणक्खरसुयं २। इयाणिं सण्णिसुयं भण्णति, सण्णि णाम जो संजाणावि, ईहापोहादि-

उद्घाटितोऽनन्त भागः संज्ञिश्रुतं

॥ ३० ॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ श्रुतज्ञाने

॥ ३१ ॥

संज्ञ्यसंज्ञि-श्रुतं

गुणजुत्तोत्ति वुत्तं भवति, तस्स जं सुतं तं सण्णिसुयं भण्णति, तं च तिविहं, तंजहा-कालिओवएसेण हेतुवाओवदेसेण दिट्ठिवा-ओवएसेणंति, तत्थ कालिओवदेसो णाम जो सब्भावो कालणियमेण पढिज्जति सो कालिओ भण्णति, तस्स उवएसो कालिओव-एसो, तेण जस्स अत्थि ईहा वूहा मग्गणा य गवेसणा सो कालिओवदेसेण सण्णी भण्णति, सो पुण सण्णी सद्दं सोऊण तस्स अत्थं ईहितुकामो अणंतपदेसिए खंधे मणपाउग्गे अणंते कायजोगेण घेत्तुं मणयति, ततो तस्स सण्णिणो जहा चक्खुसामत्थजुत्तस्स पुरिसस्स पगाससंजुत्ते रूवे उवलद्धी भवति एवं तस्सवि सोइंदियादीहिं पंचहि मणेण य जुत्तस्स सद्दं सोऊणं अत्थोवलद्धी भवति, से तं कालिओवदेसेणं सण्णिसुतं भण्णति १। इयाणिं हेउगोवएसेणं भण्णति-तत्थ हेउगोवएसोत्ति वा कारणोवएसोत्ति वा पगरणोवएसोत्ति वा एगट्ठा, सो य हेउगोवएसो गोविंदणिज्जुत्तिमादितो, तंमि भणितं-जस्स अहिसंधारणपुव्विगा करणसत्ती अत्थि सो सण्णी लब्भति, अभिसंधारणपुव्विया णाम मणसा पुव्वापरं संचिंतिऊण जा पवित्ती निवत्ती वा सा अभिसंधारण-पुव्विगा करणसत्ती भण्णति, सा य जेसिं अत्थि ते जीवा जं सद्दं सोऊण बुज्झंति तं हेउगोवएसेण सण्णिसुयं भण्णति २। इयाणिं दिट्ठिवाइगोवदेसेणं सण्णिसुयं भण्णइ-तत्थ दिट्ठिवाओ चोद्दस पुव्वाणि तस्स उवदेसो २ तेण जेहिं कम्मेहिं सण्णिभावो आवरितो तेसिं केसिंचि खएण केसिंचि उवसमेणं सण्णिभावो लब्भति, सो य सण्णी जं सद्दं सुणेति सुणित्ता य पुव्वावरं बुज्झति तं दिट्ठि-वाइओवदेसेण सण्णिसुयं भण्णति, सेसं सन्निसुतं ३।

इयाणिं कालियहेतुदिट्ठिवाइओवदेसेण चेव असण्णिसुयं भण्णइ, तत्थ कालिओवएसेणं जम्हा जस्स णत्थि ईहा वूहा मग्गणा गवेसणा सो असन्नी भवति, तस्स य सद्दं सोऊण अव्वत्ता अत्थोवलद्धी भवति, कहं ?, जहा पित्तमुच्छिकतस्स मज्जाईहिं वा

॥ ३१ ॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ श्रुतज्ञाने

॥ ३२ ॥

संज्ञ्यसंज्ञि-सम्यग्मि-थ्या-श्रुतानि

दव्वेहिं मत्तस्स इंसिं वा सइयंस्स सद्दं सोऊण अव्वत्ता अत्थोवलद्धी भवति, जहा य से सद्दे विसओवलद्धी अव्वत्ता तहा रूवगंधरसफासाणवि जा अत्थोवलद्धी सावि अव्वत्ता चेव भवति, सेत्तं कालिओवएसेण असन्निसुयं। इयाणिं हेउगोव० जस्स णं अभिसंधारणपुव्विया करणसत्ती णत्थि से असन्नी भवति, सो य तीए तहाविहाए सत्तीए अभावेण जं सद्दादिअत्थं उवलभति तं अव्वत्तं उवलभति, सेत्तं हेउगोवएसेणं असन्निसुयं। इयाणिं दिट्ठिवाइतोवएसेण असन्नीसुयं भण्णति, तंजहा-अत्थि ते असण्णिणो बेइंदियाई जेसिं असण्णिसुतावरणकम्मोदएण सोयव्वलद्धी चेव णत्थि, केसिंचि पुण असण्णिणं पंचेंदियाणं सोइंदियावरणस्स कम्मस्स खओवसमेण असण्णिसुयलद्धी भवति, तेसिंपि जा सद्दादिसु अत्थेसु उवलभियव्वएसु लद्धी साऽवि अव्वत्ता चेव, सेतं दिट्ठिवाइगोवदेसेणं असण्णिसुयं भण्णति। एयं च असण्णिसुतं असण्णिपंचिंदियं पडुच्च एव भणियं, एगिंदियबेइंदियतेइंदियचउरिंदियाण य मइसुयाणि अण्णोऽण्णाणुगयाणित्तिकाउं तेसिंपि तिविहेणवि कालिगहेउगदिट्ठिवादिओवदेसेण असण्णिसुयं अत्थि चेव, एत्थ सीसो आह- एतेसिं पुण सण्णिसुयअसण्णिसुयाणं तुल्लेऽवि जीवभावत्ते को पतिविसेसो ?, आयरिओ आह- जहा तुल्ले लोहभावे जा तिण्हया चक्करयणस्स, तओ बहुगुणपरिहीणा पिंडलोहसत्थस्स, तओ परिहीणतरा अपिंडलोहसत्थस्स, एवं जा सण्णीणं इंदिओवलद्धी सा बहुगुणपरिहीणा असन्निपंचिंदियाणं, ततो बहुगुणपरिहीणा जहाणुक्कमेण चतुरिंदियतेइंदियबेइंदियएगेंदियाणंति। सेतं असण्णिसुतं।

अण्णे पुण सामण्णेण जस्स णं ईहापोहमग्गणगवेसणा अत्थि से सण्णी लब्भइ, जस्स णत्थि से असण्णी, से तं कालिओवएसेणं, जस्स णं अभिसंधारणपुव्विका करणसत्ती से सण्णी लब्भइ, जस्स णत्थि सो असण्णी, से तं हेतु०, सण्णिसुयस्स खओवसमेण

॥ ३२ ॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ श्रुतज्ञाने

॥ ३३ ॥

साद्यनादि-सपर्यव सितापर्यव-सितानि

सण्णी, असण्णिसुयस्स खओवसमेण असण्णी, सेतं दिट्ठिवाईओवदेसेणं, सेतं सण्णिसुतं, सेतं असण्णिसुतं ४।

इदाणिं सम्मसुतं, जं इमं अरहंतेहिं भगवंतेहिं आयाराइ दुवालसंगं गणिपिडगं परूवितं एतं सम्मदिट्ठिपरिग्गाहितं सम्मसुतं, मिच्छदिट्ठिपरिग्गहियं पुण मिच्छसुयं भवइ, सेत्तं सम्मसुतं ५। से किं तं मिच्छसुतं?, मिच्छसुयं जं इमं अन्नाणिएहिं मिच्छदिट्ठीहिं सच्छन्दपरिकप्पियं, तंजहा-भारहं रामायणं एवमादि मिच्छदिट्ठीपरिग्गहियं मिच्छसुयं भण्णति, एयं चेव सम्मदिट्ठीपरिग्गहियं सम्मसुतं भण्णति, सेत्तं मिच्छसुयं ६। इयाणिं सादियं अणादीयं सपज्जवसियं अपज्जवसियं च एत्ते चत्तारिवि दारा समगं चेव भण्णन्ति, तंजहा-इच्चेयं दुवालसंगं गणिपिडगं वोच्छित्तिणयट्ठयाए सादीयं सपज्जवसितं, अवोच्छित्तिणयट्ठयाए अणाईयं अपज्जवसियं, अभवसिद्धियस्स सुतं अणादीयं अपज्जवसियं, भवसिद्धियस्स सुयं अणाइयं सपज्जवसियंति। अण्णे तं समासओ चउव्विहं, तंजहा-दव्वओ खेत्तओ कालओ भावतो, दव्वतो एगं पुरिसं पडुच्च साईयं सपज्जवसितं, कहं?, जम्हा पंचहिं ठाणेहिं सुतं सिक्खिज्जा० (जहा नंदीए, एगं) पुरिसं पडुच्च सुयणाणं सादीयं सपज्जवासियं भवति, आह-तुब्भेहिं भणियं, जहा-देवलोगं गयस्स सुयणाणं परिवडइ, तो कहं इमो आलावगो एवं पढिज्जति?, जहा ‘इहभविए भंते! णाणे पारभविए नाणे तदुभयभविए नाणे?, गोयमा! इहभविएऽवि नाणे परभविएऽवि णाणे तदुभयभविएऽवि णाणि’त्ति, उच्यते, एगणयादेसेण एस आलावगो एवं पढिज्जति, कहं परभवियं तदुभयभवियं (वा)णाणं णियमा भवति?, ण पुण जो णाणमहिज्जते तस्स सव्वस्स चेव एवं भवति, कम्हा?, जम्हा चोद्दसपुव्वी देवलोगं गओ णियमा तं सव्वं सुयण्णाणं णिरवसेसं ण संभरति, जो पुण एगंगवी जाव भिण्णदसपुव्वी सो सव्वं णिरवसेसं संभरेज्ज वा ण वा, तम्हा सिद्धं इहभविए णाणे परभविए णाणे तदुभयभाविए णाणेत्ति। बहवे पुण पुरिसे पडुच्च अणादीयं अपज्जवासियं, संताणधम्मेण

॥ ३३ ॥

आगम (४०)	"आवश्यक"- मूलसूत्र-१ (निर्युक्ति:+चूर्णि:) अध्ययनं [-], मूलं [- /गाथा-], निर्युक्ति: [२०], भाष्यं [-]
प्रत सूत्रांक [-] दीप अनुक्रम [-]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता...........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

श्री आवश्यक चूर्णौ श्रुतज्ञाने ॥ ३४ ॥

भवतित्ति, खेत्तओ पंच भरहाइं पंच एरवयाइं पडुच्च साईयं सपज्जवसियं, पंच विदेहाइं पडुच्च अणादीयं अपज्जवसितं, कालेत्ति छव्विहं उस्सप्पिणिं छव्विहं ओसप्पिणिं पडुच्च सादीयं सपज्जवसितं, णोउस्सप्पिणिअवसप्पिणिं पडुच्च अणादीयं अपज्जवसितं, भावओ पण्णवगं पडुच्च पण्णवणिज्जा य भावा पडुच्च सादीयं सपज्जवसितं, कहं ?, जओ उवउत्तो पण्णवेति अणुवउत्तो पण्णवेति, तहा उदत्तेण सरेण पण्णवेतुं अणुदत्तेण पण्णवेति, तहा आयरेण पण्णवेतुं अणादरेण पण्णवेति, तहा निच्चलो पण्णवेउं आउंटणपसारणादीणि कुव्वंतो पण्णवेति, एवमादिसु कारणेसु पण्णवगं पडुच्च भावओ सादीयं सपज्जवसियं सुयणाणं भवति । इयाणिं पण्णवणिज्जा भावा पडुच्च जहा तहा भण्णति–गतिपरिणयं दव्वं पण्णवितुं ठाणपरिणयं पण्णवेति, अतो सादीतं सपज्जवसितं भवति, तथा दुपएसितं खंधभेदं पण्णवेऊण तिपएसियं पण्णवेति, एवमादिभेदं पडुच्च सादीयं सपज्जवसियं, तहा दो परमाणू संहता दुपदेसितो गंधपरि० वण्ण० खंधो भवति, एवं पण्णवेतुं तिपदेसितं एवमादि संघायं पडुच्च सादीसपज्जवसियं, तहा दव्वाणं वण्णपरिणामं पण्णवेऊण० एवमादी पण्णवणिज्जा भावा पडुच्च सादिसपज्जवसियं । जम्हा खओवसमिते भावे णिच्चं वट्टइ सुयणाणं, वट्टा य अत्था जम्हा दव्वट्ठयाए णिच्चा अतो सुयणाणं भावतो अणादीयं अपज्जवसियं च भवति । गताणि चत्तारिवि दाराणि ७-८-९-१०

इयाणिं गमियं अगमियं च दोऽवि दारा समं भण्णंति, तत्थ गमियं णाम जं भंगजुत्तं गणितगमियं वा, जं वा कारणवसेण सरिसगमं भवति, तत्थ भंगगमियं एगदुगतिगचउभंगमादी, गणियगमितं णाम जहा एक्कजीवाधणुपट्ठकरणेण अण्णाणिवि जीवाधणुपट्ठाणि गणिज्जंति, सरिसगमं णाम जहा- कोहस्स उदयनिरोहो कायव्वो उदयपत्तस्स विफलीकरणं कायव्वंति तहा माणमायालोभाणवि, एवमादि ११ । अगमितं विवरीयं १२ ।

सादादीनि गमिकागमिकांगानंगानि ॥ ३४ ॥

	गमिक-अगमिक श्रुतस्य स्वरुपम्

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

श्री आवश्यक चूर्णौ श्रुतज्ञाने

॥ ३५ ॥

भूतवादेऽयोग्याः श्रुतस्य विषयः

इयाणिं अंगपविट्ठं बाहिरं च दोण्णिऽवि भण्णंति, अंगपविट्ठं आयारो जाव दिट्ठिवाओ, अणंगपविट्ठं आवस्सगं तव्वातिरित्तं च, आवस्सगं सामादियमादी पच्चक्खाणपज्जवसाणं, वतिरित्तं कालियं उक्कालियं च, तत्थ उक्कालियं अणेगविहं, तंजहा- दसवेयालियं कप्पियाकप्पियं एवमादि, कालियंपि अणेगविहं, तंजहा-उत्तरज्झयणाणि एवमादि १३-१४ ॥ एत्थ सीसो आह जहा दिट्ठिवाए सव्वं चेव वयोगतमत्थि तओ तस्स चेव एगस्स परूवणं जुज्जति, आयरिओ आह- जतिवि एवं तहावि दुम्मेहअप्पाउयइत्थियादीणि य कारणाणि पप्प सेसस्स परूवणा कीरतित्ति, तत्थ बहवे दुम्मेधा असत्ता दिट्ठिवायं अहिज्जिउं अप्पाउयाण य आउयं ण पहुप्पति, इत्थियाओ पुण पाएण तुच्छाओ गारवबहुलाओ चलिंदियाओ दुब्बलधिईओ, अतो एयासिं जे अतिसेसज्झयणा अरुणोववायणिसीहमाइणो दिट्ठिवातो य ते ण दिज्जंति, तत्थ तुच्छा नाम पुव्वावरओ वक्खाणे असमत्था, गारवबहुला णाम गव्वमन्तीउत्ति, चलिंदियाओ णाम इंदियविसयणिग्गहे भूयावादं पप्प असमत्थाओ, दुब्बलधितीओ णाम चलचित्ताओ इति मा तं सुयणाणलद्धीं उवजीविस्संति, अतो तेसिं अतिसेसज्झयणाणि वारिज्जंतित्ति। गतं अंगबाहिरं, सम्मत्तं च चोद्दसविधणिक्खेवं सुयणाणं ॥

एतंपि संतपदपरूवणाईहिं दारेहिं अविसेसमणाणत्तं जहा आभिणिबोहियणाणं भणितं तहा भाणियव्वं । तं च समासओ चउव्विहं, तंजहा- दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ । दव्वओ णं सुयणाणी उवउत्तो सव्वदव्वाइं जाणइ पासइ, एवं खेत्तओ सव्वखेत्तं जाणति पासति, एवं कालभावावि भाणियव्वा । केति पुण पढंति- दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ, दव्वओ णं सुयणाणी जाणाति न पासति, एत्थ सीसो आह--सुट्ठु जे एवं पढंति, आयरिओ आह-कहं?, सीसो आह-जं पच्चक्खग्गहणं ण एंति सुयणाणसंसिया अत्था । तम्हा दंसणसद्दो ण होति सकलेऽवि सुयणाणे ॥ १ ॥ आयरिओ आह-जे जाणति पासतित्ति एवं पढंति ते इमं ॥ ३५ ॥

अंगप्रविष्ट एवं अंगबाह्य श्रुत

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ श्रुतज्ञाने

॥ ३६ ॥

बुद्धिगुणाः

कारणं पडुच्च, जम्हा सुग्नणाणी दीवसमुद्दाणं देवकुरूत्तरकुरादीणं च भावाणं संठाणादीणि जाणंतो पासंतो इव आलिहि-
ऊणं दरिसेति अतो जाणति पासतिचि एस आलावगो न विरुज्झइ ॥ इयाणिं इमस्स सुतणाणस्स इमो गहणोवाओ भण्णति—

आगमसत्थग्गहणं० ॥ २१ ॥ आह- आगमग्गहणेण चेव सत्थग्गहणं गतं, किं पिहुग्गहणं?, उच्यते, णज्जंति अत्था जेण सो आगमो, ते य पंचविहेणऽवि णज्जंति, अतो सुयणाणवज्जाणं चउण्हं निवारणत्थं सत्थग्गहणं कीरति, अहवा सुयणाणस्स चेव पज्जायभेदपदरिसणत्थं सत्थग्गहणं, तस्स आगमसत्थस्स जं गहणं भवति तं अट्ठहिं बुद्धिगुणेहिं जुत्तस्स सीसस्स भवति, ण पुण एताद्विरहियस्स, एवं तित्थयरेहिं दिट्ठंति ॥ आह- कस्सेसो आदेसो जहा एतं एवं ?, आयरिओ आह- तं पुव्वविसारया धीरा. थिराइगुणजुत्ता आयरिया एतेण पगारेण सुतणाणस्स लंभं बेंतित्ति । ते अट्ठ बुद्धिगुणा इमे—

सुस्सूसति पडिपुच्छति० ॥२२॥ सुस्सूसति णाम सोतुमिच्छति, आयरियस्स विणयं पउंजति, विणओववेयस्स आयरिओ सविसेसं सुयं उवदिसति, अतो सुस्सूसा सुयणाणग्गहणस्स उवग्गहे वट्टइ, तहा पडिपुच्छाइणोऽवि सुयणाणस्स उवग्गहे चेव वट्टंति । पडिपुच्छाणाम संकियस्स वीसरियस्स वा जा पुणो पुणो पुच्छणा, सुणेति णाम णिसामेति, गेण्हति अवधारयति, ईहति- मग्गति, सुत्तत्थपदं गवेसतित्ति वुत्तं, अपोहए णाम एवमेतं ण अन्नहा इति निच्छितं करेति, धारेति परियट्टणुप्पेहाहिं, ण णासेति, करेति सुत्तोवदेसे सम्ममायरतित्ति ।

एवमेतं, सुयणाणं सम्मत्तं, सम्मत्तं च दुविहमवि परोक्खं । इयाणिं तिप्पगारं पच्चक्खं भण्णइ, तत्थ पढमं ताव ओहिणाणं भण्णति, तस्स य पयडिभेयपयरिसणत्थं इमं गाहासुत्तं—

॥ ३६ ॥

'ओहि'ज्ञानस्य स्वरुपादि वर्णनं आरभ्यते

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ श्रुतज्ञाने ॥ ३७ ॥

चतुर्दशविधोऽवधिः

['इतः प्राक् वृत्तौ 'मूल' तिगाथा 'सुत्तत्थो' गाथा च वर्त्तेते] संखाइयातो खलु० ॥ २५ ॥ तत्थ संखा गणणा तं संखं अतीयाओ २, (ओहारणे) खलुसद्दो, जहा निरुवियत्थो ओहिसद्दो मज्जायाए वट्टति, जओ मज्जायत्ति वा ओहित्ति वा मेरत्ति वा एगट्ठा, सा य मज्जाया इमा-जाणि रूविदव्वाणि तेसु जम्हा ओहिणाणस्स विसओ, ण पुण अमुत्तदव्वेसु धम्मात्थिकायादिसु, णाणसद्दो परिपठ्ठो, ओहिए णाणं २, सव्वसद्दो निरवसेसिए अत्थे वट्टति, पगडीओत्ति वा पज्जायात्ति वा भेदात्ति वा एगट्ठा, एयाओ यं काई भवपच्चइयाओ काओ य खाओवसमियाओ, तत्थ भवपच्चइयाओ देवाणं णेरइयाण य, कहं ?, जहा पक्खीणं विज्जादिसयादिकारणविरहियाणवि भवपच्चएण चेव आगासगमणलद्धी भवति, एवं देवणेरइयाणं भवपच्चइया ओहिणाणलद्धी भवति, मणुस्सपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पुण खओवसमिया ॥ एयाओ असमत्थो वित्थरतो वण्णेउंति काउं इमं गाहासुत्तं भण्णइ—

कत्तो मे वण्णेउं० ॥ २६ ॥ गाहापुव्वद्धं गतं । किं पुण ?, संखेवेण जहा चोद्दसविहं सुयणाणं परूवियं तहा ओहिणाणमवि चोद्दसविहनिक्खेवं चेव भणिहामि, तप्पसंगेण य इड्ढीपत्ते य भणिहामित्ति, ते य ओहिस्स चोद्दसऽवि भेदा इड्ढीपत्ताणुओगो य इमाहिं दोहिं गाहाहिं संगहिता, तंजहा—

ओही खेत्त परिमाणे०॥२७॥ गाहा। णाण दंसणविब्भंगे०॥२८॥ गाहा,तत्थ ओहित्ति पढमा पडिवत्ती,बीया खेत्तपरिमाणं, तइया संठाणे, चउत्थी आणुगामिए, पंचमी अवट्ठिए, छट्ठी चले, सत्तमा तिव्वमंदे, अट्ठमा पडियाओप्पाया, णवमा णाणे, दसमा दंसणे, एक्कारसमा विभंगे, बारसमा देसे, तेरसमा खेत्ते, चोद्दसमा गतीएत्ति । इड्ढिपत्ताणुओगे य तप्पसंगेण पण्णरसमा पडिवत्ती भवति, पडिवत्ती णाम भेदो पगारोत्ति वुत्तं । तत्थ पढमाए पडिवत्तीए परूवणत्थं इमं गाहासुत्तं— ॥ ३७ ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता..........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णिः-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ श्रुतज्ञाने ॥ ३८ ॥

अवधिक्षेत्र-द्वारे

णामं ठवणा०॥२९॥ गाहा, सत्तविहो ओहिस्स निक्खेवो भवति, तंजहा-णामोधी ठवणोही दव्वोहि खेत्तोधी कालोधी भवोधी भावोहित्ति । तत्थ णामठवणाओ जहा मंगलं, दव्वोही दुविहो, आगमतो णोआगमतो य, आगमओ जाणए अणुवउत्ते, णो आगमओ३ जाणगसरीराई तहेव, केवलं वतिरित्तो इमो जे दव्वे ओहिणा जाणति जे वा ओहिदिट्ठे परूवेति जेसु वा दव्वेसु ठियस्स ओही उप्पज्जइ जेसु वा ठियल्लओ ओहिं परूवेति से तं दव्वोधी, खेत्तोधी णाम जंमि खेत्तंमि ओगाढाणि दव्वाणि जाणति जाणित्ता वा परूवेति, जंमि वा काले ओही उप्पज्जइत्ति जंमि वा परूवेति, भवोही णाम जेसु णरयादिसु भवेसु ओही उप्पज्जति, उप्पन्नेण वा जावइयाणि भवाणि अप्पणो वा परस्स वा तीताणागताणि जाणति पासति परूवेति वा जम्मि वा भवे ठियो ओहिं परूवेति, भावोधी णाम २, आगमतो णोआगमतो, आगमतो तहेव, णोआगमतो ओहिणाणस्स उदइयादिणो भावे जाणमाणस्स परूवेमाणस्स य भवति । अहवा ओहिणाणं चेव सामित्तेण असंबद्धं भावोधी भण्णति, ओहित्ति दारं गतं ।

इदाणिं खेत्तपरिमाणं, तत्थ ओहिस्स रूविदव्वेसु विसओ, ताणि य रूविदव्वाणि खेत्तावबद्धाणित्तिकाऊण खेत्तस्स परिमाणं भण्णति, तं चेह खेत्तपरिमाणं तिविहं- जहन्नयं उक्कोसयं मज्झिमंति, जेसिं च जीवाणं गुणपच्चातितो ओधी ते पडुच्च एस जहण्णओ उक्कोसओ य ओही इयाणिं भण्णति, तत्थ पुव्विं ताव जहण्णखेत्तस्स परूवणा इमा, तंजहा—

जावतिया तिसमयाहारगस्स० ॥३०॥ गाहा, अत्थि इहं तिरियलोए सयंभूरमणो नाम सव्वबहिरओ समुद्दो, तंमि जो मच्छो जोयणसाहस्सिओ सो मरिऊण णियए चेव सरीरकवल्ले सुहुमपणगत्तेण उववज्जिउकामो पढमसमए पुव्वावरायतं दीहं सेढिं साहरति, बितिए समए वित्थारं साहरति, तइए समए हेट्ठुच्चत्तं साहरति, सा० चउत्थे समए अंगुलस्स असंखेज्जभागमेत्तीए ओगा-

॥ ३८ ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता..........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णिः-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ श्रुतज्ञाने

॥ ३९ ॥

हणाए अप्पणो देहकवछे सुहुमपणगजीवत्ताए उववन्नो, तस्स णं पढमबितियततियसमये आधारयस्स जावइए खेत्ते सा सरीरोगाहणा एवइए खेत्ते रूविदव्वाणि ओगाढाणि जहण्णेण ओहीनाणी जाणति पासति। जहण्णयं खेत्तपरिमाणयं गयं।

अवधेरुत्कृष्टं क्षेत्रं

इदाणिं उक्कोसं भण्णति-सव्वबहुअगणिजीवा० ॥३१॥ जया पंचसु भरहेसु पंचसु एरवयएसु उत्तमकट्ठपत्ता मणुगा भवंति तदा सव्वबहुअगणिजीवा णायव्वा, जेण तत्थ लोगबाहुल्लयाए पयणादीणिवि चेव बहूणि भवंति, आह- कया पुण अतीव उत्तमकट्ठपत्ता मणुया आसि ?, उच्यते, जया अजियसामी आसि तदा मिहुणधम्मभेदगुणेण चिरजीवियत्तणेण य बहुपुत्तणत्तुका मणुया जाया, अतो अजियसामिकाले उत्तमकट्ठपत्ता मणुया आसित्ति, एत्थ सीसो आह- ते सव्वे अग्गिजीवा बुद्धीए रासिं काऊण एक्केके आगासपदेसे एक्केकं अगणिजीवं ठवेऊण रुयगसंठियं खित्तं कीरइ, एवं ठविज्जंते सव्वदिसागं रुयगं पूरित्ता अलोए असंखेज्जाणि जोयणाणि सो रुयतो पविट्ठो, एवतियं खेत्तं उक्कोसे आहिणाणस्स विसओ भवतित्ति ?, आयरिओ आह- अतिथोवं एयं, अवि य- अवासिद्धंतदोसो य एत्थ, कहं ?, जेण एक्कंमि आगासपदेसे ण चेव जीवस्स अवगाहणा भवति, णियमा असंखेज्जेसु आगासपदेसेसु जीवो ओगाहतित्ति। एत्थ पुणोऽवि सीसो आह— जति एवं ततो ते अगणिजीवा सगाए असंखेज्जपदेसिआए ओगाहणाए रुयओ कीरउ सो पुणोऽवि य लोयं पूरित्ता असंखेज्जाणि जोयणाणि अलोए पविट्ठो, एवइयं खेत्तं परमोही जाणइ पासइ ?, आयरिओ आह- जतिवि एत्थ अवसिद्धन्तो णत्थि तहावि अतत्थोवएसो भवति चेव, तओ पुणोऽवि सीसो आह- तो खाइं एगपदेसितं पतरं रइज्जति उड्डअहदिसिवज्जं तं जहा पतरं लोगं पूरित्ता असंखेज्जाणि जोयणाणि अलोए पविट्ठं, एवतियं खेत्तं परमोही जाणइ पासइ ?, आयरिओ भणइ- एवमवि अतिथोवं, अवसिद्धंतो य पुव्वप्पगारेणेव, सीसो पुणो आह- तो ते अगणिजीवा सगाए २

॥ ३९ ॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ श्रुतज्ञाने ॥ ४० ॥

मध्यमावधेः क्षेत्रादयः

असंखेज्जपदेसियाए ओगाहणाए पतरं कीरउ, तं च पतरं लोगं पूरित्ता जाव पविट्ठं एवतियं जाव पासति ?, आयरिओ भणति- एवं अतिथोवं, पुणो सीसो आह- तो खाइ एगादिसिं एगपदेसियाए सेढीए ते सव्वे अगणिजीवा एगमेगे आगासपदेसे एक्केकं अगणिजीवं ठावेंतेहिं सूई कीरउ जाव सव्वे णिट्ठिया, सा य सूई लोगं वोलेत्ता असंखेज्जाइं अलोए लोयप्पमाणमेत्ताइं खंडाइं पविट्ठा, ततो बुद्धीए उड्डअहतिरियासु सव्वासु दिसासु भमाडिया, एवतियं जाव पासति ?, भण्णति- तहावि अतिथोवं एयं, अवसिद्धंतो य तहेव, पुणोऽवि आह- तो ते सव्वेऽवि अगणिजीवा सगाए असंखेज्जपएसियाए ओगाहणाए एगादिसिं सूई कीरउ जाव सव्वेऽवि ते अगणिजीवा णिट्ठिता, सा य सूई लोगं वोलेत्ता असंखेज्जाइं अलोए लोयप्पमाणमेत्ताइं खंडाइं पविट्ठा, ततो उड्डअहतिरियासु सव्वासु दिसासु भमाडिया, एवतितं खेत्तं परमोही जाणति पासति ?, आयरिओ आह- आमं, एवतियं खेत्तं जाणति पासइ। सो य परमोही अंतोमुहुत्तं भवति, ततो परं केवलनाणं समुप्पज्जति, उक्कोसं ओहिखेत्त परिमाणं गतं। एतेसिं जहण्णुक्कोसाणं जं मज्झ तं मज्झिमं भणितं। तहावि सीसहियट्ठाए विभागं दरिसेति—

अंगुलमावलियाणं० ॥३२॥ जो ओहिनाणी अंगुलस्स असंखेज्जभागमेत्तं रूविदव्वाबद्धं खेत्तस्स वित्थारं जाणति पासति दव्वतो जे तत्थ रूविदव्वा ते जाणति पासति, खेत्तं पुण अरूविं ण जाणति ण पासति, सो कालओ आवलिआए असंखेज्जइभागे जावइया समया एवइयं कालं तीयं च अणागयं च जाणति पासति, भावतो जे तेसिं अंगुलस्स असंखेज्जइभागावाढियाणं दव्वाणं कालगणीलगाइणो पज्जाया ते जाणति पासति १। जो अंगुलस्स संखेज्जभागमेत्तं रूविदव्वावबद्धं खेत्तस्स वित्थारं जाणइ पासइ सो दव्वओ अंगुलस्स संखेज्जतिभागमेत्ते जावतिया रूविदव्वा ते जाणइ पासइ, कालओ आवलियाएवि संखेज्जइभागे जावतिया

॥ ४० ॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ श्रुतज्ञाने ॥ ४१ ॥

समया एवतियं कालं तीयं च अणागयं च जाणइ पासइ, भावतो तेसिं अंगुलस्स संखेज्जतिभागावड्डियाणं दव्वाणं कालपणी- लगाइणो पज्जाते जाणति पासति २। एवं जो अंगुलं पासति वित्थरतो सो आवलियस्संतो जाणइ पासति, ३। जो अंगुलपुहुत्तं सो आवालियं पुण्णं जाणति पासति दव्वाणि, भावतो य तहेव। तत्थ पुहुत्तसद्दो दोसु आरद्धो जाव णव लब्भंतित्ति ४। मज्झिमओ- हिखेत्तपरिमाणे चेव वट्टमाणे इमोवि मज्झिमओ चेव ओही दट्ठव्वो-तंजहा— मध्यमावधेः क्षेत्रादयः

हत्थंमि मुहुत्तंतो० ॥ ३३ ॥ जो हत्थवित्थरं खेत्तं पासति सो कालतो अंतोमुहुत्तं तहेव जाणति पासति, दव्वभावावि सव्वत्थ तहेव भाणियव्वा५ जो पुण गाउयं सो दिवसब्भंतरं ६। जो जोयणं जा०पा० सो दिवसपुहुत्तं ७, जो पणवीसं जोयणाणि सो पक्खंतो ८। किं च- एयंमि चेव अहिगारे इमं गाहासुत्तं- तंजहा—

भरहंमि अद्धमासो० ॥ ३४ ॥ जो भरहप्पमाणमेत्तं रूविदव्वावबद्धं खेत्तस्स वित्थारं जाणति पासति तस्सवि दव्वभावा जहा हत्थस्स, कालपरिमाणं पुण से संपुण्णं अद्धमासं तीतं च अणागयं च कालं जाणति पासति ९। एवं जंबुद्दीवे साहितो मासो १०, माणुसखेत्ते वरिसं ११, जो इतो जाव रुयगवरो दीवो एयप्पमाणमित्तं जाव पासति कालपरिमाणं से वासपुहुत्तं जाव पासइ, १२ अण्णे वाससहस्सं भण्णंति। एवं एतेण पगारेण खेत्तदव्वकालभावाणं वुड्ढीए भण्णमाणीए गंथबाहुल्लया भवतित्तिकाऊणं इमं गाहासु- त्तमागतं—

संखेज्जंमि उ काले० ॥ ३५ ॥ एत्थ सीसो आह- भगवं! जो ताव असंखेज्जं कालं तीयं च अणागयं च जाणति पासति ॥ ४१ ॥
सो असंखेज्जे दीवसमुद्दे पासइ, जे पुण संखेज्जा दीवसमुद्दा ते तस्स असंखेज्जकालदंसिणो ण जुज्जंति, आयरियो आह-जो

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

श्री आवश्यक चूर्णौ श्रुतज्ञाने
॥ ४२ ॥

कालादि-वृध्द्यवृद्धी

असंखेज्जकालदंसी संखेज्जजोयणवित्थडे दीवसमुद्दे जाणति पासति सो कोई णियमा असंखेज्जे दीवसमुद्दे जाणाति पासति, जो पुण असंखेज्जकालदंसी असंखेज्जजोयणवित्थडे दीवसमुद्दे जाणति पासति सो कोती संखेज्जे दीवसमुद्दे जाणइ पासइ, कहं ?, जहा-सयंभुरमणे ठियस्स कस्सइ तिरियस्स असंखेज्जकालविसइओ ओही उप्पण्णो, ततो सो सयंभुरमणाइणो संखेज्जे दीवसमुद्दे जाणति पासति, तम्हा एतेण कारणेण काले असंखेज्जे दीवसमुद्दा संखेज्जा असंखेज्जा वा भतियव्वत्ति ॥ इयाणिं गुणपच्चइयस्स ओहिणाणस्स उप्पण्णस्स सुभपरिणामोदएण दव्वखेत्तकालभावाणं जहा वुड्ढी भवति तहा भण्णति- तंजहा—

काले चउण्ह वुड्ढी० ॥ ३६ ॥ काले वड्ढमाणे दव्वखेत्तकालभावा चउरोवि णियमा वड्ढंति, खेत्ते पुण वड्ढमाणे दव्वभावा नियमा वड्ढंति, कालो वड्ढति वा ण वा वड्ढति, वुड्ढीए य दव्वपज्जवाणं खेत्तकाला वड्ढंतित्ति, एत्थ पुण केई एवं चोएऊण एवं परिहरंति- जहा किल कोइ सीसो आह-भगवं ! कहं खित्तवुड्ढीए कालो वड्ढति वा न वा वड्ढति ?, दव्वभावाणं च वुड्ढीए कहं खेत्तकाला वड्ढंति वा ण वा वड्ढंतित्ति ?, आयरिओ आह—जया कालो दव्वावबद्धातो खेत्ताओ अण्णो चेव संभाविज्जइ तदा तंमि खेत्ते वड्ढमाणे कालो ण वड्ढति, जया पुण तस्स चेव दव्वमवबद्धस्स खेत्तस्स परिणामो कालो संभाविज्जइ तया खेत्ते वड्ढमाणे कालो णियमा वड्ढति, णिच्छयनयस्स पुण ण चेव दव्वावबद्धातो खेत्तातो कालो अण्णो भवति, जच्चेव सा तस्स दव्वावबद्धस्स खेत्तस्स परिणती सो कालो भण्णति, एत्थ दिट्ठंतो रवी, जहा तस्स रविणो गइपरिणयस्स जं पुव्वदिसादरिसणं सो पुव्वण्हकालो भण्णति, तस्सेव गतिपरिणयस्स जं णहमज्झे दरिसणं सो मज्झण्हकालो भण्णति, तस्सेव गतिपरिणयस्स जं पच्चत्थिमेण गमणं सो अवरण्हकालो भण्णइ, अतो निच्छयनयस्स दव्वपरिणामो चेव कालो भवति, दव्वपज्जवाणं च वुड्ढीए खेत्तमवि दव्वावबद्धं वित्थारं पडुच्च वड्ढति चेव,

॥ ४२ ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता..........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णिः-1

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

श्री आवश्यक चूर्णौ श्रुतज्ञाने

॥ ४३ ॥

जंमि खेत्ते अवगाढा दव्वपज्जाया तं अरूवित्तणेण आगासं न वड्ढति, कालोऽवि जया दव्वपज्जवाणं अण्णो चेव संभाविज्जति तया तेसु दव्वपज्जवेसु वड्ढंतेसु सो कालो ण वड्ढइ, जया पुण दव्वपज्जवाणं चेव परिणामो कालो संभाविज्जति तदा तेसिं वुड्ढीए कालोऽवि वड्ढति चेव, अतो दव्वपज्जवाणं वुड्ढीए खेत्तकाला दोऽवि भइयव्वत्ति।

एत्थ सीसो आह-भगवं ! तेसिं पुण दव्वखेत्तकालभावाणं किं सव्वसुहुमत्ति ?, आयरिओ आह-सट्ठाणं पडुच्च दव्वतो सव्वदव्वाणं परमाणुपोग्गलो सुहुमो, खेत्ततो सट्ठाणं पडुच्च एगो आगासपदेसो सुहुमो, कालतो सट्ठाणं पडुच्च समओ सुहुमो, भावतो सट्ठाणं पडुच्च एगगुणकालतो सुहुमो, परट्ठाणं पडुच्च दव्वातो भावो सुहुमतरागो, कहं ?, जेण परमाणुपोग्गलो अणंतगुणकालओऽवि अत्थि, अतो दव्वेहिन्तो भावो सुहुमयरागो, मुत्तदव्वभावेहिंतो अमुत्तभावत्तणेण कालखेत्ता सुहुमा, कालतो य खेत्तं सुहुमयरागंति, कहं ?,

सुहुमो य होति कालो० ॥ ३७ ॥ कालो ताव अतीव सुहुमो दट्ठव्वो, कहं ?, से जहा णामए तुण्णागदारए तरुणे बलवं णिउणसिप्पोवगयादिगुणजुत्ते पडसाडियं वा पट्टसाडियं वा गहाय सयराहं हत्थमेत्तं ओसारेज्जा, एत्थ सीसो आह-भगवं ! जेण कालेण तेणं तुण्णागदारएण तीसे पडसाडियाए वा पट्टसाडियाए वा हत्थमेत्ते उस्सारिए से समए भवति ?, आयरिओ आह-ण भवति, कहं ?, जम्हा संखेज्जाणं तंतूणं समागमेणं से वत्थे णिप्फण्णे, उवरिल्ले य तंतुंमि अच्छिण्णे हिट्ठिल्ले तंतू ण छिज्जति, अन्नंमि काले उवरिल्ले तंतू छिज्जति, अण्णंमि हेट्ठिल्ले, अतो से समए ण भवति, एत्थ पुणोऽवि सीसो आह—भगवं ! जेणं कालेणं तेण तुण्णाकदारएणं तत्थ वत्थस्स उवरिल्ले तंतू छिण्णे से समए ?, आयरिओ आह—ण भवति, कहं ?, जम्हा संखेज्जाणं

द्रव्यादिषु-सूक्ष्मता-क्रमः

॥ ४३ ॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पम्हाणं समागमेण स तंतू णिप्फज्जति, उवरिल्ले य पम्हंमि अच्छिण्णंमि हेट्ठिल्ले पम्हे ण छिज्जति, अण्णंमि काले उवरिल्ले पम्हे छिज्जति, अण्णंमि काले हेट्ठिल्ले पम्हे छिज्जति, अतो सेऽवि समए न भवति, एतेणं सुहुमतराए समए पण्णत्ते समणाउसो !, एवं ताव कालो सुहुमो भवति, एयाओ य कालाओ खेत्तं सुहुमतरागं भवति, कहं ?, जेण अंगुलप्पमाणमेत्ते आगासे जावतिया आगास-पदेसा ते बुद्धीए समए समए एगमेगं आगासपदेसं गहाय अवहीरमाणा अवहीरमाणा असंखेज्जाहिं उस्सप्पिणीहिं अवहिया भवंति, अतो कालतो खेत्तं सुहुमतरागं भवति। इयाणिं मज्झिमखेत्ताहिगारे चेव वड्ढमाणे उप्पज्जमाणओ ओही जाणि दव्वाणि पढमं पासति जेसु वा दव्वेसु परिवडति ताणि भण्णति, तंजहा—

तेयाभासादव्वाणमंतरा०॥३८॥ एसा गाथा महत्था दुरहिगमा य अतो आयरितो सीसहियट्ठयाए (ओरालविउव्व०॥३९॥) चउव्विधाओ वग्गणाओ दरिसेति, ताहि य पदरिसियाहिं एतस्स गाहासुत्तस्स अत्थो सुहं घेप्पिहिति, कहं ?, तत्थ दिट्ठंतो कुइयण्णो, जहा कुइयण्णगाहावइस्स अणेगा गोउलाण वग्गा, तेसिं पुण वग्गाण एक्केको वग्गो पिहप्पिहं रक्खगाण दिण्णो, ततो तेसिं एगभूमीए चरंताणं अण्णवग्गमिलणेणं अतिबहुलत्तणेण य गोणीणं ते गोवाला असंजाणंता मम एसा ण एसा तुब्भंति परोप्परओ भंडणं कुव्वंति, तेसिं च भंडणपमाएण ताओ गोणीओ सीहवग्घाईहिं खज्जंति, दुग्गविसमेसु य पडियाओ भज्जंति ॥ ४४ ॥ मरंति य, ततो तेण कुइयण्णेण एतं दोसं णाऊण तेसिं गोवालाणं असंमोहणिमित्तं एगो कालियाणं वग्गो कओ, एगो नीलियाणं, एगो लोहियाणं, एगो सुक्किलियाणं, एगो सबलाणं वग्गो कतो, एवं सिंगाकिइविसेसेऽवि काउं पिहप्पिहं समप्पिया, पच्छा ते गोवा ण संमुच्छं(ज्झं)ति ण वा कलहिंति, विसरिसाओ य पए पागडा जहा हंसमज्झे काओ, एवं आयरिओ सिस्साणुग्गहानिमित्तं इमाओ

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ श्रुतज्ञाने ॥ ४५ ॥

वर्गणा-प्ररूपणा

चउव्विहाओ वग्गणाओ दंसेति, तंजहा- दव्वतो खेत्तओ कालतो भावतो, तत्थ दव्वतो इमातो वग्गणातो भवंति, तंजहा- एगा परमाणुपोग्गलाण दव्ववग्गणा, एगा दुपदेसियाणं, एवं जाव दसपएसियाणं, एगा संखेज्जपएसिआणं खंधाणं वग्गणा, एगा असंखेज्जपएसियाणं खंधाणं वग्गणा, एगा अणंतपएसियाणं खंधाणं वग्गणा, एयाओ दव्ववग्गणाओ। इयाणिं खेत्तवग्गणाओ, तंजहा- एगा एगपएसोगाढाणं पोग्गलाणं वग्गणा, एवं जाव एगा दसपएसोगाढाणं पोग्गलाणं वग्गणा, एगा संखेज्जपएसोगाढाणं वग्गणा, एगा असंखेज्जपदेसोगाढाणं, एयाओ खेत्तवग्गणाओ। इयाणिं कालवग्गणाओ, तंजहा- एगा एगसमयट्ठितीयाणं पोग्गलाणं वग्गणा, एवं जाव एगा असंखेज्जसमयठितीताणं पोग्गलाणं वग्गणा, एयाओ कालवग्गणाओ। इयाणिं बावीसभेदातो भाववग्गणातो भण्णंति, तंजहा-एगा एगगुणकालाणं पोग्गलाणं वग्गणा, एवं जाव एगा अणंतगुणकालाणं पोग्गलाणं वग्गणा, एवं नीललोहियहालिद्दसोक्किलावि वण्णा भाणियव्वा, एवं दो गंधा पंच रसा अट्ठ फासा य भाणियव्वा, जाव एगा अणंतगुणलुक्खाणं पोग्गलाणं वग्गणा, एगा गरुयलहुयाणं पोग्गलाणं वग्गणा, एगा अगुरुलहुयाणं, एवमेयाओ वग्गणाओ, गंधरसफासगरुयलहुयअगरुयलहुयसहियाओ बावीसं वग्गणाओ भवंतित्ति। एयाओ कालभावाणं वग्गणाओ पसंगेण भणियाओ। एत्थ पुण दव्ववग्गणासु खेत्तवग्गणासु य पाहण्णेण अधिगारो। तासु य दव्ववग्गणासु खेत्तवग्गणासु य पंचण्हं सरीराणं भासाए आणपाणुस्स मणस्स य जाओ अग्गहणपाउग्गाओ वग्गणाओ जाओ य गहणपाओग्गाओ ताओ भण्णंति, तंजहा-एगा परमाणुपोग्गलाणं वग्गणा जाव अणंतपदेसियाणं खंधाणं वग्गणा, तत्थ जहिं पढमो अणंतसद्दो णिप्फण्णो तमणंतरं एकुत्तरियाए परिवुड्ढीए जाहे अणंते वारे गुणियं भवति ताहे एगा ओरालियसरीरस्स अग्गहणपाओग्गा दव्ववग्गणा भवति, कहं?, जओ ओरालियसरीरं एत्तोऽवि थूलतरएहिंतो खंधेहिंतो निप्फण्णं, ॥ ४५ ॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ श्रुतज्ञाने

॥ ४६ ॥

ते य अणंताणंतपदेसिया खंधा तं ओरालियसरीरं पडुच्च थोवतरएहिं परमाणूहिं णिप्फण्णत्ति, अतो ते अणंताणंतपदेसिया खंधा ओरालियसरीरस्स अग्गहणपाउग्गा दव्ववग्गणा भवति, जाहे य ते अणंताणंतपदेसिया खंधा एक्कुत्तरियाए परिवुड्डीए अणंते वारे गुणिया ताहे ओरालियसरीरस्स एगा गहणपाउग्गा दव्ववग्गणा भवति, किं कारणं ?, जेण तावरूविमेत्तेहिं खंधेहिं ओरालियसरीरं णिप्फज्जति, तेहिंतोवि ओरालियसरीरस्स गहणपाउग्गेहिंतो खंधेहिंतो एक्कुत्तरियाए वड्डीए अणंताओ दव्ववग्गणाओ वोलेउं ताहे एगा ओरालियसरीरस्स अग्गहणपाउग्गा दव्ववग्गणा भवति, किं कारणं?, जम्हा ओरालियसरीरगहणपाउग्गेहिं खंधेहिंतो बहुतरएहिं परमाणूहिं णिप्फण्णा, अओ ओरालियसरीरस्स एगा अग्गहणपाउग्गा दव्ववग्गणा भवति। ततोऽवि एक्कुत्तरियातो अणंता ओरालियसरीरस्स अग्गहणपाउग्गातो दव्ववग्गणातो गंता ताहे एगा वेउव्वियसरीरस्स अतिसुहुमत्तणेण खंधाणं एगा अग्गहणपाउग्गा दव्ववग्गणा भवति, ताओ वेउव्वियसरीरस्स अग्गहणपाउग्गाओ दव्ववग्गणाओ एक्कुत्तरियाओ अणंताओ गंता ताहे वेउव्विगसरीरस्स एगा गहणपाओग्गा दव्ववग्गणा भवति, ततोऽवि वेउव्वियसरीरस्स अग्गहणपाउग्गा एक्कुत्तरियाओ अणंताओ गंता ताहे वेउव्वियसरीरस्स अतिथूरत्तणेण खंधाणं एगा अग्गहणपाउग्गा दव्ववग्गणा भवति, वेउव्वियसरीरं च ओरालियसरीरातो जतिवि सुहुमयरागं दीसति तहावि तं बहुतरएहिं परमाणुसंघायनिप्फण्णेहिं खंधेहिं निप्फज्जति, घणणिचियत्तणेण य ताओ ओरालियसरीराओ सिढिलखंधनिप्फण्णातो, तं चिय वेउव्वियसरीरं सुहुमयरागं भवति। एत्थ दिट्ठंतो वइरं, जहा वइरं सकातो पमाणातो अण्णण त दुगुणपमाणमेत्तेण सिढिलखंधणिप्फण्णेण फुट्टपत्थरादिणा दव्वेण सह तोलिज्जमाणं घणणिचियत्तणेण खंधाणं डहरयंपि दीसमाणं बहुतरायं तुलति, एवं वेउव्वियसरीरं सुहुमतरागंपि दीसमाणं ओरालिय-

वर्गणा-प्ररूपणा

॥ ४६ ॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ श्रुतज्ञाने

॥ ४७ ॥

द्रव्यक्षेत्र-कालभाव-र्गणाः

सरीरपाउग्गखंधेहिंतो बहुतरएहिं परमाणुसंघायनिप्फण्णेहिं खंधेहिं निप्फज्जातित्ति। ताओ य वेउव्वियसरीरस्स अग्गहणपाउग्गाओ एकुत्तरियाओ अणंताओ दव्ववग्गणाओ गंता ताहे एगा आहारकसरीरस्स अतिसुहुमत्तणेणं खंधाणं अग्गहणपाउग्गा दव्ववग्गणा भवति, ताओऽवि आहारगसरीरस्स अग्गहणपाउग्गाउ एकुत्तरियाओ अणंताओ दव्ववग्गणाओ गंता ताहे एगा आहारगसरीरस्स गहणपाउग्गा दव्ववग्गणा भवति, ततोऽवि आहारगसरीरस्स गहणपाउग्गातो एकुत्तरियाओ अणंताओ दव्ववग्गणात्तो गंता ताहे अतिथूरत्तणेणं खंधाणं एगा आहारगसरीरस्स अग्गहणपाउग्गा दव्ववग्गणा भवति, एवं एतेण कमेण आहारगाओ अणंतरं तेयकस्स अग्गहणं गहणं पुणो य अग्गहणं भाणियव्वं, तेयकाणंतरं एतेण चेव कमेण भासाएवि तिण्णि पगारा भाणियव्वा, आणपाणुस्सवि तिण्णि पगारा भाणियव्वा, मणस्सावि तिण्णि पगारा भाणियव्वा, कम्मस्सावि तिण्णि पगारा भाणिअव्वा, जाव कम्मकस्स उवरिल्ला अग्गहणपाउग्गा दव्ववग्गणा। ताओ एकुत्तरियातो अणंतातो दव्ववग्गणाओ गंता ताहे अणंताओ धुववग्गणाओ भवंति, ताओऽवि एकुत्तरियाओ अणंताओ धुवाओ गंता ताहे अणंताओ अद्धुववग्गणाओ भवंति, ताओऽवि एगुत्तरियाओ अणंताओ गंता ताहे अणंताओ सुन्नंतरवग्गणाओ भवंति, ततोऽवि एकुत्तरियातो अणंताओ गंता ताहे अणंतातो असुण्णंतरवग्गणातो भवंति, चत्तारि धुवणंतराइं चत्तारि सरीरवग्गणातो गंता एत्थ मीसयखंधो भवतित्ति, पच्छा अचित्तमहाखंधो भवति, एवमेयाओ दव्ववग्गणाओ भणियातो। इयाणिं खेत्तं पडुच्च तेसिं चेव दव्वाणं ओगाहणवग्गणाओ भण्णंति, तंजहा-एगा एगपदेसोगाढाणं पोग्गलाणं वग्गणा, एवं जाव एगा दसपदेसोगाढाणं पोग्गलाणं वग्गणा संखेज्जाओ संखेज्जपदेसोगाढाणं पोग्गलाणं वग्गणाओ असंखेज्जाओ असंखेज्जपदेसोगाढाणं पोग्गलाणं वग्गणाओ, तत्थ असंखेज्जपदेसोगाढाणं पोग्गलाणं एकुत्तरियाए ओगाहणपरिवुड्ढीए अतिसु-

॥ ४७ ॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ श्रुतज्ञाने ॥ ४८ ॥

द्रव्यक्षेत्र-कालभाव-वर्गणाः

हुमत्तणेण खंधाणं अग्गहणपाउग्गा ओगाहणवग्गणा, ताओवि एक्कुत्तरियाओ कम्मगसरीरस्स असंखेज्जा ओगाहणवग्गणाओ गंता एगा कम्मगसरीरस्स गहणपाउग्गा ओगाहणवग्गणा, गहणपाउग्गावि एकुत्तरियाए असंखेज्जाओगाहणवग्गणाओ गंता अतिथूरत्तणेण खंधाणं एगा कम्मगसरीरस्स अग्गहणपाउग्गा ओगाहणवग्गणा, एवं एतेण कमेण मणस्सवि अग्गहणं गहणं पुणोऽवि अग्गहणमुहेण तिण्णि पगारा भाणियव्वा, एवं आणापाणुस्सवि तिण्णि पगारा भाणियव्वा, भासाएवि तिन्नि पगारा भाणियव्वा, तेयगस्सवि तिन्नि पगारा भाणियव्वा, आहारगस्सवि तिण्णि पगारा भाणियव्वा, वेउव्वियस्सवि तिण्णि पगारा भाणियव्वा, ओरालियस्सवि तिण्णि पगारा भाणियव्वा, एवमेयातो खेत्तवग्गणाओ भाणियव्वाओ। कालवग्गणा एगसमयाट्ठितिकादी सव्वा गहणं एंति, भावेऽवि सव्वा वग्गणाओ गहणं एंति, गुरुकलहुका अगुरुकलहुका य, एयाओ कस्सवि एंति कस्सइ णिंति। इयाणिं तीए गाहाए अत्थो समोतारिज्जति, तंजहा—

जाणि तेयकसरीरस्स अतिथूरत्तणेण अग्गहणपाउग्गानि दव्वाणि भासाए य जाणि अतिसुहुमत्तणेणं अग्गहणपाउग्गाणि दव्वाणि एत्थ अंतरालं भवति, पट्ठवतो लहति णाम ओहिण्णाणं पडिवज्जइत्ति वुत्तं भवति, पट्ठवतो णाम तप्पढमयाए एतानि दव्वाणि पासित्तुमारभतित्ति वुत्तं भवति, गुरुलहुअगुरुलहुयं णाम जो तेयकसरीरस्स भासाए य अंतरदव्वा तेसिं केइ गुरुलहुया केइ अगुरुलहुया, ते गुरुलहुगा अगुरुलहुगा य ओहिनाणी पढमं पासिऊण जति पसत्थेहिं अज्झवसाणेहिं वड्ढाति ततो विसुद्धपरिणामगो ओहिणा परिवड्ढमाणेण उवरिं जाव अचित्तमहाखंधो ताव पासति, हेट्ठावि जाव परमाणू पोग्गला ताव पासति, अप्पसत्थेहिं पुण अज्झवसाणेहिं वट्टमाणो अविसुद्धपरिणामको ओहिणा हायमाणेणं एवं चेव उवरिं हिट्ठाओ, तं ओहिणाणं तेसु ॥ ४८ ॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

चेव दव्वेसु णिट्ठाइ, णिट्ठाइ णाम ताणि चेव दव्वाणि पासिऊण परिवडतित्तिवुत्तं भवति। इदाणिं जमेतं गाहासुत्तं सहत्थं हेट्ठा वण्णितं एयस्स दव्ववग्गणाणं खेत्तवग्गणाण य दोण्हवि जाओ गहणपाओग्गाओ अग्गहणपाओग्गाओ य वग्गणाओ तासिं कमपरिवाडिं भणिहामि, तत्थ दव्ववग्गणाणं अणुक्कमपरिवाडी इमेण गाहापुव्वद्धेणं गहिता, तंजहा–

(ओरालविउव्वाहारतेअभासाणपाणमणकम्मे। अह दव्ववग्गणाणं, कमो विवज्जासओ खित्ते ॥ ३९ ॥

कम्मोवरिं धुवेयरसुण्णेयरवग्गणा अणंताओ। चउधुवणंतरतणुवग्गणा य मीसो तहाऽचित्तो ॥ ४० ॥

ओरालियवेउव्वियआहारगतेअ गुरुलहू दव्वा। कम्मगमणभासाई, एआइ अगुरुयलहुआइं ॥ ४१ ॥ (इतिवृत्तौ)

आहारतेयभासामणकम्मकदव्ववग्गणासु कमो ॥ ४० ॥ पूर्वार्धं ॥ तत्थ आहारकग्गहणेण एगग्गहणे गहणं तज्जाइयाणं सव्वेसिं भवतित्तिकाऊण वेउव्वियओरालियावि गहिया चेव, तेणं पुव्वं तिविहाओ ओरालियस्स सरीरस्स वग्गणाओ भणिआओ, तंजहा- अग्गहणवग्गणा गहणवग्गणा पुणोऽवि अग्गहणवग्गणा चेव, एवं वेउव्वियस्सवि तिण्णि चेव पगारा भाणियव्वा, आहारकस्सवि तिण्णि चेव पगारा भणिता, तेयकस्स भासाए य दोण्हवि तिण्णि पगारा भणिया, एगग्गहणेण गहणं तज्जातीयाणं सव्वेसिं भवतित्तिकाऊण भासाग्गहणेण आणापाणुस्सवि गहणं कतं चेव भवति, तस्सवि आणापाणुस्स तिण्णि पगारा भणिता, मणकम्मकाणवि दोण्हवि तिण्णि चेव पगारा भणिता। दव्ववग्गणासु कमो भणितो ॥ इयाणिं खेत्तवग्गणासु कमो इमेण गाहापच्छद्धेण भण्णइ, तंजहा—

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता...........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ श्रुतज्ञाने ॥ ५० ॥

कम्मकमणभासाए य तेय आहारए खेत्ते ॥ ४० ॥ पश्चार्धं ॥ खेत्तं पडुच्च पुव्वं कम्मकसरीरस्स तिविधा वग्गणा भणिता, तंजहा- अग्गहणवग्गणा गहणवग्गणा पुणो य अग्गहणवग्गणात्ति, एवं मणस्सवि तिण्णिवि पगारा भणिया, एक्कग्गहणेण तज्जातीताणं गहणंतिकाऊण आणपाणुस्सवि भासाएवि तिण्णि चेव पगारा भणिता, तेयस्सवि तिण्णि पगारा भणिता, आहारकस्सवि तिण्णि पगारा, एगग्गहणे तज्जातीयाणं गहणंतिकाऊण ओरालियवेउव्वियाणवि तिण्णि चेव पगारा भणितत्ति ॥ इयाणिं एतेसिं चेव पयाणं जत्थ गरुयलहुयाणि दव्वाणि भवंति जत्थ वा अगुरुयलहुयदव्वाणि भवंति ताणि इमाए गाहाए भण्णंति, तंजहा—

द्रव्यादि-वर्गणाक्रमः गुरुलघ्व-गुरुलघु-द्रव्याणि

तेआहारगविकुव्वणोराल० ॥ ४१ ॥ तेयकसरीरं तेयगसरीरस्स अग्गहणपाओग्गाओ दव्ववग्गणाओ आहारकसरीरं आहारकसरीरस्स य अग्गहणपाओग्गाओ दव्ववग्गणाओ वेउव्वियसरीरं वेउव्वियसरीरस्स य अग्गहणपाओग्गाओ दव्ववग्गणाओ ओरालियसरीरं ओरालियसरीरस्स य अग्गहणपाओग्गाओ दव्ववग्गणाओ, एताणि गरुयलहुएसु दव्वेसु निप्फज्जंति, भासा भासाए य अग्गहणपाउग्गाणि दव्वाणि आणपाणू आणपाणुस्स य अग्ग० मणो मणस्स य अग्गहणपाउग्गाणि दव्वाणि कम्मगं कम्मकस्स य अग्गहणपाउग्गाणिं दव्वाणि, एताणि अगुरुयलहुएसु निप्फज्जंति । जाणि पुण ताणि तेयकसरीरस्स अतिथूरत्तणेण अग्गहणपाउग्गाणि दव्वाणि भासाए य अतिसुहुमत्तणेण अग्गहणपाउग्गाणि दव्वाणि ताणि अंतराले वट्टमाणाणि दव्वाणि गुरुलहुयाणि अगुरुलहुयाणि य भण्णंतित्ति ॥ मज्झिमओहिखेत्तपरिमाणाहिकारे चेव वट्टमाणे इमं गाहासुत्तमागतं, तंजहा— ॥ ५० ॥

संखेज्ज मणोदव्वे० ॥ ४२ ॥ तत्थ मणदव्वाणि य भवंति मणो य भवति, मणदव्वाणि णाम जाणि मणपाउग्गाणि

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ श्रुतज्ञाने ॥ ५१ ॥

मनतैजस-कार्मणा-नामवधिः

दव्वाणि गहियाणि न ताव मणेति ताणि मणदव्वाणिं भण्णंति, जाहे य मनिताणि भवंति ताहे मणो भण्णति, जो ओहिणाणी मणदव्वाणि पासति सो खेत्तओ लोगस्स रूवावबद्धं संखेज्जतिभागं पासति, कालतो पुण पलिओवमस्स संखेज्जे भागे तीतं च अणागयं च जाणति पासति, जो कम्मगदव्वाणि पासइ सो खित्तओ लोगस्स रूवावबद्धे संखेज्जभागे जाणति पासति, कालओ पुण पलिओवमस्स संखेज्जतिभागे तीयं च अणागयं च कालं जाणति पासति, भावओ जे तेसिं दव्वाणं कालगणीलगादिणो भावा ते जाणइ पासइ, जो पुण ओहिणाणी खेत्ततो रूवावबद्धं लोगं ता जाणति पासति सो कालतो तत्तो थोवूणयं पलिओवमं तीतं अणागयं च कालं जाणति पासति ॥ किंच-मज्झिमओहिक्खेत्तपरिमाणे चेव वट्टमाणे जोऽवि इयाणिं ओही भण्णिहि सोवि मज्झिमओ चेव दट्ठव्वो। तंजहा–

तेयाकम्मसरीरे० ॥ ४३ ॥ जो ओहिनाणी तेयगसरीरं कम्मगसरीरं तेयग (कम्मग) सरीरगहणपाउग्गाणि दव्वाणि भासं भासागहणपाउग्गाणि य दव्वाणि दव्वतो जाणति पासति सो खेत्ततो रूवावबद्धे असंखेज्जे दीवसमुद्दे ओहिणा जाणति पासति, कालतो पुण असंखेज्जं कालं तीतं च अणागयं च ओहिणा जाणति पासति, भावतो णं जे तेसिं दव्वाणं कालगणीलगातिणो भावा ते जाणति पासतित्ति ॥ इयाणिं जं तं उक्कोसयं खेत्तपरिमाणं हेट्ठे वण्णितं तं पडुच्च तेयगसरीरं च इमं गाहासुत्तमागतं—

एगपदेसोगाढं० ॥ ४४ ॥ जो परमोहिणाणजुत्तो जीवो भवति सो एगपदेसोगाढं कम्मकसरीरं लभति, लभति णाम जाणा-तित्ति वुत्तं भवति, ण केवलं परमोही एकपदेसोगाढं कम्मकसरीरं चेव जाणति, किं तु परमाणुं वा परमाणुवतिरित्तं वा खंधं जाणेज्जा, जाणि य अगुरुलहुयदव्वाणि ताणिवि सो परमोही एगपदेसोगाढाणि जाणिज्जा, अण्णे भणंति- 'एगपदेसो' गाहा, जो ॥ ५१ ॥

पुण परमोही भवति सो एगपदेसोगाढं दव्वं पासति, तं पुण परमाणुं वा वतिरित्तं वा, कम्मगसरीरं च अगुरुयलहुयं च दव्वं पासइ, जो य ओहिणाणी तेयकसरीरं जाणति पासति सो अप्पणो वा परस्स वा तीताणागताणं भावाणं पुहुत्तं जाणति, पुहुत्तसद्दो पुव्वभणितो चेव दट्ठव्वोत्ति ॥ इदाणिं दव्वखेत्तकालभावा पडुच्च जो परमोहिस्स विसओ सो भण्णति–

परमावधेः द्रव्यादयः

परमोहि असंखेज्जा० ॥ ४५ ॥ जो परमोही भवति सो लोगं जाणति चेव, अलोगेऽवि से असंखेज्जेसु लोगप्पमाणमेत्तेसु खंडेसु विसओ भवति, कालतो पुण असंखेज्जाओ उस्सप्पिणिओसप्पिणीओ तीयं च अणागयं च जाणति पासति, दव्वओ सव्वरूविदव्वाइं जाणइ पासइ, भावओऽवि तेसिं दव्वाणं कालगणीलगाइणो भावा जाणति पासति। एत्थ सीसो आह-भगवं ! जाणि ताणि खेत्तओ अलोए लोयप्पमाणमेत्ताइं खंडाइं जाणइ पासइ ताणि कतराए उवमाए अम्हेहिं गेण्हियव्वाइंति ?, आयरिओ आह-खेत्तस्स उवमा अगणिजीवा भवंति, सा य तेहिं अगणिजीवेहिं जहा भवति तहा हेट्ठे वण्णितत्ति ॥ इदाणिं तिरियाण सरीरगाइं पडुच्च जस्स वा जावतिओ ओहिविसओ सो इमेण गाहापुव्वद्धेण भण्णति, तंजहा–

आहारतेयलंभो उक्कोसेणं तिरिक्खजोणीसु ॥ ४६ ॥ पूर्वार्धं ॥ तिरिक्खजोणिया जहण्णेण ओहिणा ओरालियं सरीरं जाणिज्जा, उक्कोसेण ओरालियवेउव्वियआहारगतेयगसरीराणि जाणंति पासंति य, कम्मगसरीरं पुण ण चेव जाणंति ण वा पासंतित्ति ॥ एस तिरिक्खए मणुए य पडुच्च गुणपच्चइओ एवंविहो ओही वण्णिओ। इदाणिं णेरइयाणं देवाण य भवपच्चइओ ओही भणिहामि, तत्थ पुव्विं नेरइयाणं ओहेण जहण्णयं उक्कोसयं च इमेण गाहापच्छद्धेण भणीहामि, तंजहा— ॥५२॥

गाउय जहण्ण ओही णिरएसु य जोयणुक्कोसो ॥४६॥ पश्चार्धं ॥ णेरइया जहण्णेण ओहिणा गाउयं पासंति, उक्कोसेणं

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

जोयणं पासंतित्ति । एस ओहेण णिरओही वण्णितो। इयाणिं पत्तेयं पत्तेयं सत्तसुवि पुढवीसु जहण्णुक्कोसयं ओहिं वण्णे हामि, तंजहा-

चत्तारि गाउयाइं, अद्धुट्ठाइं तिगाउयं चेव। अड्ढाइज्जा दोण्णि य दिवड्ढमेगं च णरएसु ॥४७॥ जस्स रयणप्पभापुढविणेरइयस्स दसवाससहस्साइं जहण्णिया ठिती सो अद्धुट्ठाइं गाउयाइं ओहिणा जाणति पासति, जस्स पुण रयणप्पभापुढविणेरइयस्स सागरोपमं ठिती सो चत्तारि गाउयाइं ओहिणा जाणइ पासति, एवं जाव अहे सत्तमाए जहण्णठितीओ अद्धगाउयं उक्कोसट्ठितीओ गाउयं ओहिणा जाणति पासति । एस ताव णेरइयाणं ओहेण पत्तेगेण य जहण्णुक्कोसओ ओही वण्णिओ । इदाणिं देवाणं ओहेणं पत्तेगेण य जहण्णयं उक्कोसयं च ओहिं भणिहामि, तत्थ ओहेण देवा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं ओहिणा जाणंति पासंति, उक्कोसेणं संभिण्णं लोगनालिं ओहिणा जाणंति पासंति, एस ओहेणं देवाणं ओही भणिओ, इदाणिं पत्तेयं पत्तेयं देवाणं जहण्णुक्कोसयं ओहिं भणिहामि—तत्थ भवणवासिणो दसप्पगारा असुरकुमारादी थणियकुमारपज्जवसाणा, एतेसिं दसण्हंपि जहण्णओ ओही पणुवीसं जोयणाइं, उक्कोसओ ओही असुरकुमारवज्जाणं संखेज्जाइं जोयण्णाइं, असुरकुमाराणं पुण उक्कोसेणं असंखिज्जे दीवसमुद्दे ओहिणा जाणंति पासंति, वाणमंतराणं पुण जहंनउक्कोसओ ओही जहा असुरकुमारवज्जाणं ओही भवणवासीणं तथा भाणियव्वो, जोइसिया जहण्णेणवि संखिज्जदीवसमुद्दे उक्कोसेणवि संखेज्जे दीवसमुद्दे ओहिणा जाणंति पासंति । वेमाणिया सोहम्मातो आरब्भ जाव सव्वट्ठसिद्धगा देवा ताव जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं ओहिणा जाणंति पासंति, अहे पुण जो एतेसिं सोहम्मगातीणं वेमाणियाणं अणुत्तरोववाइयपज्जवसाणाण देवाण ओहिणाणविसओ सो इमाहिं तिहिं गाहाहिं भण्णति, तंजहा—

वैमानिकानामवधिः

॥ ५३ ॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ श्रुतज्ञाने ॥ ५४ ॥

उत्कृष्टजघ-न्यावधी अवधेरा-कारः ॥ ५४ ॥

सक्कीसाणा पढमं० ॥ ४८ ॥ **आणयपाणय०** ॥ ४९० ॥ **छट्ठं हिट्ठिममज्झिमगेवेज्जा०** ॥ ५० ॥ एयाओ गाहाओ तिण्णिवि कंठाओ, णवरं पुण इमो विसेसो–जो जं पुढविं देवो ओहिणा जाणति पासति सो तीए पुढवीए सकातो सरीराओ आरब्भ जाव हिट्ठिल्लो चरिमंतो ताव णिरंतरं संभिण्णं पव्वयकुडादीहिं णिरावरणं ओहिणा जाणति पासति । जे य एते सक्कीसाणादयो अणुत्तरोववाइयपज्जवसाणा एवं विविहमणेगप्पगारं हेट्ठा ओहिणा जाणंति पासंति य, जो तेसिं तिरियं उड्ढं च ओहिण्णाणविसओ सो इमाए गाहाए भण्णति—

एतेसिमसंखेज्जो० ॥ ५१ ॥ एतेसिं णाम सोहम्मादीणंति वुत्तं भवति, असंखेज्जा णाम गणणमतिक्कंतत्ति वा असंखेज्जत्ति वा एगट्ठा, ते य असंखेज्जा तिरियं पडुच्च दीवा सागरा य सक्कीसाणादीणं देवाण ओहिणाणस्स विसओ णायव्वो, सतिवि असंखेज्जगत्ते तहावि जहा जहा उवरिमा देवा तहा तहा तेसिं हेट्ठिल्लएहिंतो देवेहिंतो बहुतरका दीवसमुद्दा उवरिमगाणं देवाणं ओहिण्णाणविसओ भवति । उड्ढं जाव सकाणं विमाणाणं उवरिल्ले चरिमंतत्ति ॥ किंच—

संखेज्ज जोयणा खलु० ॥५२॥ जेसिं देवाणं अद्धसागरोवमं ऊणयं ठिती ते जहण्णेण पणुवीसं जोयणाइं ओहिणा जाणंति पासंति, उक्कोसेण संखेज्जाइं जोयणाइं ओहिणा जाणंति पासंति य, तेण परं णाम ततो ऊणगाओ अद्धसागरोवमाओ परेण संपुण्णसागरोवमाइसु जहण्णेण पणवीसं० उक्कोसेण असंखेज्जे दीवसमुद्दे ओहिणा जाणंति पासंति ॥ इयाणिं जेसिं सव्वुक्कोसो सव्वजहण्णो य ओही भवति जावतियपमाणमेत्तो वा सो ओही परिवडति तं भण्णति, तंजहा—

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

श्री आवश्यक चूर्णौ श्रुतज्ञाने

॥ ५५ ॥

अवधेराकारः

उक्कोस मणुस्सेसु० ॥ ५३ ॥ तत्थ उक्कस्सगहणेणं परमोहिस्स गहणं कतं, जहण्णगहणेणं तिसमयाहारगपणगजीवप्पमाणमेत्तस्स ओहिस्स गहणं कतं, सो य परमो मणुएसु चेव एगेसु भवति, जहण्णोधी पुण मणुएसु वा तिरिएसु वा भवेज्जा, जहण्णुक्कोसवज्जो मज्झिमओधी भण्णति, सो य चउसुवि गतीसु भवति, उक्कोसेण य ओही जाव लोगप्पमाणमेत्तो ताव परिवडेज्जा, ततो परं णत्थि पडिवातोत्ति । खेत्तपरिमाणंति दारं गतं ॥ इदाणिं तइयं संठाणोत्ति दारमागतं, तत्थ संठाणं णाम संठाणंति वा आगितित्ति एगट्ठा, तं च जो सो हेट्ठे वण्णितो जहण्ण उक्कोस मज्झिमो य तिविहो ओही तस्स इमं संठाणं—तत्थ

थिवुगागारु जहण्णो० ॥ ५४ ॥ जो सव्वजहण्णो ओही सो थिबुगागारसंठितो भवति, तत्थ थिबुगागारसंठितो णाम पाणियबिंदुसंठाणोत्ति वुत्तं भवति, जो पुण सव्वुक्कोसओ ओही सो वट्टो भवति, जो य सो तस्स उक्कोसगस्स ओधिस्स वट्टभावो सो पुण लोगं पडुच्च किंचिआयतो भवति, जो पुण सो मज्झिमओही सो खेत्तं पडुच्च अणेगविहसंठाणो भवति, तंजहा–तप्पागारसंठाणं संठियं खेत्तं पडुच्च तप्पागारसंठितो भवति, पल्लगसंठाणसंठियं खेत्तं पडुच्च पल्लगसंठितो भवति, तहा हयसंठाणसंठियं खेत्तं पडुच्च हयसंठिओ भवति, गयसंठाणसंठियं खेत्तं पडुच्च गयसंठितो भवति, एवमाइ, पव्वयसंठाणसंठियं खेत्तं पडुच्च पव्वयसंठिओ भवति, एवमादि, तत्थ जो सो मज्झिमओ ओही अणेगसंठाणो भणितो तस्स तप्पगारादीणि संठाणाणि भवंति, जेसिं वा हयादीणि संठाणाणि भवंति ते इमाए गाहाए भण्णंति, तंजहा— ॥ ५५ ॥

तप्पागारे पल्लग० ॥ ५५ ॥ तत्थ तप्पागारसंठितो ओही नेरइयाण भवति, तत्थ तप्पयग्गहणेण जे णदिसंतरणणिमित्तं लोएणं तप्पया बज्झंति तेसिमेयं गहणं कयंति, तस्स य तप्पयस्स आगारो तप्पागारो, आगारो णाम आगारोत्ति वा आगितित्ति

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता..........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

श्री आवश्यक चूर्णौ श्रुतज्ञाने ॥ ५६ ॥

आनुगामिकोऽवधिः

वा संठाणंति वा एगट्ठा, भवणवासीणं देवाणं पल्लगसंठितो ओधी भवति, वाणमंतराणं पुण पडहगसंठिओ ओही भवति, जोइसियाणं देवाणं झल्लरिसंठितो ओही भवति, सोहम्मातो आरब्भ जाव अच्चुतो कप्पो एतेसिं कप्पोवगाणं देवाणं अद्धमुइंगागारसंठिओ ओही भवति, गेवेज्जगदेवाणं पुप्फचगेरीसंठितो भवति, अणुत्तरोववाइयाणं देवाणं जवणालीसंठितो भवति, तत्थ जवणाली णाम जीए णालीए जवा वाविज्जंति सा जवणाली भण्णइत्ति । णेरइयदेवाणं ओहिस्स संठाणं भणितं ।

इयाणिं तिरियमणुयाणं जारिसं ओहिस्स संठाणं तं भण्णति, सो य तिरियमणुओही हयगयादीसंठाणसंठितो पुव्विं चेव भणितोत्ति । संठाणित्ति दारं गतं ॥ इयाणिं आणुगामियत्तिदारं आगतं, तत्थ आणुगामियं णाम जं तमोहिण्णाणिणं गच्छंतमणुगच्छति तं आणुगामियं भण्णइ, तं च दुविहं भवति, तंजहा--अंतगयं च मज्झगयं च, तत्थ जं तं अंतगतं तं तिविहं भवति, तंजहा--पुरओ अंतगतं मग्गतो अंतगयं पासतो अंतगतंति, तत्थ पुरंतो अंतगयं णाम तमोहिण्णाणिं पडुच्च चक्खिदियमिव अग्गतो दरिसणसामत्थजुत्तंति वुत्तं भवति, जत्थ जत्थ ओहिणाणी गच्छइ तत्थ तत्थ पुरतो अवट्ठिया रूवावबद्धा अत्था जाणेति पासति य, से तं पुरतो अंतगयं । तत्थ मग्गतो अंतगतं णाम मग्गतोत्ति वा पिट्ठउत्ति वा एगट्ठा, जत्थ२ सो ओहिण्णाणी गच्छति तत्थ२ संफरिसिया फासिंदियमिव पिट्ठतो अवट्ठिता रूवावबद्धा अत्था ओहिणा जाणति पासति, सेतं मग्गतो अंतगयं । पासतो अंतगयं णाम वामतो दाहिणतो वत्ति वुत्तं भवति, जत्थ जत्थ सो ओहिणाणी गच्छति तत्थ तत्थ सोइंदिएणमिव पासतो अवत्थिता रूवावबद्धा अत्था ओहिणा जाणति पासति य, तं पासतो अंतगतं, सेतं अंतगतं ॥ तत्थ मज्झगतं णाम जं समंततो अत्थग्गाहि तं मज्झगयं भण्णति, एत्थं दिट्ठंतो फरिसिंदियं चेव, जहा फरिसिंदिएणं समंतओ फरिसिए जीवो अत्थे उवलभति, एवं सोवि ओहिणाणी ॥ ५६ ॥

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

श्री आवश्यक चूर्णौ श्रुतज्ञाने ॥ ५७ ॥

अनानुगामिकः क्षेत्राद्यव-स्थानं

जत्थ जत्थ गच्छति तत्थ तत्थ समंतओ रूवावबद्धे अत्थे ओहिणा जाणति पासति य, से तं मज्झगयं ओहिणाणं । एत्थ सीसो आह--भगवं! अंतगयमज्झगयाण को पडिविसेसो ?, आयरिओ आह--अंतगयं तिविहं वण्णियं, तत्थ पुरतो अंतगएण पुरतो चेव संखेज्जाणि वा असंखेज्जाणि वा जोयणाणि ओहिणा जाणति पासत्ति, मग्गतोअंतगएणं मग्गतो चेव संखेज्जाणि असंखेज्जाणि वा जाणति पासति, पासतो अंतगएणं पासतो चेव संखेज्जाणि वा० मज्झगएण सव्वतो समंता संखेज्जाणि वा असंखेज्जाणि वा जोयणाणि जाणति पासति, तम्हा एतेण कारणेणं अंतगयस्स व मज्झगयस्स व महता चेव पडिविसेसोत्ति ।

अणुगामियओहिण्णाणपसंगेण चेव अणाणुगामिओऽवि ओधी तप्पडिवक्खोत्तिकाऊण भण्णति, तत्थ अणाणुगामिओ णाम जो तमोहिण्णाणिं गच्छन्तं णाणुगच्छति, जत्थेव उप्पण्णं तंमि चेव ठाणे जाणति पासति, ततो ठाणातो अण्णत्थ गतो ण जाणइ पासइ, एत्थ दिट्ठंतो पुरिसो, जहा--कोइ पुरिसो अगणिमुज्जालेऊणं तस्सेव अगणिस्स परिपेरंतेहिं परिघोलमाणो२ तं उज्जोयठाणं पासति, अन्नत्थ गए ण पासइ, एमेव अणाणुगामियं ओहिण्णाणं जत्थेव समुप्पज्जइ तत्थेव संखेज्जाणि २ जोयणाइं ओहिण्णाणी जाणति पासति, अण्णत्थ गए ण जाणाति पासति । से तं अणाणुगामियं ओहिण्णाणं॥ इयाणिं जेसिं जीवाणं ओधी आणुगामितो अणाणुगामितो वा तं इमाए गाहाए भण्णति, तंजहा--

अणुगामितो य ओही० ॥ ५६ ॥ जो णेरइयदेवाणं ओही सो णियमा आणुगामिओ, जो पुण मणुस्सतिरियाणं सो आणुगामिओ वा होज्जा अणाणुगामिओ वा होज्जा मिस्सो वा होज्जा, मिस्सो णाम जं पुव्वदिट्ठं अत्थं अण्णत्थ गओ किंचि उवलभइ किंचि णो उवलभइ सो मिस्सो भवति । अणुगामियंति चउत्थदारं सम्मत्तं ॥ इयाणिं अवट्ठाणन्ति पंचमं दारमागतं, तं च ॥ ५७ ॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ श्रुतज्ञाने ॥ ५८ ॥

अवस्थानं चलद्वारं

अवट्ठाणं चउव्विहं, तंजहा--दव्वावट्ठाणं खेत्तावट्ठाणं कालावट्ठाणं भावावट्ठाणं, तं च अवट्ठाणं चउव्विहंपि दोहिं गाहाहिं भणिहामि, तत्थ बंधाणुलोमं पडुच्च एगाए गाहाए पुव्विं खेत्तावट्ठाणं ततो दव्वावट्ठाणं पच्छा भावावट्ठाणं च भणिहामि, कालावट्ठाणं चउण्ह अवट्ठाणाणं जं जहा णेयं अवट्ठाणं तं बितियाए गाहाए भणिहामि, तत्थ जा सा पढमा गाहा सा इमा—

खे०—खेत्तस्स अवट्ठाणं० ॥५७॥ तत्थ खेत्तगहणेणं भवखेत्तस्स गहणं कतं, तं च भवं पडुच्च ओहिन्नाणं जहन्नेण एक्कं समयं होज्जा, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाणि होज्जा, एत्थ एगो समओ तिरियस्स वा मणुयस्स वा भवति, कहं?, जस्स कस्सइ एक्कंमि समए ओहिण्णाणं उप्पण्णं बितियसमए से आउयं पहीणं चेव, अतो तिरियमणुयाणं एगो समओ भवं पडुच्च ओहिन्नाणं संभवति, देवस्स वा मिच्छद्दिट्ठिस्स एगं समयं सम्मत्तं पडिवन्नस्स, नवरं बितियसमए आउयं पहीणं चेव तम्मित्तिकाऊणं देवेऽवि एक्कं समओ ओहिणाणस्स भविज्जा, उक्कोसयं पुण तेत्तीससागरोवमियं भवखेत्तावट्ठाणं देवे णेरइए पडुच्च भविज्जा, दव्ववट्ठाणं जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं भिन्नमुहुत्तो, भिन्नमुहुत्तो णाम ऊणो मुहुत्तोत्ति वुत्तं भवति. तं च भिन्नमुहुत्तं ओहिण्णाणी एगदव्वे णिरंतरोवउत्तो अच्छेज्जा, ततो परेणं निरोहमसहमाणो ण सक्केति तंमि दव्वंमि उवउत्तो अच्छिउं, एत्थ दिट्ठंतो पुरिसो, जहा-कोइ पुरिसो अइव सण्हसूइए पासछिद्दे णिरंतरोवउत्तो न सक्केति दीहं कालं अच्छितुं, एवं सो ओहिणाणी तंमि दव्वे णिरंतरं उवउत्तो ण सक्केति भिण्णमुहुत्ताउ परं अच्छिउंति, भावओऽवि अवट्ठाणं जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं सत्तट्ठ समया, किं कारणं ?, जम्हा तिव्वयरेण उवओगेण दव्वस्स पज्जवोवलंभो भवति, अओ तिव्वोवओगेण य सुट्ठुतरं निरोहमसहणो न सक्केति तंमि पज्जए सत्तण्हं अट्ठण्हं वा समयाणं उवरिं अच्छिउंति, एवमेस एक्काए गाहाए अत्थो भणितो, इयाणिं बितियाए गाहाए अत्थं भणिहामि, सा य इमा, तंजहा— ॥ ५८ ॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ श्रुतज्ञाने

॥ ५९ ॥

अद्धाए अवट्ठाणं० ॥ ५८ ॥ अद्धा णाम कालो भण्णति, तस्स कालस्स अवट्ठाणं जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं छावट्ठि सागरोवमाणि सातिरेगाई, ताणि पुण छावट्ठिं सागरोवमाणि साइरेगाइं जो अणुत्तरेसु विमाणेसु उक्कोसट्ठितितो दो वारा उववज्जइ तस्स भवति, सातिरेगं से जं मणुस्सभवे आउयं देसूणा वा पुव्वकोडी अप्पतरगं वा कालं एतं सातिरेगं भवतित्ति, जो य एसो एको समतो एयंमि गाहापच्छद्धे जहण्णेण भणितो एसो चउण्हवि दव्वाईणं अवट्ठाणाणं अप्पप्पणो सट्ठाणे भणितोत्तिकाऊण इहं न भणितो । अवट्ठाणेत्तिदारं सम्मत्तं ॥ इदाणिं चलेत्ति दारमागतं, तं च चलं वुड्ढिं वा हाणिं वा पडुच्च भवति, सा य वुड्ढी वा हाणी वा इमेण पकारेण भवति, तंजहा—

वुड्ढी वा हाणी वा० ॥ ५९ ॥ तत्थ खेत्तस्स कालस्स य वुड्ढी चउव्विधा भवति, तंजहा-संखेज्जतिभागवुड्ढी वा होज्जा असंखेज्जतिभागवुड्ढी वा होज्जा संखेज्जगुणवुड्ढी वा होज्जा असंखेज्जगुणवुड्ढी वा होज्जा, तत्थ संखेज्जतिभागवुड्ढी णाम जावतितो जेसिं जीवाणं ओहिणाणस्स विसओ तस्स जो संखेज्जइमो भागो तावइतो सुभज्झवसियस्स जाहे भागो पुव्वुप्पण्णयाओ ओहिण्णाणाओ अहिओ समुप्पज्जति ताहे सा ओहिण्णाणस्स संखेज्जतिभागवुड्ढी भण्णति, असंखेज्जतिभागवुड्ढी णाम जावतितो जेसिं जीवाणं ओहिण्णाणस्स विसओ तस्स जोऽसंखेज्जइमो भागो तावइतो सुभज्झवसियस्स जाहे भागो पुव्वुप्पण्णयाओ ओहिण्णाणाओ अहिओ समुप्पज्जति ताहे ओहिणाणस्सऽसंखेज्जतिभागवुड्ढी भण्णइ, जा य एसाऽसंखेज्जतिभागवुड्ढी एसा संखेज्जइभागवुड्ढीओ थोवतरिया णायव्वात्ति, संखेज्जगुणवुड्ढी णाम जावतिओ जेसिं जीवाणं ओहिन्नाणस्स विसतो सो तप्पमाणेहिं चेव खंडेहिं सुभज्झवसियस्स परिवड्ढमाणो २ जाहे संखेज्जे वारे परिवड्ढिओ भवति ताहे सा संखेज्जगुणा वुड्ढी भवति, असंखेज्जगुणवुड्ढी णाम

चले वृद्धिहानी

॥ ५९ ॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

॥ ६० ॥

चले वृद्धिहानी

जावइतो जेसिं जीवाणं ओहिण्णाणस्स विसओ सो तप्पमाणेहिं चेव खंडेहिं सुभज्झवसियस्स परिवड्ढमाणो परिवड्ढमाणो जाहेऽसंखेज्जवारे परिवड्ढितो भवति ताहे सा असंखेज्जगुणवुड्ढी भण्णति, संखेज्जगुणवुड्ढीओ य असंखेज्जगुणवुड्ढी बहुतरिया भवातित्ति। खेत्तकालाणं च वड्ढी चउव्विहावि भणिता, इदाणिं एतेसिं चेव खेत्तकालाणं हाणी भाणियव्वा, साचि य एवं चेव णिरवसेसा हाणिअहिलावेणं चउव्विहा भाणियव्वा, णवरं सा असुभज्झवसियस्स भवातित्ति। एवमेसा हाणी गया॥ वड्ढीओ हाणीओ य खेत्तकालाणं गयाओ। इयाणिं दव्वस्स वुड्ढीओ य हाणीओ य दुविहाओ भण्णंति, तत्थ वड्ढी इमा, तंजहा-अणंतभागवुड्ढी वा अणंतगुणवुड्ढी वा। तत्थ अणंतभागवुड्ढी णाम जावतितो जेसिं जीवाणं दव्वाणि पडुच्च ओहिणाणस्स विसओ भवति तेसिं जो अणंततिमो भागो तावइओ सुभज्झवसियस्स जाहे भागो पुव्वुपण्णयातो ओहिण्णाणाओ अहिओ समुप्पज्जति ताहे सा ओहिण्णाणस्स अणंतभागवड्ढी भवति, अणंतगुणवुड्ढी णाम जावतिओ जेसिं जीवाणं दव्वाणि पडुच्च ओहिण्णाणस्स विसओ सो य तप्पमाणेहिं चेव खंडेहिं सुभज्झवसियस्स परिवड्ढमाणेहिं २ जाहे अणंतवारे वड्ढिओ भवति ताहे सा अणंतगुणवुड्ढी भण्णति, अणंतभागवड्ढीओ य अणंतगुणवड्ढी बहुतरिका णायव्वत्ति। दव्ववुड्ढी गता। इदाणिं तस्सेव दव्वस्स हाणी भण्णइ, साऽवि एवं चेव णिरवसेसा हाणिअभिलावेण भाणियव्वा, णवरं सा हाणी असुभज्झवसितस्स भवतित्ति। एवमेसा दव्वस्स हाणी गता, दव्वं पडुच्च वुड्ढीओ हाणीओ य गताओ। इदाणिं पज्जवे पडुच्च छव्विहाओ वुड्ढिहाणीओ भण्णंति, तत्थ पुव्विं ताव वुड्ढीं भणामि, तंजहा—

अणंतभागवुड्ढी वा असंखेज्जइभागवड्ढी वा संखेज्जतिभागवुड्ढी वा अणंतगुणवड्ढी वा असंखेज्जतिगुणवड्ढी वा संखेज्जगुणवड्ढी वा, तत्थ अणंतभागवुड्ढी जहा दव्वस्स अणंतभागवड्ढी भणिया तहेव भाणियव्वा, णवरं इह पज्जवाभिलावो भाणियव्वात्ति, ॥ ६० ॥

प्रत सूत्रांक [-] दीप अनुक्रम [-]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता...........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णिः-1

श्री आवश्यक चूर्णौ श्रुतज्ञाने ॥ ६१ ॥

असंखेज्जतिभागवुड्ढी संखेज्जतिभागवुड्ढी य जहा खेत्तकालाणं तहेव भाणियव्वा णवरं पज्जवाभिलावो भाणियव्वो, अणंतगुणवुड्ढी जहा दव्वस्स भणिया तहा भाणियव्वा, णवरं इह पज्जवाभिलावो भाणियव्वो, असंखेज्जगुणवड्ढी संखेज्जगुणवड्ढी य एयाओ दोऽवि जहा खेत्तकालाणं भणियाओ तहा भाणियव्वाओ, णवरं इहं पज्जवाभिलावो भाणियव्वो। एवमेसा छव्विहा पज्जववुड्ढी सम्मत्ता। इदाणिं तेसिं चेव पज्जवाणं हाणी भण्णाति, सा एवं चेव णिरवसेसा हाणिअभिलावेण भाणियव्वा, णवरं सा हाणी असुभज्झवसितस्स भवतित्ति। एवमेसा छव्विहा पज्जवहाणी भणिया। वुड्ढीओ हाणीओ य पज्जवे पडुच्च भणियाओ। एवमेव चलन्ति दारं सम्मत्तं। इदाणिं तिव्वमंदेत्ति दारमागतं, तंजहा—

फड्डा य असंखेज्जा० ♦ ६१ ॥ तिव्वमंददारपदरिसणत्थं इमो जालकडगदिट्ठंतो कीरइ जहा जालकडगस्स अंतो दीवको पलीविओ, ततो तस्स पईवस्स लेसातो तेहिं जालंतरेहिं निग्गच्छंति, णिग्गताओ य समाणीओ बाहिं अवट्ठियाणि रूविदव्वाइं उज्जोवेंति, एवं जीवस्सवि जेसु आगासपदेसेसु ओहिण्णाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमो भवति तेसु ओहिण्णाणं समुप्पज्जति, जेसु पुण आगासपदेसेसु ओहिण्णाणावरणक्खओवसमो णत्थि तेसु ओहिण्णाणं ण उप्पज्जति, जेसिं जीवाणं केसुवि आगासपदेसेसु ओही उप्पण्णो केसुवि न उप्पन्नो, तत्थ जेसु उप्पणो ते फड्डगा भण्णंति। अण्णे पुण एवं भणंति जहा–एवं जीवस्सवि जेसिं जीवप्पएसाणं ओहिण्णाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमो भवति तेसु ओहिण्णाणं समुप्पज्जइ, जेसिं पुण जीवस्स जीवप्पएसाणं ओहिण्णाणावरणिज्जाणं कम्माणं णत्थि खओवसमो तेसु ओहिण्णाणं ण उप्पज्जइ, तेसिं च जीवाणं केसुवि जीवप्पएसेसु ओहिण्णाणं उप्पण्णं केसुवि जीवप्पएसेसु ण उप्पण्णं, तत्थ जेसु उप्पण्णं ते फड्डगा भण्णंति, एतच्च

तीव्रमंदे स्पर्धकाः

॥ ६१ ॥

♦ अत्र निर्युक्ति-क्रम ६० वर्तते, मुद्रण-दोषात् ६१ इति मुद्रितम्

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

॥ ६२ ॥ चिंत्यं, ते य फड्डगा एगजीवस्स संखेज्जा वा होज्जा असंखेज्जा वा होज्जा, जया य सो ओहिण्णाणी एगंमिवि फड्डए उवउत्तो भवति तदा नियमा सव्वेसु चेव फड्डएसु उवउत्तो भवति, एतेसिं फड्डगाणं अण्णोऽण्णं फड्डगं पडुच्च केवि फड्डया विसुद्धा केइ पुण तओ विसुद्धतरगा केई पुण तओऽवि विसुद्धतमा भवंतित्तिकाऊणं ते फड्डया तिव्वा भण्णंति, तहा तेसिं चेव फड्डयाणं अण्णोऽण्णं फड्डगं पडुच्च केइ फड्डगा अविसुद्धा केइ पुण ततो अविसुद्धतरगा केइ पुण ततो अविसुद्धयमा भवंतित्तिकाऊणं ते फड्डगा मंदा भण्णंति। देवाण णारगाण य तित्थगरस्स य देवभविएण ओहिणा अपरिवडिएण चेव काऊणं फड्डगा, ओहियभावं पडुच्च तिव्वमंदा फड्डगा सव्वहा चेव णत्थि, मणुयतिरियाण पुण ते तिव्वमंदा फड्डगा छव्विहभेदा इमे, तंजहा–

फड्डा य आणुगामी ॥ ६१ ॥ मणुयतिरियाणं फड्डगा केइ आणुगामिया केइ अणाणुगामिया केइ मीसगा केइ पडिवादी केइ अपडिवादी केइ पडिवाईअप्पडिवाई य, तत्थ आणुगामिया णाम जे तावोहिण्णाणी अण्णत्थवि गच्छमाणमणुगच्छंति ते आणुगामिया भण्णंति, जे पुण णाणुगच्छंति ते अणाणुगामिया भण्णंति, जेसिं पुण फड्डगाणं किंचि अणुगच्छंति किंचि णाणुगच्छंति ते मीसगा भण्णंति, जेसिं पुण तिरियमणुयाणं फड्डगाणं उप्पज्जेऊण पुणो सव्वहा चेव ण भवंति ते पडिवाई भण्णंति, जे ण पडंति ते अपरिवाडी भण्णंति, जेसिं पुण फड्डगाणं किंचि पडिवडति किंचि ण पडिवडति ते पडिवातिअपडिवातिचेण मीसगा भण्णंति। तिव्वमंदात्ति दारं गतं ॥ इदाणिं पडिवाउप्पातत्ति दारमागतं, तंजहा--

बाहिरलंभे भज्जा० ॥ ६२ ॥ तत्थ बाहिरलंभग्गहणेणं अब्भितरलंभोऽवि सूयितो चेव, सो य बाहिरलंभो नाम जत्थ से ॥ ६२ ॥
ठियस्स ओहिण्णाणं समुप्पण्णं तंमि ठाणे सो ओहिण्णाणी ण किंचि पासति, तं पुण ठाणं जाहे अंतरियं होति, तंजहा-अंगुलेण वा

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ श्रुतज्ञाने ॥ ६२ ॥

प्रतिपातोत्पादौ

अंगुलपुहुत्तेण वा, विहत्थीए वा, विहत्थिपुहुत्तेण वा, एवं जाव संखेज्जेहिं वा असंखेज्जेहिं वा जोयणेहिं ताहे पासति, एस बाहिरलंभो भण्णति, सो य बाहिरलंभलद्धीओ ओहिण्णाणी पडिवातं उप्पातं तदुभयं च पडुच्च भयणिज्जो, कहं ?, तस्स बाहिरलंभलद्धीयस्स ओहिण्णाणिस्स एकसमएणं दव्वखेत्तकालभावाणं कयाइ सव्वेसिं चेव उप्पातो भविज्जा कयावि सव्वेसिं चेव पडिवातो भवेज्जा, कयावि सव्वेसिं चेव उप्पातो पडिवातोऽवि एगसमएण भवेज्जत्ति, उप्पायपडिवाओ णाम जेसिं दव्वखेत्तकालभावाणं काणिवि एगसमएण चेव पुव्वदिट्ठाणि ण पासति, काणिइ पुण अदिट्ठपुव्वाणि पासति, एस उप्पायपडिवातो भण्णति ॥ इयाणिं अब्भितरलंभं पडुच्च जहा उप्पातो पडिवातो तदुभयं च भवति तहा इमाए गाहाए भण्णति, तंजहा—

अब्भितरलद्धीए० ॥ ६३ ॥ तत्थ अब्भितरलद्धी णाम जत्थ से ठियस्स ओहिण्णाणं समुप्पण्णं ततो ठाणातो आरब्भ सो ओहिण्णाणी निरंतरं संबद्धं संखेज्जं वा असंखेज्जं वा खेत्तं ओहिणा जाणति पासति, एस अब्भितरलद्धी भण्णति, तीए य अब्भितरलद्धीए तदुभयं नत्थि एकसमएणं, तदुभयं णाम जो अण्णेसिं दव्वखेत्तकालभावाणं उप्पाओ अण्णेसिं च पडिवातो एवं तदुभयं भण्णति, उप्पायपडिवायाणं च एगतरो एगसमएणं भवति, कहं ?, अब्भितरओहिण्णाणलद्धीयस्स परिणामविसेसं पडुच्च दव्वखेत्तकालभावाणं जंमि समए उप्पाओ भवति णो तंमि चेव समए पडिवातो भवति, अण्णंमि समए उप्पातो भवति, अण्णंमि समए पडिवातो भवति, एगपगडीए णाम दोण्ह एयासिं उप्पायपडिवायपगडीणं एगसमएणं एगाए पगडीए उप्पाओ वा पडिवातो वा भवतित्ति । ॥ ६३ ॥

दव्वाउ असंखेज्जा० ॥६४॥ जो ओहिण्णाणी एकं दव्वं पासति सो तस्स दव्वस्स उक्कोसेणं एगगुणकालकादिणो संखेज्जे

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ श्रुतज्ञाने ॥ ६४ ॥

ज्ञानदर्शन-विभंगाः

वा असंखेज्जे वा पज्जवे ओहिणा लभइ, अणंते पज्जवे न लभंति, लभति णाम पासतित्ति वुत्तं भवति, पज्जवग्गहणेण य तस्स दव्वस्स वण्णगंधरसफासा गहिता भवंति, सो य एगदव्वदंसी ओहिण्णाणी तस्स एक्कस्स दव्वस्स जहण्णेण दो पज्जवे दुगुणिते पासति, दुगुणियग्गहणेण य चउण्हं गहणं कतं, किं कारणं?, जेण दोण्णि चेव दुगुणिज्जमाणे चउरो भवंति, अतो दुगुणितगहणेण चउण्हं गहणं कयंति, ते य चउरो पज्जाया इमे-वण्णं गंधं रसं फासं, तेसिं पुण वण्णगंधरसफासाणं जे एगगुणकालगाइणो पज्जाया ते सो एगदव्वदंसी ओहिण्णाणी न पासतित्ति, एवमेतं पडिवातोप्पातात्ति दारं गतं ॥ इयाणिं णाणदंसणविभंगं च एते तिण्णिऽवि दाराइं इमाए गाहाए भण्णंति, तंजहा--

सागारमणागारा० ॥ ६५ ॥ तत्थ तिव्वमंदातीणि कारणाणि पडुच्च तिरियमणुयाण ओहिण्णाणं ओहिदंसणं विभंगणाणं च विसओ अतुल्लो एतेसिं भणितोत्तिकाऊण इहं ण भणितो। एत्थ पुण णेरइया देवा व पडुच्च जेसिं ओहिण्णाणं ओहिदंसणं विभंगणाणं च तुल्लं भवति ते भण्णंति, तत्थ सागारग्गहणेणं ओहिण्णाणस्स गहणं कतं, अणागारग्गहणेणं ओहिदंसणस्स गहणं कतं, विभंगगहणेणं विभंगणाणस्स गहणं कयं, तत्थ विभंगणाणं णाम तं चेव ओहिण्णाणं मिच्छादिट्ठिस्स वितहभावगाहित्तणेण विभंगणाणं भण्णति, तत्थ जहण्णयग्गहणेणं खेत्तकालाणं गहणं कतं, ते य खेत्तकाला णेरइएहिंतो आरब्भ तिरियमणुए मोत्तुं जाव उवरिमगेविज्जगा देवा, एत्थ जे जे तुल्लट्ठितीया तेसिं ओहिण्णाणं ओहिदंसणं विभंगणाणं च पडुच्च विसओ तुल्लो भवति, दव्वभावविसओ पुण तुल्लट्ठितीणंपि एतेसिं सम्मदंसणं पडुच्च विसुद्धतवोकम्माईणि य कारणाणि य पडुच्च अतुल्लो भवति, उवरिमगेविज्जगाणं च परेण खेत्तं कालं च पडुच्च ओहिणाणओहिदंसणाणं विसओ असंखेज्जो भवति, दव्वपज्जवेसु पुण ॥ ६४ ॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ श्रुतज्ञाने ॥ ६५ ॥

देशक्षेत्र-द्वारे

ओहिण्णाणओहिदंसणाणं विसओ अणंतो भवतीति ॥ ओहिण्णाणओहिदंसणाविभंगाणि य एते तिण्णऽवि दारा गता ।

अण्णे पुण भणंति-इयाणिं नाणदंसणविभंगोत्ति दारं, तत्थ 'सागारमणागारा' गाहा, सागारंति णाणं, तं पुण ओहिण्णाणं गहितं, अणागारग्गहणेण ओहिदंसणं गहितं, ते सागारपज्जवा य अणागारपज्जवा य ओहिविभंगाणं जहण्णगा तुल्ला जाव गेवज्जा, तेण परं उवरिमगेविज्जेसु परेयं खेत्ततो य कालतो य असंखेज्जा, दव्वपज्जवेसु अणंता । इदाणिं देसोत्ति दारमागतं ।

णेरइय देव तित्थंकरा य० ॥ ६६ ॥ णेरइया देवा तित्थंकरा य एते तिण्णिवि ओहिण्णाणस्स अबाहिरा भवति, अबाहिरा णाम ओहिण्णाणवत्थियात्ति वुत्तं भवत्ति, ते य णेरइय देव तित्थंकरा य ओहिणाणस्स मज्झवत्थितत्तेण सव्वओ समंता पासंति, जे पुण सेसया तिरियमणुया ते देसेणवि पासंतित्ति ॥ देसित्ति दारं गतं ॥ इदाणिं खेत्तोत्ति दारमागतं, तंजहा—

संखेज्जमसंखेज्जा० ॥ ६७ ॥ संखिज्जाणि वा असंखेज्जाणि वा जोयणाणि ओही पुरिसमबाधा य भवति, अबाहा णाम पुरिसस्स य ओहीए य जं अंतरं सा अबाधा भण्णति, सो पुण ओही दुविहो भवति, तंजहा-संबद्धो य असंबद्धो य, जो य संबद्धो सो सरीरातो आरब्भ णिरंतरं संखेज्जाणि वा असंखेज्जाणि वा जोयणाइं जाणति पासइ, जोऽवि असंबद्धो सोऽवि संखेज्जाणि वा असंखेज्जाणि वा जोयणाइं सरीरातो अन्तरित्ता ततो परेण पासति, आरेण ण पासतित्ति । एत्थ संबद्धे असंबद्धे य ओहिण्णाणे चउभंगो भवति, तंजहा-पुरिसे संबद्धो लोगंते असंबद्धो १ लोगंते संबद्धो पुरिसे असंबद्धो २ अण्णो लोगंतेऽवि संबद्धो पुरिसेऽवि संबद्धो ३ अण्णो दोसुवि असंबद्धो४, जो पुण अलोगस्स अप्पमवि पासति सो पुरिसे णियमा संबद्धो ओही णायव्वोत्ति ॥ खेत्तत्ति दारं गतं ॥ तं पुण ओहिण्णाणं इमेहिं णवहिं दारेहिं अणुगन्तव्वं, तंजहा—

॥ ६५ ॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ श्रुतज्ञाने ॥ ६६ ॥

संतपयपरूवणया० ॥ १३ ॥ तत्थ संतपयपरूवणा णाम जहा कोइ सीसो कंचि आयरियं पुच्छिज्जा-भगवं ! एतं ओहिण्णाणं किं अत्थि णत्थित्ति ?, आयरिओ आह—नियमा अत्थि, सीसो आह-जदि अत्थि तो कहिं मग्गितव्वं ?, आयरिओ आह—इमेहिं ठाणेहिं मग्गितव्वं—

गइ इंदिए य काए० ॥ १४ ॥ भासगपरित्त० ॥ १५ ॥ तत्थ पढमं गतित्ति दारं, ताए चउव्विहाएऽवि गतीए ओहिणाणं पुव्वपडिवण्णओ य पडिवज्जमाणो य दोऽवि अत्थि । गतित्ति दारं गतं, इयाणिं इंदियत्ति दारमागतं--तत्थ एगिंदिया बि० ति० चतु० ण वा पुव्वपडिवण्णओ ण वा पडिवज्जमाणओ, पंचिंदिएसु पुण पुव्वपडिवण्णओ पडिवज्जमाणओ य दोऽवि अत्थि, इंदिएत्ति दारं गतं । इदाणिं काययोगवेदकसायलेसासम्मत्तपज्जवसाणा एए छप्पि दारा जहाभिणिबोहियणाणे भणिया तहा भाणियव्वा ओहिअभिलावेणंति । इदाणिं णाणेत्तिदारं आगतं, तंजहा—ओहिणाणं किं णाणी पडिवज्जति उदाहु अण्णाणी ?, एत्थ दो णया समोतरंति, तंजहा—णेच्छइए य ववहारिए य, निच्छयनयस्स णाणी पडिवज्जत्ति, पुव्वपडिवण्णओवि णाणी चेव होज्जा, ववहारियणयस्स णाणी वा पडिवज्जति अण्णाणी वा, जति णाणी पडिवज्जति किं आभिणिबोहियणाणी पडिवज्जति सुत० ओहि० मणपज्जवणाणी पडिवज्जति ?, तत्थ आभिणिबोहियणाणसुयणाणिणो वट्टमाणसमयं पडुच्च ओहिण्णाणे पुव्वपडिवण्णगा वा होज्जा पडिवज्जमाणगा वा, सम्मत्तसमुप्पत्तिकालातो पुण ओहिण्णाणी पुव्वपडिवण्णओ णत्थि, पडिवज्जमाणओ पुण आभिणिबोहियणाणसुतओहिणाणाणि कोइ जुगवं चेव पडिवज्जेज्जा, ओहिण्णाणी ओहिण्णाणउप्पत्तिसमकालमेव पडिवज्जमाणओ भवति, ततो उप्पत्तिकालतो पच्छा पुव्वपडिवण्णओ लब्भति, मणपज्जवणाणी जीवो ओहिण्णाणे

सत्पदादीनि

॥ ६६ ॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता...........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

श्री आवश्यक चूर्णौ श्रुतज्ञाने ॥ ६७ ॥

सत्पदादीनि

पुव्वपडिवण्णओ वा पडिवज्जमाणओ वा होज्जा, केवलणाणी ण वा पुव्वपडिवन्नतो ण वा पडिवज्जमाणतो। णाणत्ति दारं गतं। इयाणि दंसणेत्ति दारमागतं। तत्थ चक्खुदंसणी अचक्खुदंसणी ओहिणाणं पुव्वपडिवन्नओ वाऽवि पडिवज्जमाणओ वा होज्जा, ओहिदंसणी उप्पत्तिसमकालमेव पडिवज्जमाणओ भवति, उप्पत्तिकालाओ पच्छा पुव्वपडिवन्नओ लब्भइ, केवलदंसणी न वा पुव्वपडिवन्नओ न वा पडिवज्जमाणओ। दंसणत्तिदारं गतं। इयाणिं संजमत्ति दारमागतं, तत्थ ओहिण्णाणं संजतो असंजतो संजतासंजतो य एत्ते तिन्निऽवि पुव्वपडिवन्नगा पडिवज्जमाणगा वा होज्जा, संजमेत्ति दारं गतं। उवओगआहारभासगपरित्ता एते चउरोऽवि दारा जहा आभिनिबोधिते तहेव भाणियव्वा ओहिअभिलावेणंति। इयाणिं पज्जत्तएत्ति दारमागतं, तत्थ पज्जत्तओ पुव्वपडिवन्नओ वा पडिवज्जमाणओ वा ओहिण्णाणं दोसुवि भवेज्जा, अपज्जत्तओ ण वा पुव्वपडिवण्णओ ण वा पडिवज्जमाणओ, पज्जत्तियात्तिदारं गतं। इयाणिं सुहुम सन्निभवसिद्धियचरिमा एते चउरोवि दारा जहा आभिणिबोहियणाणे भणिता तहा ओहिअहिलावेण निरवसेसा भाणियव्वा। संतपयपरूवणत्ति दारं गतं॥ इयाणिं दव्वपमाणादीणि भाणियव्वाणि, ताणि दव्वपमाणादीणि अप्पाबहुकपज्जवसाणाणि अट्ठवि दाराणि जथा आभिणिबोहियणाणे भणिताणि तहेव निरवसेसाणि ओहिअहिलावेण भावियव्वाणित्ति।

इयाणिं तमोहिन्नाणं समासतो चउव्विहं भवति, तंजहा- दव्वतो खेत्तओ कालतो भावतो, दव्वओ णं ओहिन्नाणी रूविदव्वाणि जाणति पासति, खेत्तओ णं ओहिन्नाणी जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं उक्कोसेणं अलोए लोयप्पमाणमेत्ताइं असंखेज्जाइं खंडाइं ओहिणा जाणति पासति, कालओ णं ओहिन्नाणी जहण्णेणं आवलियाए असंखेज्जतिभागं उक्कोसेणं असंखेज्जाओ ॥ ६७ ॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता..........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

श्री आवश्यक चूर्णौ श्रुतज्ञाने ॥ ६८ ॥

द्रव्यादि-भिरवधिः आमर्शौ-षध्यादयः

ओसप्पिणिओ तीतं च अणागतं च कालं ओहिणा जाणति पासति, भावतो णं० अणंते पज्जवे जाणति पासति, सव्वपज्जवाणं अणंतभागं । एवमेतं ओहिन्नाणं चोद्दसपगडिभेदं सम्मत्तं ॥ ओहिन्नाणरिद्धिअवसरे चेव आमोसधिमादीयायोऽवि रिद्धीओ जीवाण भवंतित्तिकाऊण इड्ढिपत्ताणुओगस्स अवसरो आगतो, सो य इड्ढिपत्ताणुओगो इमाहिं दोहिं गाहाहिं भन्नति, तंजहा–

आमोसधि विप्पोसधि० ॥ ६९ ॥ चारण आसीविस केवली य० ॥ ७० ॥

तत्थ आमोसधी नाम रोगाभिभूतं अत्ताणं परं वा जं चेव तिगिच्छामित्ति संचिंतेऊण आमुसति तं तक्खणा चेव ववगयरोगातंकं करोति, सा य आमोसधीलद्धी सरीरेगदेसे वा सव्वसरीरे वा समुप्पज्जतित्ति, एवमेसा आमोसहित्ति भन्नति। तत्थ विप्पोसधिगहणेण विट्ठस्स गहणं कीरइ, तं चेव विट्ठं ओसहिसामत्थजुत्तत्तेण विप्पोसही भन्नति, तं च जीविए (जं चेव) विप्पोसधी य रोगाभिभूतं अप्पाणं वा परं वा छिवति तं तक्खणा चेव ववगयरोगायंकं करेति, सेसं विप्पोसधी, खेलजल्ला पसिद्धा, तेऽवि एवं चेव ओसहिसामत्थजुत्ता कस्सति तवरिद्धिसंपन्नस्स भवंतित्ति । संभिन्नसोयरिद्धी नाम जो एगतरेणावि सरीरदेसेण पंचवि इंदियविसए उवलभति सो संभिन्नसोयात्ति भन्नति । उज्जुमतिलद्धिगहणेण य विउलमतिलद्धीऽवि गहिता चेव, तत्थ उज्जुमती नाम मणोगतं भावं पडुच्च सामण्णमेत्तग्गाहिणी मती जस्स सो उज्जुमती भन्नति, विउलमती नाम मणोगयं भावं पडुच्च सपज्जायग्गाहिणी मती जस्स सो विउलमती भन्नति, जाणि य दव्वखेत्तकालभावाणि उज्जुमती जाणति ताणि विउलमती विसुद्धतराणि वितिमिरतराणि जाणतित्ति । तत्थ सव्वोसधी नाम सव्वाओ ओसधीओ आमोसधिमादीयाओ एगजीवस्स चेव जस्स समुप्पण्णाओ स सव्वोसधी भन्नति, अहवा सव्वसरीरेण सव्वसरीरावयवेहिं वा खेलोसधिमादीहिं जो ओसहिसामत्थजुत्तो सो ॥ ६८ ॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

॥ ६९ ॥

चारणादि लब्धयः

सव्वोसधी भवति, अहवा सव्ववाहीणं जो निग्गहसमत्थो सो सव्वोसधी भवति। एगाते गाथाए एसऽत्थो भणितो।

इयाणिं बितिज्जियाए गाथाए अत्थो भवति, तंजहा- एत्थ चारणलद्धी णाम दुविहा चारणा भवंति, तंजहा-जंघाचारणा य विज्जाचारणा य, तत्थ जंधाचारणलद्धिसंपन्नो अणगारो लूतापुडकतंतुमेत्तमवि णीसं काऊण गच्छति, विज्जाचारणलद्धीओ पुण विज्जातिसयसामत्थजुत्तयाए पुव्वविदेहअवरविदेहादीणि खेत्ताणि अप्पेण कालेण आगासेण गच्छतित्ति ॥ तत्थ आसीविसलद्धी णाम आसीविसोविव कुवितो जो देहविणिवायसामत्थजुत्तो सो आसीविसलद्धीओ भवतित्ति, केवलमणपज्जवणाणीपुव्वधरा अरिहंता चक्कवट्टी बलदेववासुदेवा य एतेऽवि केवलणाणादीहिं वासुदेवपज्जवसाणाहिं लद्धीहिं उववेया णायव्वा, केवलणाणादीयाओ य सिद्धाओचिकाऊण इहं ण भणिताओ।

एत्थ सीसो आह- भगवं! उज्जुमतिग्गहणेण चेव मणपज्जवणाणस्स गहणं कयं तो किमत्थं पुणो गहणं कयंति?, आयरिओ आह- तत्थ पुव्विं उज्जुमतिविउलमतिणो भेदा पडुच्च मणपज्जवणाणलद्धी परूविता, इह पुण अविसेसियस्स मणपज्जवणाणस्स गहणं कयंतिकाऊण णत्थित्थ दोसो। इयाणिं जा अरहंतचक्कवट्टिबलदेववासुदेवाणं च सारीरबलसामत्थं पडुच्च रिद्धी तं भणीहामि, जा पुण तेसिं अणुवमरूवपण्णासोहग्गसत्तमातीयाओ रिद्धीओ ताओ पसिद्धाओत्तिकाऊण इहं ण भण्णंति, तत्थ पुव्वं वासुदेवस्स सारीरबलसामत्थरिद्धीं भणीहामि। तीए पुव्विं भणिताए बलदेवस्स सरीरबलसामत्थरिद्धी वासुदेवसारीरबलसामत्थरिद्धी-तो अद्धप्पमाणा सुहग्गहणतरिका भविस्सति, वासुदेवस्स य सारीरबलसामत्थरिद्धीए चक्कवट्टिस्स बलरिद्धी अहियतरियत्ति- ॥ ६९ ॥

'मन:पर्यव'ज्ञानस्य स्वरुपादि वर्णनं आरभ्यते

प्रत सूत्रांक [-] दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ श्रुतज्ञाने ॥ ७० ॥

केशवादि-बलं लब्धिवर्णनं

काऊण पच्छा भणीहामि। चक्कवट्टिबलरिद्धीओ य अरिहंताणं भगवंताणं बहुतरियत्तिकाऊण पच्छा भणिहामि। तत्थ जा सा वासुदेवसारीरबलसामत्थरिद्धी सा इमाहिं दोहिं गाहाहिं भन्नति। तंजहा–

सोलस रायसहस्सा० ॥ ७१ ॥ **घेत्तूण संकलं सो०** ॥ ७२ ॥ एताओ दोऽवि गाहाओ कंठाओ। जाविय सा चक्कवट्टिणो सारीरबलसामत्थरिद्धी सावि इमाहिं दोहिं गाहाहिं भण्णति, तं०-'**दो सोला बत्तीसा०**' ॥ ७३ ॥ '**घेत्तूण संकलं सो०**' ॥ ७४ ॥ एताओ दोऽवि गाथाओ कंठातो, इयाणिं जं केसवस्स सारीरबलसामत्थं ततो जावतितेण भावेण चक्कवट्टिणो अहियतरागं सारीरबलसामत्थं भवति जं च अरिहंताणं भगवंताणं सारीरबलसामत्थं तं इमाए गाहाते भण्णति, तंजहा—

जं केसवस्स उ बलं० ॥ ७५ ॥ एवमेसो इड्डिपत्ताणुतोगो ओहिन्नाणपसंगेण आगतो भणितोत्ति। अन्ने एत्थ इमाओ वीसं इड्डीओ पन्नवेंति, तंजहा- आमोसहि १ खेल० २ जल्लोसधि ३ विप्पोसधि ४ सव्वोसहि ५ कोट्ठबुद्धी ६ बीयबुद्धी ७ पयाणुसारी ८ संभिन्नसोता ९ उज्जुमती १० विपुलमती ११ वेउव्वीय १२ खीरासवा महुआसवा १३ अक्खीणमहाणसा १४ चारणा १५ विज्जाहरा १६ अरहंता १७ चक्कवट्टि १८ बलदेव १९ वासुदेव २० ॥ एताओ भवसिद्धीयपुरिसाणं भवंति। एतातो जाणएणं विभासियव्वाओ। तत्थ बीयबुद्धी नाम बीजमात्रेण उवलभति, जहा सित्थेण दोणपाकं। एगेणं पदेणं सेसमवि जाणति जो सो पयाणुसारी। कोट्ठबुद्धी नाम जहा कोट्ठए धण्णं एवं जं सिक्खति। संभिन्नसोतो णाम जति बारसजोयणचक्कवट्टिखंधावारे जमगसमगं बोल्लेज्जा सव्वेसिं पत्तेयं पत्तेयं जाणति, एगेण वा इंदिएणं पंचवि इंदियत्थे उवलभति, अहवा सव्वेहिं अंगोवंगेहिं, अहवा चक्कवट्टिखंधावारे सव्वतूराणं विसेसं उवलभति, एस संभिन्नसोओ भन्नति। खीरासवो बोलेज्ज पज्जति खीरासवं मुयति,

॥ ७० ॥

वासुदेव आदेः लब्धि-वर्णनं

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

खीरासवो नाम जहा चक्कवट्टिस्स लक्खो गावीणं, ताणं जं खीरं तं अद्धद्धस्स दिज्जति, तं चातुरक्कं, एवं खीरासवो भवति । एवं महुआसवावि बुद्ध्याऽपेक्ष्य परूवेयव्वा । अक्खीणमहाणासियस्स भिक्खं ण अन्नेणं णिट्ठविज्जति, तंमि जिमिते निट्ठाति । उज्जुमती । विपुलमती । तहेव इच्छितं विउव्वति वेउव्वी । चारणो दुविहो- जंघाचारणो आगासचारणो य, आगासचारणो आगासेणं जाइ, जंघाचारणो जाव लूतातंतुएणावि जाति, विज्जाधरस्स विज्जा आगासगमणा, सेसं तहेव । इयाणिं मणपज्जवणाणं भणीहामि, तस्स य मणपज्जवणाणस्स य दोन्नि भेदा भवंति, तंजहा- उज्जुमती य विउलमती य, सो य जहेव इड्डिपत्ताणुतोग भणितो तह चेव एत्थंपि भाणियव्वोत्ति । तं च लक्खणतो इमं, तंजहा--

मणपज्जवणाणं० ॥ ७६ ॥ एत्थ मणपज्जवणाणं णाम जेण उप्पण्णेण णाणेण मणुस्सखेत्ते सन्निजीवेहिं मणपातोग्गाणि दव्वाणि मण्णिज्जमाणाणि जाणति तं मणपज्जवणाणं भन्नति, एत्थ दिट्ठंतो पिहुज्जणो, जहा सो पिहुजणो अन्नो अन्नस्स कस्सइ आगारे दट्ठूणं दुमणं सुमणं वा भावं जाणति, एवं मणपज्जवणाणीवि संनीणं पंचेंदियाणं मणोगते भावे जाणति, जहा एरिसेहिं दव्वेहिं मण्णिज्जमाणेहिं एरिसं चिंतितं भवतित्ति । तं च मणपज्जवणाणं मणुस्साणं गब्भवक्कंतियाणं कम्मभूमगाणं संखेज्जवासाउयाणं पज्जत्तगाणं सम्मदिट्ठीणं इड्डिपत्तमपमत्तसंजयाणं भवतित्ति । तं च मणपज्जवणाणं समासओ चउव्विहं भवति, तंजहा- दव्वतो खेत्तओ कालतो भावतो, तत्थ दव्वतो णं उज्जुमती अणंते अणंतपएसिते खंधे जाणति पासति, ते चेव विउलमती विसुद्धतराए वितिमिरतराए खंधे जाणति पासति, खेत्तओ णं उज्जुमती जाव इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उवरिमहेट्ठिल्लेसु खुड्डगपतरेसु, उड्ढं जाव जोतिस्सस्स उवरि तलो, तिरियं जाव अड्ढाइज्जेसु दीवेसु दोसु य समुद्देसु सण्णीणं पंचेंदियाणं पज्जत्तगाणं मणोगते भावे

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

श्री आवश्यक चूर्णौ श्रुतज्ञाने
॥ ७२ ॥

जाणति पासति, ते चेव विउलमती अड्ढाइज्जेहिं अंगुलेहिं अब्भहिए खेत्ते विसुद्धतराए वितिमिरतराए जाणइ पासइ, कालओ णं उज्जुमती जहन्नेणं पलिओवमस्स असंखेज्जातिभागं उक्कोसेणऽवि पलितोवमस्स असंखेज्जतिभागं तीयं च अणागयं च कालं जाणति पासति, तं चेव विउलमती विसुद्धतरागं वितिमिरतरागं जाणति पासति, भावतो णं उज्जुमती अणंते भावे जाणति पासति सव्वभावाणंतभागं, ते चेव विउलमती विसुद्धतराए वितिमिरदराए जाणति पासति । से तं मणपज्जवणाणं ॥ इयाणिं केवलनाणं भवति, तंजहा—

केवलज्ञानं

अह सव्वदव्वपरिणाम० ॥७७॥ तत्थ अहसद्दो आणंतरिए वट्टति, तत्थ आणंतरियं णाम आणंतरियंति वा अणुपरिवाडित्ति वा अणुक्कमेति वा एगट्ठा, मणपज्जवणाणातो य अणंतरं केवलनाणं भवति, अह तस्स केवलणाणस्स अवसरो संपत्तोत्ति, तत्थ केवलसद्दो णिरवसेसिते अत्थे वट्टति, आभिणिबोहियणाणाईणिवि णाणाणि चेव भवंति, ण पुण ताणि केवलाणि नाम संपुन्नाइंति वुत्तं भवति, एत्थ दिट्ठंतो कद्दमोदगं, जहा कद्दमोदकस्स कयकफलादिणा दव्वेण अच्छता भवति, सा य अच्छता काइ विसुद्धा, कावि ततोऽवि विसुद्धतरा, कावि पुण ततो विसुद्धतमा भवति, एवं तदावरणिज्जाणं कम्माणं खतोवसमेण आभिनिबोहियसुयणाणाणि उप्पज्जंति, ततो विसुज्झमाणस्स ओहिन्नाणं उप्पज्जति, ततो विसुज्झमाणस्स मणपज्जवणाणं उप्पज्जति, ततो णाणावरणदंसणावरणमोहणिज्जअंतरायाणं चउण्हवि कम्माणं णिरवसेसक्खतेण अविगप्पं एगं चेव केवलनाणं समुप्पज्जति । जे य आभिनिबोहियणाणादयो विगप्पा ते तस्स केवलणाणिणो ण हवंति, कस्सति पुण ओहिन्नाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे अकतेऽवि मणपज्जवणाणं उप्पज्जति, पच्छा ओधिणाणावरणखतोवसमं काऊण ओहिन्नाणं उप्पाडेति, ततो केवलणाणावरणक्खयं ॥ ७२ ॥

'केवल'ज्ञानस्य स्वरुपादि वर्णनं आरभ्यते

प्रत सूत्रांक [-] दीप अनुक्रम [-]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता..........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णिः-1

श्री आवश्यक चूर्णौ श्रुतज्ञाने ॥ ७३ ॥

केवलज्ञानं ॥ ७३ ॥

काऊण केवलणाणमुप्पाडेतित्ति । कोवि पुण ओहिमणपज्जवणाणाणि अपाविऊण चेव केवलणाणमुप्पाडेति । अतो केवलणाणं चेव निच्छयणयस्स वत्तव्वयाए आवरणं पडुच्च आभिणिबोहियणाणादीणि णामाणि लब्भति । तं चेव केवलणाणं सव्वदव्वाणं परिणामस्स सव्वभावाणं च परिणामस्स विन्नत्तिकारणं भवति, एगगहणे गहणं तज्जातीयाणं सव्वेसिंतिकाऊण दव्वभावग्गहणेण सव्वखेत्तपरिणामस्स सव्वकालपरिणामस्स य दोण्हवि विन्नत्तिकारणं भवति । जम्हा य सव्वदव्वखेत्तकालभावाणं चउण्हवि सव्वपरिणामाणं विन्नत्तिकारणं भवति अतो तं केवलणाणं अणंतं दट्ठव्वंति । तत्थ सव्वदव्वपरिणामो णाम, दव्वं दुविहं भवति, तंजहा- जीवदव्वं अजीवदव्वं च, तस्स दुविहस्सावि दव्वस्स जो उप्पायट्ठितिभंगेहिं पज्जायभावो सो दव्वपरिणामो भवति, तत्थ खेत्तगहणेण आगासत्थिकायस्स गहणं कयं, तस्स खेत्तपरिणामो परपच्चइओ पोग्गलत्थिकायादिणो दव्वे पडुच्च भवतित्ति, तत्थ कालपरिणामो णाम समयावलियमुहुत्तादी अणेगभेदो भवति, भावपरिणामो णाम एगगुणकालादी अणेगभेदो दट्ठव्वोत्ति । एतेसिं चउण्हवि दव्वखेत्तकालभावाणं जो परिणामो तस्स सव्वपरिणामस्स विन्नत्तिकारणमणंतं केवलणाणं भवतित्ति । तत्थ विन्नत्तिकरणं नाम विन्नत्तिकारणंति वा जाणितव्वगसामत्थजुत्तंति वा विन्नत्तिहेउभूयंति वा एगट्ठा, जहा य केवलणाणं अणंतं भवति तहा सासतं अपडिवादी एगविहं च भवति । तत्थ एगविहं णाम आभिणिबोहियनाणादीभेदाविउत्तंति वुत्तं भवति, एत्थ सीसो आह- जमेतं दुवालसंगं गणिपिडगं एयं केवलणाणोवलद्धंति काऊण कहं केवलं चेव ण भवति ?, आयरितो आह-

केवलणाणेणऽत्थे० ॥ ७८ ॥ दुविहा भावा भवंति, तंजहा-अभिलप्पा य अणभिलप्पा य, तत्थ जे ते अणभिलप्पा ते ण चेव अभिलाविऊण सक्कंतित्तिकाऊण तेसु अधिकारो चेव णत्थि, जे ते पुण अभिलप्पा ते दुविहा भवंति, तंजहा- पण्णवणिज्जा

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

अपण्णवणिज्जा य, तत्थ जे ते अपन्नवणिज्जा तेसु ण चेव अहिगारो अत्थित्ति, जे पुण पण्णवणिज्जा भावा ते केवलणाणेण पासिऊण तित्थकरो तित्थकरनामकम्मोदतेण सव्वसत्ताणं अणुग्गहनिमित्तं भासति, जं च सो भगवं भासति तं वतिजोगसुत्तत्तणेण सुयणाणं भवति, जं च पुण सेसं केवलणाणोवलद्धं ण चेव भासति तं केवलणाणं दट्ठव्वंति ॥

तं च केवलणाणं सामित्तं पडुच्च दुविहं भवति, तंजहा- भवत्थकेवलणाणं च सिद्धकेवलणाणं च, तत्थ भवत्थकेवलणाणं नाम जं मणुस्सभवे चेव अवत्थितस्स चउहिं घातिकम्मेहिं खीणेहिं समुप्पज्जति, तं जाव चउरो केवलिकम्मा अक्खीणा ताव भवत्थकेवलणाणं भन्नति, जं पुण केवलिकम्मेहिं खीणेहिं सिद्धस्स तं सिद्धकेवलणाणं भन्नति, तत्थ जं तं भवत्थकेवलणाणं तं दुविहं, तंजहा- सजोगिभवत्थकेवलणाणं च अजोगिभवत्थकेवलणाणं च, तत्थ सजोगिग्गहणेण केवलणाणसमुप्पत्तीओ आरब्भ जाव पंचहस्सक्खरियं सेलेसिं ण पडिवज्जति ताव सयोगिभवत्थकेवलणाणं भन्नति, जाहे पुण पंचहस्सक्खरियं सेलेसिं पडिवन्ने भवति ताहे अजोगिभवत्थकेवलणाणं भन्नति, तत्थ जं तं सजोगिभवत्थकेवलणाणं तमवि दुविहं भन्नति, तंजहा-पढमसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणं च अपढमसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणं च, तत्थ पढमसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणं णाम जंमि चेव समये केवलणाणमुप्पन्नं तंमि चेव तस्सं केवलणाणस्सं पढमसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणंति सन्ना भवति, ततो य केवलणाणुप्पत्तिपढमसमयातो जो बीतो अणंतरसमतो ततो आरब्भ जाव पंचहस्सक्खरियं सेलेसिं ण पडिवज्जति ताव अपढमसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणं भन्नति, तहा एयस्स चेव सजोगिभवत्थकेवलणाणस्स अन्ने इमे दुए भेदा भवंति, तंजहा- चरिमसमयसजोगिभवत्थकेवलनाणं च अचरिमसमयसजोगिभवत्थकेवलनाणं च, तत्थ चरमसमयसजोगिभवत्थकेवलनाणं णाम जातो समयातो अणंतरं ॥ ७४ ॥

प्रत सूत्रांक [-] दीप अनुक्रम [-]	

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता...........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णिः-1

श्री आवश्यक चूर्णौ श्रुतज्ञाने ॥ ७५ ॥

अनन्तर-सिद्ध केवलज्ञानं

पंचहस्सक्खरियं सेलेसिं पडिवज्जाति सो य सजोगिभवत्थकेवलणाणिस्स चरमसमयो भवति, तंमि य समये वट्टमाणस्स केवलिस्स जं केवलणाणं तं चरिमसमयसजोगिभवत्थकेवलनाणं भवति, तातो य सजोगिचरिमसमयाओ आरब्भ जो से अतीतो कालो जाव केवलणाणुप्पत्तिपढमसमयो एत्थ अचरमसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणं भवति, से तं सजोगिभवत्थकेवलनाणं। तत्थ जं तं अजोगिभवत्थकेवलणाणं०, से तं भवत्थकेवलनाणं॥

से किं तं सिद्धकेवलणाणं?, सिद्धकेवलणाणं दुविहं भवति, तंजहा-अणंतरसिद्धकेवलणाणं च परंपरसिद्धकेवलनाणं च, तत्थ अणंतरसिद्धकेवलणाणं णाम जंमि समते एगो केवली सिद्धो ततो जो अणंतरो बितीओ समतो तंमि अन्नो केवली सिद्धो तस्स केवलिस्स जं णाणं तं अणंतरसिद्धकेवलनाणं भवति, तं च पन्नरसविहं, तंजहा-तित्थसिद्धकेवलणाणं अतित्थसिद्ध० तित्थगरसिद्ध० अतित्थकर० सयंबुद्ध० पत्तेयबुद्ध० बुद्धबोहिय० इत्थिलिंगसिद्ध० पुरिस० णपुंसकलिंग० अन्नलिंग० गिहिलिंग० एगसिद्ध० अणेगसिद्धकेवलणाणंति। तत्थ तित्थसिद्धकेवलणाणं णाम जे तित्थगराणं तित्थे सिद्धा तासिं जं णाणं तं तित्थसिद्धकेवलणाणं भवति, अतित्थसिद्ध० णाम ज तेसिं तित्थगराणं तित्थातो तित्था ण मिलिता तत्थ तित्थंतरे च वट्टमाणे जे सिद्धा तेसिं जं केवलणाणं तं अतित्थसिद्धकेवलणाणं भवति, तित्थगरसिद्धकेवलणाणं जहा उसभादीणं, अतित्थगरसिद्धकेवलनाणं जहा भरहादीणं, सयंबुद्धकेवलनाणं जं सयं चेव संबुज्झिऊणं किंचि आयरियं उवसंपज्जति ततो पच्छा जं तस्स केवलणाणं तं सयंबुद्धकेवलणाणं भण्णति, पत्तेयबुद्धकेवलणाणं णाम जहा णमिस्स रायरिसिणो, ते य पत्तेयबुद्धा सयं चेव संबुज्झिऊण सयं चेव पव्वज्जं अब्भुवगच्छंति तेसिं जं केवलणाणं तं पत्तेयबुद्धकेवलणाणं भवति, अथवा सयं-अप्पणिज्जं जातिस्सरणादिकारणं पडुच्च बुद्धा सयंबुद्धा, फुडतरं ॥ ७५ ॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ श्रुतज्ञाने

॥ ७६ ॥

वा अभिधीयते, बाह्यप्रत्ययमंतरेण ये प्रतिबुद्धास्ते सयंबुद्धाः, ते य दुविहा- तित्थगरा वइरित्ता य, इह वतिरित्तेहिं अहिगारो, किंच- सयंबुद्धस्स बारसविहोऽवि उवही भवति, पुव्वाधीतं से सुतं भवति वा ण वा, जति से णत्थि तो लिंगं नियमा गुरुसंनिहे पडिवज्जति गच्छे य विहरति, अहवा पुव्वाधीतसुयसंभवो अत्थि तो से लिंगं देवता पयच्छति गुरुसंनिहे वा पडिवज्जति, जदि य एगविहारविहरणजोग्गो इच्छा य से तो एगो चेव विहरति, अन्नहा गच्छे विहरति, एयम्मि भावे ठिता सिद्धा, पती पती (पत्तेयत्ता) ओ वा भावतो सिद्धा पत्तेयबुद्ध०, पत्तेयं बाह्यं वसभादिकारणमभिवीक्ष्य बुद्धा पत्तेयबुद्धा, एतेसिं णियमा पत्तेयं विहारो जम्हा तम्हा ते पत्तेयबुद्धा, जहा करकंडुमादयो, किंच-पत्तेयबुद्धाणं जहन्नेण दुविहो उक्कोसेण णवविहो उवधी णियमा पाउरणवज्जो भवति, किंच-पत्तेयबुद्धाणं नियमा पुव्वाधीतं सुतं भवति, जहन्नेण एक्कारसंगी उक्कोसेण भिन्नदसपुव्वी, लिंगं च देवया पयच्छति लिंगवज्जितो वा भवति । जतो भणितं 'रुप्पं पत्तेयबुद्धा' इति । बुद्धबोहियकेवलणाणं णाम जं संमं सोऊण वेरग्गतवजुत्तस्स भवति तं बुद्धबोहियकेवलणाणं भन्नति, इत्थिलिंगेण सिद्धाणं जं नाणं तं इत्थिलिंगसिद्धकेवलणाणं, एवं पुरिसणपुंसएसुवि भाणियव्वं, तहा सलिंगसिद्धाण जं णाणं तं सलिंगसिद्धकेवलणाणं भन्नति, अन्नलिंगसिद्धकेवलणाणं णाम जं अन्नलिंगेण सम्मत्तं पडिवन्नस्स केवलणाणं समुप्पज्जति, समुप्पत्तिकालसमयमेव कालं करेति तं अन्नलिंगसिद्धकेवलणाणं भन्नति, सो य अन्नलिंगिकेवली जति आउयमप्पणो अपरिक्खीणं पासति ततो साधुलिंगं चेव पडिवज्जतित्ति । गिहिलिंगसिद्धकेवलणाणं णाम जहा कस्सति गिहिणो चेव सम्मत्तं पडिवन्नस्स केवलणाणं उप्पज्जेज्जा, समुप्पत्तिकालसमयमेव कालं करेज्जा तस्स जं णाणं तं गिहिलिंगसिद्धकेवलणाणं भन्नति, एगसिद्धकेवलणाणं नाम जंमि समये सो सिद्धो न तंमि अन्नो कोइ सिद्धोत्तिकाऊण तस्स जं नाणं तं एगसिद्धकेवलनाणं

अनन्तर-सिद्ध केवलज्ञानं

॥ ७६ ॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ श्रुतज्ञाने

॥ ७७ ॥

परंपरसिद्ध-केवलं

भण्णति, अणेगसिद्धकेवलनाणं नाम जंमि समए सो सिद्धो तंमि समये अन्नेऽवि सिद्धा एतेसिं जं णाणं तं अणेगसिद्धकेवलणाणं भन्नति। एवमेतं अणंतरसिद्धकेवलणाणं भन्नतित्ति ॥

तत्थ परंपरसिद्धकेवलणाणं अणेगविहं भवति, तंजहा-अपढमसमयसिद्धकेवलणाणं एवं दुसमय जाव दससमय० संखेज्जसमय० असंखेज्जसमय० अणंतसमयसिद्धकेवलणाणंति । तत्थ अपढमसमयसिद्धकेवलणाणं णाम अत्थि ते सिद्धा जे अन्नस्स सिद्धस्स सिज्झणकालातो अपढमिल्ले समये सिद्धा तेसिं जं केवलनाणं तं अपढमसमयसिद्धकेवलणाणं भन्नति, तहा अत्थि ते सिद्धा जे अन्नस्स सिद्धस्स सिज्झणकालातो वितिए समए सिद्धा तेसिं जं केवलणाणं तं दुसमयसिद्धकेवलणाणं भन्नति, एवं जाव अत्थि ते सिद्धा जे अन्नस्स सिद्धस्स सिज्झणकालातो अणंततिमे समये सिद्धा तेसिं जं णाणं तं अणंतसमयसिद्धकेवलनाणं भन्नति । सेत्तं परंपरसिद्धकेवलणाणं । से तं सिद्धकेवलनाणं ॥ तं च केवलणाणं समासतो चउव्विहं भवति, तंजहा-दव्वतो खेत्ततो कालतो भावतो, दव्वतो णं केवलणाणी सव्वदव्वाइं जाणति पासति, खेत्तओ णं केवलनाणी सव्वखेत्तं जाणति पासति, कालओ णं केवलनाणी सव्वकालं जाणति पासति, भावतो णं केवलणाणी सव्वभावे जाणति पासति। सेत्तं केवलणाणं। एवमेतं पच्चक्खणाणं तिविहमवि भणितं, वन्निया य पंचविहावि आभिणिबोहियणाणाती केवलणाणपज्जवसाणा भावणंदित्ति ॥ भावनंदी सम्मत्ता ॥

एवमेताइं आभिनिबोहियणाणादीणि पंच णाणाइं भावमंगलणिमित्तं परूविताइं । एत्थ पुण सुयणाणेणं अधीगारो, कम्हा ?, जम्हा सुयणाणे उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुतोगो य पवत्ततित्ति, अहवा जम्हा सुयणाणेण अवसेसाणि णाणाणि णज्जंति परूविज्जंति वा तम्हा सुयणाणेण अधीगारो । अहवा चत्तारि णाणाणि ससमुत्थाणि इमं परसमुत्थं तेणं तस्स अधिकारो । ॥ ७७ ॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ श्रुतस्कंधे ॥ ७८ ॥

आवश्यक-निक्षेपाः

जति सुयणाणेण अधिगारो तो उद्देसादीणि एयस्स पवत्तंति, तो किं अंगपविट्ठस्स अंगबाहिरस्स ?, दोण्हवि, इमं पुण पट्ठवणं पडुच्च अंगबाहिरस्स, जति अंगबाहिरस्स तो किं आवस्सगस्स आयस्सगवतिरित्तस्स?, दोण्हवि, इमं पुण पट्ठवणं पडुच्च आवस्सगस्स अणुतोगो, आवस्सगन्नं किं अंगं अंगाइं सुअक्खंधो सुयखंधा अज्झयणं अज्झयणाइं उद्देसो उद्देसा ?, आवस्सगं णं णो अंगं णो अंगाइं सुयक्खंधो णो सुयक्खंधा णो अज्झयणं अज्झयणा णो उद्देसो णो उद्देसा, तम्हा आवस्सगं णिक्खिविस्सामि सुयं णिक्खिविस्सामि खंधं णिक्खिविस्सामि ।

से किं तं आवस्सयं ?, आवस्सगं समासतो चउव्विहं-णाम० ठवणा० दव्व० भाव०, णामावस्सयं जस्स णं जीवस्स वा अजीवस्स वा आवस्सएत्ति णामं कीरति, से तं णामावस्सगं । से किं तं ठवणावस्सगं ?, २ जन्नं कट्ठकम्मे वा पोत्थकम्मे वा सब्भावओ असब्भावओ वा आवस्सएत्ति ठवणा ठप्पति सेत्तं ठवणावस्सगं। से किं तं दव्वावस्सगं ?, दव्वावस्सगं दुविहं, तंजहा-आगमओ य णोआगमओ य, आगमओ जस्स णं आवस्सएत्तिपदं सिक्खितं ठितं इच्चादि, सिक्खितं नाम जं अंतं पत्तं, ठितं णाम जं से ठितं हियये, जितं नाम जं मूले घेत्तूण अग्गं पावेति, मितं णाम जं अक्खरेहिं पदेहिं सिलोगेहिं मितं-एत्तियाइं ताइं, परिजितं नाम जं मूलाओ अग्गं पावेति अग्गाओ य मूलं पावेति, णामसमं णाम जहा अप्पणो णामं एवं तंपि अज्झयणं, घोससमं उदत्तअनुदत्तस्वरितकंपितद्रुतविलंबिताविश्लिष्टापेक्षस्वरानियतं, उच्चैरुदात्तं जहा उप्पदेति वा भूएत्ति वा, अणुदत्तं उप्पन्नेति वा भूएति वा, सयाहारे उप्पन्नभूयपरिणया, हीणक्खरे उदाहरणं—दव्वे अगारीए पुत्तस्स ओसहं ऊणं दित्तं, भावे विज्जाहरो, 'रायगिहे' गाहा० अच्चक्खरे उदाहरणं–दव्वे तहेव अगारी, अहिए भावे 'जो जह वट्टती०' गाहा, अहवा-'चंदगुत्त०' गाहा। ॥ ७८ ॥

***अत्र उपोद्घात् निर्युक्ति: आरभ्यते,

***आवश्यकस्य नामादि निक्षेपा: वर्णयते

श्री आवश्यक चूर्णौ श्रुतस्कंधे

॥ ७९ ॥

खलिते पत्थरंमी नांगूलं मिलिए धन्नरासी विच्चामेलिते कोलियपायसो 'पडिपुन्नं' पडिपुन्नघोसं कंठोट्ठविप्पमुक्कं जहा 'कप्पपेढिलाए' तहा भणियव्वं । सेसं आगमतो ।

से किं तं णोआगमतो दव्वावस्सयं ?, २ जाणगसरीर० भवियसरीर० तव्वतिरित्तं ३ जहा णियोगदारे जा वतिरित्ते, णवरि लोउत्तरिए दव्वावस्सए इमं अ[त्थ]क्खाणगं भाणियव्वं--वसंतपुरं णगरं, तत्थ गच्छो अगीयत्थसंविग्गो विहरति, तत्थ य एगो अगीयत्थो समणगुणमुक्कजोगी, सो दिवसदेवसियं उदउल्लसासिणिद्धआहाकम्मादीणि पडिसेवित्ता महता संवेगेणालोएति, ते पुणो अगीयत्था पायच्छित्तं अयाणमाणा अहो इमो धम्मसड्ढीओ साधू, सुहं पडिसेविउं दुक्खं आलोएउं, एवं नाम एस आलोएत्ति अगूहंतो, तं दट्ठूणं ते अवसेसा पव्वइया चिंतेति-णवरि आलोएयव्वं, -णत्थित्थ किंचि पडिसेवितेणं । तत्थऽन्नदा कयाती गीयत्थो संविग्गो विहरमाणो आगतो, सो तं दिवसदेवसियं दट्ठूणं तत्थ उदाहरणं दाएति--गिरिणगरे णगरे वाणियओ रत्तरतणाणं घरं पूरइत्ता पलीवेइ, तत्थ सव्वलोगो पसंसति-अहो इमो भगवंतं अग्गिं तिप्पेइ, अन्नया कयावि तेण य पलिवितं, वायो य पबलो जातो, सव्वं णगरं दड्ढं, अन्नंहिंपि णगरे एक्को एवं चेव करेइ, सो राइणा सुओ जहा एवं करेतित्ति, सो य सव्वस्स हरणं काऊणं विसज्जितो, अडवीए कीस ण पलीवेसि ?, जहा तेणं वाणियएणं अवसेसावि दड्ढा, एवं तुब्भेऽवि एतं पसंसंता इमे साधुणो सव्वे परिच्चयह, एवं च एस महाणिद्धंधसो, जदि एयस्स निग्गहं ण करेह ताहे सव्वे विणस्सेहा, एयं दव्वावासतं ।

से किं तं भावावासगं ?, २ आगमतो य णोआगमतो य, आगमओ जाणओ उवउत्तो, णोआगमतो तिविहं-लोइयं लोउत्तरियं कुप्पावयणियं, जहा अणुओगद्दारे ॥ तस्स णं इमे एगट्ठिया णामधेज्जा पं०-आवस्सगंति वा अवस्सकायव्वं अवस्सकर-

आवश्यकनिक्षेपाः

॥ ७९ ॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ श्रुतस्कंधे

॥ ८० ॥

गंति वा अवस्सकरणिज्जंति वा धुवकायव्वंति वा निग्गहोत्ति वा, एत्थ गाथा फासेयव्वा, 'समणेण सावगे' एयं निरुत्तं आवस्सगस्स, सेत्तं आवस्सगं । से किं तं सुयं?, सुयं जहा अणुओगद्दारे, खंधोवि तहेव, एत्थ सामादियादीणं सुयविसेसाणं छण्हं खंधो सुयक्खंधो, आवस्सगं च तं सुयखंधो २ । एत्थ य छ अत्थाधिगारा सामाइयादीणं जहाजोगमणुगंतव्वा, तं०-सावज्जजोगविरती उक्कित्तण गुणवतो य पडिवत्ती । खलियस्स निंदणा वणतिगिच्छ गुणधारणा चेव ॥१॥ आवस्सयस्स एसो पिंडत्थो वन्नितो समासेणं । एत्तो एकेकं पुण अज्झयणं वत्तइस्सामि ॥ १ ॥

तत्थ पढमं अज्झयणं सामाइयं, तस्स इमाणि चत्तारि अणुओगदाराणि भवंति, तंजहा-उवक्कमो निक्खेवो अणुगमो णयो, किं णिमित्तं चत्तारि दारा कता ?, एगेणेव अणुगमेणं कीस णाणुगम्मति ?, तत्थ दिट्ठंतो-एगदुवारेण नगरेण समंततो जोयणायामेणं, जहा तत्थ एगेणं दुवारेणं कट्ठतणयादिकज्जाणं संकिलेसो भवति सव्वलोगस्स, जहा तं नगरं दुन्निक्खमणपवेसं भवति एगेणं दुवारेणं, एवं चेव सिस्सस्स दुम्मेहस्स दुक्खं एगेणं दारेणं अत्थाधिगमो भवति, तेण चत्तारि दारा कया उवक्कमादिया ।

से किं तं उवक्कमे?, उवक्कमो णासस्स अपत्तावत्थापावणं, सो पुण छव्विहो-णामोवक्कमो ठवणोवक्कमो दव्वो०खेत्तो०कालो० भावोवक्कमो, णामठवणाओ गयाओ, से किं तं दव्वोवक्कमो?,२ दव्वस्स उवक्कमो दव्वोवक्कमो, दव्वाण वा उवक्कमो२ दव्वेण वा उवक्कमो दव्वोवक्कमो दव्वेहि वा उवक्कमो दव्वंमि वा दव्वेसु वा, दव्वस्स उवक्कमो जहा मोदगस्स, दव्वाणं उवक्कमो जहा णिप्फावाणं, दव्वेण उवक्कमो जहा फलएणं समुद्दं तरति, दव्वेहिं जहा बहुहिं फलएहिं णावा णिप्फज्जति ताए तरति, दव्वंमि उवक्कमो जत्थ कासति सीसं काऊणं उवक्कामिज्जति । अहवा दव्वोवक्कमो तिविहो-सचित्तो अचित्तो मीसओ, सचित्तो तिविहो-दुपदचतुप्पदअपदाणं,

आवश्यकस्योपक्रमः

॥ ८० ॥

अत्र 'उपक्रम'-आदि वर्तते

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता...........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

श्री आवश्यक चूर्णौ श्रुतस्कंधे ॥ ८१ ॥

आवश्यक-स्योपक्रमः

दुपदाणं दुविहो उवक्कमो-संवत्तने च परिकम्मणि च, संवत्तने जहा कोइ मणूसो मारिज्जति, परिकम्मणे जहा सो चेव बावत्तरी कलातो सिक्खाविज्जाति, एवं चेव चउप्पयाणंपि, अपयाणं परिकम्मणे जहा ककडियाओ जारिसियाओ इच्छिज्जंति तारिसा खड्डा खणंति पच्छा तारिसा भवंति, संवट्टणे सव्वेवि छिज्जंति । अचित्ते दव्वोवक्कमो जहा सुवण्णं अंगुलीयकत्तेण परिकम्मिज्जाति, संवट्टणे जहा तं चेव विणासिज्जति। से किं तं मीसो दव्वोवक्कमो ?, २ सचामरधासलपरिमंडितो आसो धावणवग्गणधारणत्तियइवइ एवमादि सिक्खाविज्जाति, सो चेव जहा संगामे आवाडिते ववरोविज्जदि सो संवट्टणोवक्कमो । से किं तं खेत्तोवक्कमो ?, खेत्तोवक्कमो जहा खेत्तं हलकुलियणंगलादीहिं उवक्कामिज्जाति । से किं तं कालोवक्कमे?, कालोवक्कमो जहा कालो नालिकादिहिं उवक्कामिज्जति । भावोवक्कमो दुविहो-पसत्थो अपसत्थो य, अपसत्थे मरुइणिगणियाअमच्चादिट्ठंतेहिं, एगा मरुइणी, सा चिंतेति-किह धूतातो सुहिगाओ होज्जत्ति?, ताए जेट्ठिता धूता सिक्खाविता, जहा चउंतिया मत्थए पण्हीए आहणेज्जासि, ताए आहतो भत्ता, सो तुट्ठो पाया मद्दिउमारद्धो, ण हु दुक्खावियत्ति, ताए मातु सिट्ठं, ताए भणितं-जं करेहि तं करेहि, ण एस सकति तुज्झ किंचिवि कातुं, बितिया सिक्खाविता, ताएवि आहओ, सो झंक्खित्ता उवसंतो, सा भणति-तुमंपि वीसत्था विहराहि, ततिओ रुट्ठो घेत्तुं पिट्टिता धाडिता य, तं अकुलपुत्तिया जा एवं तुमं करेसि, पच्छा किहवि गमितो, एस अम्ह कुलधम्मो, सा भणिता-जहा देवयस्स तहा वट्टेज्जासि, मा छड्डितिया बहुं कालं अच्छिहिसित्ति ॥ गणिकावि चित्तसभाए भावं परिक्खित्ता तहा उपचरति ॥ अमच्चे आसमुत्तणं तलागआरामकरणं च, एस अपसत्थो भावोवक्कमो ।

॥ ८१ ॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ श्रुतस्कंधे ॥ ८२ ॥

उपक्रमावतारः

पसत्थो आयरियस्स भावो उवक्कमेयव्वो, जं चिंतेइ तं उवणेतव्वं पढमालिकादि णिरिक्खितेणं, खेलमछ्लाइ वा जं भणति तं तहा गेण्हियव्वं, श्वेतः काकः ?, आमं श्वेतः, पीतो वा ?, आमं पीतः, एवं वायाए, काएणं-मिण गोणसंगुलीए०, मणेण सहमाणो, एवं सर्वार्थेषु। तत्र राजदिट्ठंतो-अभयकोसे राया भणति-कतमो विणतो बलिओ ?, आयरिया भणंति-लोगुत्तरिओ, पच्छा परिक्खितं रण्णा, णदीए वहंतीए पेसितं अभयकोसो, काइयमत्तओ पच्छसं खुइओ ढोएति, तन्निमित्तं पुच्छा, आयरिएणवि कतो मुहा वहातित्ति, एत्थ परिक्खितो विणतो।

अहवा उवक्कमो छव्विहो-आणुपुव्वि नामं पमाणं वत्तव्वया अत्थाहिगारो समोतारो, एयाणि सव्वाणि परूवेऊणं इमं सामाइयअज्झयणं उवक्कमे, आणुपुव्विमादीएहिं दारेहिं जत्थ जत्थ समोयरइ तत्थ तत्थ समोतारियव्वं। आणुपुव्वीए उक्कित्तणाणुपुव्वीए समोतरति, सा य तिविधा-पुव्वाणुपुव्वी पच्छाणुपुव्वी अणाणुपुव्वी, पुव्वाणुपुव्वीए पढमं, पच्छाणुपुव्वीए छट्ठं, अणाणुपुव्वीए एतेसिं चेव एकादियाए एगुत्तरियाए छगच्छगताए सेढीए अन्नमन्नभासो दुरूवूणो तावतियाओ ताओ अणाणुपुव्वीओ, करणं अणाणुपुव्वीणं-एगो बेहिं गुणिज्जति जाता दोन्नि, दोन्नि तिहिं गुणिज्जंति, जाता छ, छ चउहिं गुणिज्जंति, जाता चउव्वीसं, चउव्वीसा पंचहिं गुणिज्जति, जातं सयं वीसं, तं छहिं गुणेत्ता जावतिओ रासी सो दोहिं ऊणो कीरति, किंनिमित्तं ?, पुव्वाणुपुव्वी य पच्छाणुपुव्वी य दोवि अवणिज्जंति, ता अणाणुपुव्वीतो होंति। णामे छव्विहणामे समोतरइ, तत्थवि खओवसमिए नामे समोयरति, कम्हा ?, जम्हा सव्वसुयं खओवसमियमितिकट्टु। पमाणं चउव्विहं-दव्व०खेत्त०काल०भाव०, भावप्पमाणे समोतरति, तं तिविहं-गुण०णय०संख०.गुणप्पमाणे समोतरति, गुणप्पमाणं तिविहं-णाणप्पमाणं दंसणप्पमाणं चरित्तप्पमाणं, णाणगुणप्पमाणे समोतरति,णो ॥ ८२ ॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ श्रुतज्ञाने ॥ ८२ ॥

सेसेहिं, णाणगुणप्पमाणं चउव्विहं, तंजहा-पच्चक्खे अणुमाणे ओवम्मे आगमे, आगमे समोतरति, आगमे तिविहे, तंजहा-अत्तागमे अणंतरागमे परंपरागमे, इमस्स सामाइयज्झयणस्स तित्थगरस्स अत्थस्स अत्तागमे, गणहराणं अत्थस्स अणंतरागमे, सुत्तस्स अत्तागमे, गणहरसीसाणं अत्थस्स परंपरागमे, सुत्तस्स अणंतरागमे, तेण परं अत्थस्सवि सुत्तस्सवि नो अत्तागमे नो अणंतरागमे, परंपरागमे।

से किं तं संखप्पमाणे?, संखा अट्ठविहा, तत्थ परिमाणसंखाए समोतरति, सा य दुविहा परिमाणसंखा-कालियसुयपरिमाणसंखा य दिट्ठिवायसुयपरिमाणसंखा य, कालियसुयपरिमाणसंखाए समोतरति, पज्जवसंखाए अणंता पज्जवा संखेज्जासंघाया संखेज्जा अक्खरा संखेज्जा पदा गाथा सिलोगा वेढा, अज्झयणसंखाए एगं अज्झयणं, णो उद्देसो संखाए।

से किं तं वत्तव्वया?, वत्तव्वया तिविहा, तंजहा--ससमयवत्तव्वया परसमयवत्तव्वया ससमयपरसमयवत्तव्वया, तत्थ ससमयवत्तव्वयाए समोतरति, वत्तव्वतात्ति गता। से किं तं अत्थाहिगारो?, सावज्जजोगविरती अत्थाहिगारो, एवं जत्थ जत्थ समोतरति तत्थ तत्थ समोतारेयव्वं। सेत्तं उवक्कमोत्ति दारं गतं॥

से किं तं निक्खेवे?, निक्खेवे तिविहे पन्नत्ते, तंजहा--ओघनिप्फन्ने नामनिप्फन्ने सुत्तालावगनिप्फन्ने, ओहनिप्फन्ने अज्झयणेत्ति वा अज्झीणित्ति वा आएत्ति वा ज्झवणेति वा, जहा अणुयोगद्दारे णामनिप्फन्ने समोयारियंति, तं चउव्विहं-नामसामाइयं ठव० दव्व० भाव०, नामट्ठवणाओ गताओ, पत्तयपोत्थयलिहितं जं वा निण्हगाणं असंविग्गाणं एयं दव्वसामाइयं, भावसामाइयं चउव्विहं उवरिं भणिहामि, सुत्तालावगनिप्फन्नो निक्खेवो पत्तलक्खणोऽवि ण णिक्खिप्पति, कम्हा?, लाघवत्थं, जम्हा अत्थि

निक्षेपानुगमौ ॥ ८३ ॥

निक्षेपस्य ओघ-आदि त्रि-भेदाः

प्रत सूत्रांक [-] दीप अनुक्रम [-]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता...........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णिः

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥ ८४ ॥

निक्षेपानुगमौ

अतो तइयमणुयोगद्दारं अणुगमोत्ति, तहिं वा निक्खित्तं इहं निक्खित्तं, इहं वा निक्खित्तं तहिं णिक्खित्तं भवति, तम्हा तहिं चेव निक्खिप्पिहित्ति ।

से किं तं अणुगमे?, अणुगमे दुविहे पं०, तंजहा-सुत्ताणुगमे य णिज्जुत्तिअणुगमे य, सुत्ताणुगमे सुत्तं अणुगंतव्वं, निज्जुत्तिअणुगमो तिविहो-निक्खेवनिज्जुत्तिअणुगमो उवग्घायनिज्जुत्तिअणुगमे सुत्तफासियनिज्जुत्तिअणुगमे, सामाइयनिक्खेवनिज्जुत्तिअणुगमे जं एतं हेट्ठा वन्नितं । इयाणिं उवुग्घातनिज्जुत्तिअणुगमो, तं उवघायनिज्जुत्तिअणुगमं वन्नेतुकामो आयरितो महत्था निज्जुत्तित्ति काऊणं मंगलं करेति- उवोग्घातो णाम उद्देसनिग्गमादीणिरूवणं, 'मेघच्छन्नो यथा चंद्रो, न राजति नभस्तले। उपोद्घातं विना शास्त्रं, न तथा भ्राजते विधौ ॥ १ ॥ तं पुण मंगलं चउव्विहं, चउव्विहंपि जहा हेट्ठा भावमंगले, इमं गाथासुत्तं—

तित्थगरे भगवंते अणुत्तरपरक्कमे अमियनाणी । तिन्ने सुगतिगतिगते सिद्धपहपदेसए वंदे ॥ २ ॥ १ ॥

'तॄ प्लवनतरणयोः' अयं तॄधातुः प्लवने तरणे च, तं च तरणं चउद्धा- णामादि, णामट्ठवणाओ गताओ, दव्वतरणे तिन्नि सूइज्जंति, तं०- दव्वतरओ दव्वतरणं दव्वतरियव्वयं, तत्थ दव्वतरओ पुरिसादी, दव्वतरणं उडुपादी, दव्वतरियव्वं णदिसमुद्सरादि, एवं भावतरणेऽवि, णवरं भावतरओ जीवो भावतरणं णाणादि भावतरियव्वयं संसारो चउव्विहो, एवं प्लवनमपि । तरंति अनेनेति तीर्थं, एवं ताव तित्थं निप्फन्नं, तं दुविहं- दव्वतित्थं भावतित्थं च, दव्वतित्थं मागहमादि, भावतित्थं जिणवयणं, अहवा दव्वतित्थं ४-सोतारं सुउत्तारं १ सोतारं दुरुत्तारं २ दुरोतारं सुउत्तारं ३ दुरोतारं दुरुत्तारं ४, एवं भावतित्थंपि सुओता- ॥ ८४ ॥

***अनुगमस्य द्वि-भेदाः -सूत्र एवं निर्युक्ति-अनुगम, ***अत्र निर्युक्ति-मङ्गलं वर्तते

यहां से निर्युक्ति-क्रममें '[१/८०]', '[२/८१]' ऐसे आगे सभी निर्युक्तिमें जो लिखा है, उस का रहस्य ये है कि जो अंक (/) ओब्लिक के पहेले लिखा है, वो इस चूर्णिमें लिखा हुआ क्रम है और (/) ओब्लिक के बादमे जो क्रम है वो वृत्ति के संपादनमे लिखा हुआ क्रम है | चूर्णिमे छपे अंकोमें बहोत संदिग्ध पद्धत्ति है, इसिलिए हमने वृत्तिमे संपादित निर्युक्ति-क्रम दे कर सरल बनाने का प्रयास किया है |

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥ ८५ ॥

रादि ४, सरक्खमइयाणं सुओयारं सुत्तारं, तच्चन्नियाणं सुओतारं दुरुत्तारं, बोडियाणं दुओतारं सुओत्तारं, दुओतारं दुरुत्तारं इणमेव निग्गंथं पावयणं, अहवा 'दाहोवसमं तण्हाएँ छेदणं मलपवाहणं चेव। तिहिं अत्थेहिं निउत्तं तम्हा तं भावओ तित्थं ॥ १ ॥' एवं भावतित्थेवि समोतारिज्जति । जेहिं एयं दंसणणाणादिसंजुत्तं तित्थं कयं ते तित्थकरा भवंति, अहवा तित्थं गणहरा, तं जेहिं कयं ते तित्थकरा, अहवा तित्थं चाउव्वण्णो संघो, तं जेहिं कयं ते तित्थकरा, भगो जेसिं अत्थि ते भगवंतो,-माहात्म्यस्य समग्रस्य, रूपस्य यशसः श्रियः। धर्मस्याथ प्रयत्नस्य, षण्णां भग इतींगना ॥ १ ॥ अणुत्तरो परक्कमो जेसिं ते अणुत्तरपरक्कमा, न अन्नेसिं उत्तरतरो परक्कमो अत्थि सव्वसत्ताणमपि, अमितणाणी--अणंतणाणी, तिन्ना चाउरंतसंसारकंतारं, तरिऊण सुगतिगतिगता, सुगती सिद्धा तेसिं गती सुगतिगती तं गता २, सिद्धिए पहो २, पहो दुविहो- दव्वपहो णगरादीणं भावप्पहो णाणदंसणचरित्ताइं, तेहिं सिद्धी गम्मइत्ति, पगरिसेण देसगा पदेसगा, ते वंदे, वदि अभिवादणथुइसु. कायेणाभिवादयामि वाचा प्रस्तौमि, तित्थगरविसेसणत्थं भगवद्वचनं, दव्वअन्नवादितित्थगरणिसेहणत्थं, एतेऽवि कहिंचि भगवंतो व्याख्यायंते, अणुत्तरपरक्कमवयणं, जतो ण तेसिं एवं रागादिमहासत्तुअक्कमणं, तहा अमितणाणी न ते णाणरहिता परिमितणाणी वा, किंतु अमियस्स-अपरिसेसस्स णेयस्स णाणीति, तिन्न य ण पुण संसारकंतारत्था, तरिऊण ण पुणो तरिस्संति वा इति, तरिऊणं च सिद्धगतिं उड्ढलोगं तं गता, ण पुण अणिमादिअट्ठविहमिस्सरियं पाविऊण कतिणो, सव्वभावन्नू परमदुत्तरं तिन्ना, इहेव सव्वदा मोदन्ते इति, 'सिद्धपहपदेसए' इति अणेण लोइयतित्थगरासाहारणं परमोवगारित्तं दरिसेति, तत्किमुक्तं ?, जम्हा एतव्विसेसणविसिट्ठसरूवा परमोवगारी य तम्हा वंदणारिहा, अतो तान् वंदे इति । एवं च लोइततित्थगराणं वंदणववच्छेदो कतो, तेसिं च भगवंताणं अतिसयसरूवकहण-

निक्षेपानुगमौ

॥ ८५ ॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक-चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥ ८६ ॥

मंगलं

पुव्वं वंदणं कयं भवतीति । अहवा तित्थगरवयणं प्रणयनादिप्रदर्शनार्थं, भगवद्वचनं इस्सरियादिसंदंसणत्थं, अणुत्तरपरक्कमवयणं शक्तिपदरिसणत्थं, अमियणाणिवयणं णाणिड्डिथावणत्थं, तीण्णवचनं दुक्खच्छेदपदरिसणत्थं, सुगतिगतिवयणं अवत्थापदरिसणत्थं, सिद्धिपथादिवयणं सव्वहितोवदेसोवगारत्थमिति ॥ एवं ओहेण ताव णमोक्कारो कतो, इयाणिं जेणेदं तित्थमुपदिट्ठं तस्स णमोक्कारो कीरति-'वंदामि' गाहा ॥ २ । २ ॥ महत्तं पाहन्ने बहुत्ते य, पाहन्ने मोक्खो पहाणो, महंतं भजतीति महाभागो, बहुत्वे तत्रैव सुखमतुलं, महायशः, अविसेसितो यशो विसेसिता कित्ती, विदितं मुणितमेकोऽर्थः, महंतं जेण मुणितं स भवति महामुणी, किं तन्महंतं?- णव पयत्था, महावीरो नामं गुणनिप्फन्नं, महन्तं वीरियं यस्य स भवति महावीरो, सव्वदेवावि अंगुट्ठएणं पंडुकंबलसिलाए अवट्ठितं तित्थगरं उप्पेल्लेज्जा, ण सकेंति उप्पेलेउं, एवं सकला रयणप्पभा सा पुढवी मेरुंमि घेत्तूण सत्तवि पुढवीओ साहाणित्ता अलोए खिविज्जा, एरिसं वीरियं, सा य अतीव लण्हा उच्चा य, ततो महावीरियजुत्तो इति महावीरो णामं, अमराणं णराणं व रायाणो अमरणररायाणो तेहिं महितो, सेसेहिं किं अमहितो ?, उच्यते, सेसेसु कामं ता, मह पूजायां, महितो पूजितो, पूजितो नमंसितो एगट्ठा । इमस्स तित्थस्स कत्ता, इदं च पच्चक्खीभावे, अहवा चरगादीण पडिसेहो । एवं सामिस्स अर्थवक्तुः मंगलत्थं वंदणमभिहितं, इयाणिं सुत्तकर्तृप्रभृतीनामपि पूज्यत्वाद्वंदणं कीरति—

एक्कारसवि० ॥२।३॥ एक्कारस इति संखा, तित्थगरेहिं समणुन्नातं गणं धारेंतित्ति गणहरा, आविसद्दो समुच्चये, पगारिसेण आदीए वा वायगा पवायगा, पवयणस्स दुवालसंगस्स । एतेण तेसिंपि भगवंताणं परमोवगारित्तं दंसेति । अतो तेऽवि वंदामित्ति । 'सव्वं गणहरवंसं' अज्जसुहम्मे० थेरावलिया, जाव जेहिं अम्ह सामाइयमादियं वादितं, वायगवंसो णाम जेहिं परंपरएणं ॥ ८६ ॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता...........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] “आवश्यक” निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥८७॥

सामाइयादि अत्थो गंथो य वादितो, अन्नो गणहरवंसो अन्नो य वायगवंसो, तेण पत्तेयं क्रियते, पवयणं चाउव्वन्नो समणसंघो दुवालसंगं वा गणिपिडगं तं च वंदामित्ति ।

ते वंदिऊण० ॥ २१४ ॥ ते तित्थगरादयो पवयणं च सिरसा-परमायरेण वंदिऊण अत्थाणं पुहुत्तं-बाहुल्लं जस्स तस्स तेहिं तित्थगरादीहिं कहियस्स, कस्स ?-सुयणाणस्स भगवतो, किं ?-निज्जुत्तिं कित्तयिस्सामि-परूवेस्सामि पन्नवेस्सामि एगट्ठा । कतमस्स सुयणाणस्स ?-आवस्सगस्स दसकालियस्स तह उत्तरज्झमायारे सुयगडे दसाणं कप्पस्स ववहारस्स परमणिउणस्स सूरियपन्नत्तीए इसिभासियाणं, चसद्देण चूलाण य पेढीण य जाणि य भाणिताणि, एवं कालियसुयस्स, दिट्ठिवायस्स अन्नेण पगारेण भणिहिति । तत्थ अवसेसाणि ताव अच्छंतु, आवस्सगस्स ताव भणामि, तं आवस्सगं छव्विहं-सामायिकादि, तत्थ पढमं सामाइयस्स, एतेणाभिसंबंधेण सामाइयणिज्जुत्ती, तत्थ परंपरओ दुविहो, तंजहा-दव्वपरंपरओ भावपरंपरओ य, दव्वपरंपरए इमं उदाहरणं-तेणं कालेणं तेणं समतेणं साकेयं णगरं, तत्थ बहिता उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे सुरप्पिए णामं जक्खाययणे होत्था, वन्नओ, संनिहितपाडिहेरो, सो य वरिसे २ चित्तिज्जति, महो य से कीरति, सो य चित्तितो समाणो तं चेव चित्तगरं मारेति, तेण भएण चित्तकरका सव्वे पलाइतुमारद्धा, पच्छा रन्ना नायं-जदि एते सव्वे पलायंति पच्छा एसो जक्खो अचित्तिज्जंतो अम्हं वधाय भविस्सति, तेणं भएण चित्तकरका रन्ना संकलिता बद्धा, पाहुएऽहिकता, तेसिं सव्वेसिं नामाइं पत्तएहिं लिहिऊणं कुडे छूढाइं, ततो वरिसे वरिसे जस्स णामं उट्ठेति तेण चित्तेयव्वो । एवं च कालो वच्चति । अन्नया कयाइ एगो चित्तकरचेडो सो भमंतो साएयं गतो, तत्थेगस्स चित्तकारस्स घरं अल्लीणो, तत्थ एगपुत्तिया थेरी, सोवि से चेडो मित्तं जातो, एवं तस्स तत्थ अच्छंतस्स अह तंमि वरिसे तस्स

गणधर-नमस्कारः निर्युक्ति-कथन-प्रतिज्ञा च ॥८७॥

***अथ सामायिक-निर्युक्ति: आरभ्यते

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥ ८८ ॥

द्रव्यपरंपर- के इष्टक- परंपरकः

थेरिसुयस्स वारओ जाओ, पच्छा सा थेरी बहुप्पगारं रोयति, तं रूयमाणिं थेरिं दट्ठूणं भणति-किं आइए ! परूयासि एवं ?, ताए सिट्ठं, सो भणति थेरिकाभत्तेणं, मा तुब्भे रुयह, अहं तं जक्खं चित्तइस्सामि, ताहे सा भणति- तुमं किं मे पुत्तो न भवसि,? तोऽवि अहं चित्तेमि, अच्छह निरद्दुआओ, एवं तेण छट्ठभत्तं काऊणं अहतवत्थजुगलपरिहितेणं चोक्खेण पयतेण सुतिभूतेणं णवएहिं कलसेहिं ण्हाणित्ता णवएहिं कुच्चएहिं नवएहिं मल्लयसंपुडेहिं असिलेसेहिं वन्नएहिं एवं तेण सो चित्तितो, चित्तेऊणं पादपडितो भणति- जं च मए एत्थ किंचि अवकतं तं खमह, तत्थ सो तुट्ठो संनिहितपाडिहेरो भणति-वरे वरं पुत्ता!, सो भणति-एस चेव मम वरो-मा लोगं मारेहि, तं भणति-एवं तावट्ठितमेव, जं तुहं ण मारितो, एवं अन्नंपि ण मारेमि, अन्न भण, सो भणति-जस्स णं दुपयस्स वा चउप्पयस्स वा अपयस्स वा एगमवि देसं पासामि तस्स तदाणुरूवं रूवं निव्वत्तेमि, एवं होतुत्ति तेण दिन्नो, एवं सो वरे लद्धे गओ कोसंबिं णगरिं ।

तत्थ य सयाणिओ नाम राया, सो अन्नया कयाइ सुहासणवरगतो दूतं पुच्छोति-किं मम देवाणुप्पिया ! णत्थि जं अन्नराईणं अत्थि?, तेण भणितं-चित्तसहा णत्थि, मणसा देवाणं वचसा पत्थिवाणं, तक्खणमेव आणत्ता चित्तगरगा, तेहि सभाओगासा विभत्ता, तत्थ तस्स वरदिन्नस्स जो रन्नो अन्तेपुरकिड्डपदेसो सो लद्धो, एवं तेण तत्थ णिम्मितेसु तदाणुरूवेसु रूवेसु अन्नया कदाति मिगावतीए जालंतरेण अंगुली दिट्ठा, तेणं अंगुलिसारिक्खेणं देवी सव्वा तदाऽणुरूवा णिम्मविता, तीसे पुण चक्खुंमि उम्मिल्लिज्जंतंमि एगो मसिबिंदुयओ उरूमन्तरे पडितो, तेण पुछो, पुणोऽवि जातो, एवं तिन्नि वारे, पच्छा तेण णायं-एवं एतेण होयव्वमेव, एवं चित्तसभा णिम्माता। अन्नदा कयाति राया चित्तसभं पुलएंतो तं देसं पत्तो जत्थ सा देवी, तं णिव्वन्नंतेण सो बिंदुको दिट्ठो, तं दट्ठूणं आसुरत्तो, ॥ ८८ ॥

***मृगावति कथा

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥ ८९ ॥

एतेण ममं पत्ती धरिसितात्ति वज्झो आणत्तो, सेणी उवट्ठिता भणति- सामी ! एस वरलद्धओत्ति, राया भणति- जदि एवं तो खुज्जाए से मुहं दाइज्जतु, तेण तदाणुरूवं णिव्वत्तियं, तहावि तेण संडासो छिंदाविओ चेव, णिव्विसतो य आणत्तो। सो पुणो जक्खस्स उववासेण ठितो, जक्खेण भणिओ- 'वामेण चित्तेहिसि'त्ति, सो तस्स रन्नो पओसं गतो, तेण चिंतितं-पज्जोतो एयस्स पीतिं पाएज्जात्ति चिंतिऊण मिगावतीए चित्तफलए रूवं काऊणं जहा मह्ली तहा पज्जोतस्स उवट्ठवितं, पज्जोतेण दूतो पयट्टिओ, तेण निद्धमणेण णिच्छूढो, तेण सिट्ठं, इमो दूतवयणेण रुट्ठो सव्वबलेण कोसंबिं एति, तं आगच्छंतं सोऊणं इमो अप्पबलो अतिसारेण मतो, ताहे ताए चिंतितं- मा इमो बालो मम पुत्तो विणस्सिहिति, ताहे पज्जोओ आणत्तो-एस कुमारो अपडुप्पन्नो मा अन्नेण सामंतराइणा पेल्लिज्जिहिति, तहा णगरी उज्जेणियाए इट्टयाए दढं कारउ, एवं ते चोद्दस रायाणो सबला, परंपरएण तेहिं सा आणिता इट्टगा, णिम्माता णगरी जाहे ताहे ताए भन्नति- इयाणिं भरेहि णगरं धन्नस्स, जाहे णगरी रोहगसज्जा जाता ताहे सा पुणो विसंवातिता, एवं अभिरुद्धाए ताए चिंतितं- धन्नाणं ते गामागरणगरखेडकब्बडा जाव संनिवेसा जत्थ णं समणे भगवं महावीरे विहरति, पव्वएज्जाभि जदि सामी एज्ज, समोसरणं, तत्थ सव्वाणि वेराणि पसमंति। मिगावती पनिग्गया, धम्मं कहिज्जमाणे एगे पुरिसे धम्माणुरागरत्ते इमे सव्वण्णू ण किंचि से अविदितं तम्हा इह पुच्छामि इमं पच्छन्नपुच्छं, मणसा पुच्छाति, ताहे साभिणा सो भन्नति-वायाए पुच्छ देवाणं पिया, बहवे सत्ता संबुज्झिस्संति, एवमवि भणिते तेण भन्नति—

'भगवं ! जा सा सा सा' ?, तत्थ गोयमसामिणा भणितं- किं भणितं एतेणं जा सा सा सा ?, एत्थ तीसे उट्ठाणपारियाणितं सव्वं सामी परिकहति-तेण कालेणं २ चंपा णगरी, तत्थ सुवण्णकारो एगो, सो पंच पंच सुवन्नसयाणि दाऊणं जहापहाणा

द्रव्यपरंपरके इष्टकपरंपरकः ॥ ८९ ॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णी उपोद्घात निर्युक्तौ

॥ ९० ॥

दारिया त गेण्हति, एवं तेण पंच सया पिंडिता, एगेगाए तिलगचोद्दसं भंडालंकारं देति, जद्दिवसं भोगे भुंजइ तद्दिवसं देइ, तीसे अवसेसं कालं न देइ, सो इस्सालुओ तं घरं ण कयाति मुयति, ण वा अन्नस्समल्लिउं देति, सो अन्नया कदाति मित्तेणं पगते वाहितो जेमेतुं, सो तहिं गतोत्ति णाऊण ताहिं णातं-किं अम्ह एतेण सुवन्नएणंति ?, अज्ज णे पतिरिक्कं माणेमोत्ति ण्हातातो पतिरिक्कं मज्जियव्वयविधिए तिलकचोद्देसेणं अलंकारेणं अप्पाणं अलंकिऊणं अद्दायं गहाय अप्पाणं देहमाणीओ चिट्ठंति, सो य ततो आगतो, तं दट्ठूणं आसुरत्तो, तेण एगा गहाय ताव पिट्टिता जाव मयात्ति, ततो णं अन्नातो भणंति-एवं अम्हए एक्केका एतेण हंतव्वत्ति, तम्हा एतं एत्थ चेव अद्दागपुंजं करेमो, तत्थ एगूणेहिं पंचहिं महिलासएहिं पंचएगूणाइं अद्दागसताइं जमगसमगमेव पक्खित्ताइं, तत्थ सो अद्दागपुंजो कतो, पच्छा पुणो तासिं पच्छातावो जातो, का गती अम्हं पतिमारियाणं ?, लोए य उद्धंसणाओ सहियव्वाओ, तइ चेव ताहिं तं घरं घणकवाडणिरंतरणिच्छिद्दाणि दाराणि काऊण अग्गी दिन्नो सव्वतो समंता, अन्ने भणंति-ओलंबिउं मयाओत्ति, तेण पच्छाणुतावेण साणुक्कोसयाए य ताए य अकामणिज्जराए मणुस्सेसु आउगं निबद्धं ।

सोऽवि कालगतो तिरिक्खेसु उववन्नो, तत्थ जा सा पढमं मारिता सावि एगं भवं तिरिएसु, पच्छा एगंमि बंभणघरे चेडो आयातो, सो य पंचवरिसो, सो य सुवन्नकारो तिरिक्खेसु उव्वट्टिऊणं तंमि चेव कुले दारिका जाया, सो चेडो तीसे बालग्गाहो, सा य निच्चमेव रुयति, तेणोदरपोप्पणं करेंतेणं कहवि सा जोणिद्वारे हत्थेण तालिया, तहेव सा ठिता, तेण णातं लद्धो मए उवाओत्ति, एवं सो निच्चमेव तालेंतो मातापिताहिं णातो, ताहे हंतूण विसज्जितो, सावि अपडुप्पन्ना चेव विद्दाता, सो चेडो पलायमानो चिरणगरविणट्ठदुट्ठसीलाचारचारित्तो जाओ, गतो एगं चोरपल्लिं जत्थ ताणि पंच एगूणाइं चोरसयाइं परिवसंति, सावि

परंपरके- यासासा- सामृगाव- त्याश्चोदा- हरणं

॥ ९० ॥

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥ ९१ ॥

परंपरके- यासासा- सामृगाव- त्याश्वोदा- हरणं

पइरिकं हिंडती एगं गामं गता, सो गामो तेहिं पेल्लितो, सा य णेहिं गहिता, सा तत्थ पंच चोरसएहिं परिभुत्ता, तेसिं चिंता समुप्पन्ना-अहो इमा वराकी एत्तियाणं सहति, जादि अण्णावि बितिज्जिया लभेज्जा तो से विस्सामो भवेज्जा, एवं तेहिं अन्नया कयाति तीसे बितिज्जिया आणीता, जं चेव सा आणीया तद्दिवसं आरद्धा सा तीसे आयं च उवायं च, केण उवाएण एतं मारेज्जा?, तत्थ अन्नया कयाति च्छिन्नकडयं गिरिं गता, तत्थ ताए भन्नति-पेच्छ इमं महादुमं कुसुमितं, ताए दिट्ठं, ताए णोल्लिया पडिता, ताहे पुच्छंति, ताए भन्नति-अप्पणो माहिलं कीस ण सारवेह?, तेहिं णायं-जहा एताए मारिता, तत्थ तस्स बंभणचेडस्स हियए ठितं, जहा एसा सा पावा, सुव्वति य भगवं, ताहे समोसरणे पुच्छति, ताहे सामी भणति-सच्चेव सा तव भगिणी, एत्थ संवेगमावन्नो सो पव्वइतो। एवं सोऊण सव्वा सा परिसा पतणुरागसंजुत्ता जाता, तत्थ सा मिगावई देवी जेणेव समणे भगवं महावीरे० वंदित्ता नमं० णवरिं पज्जोतं आपुच्छामि, अहासुहं, सा मिगावती देवी जेणेव पज्जोते राया तेणेव उवागच्छति, पज्जोतं करतलपरिग्गहितं एवं व०-इच्छामि णं देवाणंपिया! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समणस्स भगवतो महावीरस्स०, तए णं से पज्जोते राया तीसे महती महालियाए सदेवमणुयासुराए परिसाए लज्जाए ण तरति जहा मा पव्वयाहित्ति एयमट्ठं अणुजाणति। उदयणं च से कुमारं निक्खेवयनिक्खित्तं करेति एयं संवड्ढेहि, एवं पव्वइता मिगावती, पज्जोयस्स य अट्ठ अंगारवतिसिवप्पमुहाओ पव्वइयाओ देवीओ, ताणिवि पंचचोरसयाणि तेणाणित्तु संबोहिताइं पव्वइताणि। एतं पसंगेण वन्नितं। एत्थ इट्ठगपरंपरएण अधिकारो। एस दव्वपरंपरओ, एएणं भावपरंपरए साहिज्जति, जहा वद्धमाणसामिणा सुहम्मस्स जंबूनामस्स जाव अम्ह वायणारिया, आणुपुव्वीय कमपरिवाडीय आगतं सुत्तओ अत्थओ, करणतो य॥ निज्जुत्तीए निरुत्तं भन्नति—

॥ ९१ ॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक-चूर्णी उपोद्घात निर्युक्तौ ॥ ९२ ॥

निर्युक्ते-निरुक्तिः

निज्जुत्ता जे० ॥ २-४ ॥ साधु अच्चत्थं वा जुत्ता निज्जुत्ता जे अत्था सुत्ते ते अत्था जम्हा बद्धा तेण निज्जुत्ती भवति, यदुक्तं-'सुत्तनिज्जुत्तअत्थनिज्जूहणं निज्जुत्ती, आह—जदि सुत्ते निज्जुत्ता अत्था तो किं पुणो एत्थ तेसिं योजनं ?, भन्नति-तहवि य इच्छावेती विभासितुं सुत्तपरिवाडी, जदिवि सुत्ते निज्जुत्ता अत्था तहावि ते जाव ण विभासिता ताव ण णज्जंति, अतो सुत्तपरिवाडी—सुत्तपद्धती विविहं भासितुं इच्छावेतित्ति । एत्थ दिट्ठंतो मंखो, तत्थ सव्वं मंखफलए लिहितं तहवि सो तेण दंडएण दाएति पढति विभासेति य, एवेत्थवि, सीसो आह—किमिदं सुत्तं जस्स पद्धती विभासितुमिच्छावेति?, कुतो किमिति कहं वा पवित्ती एयस्स इति ?, उच्यते—सुत्तं नाम सुत्तंति वा पवयणंति वा एगट्ठा, तं पुण तित्थगरभासियाइं गणहरगहिताइं सामाइयादि अणुक्कमेण ववत्थावियाइं, एयस्स पुण तित्थगरगणहरेहिंतो सासणहियट्ठा जीयमिति काउं एवं पवित्ती इति, भन्नति—

तवनियम० ॥ रूपकमिदं, इत्थ तुंगं विउलखंधं । जहा कोती कप्परुक्खमारूढो सपरक्कमो भरेज्जा पुव्विं सुरभीण कुसुमाणं, तत्थ य हेट्ठा पुरिसा बहवे उद्धंमुहा पलोएंति, घेत्तूण ततो कुसुमे मुयती अणुकंपणट्ठाए । जहा कोती वणसंडो घणकडच्छाओ तस्स बहुमज्झे महतिमहालयो महादुमो, तत्थ अतीव गधवन्नादिगुणसंपन्ना कुसुमा, तत्थ पुण दुक्खं विलग्गिज्जति, एगो य महापयत्तो सो तत्थ विलग्गो तेसिं पेच्छंताणं, तत्थ मालेति, ते तं जायंति, अम्हवि देह, तेसिं सो अणुकंपट्ठयाए भणति-पडिच्छह पडेसु, तओ मुयइ तं कुसुमवुट्ठिं, तं पडिच्छणसत्तिजुत्ता पयत्तेण पडिच्छंति तदट्ठी सुंदरेहिं पडेहिं, अप्पणो य मालेंति, अन्नेसिं च देंति तहाविहाणं, एस दिट्ठंतो । एवं तवनियमनाणरुक्खं, तवो बारसविहो, नियमो दुविहो—इंदियनियमो नोइंदियनियमो य, नाणं पुव्वभणियं, एयाणि चेव रुक्खो, तं तवनियमनाणरुक्खं आरूढो- आश्रितः, को सो ?-केवली, छउमत्थव्यवच्छेदत्थमेयं,

॥ ९२ ॥

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥९३॥

अभियनाणित्ति अपरिसेसनाणी, सरूवक्खावणमिदं, तो किं ?-तो मुयइ नाणवुट्ठिं, एत्थ महत्थवयणवुट्ठी चेव विन्नाणकारणत्ता नाणवुट्ठी भण्णइ, तं किमत्थं मुयइ ?, भवियजणा जे विबोहणजुग्गा तेसिं विबोहणत्थं— सुत्रीकरणं

तं बुद्धिमएण पडेण० ॥ ७-५ ॥ तं नाणवुट्ठिं बुद्धिमएण पडेण गेण्हिउं गणहरा निरवसेसं, अवि तेसिं पुप्फाइं पडेज्ज तेसु पडेसु, ण पुण गणहरबुद्धिमयपडिग्गहिताणि भगवतो महत्थवयणाणि अणवधारियाणि य वडंतित्ति, अतो गिण्हितु निरवसेसं भन्नति, जहा ते गंथेति पच्छा मालेंति अन्नेसिं वा देंति, एवं इमेऽवि गणहरा तित्थकरभामिताइं गहेउं परिभाविऊण तहाविहाण सिस्साण अणुप्पदेहिंति तेण गंथंति । तत्तो पवयणट्ठत्ति भन्नति, पवयणं संघो । को गुणो पवयणस्स गंथितेहिं ?, भन्नति—

घेत्तूण सुहं०॥ २-६ ॥ जहा ताणि कुसुमाणि अगहियाणि ण सक्का घेत्तुं, गहिताणिवि पडंति, एवं इमाणिवि भासिताणि अग्गहिताणि दुगेज्झाणि पवडंति य, गहिताणि पुण सुहं घेप्पंति, तरतमजोगेण सुहं च परिवाडीए गुणिज्जंति, सुहं पदविन्नासेणं धारिज्जंति, अमुगत्थ वीसरितंति सारिज्जंति य, पोययव्व तं गेण्हंति, तस्स तारिसओ आलावओ दिज्जति । अहवा पुच्छति- किमस्स सारो ?, सुत्तं अत्थो दोन्निवि सुहं दिज्जंति पदविन्नासेण, पुच्छाएवि ण जाणति, किं गतं हेट्ठा उवरित्ति, आदीए मज्झे अवसाणेत्ति सुहं पुच्छइत्ति । एवमादीहिं कारणेहिं जीतं सुत्तं तं कयं गणहरेहिं, अहवा एतेहिं कारणेहिं पुव्वभणितेहिं गंथणं कयं गणहरेहिं । अविय-जीयमेयं पुव्वाइक्कमेयं इतिच गंथणं कयं गणहरेहिं ॥ किह पुण एवं पुव्वाइक्कं?, भन्नति— ॥९३॥

अत्थं०॥ २-७ ॥ अत्थं भासति-पगासेति अरहा, सुत्तं गंथंति-अज्झयणउद्देसगादिअणुक्कमेण रचयंति गणहरा, जतो निपुणा

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता..........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥ ९४ ॥

श्रुतस्यादिपर्यवसानसाराः

निपुणं वा सूक्ष्मं बत्तीसदोसपरिसुद्धं एवमादि, सासणस्स-संघस्स हियट्ठाए ततो सुत्तं पवत्ततीति। सीसो आह-तं पुण सुत्तं किमादि? किंपज्जवसाणं? किं परिमाणं? को वा एयस्स सारो? इति, भन्नति—

सामाइयमादीयं०॥ २-८ ॥ सामाइयं आदीए, बिंदुसारं पज्जंते, परिमाणं पुण सामादियादि जाव बिंदुसारं एवतियं, को एयस्स सारो?, एत्थ कस्सति बुद्धी भवेज्जा-एतं चेव सामादियमादीयं बिंदुसारपज्जंतं सुयणाणं सारं, को एयस्स अन्नो सारो मग्गिज्जतित्ति?, जतो अरहंतेहिं भगवंतेहिं तिलोगसारनिहाणभूतेहिं भासितं गणहरेहिं सुयणिपुणेहिं परमकल्लाणालएहिं सुत्तीकयं महत्थं परमसंवेगजणयं जीवादिपदत्थविभासगं सव्वकिरियाकलावपयत्तोवदेसगमिति परमं मोक्खकारणंति अतो एतं चेव सारो, अतो भन्नति-तस्सवि सारो चरणं, तस्सवि एवंगुणस्सवि सुयणाणस्स सारो-सव्वस्सं चरणं-चारित्तं, चरणस्स पुण सारो निव्वाणं ॥ किह पुण तस्सवि सारो चरणं भन्नति, न पुण तदेव?, भन्नति—

सुयणाणं० ॥ २-९ ॥ जेण सुयणाणंमि वट्टमाणो जीवो मोक्खं ण पाउणति। जो तवमतिए संजममइए य जोए ण चएइ वोढुं जो, को दृष्टांतः?—

जह छेद०॥२-१०॥तह णाणलद्ध०॥२-११॥ पाढसमा, तम्हा एतं णाऊण संसारसागराओ० ॥२-१२॥ गाहद्धं दसहिं दिट्ठंतेहि दुल्लहं माणुसत्तं लहिऊण, एवं खेत्तजातिमादीणिवि, संसारसागरे बुड्डो संतो कहमवि उब्बुड्डो चरणजलोवरितलवर्त्तित्वेन मा पुणो निब्बुड्डिज्जा, जं किंचिदालंबणमासादेऊण, एतंमि अणादरेण, एत्थ दिट्ठंतो, जहा नाम कोयि कच्छवो पउरतणपत्तसेवालात्मकनिच्छिद्दपडलाच्छादितोदगंधयारमहाहरयअंतग्गतो तदंतग्गताणेगजलचरक्खोभादिवसणव्यथितमाणसो परिब्भमंतो

॥ ९४ ॥

अत्र ज्ञान-चरण-सिद्धि: दर्शयते

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

निब्रूडनवा-रणोपदेशः

कहमवि पडलरंघमासादिऊण विणिगाच्छिऊण ततो सारदससहरफरिससुहमणुभविय पुणोऽवि सबंधुणेहादिसमागिद्धचित्तो तेसिमपि वरायाणमदिट्ठकल्लाणाणम हमिदमब्भुयं किंपि संपादयामीति संपहारेऊण तत्थेव निब्बुड्डो, अह समासादितासमासादितबंधुवग्गो वा तस्स रंधस्सोपलंभनिमित्तं इतो ततो परिब्भमंतो ओहयमणसंकप्पो कट्ठतरं वसणमणुभवति । एवं संसारसागराओ अणादि-कम्मसंताणपडलसमच्छादिताओ विविहसारीरमाणसाच्छिवेदणजरजुद्देट्ठवियोगाणिट्ठसंपयोगादिदुक्खजलचरसंखोभादिवसणबहुलाओ कहमवि कम्मक्खतोवसमादिरंधमासादेऊण भणियणाएण चरणपडिवत्तीए उब्बुड्डो अप्पवेरो अप्पज्झंज्झो एवमादिगुणजुत्तो जातो, तो मा पुणो निब्बुड्डेज्ज भणितणाएणेव । स्याद् बुद्धिः-जो अप्पविन्नाणो सो णिबुड्डति, जो पुण बहुंपि जाणति सो तप्पभावादेव नो निबुड्डिहिति इति, भण्णति—

चरणगुणविप्पहीणो०॥२-१२॥चरणमणादायमाणो निबुड्डति सुबहुंपि जाणंतो ॥ किमिति—सुबहुंपि॥२-१३॥चरणगुणविहीणस्स सुबहुंपि सुयमहीतं किं काहिति?, जतो ण तस्स तारिसं सामत्थमत्थि जेण धारेहिति, जहा अंधस्स समीवे दीवसयसहस्स-कोडीवि पलीविता असमत्था तस्सऽवपातादिपवडणं धारेतुन्ति ॥ आह-जेण पुण थोवमहीयं किं तु चरणजुत्तो तस्स किं?, भण्णति—

अप्पंपि०॥ २-१४ ॥ कंठा, किं तु पगासगं-कज्जसाहगं ॥ पुणो आह-तो जे इमे बहुस्सुया एते णाम निरत्थयं ?, एत्थ आयरितो भणति जहा खरो०२-१५॥ वृत्तं, कंठं ॥ एवं चरणे ख्यापिते मा भूच्छिष्यस्य एगंतेणेव णाणंमि अणायरो भवस्सति । ॥ ९५ ॥
अतस्तन्निरासार्थमिदं सूत्रं पठन्त्याचार्याः—

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

हतं णाणं० ॥२-१५॥ जहा कियाहीणं णाणं हतं एवं हया अन्नाणयो किया । एत्थ दिट्ठंतो-एगंमि महाणगरदाहे अंधलग-पंगुलगा दो अणाहा, णगरजणे जलणसंभमुब्भंतलोयणे पलायमाणे पंगुलओ गमणकिरियाऽभावातो जाणंतोऽवि पलायणमग्गं कमागतेण अग्गिणा दड्ढो, अंधोऽवि गमणकिरियाजुत्तो पलायणमग्गमजाणंतो तुरितं जलणंतेण गंतु अगणिभरियाए खाणीए पडिऊण दड्ढो । एवं णाणी किरियारहितो ण कम्मग्गिणो पलाइतुं समत्थो, इतरोऽवि णाणरहियत्तणओत्ति, तो खाइं कहं फलसिद्धी ?, भन्नति—

संजोगसिद्धीए० ॥२-१६॥ वृत्तं, कंठं । णवरं दिट्ठंतो—एगंमि रन्ने रायभएण णगराओ उव्वासिय लोगो ठितो, पुणोवि धाडिभएण पवहणाणि उज्झिय पलाओ, तत्थ दुवे अणाहप्पाया अंधो पंगू य उज्झिता, लोगग्गिणा य वणदवो लग्गो, ते य भीता, अंधो छुट्टकच्छो अग्गितेण पलायाति, पंगुणा भणितं–अंधा! मा इतो नास, णणु इतोप्पेव अग्गी, सो आह-कतो पुण गच्छामि?, पंगू भणाति–अहं मग्गदेसणासमत्थो पंगू, ता मं खंधे करेहि जेण अहिकंटकजलणादिअवाए परिहरावेंतो सुहं णगरं पावेमि, तेण तहत्ति पडिवज्जितं, अणुट्ठितं पंगुवयणं, गता य खेमेण दोवि णगरंति, एवं णाणकिरियाहिं सिद्धिपुरं पाविज्जतित्ति । एत्थ सीसो आह—केण पुण पगारेण णाणकिरियाहिं मोक्खो साहिज्जतित्ति ?, अतो भन्नति—

एवं-णाणं०॥ २-१७ ॥ दिट्ठंतो—एगेण वणिएणं घरं गहितं कयवरेण भग्गविभग्गं, तेण चिंतितं–ण एत्थ भग्गविभग्गे सुधं वसिज्जति, सोहेमि णं, अंधकारे य ण सक्कति सोहेतुं, ताहे पदीवं करेति२ कयवरं सोहेति, छिद्दविच्छिद्दाणि पिहेति गुत्तकवाडं च करेति, पच्छा निरूव्विग्गं विसयसुहाणि अणुभवति, एवं घरत्थाणीओ जीवो कम्मं कज्जवरथाणीयं तवो वणियत्थाणीओ संजमो जहा छिद्दपिहाणं, सव्वाणि आसवच्छिद्दाणि पिहितव्वाणि, जहा सो वणितो तंमि घरे सुहं वसति, एवं णाणेण सुभासुभाणि णातूण

॥ ९६ ॥

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घातनियुक्तौ

॥ ९७ ॥

सुभेसु पवत्तति असुभेसु णिवत्तति, तवेण पुव्वसंचितं सोहेति, संजमेण णवं ण बंधति, तो अकम्मीभूतो मोक्खसुहं अणुभवति। एत्थ तवसंजमग्गहणं किरिया तवसंजमनियत्तत्तिकाउं, सम्मदंसणं पुण णाणग्गहणेण गहितंति न पृथग् उक्तं । एवं णाणदंसणचरणाण समाओगे सति मोक्खे ख्यापिते सीसो आह---जदि एवं ता साह-भगवं ! कंमि पुण भावे ताणि णाणादीणि भवति ?, कहं वा एतेसिं अलाभो ? को वा लाभक्खमो ? कस्स वा किमावरणं ? कहं वा कस्स वा आवरणक्खतोवसमो ? कहं वा उवसमो खयो वा ? इति, एत्थ आयरिया भणंति---

भावे ग्वओवसमिते०॥२-१८॥ खओवसमितो णाम तस्स तस्स कम्मस्य सव्वधातिफड्डगाणं उदयक्खयात्, तेषामेव सदुपशमात् देशघातिफड्डगाणं उदयात् खतोवसमितो भावो भवति, तंमि दुवालसंगंपि होति सुयणाणं, दुवालसंगग्गहणेणं सव्वं सुयनाणं गहितं, अपिसद्देण मतिओहिमणपज्जवनाणाणिवि, केवलणाणं पुण खातिए भावे इति । आह- केवलियणाणलंभो णन्नत्थ खए कसायाणंति सव्वकसायाणं जाव खतो ण संजातो णाणावरणदंसणावरणअंतराइयाण य ण ताव केवलणाणलंभो भवतित्ति, एत्थ पुण कसायाणं चेव गहणं, कसायक्खया अतोमुहुत्तेण नियमा सेसघातिकम्मक्खय इति । एवं णाणं ताव किंपि खओवसमिते भावे किंपि खाइएत्ति भणितं, सम्मत्तचारित्ताणि पुण खतोवसमिते वा उवसमिते व। खातिए वा ?, तत्थ सम्मदंसणं दंसणमोहस्स खओवसमे वा उवसमे वा खए वा भवति. दंसणमोहस्स खतोवसमेण अणंताणुबंधिअणुदए मिच्छत्तस्स सव्वघातिफड्डगाण उदयक्खते तेषामेव सदुवसमे सम्मत्तमोहणीयस्स उदये इति । उवसमखया पुण उवरिं भन्निहिंति । चरित्तंपि चरित्तमोहस्स खतोवसमे वा उवसमे वा खए, वा, चरित्तमोहखतोवसमे णाम बारसकसायोदयखये सदुवसमे य, संजलणचउक्कअन्नतरदेसघातिफड्डगोदए

ज्ञानादेर्भावेष्वतारः

॥ ९७ ॥

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

णोकसायनवगस्स य यथासंभवोदये इति । चरित्ताचरित्तं पुण खओवसमिते चेव, कसायट्ठगोदयक्खए सदुवसमे य, पच्चक्खाणकसायसंजलणचउक्कदेसघातिफड्डगोदये णोकसायणवगस्स जहासंभवोदये य इति । जंमि भावे णाणादीणि भवंति एतं भणितं, जहा एतेसिं लाभो ण भवति तं भन्नति——

अट्ठण्हं० ॥ २-२६ ॥ किह पुण अट्ठण्हं पगडीणं उक्कोसट्ठिती भवति ?, एत्थ ताव सव्वासिं पगडीणं उक्कोसट्ठिती भाणियव्वा, जया मोहणिज्जस्स कम्मस्स उक्कोसिया ठिती भवति तदा आउगवज्जाणं छण्हं कम्मपगडीणं उक्कोसिया ठिती भवति, आउगस्स उक्कोसा वा अजहन्नुकोसा वा ठिती भवति, जदा आउयमोहवज्जाणं उक्कोसिया ठिती भवति तदा आउयमोहणिज्जाणं उक्कोसा वा अजहण्णमणुक्कोसा वा, जथा आउक्कोसा तया सेसाणं उक्कोसा वा अजहन्नुकोसा वा, एवं उक्कोसट्ठितीए अट्ठण्ह कम्मपगडीणं वट्टमाणो जीवो चउण्ह सामाइयाणं एगतरमवि ण लभति, कह पुण ताइं चउरो ?, तंजहा- सम्मत्तसामाइयं सुयसामाइयं चरित्तसामाइयं चरित्ताचरित्तसामाइयं च । अपिशब्दात् मत्यादि च न लभतीति ॥ इयाणिं जहा एतेसिं लाभो भवति तं भन्नति——

सत्तण्हं पगडीणं अब्भिंतर० ॥ २-२७ ॥ आउयवज्जाणं सत्तण्हं कम्मपगडीणं उक्कोसट्ठितीओ जदा खवियाओ भवति, अवसेसा एक्केका कोडाकोडी भवति, तीसे य कोडाकोडीए पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं पविट्ठो भवति, एत्थ किल गंठी पाउब्भवइ, गंठी णाम जहा इह रज्जूए दाभविसेसस्स वा घणो अतिगूढो रूढो दुम्मोओ दुब्भेदो य गंठी भवति, एवमेव आत्मनः कम्मविसेसपच्चतो अतिरागद्दोसपरिणामो गंठीत्ति ववादिस्सति, तंमि भिन्ने सम्मत्तादिलाभो भवति, तब्भेदो य मणोविघात-

अत्र निर्युक्ति [२-२७] मध्ये सम्यक्त्व-लाभ: निर्दिष्ट्यते

परिस्समादिभिः अतीव दुल्लभो, आह- जा सा सेसा ठिती कम्माणं सा जति विणा सामायितेण खविता एवं सेसावि किन्न खविति तेण विहिणा ?, भन्नति-सो किर तत्थ विसेसेण परिश्राम्यति, महासंगामसीसगतो विव जोहो महासमुद्दतारीव परिश्रांतारोहणवत् । चित्तविघातादिविघ्नबहुलश्चासौ भवति, महाविद्यासाधकवत् , एत्थ अतीव परिस्समं भन्नति रोगद्दोसोदएणं, तमिदाणिं कहं खवेति ? । जे तं कम्मं उवसामेति ते जीवा दुविहा- भविया अभविया य, जे भविया ते तं गंठीं केवि समतिच्छंति, केवि ततो चेव पडिणियत्तंति, जे अभविया ते नियमा ततो चेव पडिणियत्तंति, जहा को दिट्ठंतो ? पिपीलियाओ बिला ओद्धाइयाओ समाणीओ एगं खाणुयं विलग्गेंति, तत्थ जासिं पक्खा अत्थि ता उड्डेंति, जासिं नत्थि ता ततो चेव पडिणियत्तंति, एवं तेसिं भवियाणं सा लद्धी, अभवियाणं णत्थि, तेहिं पुण जीवेहिं कहं कम्मोवसमो कतो ?, भन्नति—

करणत्रयं

संसारत्थाणं जीवाणं तिविहं करणं भवति, तंजहा- अहापवत्तिकरणं अपुव्वकरणं अणियट्टिकरणं, तिविहे च करणे इमो दिट्ठंतो, जहा तिन्नि पुरिसा विगालसमयंसि गामातो गामं पत्थिता, तत्थ य अन्नेहिं भणियं, जहा-एत्थं भयं, पच्छा ते भणंतिसमत्था अम्हे तेणाणं पलाइतुंति, एवं ते वच्चिंति ताए चेव अहापवत्तीए गतीए, जहा सूरो अत्थमभिलसति तहा तहा अपुव्वं गतिं उप्पाडेंति, जाहे पुण तं देसं पत्ता जत्थ तं भयं ताहे उभयतो पासं पंथस्स दुवे पुरिसा असिहत्थगता जमगसमगं पाउब्भूया, तत्थ एगो पुरिसो ते आवतमाणे पासित्ता भीओ पडिनियत्तो, एगो जंघाबलसमत्थो मा णं घेप्पिस्सामित्ति तहेव तेसिं पलातो, ण य तेहिं तिन्नो ओलग्गितुं, एगो तत्थेव ठितो बद्धो, एवमिहाडवी संसारो पुरिसत्तयोवमा तिविहा संसारिणो पंथो कम्मट्ठिती बहुता भयत्थाणं गंठिदेसो तक्करा रागदोसा, पतीवगामी गंठिदेसमासादेऊण पुणो अणिट्ठपरिणामो कम्म- ॥ ९९ ॥

ह्वितिसंवर्धकः, तक्करवरुद्धो पबलरागद्दोसोदयो गंठियसत्तो, इट्ठदेसाणुप्पयातो सम्मदंसणपुरप्रापी, एत्थ य पुरिसत्तयसभाव-गमणोवमितमाद्यं गंठिदेसपावगं अहापवित्तिकरणं, सिग्घतरगामिभावेणोवमितमपुव्वकरणं, इट्ठपुरपावगगतिउवममणियट्टिकरणंति, एत्थ य जाव गंठिट्ठाणं ताव अहापवत्तं, गंठिट्ठाणमतिक्कामतो अपुव्वकरणं, सम्मदंसणलाभाभिमुहस्स अणियट्टिकरणंति । आहउक्तं सव्वस्सेव संसारिणो सजोगतया पतिसमयं कम्मस्स उवचओ अवचयो य, असंजयस्स पुण बहुयतरस्स चओ अप्पतरस्स अवचओ, जओऽभिहितं-'पल्ले महतिमहल्ले कुंभं पक्खिवति सोहए णालिं । अस्संजए अविरए बहु बंधइ, णिज्जरे थोवं ॥ १ ॥ पल्ले महातिमहल्ले कुंभं सोहयाति पक्खिवति णालिं । जे संजते पमत्ते बहु निज्जरे, बंधए थोवं ॥ २ ॥ पल्ले महतिमहल्ले कुंभं सोहयति पक्खिवे ण किंचि । जे संजते अप्पमत्ते बहु निज्जर बंधइ ण किंचि ॥ ३ ॥" एवं च कहमसंजतो मिच्छादिट्ठी एत्तियाए अवणेता भविस्सति ?, जतो एयस्स गंठिदेसप्राप्तिरिति, भन्नति—

पाओवित्ती एसा जमसंजयस्स बहुतरस्सोवचयो अप्पतरस्स वाऽवचयो, बंधणिज्जरणाओ पुण मिच्छद्दिट्ठीणंपि विचित्ताओ, कस्सति कहंचिदिति, तम्हा जहा.जो अतिमहति धन्नपल्ले अप्पतरं पक्खिवेज्जा बहुतरं च अवणेज्जा तस्स एवं कालंतरेण उप-क्खीयते धान्यं, एवमणाभोगतो जीवो बहुं बहुतरं च खवयंतो गंठिदेसं पावति अहापवत्तिकरणेणेति ॥ आह--कहं पुण अणाभो-गतो तेण अहापवत्तकरणेण कम्मरासी खवितो ?, तत्थ दिट्ठंतो-गिरिणइपत्थरेहिं, जहा तेसिं णो एवं उप्पज्जति सन्ना तिव्वा जहा अम्हे वट्टा वा तंसा वा होमो, तेसिं वा अन्नेसिं पत्थराणं णो एवं उप्पज्जति जहा एते पत्थरा वट्टा तंसा वा होन्तु, एवं ते घोलणाविसोहीए तं कम्मरासिं खवेंति जहा वा वत्तीणो पासाणो ॥ आह-किं पुण सो सम्मदंसणादि उवदेसतो चेव लभति उत

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥१०१॥

सम्यक्त्व-लाभे उपदेशा-दिदृष्टान्ताः

अणुवदेसातो वेति?, भन्नति-जहिह कोति पहपब्भट्ठो परिब्भमंतो सयमेव पंथं लभति, कोदि परोपदेसातो कोयि तु ण चेव लभति, एवं अच्चंतपणट्ठसप्पथो जीवो संसाराडविमनुपतन् कोपि गंठिट्ठाणमतिकमिऊण तदावराणिज्जाणं कम्माणं खतोवसमोवसमखएण सयं चेव सम्मदंसणादि णिव्वाणपट्टणपंथं लभति, कोदी परोपदेसातो, कोती पुण ण लभति चेव, जहा वा कोती जरो सयमेवापैति, कोती भेसज्जोवतोगाओ, कोती पुण नेवापैति, एवं मिच्छत्तादिमहज्जरोपि कोती सयमेवापैति, कोयी अरहदादिवयणभेसज्जो-वओगाओ, कोती पुण नेवापैति, तदावरणिज्जाणं कम्माणं खतोवसमे पुण कोद्दवदिट्ठंतो विभासियव्वो, उवसमे जलदिट्ठंतो, खए वत्थदिट्ठंत इति। लाभक्कमो पुण एवं-जे अभविता सो तं गंठिं ण समत्थो भिंदितुं तेण गंठियसत्तो, गंठीए वा सत्तो२, तत्थ पुण अंतरे इड्डिविसेसं दट्ठूण तित्थगराणं अणगाराणं वा ताहे पव्वयति, तम्मूलागं देवलोगं गच्छति। जो भविओ तस्स तंमि काले जति कोति संबोहेज्ज अहवा कोति सयं चेव संबुज्झति तस्स एत्थ सुयसामाइयस्स लंभो भवति, ताहे संखेज्जाइं सागरोवमाइं गंतूणं सम्मत्तसामाइयलंभो, ताहे अन्नाणिवि संखेज्जाणि सागरोवमाणि गंतूणं चरित्ताचरित्तसामाइयलंभो, एवं संखेज्जेसु चरित्तं उवसमगसेढी खवगसेढी इति.

सम्मत्तसामाइयस्स आवरणे इमे चत्तारि कसाया--अणंताणुबंधी कोहमाणमायालोभा, एते पढमिल्लुगत्तिवि भन्नंति, संजोयणाकसायत्तिवि भन्नंति, सुत्तकमपामन्ना पढमिल्लगा भन्नंति, जम्हा बहूहिं नेरइयतिरिक्खजोणियमणूसदेवभवग्गहणेहिं संजोएंति तम्हा संजोयणाकसायत्तिवि भन्नंति। ॥१०१॥

अत्र सम्यक्त्व-लाभे चारित्र-लाभस्य निर्देशः

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

श्री आवश्यक उपोद्घात निर्युक्तौ

॥१०२॥

कषायोदय-कार्यं

पढमिल्लुगाण उदए जीवो संजोयणाकसायाणं ॥२-२९॥ जंवेलं तेसिं उदए भवति ताहे भवसिद्धियावि ण लभंति, किमंग पुण अभविया ?, तहा अविसद्दा तस्सहचरितं णाणलंभमवि ण लभंति ॥

बितियकसायाणुदए अप्पच्चक्खाणणामधेज्जाणं। सम्मदंसणलंभं॥विभासेज्जा॥विरताविरतिं ण तु लभंति ॥२-३०॥

अप्पमवि एत्थ पच्चक्खाणं ण तु लभंति तेण अप्पच्चक्खाणकसाया ॥

ततियकसायाणुदए पच्चक्खाणावरणणामधेज्जाणं। देसेक्कदेसविरतिं ॥तहेव॥चरित्तलंभं ण तु लभंति ॥ २-३१ ॥

जं मूलगुणपच्चक्खाणं सव्वेसिं मूलं गुणाणं तं केवलं पडिपुन्नं आवरेतित्ति तेण पच्चक्खाणावरणा॥ आह-किं पुण पढमबीय-तृतीयकसायाण उदए सम्मत्तदेसविरतीसव्वविरतीओ न तु लभंतित्ति?, भन्नति-इह य सम्मत्तादयो मूलगुणा, एते य पढमिल्लुगादयो कसाया मूलगुणघातिणो, ण य मूलगुणघातीणं कसायाणुदए मूलगुणाणं लंभं, 'ण लभति मूलगुणघातिणो उदये' त्ति, जदा पुण संजलणाणं उदयो भवति ताहे इतरचरित्तलंभं विभासेज्जा, अहक्खायं पुण ण लभंति, तदभावे उ तंपि लभंतित्ति, सीसो आह-मा भवतु मूलगुणाणं लंभो मूलगुणघातीण उदए, जदा पुण ते लद्धा तदा कहं अतियरति पडिवतति वा इति ?, भन्नइ--

सव्वेऽवि य० ॥२-३३॥ सव्वेविय छेदपज्जंतपायच्छित्तसोज्झा अतियारात्ति वा अविसोहीओत्ति वा एगट्ठा, संजलणंतीति संजलणा, जहा इंधणं लभित्ता अग्गी उज्जलति एवं तेऽवि अणेसणादीहिं उज्जलंति, तुसद्दा जो गुणो जहा अतियरति तं जहा-संभवं विभासियव्वं, जया पुण संजलणवज्जाणं बारसण्हं कसायाणं उदयो भवति तदा मूलच्छेज्जं भवति, किं च मूलं ?, सम्मत्तं, पुणसद्दा अण्णेसिंपि गुणाणं जेसिं उदए मूलछेज्जं भवति तं विभासियव्वं, मूलच्छेज्जंति वा मूलगुणपडिवाओत्ति वा एगट्ठा इति। ॥१०२॥

श्री आवश्यक उपोद्घात निर्युक्तौ ॥१०३॥

पंच चारित्राणि

एत्थ सीसो आह-जति णाम तेसिं केसिंचि कसायाणं उदए चरित्तस्स लाभो चेव ण भवति, केसिंचि पुण लद्धमवि अतियरति पडिवयति वा, ता साह केसिं पुण कसायाणं कतिविहाणं कम्मि परिणामे वट्टमाणाणं चरित्तलंभो ? कहं वा सो परिणामो ? तेसिं केवयिया य भेदा चरित्तस्स?, के य ते इति ?, भन्नति—

बारस० ॥२-३४॥ सामाइयत्थ० ॥ २-३५ ॥ तत्तो य० ॥ २-३६ ॥ एत्थ सम्मत्तसामाइयस्सावरणे जे भणिता चत्तारि कसाया ते वज्जित्तु जे सेसा चरित्तावरणा बारसविहा कसाया ते जदा खविता उवसामिता वा, वासद्दा खतोवसमतोऽवणीया वट्टंति तदा चरित्तलंभो लब्भति, लब्भतित्ति वा दीसतित्ति वा पन्नायतित्ति वा एगट्ठा, अन्ने पुण खतोवसमे संजलणवज्जा बारस भन्नंति। आह—कहं पुण सो खयादिपरिणामो तेसिं इति ?, भन्नति-जोगेहिंति, जोगोत्ति वा वीरियंति वा सामत्थंति वा परक्कमत्ति वा उच्छाहोत्ति एगट्ठा, अणेगभेदो जोगोत्ति बहुवयणं, तस्स पुण चरित्तस्स सामन्नेणं विसेसा-भेदा इमे पंच। ते चेव दरिसिज्जंति सामाइयं इत्तिरियं आवकहियं च, इत्तिरियं जो छेदोवट्ठाणियाणं मेहो, तस्स इत्तिरियसामाइयं, आवकहियं मज्झिमतित्थगराणं, एत्थ चरित्तपंचगे पढमं, छेदोवट्ठावणियं णाम सामाइयमित्तिरियं छेत्तूण उवट्ठाविज्जतित्ति छेदोवट्ठावणियं, बीयं लभातित्ति बीयं, परिहारविसुद्धीओ नाम जो पंचमहव्वातियं विसुद्धं परिहरति सो परिहारविसुद्धीओ, सुहुमो अस्य रागः सुहुमसंपरागः। तत्तो--अणंतरं अहक्खायं णाम अकसायं, किह पुण अकसायं तु चरित्तं ?, सव्वेहिवि जिणवरेहिं पन्नत्तं। एते पंच विसेसा गता ॥ इयाणिं बारसविहे कसाए खविए उवसामिए खतोवसमिते वा भणितं, तत्थ खतोवसमो पुव्वदरिसितो। उवसमणं ताव ॥१०३॥ भन्नति अप्पतरंति काउं, अहवा खवगस्स उवसामणा ण भवति, तेण पुव्वं उवसामणा पच्छा खवणा, अहवा पच्छाणुपुव्वीए, ते

प्रत सूत्रांक [-] दीप अनुक्रम [-]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता...........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णिः-1

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥१०४॥

उपशम-श्रेणिः

कहं उवसामेति ?, भन्नति-पसत्थेहि मनवचिकायजोगेहिं, जहा अग्गी विज्झायसरिसो हेट्ठा अच्छति सावसेसो एवं उवसामओ कम्मं उवसामेति, जहा वा जलं कयगफलादीहि णिसंतमलं पसंतं भवति तं च तहेव अच्छति, जहा खंभो अंजणामयो जदि वेढिउं मूले पलीवितो अग्गए ठाति एवं उवसामओऽवि । तत्थ इमा दारगाहा—

अणदंस० ॥ २-३७ ॥ उवसामगसेढिपट्ठवओ नियमा संजओ, खवगसेढीए पुण संजतो वा असंजतो वा संजतासंजतो वा, एवं सो पसत्थेसु अज्झवसाणट्ठाणेसु वट्टमाणो विसुज्झमाणो अणंताणुबंधिकोहमाणमायालोभे जुगवं उवसामेति, ताहे सम्मदंसणं मिच्छादंसणं सम्मामिच्छादंसणं तिविहं जुगवं उवसामेति, ताहे णपुंसगवेदं उवसामेति, ताहे इत्थीवेदं उवसामेति, पच्छा हासरतिअरतिभयसोगदुगुच्छात्ति एते छकम्मंसे जुगवं उवसामेति, पच्छा पुरिसवेदं उवसामेति, एवं ता पुरिसे, इत्थीवि एवमेव, णवरं सव्वपच्छा इत्थिवेदं, एवं नपुंसओऽवि, णवरं पच्छा णपुंसगवेदं, पच्छा दो दो एगंतरिते अपच्चक्खाणकसायं कोहं पच्चक्खाणावरणं च कोहं दोवि जुगवं उवसामेति, ताहे संजलणं कोहं उवसामेति, पच्छा अपच्चक्खाणमाणपच्चक्खाणावरणमाणा दोवि जुगवं, पच्छा संजलणमाणं उवसामेति, पच्छा अपच्चक्खाणपच्चक्खाणावरणमायाओ दोवि जुगवं उवसामेति, ताहे संजलणमायं उवसामेति, पच्छा अपच्चक्खाणं पच्चक्खाणावरणं च लोभं दोवि जुगवं उवसामेति, जो संजलणलोभो तं संखेज्जाइं खंडाइं करेति, पच्छा उवसामेति, पढमिल्लुगं च भागं उवसामिंतो एत्थ बादरसंपरागो उवसामओ लब्भति, जं तं संखेज्जतिमं खंडं तं असंखेज्जभागे करेति, पढमं च पवेदितो ताहे सुहुमसंपरागो उवसामओ लब्भति, समए समए खंडं एक्केक्कं उवसामिति । तत्थिमा गाथा विभासियव्वा ॥१०४॥

अत्र 'उपशम-श्रेणि एवं क्षपक-श्रेणि' वर्णयते

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता..........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥१०५॥

क्षपकश्राण:

लोभाणू वेतेन्तो० ॥२-३८॥ जदा तंपि लोभस्स अणुं उवसामितं भवति तदा उवसामगणियंठो लब्भति, एत्थ जदि अंतरे कालं करेति ताहे सो अणुत्तरोववातिएसु देवेसु उववज्जति, एत्थंतरे कालं ण करेति ताहे से पुणो पडिपतति, किं कारणं ?, तस्स पच्चयावरुद्धा कोहादयो, जदा पुणो किंचि तहाविहं पच्चयं उवलभंति तदा उदयं गच्छंति, जहा वाही ओसहादीहिं थंभितो तहाविहं पच्चयं उवलभित्ता उदिज्जति, एवं जहा रुक्खो अंतो बहिं दवेणं दूमितो ताव ण उलुज्झति जाव पाणियाइयं पच्चयं ण लब्भति, लद्धं उल्लुज्झति, एवं इहावि तस्स तत्थ अंतोमुहुत्तावसाणे कम्मिवि लोभहेउंमि संजलणलोभो सुहुमो उदिज्जति, पच्छा जेणव कमेण उवसामंता गतो तेणेव पडिवतति जाव अणताणुबंधित्ति । एसा उवसामगसेढी सम्मत्ता। एतेण कमेण एकभवगहणे दो उवसमसेढाओ होज्जत्ति, जंमि भवे उवसामओ ण तंमि खवतो होतित्ति । उवसमणं मोहस्स तु एगम्मि भवे हवेज्ज दो वारे । इयाणिं खवगसेढी भन्नति—

अणमिच्छा० ॥ २-४२ ॥ खवगसेढाए पट्ठवओ नियमा मणुयगतीए, णिट्ठवओ निरएसु असंखेज्जतिभागं पलियस्स सेसं खवेति, देवेसु वेमाणिएसु तिरियमणुएसु असंखेज्जवासाउएसु, एतं बद्धाउयस्स, अणंताणुबंधिकोहमाणमायालोभा जुगवं खवंति, पच्छा ताणं अणंतभागं मिच्छत्तवेयणिज्जे कम्मे छुभति, ताहे तं खवेति, तस्स तिव्वो परिणामो तो सावसेसे चेव अन्नं आरभति, जहा महाणगरदाहे अग्गी सावसेसे चेव इंधणे अन्नंमि घरे लग्गति, एवं इमोऽवि तंमि सावसेसेवि तिव्वज्झाणाग्गिणा अन्नं आढवेति, तस्सवि जं सेसं तं सम्मामिच्छत्ते छुभति, ताहे सम्मामिच्छत्तं खवेति, तस्स जं सेसं तं सम्मत्ते छुभति, ताहे ॥१०५॥
सम्मत्तं खवेति, तत्थ सो खाइयसम्मद्दिट्ठी भवति । सो य पुण बद्धाउगो वा अबद्धाउगो वा, जति बद्धाउगो ताहे ठाति तंमि

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता...........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

चेव, अह अबद्धाउगो ताहे तहपवत्तो चेव अवसेसाइं खवेति, तत्थ तहेव संजलणवज्जे अट्ठवि कसाए एगट्ठ चेव खवेति. जाहे तेसिं अट्ठण्हं कसायाणं संखेज्जतिभागं खवेमाणो गतो भवति ताहे नामस्स कम्मस्स इमाओ तेरस पयडीओ खवेइ, तंजहा- निरयगइनामं एगिंदियजातिनामं बेइंदिय० तेइंदिय० चउरिंदियजातिनामं निरयाणुपुव्वीनामं तिरिक्खजोणियाणुपुव्वीनामं अप्पसत्थविहाओगतिनामं थावरनामं सुहुमनामं साहारणनामं अपज्जत्तं, तहा दरिसणावरणीयस्स इमाओ तिन्नि पगडीओ, तंजहा-निद्दानिद्दा पयलापयला थीणगिद्धी य। तासिं अट्ठण्हं जं सेसं तंपि। एत्थ गाथा—

गतिआणुपुव्वि दो दो, जातीनामं च जाव चउरिंदी। अपसत्था विहगगती थावरणामं च सुहुमं च ॥२॥४३॥

साहारमपज्जत्तं निद्दानिद्दं च पयलपयलं च। थीणं खवेति ताहे अवसेसं जं च अट्ठण्हं ॥२॥४४॥

ताहे णपुंसगवेदं ताहे इत्थिवेदं ताहे छक्कं हासरतिअरतिभयसोगदुगुंछाओ, ताहे पुमवेदं तिन्नि भागे करेति, दो जुगवं, एगं संजलणकोहे छुभति, ताहे संजलणकोहं तिन्नि भागे करेति, दो भागे जुगवं खवेति, एगं भागं संजलणे माणे छुभइ, ताहे तंपि तिन्नि भागे करेति, दो भागे जुगवं खवेति, एगं संजलणमायाए छुहइ, ताहे तंपि तिन्नि खंडाइं करेति, दो भागे जुगवं खवेति, एगं संजलणे लोभे छुहति, ताहे तंपि तिन्नि भागे करेति, दो भागे जुगवं खवेति, एगं भागं संखेज्जाइं खंडाइं करेति, एत्थ बादरसंपराओ खवओ ताहे खवेति, (एगं संखिज्जइमं भागं मोत्तूण सव्वं खवेति) जं संखेज्जतिमं खंडं तं असंखेज्जे भागे करेति, तेऽवि कमेण खवेति, तत्थ खवओ सुहुमसंपराओ, जाहे तंपि खवितं भवति ताहे खवगणियण्ठो लब्भति, एत्थंतरा वीसमति अणाभोगणिव्वातिएणं करणोवाएणं, जहा कोति महासमुद्दं तरिऊण जाहे अणेण थाहो लद्धो भवति ताहे मुहुत्तं अच्छिऊण

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥१०७॥

केवलज्ञानं

सेसं तरति, एवं सो अणेगभवसंचितं कम्मं खविऊण ताहे मुहुत्तभंतरं आसत्थो, एत्थंतरा जाव अच्छति ताव नियंठो लब्भति जाव दोहिं समएहि सेसेहिं केवलणाणमुप्पाज्जिस्सतित्ति. ताहे जो एगो समतो तत्थ निद्दं पयलं च खवेति, जो चरिमसमतो तत्थ पंचविहं णाणावरणिज्जं चउव्विहं दंसणावरणिज्जं पंचविहं अंतराइयं एयाओ चोद्दस य कम्मपगडीओ जुगवं खवेत्ता अणंतं केवलणाणदंसणं उप्पाडेति । अन्ने भणंति-जत्थ निद्दं पयलं च खवेति, तत्थ नामस्स इमाओ पगडीओ खवेति, तंजहा-देवगति देवाणुपुव्वी विउव्विदुगं पढमवज्जाइं पंच संघयणाइं अन्नतरवज्जाइं पंच संठाणाइं आहारगं तित्थगरनामं जदि आतित्थगरो, एत्थ गाहा

वीसमिऊण० ॥२-४५॥ चरिमे णाणा० ॥ २-४६ ॥ गतत्थाओ, एवं सो उप्पण्णणाणदंसणधरो जातो। संभिन्नं पासंतो० ॥२-४७॥ समस्तं भिन्नं सं एकीभावे वा सत्तामंगीकृत्यैकजीवाजीवादिभावेण भिन्नं संभिन्नं, अहवा दव्वपज्जायभावेण भिन्नं संभिन्नं, सम्यग्भिन्नं वा वज्झब्भंतरतो वा भिन्नं, अहवा संभिन्नमिति जीवादिदव्वं गृहीतं, लोगमलोगं चति खेत्तं, सव्वतो इति भावाण गहणं, सव्वपगारेण सर्वतः, सर्वं यावत्किंचिदित्यर्थः, भूतं भव्वं भविस्सं चेति कालस्स गहणं, न च द्रव्यादिभ्यो भूतादिकालविशेषेभ्यो अन्यद् ज्ञेयमस्ति यदुपलभ्येतेति, तं नत्थि जं एवं पासतो न पासतित्ति। एवं निज्जुत्तिसमुत्थाणपसंगतो जदिदं सुत्तं यतोऽयमिति, जहा वा एतस्स पवित्ती यदादि यत्पर्यवसानं एवमादि तवनियमणाणरुक्खारोहणादारब्भ जाव भूतं भव्वं भविस्सं चेत्यनेन भणितं। एवं पवयणउप्पत्ती विभासिता चेव भवतित्ति । इयाणिं पवयणएगट्ठियादि विभासियव्वं । जतो एत्थगा चिरंतणदारगाहा-

जिणपवयणुप्पत्ती०॥२-४८॥ तत्थ जिणपवयणुप्पत्ती भणिता, तस्स पुण पवयणस्स इमाणि एगट्ठियाणि तिन्नि, तंजहा-पवयणंति वा सुत्तंति वा अत्थोत्ति वा, तत्थ सामन्नेण य सुयनाणमंगीकाऊण पवयणमिति ववादिस्सति, तथा अविप्लुतमत्थतो कुलकप्पं ॥१०७॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक-चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥१०८॥

प्रवचनाद्येकार्थिकानि अनुयोगभेदाः

सुत्तमिति, तदेव हि विवेचितं समुत्फुल्लकमलकल्पं अत्थ इति, स च सूत्राभिप्रायः, एतेसिं तिण्हं एक्केक्कस्स णामा एगट्ठिया पंच, तत्थ पवयणस्स इमे-सुयधम्मोत्ति वा तित्थंति वा मग्गोत्ति वा पावयणंति वा पवयणंति वा एगट्ठा, सुत्तस्स इमे- सुत्तंति वा तंतंति वा गंथोत्ति वा पाढोत्ति वा सत्थंति वा एगट्ठा, अत्थस्स इमे- अणुयोगोत्ति वा नियोगोत्ति वा भासत्ति वा विभासित्ति वा वत्तियंति वा एगट्ठा । पवयणएगट्ठिता गता॥ इयाणिं विभागो, सो य सव्वत्थ विसयविभागादिणा पगारेण विभासिअव्वो, एत्थ पुण एगट्ठितविभागं किंचि दरिसेतित्ति ॥ अणुओगस्स सत्तविहं निक्खेवं भणति—

नामं ठवणा० ॥२४९॥ णामठवणाओ गताओ. जाणगभवियसरीरवतिरित्ता दव्वस्स वा दव्वाण वा दव्वेण वा दव्वेहिं वा दव्वंमि वा दव्वेसु वा अणुयोगो दव्वाणुयोगो, दव्वस्स जहा जीवदव्वस्स अजीवदव्वस्स वा, जीवदव्वस्स चउव्विहो-दव्वतो खेत्ततो कालतो भावतो, दव्वतो एगं जीवदव्वं खेत्ततो असंखेज्जपएसोगाढं कालतो अणादीए अपज्जवसिते भावतो अणंता नाणपज्जवा दंसण० चरित्त० अगुरुलहुयपज्जवा य एवमादि । अजीवदव्वस्सवि, किं पुण अजीवदव्वं ?, परमाणू, तस्स चउव्विहो दव्वओ ४, दव्वतो एगदव्वं खेत्तओ एगपदेसोगाढं कालतो जहन्नेणं एगं समयं उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं भावतो एगवन्ने एगगंधे एगरसे दुफासे। दव्वाणं अणुतोगो जीवदव्वाण य अजीवदव्वाण य, जीवदव्वाण जधा कतिविहा णं भंते ! जीवपज्जवा पन्नत्ता ?, कतिविहा णं भंते ! अजीवपज्जवा पण्णत्ता ?, दव्वेण अणुतोगो, जहा- कोति पलेवेण वा एगेण वा अक्खेणं, दव्वेहिं जहा बहूहिं अक्खेहिं, दव्वंमि जहा फलए वा एगंमि वा वत्थे, दव्वेसु जहा बहुसु कप्पेसु वा फलएसु वा, तत्थ दव्वस्स अणुतोगो य अणणुतोगो य, तत्थ इमं निदरिसणं— ॥१०८॥

अथ अनुयोगस्य नामादि सप्त-निक्षेपाः वर्णयते

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

श्री आवश्यक उपोद्घात निर्युक्तौ ॥१०९॥

द्रव्यानुयोगादयः

वच्छगगोणी०॥२-५०॥गोदोहओ जो पाडलाए वच्छओ तं बहुलाए मुयति बाहुलगं वा पाडलाए,एवं वितहकरणं अणणुओगो, जया जं जाए तं ताए मुयइ तया तहाकरणं भवति अणुओगो, तस्य चार्थस्य प्रसिद्धिर्भवति, एवमिहापि जइ जीवदव्वलक्खणेणं अजीवं परूवेति तो अणणुयोगो भवति, तेण विसंवदंतेणं अत्थो विसंवदति, अत्थेण विसंवयंतेणं चरणं, चरणविणासे मोक्खाभावो, मोक्खाभावे दिक्खा निरत्थिया। बितिए पसत्थे समोतारो, एवं सव्वत्थ भाणियव्वं। खेत्तेवि छभेदा, खेत्तस्स जंबुदीवस्स खेत्ताणं दीवसागरपन्नत्ती खेत्तेण जहा जंबुद्दीवं पत्थयं काऊण अलोके पक्खिप्पंति पुढवीजीवा, खेत्तेहिं अड्डाइज्जेहिं दीवसमुद्देहिं, बहूहिं वा पत्थयं काऊण जीवादिवियालणा कीरति, खेत्तंमि भरहे अन्नत्थ वा जत्थ अणुतोगो कहिज्जति, खेत्तेसु पंचसु भरहेसु पंचसु एरवएसु पंचसु महाविदेहेसु। तत्थ खेत्तओ अणुतोगये दिट्ठंतो खुज्जाए—सातवाहणो राया, भरुयच्छे नहवाहणं रोहेति, एवं कालो जाति, वरिसारत्ते य सणगरं वच्चति, अन्नदा तेण रोहएण गतेल्लएणं अत्थाणीमंडवियाए णिच्छूढं, पडिग्गहधारी खुज्जा, सा चिंतेति— एस अपरिभोगो, नूणं राया जाइतुकामो, तीसे य जाणसालिओ राउलओ परिजितओ, तस्स सिट्ठ, सो पए जाणगाइं पमज्जितो पयट्टियाणि य, तं दट्ठूण सेसएणवि लोयेण पयट्टिताइं, राया य रहस्सियगं पधाइतो जाव लोगो पए पुरतो गतेल्लओ दिट्ठो, राया चिंतेइ--ण मए कस्सति कहितं, कओ नायं ?, परंपरएणं जाव खुज्जत्ति, खुज्जा पुच्छिता, ताए तहेव अक्खायं॥ अत्थ खुज्जाए अपरिभोगं खेत्तं जातंति पन्नवयंतीए अणुओगो। अन्नहा पुण अणणुतोगो, एवं समोयारो।

कालस्सवि छ भेदा, कालस्स जहा समयस्स पट्टसाडितादिट्ठंतेणं, कालाणं जहा ओसप्पिणीए छव्विहो कालो परूविज्जति, कालेण अणुओगो, जहा वाउकाइयाणं वेउव्वियसरीरा ए पलिओवमस्स संखेज्जतिभागमेत्तेणं कालेणं अवहीरंति, कालेहिं इमीसे णं ॥१०९॥

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥११०॥

अनुयोग भेदाः

भंते! रयणप्पभाए पुढवीए नेरइया केवइकालेण अवहीरंति ?, ते णं असंखेज्जा असंखेज्जाहिं उस्सप्पिणिओसप्पिणीहिं अवहीरंति, कालंमि अणुओगो बितियाए पोरुसीए, कालेसु जहा ओसप्पिणीए तिसु कालेसु उस्सप्पिणीए दोसु। एत्थ उदाहरणं— एगो साहू पादोसियं परियट्टंतो रहसेणं कालं ण जाणति, सम्मद्दिट्ठिगा य देवता तस्स हियट्ठाए संबोहयति मिच्छादिट्ठिगाए मएणं, तक्कं विकेइ महता सद्देणं, पुणो पुणो तीसे कन्नारोडगं असहमाणो भणति-अहो तक्कवेलत्ति, जहा तुब्भं सज्झायवेला, उवउत्तो मिच्छामि दुक्कडंति, देवताए अणुसासितो-मा बितियं, मा च्छलिहिसित्ति। तस्स अकाले सज्झायंतस्स अणणुओगो, देवताए कालवेलं साहंतीए अणुओगो। वयणस्स छ भेदा-वयणस्स०, एगस्स वयणस्स जणवयादिस्स, वयणाणं सोलसण्हंपि, वयणेणं अद्धमागहेणं, वयणेहिं अट्ठारसहिं देसीभासाहिं, अहवा एयस्स कहेहित्ति बहूहिं भणितो, वयणंमि खतोवसमिते, वयणेसु णत्थि, सव्वदेसीभासासु वा पवत्तति अणुओगो, अहवा सच्चे य असच्चामोसे य, एत्थ उदाहरणं—

बहिरउल्लावो गामिल्लओ य, बहिरो हलं वाहेति, पंथं पुच्छितो भणइ-घरजाइगा मज्झ बइल्ला, भज्जाए से भत्तं आणीतं, तीसे कहेति जहा बइल्ला सिंगिता, सा भणति-लोणितं वा अलोणितं वा माताए ते रद्धयं, सा सासूए कहेति, सा भणति-थूलं वा वरडं वा थेरस्स पुत्तं होहिति, थेरं सद्दाति, थेरो भणति-पीतु जीएणं एगंपि तिलं ण खामि, एत्थ तेसिं तं वयणं अन्नहा कहंताणं अणणु०। गामेल्लए एगो भग्गकुलपुत्तओ, सो मुतो, तस्स महिला णगरे दुल्लभं तणकट्ठपत्तन्तिकाऊणं गामं गता, पुत्तो से डहरतो, सो वड्डितो मातं पुच्छति-कहिं मम पिता ?, ताए सिट्ठं जहा मतेल्लओ, का पुण तस्स वित्ती ?, सेवितादतो, अहंपि सेवामि, तुमं तं ण जाणसि, किह सेविज्जति ?, विणीतेहिं, णागरं विणयं ण जाणसि, किह णगरे विणओ ?, पीओ सव्वहिं होज्जाहि, अहं पीयं वंदिस्सामि- ॥११०॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥१११॥

भावानु- योगे उदाहर- णानि

त्ति गतो सो, णगरं पहाइतो, पेच्छति वाहे, भद्दि ज्जोत्ति भणइ, मिगा पलाता तस्स सद्देण, तेहिं हतो, तेण सब्भावो कहितो, भणितो य-जदी एरिसे पेच्छसि तदा णिलुक्को एज्जासि, ततो तेणं रजका दिट्ठा, तेसिं च पोत्ताणि हीरंति, ओड्डएण अच्छंति, सो य णिलुक्कंतो एइ, चोरोत्तिं पिट्टितो, सब्भावे कहिते भणितो—भणेज्जा सि सुद्धं णीरयं निम्मलं भवतु ऊसं च पडतु, सो ततो एति, एगत्थ ओच्छुपीया णीणिज्जंति, भणति—भद्दि ! सुद्धं णीरयं ऊसो य पडतु, तत्थवि पिट्टितो, कहेति, मुक्को भणितो य-भण बहुसइयं, मतए णीणिज्जंते भणति-बहुसतियं होतु. एरिसं मा कदादि तेहिं भणितो, विवाहे भणइ, (तत्थ भणिओ भण) एरिसो मे संजोगो थिरो थावरो य भवतु, तं नियलबद्धए कुलपुत्तए पभणियं, तेहिं भणितो-एवं भणिज्जासि--एताती ते लहुं मोक्खो भवतु, अन्ने मित्तसंघाडिं करेति, तत्थवि पिट्टितो, एगस्स कारणियस्स अक्षीणो, तत्थ अंबेछि, घरपलीवणए, धूवेंतस्स गोभत्तं छूढं, तस्स वयणविभागाणिपुणस्साणणु०, एस वयणे अणुयोगो अणणुयोगो य भणितो । भावे य छ भेदा, भावस्स उदययादिस्स, भावाणं छण्हवि, भावेण निज्जराभावेणं कहेति, भावेहिं संगहड्डयाईहिं पंचहिं, भावंमि खतोवसमिते, भावेसु तेसु चेव ओदतियादिसु अहवाऽऽयारसूयगडाईसु । तत्थ भावे अणुतोग य अणणुओग य इमे सत्त उदाहरणा—

सावगभज्जा० ॥२॥५८॥ सड्ढेण सड्ढीए वयंसिया विउव्विता दिट्ठा, अज्झोववण्णो, परिहाइ, निब्बंधे कहितं, ताए भणियं-आणेमि, तेहिं वत्थाभरणेहिं अप्पा णेवत्थितो, अतिगता, दीवओ णंदवावितो, अच्छिओ, पुणो अधिइं पगतो, चिरर-क्खियं भग्गंति, ताए पत्तियावितो साहिण्णाणं, एत्थ तस्स तीए य सम्मं साभिप्पायकहणेण अणुओगो, एवं अन्नत्थवि, ततो यथाविधिं १ । सत्तवतिए-पच्चंतिओ, साधूआगमणं, गोट्ठीए पडिणिययाए घरं दरिसितं, तेणमस्सामूतियाए दिन्नं, ण कहेयव्वंति,

॥१११॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक उपोद्घात निर्युक्तौ ॥११२॥

भावानुयोगे उदाहरणानि

एतेणं पडियोगेणं दिन्नं, वत्ते वरिसारत्ते आपुच्छंति, भणितो वणसंडउदाहरणेणं, जहा पुप्फफलसमिद्धं, ण तरति किंचिवि घेत्तूणं, मुलगुण उत्तरगुण मधुमज्जविरइं वा, पच्छा सत्तवइगं वयं दिन्नं, चोरो गतो, अवसउणोत्ति नियत्तो, घरं अप्पसारियं अतीति, भगिणी य से पाहुणया आगएल्लया, तीए पुरिसनेवत्थकरणं, निद्दाए तहेव सुत्ता अवत्तासेऊणं, अतिगतो पेच्छइ, असी अंछितो, पयं सरितं, नियत्तो, असीए खणत्ति कयं, पडिबुद्धा, लज्जाए पिच्छिऊणं विसन्नो, समोतारो २। कोंकणगस्स महिला मया, अन्ना ण लभइ सवत्तिपुत्तो अत्थित्ति, पच्छा अडवीए कंडाइ आणेति विद्धो भणति-ताता!, मारितुमिच्छतो, तस्स दारगस्स अभिप्पायं णाऊण भणंतस्स अणु० । एवं समोतारो ३ ॥ नउले-एगा चारभडिया गामे वसति, सा अन्नया कयाइ गब्भिणी जाता, अन्नावि णउली गब्भिणीया तत्थ एति जाति य, ताओ समियाओ पसूयाओ, ताए चिंतियं-मम पुत्तस्स रमणओ भविस्सतित्ति तस्सवि पीहगं खीरं च देति, अन्नया तत्थ सप्पो पविट्ठो, तेण सो खद्धो दारओ मओ, इतरेणोतरंतो दिट्ठो मंचुल्लियाओ, पच्छा खंडाखंडिं कतो, ताहे सो रुहिरलित्तेणं तुंडेणं तीय मूलं गतो, चाडुगाणि काउमारद्धो, ताए भणियं-एएण मम पुत्तो खतितो, खंडंतीए मुसलेण आहतो, पच्छा धावंती घरं पविट्ठा तं पेच्छति सप्पं, ताहे दुगुणं रोयति, पच्छा अणु० ४ ॥ कमलामेला, बलदेवपुत्तो निसढो, तस्स पभावतीए देवीए पुत्तो सागरचंदो कुमारो, इतो य धणदेवओ उग्गसेणस्स णत्तुओ, तस्स कमलामेला णाम रायदुहिता वरिया, णारदो य कलहदलियं विमग्गमाणो कमलामेलाए सगासमुवगतो, तीय पुच्छितो-किं तुमे अब्भुतं दिट्ठंति ?, तेण भणितं-दुवे अब्भुयाणि इहेव बारवतीए, जं च उग्गसेणणत्तुओ रूवेण परमविरूवो बलदेवपुत्तो सागरचंदो उक्किट्ठरूवो, तीए भणितं-भगवं! किह मम सो भत्ता होज्जत्ति ?, तेण भणियं-अहं करेमि तेण ते सह संजोगंति, ततो तीसे रूवं पट्टियाए लिहिऊणं गतो सागर- ॥११२॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥११३॥

भावानुयोगे उदाहरणानि

चंदसगासं, सागरचंदेण भणिओ-का एसा एवं उक्किट्ठसरीरा दारियात्ति ?, णारएण भणियं-इहेव बारवतीए रायदुहिया कमलामेलत्ति, सो तंमि अज्झोववन्नो न खाति न पिवति, ततो संबो उवागतो, तेणं सो चिंताकुलेण ण णातो एंतो, संबेण सणियं उवाछिऊण हत्थेहिं अच्छीणि ठइयाणि, सागरचंदेण भणियं-का एसा कमलामेलत्ति ?, संबो हसिऊण भणति-णाहं कमलामेला, कमलामेलो अहं पुत्ता !, सो पाएसु पडिऊणं भणति-तात ! उत्तमपुरिसा सच्चपइन्ना, तो मम कमलामेलं मेलवेहित्ति, संबेण अब्भुवगतं, ततो पज्जुन्नसगासं पाडिहारियं पन्नत्तिविज्जं मग्गति, तेण दिन्ना, ततो कमलामेलाए विवाहदिवसे विज्जाए पडिरूवं विउव्विऊणं अवहरिता कमलामेला चेव, तए उज्जाणे सागरचंदस्स तीए सह विवाहं काऊणं उवललंता अच्छंति, विज्जापडिरूवगंपि विवाहे वट्टमाणे अट्टट्टहासं काऊणं उप्पतितं, ततो जातो खोभो, ण णज्जति केण हारियत्ति ?, णारदो पुच्छितो भणति-रेवतउज्जाणे दिट्ठत्ति, केणवि विज्जाहरेण अवहियात्ति, ततो सबलवाहणो णिग्गतो कण्हो, संबो विज्जाहररूवं काउणं संपलग्गो जुद्धं, सव्वे परातिता, कण्हेण सद्धिं लग्गो, ततो जाहेऽणेण णातो रुट्ठो तातोत्ति, ततो से चलणेसु पडितो, कण्हेण अंबाडितो, संबेण भणितं-एसा अम्हेहिं गवक्खेणं अप्पाणं मुयंती किहवि संभाविता, ततो कण्हेण उवगमितो उग्गसेणो, पच्छा इमाणि भोगे भुंजमाणाणि विहरंति, अरिट्ठनेमी समोसरितो, ततो सागरचंदो कमलामेला य सामिसगासे धम्मं सोऊण गहिताणुव्वयाणि सावगाणि संवुत्ताणि, ततो सागरचंदो अट्ठमिचउद्दसीसुं सुन्नघरे सुसाणेसु वा एगराइयं पढिमं ठाति, धणदेवेणं आयण्णिऊणं तंबियाओ सूती घडाविताओ, ततो सुन्नघरे पडिमं ठियस्स तस्स वीससुवि अंगुलीणहेसु आहोडियातो, सम्मम-हियासेमाणो य वेयणाभिभूतो कालगतो, देवो जातो, ततो बितियदिवसे गवेसंतेहिं दिट्ठो, अक्कंदो जातो, दिट्ठा सूतीतो, गवेसंतएहिं

॥११३॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक उपोद्घात निर्युक्तौ ॥११४॥

भावानुयोगे उदाहरणानि

तंबकुडुगसगासे उवलद्धं धणदेवएण कारितातोत्ति, रूसिता कुमारा, धणदेवगं मग्गंति, जुद्धं दोण्हवि बलाणं संपलग्गं, ततो सागरचंदो देवो अंतरे ठाऊणं उवसामेति रोहिणिपरंपरगणादेण, पच्छा कमलामेला भगवतो सगासे पव्वइया। एत्तियं पसंगेण भणितं। एत्थ सागरचंदस्स संबकुमारे कमलामेलाभिप्पायं साहेंतस्स अणुतोगो अणणुओगो ५ ॥

संबस्स साहसं-जंबवती भण्णति-किह पुत्तस्स कीलितं पेच्छेज्जामि?, वासुदेवो भणति-किं तो अव्वारिट्ठिहिं धरिसिज्जिहिसित्ति, सा भणति-अवस्स पेच्छियव्वाणि, एवं होउत्ति, गोवी जाता, इतरो गोवो जातो, महियं पविक्कीया, इतरेण दिट्ठा गोवी, भणिता-एहि तक्कं गेण्हामि, सा अणुगच्छति, गोवो मग्गेण, सो एगं अविउत्थगं पविसति, सा भणति-णाहं पविसामि, किं तु मोल्लं देहि, तो एत्थं चेव ठितओ तक्कं गेण्हाहि, सो भणति-णवि, अवस्स पविसियव्वं, हत्थे लग्गो, एगत्थ गोवो लग्गो, जाहे ण तरति कड्डिउं ताहे तं मुतितुं हत्थाओ तेण समं लग्गो, णंवरं एगाए चेव हेल्लाए आविहितो, वासुदेवो जातो, इयरीपि मायं पासति, ओगुट्ठिं काउं पलातो, बितिए दिवसे मड्डाए आणिज्जंतो खीलगं घडेति, वासुदेवेण पुच्छितो-किं एयं घडेहि?, सो भणति-जो पारियोसियं बोल्लं करेति तस्स मुहे कोट्टिज्जति, समोतारो ६।

चेल्लणा सामिं वंदित्ता वेयालियं माहमासे पविसति, पच्छा साहू दिट्ठो पडिमापडिवन्नो, ताए रत्तिं सुत्तियाए किहवि हत्थो लंबिओ, जया सीतेणं गहितो तदा चेतियं, पवेसितो, सव्वसरीरं सीतेणं गहीतं. ताए भणियं-स तपस्वी किं करोति?, पच्छा रन्ना चिंतितं-एयस्स कोऽवि संगारदिन्नओ, रुट्ठो, कल्लं पाओ अभयं भणति-सिग्घं अंतेपुरं पलीवेहि, सोवि गतो सामिणो मूलं, इतरेणवि ॥११४॥
सुन्नहत्थिसाला पलीविता, सो गंतुं सामिं भणति-चेल्लणा एगपत्ती अणेगपत्ती?, सामिणा भणियं-एगपत्ती, ताहे मा डज्झिहितित्ति

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

श्री आवश्यक उपोद्घात निर्युक्तौ ॥११५॥

भाषावि-भाषावार्ति-कस्वरूपं

तुरियं नियत्तो, अभयो य निप्फिड्ढति, तेणं भणितं-पलीवितं ?, आमं सामी !, तुमं किन्न पडितो ?, सो भणति-मम किं ?, अहं सामिस्स मूले पव्वइस्सामित्ति, ताहे अभएण चिन्तियं-मा विणास्सिहिति, पच्छा भणियं, ण डज्झत्ति ७ ।

एतेसु सव्वेसु अणुयोगो अणणुयोगो य विभासियव्वो । इदाणिं नियोगः, णि आधिक्ये 'एजिर् योगे' अतीव योगो नियोगो, सो चेव अत्थो जदा सुत्तेण समं निउत्तो भवति तदा चरणकरणपसूती भवति, जहा वच्छए गोणीए सम्मं निउत्ते खीरप्पसूती भवति ॥ भासा विभासा वत्तियंपि, एताणिवि तिन्निवि संजुत्ताणि चेव वच्चंति । तत्थ सामन्नेण एकप्रकारं अत्थं बुवाणो भासगो, मध्यं बुवाणो विभासगो, सव्वेण प्पगारेण बुवाणो वत्तीकरगो । तत्थ इमं उदाहरणा--

कट्ठे पोत्थे चित्ते०॥२-९६॥जथा देवदत्तो खंदस्स वा रुद्दस्स वा पडिमं काउकामो तदणुरूवपमाणं कट्ठं पगरेति जारिसं तं कट्ठं पुरिमं सुभं वा, तं चेव कट्ठं जदा परसुमादितच्छितं भवति तदा णज्जति जहा एत्थ इत्थी वा पुरिसो वा कीरिहित्ति, एवं चेव कट्ठसमाणे सुत्ते जो जं सुत्तालावगनिप्फन्नं धात्वर्थमात्रं तं चेव भासइ सो भासओत्ति भन्नति । जदा तं चेव कट्ठं वासिथोभणयमादीहिं परिकम्मितं अंगपच्चंगसंठाणाणि बहुं निम्मवियाणि, एवं चेव तस्स सुत्तस्स जो दोहिं वा तिहिं वा चउहिं वा पगारेहिं अत्थपयाणि विभासति सो विभासतोत्ति भन्नति । सो य चोद्दसपुव्वी अत्थे विभासिउं समत्थो । उक्कोसतो विभासतो वत्तियं, जदा तं चेव अंगपच्चंगाणं णिण्णुण्णयरोमकूवदिट्ठिफलकमादीणि णिव्वत्तियाणि, एवं चेव जदा सव्वपज्जवेहिं अत्थं भासति तदा वत्तीकरणे हवइ, सो य उक्कोसओ वत्तीकरगो केवली, केति पुण जेण तिहिं परिवाडीहि अणुओगो सुतो गहितो य सत्तहिं वा सो वत्तीकरगो इति भणंति । एवं ता कट्ठे । पोत्थे पढमं दव्वादि मिलिता, ते चेव बद्धा पमाणागिती कता भासा, अंगाणि जहिच्छिताणि चेव

॥११५॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥११६॥

भाषावि-भाषावार्ति-कस्वरूपं

अंगपच्चंगाणि णिम्मावियाणि तदा विभासा, जदा दिट्ठिमादि सव्वं कयं तदा वत्तियं। इयाणिं चित्ते-कुड्डे पमाणागितो टिक्किता ताहे भासा, ताणि चेव अंगपच्चंगाणि निम्मवियाणि विभासा, जदा दिट्ठिमाइ सव्वं कयं तदा वात्तियं। सिरिघरि-एगो जाणति, जहा एत्थ रयणाणि संति, एवं सुत्तइत्तो जाणति जहा किर एत्थ महं अत्थो अत्थि, अन्नो सिरिघरिओ जाणति-असुगं इमं रयणं, एवं चेव कोइ सुइत्तो जाणति जहा सुत्तस्स सामन्नेण इमो अत्थो, एवं सुत्तत्थवियाणगो भासगो, अन्नो तेसिं अणुभागं मोल्लं च जाणति, एस विभासओ, अन्नो तेसिं सव्वं जाणति जहिं जहिं जदा जदा विलएतव्वं णिगूहितव्वं च, एवमादी य जाणति, एवं वत्तिओ जो जहिं अत्थो ससमए वा उस्सग्गेण वा अववाएण वा जत्थ जत्थ जदा जदा जहा जहा पउंजियव्वो एवं सव्वं जाणइत्ति। पोण्डं जारिसं एरिसं सुत्तं, ज़दा तं चेव ईसिं विगासितं भवति तदा भासओ, जदा तं चेव वियसियं पंकजं भवति तया विभासओ, जदा तं चेव सव्वपज्जाएहिं विगासितं भवति तदा वत्तियं, पोंडोत्ति गतं। इयाणिं देसिएत्ति, जहा कोति पुरिसो पाडलिपुत्तस्स पंथं जाणति, एवं सुत्तइत्तो जाणति जहा एत्थ अत्थो, अन्नो जाणति जहा ताव अमुगं णगरं गम्मति, जं तस्स अंतरे तं न याणइ, एवं चेव भासओ जाणइ जहा इमो अत्थो, जहा ततिओ पुरिसो समुप्पन्नं तंपि पंथं जाणति उज्जुगंपि वक्कंपि परिमाणंपि जाणति, जहा एत्तियाणि गाउयाणि वा, एवं चेव विभासओवि बहुतर-एहिं पज्जवेहिं जाणति, जो चउत्थो सो एतं चेव सव्वं जाणति, तत्थ सावयभयं वा तेणभयं वा जहा उव्वात्तिउं जाणति, पुणोवि तं मग्गं ओगाहति, एवं सो सव्वेहिं पज्जवेहिं जाणति, एवं चेव वत्तिओत्ति। 'पडिसद्दगस्स सरिसं जो अत्थं भासए तु सुत्तस्स। सय सो इग बालपंडितसाधुजतीमादि सा भासा ॥ १ ॥ एवं एगट्ठिताविभागोत्ति।

॥११६॥

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

इयाणिं दारविधीपाविस्ती, सा ताव न भन्नति, कम्हा ?, दारविहीए कए किल सत्थं समप्पिहिति, नयावि तदंतग्गता एव इति णयविधीवि तत्थेव भन्निहित्ति इति मा सीसस्स अविणयपाडिवत्ती भविस्सति, ताहे आयरितो भणति- अच्छतु ताव दारविधी य, वक्खाणविहिं भाणिस्सामि, पच्छा किं च वक्खाणविधीए ? इति, वक्खाणविधी नाम जारिसाओ घेत्तव्व जारिसस्स वा सीसस्स दायव्वं जहा य इति, तत्थ इमे आयरियसीसाणं उदाहरणा, एगं आयरियस्स एगं सीसस्स, दोवि वा एगंमि चेव ओतरंति ॥

॥११७॥ गोणी चंदण०॥२-५७॥एगस्स गावी भग्गा, सा पुण अतीव खीरदा, ताहे सो चिंतेइ-मा बहुं चुक्किहामि, कंचि वंचेमि, तेण सा तणस्स उवेऊणं गोसंघाए पए चेव उवट्ठविया, तत्थ कतिता आगओ, सो भणइ- विकाइ गावी ?, तेण भाणियं- विक्काइ, किह लब्भति ?, पंचासतेण, लद्धत्ति काउं गहिया, सोवि पलाओ, इयरो उट्ठवेइ, सा न तरेइ उट्ठेउं, तेण नायं, अहंपित्थ कंचि वंचेमि, अन्नो आगतो, विक्काति ?, आमं, तिएण भणितं- विक्कमावेमि दुद्धं च जोएमि ता गिण्हामि, सो भणति-एत्ताहे चेव उट्ठेट्ठा, तहवि जोएमोत्ति भणति, उट्ठवेउमारद्धा ण उट्ठेति, भणति- एवं चेव ठितेल्लगं गेण्हाहि, इतरो न इच्छति, सो भणति- मएवि एवं चेवट्ठिता गहिता, इतरो भणति- जदि तुमं बोद्दो, अहं ण गेण्हामि, एवं एरिसस्स पासे ण गहेयव्वं, जो अक्खितो समाणो भणति- एमेव मए सुयंति, जो अत्थं गाहेति सव्वपज्जवेहिं तस्स पासे सोयव्वं । एतं ता आयरियस्स उदाहरणं । इमं सीसस्स-बारवती णगरी कण्हो वासुदेवो, तत्थ तिन्नि भेरीओ, तंजहा- संगामिया अब्भुतिया कोमुतिया, तिन्निवि गोसीसचंदणमदीओ, देवतापरिग्गहिताओ, तस्स चउत्था भेरी असिवोवसमणी, तीसे उप्पत्ती कहेयव्वं—तेणं कालेणं तेणं समतेणं सक्को दे- ॥११७॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक-चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥११८॥

भावानु-योगे भेर्यु-दाहरणं

वेंदो, सो तत्थ देवलोगे वासुदेवस्स गुणकित्तणं करेति-अहो उत्तमपुरिसा एते अवगुणं ण गेण्हंति, णीयं च कम्मं ण करेंति, तत्थ एगो देवो असद्दहंतो आगतो, वासुदेवो य णीति, सो तत्थ कालसुणगरूवं विउव्वित्ता वावन्नदुब्भिगंधं पंथब्भासे पडितो, तस्स लोगो गंधेण सव्वो पराभग्गो, वासुदेवो तेण पंथेण आगतो, तस्स सुणयस्स दंते दट्ठूणं भणति- अहो इमस्स पंडराओ दाढाओत्ति, ताहे सो देवो चिंतेति- ण सक्का एतेण उवाएणंति, ताहे सो वासुदेवस्स जं आसरयणं तं गहाय पधावितो, सो य बहुरायाणएणं णातो जहा आसो हीरति, तेण सिट्ठं, तत्थ कुमारा रायाणो य णिग्गया, तेण ते हतमहितवीरघातिया काऊण विसज्जिता, ताहे वासुदेवो णिग्गतो, सो भणति- कीस मम आसं हरासि ?, मम आसो तुज्झ ण होति, देवो भणति- जुद्धं मम देहि, जो जयति तस्स आसो, इतरो भणति- बाढं, किह जुज्झामो?, तुमं भूमीय अहं च रहेणं, रहो दिज्जतु, णत्थि मम रहेणं(कज्जं), आसो हत्थी पादेहिं बाहुजुद्धं, सव्वेहिवि ण कज्जं, दोवि जुज्झेमो(हि)ट्ठाणजुद्धेण, ताहे वासुदेवो भणति-पराजितोऽहं, णेहि आसं, तत्थ देवो तुट्ठो समाणो सखिंखिणी भणति- ब्रूहि वरं किं देमि ?, वासुदेवो भणति- मम असिवप्पसमणिं भेरिं देहि, तेण दिन्ना, तीसे भेरीए एसुप्पत्ती। ताहे छण्हं मासाणं अणुतोगो, पुव्वुप्पन्ना रोगा वाहीओ वा उवसमंति, णवगा वाही छ मासे ण उदीरंति, सद्दं जो तीए सुणेति, तत्थऽन्नदा कयाती आगंतुओ वाणियओ, सो अतीव दाहज्जरेण अभिभूतो, तं भेरिपालयं भणति- गेण्ह तुमं सयं से पलं वा देहि, तेण लोभेण दिन्नं, तत्थ अन्नं चंदणखंडं छूढं, एवं सा सव्वा चंदणकंथा कया। अन्नदा कयायी असिवे वासुदेवेण तालाविता, तं चेव सभं ण पूरेति, तेण भणितं- जोएह मा भेरी विणासिता होज्जा, जोइज्जंती सव्वाणि, विणासिता नाऊणं तं पुरिसं जीयदंडं आणवेति, अन्ना मग्गिता, अन्नो ठवितो, सो आदरेणं रक्खति। एवं इहावि सीसो आयरियपासाओ निग्गतो

॥११८॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥११९॥

समाणो तस्स किंचि पम्हुट्ठं, सो तंमि आलावए णट्ठं अन्नं लोइयं छुभति करेति वा भारहरामायणादीणं एवं तेण कंथाकयं सुत्तं अत्थो य, तारिसस्स ण दायव्वं सुत्तं अत्थो वा, जो तहेव रक्खति तस्स दायव्वं। एस ताव सीसस्स। आयरियस्स—

वसंतपुरे जुन्नसेट्ठिधूता णवगस्स सेट्ठिस्स व धूता, तासिं पीती, तहवि से अत्थि खारो जह अम्हे एतेहिं उवड्डिताणि, ताओ अन्नदा कयादी मज्जितुं गताओ, तत्थ जा सा णवगस्स धूया सा तिलगचोद्दसएणं अलंकिता, सा तं तडे ठवेत्ता ओइन्ना, जुन्नसेट्ठिधूया तं गहाय पहाविता, इमा जाणति- खेड्डं करेतित्ति, ताए मातापिऊणं सिट्ठं, ताणि भणंति-तुण्हिक्का अच्छाहि, णवगधूया ण्हाइत्ता णियगं घरं गता पिउमातूणं कहितं, तेहिं मग्गितं, ण देंति, अम्हे उव्वाड्डिताणित्ति परिभूताइं, किं आभरणगाणिवि णत्थि ?, एवं कन्नाकन्नि पणट्ठाणि, पच्छा राउले ववहारो, तत्थ णत्थि सक्खी, तत्थ राउलाणि भणंति-चेडीतो वाहिज्जतु, जति तुम्हेच्चयं आमुंचउ चेडी, ताहे सा आमुंचति, जं हत्थे पादे तं न याणति, तं च से असिलिट्ठं, ताहे तेहिं णातं, जहा एतीसे ण होति, ताहे इतरा भणिता, ताए तहच्चेव णिच्चं आमुंचतीए परिवाडीए अ मुक्कं, सिलिट्ठं च से, ताहे सो जुन्नसेट्ठी दडप्पतो जातो, जहा सो एगभवितं मरणं पत्तो, एवं आयरितोऽवि जं अन्नत्थ तं अन्नहिं संघाडेति, अन्नवत्तव्वयाओ अन्नत्थ परूवेति, उस्सग्गादीयाओ एवं, सोऽवि संसारडंडेणं डंडिज्जति, अणेगाइं जातितव्वगमरियव्वगाइं, तारिसस्स पासे ण अज्झाइतव्वं, जहा सा चेडी जसं पत्ता आविंधणसुहं वा, एवं चेव आयरिओ जो णवि संघाडेति अन्नमन्नाणि तेण अरहंताणं आणा कया भवति, तस्स पासे सुत्तत्थाणि गिण्हियव्वाणि १। सावगसमाणस्स सीसस्स ण कहेयव्वं, जो सव्वकालं महिलं भोत्तुं तं चेव एगराइं ण याणति अन्नणेवत्थणेवत्थितं, एवं सीसोऽवि सव्वकालं रडिऊण सुत्तं वा अत्थं वा ण याणति किं इमं सुत्तं ससमइयं

भावानुयोगे चेट्युदाहरणं ॥११९॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥१२०॥

टंकणोदा-हरणं शिष्यस्य गुणदोषाः

परसमइयं उस्सग्गियं वा अववाइयं वा एगवयणं दुवयणं बहुवयणं एवमादि, एवं चेव अत्थेवि, तारिसगस्स ण दायव्वं २। बहिरगोह-समाणस्स आयरियस्स पासे ण सोयव्वं, जो अन्नं वागरेति, अन्नस्स वा सुत्तस्स अत्थं पुच्छितो तो अन्नं चेव वागरेति, अन्नेण वा अभिप्पाएण पुच्छितो अन्नहा वागरेति । अभिप्पायं वा पुच्छगस्स णावगच्छति ।

इयाणिं जहा आयरिएण दायव्वं सीसेण य घेत्तव्वं तत्थ इमं उदाहरणं—उत्तरावहे टंकणा णाम मेच्छा, ते सुवन्नदंतमादीहिं दक्खिणावहगाइं भंडाइं गेण्हंति, ते य अवरोप्परं भासं न जाणंति, पच्छा पुंजे करेंति, हत्थेणं उच्छादेंति, जाव इच्छा ण पूरेति ताव ण अवणेंति, पुन्ने अवणंति एवं, तेसिं इच्छियपडिच्छितो ववहारो । एवं चेव आयरियस्स सिस्सेणं कितिकम्मं कायव्वं, तेणवि विहिणा सुत्तत्थाणि दायव्वाणि । एसो एगो आदेसो । बितितो इमो—आयरितेण ताव सिस्सस्स अत्थो भाणियव्वो जाव तस्स गहणं, सिस्सेणवि ताव पुच्छियव्वं जाव उवगयंति, एस टंकणओ ववहारो ॥

स एवाधिकारो वट्टति—० ॥२५७॥ तेण कस्स ण होही वेसो अणब्भुवगतो-अणुवसंपन्नो, अब्भुवगतोवि णिरुवगारी ण किंचि पडिलेहणादि इहलोइयं परलोतियं वा उवगारं करेति, उवगारीवि कोति अप्पच्छंदमती जं से रोयति तं करेति, कोति परच्छंदमतीवि पट्ठितओ जा मे सुत्तत्थाणि लब्भंति अच्छामि अन्नहा वच्चामि । गंतुकामो जदि मे इच्छंतं पूरेंति तोऽहं सुत्ते उद्दिट्ठे समाणिए गमिस्सामि चेव, अन्ने पुण पत्थियतो नामं कोति साधू आगतो कहिं वच्चिहिसि जीवपडिमं (वंदिउं) अहंपि वच्चामि गंतुमणो जो य भणाति णवरि इमं सुयखंधं णिट्ठवमि ताहे वच्चामि, जम्हा एवंभूतो बहूणं एसो अणणुमतो भवति तम्हा एतद्विपरीतेन होऊण गुरुजणो आराहियव्वो ।

॥१२०॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक उपोद्घात निर्युक्तौ

॥१२१॥

शिष्यपरीक्षायां शैलघना-दीन्युदा-हरणानि

तहा विणओणतेहिं॥२-५८॥विणतो सत्तविहो, तंजहा—णाणविणओ दंसणविणओ चरित्तविणओ मणविणओ वयिविणओ कायविणओ उवयारियविणओत्ति। पंचसुवि णाणेसु भत्तिबहुमाणो णाणविणओ, सेसेसु विभासा, तेण विणएण ओणओ२, ओणओ दुविहो-दव्वोणओ भावोणओ य, दव्वोणओ ओणयगाओ, भावोणओ अणुद्धतपरिणामो 'पंजलियडेहिं' ति कृतप्राञ्जलिभिः, छंदो-अभिप्पातो तमणुअत्तमाणेहिं जहा तुस्सति, एवं च आराहियव्वो गुरुजणो, एवं को गुणो ?, भणितविहिणा आराहितो गुरुजणो सुयं बहुविहं लहुं देति, बहुविहं-अंगाणंगपविट्ठादि बहुपज्जायं च 'लहुं' ति जं सत्तहिं तिहिं वा परिवाडीहिं दिज्जति तं आवज्जितहिययो एगाए चेव परिवाडीए लाएति। पुणो इमा सीसस्स परिक्खा मई पडुच्च भन्नति—

सेलघण०॥२-५९॥ तत्थ इमं कप्पियमुदाहरणं। तंजहा-मुग्गसेलो पुक्खलसंवट्टओ य महामेहो जंबुद्दीवप्पमाणो, तत्थ किल णारदत्थाणीओ कलहं आयोएति, मुग्गसेलं भणति—तुज्झ नामग्गहणे कए पुक्खलसंवट्टओ भणति-जहा णं एगाए धाराए विरावेमि, माणेणं सीहावितो भणति—जति मे तिलतुसतिभागमेत्तमवि उल्लेति तो णाहं वहामि मुग्गसेलं नामं, पच्छा मेहस्स मूले भणति मुग्गसेलवयणाइं, सो रुट्ठो, सव्वादरेण वरिसितुमारद्धो जुगप्पमाणाहिं धाराहिं, सत्तरत्ते वुट्ठे चिंतेति-इयाणिं गतो विरायोत्ति ठितो, इतरो मिसिमिसेंतो उज्जलतरो जातो दिप्पिउमारद्धो, भणाति-जो भट्टित्ति, ताहे मेहो लज्जितुं गतो। एवं चेव कोति सासो मुग्गसेलसमाणो एगमवि पदं ण लग्गति। अन्नो आयरितो गज्जति, आगतो, अहं णं गाहेमित्ति, आह-'आचार्यस्यैव तज्जाड्यं, यच्छिष्यो नावबुध्यते। गावो गोपालकेनैव, अतीर्थेनावतारिताः॥ १ ॥' ताहे पढावितुमारद्धो, ण सक्को, ता लज्जितो गतो। एरिसमइस्स ण दायव्वं, समोतारो। एयस्स पडिपक्खो कण्हालभूमी, जहा कण्हाले जं पाणियं पडति

॥१२१॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥१२२॥

शिष्यपरीक्षायां कुटचालनी-दृष्टान्तौ

तं ण कतोवि ओलुटति, सव्वमावियति, एरिसस्स दायव्वं, चर्चा । इयार्णि कुडा, कुडा दुविहा—णवा य जुन्ना य, जुन्ना दुविहा— भाविता अभाविता य, भाविता दुविहा-पसत्थभाविता, अपसत्थभाविता पसत्था भाविता अगुलुतुलुक्कमादीहिं, अपसत्था पलंडुमादीहिं, पसत्था भाविता दुविहा-वम्मा अवम्मा य, एवं अप्पसत्थावि, जे अप्पसत्था अवम्मा जे अ पसत्था वम्मा ते ण सुंदरा, इतरे सुंदरा, अभाविता ण केणति भाविता णवगा आवागातो ओतारियमेत्तगा । एवं चेव सीसा, णवगा जे मिच्छादिट्ठी तप्पढमताए गाहिज्जंति, जुन्नगा अभाविता ण एगेणवि मतेण भाविता, अपसत्था असंविग्गेहिं पसत्था संविग्गेहिं, जे अप्पसत्था वम्मा संविग्गा य अवम्मा एते लट्ठगा, इतरे अचोक्खता । अहवा घडा चउव्विहा, तंजहा--छिद्दकुड्डे बोडकुडे खंडकुड्डे सगलेत्ति, छिद्दो जो मूलच्छिद्दो, बोडो जस्स उट्टा णत्थि, खंडो एगं से ओट्ठपुडं णत्थि, सगलो अव्वंगो चेव, छिद्दे जं छूढं तं गलति, बोडे तावतियं ण ठाति, खंडो तेण पासेण छड्डिज्जइ, जदि इच्छा थोवेणवि रुंभइ खंडे, एस विसेसो खंडबोडाणं, संपुन्नो सव्वं धरेति । एवं चेव सीसा चत्तारि समोतारेयव्वा । सव्वत्थ विराहणा, चर्चा भणियव्वा ।

चालणिसामाणो, उदए चालणी भरितिगा अच्छति, उक्कात्थिता य णत्थि किंचिवि मह (माइ) ॥ अन्नया मुग्गसेलच्छिद्दकुडचालणिसमाणा मिलिता संलवंति-केण वो भो किं गहितं?, तत्थ चालणिसमाणो भणति-जाव आयरियसगासाओ ण उट्ठेमि ताहे सव्वंपि गेण्हामि, जाहे उट्ठितो ताहे न किंचिवि सरामि, छिद्दो भणति-धन्नो तुमं जस्स तंपि कालं अच्छति, मम पविसंतं चेव णीति, सेलो भणति-तुब्भे हि दोवि धण्णा, ममं ण किंचि पविसति,, एतेसिं असंतती य, आयरितो अत्थं गुणेतुकामो मा

॥१२२॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥१२३॥

णासिहितित्ति, ताहे ते णीसाए गुणेति॥ चालणीए पडिवक्खो तावसं कढिणयं, परिपूणओ घयपुन्नगालणगं, किड्डिसं लएति, एवं सीसोऽवि दोसेसु लग्गति, अणाभोगेण अणाभोगपन्नवणाए वा अववादपयाणि वा। तस्स पडिपक्खो हंसो--

खीरमिव रायहंसो०॥२-६०॥ तस्स किर जिब्भा अंबिला तो दुद्धं फट्टइ, ताहे सारं खाति, इतरं चयतित्ति, चर्चा। महिसो पुरतो जूहस्स गंता सव्वं पाणितं आदुयालेति, पच्छा पिबितुमारभति, ण य सक्को पातुं सो वा, एवं सीसो किंचि तं पसारेति करेति वा जेण णवि तस्स णवि अण्णस्स। तस्स पडिपक्खो मेसो, अवि गोप्पतंमिवि जाणूपादपडितो पाणियं पिबति सयं अन्नाणि य। मसगो दसति ण किंचिवि रुहिरं लभति दुक्खावेति, दुक्खाविज्जति पमारिज्जइ य, एवं सीसोवि तारिसं भणति करेति वा जहा ण लभति णिज्जूहिज्जति वा, चर्चा। पडिवक्खो जलूगा, बहुतरगंपि पियति, ण य दुक्खावेति। एवं सुसीसोवि सकज्जं णिप्फादेति अभियत्तति य। बिरालो पुव्वमंडोए दुद्धं तत्थेव ण पिबति, किं तु पादेण ढोलेति, पच्छा अन्नत्थ गयं लिहति, तुरियत्तणेण, तं च तस्स अप्पं आहारितं भवति मइलं च, एवं सीसोऽवि आयरियमूलाओ चेव ण सुणेति, किं तु अणुभासंताणं अन्नतो य तुरियत्तणेण गेण्हति, एवं तस्स थोवं अवधारितं भवति अविसुद्धं च पज्जवेहिंति, चर्चा।

पडिवक्खो जाहगो, मंडीए दुद्धं तत्थेव थोवं पातुं पच्छा पासाणि संलिहति, तस्स ते दोसा ण भवंति, एवं सीसोऽवि आयरियसगासाओ थोवा थोवं गिण्हिऊण सुपरिजितं करेति, एवं तस्स अणुन्नायं परियट्टितं च बहुं थिरं पज्जवसुद्धं च भवति, चर्चा।

गोणी दुविहा-पसत्था अपसत्था य, एगेण चउण्हं धिज्जातियाण गोणी दिन्ना, ते संपहारेंति परिवाडीते दुज्झंतु, तत्थ एगो पढमे दिवसे चिंतेति-कल्लं अन्नस्स दुज्झिहिति किं मम एताए?, चारिमादि ण देति, एवं इतरेवि, सा अचिरेण विणट्ठा, एतेसिं

हंसमहिषमेषमशकजलौकोबिडाला जाहकाः

॥१२३॥

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

श्री आवश्यक उपोद्घात निर्युक्तौ ॥१२४॥

गवाभीरी-दृष्टान्तौ

हाणी य अवण्णवादो य, एरिसत्ति अन्नाओऽवि ण लभंति, एवं आयरियंपि, सीसा पाडिच्छगा करेहिन्ति, पाडिच्छगा सीसत्ति, चर्चा ।

बितिया पसत्था, बंभणस्स दुज्झिहितित्ति, गावी य पुणो मज्झवित्ति, चर्चा । एवं आयरिए सीसा चिंतेति-किं एतेहिं?, अम्हं एस भारो, णिज्जरा, आयरितो य साधूण दाही पुणो अम्हंपित्ति, चर्चा । एवं पाडिच्छगावि । भेरी सच्चेव वासुदेवस्स भणिया, जह सा जया सुविसुद्धगुणजुत्ता आसि तदा महग्घा आढिता, पच्छा विवरीया, एवं सीसेवि समोतारो । अहवा जहा वासुदेवेण गुणेहिं देवावि अक्खित्ता भेरी य लद्धा एवं सीसो गुणवं गुरुं आराहेति सकज्जं णिप्फादेतित्ति, चर्चा ।

आभीरी, आभीरो भंडीए उवरिं ठितो घयगकुंडं पणामेति, हेट्ठा मे महिला पडिच्छति, तीसे इतरस्स य अंतरागंण्हंतमुयंताणं कहमवि पडितो भिन्नो, ताणि भंडंति-तुमे दुग्गहितं, तुमे दुट्ठु पणामितंति, ताव सव्वं भूमि गयं, परोप्परकोवो वेला फिट्टा अकाले गच्छंताणं सेसघयमुल्लं बइल्लाय चोरेहिं गहिता हाणी अवन्नो य, एवं चेव आलावए आयरिएण दिन्ने अन्नं वा कुट्टितो भणितो-ण एवं, भणइ-तुमं चेव एवं दिन्नो, सो भणति-ण देमि, तुमं विणासेसित्ति, कलहो, एवं समोतारो । बितिओ दवत्ति ओइन्नो, दोहिवि दवदवस्स कप्पराणि भरिताणि, मणागं णट्ठं, सो आभीरो भणति-मए ण सुट्ठु पणामितं, सा भणति-मए न सुगहितंति, एवं आयरिएणवि आलावओ दिन्नो, पच्छा आयरितो भणति-मा एवं कुट्टेहि, प्रागेव मए आणुवउत्तेण दिन्नो, सो भणाति-मते ण सुट्ठु गहितोत्ति, चर्चा । अहवा आभीरी जाणति-धारा एत्तिल्लिया घडए माहिति, एवं आयरितो जाणाति एगं दुगं आलावगं गेण्हिहितित्ति एवं परिक्खिए सीसस्स देज्जा, दुसीसस्स विवेगो, चर्चा ।

॥१२४॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥१२५॥

उपोद्घातं द्वाराणि उद्देशनिर्देशद्वारे

चक्खाणविधिविभागो गतो । इयाणिं दारविधी । तत्थ इह तावेतं सामाइयं इमेहिं दारेहिं अवगंतव्वं । तंजहा–

उद्देसे १ णिद्देसे २ य, णिग्गमे ३ खेत्त ४ काल ५ पुरिसे ६ य । कारण ७ पच्चय ८ लक्खण ९ णये १०
समोतारणा ११ णुमए १२ ॥ २—६१ ॥ किं १३ कतिविहं १४ कस्स १५ कहिं १६ केसु १७ कहं १८
केच्चिरं हवति कालं १९ । कति २० संतर २१ मविरहितं २२ भवा २३ ऽऽगरिस २४ फोसण २५-
णिरुत्ती २६ ॥ २—६२ ॥ दारगाथाओ

तत्थ पढमं उद्देसित्ति दारं, तस्स अट्ठविहो णिक्खेवो । तंजहा--णाम० गाथा--॥२॥६३॥

नामुद्देसो ठवणु० दव्वु० खेत्तु० काल० समासुद्देसो उद्देसुद्देसो भावुद्देसो, नामट्ठवणाओ गताओ, जाणगसरीरभवियसरीरवइरित्तो दव्वामितिउद्देसो दव्वुद्देसो, अहवा दव्वेण दव्वा दव्वे वा उद्देसो एवमादि, एवं खेत्तादीणंपि योज्यं, तत्र द्रव्यमिदं द्रव्यपतिरयं द्रव्यवानयमित्यादि दव्वुद्देसो, एवं खेत्ते खेत्तवती खेत्ती इच्चादि खेत्तुद्देसो, एवं कालेवि, समासो-संखेवो, समासुद्देसो तिविहो, तंजहा-अंगसमासुद्देसो सुयक्खंधसमासुद्देसो अज्झयणसमासुद्देसो, अंगसमासुद्देसो जो जं उद्देसगं उद्दिसति, ण ताव भणति पढमं बीयं वा, भावुद्देसो भावो भावी भाववान् इच्चादि भावुद्देसो । एस ताव उद्देसो अविसेसितो ।

इयाणिं एतेसु चेव पदेसु विसेसितो निद्देसो भवति, णामठवणाओ गताओ, वइरित्तो जो जं दव्वं निद्दिसति, जहा सचित्तं वा अचित्तं वा मीसं वा, सचित्तं जहा गोणो तेणे वा, योहिं गोमिओ, अचित्तो जहा छत्तं, तेण वा छत्तेण छत्तिओ, मीसं जहा

॥१२५॥

अथ उपोद्घातस्य उद्देश-आदि २६ द्वाराणि कथयते

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

श्री
आवश्यक
उपोद्घात
निर्युक्ती

॥१२६॥

निर्देशः
निगमश्च

रहो तेन वा निर्देश्यः रहेण रहिओ इच्चादि, एस दव्वनिद्देसो। खेत्तनिद्देसो जो जं खेत्तं निद्दिसति तं० भरहं वा एरवयं वा जो वा जेण खेत्तेण निद्दिसति, तं०-सोरट्ठो मागहो इच्चादि, कालनिद्देसो परूवियव्वो। समासनिद्देसो तिविहो, तंजहा-अंगसमासनिद्देसो सुयक्खंध० अज्झयण०, अंगसमासणिद्देसो जो जं अंगं निद्दिसति, तं०-आयारं वा सूयगडं वा एवमादि, एवं सुयक्खंधंपि गाथासोलसाणि महज्झयणाणि वा, एवं अज्झयणं जहा दुमपुप्फियादीणि, उद्देसनिद्देसो जो जं उद्देसं निद्दिसति, तं०-सत्थपरिण्णाए पढमो उद्देसो बितिओ वा इत्यादि, भावनिद्देसो जो जं भावं निद्दिसति, तं०-उदइयं वा, जो वा जेण वा भावेण निद्दिस्सति जहा कोही माणी मायी लोभी, इह किल समासउद्देससमासनिद्देसेहिं अधिगारो, तत्थ अज्झयणं इति समासुद्देसो सामायिकमिति समासनिर्देशः। एते पुण उद्देसनिद्देसे को किह णयो इच्छति इति ?, 'दुविहंपि' अन्ने पुण निद्देसमेव को किह णयो इच्छतित्ति–

दुविहंपि णेगमणयो निद्दिट्ठं संगहो य ववहारो। निद्देसगमुज्जुसुतो उभयसरित्थं च सद्दस्स ॥२॥६८॥

तत्थ णेगमणयस्स य वत्तव्वयाए इत्थी इत्थिं निद्दिसति इत्थिनिद्देसो, इत्थी पुरिसं निद्दिसति पुरिसनिद्देसो इत्थिनिद्देसो य, इत्थी णपुंसगं निद्दिसति इत्थीनिद्देसो य णपुंसगनिद्देसो य, एमेव पुरिसणपुंसगाणंपि संजोगा। संगहववहारणयवत्तव्वता इत्थी इत्थिं निद्दिसति इत्थीनिद्देसो, इत्थी पुरिसं निद्दिसति पुरिसनिद्देसो, इत्थी णपुंसगं निद्दिसति णपुंसगनिद्देसो, एवं पुरिसणपुंसगाणंपि संजोगा, जं दव्वं णिद्दिसति तं संगहववहारा इच्छंति, इत्थी इत्थिं निद्देसति इत्थिणिद्देसो इत्थी पुरिसं निद्दिसति इत्थिनिद्देसो इत्थी णपुंसगं निद्दिसति इत्थिणिद्देसो, एवं पुरिसणपुंसगाणवि, एवं उज्जुसुओ जो निद्देसओ तं इच्छइ, सेसं ण इच्छइत्ति, उभय-

॥१२६॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

सविकलं च सद्दस्स, जदि इत्थी इत्थिं निद्दिसति इत्थिणिद्देसो, अह इत्थी पुरिसणपुंसए णिद्दिसइ सो अणिद्देसो, जदि पुरिसो पुरिसं णिद्दिसति पुरिसणिद्देसो, अह पुरिसो इत्थिणपुंसए निद्दिसइ सो अनिद्देसो, एवं जदि निद्दिसियव्वं च निद्दिसओ य सो चेव तं इच्छति, सेसं णवि इच्छति सद्दो । एवं सेसाणवि विभासा ॥ इयाणिं निग्गमेत्ति दारं । सो य छव्विहो—

नामगाहा ॥२-६६॥ नामनिग्गमो ठवण० दव्व० खेत्त० काल० भाव०, नामस्थापने पूर्ववत्, वतिरित्तो दव्वनिग्गमो, सो सचित्तातो वा सचित्तस्स निग्गमो चउभंगो, सचित्ताओ सचित्तस्स निग्गमो जहा मूलाओ कंदो कंदाउ खंधो एवं, अहवा जहा इत्थीओ गब्भो, सचित्ताओ अचित्तस्स, जहा केसमंसुणहरोमादीणि, अचित्ताओ सचित्तस्स जहा—कट्ठाओ पावगस्स, अहवा कट्ठाओ घुणस्स, अचित्ता अचित्तस्स, जहा खीराओ दहिं, दहितो णवणीतं, णवनीताओ घयं, अहवा उच्छुरसाउ गुलो । अहवा दव्वाओ दव्वस्स निग्गमो, दव्वाओ वा दव्वाण, चउभंगो, दव्वाओ दव्वस्स, जहा—रुयआ पयुत्ता रूवओ चेव पच्चाओ जातो, दव्वाओ दव्वाणं जहा—एगेण रूवएणं बहव रूवया लद्धा, दव्वेहिंतो एगस्स दव्वस्स, जहा—बहूहिं पउत्तेहिं एगो रूवओ लद्धो, बहूहिं पउत्तेहि बहवे चेव लद्धा इति । खेत्तनिग्गमो—जंमि खेत्ते निग्गमो वक्खिज्जति, जो वा जाओ खेत्ताओ णिग्गओ एमादि, कालनिग्गमो-जंमि काले निग्गमो वक्खिज्जति, जो वा जातो कालाओ निग्गतो, भावणिग्गमो-जो जातो भावाओ निग्गतो जेण वा भावेण निग्गओ इच्चादि, अहवा इह एतेसिं चेव दव्वखेत्तकालभावाणं भगवं पुरिमं गमणिज्जत्तिकट्टु तम्हा भगवतो चेव निग्गमो परूवेतव्वो, तत्थिमा णिग्गमे पढमगाथा—

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

श्री आवश्यक-चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥१२८॥

विमलवाह-नवक्तव्यता

पंथं किर देसेत्ता साधूणं अडविविप्पणट्ठाणं । सम्मत्तपढमलंभो बोधव्वो वद्धमाणस्स ॥ २ ॥ ६७ ॥

अवरविदेहे तत्थ एगंमि गामंमि गामस्स चिंतओ, सो रायाएसवसेण सगडिसागडं गहाय एगं महं अडविं अणुपविट्ठो दारुग-निमित्तं, अन्ने य साधुणो सत्थपरिभट्ठा दिसामूढा पंथं अयाणमाणा तेण अडवीपंथेण मज्झण्हदेसकाले तण्हाए छुहाए य परज्झहिता तं देसं गता जत्थ सो सगडसंनिवेसो, सो य ते पासित्ता साधुणो महता संवेगमावन्नो-अहो इमो साधुणो अदेसिया तवस्सिणो अडविं अणुपविट्ठा, तेसिं सो अणुकंपाए विपुलं अन्नं पाणं दाऊणं भणति-एह भगवं ! जाहे पंथं समोतारेमि, पुरतो संपत्थितो, ताहे ते साधुणो तस्सेव सम्मं समणुगच्छंति । तत्थ य एगो धम्मकहियलद्धिसंपन्नो तस्स धम्मं कहेउमारद्धो, धम्मकहावसाणे य से उवगतं सम्मत्तं, समोतारेत्ता ताहे नियत्तो. ते पत्ता सदेसं। सो य पुण संवेगसम्मदिट्ठी कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे पलितोवमट्ठि-तीएसु देवेसु उववन्नो, ततो चुतो समाणो इक्खागकुले जाओ उसभसुतसुतो मिरीचित्ति, इक्खागकुले जातो इक्खागकुलस्सुप्पत्ती भाणियव्वा, तद्दारेण कुलगरवंसा, तीते कालो, कुलगरुप्पत्ती, उसभतो भरहो, तस्स सुतो मिरीची तो उसभुप्पत्ती । तत्थ कुलगरुप्पत्तीए इमा गाथा= ⊗

पुव्वभवे पुव्वविदेहे दो वणिज्जा मित्ता वत्थेयव्वा, तत्थ एगो मायी एगो उज्जुओ,ते पुण एगतो चेव ववहरंति,तत्थ जो सो मायी सो तं उज्जुगं अतिसंधेति-वंचेति, इतरो सव्वं अगूहेन्तो सम्मं सम्मेणं ववहरति, जो सो उज्जुओ सो कालमासे कालं किच्चा इमीसे ओसप्पिणीए सुसमदूसमाए समाए बहुवीतिकंताए पलितोवमट्ठभागे सेसे इहेव भरहे वासे अड्ढभरहमज्झिल्लतिभागे ॥१२८॥

⊗ *** वृत्ति मध्ये अत्र भाष्यगाथा निर्दिष्टा:, वीर-आदि भगवंतानां कथानकं आरभ्यते

अत्र भाष्यम् आरब्धं, तद् अन्तर्गत भगवन्-महावीरस्य प्रथमभवस्य वर्णनं

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥१२९॥

कुलकर-वक्तव्यता

गंगासिंधूणं मज्झे एगस्स मणुयजुयलस्स मिहुणत्ताए पच्चायातो, तेण पुण किह माणुसत्तणं लद्धं ?, तेणं उज्जुगत्तेणं, इतरो तेणं वंकत्तेणं दाणरुती य आसि, सो तंमि चेव पदेसे हत्थिरयणं जातं, वन्नेण सेतो चउदंतो, जाहे ते पडुप्पन्ना वएणं ताहे तेसिं अन्नमन्नं दट्ठूणं अतीव पीई समुप्पन्ना 'यं दृष्ट्वा०' आतिसंधणताए य आभितोगं विनिव्वत्तियं तं ताहे उदिन्नं, तेण हत्थिणा मिहुणयं खंधे विलइतं, तं जुयलयं विलइयं दट्ठूणं सव्वो सो लोगो अब्भहियमणूसो इमो इमं व से विमलं वाहणंति तेण से णामं करेंति विमलवाहणोत्ति, तेसिं च जातिस्सरणं जातं, ताहे कालदोसेण तेसिं मणूसाणं तेसु रुक्खेसु ममत्तीभावो जातो, जो ममत्ते समल्लिततति तं न सातिज्जति, ताहे तं असहंता एस विमलवाहणो अम्हेहिंतो अहिगो जस्स एस दाहि ते रुक्खे तस्स भविहिंति, ते तं उवट्ठिता, ताहे सो भणति- मा भंडह, तुब्भं इमे रुक्खा, जो तुब्भं एत्थ अवरज्झति तं मम उवट्ठावेज्जाह, एतं च मज्जातं तुब्भं परंपरएण सव्वत्थ ठवेह, जत्थ सा ठविता ते आयरिया जाता, तेण परमणारिया, एवं तेण मेरा ठविता, अहं च से डंडं वत्तेहामि, ताहे तेसिं जो कोति अवरज्झति सो तस्स उवट्ठविज्जति, ताहे सो तस्स डंडे वत्तेति, को पुण डंडो?, हक्कारो, हा तुमे दुट्ठु कयं, सो तेण हक्कारेण जाणति सीसं पडितं, छायाघातो, वरिऽहं मओत्ति, तस्स पुण चंदसिरी णाम भारिया, तीसे पुत्तो चक्खुसं णाम, एवं परंपरएण जसवं अभिचंदे पसेणई मरुदेवे णाभी, एतेसिं चेव महिलाओ चंदकंता सुरूवा पडिरूवा चक्खुमंता सिरिकंता मरुदेवा, तेसिं पुण उच्चत्तं पढमस्स णव धणुसया अट्ठ सत्त अद्धसत्तमा छस्सया अद्धछट्ठा सता पंच पणुवीसा सया णाभिस्स।

ताओ य कुलगरभज्जाओ ईसिं तेसिंतो ऊणातो, ते सव्वे वज्जोसभसंघयणा, समचउरंससंठाणसंठिता, ताओवि एत्तिए चेव, संघयणसंठाणाइं परूवेयव्वाइं, वज्जरिसभं नाम-वज्जबंधो वज्जवेढो वज्जकीलिया य, बितिए वेढओ णत्थि, ततिए ण वेढओ णावि ॥१२९॥

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥१३०॥

नीतीनां सद्भावः

खीलिया, चउत्थं एगओ बद्धं, पंचमं दुहओवि अबद्धं, छट्टं णवरं कोडीए मिलितं ॥ समचउरंसं संठाणं जत्तिओ उव्वेहो तत्तिओ विक्खंभोऽवि, जारिसं वा एगं चक्खुं तारिसं बीयंपि, एवं सव्वंगा, नग्गोहं- जस्स बाहाओ दीहाओ उच्चत्तं थोवं उवरि विसालो, सादी दिग्घो वाहडहरिका, वामणं रहस्सं, खुज्जं ईषदानतं, हुंडं असंठितमेव, एतं छव्विहं संठाणं छव्विहेवि संघयणे भणितं ॥

तेसिं पुण पढमं संघयणं संठाणं च, तेसिं वन्नो भाणियव्वो 'चक्खुम जसमं च पसेणई य एते पियंगुवन्नाभा, अभिचंदो ससिगोरो, निम्मलकणगप्पभा सेसा ॥ तातो तेसिं भज्जातो सव्वातो पियंगुवन्नाओ ॥ इयाणिं तेसिं आउगं- पलिओवमदसभागो पढमस्सायुं ततो असंखेज्जा । अवसेसाणं असंखेज्जा पुव्वा, ते य आणुपुव्विहीणा नाभिस्स पुण संखेज्जा पुव्वा इति । जं तेसिं आउगं तं भज्जाणवि सव्वेसिं चेव, तेसिं हत्थिरयणाणि होत्था, तेसिं च समाउया, तो जं जस्स आउगं तं तस्स समदसभागा काऊणं जो पढमो भागो सो कुमारभावो, जो पच्छिमो सो वुड्ढभावो, मज्झिमा अट्ठ भागा कुलगरभावो, एवं सव्वेसिं, ते पयणुपेज्जदोसा सव्वे देवेसु उववन्ना ॥

कस्स पुण कहिं उववाओ ?, यथासंख्यं दो चेव सुवन्नेसुं उदहिकुमारे ॥ जे य हत्थी मरुदेववज्जाओ य इत्थियाओ ताओ णागेसु उववन्ना, एगे पुण भणंति-जहा पढमो य हत्थी छच्च इत्थियातो णागेसु, सेसेसु णत्थि अधिकारो, मरुदेवा सिद्धिं गता । एतेसिं सत्तण्हंवि इमाओ दंडणीतीओ-हक्कारो मक्कारो धिक्कारो चेव दंडणितितो । वोच्छं तासि विसेसं जहक्कमं आणुपुव्वीए ॥ पढमस्स बितियस्स पढमा दंडणीती, ततियस्स चउत्थस्स बितिया, अभिणवा णाम णवा इति भणितं ॥१३०॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥१३१॥

श्रीऋषभ-स्वधनसार्थ वाहाद-भवाः

होइ, जस्स अप्पोऽवराहो तस्स पढमा, जस्स गाढतरो तस्स णवा, पंचमच्छट्ठसत्तमए (तइया णवा) तेसिं जस्स चंडतरो उ तस्स तइओ धिक्कारो दिज्जइ, सो य अज्जवि अणुपरियट्टति । सेसा चउव्विहावि डंडणीती माणवगणिधीतो भरहस्स उप्पन्ना, परिभासा मंडलबंधो चारए छविच्छेदो, अन्नेसिं परिभासा मंडलबंधो य उसभसामिणा उप्पातितो, चारगच्छविच्छेदा माणवगणिधीतो, आहारणीती पुण गिहिवासे **उसभस्स तु असक्कतो आसि आहारो** जाव किल उसभसामिणो गिहावासकालो ठिओ ताव, सव्वेसिंपि असक्कतो आहारो आसि, असक्कतो णाम असंस्कारितः, स्वभावस्थ एव फलादि, भगवतो पुण उसभसामिस्स जाव गिहवासो आसि ताव देवकुरुउत्तरकुरुकाणि फलाणि खीरोदपाणियं च सक्कवयणसंदेसेण देवा उवणेंता, अच्छउ ताव आहारो, उसभसामिस्स ताव जाणामो का उप्पत्ती ?, तेणं कालेणं तेणं समएणं अवरविदेहे वासे धणो णाम सत्थवाहो होत्था, सो पुण धणसत्थाहो खितिपतिट्ठियातो णगराओ वसंतपुरं पत्थितो वाणिज्जाते, जहा दावद्दवणाए, ताए चेव विहीए संपत्थितो, णवरं इह साहूणं तेण समं पत्थितो गच्छो, को य पुण कालो ?, चरिमणिदाहो, सो य सत्थो जाहे अडविमज्झं पत्तो ताहे वासारत्तो उवग्गो, तत्थ पाउसो जहा उक्खित्तनाए, उक्खित्तनाए तारिसो जातो, ताहे सो सत्थवाहो अतिचिक्खिलिच्चिया दुग्गमा पंथत्तिकाऊणं तत्थेव सत्थनिवेसं काऊणं वासावासं ठितो, तंमि ठिते वासावासं सव्वो सत्थो ठितो, जाहे य तेसिं अन्नसत्थेल्लयाणं निट्ठियं भोयणं ताहे कंदमूलाइं समुद्दिसंति, साहुणो दुहिया जति किहवि आहापवत्ताइं लब्भंति ताहे गेण्हंति ॥ एवं काले वच्चंते बहुए काले समइच्छिए थोवावसेसे वासारत्ते ताहे तस्स धणस्स चिंता जाया-को एत्थ सत्थे दुक्खितोत्ति ?, ताहे तेण सरितं, जह-मए समं पव्वइया आगता, तेसिं च कंदमूलाणि ण कप्पंति, ते दुक्खिता तवस्सिणो, कल्लं देमि

॥१३१॥

अत्र भगवंत ऋषभस्य कथानक आरभ्यते

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥१३२॥

श्री ऋषभस्य भवाः

तेसिं, ते पभाष्माए निमंतिता पभणंति- जं परं अम्ह कप्पियं भवेज्ज तं परं गेण्हेज्जामो, किं पुण तुब्भं कप्पाति ?, जं अकतमकारितमसंकप्पितं अधारद्धातो पाकातो भिक्खामेत्तं जं वा घयं वा गुलं वा एवमादि, एवं तेण साधूणं तं फासुगं विपुलं दाणं दिन्नं, सो अहाउयं पाळइत्ता तेण दाणफलेण उत्तरकुरुमणुतो जातो, ततो आउक्खएण उव्वट्टिऊणं सोहम्मे कप्पे तिपलिओवमठितीओ देवो जाओ, (महाबल ललितो वइरजंघ मिथुनकं च सोधम्मसुर, एतद्भवपंचकमत्र त्यक्तं) ततो आउक्खएण उव्वट्टिऊणं महाविदेहे वासे वेज्जपुत्तो आयातो, तस्स पुण इमे सरिसगा सरित्तया सरिव्वया एगदिवसजाता अणुरत्ता अविरत्ता वन्नओ जहा अंडगणात्ते। ते इमे चत्तारि वयंसा तं०—रायपुत्तो सेट्ठिपुत्तो अमच्चपुत्तो सत्थाहपुत्तोत्ति, एवं ते अन्नया कयाइ तस्स वेज्जस्स घरे एगतओ सहिता सन्निसन्ना अच्छंति, तत्थ य साधू महप्पा सो किमिकुट्ठेण गहितो अतिगतो भिक्खस्स, तेहिं सप्पणयं सहासं सो भन्नति- तुब्भेहिं नामं सव्वलोगो खाइयव्वो, ण तुब्भे तवस्सिस्सं वा अणाहस्स वा किरिया कायव्वा, सो भणति-करेज्जामि, काणिवि पुण ओसहाणि मम णत्थि, ते भणंति- अम्हे मोल्लं देमो, किं ओसहं जा किणिज्जतु ?, सो भणति- कंबलरयणं गोसीसचंदणं च, ततियं तेल्लं तं मम अत्थि, ताहे मग्गिउं पवत्ता, आगमितं च णेहिं जहा अमुगस्स वाणियगस्स अत्थि दोऽवि एताइं, ते गता दोन्नि सयसहस्साइं गहाय तस्स पासं, देहि अम्हं कम्बलरयणं गोसीसचंदणं च, सो जाणति ते कुमारे, तेण पुच्छितं- किं कज्जं ?, भणंति-साधुस्स किरिया कायव्वा, तेण भन्नति-अलाहि मोल्लेण, एत्तिए चेव गेण्हह करेह, ममवि धंमोत्ति, ण सक्का एक्कजिब्भाए (वोत्तुं) वे अत्था, तस्स ताव वणियस्स संवेगो जातो, जदि ताव एतेसिं बालाणं एरिसा सद्धा मम णाम मंदपुन्नस्स इहलोगपडिबद्धस्स णत्थि, सो संवेगमावन्नो, ताहे चेव तहारूवाणं थेराणं अंतिए पव्वइओ जाव सिद्धो बुद्धो। इमेऽवि ताव घेत्तूण ताणि ओसहाणि

॥१३२॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक उपोद्घात निर्युक्तौ

॥१३३॥

गता तस्स साधुणो पासं जत्थ उज्जाणे ठितो, पासंति तं पडिमावरगतं, ते तं दट्ठूणं पडिमं ठितं वंदिऊणं अणुन्नवेंति-अणुजाणह भगवं ! अम्हे तुब्भं धम्मविग्घं काउं उवट्ठिता, ताहे तेहिं तेण तेल्लेण सो साधू अब्भंगिओ, तं च तेल्लं रोमकूवेहिं सव्वं अतिगतं, तंमि य अतिगते ते किमिया सव्वे संखुद्धा, तेहिं चलंतेहिं तस्स साधुणो उज्जला विउला वेयणा पाउब्भूता, ताहे ते निग्गते दट्ठूणं कंबलरयणेण साहू पाउतो, तं सीयलं, तं च तेल्लं उण्हवीरियं, ते किमिया तत्थ लग्गा, ताहे तं पप्फोडितं, ततो सव्वे पडिता, ताहे आलिंपितो, एवं एक्कसिं दो तिन्नि वारे अब्भंगेऊणं साधू तेहिं नीरोगो काओ, ताहे खमावेऊणं जेणागता तेणेव पडिगता, ते अहाउयं पालेउं सामन्नं तंमूलागं देवलोगेसु उववन्ना पंचवि जणा ते, ततो देवलोगातो आउक्खतेणं चइऊणं जंबूदीवे पुव्वविदेहे पोक्खलावइंमि चक्कवट्टिविजए पुंडरिगिणीय नगरीए वइरसेणस्स रन्नो धारिणीय देवीए पढमे वइरणाभे णाम पुत्ते जो सो वेज्जपुत्तो, अवसेसा कमेण बाहुसुबाहुपीढमहापीढात्ति, एवं ते संवड्ढिया पंचलक्खणे भोते भुंजंति। सो य वइरसेणो राया पव्वइतो, तित्थगरो भगवं जातो, इयरे य संवड्ढिया महामंडलिया जाता, इमस्स वइरनाभस्स चक्कवट्टिनामगोयाइं कम्माणि उइन्नाणि तेण साधुवेयावच्चेण, जद्दिवसं पितुस्स केवलं उप्पन्नं तद्दिवसं इमस्स चक्कं उप्पन्नं, विजए चक्की जातो, एवं ते भोगे भुंजता विहरंति। अन्नया णलिणिउम्मे उज्जाणे वइरसेणो समोसरितो, ते पंचवि पव्वइया, तत्थ वइरणाभेण चोद्दस पुव्वाणि अहिज्जियाणि, अवसेसा एक्कारसंगवी चउरो, तत्थ बाहू सो तेसिं सव्वेसिं वेयावच्चं करेति, जो सो सुबाहू सो भगवतां कितिकम्मं करेति, एवं ते करेंते वइरनाभो भगवं अणुवूहति- अहो सुलद्धं जम्मजीवियफलं जं साधूणं वेयावच्चं कीरइत्ति, परिसंता वा साधुणो वीसामिज्जंति, एवं पसंसति, एवं पसंसिज्जंतेसु तेसु तेसिं दोण्हमग्गिल्लाणं अपत्तियं भवति, अम्हे सज्झायंता ण

विंशतिः स्थानकानि

॥१३३॥

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

॥१३४॥

पसंसिज्जामो, जो करेइ सो पसंसिज्जइ । तत्थ पढमेण वइरणामेण वीसाए कारणेहिं तित्थयरत्तं निबद्धं । काणि पुण ताणि जेहिं तित्थकरत्तं लब्भति ?। भण्णति— तीर्थकृत्कर्म

अरहंत० ॥२-१०६॥ दंसण० ॥२-१०७ ॥ अप्पुव्व० ॥२-१०८॥ पढम०॥२-१०९॥पढमाते अट्ठ बीयाए णव ततियाए तिन्नि, तंजहा-अरिहंत १ सिद्ध २ पवयण ३ गुरु ४ थेर ५ बहुस्सुत ६ तवस्सीसु ७, तत्थ पवयणं-संघो, गुरू-धम्मोवदेसादिदातारो, धम्मे थिरीकरेति जो सो थेरो, सेसा पसिद्धा । एतेसिं वच्छल्लता-अतीव भत्तिबहुमाणो जं जुज्जति तं करेति, अभिक्खणाणोपयोगो अणुप्पेहादिसु णीसंकितादिकरणं वा८, दंसण९ विणए१० आवस्सय ११सीले-अट्ठारससीलंगसहस्सेसु उत्तरगुणेसु १२वएमूलगुणेसु १३,एतेसु निरतियारो, खणलव१४ तव१५ च्चियाए१६ वेयावच्चं१७,एतेसु समाहिते, तत्थ खणलवसमाही णाम खणलवमेत्तमवि कालं णो असमाधिते भवति, तदुक्तं-'संजमरतिबहुले' त्ति । एवं तवरतिबहुलेत्ति, चियागरतिबहुलेत्ति, दुविहो-दव्वचिताओ, भावचिताओ, दव्वचिताओ आहारउवहिसेज्जादीणं अप्पातोग्गाणं चियागो पायोग्गाणं दाणं, भायचियायो कोहादीणं, वेयावच्चरतिबहुले, वेयावच्चं दसविहं, तंजहा-'आयरिय उवज्झाते थेर-तवस्सी गिलाण सेहाणं। साहम्मिय कुल गण संघसंगयं तमिहं कायव्वं ॥१॥ तं एक्केकं तेरसविहं, तंजहा-भत्ते १ पाणे २ आसण ३ पडिलेहा ४ पाद ५ अच्छि ६ भेसज्जे ७ । अत्थाण ८ दुट्ठ ९ तेणे१० दंडग ११ गेलन्न १२ मन्नंति १३ ॥१॥ पाएणं नियमं करेति, समाहिं च उप्पाएति, उग्गहेसु जो वा जेण (विणा) विसीदति । अपुव्वणाणग्गहणं १८ सुयभत्ती, तज्जातीयं बहुमाणंपि १९ पवयणपभावणा य २० पवयणे महूणं अत्थं जणयति । एतेहिं कारणेहिं तित्थगरत्तं लभति जीवो । किं समुदितेहिं उदाहु पत्तेयमवि ?, उभयथावि । यतो— ॥१३४॥

अत्र विंशति-स्थानकानि वर्णयते

पुरिमेण य पच्छिमेण य एते सव्वेऽवि फासिया ठाणा । मज्झिमएहिं जिणेहिं एगं दो तिन्नि सव्वे वा ॥२-१०९॥
तं च कहं वेतिज्जति?, आगिलाए धम्मदेसणादीहिं । वज्झति तं तु भगवतो, ततियभव ओसक्कतित्ताणं ॥२-११०॥

पढ्ढवतो नियमा मणुयगतीए इत्थी वा पुरिसो वा इतरो णपुंसओ वा सुभलेसाए, अन्नतरेहिं कारणेहिं बहुलं बहुहा आसेवितेहिं । एवं तेण तित्थगरत्तं निबद्धं, बाहुणा वेयावच्चेण भोगा निव्वत्तिया, सुबाहुणा बाहुबलं, तेहिं दोहिवि इत्थीनामगोत्तं कम्मं निबद्धं, एवं वतिरणाभो भगवं चतुरासितं पुव्वलक्खाइं सव्वाउं पालइत्था, तत्थ कुमारो तीसं मंडलिओ सोलस चउव्वीसं महाराया, दंतचक्के चोद्दससामन्नपरियाओ, ततो सव्वट्ठे उववन्नो, तेऽवि तत्थेव, उववातो सव्वट्ठे सव्वेसिं, पढमं वइरणाभो चुओ, इमीसे ओसप्पिणीए समाए सुसमसुसमाए वितिकंताए सुसमाए वितिकंताए सुसमदुस्समाए ततियाएवि बहुवितिकंताए चउरासीए पुव्वसयसहस्सेहिं सेसएहिं एगूणणउइए य पक्खेहिं सेसएहिं आसाढबहुलपक्खे चउत्थीए उत्तरासाढाजोगजुत्ते मियंके विणीयाए भूमिए नाभिस्स कुलगरस्स मरुदेवाए भारियाए कुच्छिंसि गब्भत्ताए उववन्नो । चोद्दस सुमिणा उसभगयसीहमादी पासित्ता पडिबुद्धा णाभिस्स कहेति, तेण भणियं-तुज्झ पुत्तो वड्डो कुलगरो होहितित्ति, सक्कस्स आसणं चलितं, सिग्घं आगमणं, भणति-देवाणुप्पिया ! तव पुत्तो सयलभुवणमंगलालओ पढमधम्मवरचक्कवट्टी महइ महाराया भविस्सइ, केयी भणंति-बत्तीसंपि इंदा आगंतूण वागरेंति, ततो मरुदेवा हट्ठतुट्ठा गब्भं वहतित्ति, तएणं णवण्हं मासाणं अट्ठट्ठमाणं च राइंदियाणं बहुवितिकंताणं अड्ढरत्तकालसमयंसि चेत्तबहुलट्ठमीए उत्तरासाढाणक्खत्तेणं जाव अरोगा अरोगं पयाता, जायमाणेसु तित्थयरेसु सव्वलोए उज्जोओ भवति, तित्थयरमायरो य पच्छन्नगब्भाओ भवंति, जररुहिरकलमलाणि य नं भवंति--

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता..........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णिः-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक उपोद्घात निर्युक्तौ ॥१३६॥

श्री ऋषभस्य जन्म

एत्थ-जम्मणं० ॥ २-११३ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं अहेलोगवत्थव्वाओ अट्ठदिसाकुमारिमहत्तरिगाओ सएहिं२ कूडेहिं सएहिं २ भवणेहिं सएहिं २ पासादवडंसएहिं पत्तेयं पत्तेयं चउहिं सामाणियसहस्सेहिं चउहि य महत्तरियाहिं सपरिवाराहिं सत्तहिं अणिएहिं सत्तहिं अणियाहिवतीहिं सोलसहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं अन्नेहि य बहूहिं वाणमंतरेहिं देवेहि य देवीहि य सद्धिं संपरिवुडा महताहयणट्टगीतवादित जाव भोगभोगाइं भुंजमाणीओ विहरंति, तंजहा-भोगंकरा भोगवती सुभोगा भोगमालिणी। तोयधारा विचित्ता य, पुप्फमाला अणिंदिया ॥ १ ॥ तएणं तासि भगवंते तित्थगरे समुप्पन्ने य पत्तेयं २ आसणाइं चलंति, ताणि पासेत्ता ओहिं पउंजंति, भगवं तित्थगरं ओहिणा भोएंति, भोएत्ता ताहे पणामं करेंति, जहा वद्धमाणसामिस्स सक्के जाव संकप्पे समुप्पज्जित्था, उप्पन्ने खलु भो जंबुद्दीवे भगवं तित्थगरे, तं जीतमेतं तीतपच्चुप्पन्नमणागयाणं अहोलोगवत्थव्वाणं अट्ठण्हं दिसाकुमारिमहत्तरियाणं जम्मणमहिमं करित्तए, तं गच्छामो णं अम्हेऽवि भगवतो जम्मणमहिमं करेमोत्तिकट्टु एवं संपेहेंति संपेहेत्ता पत्तेयं २ अभितोगे देवे सद्दावेंति, २ खिप्पामेव भो अणेगखंभसयसंनिविट्ठे लीलट्ठित एवं विमाणवन्नओ भाणियव्वो जाव जोयणविच्छिन्ने जाणविमाणे विउव्वह। तेऽवि तहेव करेंति, तएणं ताओ हट्ठतुट्ठ पत्तेयं पत्तेयं चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं जाव अन्नेहि य बहूहिं देवेहि य देवीहि य सद्धिं संपरिवुडाओ ते दिव्वे जाणविमाणे दुरुहिति, दुरुहित्ता सव्विड्ढीए सव्वजुत्तीए जावघणमुदिंगपवादितरवेणं ताए उक्किट्ठाए जाव देवगतीए जेणेव भगवतो जम्मणत्थाणे तेणेव उवागच्छित्ता तं ठाणं तेहिं दिव्वेहिं जाणविमाणेहिं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेंति, करेत्ता उत्तरपुरच्छिमे दिसीभागे ईसिं चउरंगुलमसंपत्ते धरणितले ते दिव्वे विमाणे ठवेंति ठावेत्ता पत्तेयं पत्तेयं चउहिं सामाणिय जाव पडिवुडाओ विमाणाहिंतो पच्चोरुहित्ता सव्विड्ढीए जाव नादितरवेणं

॥१३६॥

अत्र भगवंत ऋषभस्य जन्म कल्याणक वर्णयते

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता...........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥१३७॥

जेणेव भगवं तित्थगरे तित्थगरमाता य तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छेत्ता भगवंतं मातरं च तिक्खुत्तो पयाहिणं करेत्ता पत्तेयं पत्तेयं करतलपरिग्गहितं जाव अंजलिं कट्टु एवं वयासी--णमो त्थु ते रयणकुच्छिधारिए ! जगप्पतीवदाइए ! सव्वलोयणाहस्स सव्वजगमंगलस्स सव्वजगजीववच्छलस्स हितकारगाउ मग्गदेसितया गढिवज्जुप्पभुस्स जिणस्स णाणिस्स णायगस्स बुद्धस्स बोहगस्स चक्खुणो य मुत्तस्स निम्ममस्स, पवरकुलसमुब्भवस्स जातियखत्तियस्स जंसी लोउत्तमस्स जणणी धन्नासि पुण्णासि, तं कतत्थे, अम्हे णं देवाणुप्पिए ! अहेलोगवत्थव्वाओ जाव मयहरिगाओ भगवतो तित्थगरस्स जम्मणमहिमं करेस्सामो, तण्णं तुब्भाहि ण भातियव्वंतिकट्टु उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमंति, अवक्कमेत्ता वेउव्विय जाव समोद्धन्नंति, समोद्धन्नेत्ता संखेज्जाइं जाव संवट्टगवाए विउव्वंति विउव्वेत्ता तेणं सिवेणं मउतेणं मारुतेणं अणुद्धएणं भूमितलविमलकरणेणं मणहरेणं सव्वोउयसुरभिकुसुमगंधाणुवासिएणं पिंडिमणीहारिमेणं गंधुद्धुरेणं तिरियं पवादिएणं तस्स जम्मणट्ठाणस्स सव्वतो समंता जोयणपरिमंडलं जं तत्थ तणं वा जाव अचोक्खं पूइतं दुब्भिगंधं तं सव्वं आहुणिय २ एगन्ते एडंति, एडेत्ता जेणेव भगवं माता य तेणेव उवागच्छंति, भगवतो माताए य अदूरसामंते आगायमाणीओ परिगायमाणीओ चिट्ठंति ।

तेणं कालेणं तेणं समएणं उड्ढलोगवत्थव्वाओ अट्ठ दिसाकुमारीमहतरिगाओ सएहिं सएहिं तहेव जाव विहरंति । तंजहा-मेहंकरा मेहवती, सुमेहा मेहमालिणी। सुवत्था वत्थमित्ता य, वारिसेणा बलाहगा ॥ १ ॥ जाव अब्भवद्दलएणं वासंति २ णिहयरतं णट्ठरयं जाव पसंतरयं करेंति, करेत्ता पुप्फवद्दलगं विउव्वंति, विउव्वेत्ता पुप्फवासं कालागरुपवरजाव सुरवराभिगमणजोग्गं करेंति । करेत्ता जेणेव भगवं तित्थगरे तित्थगरमाता य तेणेव उवागच्छंति जाव आगायमाणीओ चिट्ठंति ।

श्री ऋषभस्य जन्ममहः ॥१३७॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥१३८॥

श्री ऋषभस्य जन्ममहः

तेणं कालेणं तेणं समएणं पुरच्छिमरुयगवत्थव्वाओ अट्ठ दिसाकुमारिमहतरियाओ सएहिं सएहिं कूडे तहेव जाव तंजहा-नंदुत्तरा य नंदा, आणंदा णंदिवद्धणा । विजया य वेजयंती, जयंती अपराजिता ॥ १ ॥ सेसं तहेव, जाव तं तुब्भेहिं ण भाइय-व्वंतिकट्टु भगवतो तित्थगरस्स तित्थगरमाउए य पुरत्थिमेणं आदंसहत्थगयाओ आगायमाणीओ चिट्ठंति । तेणं कालेणं तेणं समएणं दाहिणरुयगवत्थव्वाओ अट्ठ दिसा तहेव जाव विहरन्ति, तंजहा-समाहारा सुप्पादिन्ना य, सुप्पबुद्धा जसोधरा । लच्छिमती सेसवती, चित्तगुत्ता वसुंधरा ॥ १ ॥ तहेव जाव ण भाइयव्वंतिकट्टु भगवतो तित्थगरस्स तित्थगरमाउए य दाहिणेणं भिंगारहत्थगयाओ आगायमाणीओ परिगायमाणीओ य चिट्ठंति ।

तेणं कालेणं तेणं समएणं पच्चत्थिमरुयगवत्थव्वाओ अट्ठ दिसाकुमारिमहतरियाओ सएहिं जाव तंजहा-इलादेवी सुरादेवी, पुहवी पउमावती । एगणासा णवमिया, भद्दा सीया य अट्ठमा ॥ १ ॥ तहेव जाव तं तुब्भेहिं ण भाइयव्वंतिकट्टु जाव भगवतो तित्थगरस्स तित्थगरमाऊए य तालियंटहत्थगयाओ आगायमाणीओ परिगायमाणीओ य चिट्ठंति ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं उत्तरिल्लरुयगवत्थव्वाओ जाव तंजहा-अलंबुसा मिस्सकेसी य. पुंडरीका य वारुणी । हासा सव्वप्पभा चेव, हिरी सिरी चेव उत्तरओ ॥१॥ तहेव जाव वंदित्ता तहेव तित्थगरमाऊए य उत्तरेणं चामरहत्थगताओ आगायमाणीओ पगायमाणीओ य चिट्ठंति ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं विदिसरुयगवत्थव्वाओ चत्तारि दिसाकुमारीओ तहेव जाव विहरंति, तंजहा-चित्ता य चित्तकणगा, सतेरा सोयामणी ॥ तहेव जाव न भाइयव्वंतिकट्टु भगवतो तित्थगरस्स तित्थयरमाऊए य चतुसु विदिसासुं दीवियाहत्थगताओ आगायमाणीओ परिगायमाणीओ य चिट्ठंति ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं मज्झिमरुयगमज्झवत्थव्वाओ चत्तारि दिसाकुमारिमहतरि-

॥१३८॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥१३९॥

श्री ऋषभस्य जन्ममहः

यातो सतेहिं सतेहिं कूडेहिं तहेव जाव विहरंति, तंजहा-रुया रुयंसा सुरुया रुयगावती ॥ तहेव जाव तं तुब्भेहिं ण भाइयव्वंतिकट्टु भगवतो तित्थगरस्स चउरंगुलवज्जं नाभिं कप्पेंति कप्पेत्ता वियरगं खणंति खणेत्ता वियरगे णाभिं निहणंति निहणित्ता रयणाण य वइराण य पूरेंति, पूरेत्ता हरियालियापेढं बंधंति. बंधित्ता तिदिसिं तओ कयलीहरगे विउव्वंति, ततेणं तेसिं कयलीहरगाणं बहुमज्झे देसभागे ततो चाउस्सालए विउव्विंति, तए णं तेसिं चाउस्सालगाणं बहुमज्झदेसभागे ततो सीहासणे विउव्वंति, तेसिं सीहासणाणं अयमेतारूवे वन्नावासे पन्नत्ते, सव्वो वन्नगो भाणियव्वो, तएणं रुयगमज्झवत्थव्वाओ चत्तारि दिसाकुमारीओ भगवं तित्थगरं करतलपुडेणं तित्थगरमातं च बाहाहिं गिण्हंति, जेणेव दाहिणिल्ले कयलीहरगे जेणेव चाउस्सालगे जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तित्थगरं तित्थगरमातरं च सीहासणे निसीयावेंति, सयपागसहस्सपागेहिं तेल्लेहिं अब्भंगिंति, अब्भंगित्ता सुरभिणा गंधट्टएणं उव्वट्टेंति, उव्वट्टेत्ता भगवं तित्थगरं करयलपुडेहिं तित्थगरमायरं च बाहासु गिण्हंति, गिण्हित्ता जेणेव पुरत्थिमिल्ले कयलीघरए जेणामेव चाउस्साले सीहासणे तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता भगवं सभायरं सीहासणे णिसीयावेंति, णिसीयावेत्ता तिहिं उदगेहिं मज्जावेंति, तंजहा-गंधोदतेण पुप्फोदएणं सुद्धोदगेणं, २ जाव सव्वालंकारविभूसिते करेंति, करेत्ता भगवं करतलपुडेहिं मातुं च बाहाहिं गेण्हंति, गेण्हेत्ता जेणेव उत्तरिल्ले कदलीघरके जाव सीहासणे निसीयावेत्ता आभितोगे देवे सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो चुल्लहिमवंताओ गोसीसचंदणकट्ठे साहरह, तेऽवि तहेव जाव साहरंति, तए णं ताओ सरगं करेंति, करेत्ता अरणिं घट्टेंति घट्टेत्ता सरएणं अरणिं महेंति, महेत्ता अग्गिं पाडेंति पाडेत्ता अग्गिं संधुक्केंति संधुक्केत्ता गोसीसचंदणकट्ठे पक्खिवंति पक्खिवेत्ता अग्गिं उज्जालिंति उज्जालेत्ता अग्गिहोमं करेंति करेत्ता भूति-

॥१३९॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

कम्मं करेंति २ रक्खापोट्टलियं बंधंति बांधित्ता णाणामणिरयणभत्तिचित्ते दुवे पहाणवट्टगे गहाय भगवतो सामिस्स कन्नमूलंसि टिट्टियावेंति, भवतु भगवं पव्वयाउगे भवतु भगवं पव्वतायुगे, तएणं भगवंतं करतलपुडेहिं जाव मातारं बाहाहिं गेण्हेत्ता जेणेव भगवतो जम्मणट्ठाणे तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता मातरं सयणिज्जंसि णिसीतावेंति २ भगवंतं मातूए पासे ठवेंति, ठवेत्ता जाव आगायमाणीओ परिगायमाणीओ चिट्ठंति ॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं सक्के देविंदे देवरायां मघवं पागसासणे जाव अट्ठहिं अच्छराकोडीहिं सद्धिं जाव विहरति, तए णं तस्स सक्कस्स आसणे चलति, से तं पासेत्ता ओहिं पउंजति, पउंजित्ता भगवंतं ओहिणा आभोएति, आभोएत्ता हट्ठतुट्ठ एवं जहा वद्धमाणसामिस्स अवहारद्दारे जाव सन्निसन्ने जीयकप्पं सरति, सरित्ता तं गच्छामि णं अहंपि भगवतो तित्थगरस्स जम्मणमहिमं करेमित्तिकट्टु एवं संपेहेति, संपेहेत्ता हरिणेगमेसिं पादत्ताणीयाधिवतिं देवं सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो ! सभाए सुहम्माए मेघोघरसितं गभीरतरमधुरसद्दं जोयणपरिमंडलं सुघोसं सुसरघंटं तिक्खुत्तो उल्लालेमाणे २ महता महता सद्देणं उग्घोसेमाणे २ एवं वयाहि-आणवेति णं भो ! सक्के देविंदे देवराया, गच्छेति णं भो सक्के जावराया जंबुद्दीवं दीवं भारहं वासं भगवतो तित्थगरस्स जम्मणमहिमं करेत्तए, तं तुब्भेऽवियणं देवाणुप्पिया! सव्विड्ढीए सव्वबलेणं सव्वसमुदएणं सव्वादरेणं सव्व-विभूतीए सव्वविभूसाए सव्वसंभमेणं सव्वनाडएहिं सव्वोवरोहेहिं सव्वपुप्फगंधमल्लालंकारविभूसाए सव्वदिव्वतुडितसद्दसन्नि-णादेणं महता इड्ढीए जाव रवेणं णियगपरियालसंपरिवुडा सताइं जाणवाहणविमाणाइं रूढा समाणा अकालपरिहीणं चेव सक्कस्स जाव अंतियं पाउब्भवह । तए णं से पादत्ताणीयाहिवती देवे तं विणएणं पडिसुणेत्ता जेणेव सभाए सुहम्माए सा घंटा तेणेव

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक उपोद्घात निर्युक्तौ

॥१४१॥

श्री ऋषभस्य जन्ममहः

उवागच्छति उवागच्छित्ता जाव तिक्खुत्तो उल्लालेति, तए णं तीए उल्लालिताए समाणीए सोहम्मे कप्पे अन्नेहिं एगूणेहिं बत्तीसाए विमाणवाससयसहस्सेहिं अन्नाइं एगूणाइं बत्तीसं घंटासयसहस्साइं जमगसमगं कणकणरवं काउं पयत्ताइंपि होत्था। तए णं सोहम्मे कप्पे पासादविमाणनिक्खुडावडितसद्दघंटापडंसुकासयसहस्ससंकुले जाते यावि होत्था, तते णं तेसिं सोहम्मकप्पवासीणं बहूणं वेमाणियाणं देवाण य देवीण य एगंतरतिपसत्तनिच्चपमत्तविसयसुहमुच्छिताणं सुसरघंटारसितविपुलबोलतुरितचवलपडिबोहणे कए समाणे घोसणकोऊहलदिन्नकन्नएगग्गचित्तउवउत्तमाणसाणं स पादत्ताणीयाहिवती देवे तंसि घंटारवंसि णिसंतसपडिसंतंसि समाणंसि तत्थ तत्थ तहिं तहिं देसे देसे महता महता सद्देणं उग्घोसेमाणो उग्घोसेमाणे एवं वयासी--हंदि सुणंतु भवंतो ! बहवे सोहम्मकप्पवासी वेमाणिया देवा य देवीओ य सोहम्मकप्पवइणो इणमो वयणं हितसुहत्थं, आणवेति णं भो ! सक्के तं चेव जाव अंतियं पाउब्भवह। तए णं ते देवा य देवीओ य एयमट्ठं सोच्चा हट्ठजाव हिदया अप्पेगतिया वंदणवत्तियं एवं पूयणवत्तियं सकार० सम्माण० दंसण ० कोउहल्ल० अप्पे० सक्कवयणमणुवत्तमाणा अप्पे० अन्नमन्नमणुयत्तमाणा अप्पे० जीतमेतं एवमादित्तिकट्टु जाव पाउब्भवंति। तए णं से सक्के पालयं णामं अभितोगितं देवं आणवेति-खिप्पामेव भो ! देवा० अणेगखंभसयसंनिविट्ठं लीलट्ठियसालिभंजिया-कलियं ईहामियउसभतुरगणरमगरविहगवालगकिन्नररुरुसरभचमरकुंजरवणलतपउमलयभत्तिचित्तं खंभुग्गतवरवेइतापरिगताभिरामं विज्जाहरजमलजुगलजंतजुत्तं पिव अच्चिसहस्समालिणीयं रुयगसहस्सकलितं भिसमणं भिब्भिसमाणं चक्खुल्लोयणल्लेसं सुहफासं सस्सिरीयरूवं घंटावलिचलितमधुरमणहरसरसुरभिसुभकंतदरिसणिज्जं णिउणोवितं मिसिमिसेंतमणिरयणघंटियाजालपरिक्खित्तं जोयणसयसहस्सविच्छिन्नं पंचजोयणसयमुव्विद्धं सिग्घतुरियजइणणेव्वाहि दिव्वं जाणविमाणं विउव्वाहि २ जाव पच्चप्पिणाहि, सेऽवि

॥१४१॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक-चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥१४२॥

श्री ऋषभस्य जन्ममहः

तहेव करेति, तस्सणं दिव्वस्स जाणविमाणस्स तिदिसिं तओ तिसोमाणपडिरूवगा वन्नओ, तोसि णं पडिरूवगाणं पुरतो पत्तेयं तोरणे वन्नओ, जाव पडिरूवा, तस्स णं जाणविमाणस्स अंतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे से जहा णामए आलिंगपुक्खरेइ वा जाव दीवियचम्मेति वा अणेगसंकुकीलगसहस्सविततआवट्टपच्चावट्टसेढीपडिसेढीसोत्थियसोवत्थियवद्धमाणपूसमाणमच्छगसुसुमारअंडगजरामंडाफुल्लावलिपउमपत्तसागरतरंगवसंतलतपउमलयभत्तिचित्तेहिं सच्छाएहिं सप्पभेहिं समीरिएहिं सउज्जोएहिं णाणाविहपंचवन्नेहिं मणीहिं उवसोभिते, तेसिं मणीण वण्णे गंध फासे य भाणियव्वे, जहा रायप्पसेणइज्जे, तस्स णं भूमिभागस्स मज्झदेसभाए पेच्छाघरमंडवे अणेगखंभसयसंनिविट्ठे वन्नओ जाव पडिरूवे, तस्स उल्लोये पउमलताभत्तिचित्ते जाव सव्वतवणिज्जमए जाव पडिरूवे, तस्स णं मंडवस्स समरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभागंमि महेगा मणिपेढिता अट्ठ जोयणाइं आयामविक्खंभेणं चत्तारि जोयणाइं बाहल्लेणं सव्वमणिमती वन्नओ, तीए उवरिं महेगे सिंहासणे वन्नओ, तस्सुवरिं महेगे विजयदूसे सव्वरयतामए वन्नओ, तस्स मज्झभागे एगे वइरामए अंकुसे, एत्थ णं महेगे कुंभिगे मुत्तादामे से णं अन्नेहिं तदद्धुच्चत्तप्पमाणमेत्तेहिं चउहिं अद्धकुंभिकेहिं मुत्तादामेहिं सव्वतो संपरिक्खित्ते, ते णं दामा तवणिज्जलंबूसगा सुवन्नपतरगमंडिता णाणामणिरयणविविहहारद्धहारउवसोभितसमुदया ईसिं अन्नमन्नमसंपत्ता पुव्वादीएहिं वातेहिं मंदं मंदं एज्जमाणा जाव निव्वुइकरेणं सद्देणं ते पएसे आपूरमाणा जाव अतीव उवसोभेमाणा चिट्ठंति, तस्स णं सीहासणस्स अवरुत्तरेण उत्तरेणं उत्तरपुरत्थिमेणं एत्थ णं सक्कस्स चउरासीए सामाणियसाहसीणं चउरासीइं भद्दासणसाहस्सीओ, पुरत्थिमेणं अट्ठण्हं अग्गमहिसीणं, एवं दाहिणपुरत्थिमेणं अब्भिंतरपारिसाए दुवालसण्हं देवसाहस्सीणं, दाहिणेणं मज्झिमाए चोद्दसण्हं देवसाहस्सीणं, दाहिणपच्चत्थिमेणं बाहिरपरिसाए

॥१४२॥

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

सोलसण्हं देवसाहस्सीणं, पच्चत्थिमेणं सत्तण्ह अणियाधीवतीणं, तएणं तस्स सीहासणस्स चउदिसिं चउण्हं चउरासीणं आतरक्ख-देवसाहस्सीणं, एवमादि विभासियव्वं सूरियाभगमेणं जाव पच्चप्पिणइ।

तते णं से सक्के जाव हट्ठदेहए दिव्वं जिणिदाभिगमणजोग्गं सव्वालंकारविभूसितं उत्तरविउव्वितं रूवं विउव्वति, विउव्वेत्ता अट्ठहिं अग्गमहिसीहिं सपरिवाराहिं नट्टाणीएणं गंधव्वाणीएण य सार्द्धं तं विमाणं अणुपयाहिणीकरेमाणे पुव्विल्लेणं तिसोवाणेणं दूरुहति, दूरुहित्ता जाव सीहासणंसि पुरत्थाभिमुहे निसन्ने, तए णं एवं चेव सामाणियावि उत्तरेणं तिसोमाणेणं दुरुहित्ता पत्तेयं पत्तेयं पुव्वणत्थेसु भद्दासणेसु णिसीदंति, अवसेसा य देवा य देवीओ य दाहिणिल्लेण दूरुहित्ता तहेव निसीदंति। तएणं सक्कस्स तंसि दूरुढस्स इमे अट्ठट्ठमंगलगा पुरतो अहाणु०, तदणंतरं पुन्नकलसभिंगारं जाव गगणतलमणुलिहंतं पुरतो अहाणु०, तदणं० छत्तभियारं, तदणं० महिंदज्झए, तदणं० सरूवणेवत्थहत्थपरिवत्थितप्पवेसा सव्वालंकारविभूसिता पंच अणिया पंच अणिया-धिवतिणो, तदणं० बहवे आभिओगिया देवा य देवीओ य सएहिं सएहिं रूवेहिं जाव निओगेहिं सक्कं देविंदं पुरतो य मग्गतो य पासतो य अहा०, तदणं० बहवे सोहम्मवासी देवा य देवीओ य सव्विड्ढीए जाव दूरुढा समाणा मग्गतो य जाव संपट्ठिता॥

तए णं से सक्के तेणं पंचाणीयपरिक्खित्तेणं जाव महिंदज्झएणं पुरतो पकड्ढिज्जमाणेणं २ चउरासीतीए सामाणिय जाव परिवुडे सव्विड्ढीए जाव रवेणं सोहम्मस्स कप्पस्स मज्झंमज्झेणं तं दिव्वं देविड्ढिं जाव उवदंसेमाणे उवदंसेमाणे जेणेव सोहम्मस्स उत्तरिल्ले णिज्जाणमग्गे तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता जोयणसयसाहस्सिएहिं विग्गहेहिं ओवयमाणे य वीतीवयमाणे य ताए उक्किट्ठाए जाव देवगतीए वीतीवयमाणे २ तिरियमसंखेज्जाणं दीवसमुद्दाणं मज्झंमज्झेणं जेणेव णंदीसरे दीवे जेणेव दाहिणपुरत्थि-

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक उपोद्घात निर्युक्तौ ॥१४४॥

श्री ऋषभस्य जन्ममहः

मिल्ले रतिकरगपत्थते तेणेव उवागच्छति, उवागच्छेत्ता तं दिव्वं देविड्ढिं जाव दिव्वं जाणविमाणं पडिसाहरमाणे पडिसाहरमाणे जेणेव जंबुद्दीवे जाव जेणेव भगवतो जम्मणभवणे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छेत्ता तं भवणं तेणं दिव्वेणं विमाणेणं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेति, करेत्ता तस्स उत्तरपुरत्थिमे जाव विमाणं ठवेति, ठवेत्ता अट्ठहिं अग्गमहिसीहिं एवं जहा **वीरस्स** निक्खमणे जाव रवेणं जेणेव भगवं तित्थकरे तित्थगरमातरं च तेणेव उवागच्छति, उवागच्छेत्ता आलोए चेव पण्णामं करेति, करेत्ता सामिं समातरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेति २ वंदति वंदित्ता नमंसति नमंसित्ता एवं वयासी- नमोत्थु ते रयण-कुच्छिधारिए, एवं जहा दिसाकुमारीओ जाव वन्नओ सपुन्नासि तं कयत्थे!, अहं णं देवाणुप्पिए! सक्के नामं देविंदे भगवतो सामिस्स जम्मणमहिमं करेस्सामि, तं तुब्भे न भाइयव्वंतिकट्टु ओसोवणिं दलयति, दलयित्ता तित्थयरपडिरूवगं विउव्वति, विउव्वेत्ता तं भगवतो मातूए पासे ठावेति ठावेत्ता पंचसक्के विउव्वति, विउव्वेत्ता एगे सक्के आयंते चोक्खे परमसुइभूए सरससुरभिगोसीस-चंदणविलित्तकरजुगे कयप्पणामे अणुजाणंतु मं भगवं! तिकट्टु भगवं तित्थगरं करतलपुडेहिं गेण्हइ सहरिसं ससंभमं, एगे सक्के पिट्ठतो चलं आतपत्तं गेण्हति, वन्नओ, उभयो पासि दुवे सक्का चामरुक्खेवं करेंति वन्नओ, एगे सक्के पुरतो वज्जं पाणीए कड्ढति, तए णं से सक्के चउरासीतीए सामाणियसाहस्सीहिं जाव अन्नेहि य बहूहिं देवेहि य देवीहि य ताए उक्किट्ठाए जाव वीतिवियमाणे जेणेव मंदरे पव्वते जेणेव पंडगवणे मंदरचूलियाए दाहिणेणं अतिपंडुकंबलसिलाए अभिसेयसीहासणे तेणेव उवा-गच्छति उवागच्छेत्ता सीहासणवरगते पुरत्थाभिमुहे सन्निसन्ने। तेणं कालेणं तेणं समतेणं ईसाणे देविंदे देवराया सूलपाणी वस-भवाहणे सुरिंदे उत्तरड्ढलोगाहिवती अट्ठावीसविमाणवाससयसहस्साहिवती अरयंबरवत्थधरे एवं जहा सक्के, इमं णाणत्तं- महाघो-

॥१४४॥

सा घंटा लहुपरक्कमो पादत्ताणियाधिवती पुप्फओ विमाणकारी दक्खिणा णिज्जाणभूमी उत्तरपुरत्थिमिल्लो रतिकरपव्वतो मंदरे समोसरितो जाव पज्जुवासति। एवं अवसेसावि इंदा आणियव्वा जाव अच्चुओत्ति। इमं णाणत्तं–चउरासीतिमसीती बावत्तरि सत्तरी य सट्ठी या। पन्ना चत्तालीसा, तीसा वीसा दससहस्सा ॥ १ ॥ एते सामाणियाणं ॥ बत्तीस अट्ठवीसा, बारस अट्ठेव चतुरो सयसहस्सा। पन्ना चत्तालीसा छच्च सहस्सा सहस्सारे ॥ २ ॥ आणयपाणयकप्पे, चत्तारि सया अच्चुते उ तिन्नि सता। एते विमाणा ॥ इमे जाणविमाणकारी देवा, तंजहा-पालय पुप्फय सोमणस, सिरिवच्छे य णंदियावत्ते। कामगते पीइगमे मणोरमे विमल सव्वतोभद्दे ॥ सोहम्मगाणं सणंकुमारगाणं बंभलोयगाणं महासुक्कगाणं पाणयगाणं इंदाणं सुघोसा घंटा हरिणेगमेसी पादत्ताणीयाहिवती उत्तरिल्ला णिज्जाणभूमी दाहिणपुरत्थिमिल्लो रतिकरगपव्वतो, ईसाणगाणं माहिंदलंतकसहस्सारअच्चुआण इंदाणं महाघोसा घंटा लहुपरक्कमे पादत्ताणीयाहिवती दक्खिणिल्लिए णिज्जाणमग्गे उत्तरपुरत्थिमिल्ले रतिकरगपव्वते, परिसाओ णं जहा जीवाभिगमे ॥ आयरक्खा समाणियचउग्गुणा सव्वेसिं, जाव विमाणा सव्वेसिं जोयणसयसहस्सविच्छिन्ना, उच्चत्तेणं सविमाणप्पमाणा, महिंदज्झया सव्वेसिं जोयणसाहस्सिया, सक्कवज्जा मंदरे समोतरंति जाव पज्जुवासेंति।

तेणं कालेणं तेणं समएणं चमरे असुरिंदे असुरराया चमरचंचाए रायहाणीए सभाए सुहम्माए चमरंसि सीहासणंसि चउसट्ठीए सामाणियसाहस्सीहिं तित्तीसाए तायत्तीसएहिं चउहिं लोगपालेहिं पंचहि अग्गमहिसीहिं सपरिवाराहिं तिहिं परिसाहिं सत्तहिं अणीएहिं सत्तहिं अणियाहिवतीहिं चउहिं चउसट्ठीहिं आयरक्खसाहस्सीहिं णं अन्नेहि य जहा सक्के, णवरि इमं णाणत्तं–

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

दुमो पादत्ताणीयाहिवती ओघस्सरा घंटा विमाणं पन्नासं सहस्साइं महिंदज्झतो पंच जोयणसयाइं विमाणकारी आभितोगिओ देवो, अवसिट्ठं तं चेव, जाव मंदरे समोसरति पज्जुवासति ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं बली असुरिंदे एमेव, णवरं सट्ठि सामाणियसाहस्सीओ चउगुणा आतरक्खा महादुमो पादत्ताणियाधिवती महाओघस्सरा घंटा, सेसं तं चेव, परिसाओ जहा जीवाभिगमे। तेणं कालेणं तेणं समएणं धरणे तहेव, णाणत्तं- छ सामाणियसाहस्सीओ छ अग्गमहिसीओ चउगुणा आयरक्खा मेघस्सरा घंटा रुद्दसेणो पादत्ताणीयाधिवती विमाणं पणुवीसं जोयणसहस्साइं महिंदज्झओ अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं, एवं असुरिंदवज्जियाणं भवणवासीइंदाणं, णवरं- असुराणं ओघस्सरा घंटा णागाणं मेघस्सरा सुवन्नाणं हंसस्सरा विज्जूणं कोंचस्सरा अग्गीणं मंजुस्सरा दिसाणं मंजुघोसा उदहीणं सुसरा दीवाणं मधुरस्सरा वाऊणं नंदिस्सरा थणियाणं नंदिघोसा 'चउसट्ठी सट्ठी खलु छच्च सहस्सा उ असुरवज्जाणं । सामाणिया उ एए चउग्गुणा आयरक्खा उ ॥ १ ॥ दाहिणिल्लाणं पादत्ताणाधिवती रुद्दसेणो उत्तरिल्लाणं दक्खो ॥ वाणमंतरजोइसिया णेयव्वा एवं चेव, णवरं चत्तारि सामाणियसाहस्सीओ चत्तारि अग्गमहिसीओ सोलस आयरक्खसहस्सा, विमाणा सहस्सं महिंदज्झया पणुवीसं जोयणसयं, घंटा दाहिणाणं मंजुस्सरा उत्तराणं मंजुघोसा, पादत्ताणीयाहिवई विमाणकारी य आभियोगा देवा ॥ जोइसियाणं सुस्सरा सुस्सरणिग्घोसा घंटाओ, एवं पज्जुवासंति ।

तए णं से अच्चुए देविंदे देवराया महं देवाधिवे आभियोग्गे देवे सद्दावेति सद्दावेत्ता एवं वयासी- खिप्पामेव भो महत्थं महग्घं महरिहं विपुलं तित्थगराभिसेयं उवट्ठवेह, तएणं ते हट्ठतुट्ठ जाव पडिसुणेत्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसिभागं अवक्कमेत्ता वेउव्वि-

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥१४७॥

श्री ऋषभस्य जन्मा-भिषेकः

यसमुग्घाएणं जाव समोहनित्ता अट्ठसहस्सं सोवण्णियकलसाणं एवं रूप्पमयाणं मणिमयाणं सुवन्नरूप्पमयाणं सुवन्नमणिमयाणं रूप्पमणिमयाणं सुवन्नरूप्पमणिमयाणं अट्ठसहस्सं भोमेज्जाणं, अट्ठसहस्सं चंदणकलसाणं, एवं भिंगाराणं आदंसाणं थालाणं पातीणं सुपतिट्ठाणं रयणकरंडगाणं पुप्फचंगेरीणं, एवं जहा सूरियाभस्स सव्वचंगेरीओ सव्वपडलगाइं विसेसियतराइं भाणियव्वाइं, सीहासणछत्तचामरतेल्लसमुग्गा जाव सरिसवसमुग्गता, तालियंटा जाव अट्ठसहस्सं कडुच्छुयाणं विउव्वित्ता साभाविए य वेउव्विए य कलसे य जाव कडुच्छुए य गेण्हेत्ता जेणेव खीरोदसमुद्दे तेणेव आगम्म खीरोदोदं गेण्हंति गेण्हेत्ता जाइं तत्थ उप्पलाइं पउमाइं जाव सहस्सपत्ताइं ताइं गेण्हंति, एवं पुक्खरोदाओ, जाव भारहेरवयाणं मागहाईणं तित्थाणं उदगं मट्टियं च गेण्हंति, एवं गंगादीणं महाणदीणं जाव चुल्लहिमवंताओ सव्वतुयरे सव्वपुप्फे सव्वगंधे सव्वमल्ले जाव सव्वोसहीओ सिद्धत्थए य गेण्हंति, गेण्हेत्ता पउमद्दहाओ दहोदगं उप्पलादीणि य, एवं सव्वकुलपव्वएसु वट्टवेयड्ढेसु सव्वमहद्दहेसु सव्ववासेसु सव्वचक्कवट्टिविजएसु वक्खारपव्वएसु अंतरणदीसु विभासेज्जा जाव उत्तरकुरुसु जाव सुदंसणभद्दसालवणे सव्वतुयरे जाव सिद्धत्थए य गेण्हंति, एवं णंदणवणाओ सव्वतुयरे जाव सिद्धत्थए सरसं च गोसीसं चंदणं दिव्वं च सुमणदामं गेण्हंति, एवं सोमणसपंडगवणाओ य सव्वतुयरे जाव सुमणदामं, दद्दरमलयसुगंधिए य गंधे गेण्हंति, एगंतओ मिलंति मिलित्ता जेणेव सामी तेणेव उवागच्छंति उवागच्छेत्ता तं महत्थं जाव तित्थगराभिसेयं उवट्ठावेंति ॥

तए णं से अच्चुयदेविंदे सद्धिं सामाणियसाहस्सीहिं तावत्तीसाए तायत्तीसएहिं चउहिं लोगपालेहिं तिहिं परिसाहिं सत्तहिं अणिएहिं सत्तहिं अणियाहिवईहिं चत्तालीसाए आयरक्खदेवसाहस्सीहिं सद्धिं संपरिवुडे जाव तेहिं साभाविएहि य वेउव्विएहि य वर-

॥१४७॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥१४८॥

श्री ऋषभस्य जन्माभिषेकः

कमलपतिट्ठाणेहिं सुरभिवरवारिपुन्नेहिं चंदणकयचच्चाएहिं आविद्धकंठेगुणेहिं पउमुप्पलप्पिहाणेहिं करतलसूमालपरिग्गहितेहिं अट्ठसहस्सेहिं सोवन्नियाणं कलसाणं जाव अट्ठसहस्सिएणं भोमेज्जाणं जाव सव्वोदएहिं सव्वमाट्टियाहिं सव्वतुयरेहिं जाव सव्वोसहिसिद्धत्थएहिं सव्विड्ढीए जाव रवेणं महता महता तित्थकराभिसेगेणं अभिसिंचति । तए णं सामिस्स महता महता अभिसेगंसि चेव वट्टमाणंसि सव्वे इंदा छत्तचामरकलसधूवकडुच्छुयपुप्फगंधजाव हत्थगया हत्थतुट्ठ जाव पुरतो चिट्ठंति वज्जसूलपाणी, अन्नेऽवि य णं देवा य देवीओ य चंदणकलसहत्थगया एवं भिंगार जहा वद्धमाणसामिस्स निक्खमणे जाव पंजलिकडत्ति । एवं अप्पेगतिया देवा आसितसंमज्जियोवलित्तं करेंति जहा विजयस्स जाव गंधवट्टिभूयं करेंति, अप्पे० हिरन्नवासं वासेंति, एवं सुवन्नरयणवइरआभरणपत्तपुप्फफलबीयमल्लगंधवन्नजाव चुन्न०वासंति । अप्पे०हिरन्नविधिं भाएंति, एवं जाव चुन्नविधिं भाएंति, अप्पे०चउव्विहं वज्जं वाएंति ततं विततं घणं झुसिरं । अप्पे० चउव्विहं पगायंति, तंजहा-उक्खित्तं पयत्तं मंदं चोइदगं, अप्पे०चउव्विहं णट्टं णच्चेंति, तंजहा-अंचितं दुतं आरभडं भसोलंति, अप्पे०चउव्विहं अभिणयं अभिणेंति, तंजहा-दिट्ठंतियं पाडियंतियं सामंतोवाइयं लोगमज्झवसियं, अप्पे० बत्तीसइविहं दिव्वं नट्टविधिं उवदंसेति, अप्पे० उप्पयणिययपव्वयं संकुचितपसारितं । जाव भन्तं णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति, अप्पे० पीणेंति एवं वक्खारेंति तंडवेंति लासेंति अप्फोडेंति वग्गंति सीहणादं णदेंति, अप्पे० सव्वाइं करेंति, अप्पे० हयहेसियं, एवं हत्थिगुलगुलाइतं रहघणघणाइतं, अप्पे० तिन्निवि, अप्पे० अच्छोलेंति अप्पे० पच्छोलेंति एवं तवंति अच्छिदंति पाददद्दरं करेंति भूमिचवेडं दलयंति, अप्पे० महता महता सद्दणं रावेंति, एवं संजोगावि विभासियव्वा, अप्पे० हक्कारेंति एवं पुक्कारेंति वक्कारेंति ओवयंति उप्पयंति परिप्पवन्ति जलंति तवंति गज्जंति विज्जुयंति वासंति देवुक्कलियं करेंति एवं देवकुहुकु-

॥१४८॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक उपोद्घात निर्युक्तौ ॥१४९॥

श्री ऋषभस्य जन्माभिषेकः

हुगं देवहुहुहुगं करेंति अप्पे० विकितभूतादिरूवाइं विउव्वित्ता पणच्चन्ति, एवमादि विभासेज्जा जहा विजयस्स जाव सव्वतो समंता आहावेंति परिधावंति।

तए णं से अच्चुइंदे सपरिवारे सामिं तेणं महता महता अभिसेगेणं अभिसिंचति, अभिसिंचित्ता करतलपरिग्गहितं जाव मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेति, वद्धावेत्ता ताहिं इट्ठाहिं जाव जयजयसद्दं पउंजति, पउंजित्ता पम्हलसूमालाए सुरभिए गंधकासाईए गाताइं लूहेति, एवं जहा वद्धमाणसामिस्स णिक्खमणे जाव णट्टविहिं उवदंसेति, उवदंसेत्ता अच्छेहिं सण्हेहिं रयतामएहिं अच्छरसातंदुलेहिं भगवतो सामिस्स पुरतो अट्ठट्ठमंगलगे आलिहति, तं० दप्पण भद्दासण वद्धमाण वरकलस मच्छसिरिवच्छा। सोत्थिय णंदावत्तं लिहिता अट्ठट्ठमंगलगा ॥ १ ॥ काऊण करेति उवयारं, किं ते ?, पाडलमल्लियचंपगअसोगपुन्नागचूयमंजरिणवमालियबउलतिलयकणवीरकुंदकुज्जककोरंटदमणकवरसुरभिसुगंधिकस्स कयग्गहगहियकरतलपब्भट्ठविप्पमुक्कस्स दसद्धवन्नस्स कुसुमसंचतस्स तत्थ चित्तं जंणुस्सेहप्पमाणमेत्तं ओहानिकरं करेत्ता चंदप्पभरयणवइरवेरुलियविमलदंडं कंचणमणिरयणभत्तिचित्तं कालागरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कधूवगंधुत्तमाणुविद्धं च धूमवट्टिं विणिम्मुयंतं वेरुलियमयं कडुच्छुयं पग्गहेतुं पयते धूवं दाऊण जिणवरिंदस्स सत्तट्ठपयाइं ओसरित्ता दसंगुलिं अंजलिं करिय मत्थगंमि पयतो अट्ठसयविसुद्धगंथजुत्तेहिं महावित्तेहिं अपुणरुत्तेहिं अत्थजुत्तेहिं संथुणति, संथुणित्ता वामं जाणुं अंचेति अंचेत्ता जाव करतलपरिग्गहितं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी--

णमो त्थु ते सिद्ध बुद्ध निरय समाहित समण संमत्तसमणजोगि सल्लगत्तण नीभय नीरागदोस निम्मम निस्संग नीसल्ल माणमूरण गुणरयण सीलसागर मणंतमप्पमेय भविय धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टी णमोऽत्थु ते अरहतोत्तिकट्टु वंदति नमंसति, नमंसइत्ता

प्रत सूत्रांक [-] दीप अनुक्रम [-]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता..........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥१५०॥

श्री ऋषभस्य जन्माभिषेकः

णच्चासन्ने नाइदूरे सुस्सूसमाणे जाव पज्जुवासति, एवं जस्स जो परिवारो तमुच्चारेन्ति तमुच्चारेत्ता जहा अच्चुतो तहा पाणतादी-थावि देवेंदा परिवाडीए भाणियव्वा जाव भवणवतिवाणमंतरजोइसिंदा पत्तेयं पत्तेयं अभिसिंचंति सूरपज्जवसाणे, सक्कवज्जा, णव-रं ते दिव्वकलसा ते चेव कलसे अणुपविट्ठा इति। तए णं से ईसाणे देविंदे पंच ईसाणे विउव्वइ, एगे तहेव जाव तित्थगरं गहाय सीहासणंसि णिसन्ने जाव एगे पूरतो सूलपाणी चिट्ठति, तए णं से सक्के देविंदे० आभियोगे आणवेति, खिप्पामेव भो ! महत्थं तहेव जाव उवट्ठवेंति, तए णं से सक्के तित्थगरस्स चउद्दिसिं चत्तारि धवलवसभे विउव्वति, सेते संखदलसंनिकासे जाव दरिस-णिज्जे, तए णं तेसिं चउण्हं वसभाणं अट्ठसु सिंगग्गेसु अट्ठ तोयधाराओ णिग्गच्छंति, तए णं ताओ उड्ढं वेहास उप्पयंति, उप्प-यित्ता एगतो मेलायंति २ सामिस्स मुद्धाणंसि निवातंति, तए णं से सक्के सपरिवारे सामि जहेव अच्चुते तहेव साभावितेहिं जाव पज्जुवासति। णत्ररं ते च्चेव अणुप्पविट्ठा इति। तए णं से सक्के सामिं वंदति० नमंसित्ता तहेव पंच सक्के विउव्वति जाव वज्जपाणी पकड्डति। तए णं चउरासीतीए सामाणिय जाव रवेणं ताए उक्किट्ठाए जेणेव सामिस्स माया तेणेव उवागच्छति, उवाग-च्छित्ता तित्थगरपडिरूवगं साहरति साहरेत्ता सामिं माऊए पासे ठावति, ओसोवणिं पडिसाहरति, एगं महं खोमजुगलं कुंडलजुयलं च सामिस्स उस्सीसगमूलंसि ठवेति, ठवेत्ता एगं महं सिरिदामगंडं तवणिज्जलंबूसगं सुवन्नपतरगमंडितं णाणाम-णिविविहरयणहारद्धहारसोभितसमुदयं सामिस्स उल्लोयंसि णिक्खिवति, जण्णं सामी देहमाणे सुहं सुहेण अभिरममाणे २ चिट्ठति।

तए णं से सक्के वेसमणं आणवेति, खिप्पामेव भो ! बत्तीस हिरन्नकोडिओ बत्तीसं सुवन्नकोडीओ बत्तीसं नंदाइं बत्तीसं भद्दाइं सुभगसोभग्गरूवजोव्वणगुणलावन्नं च भगवतो सामिस्स जम्मणभवणंसि साहराहि, सेवि जंभगदेवेहिं साहरावेत्ता जाव पच्चप्पिणति। ॥१५०॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥१५१॥

वंशस्थापन

तए णं से सक्के अभिओगिए सद्दावेत्ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो महता महता सद्देणं उग्घोसेमाणा उग्घोसेमाणा एवं वयह-हंदि सुणंतु भवंतो बहवे भवणवतिवाणमंतरजोतिसवेमाणिया देवा य देवीओ य जे णं देवाणुप्पिया! केई भगवतो तित्थगरस्स वा तित्थगरमाऊए वा असुभं मणं संपहारेति तस्स णं अज्जगमंजरिकाविव सतहा मुद्धाणं फुट्टउत्तिकट्टु घोसणं घोसह घोसित्ता जाव पच्चप्पिणह। तेऽवि तहेव करित्ता जाव पच्चप्पिणंति।

तते णं ते बहवे भवणवति जाव वेमाणिया देवा भगवं तित्थगरं तित्थगरजम्माभिसेगेणं अभिसिंचित्ता जेणेव नंदीसरवरदीवे तेणेव उवागच्छंति, तए णं से सक्के देविंदे पुरत्थिमिल्ले अंजणगपव्वते अट्ठाहियं महामहिमं करेति, तए णं सक्कस्स चत्तारि लोगापाला चउसु दहिमुहगपव्वतेसु अट्ठाहियाओ महामहिमाओ करेंति, एवं ईसाणे देविंदे उत्तरिल्ले अंजणगपव्वते, तस्स लोगपाला चउसु दहिमुहपव्वतेसु, चमरो य दाहिणिल्ले अंजणगपव्वते, तस्स लोगपाला चउसु दहिमुहपव्वतेसु, बली पच्चत्थिमिल्ले अंजणगपव्वए, तस्स लोगपाला चउसु दहिमुहपव्वतेसु, तए णं ते बहवे भवण० जाव महिमाओ करेत्ता जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव पडिगयत्ति, एवं जहा जम्बूदीवपन्नत्तीए, अहवा 'जम्मणमहो य सव्वो जह भणिओ मल्लिणायंमि॥' ऊरूसु उसभलंछणं उसभो सुमिणंमि तेण कारणेण उसभोत्ति णामं कयं। एयं सो उसभो उप्पन्नो ॥

एयस्स गिहावासे असक्कतो आसि आहारो। किं च-सव्वे तित्थगरा बालभावे जदा तण्हातिया छुहातिया वा भवंति तदा अप्पणो अंगुलियं वयणे पक्खिवंति, तत्थ देवा सव्वभक्खे परिणामयंति, एस बालभावे आहारो सव्वेसिं, ण ते थणं धावंति, ॥१५१॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक उपोद्घात निर्युक्तौ ॥१५२॥

श्री ऋषभस्य विवाहः

पच्छा सिद्धमेव भुंजंति महतोभूता, उसभस्स पुण सव्वकालं देवोवणीतयाइं उत्तरकुरुफलाइं जाव पव्वतितो । किंच-तित्थगरमायरो लीणगब्भातो भवंति, जायमाणेसु य जररुहिरकलमलादीणि न भवंतित्ति ।

जाहे देसूणं वासं जायस्स तित्थगरस्स ताहे सक्कस्स इच्छा जाया-जीतमेतं तीतपडुप्पण्णमणागयाणं सक्काणं देविंदाणं पढमतित्थगराणं वंसट्ठवणं करेत्तएत्तिकट्टु जाव आगतो, पच्छा किह रिक्कहत्थओ पविसामित्ति, इतो य णाभिकुलगरो उसभसामिणो अंकवरगतेणं एवं च विहरति, सक्को य महप्पमाणाओ इक्खुलट्ठीओ गहाय उवगतो जयावेइ, भगवता लट्ठीसु दिट्ठी पाडिता, ताहे सक्केण भणियं-किं भगवं ! इक्खु अक्कु ? अक्कु भक्खणे, ताहे सामिणा पसत्थो लक्खणधरो अलंकितविभूसितो दाहिणहत्थो पसारितो, अतीव तंमि हरिसो जातो भगवंतस्स, तएणं सक्कस्स देविंदस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिते-जम्हा णं तित्थगरो इक्खुं अभिलसति तम्हा इक्खागुवंसो भवतु, एवं सक्को वंसं ठवेऊण गतो, अन्नेऽवि तंकालं खत्तिया इक्खु भुंजंति तेण इक्खागवंसा जाता इति उवरिं आहारद्दारे निरुत्तंमि 'आसीत इक्खुभोदी इक्खागा तेण खत्तिया होंति'त्ति भन्निही, पुव्वभा य भगवतो इक्खुरसं पिबिताइता तेण गोत्तं कासवंति, इक्षवश्च तदा पानीयवल्लीवद्रसं गलंति, छिन्ना बद्धा वा ॥

इतो य भगवं सुमंगलाए भगिणीए सद्धिं सुहंसुहेण विहरति संवड्ढति य, तेणं कालेणं तेणं समएणं एगस्स मिहुणस्स मिथुणगं जायमेत्तगं, ताणि तं मिथुणगं तलरुक्खहेट्ठा ठवेऊण अभिरमंति कयलीघरगाईसु, ततो य तलरुक्खाओ तलफलं पक्कं समाणं वातेण आहतं तस्स दारगस्स उवरिं पडितं, तेण सो अकाल चेव जीवितातो ववरोवितो, ताहे तं मिथुणगं तं एक्कलियं दारियं कंचि कालं संवड्ढेऊण पयणुपेम्मरागेण तं उज्झित्ता गताणि, सा य अतीव उक्किट्ठसरीरा देवकण्णाविव तेसु णं वणंतरेसु जह वणदेवता ॥१५२॥

अथ भगवंत ऋषभस्य विवाह एवं अपत्य-वर्णनं कथयते

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता...........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥१५३॥

अपत्याभिषेकादीनि

तहा वियरति, तं च एक्कलियं दट्ठुं केति पुरिसा नाभिस्स साहंति, ताहे नाभी तं दारियं गहाय भणति-उसभस्स भारिया भविस्सतित्ति, सयमेव संगोवेमाणो विहरति, ताहे सामी ताहिं दोहिं दारियाहिं समं वड्ढति। एवं ता जम्मणं नामंति गतं। इयाणिं अभिवड्ढित्ति दारं। सो वड्ढति भगवं तो दियलोयचुत्तो अणोवमसिरीओ। देवीदेवपरिवुडो, सुहं सुहेण अभिवड्ढति (नंदाइ समंगलासहिओ वृ.) ॥ २ ॥११८॥ सो य पुण भगवं पुव्वजातिस्सरो तिणाणोवगतो उम्मुक्कबालभावो भिन्नजोव्वणो जातो। विवाहेत्ति दारं—

तए णं सक्कस्स अयमेयारूवे अब्भत्थिते-जीतमेतं तीतपडुप्पण्णमणागयाणं सक्काणं पढमतित्थगराणं विवाहमाहिमं करेत्तएत्ति-कट्टु एवं संपेहेति, संपेहेत्ता आगतो सिग्घमेव महता रिद्धिसक्कारसमुदएणं, ताहे सक्को उसभभगवतो सयमेव वरकम्मं करेति, तंजहा-पमक्खणगण्हाणगीतवातिय अविधवं एवं वरकम्मं करेति, तासिं पुण दारियाणं सक्कग्गमाहिसीओ महता रिद्धिसक्कारसमुदएणं, विवाहं काऊण जामेव दिसं पाउब्भूता तामेव दिसं पडिगताणि। अवच्चत्ति दारं–

छप्पुव्वसयसहस्सा ॥२॥ १२३ ॥ तए णं सुमंगलाए बाहू य पीढो य अणुत्तरहिंतो चइऊणं मिहुणयं जातं, भरहो बंभी य, सुणंदाए सुबाहू य महापीढो य पच्चायाता, ते पुण बाहुबली य सुंदरी य, तते णं सा सुमंगलादेवी अन्नाणि एगूणपन्नं पुत्तजुयलगाणि पसवति, तेऽवि ताव कुमारा एत्रं संवड्ढंति।

आभिसेगोत्ति दारं– ते य मणुया तं दंडणीतिं अतिक्कमंति, भगवं च पुव्वजातिस्सरं अब्भहियं च णाऊणं विन्नवेणं तं ॥१५३॥
उवट्ठायंति, जा सा दंडणीती तं इमे पेल्लेंति, तं इयाणिं किं कीरउ ?, ताहे भगवं पन्नवेति जहा राया भवति, ते पुच्छंति- केरिसो

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

॥१५४॥

राया ?, सामी साहति-जहा जो राया भवति तस्स कुमारामच्चा दंडा आरक्खिया य भवंति, ताहे तस्स उग्गा दंडणीती भवति, तं च ताहे लोगा ण वोलेंति, तो सो किह भवति, ?, सो रायाभिसेगेणं अभिसिच्चति, ताहे तेहिं भणितं- तुब्भे होह रायाणोत्ति, तेण भणियं-णाभि जायह, ते गंतुं णाभि जायंति, तेण भणितं- अहं महल्लो, गच्छह तुब्भे उसभं रायाणं ठवेह, एवं होउत्ति गता पोमसरं, पोमिणीपत्तेहिं पाणियं गेण्हंति जाव आणेन्ति य, सक्कस्स आसणचलणं, ताहे सव्विड्डीए सक्को सलोगपालो आगतो, रायाभिसेगेणं अभिसिंचति, जतिओ य रायारिहो अलंकारो सो सव्वो उवणीतो, एवं भगवं रायाभिसेगेण अभिसित्तो, अथ ते य पुरिसा आगता पेच्छंति भगवं रायाभिसेगेण अभिसित्तं सव्वालंकारविभूसितं, ताहे परितोसवियसियमुहा जाणंति- किह अम्हे अलंकितविभूसियस्स उवरिं पाणियं छुभामो ?, तम्हा पाएसु छुभामोत्ति, ताहे तेहिं पाएसु पाणियं छूढं, ताहे सक्को देवराया चिंतति- अहो इमे विणीता मणुस्सा, तम्हा एत्थ विणीता चेव णगरी भवतुत्ति, तते णं से सक्के देवराया वेसमणं महारायं आणवेति-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! बारसजोयणदीहं णवजोयणविच्छिन्नं जहा वीतसोगा रायहाणी, रज्जसंग्गहेत्ति दारं ॥ एवं तस्स अभिसित्तस्स चउव्विहो रायसंगहो भवति, तंजहा-उग्गा भोगा राइन्ना खत्तिया, उग्गा जे आरक्खियपुरिसा तेसिं उग्गा दंडणीती ते उग्गा, भोगा णाम जे पितित्थाणिया सामिस्स, राइन्ना नाम जे सामिस्स समव्वया, अवसेसा खत्तिता ॥ दारं । इयाणिं विविहाए लोगट्ठितीए णिबंधणं दरिसिज्जति—

आहारे जाव० ॥ २ ॥१३१॥ आसि य कंदाहारा ॥ २ ॥ १३५ ॥ तेसिं पढमं कंदादी आहारो आसि, पच्छा तेण ण जीरंतेण ते उसभं उवट्ठायंति, जहा अम्ह ण जीरति, ताहे उसभसामी भणति- जहा तुब्भे हत्थेहिं मलेत्ता तयं अवणेत्ता ताहे

॥१५४॥

प्रत सूत्रांक [-]
दीप अनुक्रम [-]

॥१५५॥

आहारेह, एवं ते पाणिघंसी आसी, तहवि ण जीरितुं पवत्तं कढिणत्तणेणं ओसहीणं, ताहे भणेति- घंसित्ता तिम्मेत्ता खाह, तहवि न जीरति, ताहे घंसेत्ता तिम्मेत्ता पवालपुडेसु मुहुत्तं धारेह, तहवि ण जीरति, ताहे घंसेत्ता तिम्मेत्ता पवालपुडेसु मुहुत्तगं धरेत्ता, तओ पुणो हत्थपुडंसि मुहुत्तगं धरेत्ता खाह, जाहे तहवि ण जीरति, ताहे कक्खंतरेसु उण्हवेत्ता पच्छा आहारेंति, कीसकारणेणं अग्गिं ण उप्पाएंति ?, सामी जाणति- जदा एगंतणिद्धो कालो भवति तदा अग्गी ण उट्ठेति, एगंतरुक्खेणवि, जदा वेमादाणिद्धलुक्खो भवति तदा अग्गी उट्ठेति, तेण सामी अग्गिं ण उट्ठावेति । अहवा इमं निरुत्तं इक्खागवंसस्स—

आसी य इक्खुभोती इक्खागा तेण खत्तिया होंति । सणसत्तरसं धन्नं आमं ओमं च भुंजीया ॥ २ ॥ १३६ ॥

ओमं णाम थोवं । ताहे- आसी पाणीघंसी ॥ २ ॥ १३८ ॥ एवं च णाम ते कक्खंतरेसु छोढूण आहारेंति । इत्तो य कालसभावेण रुक्खसंघंसेण अग्गी उट्ठाइतो, ताहे सो अग्गी भूमिं पत्तो, जाणि तत्थ सुक्कपत्तकयवराणि ताणि दहितुमारद्धो, ते मणुसा तं दट्ठूण अब्भुत्तयं ततोहुत्ता पधाइता ताहे गेण्हामोत्ति इमाणि रयणाणि, गेण्हितुमारद्धा जाव डज्झंति ताहे ओसरंति, ताहे भीता समाणा उसभसामिस्स साहंति, ताहे उसभो भणति- पासेसु विलग्गिऊणं मंडलिं परिपेरंतेसु छिंदह, ताहे हत्थीहि य आसेहि य तं सव्वं तणं मलितं, ताहे सो उवसंतो अग्गी, ताहे सो अग्गी गेण्हावितो, ताहे भणिया- पाकं करेह, ते ण जाणंति किह पाको कीरति ?, ते अग्गिंमि छुभंति, सो अग्गी तं डहति, ते पुणो उवट्ठिता, तंमि जं छुब्भति तं जरग्गतो जहा खाति, भगवं भणति-मत्तियं आणेह, भगवं हत्थिखंधे चडितओ णीति, तेहि य चिक्खल्लो उवणीतो, ताहे सामिणा हत्थिस्स कुंभए

शिल्पकर्म-लेखादीनि

॥१५६॥

काऊण दरिसितं पत्तयं, भणिता-एयारिसयाणि काऊण एत्थं चेव पयह, पच्छा कुसलेहिं कालेणं सुंदरतरगाणि कयाणि, पच्छा पइऊण अग्गिमि तहिं पागं करे करेंति । एवं ता पढमं कुंभकारा उप्पन्ना, एवं ता आहारो गतो ॥ लेखादीनि

इयाणिं सिप्पाणि उप्पाएयव्वाणि, तत्थ पच्छा वत्थरुक्खा परिहीणा, ताहेऽणंतिका उप्पाइया, पच्छा गेहागारा परिहीणा, ताहे वड्डती उप्पाइता, पच्छा रोमणखाणि वड्ढंति ताहे कम्मकरा उप्पाइता ण्हाविया य, एताइं च पंच मूलसिप्पाणि-कुंभकारा चित्तगारा णंतिका कम्मगारा कासवगात्ति । एक्केक्कस्सावि वीसं भेया, एवं सिप्पसयं, एवं ता सिप्पाण उप्पत्ती ।

इयाणिं कम्माणि-तणहारगादीणि, आचार्यकं सिल्पमनाचार्यकं कर्म, ताहे जे दूरिट्ठिता मणुस्सा ते विणीयतासमीपत्थे मणुसे भणंति-ओ! कुसलत्ति, तेण कोसला. कालदोसेण ममत्तिभावे जाते मामणा, मामणाणाम ममता, मम आसमो वणं काननानि, एस मामणा । विभूसणा णाम जं चेव सामी विभूसिज्जंतो दिट्ठो तप्पभिति लोगो आढत्तो विभूसेउं ।

लेहत्तिदारं-बंभीय दाहिणहत्थेण लेहो दाइतो, सुंदरीय वामहत्थेण गणितं, भरहस्स चित्तकम्मं उवदिट्ठं, बाहुबलिस्स लक्खणं थीपुरिसमादीणं माणं ओमाणं पडिमाणं, एवं तदा पवत्तं । पोतए णामं जं मणिपादओ पोइज्जंति, वहणाणि वा तदा उप्पन्नाणि । अवलवितुमारद्धेसु ववहारो तप्पभिति चेव आढत्तो। णीतीओ उसभसामिम्मि चेव उप्पन्नाओ। निउद्धाणि इस्सत्थाणि य । ओवासणा णाम कम्मं जं कायव्वं तं तदा आढत्ताणि वड्ढिउं रोमाणि, पढमं ण वड्ढित्था, अहवा उवासणा जं सेवेति इस्सरं वा, चिगिच्छावि तदा आढत्ता, पढमं रोगा ण होंसु, अत्थसत्था कोडिल्लयमादी तदा उप्पन्ना, बंधे घाते य मारणा, एतं अत्थातो ॥१५६॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥१५७॥

संबोध-नादि

चेव जातं, जहा बंध, जन्नगा णागजण्णकादी, उस्सवा इंदमहाइया, समवातो दोण्हं तिण्हं जणाणं, मंगलाणि पुव्वं भट्टारगस्स देवेहिं कयाणि, कोउयाणि भूइकम्माणि रक्खा य बद्धा, पुव्वं अलंकारो भट्टारगस्स देवेहिं कतो, लोगोऽवि ताए चेव अणुवित्तीए आढत्तो, वत्थगंधमल्लअलंकाराणि तदप्पभितिं, परिभोगोवभोगाणि उवणयणा, पुव्वं सड्ढ रूप्पडुं साधूणं उवणिज्जंती, विवाहो य भगवतो पढमं तदप्पभिइं दिन्नं परिणेति, दत्ती जदा सामी पव्वइतो तदा पयत्ता भिक्खा, मडगपूयणा मरुदेवाय पढमं पढमसिद्धत्तिकाऊण देवेहिं कया, झामणा सामिस्स पढमं सरीरं झामितं देवेहिं, धूभावि तदा चेव उप्पन्ना, सद्दो पढमं भट्टारए कालगते देवेहिं आणंदअंसुपातो कतो, छेलावणयं छेलणं णाम उक्कुट्ठिहसितादि, चेडरूवाण य छेलणा-पुच्छा, इंखिणियाओ घंटियाओ, कन्नेसु किणाकिणावेंति जक्खा साहंति, पुच्छणा किं कीरतु ? मा वा कीरतु ?, अहवा पुच्छणा सुहसातयादीणि इच्चेवमादिपाये । एवं ता जणपदपरूवणा गता ॥

पढमं सामी संबोहितो, परिच्चाओ-पढमं सामिस्स चेव संवच्छरियो दायो जं च परिच्चइऊणं पव्वतितो, एताणि सव्वाणि तदा उप्पन्नाणि, पत्तेयं णाम को तित्थयरो पत्तेयं पव्वइतो ? को वा कीस परिवारो ?

एगो भगवं वीरो, पासो० ॥ ३–४ ॥ **उग्गाणं भोगाणं०** ॥ ३–५ ॥ उवहित्ति दारं—सव्वेऽवि एगदूसेण **निग्गया०**॥ ३–७ ॥ तित्थगरा तित्थगरलिंगेणं पव्वइया, जं साधूण लिंगं तं तेसिं अन्नलिंगं भवति, गिहिलिंगं गिहत्थाणं, तंपि ण होइ, कुलिंगं णाम कुत्सितं लिंगं कुलिंगं, जं तावसपरिव्वायगादीणं, तंपि ण भवति, गामधम्मा सेविता ण वा सेविता ?, गामणगरादी वा तदा चेव उप्पन्ना, अहवा जे उवसग्गा ते तदा उप्पन्ना, परीसहा कस्स आसी णासी वा ?, सव्वेऽवि तित्थगरा ॥१५७॥

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

॥१५८॥ जीवादिणवपयत्थे उवलभिऊण पव्वइता, सुतलंभे उसभसामी पुव्वभवे चोद्दसपुव्वी, अवसेसा एक्कारसंगी, पच्चक्खाणं पुरिमपच्छिमाणं पंचजामं, अवसेसाणं चाउज्जामं, संजमो पुरिमचरिमाणं दुविहो—इत्तिरियं च सामाइयं छेदोवट्ठावणियं च, मज्झिमगाणं सामाइयं आवकहियं, सत्तरसंगो य सव्वेसिं, अन्ने संजमो इति सव्वे तित्थगरा सामाइयसंजमे पव्वइता। को वा केच्चिरं कालं छउमत्थो ? केण वा को तवो अणुचिन्नो ? कस्स वा काए वेलाए णाणं उप्पन्नं? —

तेवीसाए तित्थगराणं सूरुग्गमणमुहुत्ते एगराइयाते पडिमाए णाणं उप्पन्नं, वीरस्स पाईणिगामिणीए जहा दसाए तहा, अन्ने भणंति—बावीसाए पुव्वण्हे मल्लिवीराणं अवरण्हे, कास केवतिओ सीससंगहो ?, भन्नइ—उसभस्स णं अरहओ कोसलियस्स उसभसेणपामोक्खाओ चउरासीतिं समणसाहस्सीओ उक्कोसिया समणसंपदा होत्था, बंभिसुंदरिपामोक्खाणं अज्जियाणं तिन्नि सयसाहस्सीओ उक्कोसिया अज्जियासंपदा होत्था, सेज्जंसपामोक्खाणं समणोवासगाणं तिन्नि सयसाहस्सीओ पंचासयसहस्सा उक्कोसिया समणोवासगसंपदा होत्था, सुभद्दापामोक्खाणं समणोवासियाणं पंच सयसाहस्सीओ चउप्पन्नं च सहस्सा उक्कोसिया समणोवासियासंपदा होत्था, चत्तारि सहस्सा सत्त सया पन्नासा चोद्दसपुव्वीणं अजिणाणं जिणसंकासाणं उक्कोसिया चोद्दसपुव्विसंपया होत्था, णव सहस्सा ओहिनाणीणं उक्कोसिया०, वीससहस्सा केवलणाणीणं उक्कोसिया०, वीससहस्सा छच्च सया वेउव्वियाणं उक्कोसिया०, बारस सहस्सा छच्च सया पन्नासा विपुलमतीणं अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु सन्नीणं पंचेंदियाणं पज्जत्तगाणं मणोगते भावे जाणमाणाणं पासमाणाणं उक्कोसिया विपुलमतिसंपया होत्था. बारस सहस्सा छच्च सया वादीणं पन्नासा उक्कोसिया०, बावीस ॥१५८॥
सहस्सा णव य सया अणुत्तरोववातियाणं गतिकल्लाणाणं जाव आगमेसिभद्दाणं उक्कोसिया०, उसभस्स णं वीसं समणसहस्सा सिद्धा,

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥१५९॥

जिनपरीवारः

चत्तालीसं अज्जियासहस्सा सिद्धा, सट्ठिं अंतेवासिसहस्सा सिद्धा. एवं जहा पढमाणुओगे जाव अरहतो णं अरिट्ठनेमिस्स वरदत्तपामोक्खाओ अट्ठारस समणसाहस्सीओ, जक्खिणिपामोक्खाओ चत्तालीसं अज्जासाहस्सीओ, णंदप्पामोक्खाणं समणोवासगाणं एगा सयसाहस्सी अउणत्तरिं च सहस्सा उक्कोसिया०, महासुव्वयपामोक्खाणं समणोवासियाणं तिन्नि सयसाहस्सीओ छत्तीसं च सहस्सा, चत्तारि सया चोद्दसपुव्वीणं, पन्नरस सता ओहीनाणीणं, पन्नरस सया केवलनाणीणं, पन्नरस सता वेउव्वियाण, दस सता विपुलमतीणं, अट्ठसया वादीणं, सोलस सया अणुत्तरोववादियाणं। पासस्स णं अरहतो पुरिसादाणीयस्स अज्जदिन्नपामोक्खाओ सोलस समणसाहस्सीओ, पुप्फचूलापामोक्खाओ अट्ठत्तीसं अज्जियासाहस्सीओ, सुणंदापामोक्खाणं समणोवासगाणं एगा सयसाहस्सी चउसट्ठिं च सहस्सा, णंदिणिपामोक्खाणं समणोवासियाणं तिन्नि सयसाहस्सीओ सत्तावीसं च सहस्सा उक्कोसिया०, अद्धुट्ठसया चोद्दसपुव्वीणं, चोद्दस सया ओहिन्नाणीणं, दस सया केवलनाणीणं, एक्कारस सया वेउव्वियाणं, अद्धट्ठमा सता विपुलमतीणं, छस्सया वादीणं.बारस सया अणुत्तरोववाइयाणं। समणस्स णं भगवतो महावीरस्स इंदभूतिपामोक्खाओ चोद्दससमणसाहस्सीओ, अज्जचंदणापामोक्खाओ छत्तीसं अज्जियासाहस्सीओ, संखसतगपामोक्खाणं समणोवासगाणं एगा सयसाहस्सी अउणट्ठिं च सहस्सा, सुलसारेवतिपामोक्खाणं समणोवासियाणं तिन्नि सयसाहस्सीओ अट्ठारस य सहस्सा, तिन्नि सया चोद्दसपुव्वीणं अजिणाणं जिणसंकासाणं सव्वक्खरसन्निवादीणं जिणोविव अवितहं वागरमाणाणं उक्कोसिया चोद्दसपुव्विसंपया होत्था, तेरस सया ओहिन्नाणीणं अतिसेसप्पत्ताणं उक्कोसिया०, सत्त सया केवलनाणीणं संभिन्नवरणाणदंसणधराणं उक्कोसिया०, सत्त सया वेउव्वीणं अदेवाणं देविड्डिपत्ताणं उक्कोसिया०, पंच सया विउलमतीणं अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु सन्नीणं पज्जत्तयाणं पंचिंदियाणं मणोगते भावे जाणंति ॥१५९॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

॥१६०॥

पासंति उक्कोसिया०, चत्तारि सया वादीणं सदेवमणुयासुराए परिसाए वादे अपराजिताणं उक्कोसिया०, अट्ठ सया अणुत्तरोववाइयाणं गतिकल्लाणाणं ठितीकल्लाणाणं आगमोसिभद्दाणं उक्कोसिया अणुत्तरोववातियाणं संपया होत्था ॥

तित्थं गणो० ॥ २ ॥ १६५ ॥ तित्थं चाउव्वण्णो संघो, गणा जस्स जत्तिया गणहरा य, धम्मोवातो पवयणं, परियाओ गिहत्थच्छउमत्थकेवलिपरियाओ जस्स जत्तिओ, अंतकिरिया केण कहिं काए वेलाए कस्स व केण तवोकम्मेणं अंतकडा केवति परिवाराए, एतं सव्वं गाहाहिं जहा पढमाणुयोगे तहेव इहंपि वण्णिज्जाति वित्थरतो। एत्थ पढमतित्थगरस्स निक्खमणं वण्णेयव्वं, तं गाहाहिं भणितं. तहवि विभासाइ इच्छावेति—

से य उसभे कोसलिए पढमराया पढमभिक्खायरे पढमजिणे पढमतित्थयरे, दक्खे दक्खपइन्ने पडिरूवे अल्लीणे भद्दए विणीते वीसं पुव्वसयसहस्साइं कुमारवासमज्झे वसति, तवट्ठिं पुव्वसयसहस्साइं रज्जवासमज्झे वसइ तं० वसमाणो लेहादीयाओ गणितप्पहाणाओ, सउणरुयपज्जवसाणाओ बावत्तरिं कलाओ तेवट्ठिं च महिलागुणे सिप्पसयं च कम्माणं तिन्निवि पयाहियट्ठाए उवदिसति, उवदिसित्ता पुत्तसयं रज्जसते अभिसिंचति, पुणरवि लोयंतिएहिं जीयकप्पितेहिं देवेहिं संबोहिते संवच्छरियं दाणं दाऊणं भरहं विणीताए, बाहुबलिं बहलीए, अन्ने य कच्छमहाकच्छादयो ठवेत्ता, अन्ने भणंति-एते साहस्सिपरिवारा अणुपव्वतिया तदा, सामी चउहिं सहस्सेहिं सद्धिं पव्वतितो, चेत्तबहुलट्ठमीए दिवसस्स पच्छिमे भाए सुदंसणाए सीयाए सदेवमणुयासुराए परिसाए समणुगम्ममाणमग्गे जाव विणीतं रायहाणिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छति, निग्गच्छित्ता जेणेव सिद्धत्थवणे उज्जाणे जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता असोगस्स हेट्ठा जाव सतमेव चउमुट्ठिओ, छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं आसाढाहिं णक्खत्तेहिं० उग्गाणं

॥१६०॥

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

॥१६१॥ भोगाणं राइन्नाणं खत्तियाणं चउहिं सहस्सेहिं सद्धिं एगं देवदूसमादाय जाव पव्वइते, उसभे णं अरहा कोसालिए संवच्छरं साहियं चीवरधारी होत्था, तेसिं पंचमुट्ठिओ लोओ सयमेव, भगवता पुण सक्कवयणेण कणगावदाते सरीरे जडाओ अंजणे रेहाओ इव रेहंतीओ उवलभातिऊणट्ठिताओ तेण चउमुट्ठिओ लोओ, सव्वतित्थगरावि य णं सामाइयं करेमाणा भणंति-करेमि सामाइयं,सव्वं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि जाव वोसिरामि, भदंतित्ति ण भणंति, जीतमिति । एवं भगवं सामाइयादि अभिग्गहं घेत्तुं वोसट्ठचत्तदेहो विहरति, वोसट्ठोत्ति निप्पडिक्कम्मसरीरतया, चत्तो उवसग्गादिसहिष्णुतया,तथा च अच्छिपि णो पमज्जिज्जा णोवि य कंडूइयए मुणी गातं। एवं जाव विहरति, ताव दुवे नमिविणमिणो कच्छमहाकच्छाणं पुत्ता उवट्ठिता, भगवं विन्नवेन्ति-भगवं ! अम्हं तुब्भेहि संविभागो ण केणवि वत्थुणा कतो, स पट्ठे बद्धकवया ओलग्गंति विन्नवेंति य, ताता ! तुब्भेहिं सव्वेसिं भोगा दिन्ना अम्हेऽवि देह, एवं तिसञ्झं ओलग्गंति, एवं कालो वच्चति, अन्नया धरणो णागकुमारिंदो भगवं वंदओ आगओ, इमेहि य विन्नवितं, सो ते तह जातमाणे भणति-भो सुणह भगवं चत्तसंगो गतरोसतोसो ससरीरेऽवि णिम्ममत्तो अकिंचणो परमजोगी णिरुद्धासवो कमलपलासणिरुवलेय-चित्ती, मा एयं जायह, अहं तु भगवतो भत्तीए मा तुब्भं सामिस्स सेवा अफला भवतुत्तिकाउं पढितसिद्धाइं गंधव्वपन्नगाणं अडयालीसं विज्जासहस्साइं देमि, ताण इमाओ चत्तारि महाविज्जाओ, तंजहा-गोरी गंधारी रोहिणी पन्नत्ती, तं गच्छह तुब्भे विज्जाहररिद्धीए सजणजणवयं उवलोभेऊण दाहिणिल्लाए य गगणवल्लभपामोक्खे रहणेउरचक्कवालया (पमुहे य) पन्नासं सट्ठिं च विज्जाहरणगरे णिवेसिऊणं विहरह, तेऽवि तं सव्वमाणत्तियं पडिच्छिऊणं वेयड्ढ उत्तरसेढीए विणमी सट्ठिं णगराणि गगणवल्ल-भप्पमुहाणि णिवेसेति, णमी दाहिणसेढीए रहनेउरचक्कवालादीणि पन्नासं णिवेसेति, जे य जतो जणवयातो णीता मणुया तेसिं ॥१६१॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

तन्नामा जणवदा वेयड्ढेवि विज्जाणं वसतिकाया जाता, तंजहा-गोरीणं गोरिगा, मणूणं मणुपुव्वगा, गंधारीणं विज्जाणं गंधारा, माणवीणं माणवा, केसिकाणं केसिकपुव्विका, भूमीतुंडगविज्जाहिवतयो भूमीतुंडका, मूलवीरियाणं मूलवीरिया, संतुकाणं संतुका, पट्टकीणं पट्टका, कालीणं कालिकेया, समकीणं समका, मातंगीणं मातंगा, पव्वतीणं पव्वतेया, वंसालयाणं वंसालया, पंसुमूलियाणं पंसुमूलिया, रुक्खमूलियाणं रुक्खमूलिया। एवं तेहिं विणमिणमीहि विभत्ता अट्ठट्ठ णिकाया, ततो देवा इव विज्जाबलेणं सयणपरियणसहिता मणुयदेवभोगे भुंजंति, पुरेसु य भगवं उसभसामी देवयसभासु थावितो विज्जाधिट्ठायी य देवता ता सके सके णिकाए दोहिवि जणेहिं पविभत्ताणि पुराणि सुताणं खत्तियाण य संबंधीणं च।

णमि विणमि० ॥ ३ ॥ ९८ ॥ भगवंपि पितामहो मंगलालयो निराहारो परमधितिसततसारो सयंभूसागरो इव थिमितो अणाइलो विहरति, चतुहिं सहस्सेहिं परिवुडो, जदि भिक्खस्स अतीति तो सामितो णे आगतोत्ति वत्थेहिं आसेहि य हत्थीहिं आभरणेहिं कन्नाहि य निमंतेन्ति।

णवि ताव जणो०॥३॥९७॥ जेण जणो भिक्खं ण जाणति दाउं तो जे ते चत्तारि सहस्सा ते भिक्खं अलभंता तेण माणेण घरंपि ण वच्चंति भरहस्स य भएणं, पच्छा वणमतिगता तावसा जाता, कंदमूलाणि खातिउमारद्धा, भगवं च वरिसं आणासितो जत्थ जत्थ समुदाणस्स अतीति तत्थ तत्थ एस परमसामी अम्हंति, ण जाणंति दायव्वं किंति,

भगवंऽपदीण० ॥३॥ ९९ ॥ गयपुरसेज्जंसो खोयरसदाण० ॥ ३ ॥ १०३ ॥ छउमत्थो य वरिसं बहलीअंडबइल्लेहिं विहरिऊणं गजपुरं गतो, तत्थ भरहस्स पुत्तो सेज्जंसो. अन्ने भणंति--बाहुबलिस्स सुतो सोमप्पभो सेयंसो य, ते य दोऽवि जणा

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक उपोद्घात निर्युक्तौ ॥१६३॥

श्रेयांसादि-स्वप्न वक्तव्यता

णगरसेट्ठी य सुमिणे पासंति तं रत्तिं; समागता य तिन्निवि सोमस्स समीवे कहेंति, सेयंसो-सुणह अज्ज मया जं सुमिणे दिट्ठं—मेरू किल चलितो इहागतो मिलायमाणप्पभो मया च अमयकलसेण अभिसित्तो साभावितो जातो पडिबुद्धो यऽम्हि, सोमो कहेति—सुणह सेयंस ! जं मया दिट्ठं—सूरो किर पतितरस्सी जाओ, तुमे य से उक्खित्ताओ रस्सीओ ततो य भासमुदतो जातो । सेट्ठी भणती-सुणह जं मया दिट्ठं-अज्ज किल कोयि पुरिसो महप्पमाणो महता रिवुबलेण सह जुज्झंतो दिट्ठो, तो सेज्जंस सामी य से सहायो जातो, ततो अणेण पराजितं परबलं, एयं दट्ठूण म्हि पडिबुद्धो । ततो तेसिं सुमिणाणं फलमविंदमाणा गहाणि गता, भगवंपि अणाइलो संवच्छरखमणंसि जाव अडमाणो सेयंसभवणमतिगतो, ततो से पासायतलगते आगच्छमाणं पितामहं पस्समाणो चिंतेइ-कत्थ मन्ने मया एरिसीव आकिती दिट्ठपुव्वात्ति? मग्गणं करेमाणस्स तदावरणखतोवसमेण जातिस्सरणं जातं, सो य पुव्वभवे सामिस्स सारही आसि, तत्थवि अणुपव्वइतो, तेण य सुतं-जहा भरहे एस पढमतित्थगरो भविस्सतित्ति, तं एस भगवंति, संभंतो उट्ठितो, एयस्स सव्वसंगविवज्जगस्स भत्तपाणं दायव्वंति, भवणंगणे य तस्स खोयरसकलसे पुरिसो पणीते, ततो परमहरिसित अधयसुमहग्घदूसरयणसुसंवुते सरससुरभिगोसीसचंदणाणुलित्तगत्तो सुतिमालावन्नगविलेवणआविद्धमणिसुवण्णे कप्पितहारद्ध-हारतिसरयपालंबपलंबमाणे कडिसुत्तयकतसोभे पिणद्धगेवेज्जअंगुलेज्जगललियंगयललियकताभरणे वरकडगतुडियथंभितभुजे अहिय-रूवसास्सिरिए कुंडलउज्जोतिताणणे मउडादित्तसिरजे हारोत्थयसुकतरइतवच्छे मुद्दियापिंगलंगुलीए पालंबपलंबमाणसुकतपडउत्तरिज्जे नाणामणिकणगरयणविमलमहरिहणिउणोयवितमिसिमिसंतविरइयसुसिलिट्ठआविद्धवीरवलए, किं बहुणा?, कप्परुक्खए चेव अलंकित-विभूसिते णरिंदे निवारितछत्तवरचामरे जयजयसद्दकतालोके अणेकगणणायगदंडणायगरातीसरतलवरमाडंबियकोडुंबियमंतिमहामंति- ॥१६३॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता...........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णिः-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक-चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥१६४॥

गणगदोवारियअमच्चचेडपीढमद्दगणिगमसेट्ठिसेणावतिसत्थवाहदूतसंधिपाल संपरिवुडे खिप्पामेव अब्भुट्ठेति अब्भुट्ठेत्ता पाउयाओ ओमुयति ओमुयेत्ता एगसाडितं उत्तरासंगं करेति, करेत्ता अंजालिमउलियहत्थे भगवंतं सत्तट्ठ पयाइं अणुगच्छति अणुगच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेति, करेत्ता वंदति नमंसति, नमंसित्ता ताहे सयं चेव खोयरसघडगं गहाय दव्वसुद्धेणं दायगसुद्धेण पडिगाहगसुद्धेणं तिविहेणं तिकरणसुद्धेणं दाणेणं पडिलाभेस्सामित्ति तुट्ठे भगवतो उवगते, भगवं कप्पेतित्ति?, सामिणा पाणी पसारिए सव्वो णिसट्ठो पाणीसु, अछिद्दपाणी भगवं,उवरिं सिहा,ण य छड्डिज्जइ,भगवतो एसा लद्धी,सो भगवता पारितो, एवं से पडिलाभेमाणेऽवि तुट्ठे पडिलाभितेऽवि तुट्ठे, तते णं तत्थ पंच दिव्वाणि पाउब्भूयाणि, तंजहा-वसुहारा वुट्ठा, दसद्धवन्ने कुसुमवासे णिवातिते, चेलुक्खेवे कते, पहताओ देवदुंदुभिओ, अंतरावियणं आगासे अहो दाणेरत्ति घुट्ठे, तं च देवपूजणादि सेज्जंसस्स सोऊण रिसयो रायाणो सोमप्पभादयो लोगा य परेण कोऊहल्लेण पुच्छंति सेज्जंसकुमारं-सुमुह! किमेतं?, ताहे सो ते पन्नवेति-एरिसा भिक्खा दिज्जतित्ति, एरिसा भिक्खा एरिसगाणं दिज्जति, एतेसिं दिन्ने सोग्गइं गम्मतित्ति, ते भणंति—कहं तुमे विन्नायं जहा भगवतो परमगुरुस्स भिक्खं दायव्वान्ति, कहेहि णे परमत्थं, ताहे सो तेसिं पकहितो, जहा—मम पितामहस्स दिक्खियस्स रूवदंसणे चिंता समुप्पन्ना-कत्थ मन्ने एरिसरूवं दिट्ठपुव्वंति? वियारेमाणस्स बहुभावितं जातीस्सरणं समुप्पन्नं, ततो मया णायं भगवतो भिक्खादाणं, ततो ते परमविम्हिता भणंति-साह केरिसोऽसि केसु भवेसु आसी?, ताहे सो तेसिं अप्पणो सामिस्स य अट्ठभवग्गहणाणि कहेति, जहा वसुदेवहिंडीए, ताणि पुण संखेवतो इमाणि, तंजहा—

सेयंसो भणति- इतो सत्तमे भवे मंदरगंधमायणणीलवंतमालवंतमज्झवत्तणीय सीतामहानतीमज्झविभिन्नाय उत्तरकुराय अहं

भगवत्-श्रेयांस भवाः

॥१६४॥

अत्र भगवंत ऋषभ एवं श्रेयांसस्य पूर्वभवानां संबंधानां वर्णनं क्रियते

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥१६९॥

भगवत्-श्रेयांस-भवाः

मिथुणइत्थिया भगवं तु पुण मम पितामहो मिथुणपुरिसो आसि, ततो वयं तंमि देवलोगभूते दसविहकप्पतरुप्पभवभोगे समुदिताइं कदाति उत्तरकुरुद्दहतीरदेसे असोगपादवच्छायाए वेरुलियमणिसिलातले णवणीतसरिसफासे सुनिसन्नाइं अच्छामो, देवो य तंमि दहरे मज्जिउं उप्पतितो गगणदेसं, ततो तेण नियगप्पभावेण दसदिसाओ पभासिताओ, ततो सो मिहुणपुरिसो तमुप्पिंजलकं पस्समाणो किंपि तेण चिंतेऊण मोहं उवगतो, कहमवि लद्धसन्नो भणति- हा सयंप्पभे! कत्थसि ?, देहि मे पडिवयणं-ति, तं च तस्स वयणं सोऊणं इत्थियावि कत्थ मन्ने मया सयंप्पभाभिहाणं अणुभूतपुव्वंति चिंतेमाणी य तहेव मोहमुवगता, पच्चा-गतसण्णा भणति-अज्जऽहं सयंप्पभा, जीसे भे गहितं णामंति, ततो सो पुरिसो परं तुट्ठिमुव्वहंतो भणति- अज्जे! कहेहि मे कहं तुमं सयंप्पभा ?, ततो सा भणति-कहेह भे जं मया सुयाणुभूतं, अत्थि ईसाणो नाम कप्पो, तस्स मज्झदेसाओ उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए सिरिप्पभं णाम विमाणं, तत्थ य ललितंगयो पभू, तस्स सयंपभा अग्गमहिसी, सा य बहुमया आसि, तस्स य देवस्स तीए सह चेव दिव्वविसयसुहसागररतस्स बहू कालो दिवसो इव गतो, कयाइं च चिंतारो अप्पतेओ मल्लदामो अहोदिट्ठी ज्झाय-माणो विन्नवितो मया सपरिसाए- देव! कीस विमणा दीसह ?, को भे माणसो संतावो ?, ततो भणति-मया पुव्वभवे थोवो कतो तवो, ततो मे तुब्भेहिं विप्पजुज्जिहामित्ति परो संतावो, ततो अम्हेहिं पुणरवि पुच्छिओ- कहेह तुब्भेहिं कहं तवो कतो ? किह वा इमो देवभवो लद्धोत्ति ?, ततो भणइ-जंबुद्दीवगअवरविदेहे गंधिलावतिविजए गंधमायणवक्खारगिरिवरासन्ना वेयड्डपव्व-ते गंधारा णाम जणवतो, तत्थ समिद्धजणसेवितं गंधसमिद्धं णगरं, राया राजीवविबुद्धणयणो जणवयहितो सतबलस्स रन्नो नत्तुतो अतिबलसुतो महाबलो नामं, सो अहं पितुपितामहपरंपरागयं रज्जसिरिमणुभवामि, मम य बालसहा खत्तियकुमारो सयंबुद्धो, ॥१६९॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥१६६॥

भगवत्-श्रेयांस-भवाः

जिणवयणभावितमयी संभिन्नसोतो पुण मे मंती बहूसु कज्जेसु पडिपुच्छणिज्जो, समतित्थिए काले बहुंमि कदायि गीयपडिरत्तो णच्चमाणिं णट्टियं पासामि, सयंबुद्धेण विन्नवियं-देव! गीयं विलवितं वियाणउ पुरिसस्स णट्टं विडंबणा आभरणाणि भारो कामो दुहावहो, परलोगहिते चित्तं निवेसियव्वं, अहितो विसयपडिबंधो असासते जीवितेत्ति, ततो मया रातिणा भणितो-कहं गीतं सवणामतं विलावो ? कहं वा णट्टं णयणऽब्भुदयं विडंबणा? कहं वा देहविभूसणाणि भूसणाणि भारं भाससि? लोगसारभूते य कामे रतिकरे दुक्खावहेत्ति ?, ततो असंभंतेण सयंबुद्धेण भणितं- सुणह सामी ! पसन्नचित्ता जहा गीतं विलावो, जहा- काइ इत्थिया पवसितपतिका पतिणो सुमरमाणी तस्स समागमकंखिता समतीय भत्तुणोऽतिगुणे विकप्पेमाणी य दोसु पच्चूसेसु दुहिता विलवति, भिच्चो वा पभुस्स पसायणनिमित्तं जाणि वयणाणि भासिति पणतो दासभावे अप्पाणं ठवेऊण सो विलावो, तहेव इत्थी पुरिसो वा अन्नोऽन्नसमागमाभिलासी कुवितपसायणणिमित्तं वा जाओ काई मणवाइयाओ किरियाओ पउंजंति, ततो कुसलजणचिंतिताओ विविहजोणिनिबद्धाओ गीतंति वुच्चति, तं पुण चिंतेह सामी ! किं विलावपक्खे वट्टतित्ति ?। इयाणिं णट्टं सुणह जह विलंबणा, इत्थी पुरिसो वा जो जक्खाइट्ठो परवत्तव्वो मज्जापीतो वा जातो कायविक्खेवाईओ किरियातो दंसेति, जाणि वा वयणाणि भासति सा विलंबणा, जति एवं०, जोऽवि इत्थी पुरिसो वा पभुणो परितोसणिमित्ताणितोयितो धणवइणो वा विउसजणणिबद्धविहिमणुसरंतो जे पाणिपादसिरणयणाधरादी संचालेति सा विडंबणा। परमत्थओ आहरणाणिवि भारोत्ति गहेयव्वाणि, जो सामिणो णियोगेण मउडादीणि आभरणाणि पलगिताणि वहेज्ज सो अवस्सं पीलिज्जति भारेण, जो पुण परविम्हयनिमित्तं ताणि चेव जोग्गेसु सरीरत्थाणेसु संनिवेसिताणि वहति सो रागेण ण गणेति भारं, अत्थि पुण सो, जोऽवि परितोसनिमित्तं ॥१६६॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥१६७॥

भगवद्-श्रेयांस-भवाः

रंगगतो नेवत्थितो सुमहंतंपि भरं वहेज्ज, ण मे परिस्समोत्ति भावेमाणो कज्जगरुयभारं ण मण्णिज्ज वा भारं तस्सवि भारो। परमत्थतो कामा दुविहा- सद्दा रूवा य, तत्थ सद्दमुच्छितो मिगो सद्दं सुहंति मन्नमाणो मूढताए अपरिगणितविणिवातो वहबंध-मरणाणि य पावति, तहेव इत्थी पुरिसो वा सोइंदियवसगतो सद्दाणुवाती सद्दे साहारणे ममत्तबुद्धी तस्स हेतुसारक्खणपरो परोप्परस्स कलुसहिययो पदुस्सति, ततो रागदोसपहपडितो रयमादियति, तंनिमित्तं च संसारे दुक्खभायणं भवति। तहा रूवे रत्तो रूवे मुच्छितो साहारणे विसए ममत्तबुद्धी रूवरक्खणपरो परस्स पहसति संकिलट्ठचित्तो य पावं कम्मं समज्जिणाति, तप्पभवं च संसरमाणो दुक्खभायणं भवति, एवं भोगेसुवि गंधरसेसु फासेसु य मज्जमाणो परंपि य पहसंतो मूढताए कम्ममादीयति, ततो जातिजरामरणबहुलं संसारं परीति, तेण दुक्खावहा कामभोगा परिचिंतितव्वा सेयत्थिणा, एवं भणंतो सयंबुद्धो मया भणितो-मम हिते वट्टमाणस्स अहितोऽसि दुट्ठु य मतिं वहासि जो मं संसइयपदपरलोयसुहेण विलोभंतो संपतसुहं निंदंतो दुहे पाडेतुमिच्छसि, ततो संभिन्नसोएण भणितो-सामी! सयंबुद्धो जंबुक इव मच्छकंखी मंसपेसिं विहाय जहा निरासो जातो तहा दिट्ठसुहं संदिद्धसुहासया परिच्चयंतो सोतिहिति, सयंबुद्धेण भणितो-तुमं जं तुच्छयसुहमोहितो भणसि को तं सचेयणो पमाणं करेज्ज?, जो कुसलजणसंसितं रयणं मुहागयं कायमणीए रत्तो णेच्छति तं केरिसं मन्नसि?, तं संभिन्नसोय! अणिच्चतादि जाणिऊण सरीरविभवादीणं वीरा भोगे पजहिय तवंसि संजमे य णेव्वाणसुरसुहसंपादए जतंति। संभिन्नसोतो भणति-सयंबुद्ध! सक्का मरणं होहिइत्ति सुसाणे थाइउं?, जहा टिट्टिभी गगणपडणसंकिता धरेउकामा उद्धप्पाया सुयति तहा तुमं मरणं किर होहिइत्ति अतिपयत्तकारी संपदसुहपरिच्चायमकालियं पसंससि, पत्ते य मरणसमये परलोगहितमायरिस्सामो, सयंबुद्धेण भणियं-मुद्ध! ण जुज्झे संपलग्गे कुंजरतुरगदमणं कज्जसाहणकं, ण वा णगरे

॥१६७॥

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता..........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

श्री आवश्यक-चूर्णी उपोद्घात निर्युक्तौ ॥१६८॥

भगवत्-श्रेयांस भवाः

उवरद्धे जवसभत्तिंधणोपादाणं, ण य गेहे पलित्ते कूवक्खणणं कज्जकरं, जति पुण दमणभरणखणणाणि पुव्वकयाणि भवंति तदा परबलमहणाचिरसहणजलणनिव्वावणाणि सुहेण भवंति, तहेव जो अणागयमेव परलोगहिते ण उज्जमति सो उक्कमंतेसु पाणेसु छिज्जमाणेसु ममत्तत्थाणेसु विसंवदितदेहबंधो परमदुक्खाभिभूतो किह परलोगहितमणुट्ठेहिति ?, एत्थ सुणाहि वियक्खणकहितं उवदेसं-कोति किर हत्थी जरापरिणतो गिम्हकाले कंचि गिरिणदिं समुत्तरंतो विसमे तीरे पडितो, सो सरीरगरुयत्ताए दुब्बलत्तणेण य असत्तो उट्ठेउं तत्थेव कालगतो, वगासियालेहिं अपाणदेसे परिक्खइतो, तेण मग्गेण वायसा अतिगता, मंससुयगं च उवजीवंता ठिता, उण्हेण य डज्झमाणकलेवरो सो पएसो संकुचितो, वायसा तुट्ठा, अहो निराबाहं जातं वसियव्वं, पाउसकाले य गिरिनइपूरवेगेण य विच्छुब्भमाणं महानतिसोते पडितं तं, पत्तं समुद्दं, मच्छमयरेहिं य छिन्नं, ततो ते जलपूरितकलेवरा तेऽवि वायसा णिग्गया, तीरं अपस्समाणा तत्थेव निधणमुवगता, जदि पुण अणागतमेव णिग्गता होंता तो दीहकालं सच्छंदपयारं विविहाणि मंसोदगाणि आहारेंता, एयस्स दिट्ठंतस्स उवसंथारो-जहा वायसा तहा संसारिणो जीवा, जहा हत्थिकलेवरपवेसो तहा मणुस्सबोंदीलाभो, जहा गयब्भंतरं मंसोदकं तहा विसयसंपत्ती, जहा मग्गसन्निरोहो तहा तब्भवपडिबंधो, जहा उदगसोयविच्छोभो तहा मरणकालो, जहा विवसणिग्गमो तहा परभवसंकमो, एवं जाण संभिन्नसोय ! जो तुच्छपणस्सरे थोवकालिए कामभोगे परिचइत्ता तवसंजमुज्जोयं काहिति सो सुगतिगतो ण सोयिहिति, जो पुण विसएसु गिद्धो मरणसमयमुदिक्खाति सो सरीरभेदे अगहितवाहेयो चिरं दुही होहिति, मा जंबुक इव तुच्छपकप्पणामेत्तसुहपडिबद्धो विउलदीहकालियं सुहमवमन्नसु, संभिन्नसोओ भणति- कहंति?, सयंबुद्धेण भणितो- सुणाहि, कोति किर वणयरो वणे संचरमाणो वयत्थं हत्थिं पस्समाणो विसमे पदेसे ठिओ एककंडसुप्पहारपाडितं गजं ॥१६८॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥१६९॥

जाणिऊण धणुं सजीवमवकिरिय परसुं गहाय दंतमोत्तिहेतुं गयं संलियमाणो हत्थीपडणपेल्लितेण महाकाएण सप्पेण खतितो तत्थेव पडितो, जंबुकेण परिभमंतेण दिट्ठो हत्थी, समणुस्से भीरुत्तणेण य अवसरितो, मंसलोलुयताए पुणो पुणो अल्लियति निज्झायति य, निस्संकितो तुट्ठो अवलोकेति चिंतेति य-हत्थी मे जावज्जीवियं भत्तं, मणुस्सो सप्पो य कंचि कालं पहोहिति जीवाबंधे य तके ताव खायामित्ति तूरंतो मंदबुद्धी, धणुकोडी पच्छिन्नपडिबंधा य, तालुदेसे भिन्नो मओ, जदि पुण अप्पसारं तुच्छंति हत्थीमणुस्सोरगकलेवरेसु सज्जंतो तो ताणि अन्नाणि य चिरं खायंतो, एवं जाण जो माणुसयसोक्खपडिबद्धो परलोगसाहणकज्जनिरवेक्खो सो जंबुको इव विणास्सिहिति, जंपि य जंपह संदिद्धं परलोगं तप्पभवं च सोक्खं, तं अत्थि, सामि ! तुब्भे कुमारकाले सह मया णंदणतोवणं देवुज्जाणमुवगता, तत्थ देवा ओवतिता, अम्हे ते दट्ठूण अवसरिता, देवो य दिव्वाय गतीय खणेण पत्तो अम्ह समीवं, भणिता यऽणेण अम्हे सोमरूविणा- अहं सयबलो महबल ! तव पितामहो, रज्जसिरिमवउज्झिऊण चिन्नव्वओ लंतए कप्पे अहिवती जातो, तं तुब्भेऽवि मा पमादी होह, जिणवयणे भावेह अप्पाणं, ततो सुगतिं गमिहिहत्ति, एवं वोत्तूण गतो देवो, जति सामि ! तं सुमरह ततो अत्थि परलोगोत्ति सद्दहह, मया भणितो- सयंबुद्ध ! सुमरामि पितामहदरिसणंति, लद्धावकासो भणति-सुणह पुव्ववत्तं-तुब्भं पुव्वको कुरुयंदो नाम राया आसि, तस्स देवी कुरुमती, हरियंदो कुमारो, सो य राया णत्थियवादी, इंदियसमागममेत्तं, पुरिसस्स परिकप्पणा मज्जंगसमवादे मदसंभव इव, ण एत्तो वतिरित्तो, ण परभवसंकमसीलो अत्थि, ण सुकयदुक्कयफलं देवणेरइएसुं कोति अणुभवातित्ति ववसितो बहूणं सत्ताणं वहाय समुट्ठितो खुर इव एगंतधारो निस्सीलो णिव्वतो, ततो तस्स एतकम्मस्स बहू कालो अतीतो, मरणकाले य अस्सातवेयणीयबहुलताए णरगपडिरूवकपोग्गलपरिणामो संवुत्तो, गीतं सुतिमधुरं

श्रीऋषभचरित्रं भगवत्-श्रेयांसभवाः

॥१६९॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक-चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥१७०॥

श्रीऋषभ-चरितं भगवत्-श्रेयांस भवाः

अक्कोसंति मन्नति, मणोहराणि रूवाणि विकताणि पस्सति, खीरं खंडसक्करोवणीतं पूतियंति मन्नति, चंदणाणुलेवणं मुम्मुरं वेदेति, हंसतूलमउइं सेज्जं कंटकिसाहासंचयं पडिसंचेतेति, तस्स य तहाविहं विवरीतभावं जाणिऊण कुरुमती देवी सह हरियंदेण पच्छन्नं पडियरति, सो य कुरुचंदो राया एवं परमदुक्खितो कालगतो, तस्स य नीहरणं काऊण हरियंदो सजणवयं गंधसमिद्धं णातेण पालेति, तो य से तहाभूतं पितुणो मरणमणुचितयंतस्स एवं मती समुप्पन्ना-अत्थि सुकयदुक्कताण फलंति, ततो यऽणेण एगो खत्तियकुमारो बालवयंसो संदिट्ठो- भद्दमुह ! तुमं पंडियजणोवदिट्ठं धम्मसुइं मे कहयसु, एसा ते सेवत्ति, ततो सो तेण णियोगेण जं जं धम्मसंसितं वयणं सुणइ तं तं राइणो निवेदेति, सोऽवि सद्दहंतो सीलताए तहेव पडिवज्जति, कयाइं च णगरा णाइदूरे तहारूवस्स साधुणो केवलणाणुप्पत्तीमहिमं काउं देवा उवागता, तं च उवलभिऊण सुबुद्धिणा खत्तियकुमारेण रन्नो निवेदितं हरियंदस्स, सोऽवि देवागमणविम्हितो जतिणतुरगारूढो गतो साधुसमीवं, वंदिऊण विणएण णिसन्नो सुणति केवलिविणिग्गयं वयणामयं संसारकहं मोक्खकहं सो, सोऊण अत्थि परभवजम्मोत्ति नीसंकितं जातं, ततो पुच्छति कुरुचंदो राया- मम पिता भगवं ! कं गइं गतोत्ति ?, ततो से भगवता कहितं विवरीतविसयोपलंभणं सत्तमपुढविनेरइयत्तं च, हरियंद ! तव पिता अणिवारितपावासवो बहूणं सत्ताणं पीलाकरो पावकम्मगरुयताए णरगं गओ, तत्थ परमदुव्विसहं निरुवमं निप्पडिकारं निरंतरं सुणमाणस्सवि सचेयणस्स भयजणणं दुक्खमणुभवति, तं च तहाविहं केवलिणा कथितं पितुणो कम्मविवागं सोऊण संसारमरणभीरू हरियंदो राया वंदिऊण परमरिसिं सणगरमतिगतो, पुत्तस्स रायसिरिं समप्पेऊण सुबुद्धिं संदिसति-तुमं मम सुयस्स उवदेसं करेज्जासित्ति, तेण विन्नवितो-सामि ! जदि अहं केवलिणो वयणं सोऊण सह तुब्भेहिं ण करेमि तवं तो मे ण सुतं, जो पुण उवदेसो दायव्वोत्ति संदिसह तं मम

॥१७०॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता..........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णिः-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥१७१॥

श्रीऋषभ-चरितं भगवत्-श्रेयांस-भवाः

पुत्तो सामिणो काहितित्ति, राया पुत्तं संदिसति- तुमे सुबुद्धिसुतसंदेसो कायव्वो धम्माहिगारेत्ति, तुरितं निग्गतो सीहो इव पलित्तगिरिकंदराओ, पव्वइतो केवलिसमीवे सह सुबुद्धिणा, परमसंवेगो सज्झायपसत्थचिंतणपरो परिक्खवितकिलेसजालो समुप्पण्णणाणातिसतो परिणिव्वुतोत्ति । सुणिमो तस्स य हरियंदस्स रायरिसिणो वंसे संखातीतेसु णरवतीसु धम्मपरायणेसु समतीतेसु तुब्भे संपयं सामिणो, अहं पुण सुबुद्धिवंसे, तं एस अम्ह नियोगो बहुपुरिसपरंपरागओ धम्मदेसणाहिगारे, जं पुणेत्थ मया अकंडे विण्णवितो तं कारणं सुणह-अज्ज णंदणवणं अहं गतो आसि, तत्थ य मया दिट्ठा दुवे चारणसमणा--आदिच्चजसो अमियतेयो य, ते मया वंदिऊण पुच्छिया- भगवं ! महाबलस्स रन्नो केवतियं आउं धरतित्ति ?, तेहिं णिदिट्ठं-मासो सेसो, ततो संभंतोमि आगतो, एस परमत्थो, जं जाणह सेयंति तं कीरतु अकालहीणं, ताणि य उवदेसवयणाणि सयंबुद्धकहियाणि सोऊण अहं धम्माहिमुहो आउपरिक्खयसुतीतो आमकमल्लियभायणमिव सलिलपूरिज्जमाणमवस्सं ण हिताय भीतो सहसा उट्ठितो कयंजली सयंबुद्धं सरणमुवगतो, वयंस ! किमिदाणिं माससेसजीवितो करिस्सं परलोगहितंति ?, तेण चऽम्हि समासासितो-सामि ! दिवसोऽवि बहुओ परिचत्तसव्वसावज्जजोगस्स, किमंग पुणो मासो ?, ततो तस्स वयणेण पुत्तसंकामियपयापालणवावारो ठितो म्हि सिद्धायतणे, कयभत्तपरिच्चातो संथारकसमणो सयंबुद्धोवदिट्ठजिणमहिमासंपायणसुमणसो अणिच्चयं संसारं दुगुंछं पातोवगमणकहं च वेरग्गजणणिं सुणमाणो कालगतो इहागतो । एवं थोवो मे तवो चिन्नोत्ति । एवं च अज्जललितंगएण देवेण कहितं मम सपरिवाराए, ईसाणदेवरायसमीवातो य दढधम्मो नाम देवो आगतो भणति-ललियंगय ! देवराया णंदीसरदीवं जिणमहिमं काउं च अतिन्तित्तिगच्छामि अहं, विदितं ते होउत्ति सो गतो, तओ अहं अज्जदेवसाहिता इंदाणत्तीय अवस्सगमणं होहिति ॥१७१॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥१७२॥

श्रीऋषभ-चरितं भगवत्-श्रेयांस-भवाः

इयाणिं चेव वच्चामित्ति गतोमि णंदिस्सरं दीवं खणेण, महिमा कया जिणाययणेसु, तिरियलोगे य तित्थयरवंदणं कुणमाणो सासयचेतियपूयं च, चुतो ललियंगतो , परमसोगग्गिडज्झमाणाहियया चिंतासो० गता सपरिवारा सिरिप्पभं विमाणं, परिमुच्चमाणसोभं च ममं दट्ठूण आगतो सयंबुद्धो भणति-सयंपभे! जिणमहिमं कुणसु चयनकाले,ततो ते बोहिलाभो भविस्सतित्ति, तस्स वयणं परिग्गहेऊण णंदीसरदीवे तिरियलोगे कयपूया य अहमवि चुता समाणी जम्बुद्दीवकाविदेहे पुक्खलावतिविजये पोंडरिगिणीय णगरीय वइरसेणस्स चक्कवट्टिस्स गुणवतीय देवीय दुहिता सिरिमती णाम जाया, साहं पितुभवणपतुमसररायहंसी धातीजणपरिग्गहिता जमगपव्वयसंसिता इव लता सुहेण वड्ढिया, गहिता य कलाओ अभिरमिताओ, कयाइं च पदोसे सव्वतोभद्दकपासादमभिरूढा पस्सामि णगरबाहिं- देवसंपातं, ततो चिंतापराय मे सुमरिया देवजाती, सुमरिऊण य दुक्खेणाहता मुच्छिता,परियारियाहिं जलकणकासित्ता,ततो य पच्चागता चिंतमि-कत्थ मन्ने पिओ मे ललितंगतो देवोत्ति?,तेण य मे विणा किं जणेण आभट्ठेणंति मूगत्तणं पगता, भणति परियणो-जंभकेहिं से वाया अक्खिता, कतो य तिगिच्छिएहिं पयत्तो बलिहोममंतरक्खाविहाणेहिं, अहंपि मूललक्खं ण मुयामि,लिहिऊण य आणात्तिं देमि परियारिकाणं,पमदवणगं तं च,मम अम्मधाती पंडितिया णाम विरहे भणति-धाती मम हिययगतं अत्थं पसाहेहित्ति, कहेमि से सब्भूयं, ततो मया भणिता-अम्मो ! अत्थि कारणं जेणहं मूकत्तं करेमित्ति,ततो सा तुट्ठा भणति-पुत्ते ! साहसु मे कारणं, सोऊण जह भणसि तह चेट्ठिस्सं, ततो मया भणिता, सुणाहि-अत्थि धातकीखंडे दीवे पुव्वविदेहे मंगलालए मंगलावतिविजए णंदिग्गामो णाम संनिवेसो, तत्थ अहं इतो तइयभवे दरिद्दकुले सुलक्खणसुमंगलवनिकाऊतातीणं छण्हं भातिणीणं पच्छतो जाता, ण कतं च मे णामं अम्मापिऊहिं, निन्नामियत्तितत्ति, सकम्मपडिबद्धा य तेसिं अव-

॥१७२॥

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥१७४॥

श्रीऋषभ-चरितं भगवत्-श्रेयांस-भवाः

विवसा अणुभवमाणा बहुकालं गमेति, तिरियावि सपक्खपरपक्खजणिताणि सीउण्हखुहप्पिवासादियाणि य जाणि अणुभवंति बहुणावि कालेणं ण सक्का वन्नेउं, तव पुण साहारणसुहदुखं, पुव्वसुकयसमज्जियं अन्नेसिं रिद्धिं पस्समाणा दुहितमप्पाणं तक्केसि, जे तुमातो हीणा बंधणाकारेसु किलिस्संति, आहारंपि तुच्छकमाणिहं भुंजमाणा जीवितं पालेंति, तेऽवी ताव पस्ससुत्ति, मया पणताए जह भणह तहात्ति पडिस्सुतं, तत्थ य धम्मं सोऊण केऽवि पव्वइया केऽवि गिहवासजोग्गाणि सीलव्वयाइं पडिवन्ना, मया विन्नविता-जस्स नियमस्स पालणे सत्ता मि तं मे उवदिसहउत्ति, तओ मे तेहिं पंच अणुव्वयाइं उवदिट्ठाणि, वंदिऊण परितुट्ठा जणेण सह णंदिग्गाममागता, पालेमी वताणि संतुट्ठा, कुडुंबसंविभागेण परिणताय संतीये चउत्थच्छट्ठट्ठमेहिं खमामि, एवं काले गते कम्मिवि कयभत्तपरिच्चाया रातो देवं पस्सामि परमदंसणीयं. सो भणति—निन्नामिके! पस्स मं, चिंतेहि य होमि एयस्स भारियात्ति. ततो मे देवी भविस्ससि, मया य सह दिव्वे भोए भुंजिहिसित्ति वोत्तूण अदंसणं गतो, अहमवि परितोसविसप्पितहिदया देवदंसणेण लभेज्ज देवत्तंति चिंतेऊण समाहीय कालगता ईसाणे कप्पे सिरिप्पभे विमाणे ललितंगयस्स देवस्स अग्गमहिसी सयंप्पभा नाम जाता, ओहिणाणोवयोगविन्नातदेवभवकारणा य सह ललियंगएण जुगंधरे गुरुवो वंदितुमवतिन्ना, तं समयं च तहेव अंबरतिलके मणोरमे उज्जाणे समोसरितो सगणो, ततोऽहं परितोसविसप्पितमुही तिगुणपयाहिणपुव्वं णमिऊण णिवेतियणामा णट्टोपहारेण महेऊण गता सविमाणं, दिव्वे कामभोगे देवसाहिता णिरुस्सुगा बहुं कालं अणुभवामि, देवो य सो आउपरिक्खएण अम्मो ! चुतो, ण याणं कत्थ गओत्ति?, अहमवि य तस्स विओगदुक्खिता चुता समाणी इह आयाता, देवुज्जोयदंसणसमुप्पन्नजातिस्सरणा य तं देवं मणसा परिवहंती मूयत्तणं करेमि, किं मे तेण विणा संलावेणं कतेणंति ?, एस ॥१७४॥

प्रत सूत्रांक [-] दीप अनुक्रम [-]	

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता..........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णिः-1

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥१७३॥

साणं जीवामि, ऊसवे य कदाति अड्डकडिंभाणि णाणाविहभक्खहत्थकयाणि सगेहेहिंतो निग्गयाणि, ताणि य दट्ठूण मया माया जाइता- अम्मो ! देहि मे मोदकं अन्नं वा भक्खं जाव डिंभेहि समं रमामित्ति, तीय रुट्ठाय हता णिच्छूढा य गेहातो, कतो ते इहं भक्खं ?, वच्चसु अंबरतिलकपव्वयं, फलाणि खादिसु मरसु वत्ति, तो रोवंती निग्गया निसरणं विमग्गमाणी, दिट्ठो व मया जणो अंबरतिलकप- व्वयाभिमुहो पत्थितो, गता मि तेण सहिता, दिट्ठो मया पुहवितिलको विविहफलनमिरपादवसंकुलो कुलगरभूतो सकुणमिगाणं सिहरकरेंहिं गगणतलमिव मिणितुं समुज्जतो अंबरतिलको गिरिवरो, तत्थ य गेण्हति जणो फलाणि, मयावि य रुक्खपडितानि सादूणि फलाणि भक्खिताणि, रमणिज्जताए य गिरिवरस्स संचरमाणी सह जणेण सुणामि सद्दं सुतिमनोहरं, तं च अनुसरंती गता मि तं पदेसं सह जणेण, दिट्ठा य मया जुगंधरा णाम आयरिया विविहनियमधरा चोद्दसपुव्वी चउन्नाणी, तत्थ य समा- गता देवा मणुया य, तेसिं जीवाणं बंधमोक्खविहाणं कहयंता संसए विसोहेंता, ततो अहं तेण जणेण सह पणिवतिऊण णिसन्ना एगदेसे, सुणामि तेसिं वयणं परममधुरं, कहंतरे य मया पुच्छिता भगवं!, अत्थि मन्ने ममातो कोति दुक्खितो जीवो जीवलोगेत्ति?, ततो ते भणंति—निन्नामिए! तुहं सद्दा सुभासुभा सुतिपहमागच्छंति रूवाणिवि सुंदरमंगुलाणि पाससि गंधे सुभासुभे अग्घायसि रसेवि मणुन्नामणुन्ने आसादिसी फासेवि इट्ठाणिट्ठे पडिसंवेदेसि, अत्थि य ते पडिक्कारो सीउण्हतण्हाछुहाणं निद्दं सुहागतं सेवासि निवायपच्छन्नसरणा, सायावि ते अत्थि, तमासि जोतिपकासेण कज्जं कुणसि, जे य दासभतगा परवत्तव्वा नाणाविहेसु देहपीलाक- रेसु निउत्ता किलिस्संति, निच्चमसुभा सद्दरूवरसगंधफासा णिप्पाडिकाराणि य परमदारुणाणि सीउण्हाणि छुहापिवा- साओ य, ण य खणंपि निद्दासुहं दुक्खसयपीलियाणं, निच्चंधकारेसु णरकेसु चिट्ठमाणा णिरयपालकालमाणकरणसयाणि

श्रीऋषभ- चरितं भगवत्- श्रेयांस- भवाः ॥१७३॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥१७५॥

श्रीऋषभ-चरितं भगवत्-श्रेयांस-भवाः

परमत्थो, तं च सोऊण अम्मधाती ममं भणति-पुत्ते सुट्ठु ते कहितं, एतं पुण पुव्वभवचरितं पडिलेहिज्जतु, ततो णं अहं हिंडावेहामित्ति, सो य ललियंगतो जति माणुसत्ते आयातो होहिति तो सचरितं दट्ठूण जाइं सुमरिहिति, तेण य सह णिव्वुया विसयसुहमणुभविहिसित्ति, ततो तीय अणुमते सज्जितो पडो विविहवन्नाहिं वट्टिकाहिं दोहिवि जणीहिं, तत्थ य पढमं नंदिग्गामो लिहितो, अंबरतिलगपव्वयसंसितकुसुमितासोगतलसन्निसन्ना गुरवो य, देवमिथुणं च वंदणागतं, ईसाणो कप्पो सिरिप्पभं विमाणं सदेवमिथुणं, महाबलो राया सयंबुद्धसंभिन्नसोयसहितो, निन्नामिका य तवसोसितसरीरा, ललियंगतो सयंपभा य सणामाणि, ततो णिप्फन्नलक्खे धाती पट्टकं गहेऊण धातइसंडं दीवं वच्चामित्ति उप्पतिता जावइकेसपासकुवलयपलाससामं णभतलं, खणेण य णिवत्ता, पुच्छिता मया-अम्मो ! कीस लहुं नियत्तासित्ति !, सा भणति-पुत्ते !, सुणसु कारणं--इह अम्हं सामिणो तव पितुणो वरसवड्ढमाणणिमित्तं विजयवासिणो रायाणो बहुका समागता, तं जति इहेव होहिति ते हिदयसम्मीणो दइतो ततो कतमेव कज्जंति चिंतेऊण णियत्ता मि, जति ण होहिवि इहं तो परिमग्गणे करिस्सं जत्तंति, सुट्ठुत्तिय मया भणिता, अवरज्जुगे गता पट्टगं गहाय पच्चावरण्हे आगता पसन्नमुही भणति-पुत्ते ! णिव्वुता होहि, दिट्ठो ते मया ललियंगतो, मया पुच्छिया-अम्म! साहसु कहंति ?, सा भणति-पुत्ते ! मया रायमग्गे पसारितो पट्टको, तं च पस्समाणा आलक्खकुसला आगमपमाणं करेंता पसंसंति, जे अकुसला ते वन्नरूवादीणि पसंसंति । दुमरिसणरायसुतो य दुद्दंतो कुमारो सपरिवारो सो मुहुत्तमेत्तं पस्सिऊण मुच्छितो पडितो, खणेण आसत्थो पुच्छितो मणुस्सेहिं- सामि ! कथं मुच्छिता ?, सो भणति-चरित्तं णियकं पट्टगलिखितं दट्ठूण मे सुमरिता जाती, अहं ललियंगओ देवो आसि, सयंपभा मे देवित्ति, मया य पुच्छितो-पुत्त ! साहसु को एस संनिवेसो ?, भणति-पुंडरि- ॥१७५॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक-चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥१७६॥

श्रीऋषभ-चरितं भगवत्-श्रेयांस भवाः

गिणी णगरित्ति, पव्वतं मेरुं साहइ, अणगारो कोऽवि एस वीसरियं ता मे णामं, कप्पं सोहम्मं कहेति, राया मंतिसहितो कोऽवि एसोत्ति, काऽवि एसा तवस्सिणी ण याणं से णामंति, ततो उच्चावच्चेत्ति जाणिऊण मया भणितो-पुत्त! संवतति सव्वं ते जम्मंतरे, वीसरितं तेण किं ?, सच्चं तुमं स ललितंगओ, सा पुण ते सयंपभा णंदिग्गामे पंगुलिया कम्मदोसेण जाता, आगमे सुकुसलाए तं वऽणाए चरितं लिहितं तव मग्गणहेउं, मम य धायइसंडं गयाय दिन्नो पट्टको, मया य अणुकंपाय तीसे तव परिमग्गणं कयं, एहि पुत्त जा ते णेमि धायइसंडंति, अवहसितो मित्तेहिं-गम्मतु पोसिज्जतु पंगुलिन्ति, ततो अवकंतो, मुहुत्तमेत्ते य आगतो लोहग्गलओ धणो णाम कुमारो, सो वच्चंतो लंघणाचरणेसु असमाणोत्ति वइरजंघो भण्णते, सो उवगतो पट्टगं दट्ठूण ममं भणति-केणेतं विलिहितं चित्तंति, ? मया भणितो-किं निमित्तं पुच्छसि ?, सो भणति-मम एयं चरितं, अहं ललितंगओ णाम आसि, सयपभा मे देवी, असंसयं तीय लिहितं, तीय वा उवदेसवसेणंति तक्केमि, ततो मया पुच्छितो-जदि ते चरितं साहसु को एस संनिवेसोत्ति ?, णंदिग्गामो, एस पव्वतो अंबरतिलओ जुगंधरा आयरिया, एसा खमणकिलिन्ना णिण्णामिया, महब्बलो राया सयंबुद्धसंभिन्नसोएहिं सह लिहितो, एस ईसाणो कप्पो, सिरिप्पभं विमाणं, एवं सव्वं सपच्चयं कहितं तेण, ततो मया तुट्ठाए भणितो-जा एसा सिरिमती कुमारी पितुच्छाए ते दुहिता सा सयंप्पभा जाव रन्नो निवेदेमि ताव ते लब्भतित्ति, सुमणसो गतो, ततो मि कयकज्जा आगता, पुरतो रन्नो निवेदेमि, ततो पियसमागमो भविस्सतित्ति एवं वोत्तूण गता।

ततो अहं सद्दाविता रन्ना, देविसमीवे य पकहितो, सुणह- जो वसुमतीय ललियंगतो देवो आसि, जह णं अहं जाणं ण तहा सिरिमती, अवरविदेहे सलिलावतिविजए वीतिसोगा य णगरी, जियसत्तु नाम राया, तस्स मणोहरी केकयी य दुवे देवीओ, तासिं ॥१७६॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥१७७॥

श्रीऋषभ-चरितं भगवत्-श्रेयांस-भवाः

अयलो विभीसणो य पुत्ता, उवरे पितुंमि विजयद्धं भुंजंति बलदेववासुदेवा, मणोहरी य बलदेवमाया, कंमिवि काले गते पुत्तं आपुच्छति-अयल ! अणुभूता मे भत्तुणो सिरी पुत्तसिरी य, पव्वयामि परलोगहियं करिस्सं, विसज्जेहि मंति, सो णेहेण ण विसज्जेति, निब्बंधे कए भणति-अम्मो ! जति णिच्छओ तं कतो तो मं देवलोगयाओ वसणे पडिबोहेज्जासित्ति, तीय पडिवन्नं, पव्वतिता य, परमद्धितिबलेण एक्कारसंगवी वासकोडीतवमणुचरिऊण अपडिवतितवेरग्गा समाहीय कालगता लंतए कप्पे इंदो आयातो, तं ताव जाणह ममं, बलकेसवा य बहुं कालं समुदिता भोगे भुंजंति, कताइं च णिग्गया आणुयत्तं आसेहिं वातजोगेण अवहिता अडविं पवेसिता, गोरहसंचरेण य ण विन्नातो मग्गो जणेण, दूरं गंतूण आसा विवन्ना, विभीसणो य कालगतो, अयलो णेहेण ण याणति, मुच्छितोत्ति, णेणं मि सीतलाणि वणगहणाणि सत्थो भविस्सतित्ति, अहं च लंतगकप्पगतो पुत्तसिणेहेण संगारं च सुमरिऊण खणेणागतो, विभीसणरूवं विकुरुव्विऊण रहगतो भणिओ बलो- तात ! अहं विज्जाहरेहिं समं जुज्झिउं गतो, ते मे पसाहिता, तुब्भे पुण अंतरं जाणिऊण केणवि मम रूवेण मोहिता, वच्चिमो णगरं, एयं पुण अहंति तुब्भेहिं वूढं कलेवरं, सक्कारेसु णं तु डहिऊण रहेण सणगरमागता, पूतिज्ज णे णयरे, घरे य एक्कासणणिसन्ना ठिता, ततो मया मणोहरिरूवं दंसितं, संभंतो अयलो- अम्मो ! तुब्भेत्थ कतोत्ति?, पव्वज्जाकालो संगारो य कहितो, विभीसणमरणं, अहं लंतगाओ इहागतो तव पडिबोहणाणिमित्तं, परलोगहितं चिंतेहि अणिच्चयं मणुयरिद्धिं च जाणिऊणंति गतोमि सगकप्पं। अयलोऽवि पुत्तसंकामितसिरी णिव्विन्नकामभोगो पव्वातितो, तवमणुचरिऊण ललियंगतो देवो जातो, अहं पुण सदेवीयं लंतगं कप्पं नेमि अभिक्खणं, जाहे सुमरामि, सो सत्तणवभागे सागरोवमस्स भोत्तूण देवसुहं चुतो, तत्थऽन्नो उववन्नो, तंपि ललियंगयं एस मे पुत्तो चेवत्ति णेमि, एतेण कमेणं गता य सत्तरस, सिरिमती य

॥१७७॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक-चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥१७८॥

श्रीऋषभ-चरितं भगवत्-श्रेयांस भवाः

जं जाणति एसावि मे णीतपुव्वा सिणेहेण लंतयं कप्पं बहुसो, जाणामि णं सदावेह य वइरजंघंति, आणत्तो कंचुती आगतो य दिट्ठो मया परितोसविकसियच्छीए अच्छेरयभूतो सकलरयणिकरसोम्मवयणचंदो तरुणरविरस्सिबोहितपुंडरियलोयणो मणिमंडियकुंडल-घट्टितपीणगंडदेसो गरुलातयतुंगणासो सिलपवालकोमलसुरत्तदसणवसणो कुंदमउलमालासिरिकरसिणिद्धदसणपंती वयत्थवसम-अवगणितखंधो वयणतिभागसितरयणावलिपरिणद्धगावो पुरफलिहायामदीहबाहु णगरकवाडोवमाणमंसलविसालवच्छो करयलसंगे-ज्झमज्झदेसो विमउलपंकयसरिच्छणाभी मिगपत्थिवतुरगवट्टितकडी करिकरकरणिज्जउरुजुयलो णिगूढजाणुपदेससंगतहारणिसमाणरम-णिज्जजंघो सुपतिट्ठियकणगकुम्मसरिससकललक्खणसंबद्धचलणजुयलो पणतो य राइणो, भणिता य-पुत्त ! वइरजंघ ! पडिच्छसु पुव्वभवसयंपभं सिरिमतिंति, अवलोकिता यऽणेण अहं कलहंसेणेव कमलिणी, विहिणा य पाणिं गाहितो मम तातेणव वइरजंघत्ति मधुरमाभासमाणेण दिन्नं च उवलंबणं परियारिओ ये, विसज्जिताणि य अम्हे गयाणि लोहग्गलं, भुंजामु णिरुव्विग्गं भोगे, वइरसेणोऽवि राया लोगंतियदेवपडिबोहितो संवच्छरं किमिच्छियं दाणं दाऊण णिग्गयसुतेहिं णरवतीहि य भरितयससमेतेहिं सह पव्वतितो पोक्खलपालस्स रज्जं दाऊणं, उप्पण्णकेवलणाणो य धम्मं देसेति । ममवि कालेण पुत्तो जाओ, सो सुहेण वड्ढितो, कदाइं च पोक्खलपालस्स केति सामंता विसंवतिता, तेण अम्हं पेसितं, एतु वइरजंघो सिरिमती य, अम्हे विउलेण खंधावारेण पत्थिताइं पुत्तं णगरे ठवेऊणं, सरवणस्स य मज्झेण पंथो, पाडिसिद्धा य मे जाणकजणेण, दिट्ठीविसो सरवणे सप्पो, ण जाति ततो गंतुंति, परिहरता कमेणं पत्ता पोंडरिगिणीं, सुतं च तेहिं णरवईहि वइरजंघागमणं, ततो ते संकिता पडिता, अम्हेऽवि पोक्खल-पालेण रन्ना पूएऊण विसज्जिता, पत्थिताणि सणगरं, भणति य जणो- सरवणुज्जाणमज्झेण गंतव्वं, सप्पो णिव्विसो जातो,

॥१७८॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णी उपोद्घात निर्युक्तौ

॥१७९॥

केवलणाणं तत्थट्ठियस्स साधुणो उप्पन्नं, देवा य ओवतिता, देवुज्जोएण य पडिहतं दिट्ठिगतं विसं सप्पाणंति, ततो अम्हे कमेण पत्ताइं सरवणं, आवासिताइं, सागरसेणमुणिसेणा य मम भातरो अणगारा सगणा तत्थेव ठिता, ततो अम्हेहिं दिट्ठा तपलच्छिपडिहत्था सरदसरजलपसंतहिदया सारदसगलससिसोमदंसणा, ते य सपरिवारा परेण भत्तिबहुमाणेण वंदिता, सपरिवारा य फासुएण असणपाणखाइमसाइमेण पडिलाभिता, ततो अम्ह तेसिं गुणे अणुगुणंताइं- अहो महाणुभावा सागरसेणमुणिसेणा, अम्हेवि मुक्करज्जधुरवावाराइं कयाइं मन्ने णिस्संगाइं विहरिस्सामोत्ति विरागमग्गमोइन्नाइं कमेण पत्ताइं सणगरं, पुत्तेण य णे अम्हं विरहकाले भिच्चयवग्गो दाणमाणेहिं रंजितो वासघरे य विसधूमो पयोजितो, विसज्जितपरियणाणि य विगाले पतोसे अतिगयाणि वासागिहं साधुगुणरयाणि, धूमदूसितधातूणि कालगयाणि इहायाताणि उत्तरकुराएत्ति जाणामि, तं अज्ज! जा णिण्णामिया जा य सयंपभा जा य सिरिमती सा अहंति जाणह, जो महब्बलो राया जो य ललियंगतो जो य वइरजंघो ते तुब्भे, एवं जीसे णामं गहितं भे सा अहं सयंपभा। ततो सामिणा भणितं- अज्जे! जातिं सुमरिऊण देवुज्जोयदंसणेणं चिंतेमि देवभवे वट्टहित्ति, ततो मे सयंपभा आसट्ठा, तं सच्चमेयं कहितंति, परितुट्ठमाणसाणि पुव्वभवसुमरणसंधुक्खितसिणेहाणि सुहागताविसयसुहाणि तिन्नि पलितोवमाणि जीविऊण कालगताणि सोहम्मे कप्पे देवा जाता। तत्थवि णे परा पिती आसित्ति।

पलिओवमिकिं ठितिं पालेऊण चुता वच्छतावतिविजए पभंकराइ णगरीय, तत्थ सामी पितामहो सुविहिवेज्जस्स पुत्तो केसवो णाम जातो, अहं पुण सेट्ठिसुतो अभयघोसो, तत्थवि णे सिणेहादी कता, तत्थेव नयरे रायपुत्तो पुरोहितो मंतिसुओ सत्थवाहसुओ य, तेहिवि सह मेत्ती जाया, कयाइं च साधू महप्पा किमिकुट्ठेण गहितो जहा पुव्वं जाव तेणेव पडिगता, सुतधम्मा य सव्वेऽपि पडि-

श्रीऋषभचरितं भगवत्श्रेयांसभवाः

॥१७९॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥१८०॥

श्रीऋषभ-चरितं भगवत्-श्रेयांस-भवाः

वन्ना सावगधम्मं, केसवो साधुवेयाच्चपरो विसेसेण, ततो सीलव्वततवोविहाणेहिं अप्पाणं भावेऊण समाहीय कालगता अच्चुए कप्पे इंदसामाणा देवा जाता, ततो ठितीक्खए चुता कमेण केसवो वइरसेणसस्स रन्नो मंगलावतीए देवीय धारिणिवीयणामाए पुत्तो जातो, वइरणाभो णाम, रायसुतादी य कणगणाभरुप्पणाभपीढमहापीढा कमेण जाता, कणगणाभरुप्पणाभाण बाहुसुबाहु बितियणाम, अहं तत्थेव णगरे रायसुतो जातो, बालो चेव वइरणाभं समल्लीणो, सारही जातो सुजसो णाम, सेसं जहापुव्वं जाव उववाओ सव्वट्ठे, सव्वेसिं पढमो वइरनाभो चुओत्ति, णवरं अहमवि पुव्वासिणेहाणुरागेण वइरणाभमणु पव्वइतो, भगवता य वइरणाभो भरहे पढमतित्थगरो उसभो णाम भविस्सतित्ति णिद्दिट्ठो, कणगणाभो चक्कवट्टी भरहो इति, रुप्पणाभादीण य मणुसस्सभवलापि(णाभि)णो अंतकरत्ति, ततो अम्हे छप्पि जणा बहुकीतो वासकोडीओ तवमणुचरिऊण समाहीय कालगता, कमेण सव्वट्ठे देवा जाता, ततो चुया इहायाता ॥मया वइरसेणतित्थगरो एरिसीए आगीइए तत्थ दिट्ठोत्ति पितामहलिंगदरिसणेण पोराणाओ जातिओ सरिताओ, विन्नातं च अन्नपाणादि दायव्वं तवस्सीणंति। एवं च कहं सोऊण सेयंसो पहट्ठमाणसेहिं पूजितो णरवइमादीहिं, ताहे लोगो जाणिउमारद्धो। इतो य सेज्जंसो एत्थ मम गुरू सामी ठितो, तो मा अहं एतं पादेहिं अक्कमामि, तत्थ तेण रयणपेढिता कया, जाहे से देसकालो ताहे अच्चाणियं काऊण जेमेति, तं दट्ठूण लोगोऽवि करेति सएहिं घरदारेहिं, ज तं सेज्जंसेणं कयं तं कालंतरणे संवउरपेढं जायं ॥

ततो भगवं विहरमाणो बहलीविसयं गतो, तत्थ बाहुबलियस्स रायहाणी तक्खसिला णामं, त भगवं वेताले य पत्तो, बाहुबलिसस्स वियाले णिवेदितं जहा सामी आगता, कल्लं सव्विड्ढीए वंदिस्सामित्ति ण णिग्गतो, पभाते सामी विहरंतो गतो, बाहु ॥१८०॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

बलीवि सव्विड्ढीए णिग्गतो जहा दसण्णाविभासा जाव सामीं ण पेच्छति, पच्छा अद्धितिं काऊण जत्थ भगवं वुत्थो तत्थ धम्मचक्कं चिन्धकारेति, तं सव्वरयणामयं जोयणपरिमंडलं, जोयणं च ऊसितो दंडो. एवं केइ इच्छंति, अन्ने भणंति-केवलणाणे उप्पन्ने ताहिं गतो, ताहे सलोगेणं धम्मचक्कविभूती अक्खाता, तेण कतंति ।

एवं विहरंतो सामी आगतो विणीयं, तत्थ पुरिमतालं णगरं उज्जाणं सगडमुहं, तत्थ ठ्ठितो, सूरुग्गमणवेलाए णग्गोहहेट्ठा णिविट्ठस्स जाव केवलणाणं उप्पन्नं । देवा आगता महिमं करेंति, सव्वतित्थगराण य केवलणाणे उप्पण्णे सक्को अवट्ठितं केसमंसुरोमणहं करेइ, उसभसामिस्स पुण जडाओ सोभयंतित्ति ण छिन्नाओ, कणकगिरी अंजनरेखावत्, भरहस्स य चारपुरिसा णिच्चमेव-दिवसदेवासियं वड्ढमाणिं णिवेदेंति, तेहिं तस्स णिवदितं, जहा--तित्थगरस्स णाणं उप्पन्नंति, आयुहघारिएणऽवि णिवेदितं, जहा--चक्करयणं उप्पन्नं, ताहे सो चिंतेउमारद्धो, दोण्हंपि महिमा कायव्वा, कतरं पुव्वं करेमित्ति, ताहे भणति--तातंमि पूतिए चक्कं पूयितमेव भवति, चक्कस्सवि सामी पूयणिज्जो, ताहे सव्विड्ढीए पत्थितो, भगवतो य माता भणति भरहस्स रज्जविभूतिं दट्ठूणं--मम पुत्तो एवं चेव णग्गओ हिंडति, ताहे भरहो भगवतो विभूतिं वन्नेति, सा ण पत्तियति, ताहे गच्छंतेण भणिता---एहि जा ते भगवतो विभूतिं दरिसेमि, जदि एरिसिया ममं सहस्सभागेणवि अत्थित्ति, ताहे हत्थिखंधेण णीति, भगवतो य छत्तादिच्छत्तं पेच्छंतीए चेव केवलनाणं उप्पन्नं, तं समयं च णं आयुं खुट्टं सिद्धा, देवेहि य से पूया कता, पढमसिद्धोत्ति काऊणं खीरोदे छूढा ।

॥१८१॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता...........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥१८२॥

तत्थ समोसरणे भगवं सक्कादीणं धम्मं परिकहेति, तत्थ उसभसेणो णाम भरहस्स रन्नो पुत्तो सो धम्मं सोऊण पव्वइतो, तेण तिहिं पुच्छाहिं चोद्दसपुव्वाइं गहिताइं, उप्पन्ने विगते धुते, तत्थ बंभीवि पव्वइया, भरहो सावओ, सुंदरीए ण दिन्नं पव्वइउं, मम इत्थिरयणं एसत्ति, सा साविगा, एस चउव्विहो समणसंघो। ते य तावसा भगवतो णाणं उप्पन्नंति कच्छसुकच्छवज्जा सव्वे भगवतो सगासे पव्वइता, एत्थ समोसरणे मिरीतिमादिया बहवे कुमारा पव्वइता, किं कारणं मिरीयत्ति भन्नति ?, सो जातमेत्तओ मिरीइओ मुयतीति तेण मिरीयी।

पंच य पुत्त सयाइं० ॥३-॥१२६॥ सो य गामचिंतओ देवलोगाओ चइत्ता भरहस्स रन्नो वम्माए देवीए उववन्नो, भरहो तु सामिस्स अट्ठाहियमहिमं काऊणं अतिगतो, इयाणिं चक्कस्स पूजं काउकामो जाव सीहासणवरगते पुरत्थाभिमुहे सन्निसन्ने कोडुंबियपुरिसे सद्दावेत्ता आणवेति-खिप्पामेव भो ! विणीतं रायहाणिं सब्भितरबाहिरियं आसियसंमज्जितोवलित्तं जाव गंधवट्टिभूतं करेहित्तिकट्टु जेणामेव मज्जणघरे तेणामेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता मज्जणघरं अणुपविसति, अणुपविसित्ता मुत्ताजालाउलाभिरामे जाव ससिव्व पियदंसणे णरवती धूवपुप्फगंधमल्लहत्थगते पडिणिक्खमति २ जेणामेव आयुधवरसाला जेणव से दिव्वे चक्करयणे तेणेव पहारेत्थ गमणाए, तए णं तस्स बहवे रातीसरतलवरमाडंबिय जाव सत्थवाहप्पभितओ अप्पेगतिया उप्पलहत्थगता जाव सयसहस्सपत्तहत्थगता भरहरायं पिट्ठतो पिट्ठतो अणुगच्छंति। तए णं तस्स बहुओ खुज्जाओ चिलातीओ वडभीतो जाव णिउणकुसलाओ विणीताओ अप्पेगतिताओ कलसहत्थगताओ अप्पे०भिंगार जाव धूवकडुच्छुयहत्थगयाओ भरहं रायं पिट्ठतो पिट्ठतो अणुगच्छंति, तते णं से भरहे राया सव्विड्ढीए सव्वजुत्तीए जाव णिग्घोसणाइयरवेणं जेणेव आउहघरसाला जेणेव

श्रीऋषभचरितं भगवत्-श्रेयांसभवाः ॥१८२॥

भगवंत ऋषभस्य केवलज्ञान एवं समवसरणं वर्णनं

चक्रवर्ती भरतस्य दिग्विजय-यात्राया: वर्णनं

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥१८३॥

से दिव्वचक्करयणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चक्करयणस्स आलोए पणामं करेति करेत्ता लोमहत्थगं परामुसति २ त्ता तं चक्कं लोमहत्थएणं पमज्जति पमज्जित्ता दिव्वाए दगधाराए अब्भुक्खेइ अब्भुक्खेत्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं पंचंगुलितलेणं चच्चिके दलयति दलयित्ता अग्गेहिं वरहिं गंधेहि य मल्लेहि य चुन्नेहि य वासेहि य अच्चेति अच्चेत्ता पुप्फारुहणं मालारुहणं गंधारुहणं चुन्नारुहणं वण्णारुहणं आभरणारुहणं करेति करेत्ता अच्छेहिं सण्हेहिं सेतेहिं रयतामएहिं अच्छरसातंदुलेहिं चक्करयणस्स पुरतो अट्ठट्ठमंगलए आलिहइ, आलिहित्ता कयग्गाहग्गाहितकरतलपब्भट्ठविप्पमुक्केणं दसद्धवण्णेणं कुसुमेणं मुक्कपुप्फपुंजोवयारकलितं करेति, करेत्ता चंदप्पभवइरवेरुलियविमलडंडं जाव धूवं दलयति २ तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेति करेत्ता सत्तट्ठपयाइं पच्चोसक्कति २ वामं जाणुं अंचेति अंचेत्ता दाहिणं जाणुं धरणितलंसि णिहट्टु तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणितलंसि णिवाडेति णिवाडेत्ता ईसिं पच्चुन्नमति २ करतलपरिग्गहितं जाव मत्थए अंजलिं कट्टु चक्करयणस्स पणामं करेति करेत्ता आयुधघरसालाओ पडिनिक्खमति पडिनिक्खमित्ता जेणामेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता सीहासणवरगते पुरत्थाभिमुहे णिसीदइ, णिसीइत्ता अट्ठारस सेणिपसेणीओ सद्दावेति सद्दावेत्ता खिप्पामेव भो ! उस्सुक्कं उक्करं उक्किट्ठं अदेज्जं अमेज्जं अभडप्पवेसं अडंड-कुडंडिमं गणियावरणाडइज्जकलितं अणेगतालायराणुचरितं अणुद्धुयमुतिंगं अमिलायमल्लदामं पमुदितपक्कीलितसपुरजणुज्जाणवंतं विजयवेजयचक्करयणस्स अट्ठाहितं महामहिमं करेत्ता ममं एयमाणत्तियं खिप्पामेव पच्चप्पिणह, तेऽवि तहेव करिंति जाव पच्चप्पिणंति ।

तए णं से चक्करयणे अट्ठाहियाए णिव्वत्ताए समाणीए आयुधघरसालाओ पडिणिक्खमति २ अंतलिक्खपडिवन्नजक्खस-

श्रीऋषभ-चरितं भगवत्-श्रेयांस-भवाः

॥१८३॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

हस्ससंपरिवुडे दिव्वतुडियसद्दसन्निनाएण पूरेंते चेव अंबरतलं गंगाए महानदीए दाहिणिल्लेणं कूलेणं पुरत्थाभिमुहे पयाए यावि-होत्था, तए णं से भरहे राया हट्ठतुट्ठजाव कोडुंबियपुरिसे सद्दावेत्ता एवं वयासि--खिप्पामेव भो ! हयगयरहपवरजोहकलितं चाउरंगिणिं सेणं सन्नाहेह, आभिसेगं च हत्थिरयणं पडिकप्पेहत्तिकट्टु मज्जणघरं अणुपविसति, तहेव जाव ससिव्व पियदंसणे णरवती मज्जणघराओ पडिणिक्खमति २ हयगयरहपवरवाहणभडचडकरपहकरसंकुलाए सेणाए पहितकित्ती जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव आभिसेक्के हत्थिरयणे तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता अंजणगिरिकूडसंनिभं गयवतिं णरवती दूरुढे, तए णं से भरहाहिवे णरिंदे हारोत्थसुकतरचितवच्छे कुंडलउज्जोइयाणणे मउडदित्तसिरये णरसीहे णरवई णरिंदे णरवसभे मरुयरायवंसप्पसूते कप्पे अब्भधियं रायतेयलच्छीए दिप्पमाणे पसत्थमंगलसतेहिं संथुव्वमाणे जयसद्दकतालोए हत्थिखंधवरगते सकोरंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं सेयचामराहिं उद्धुव्वमाणीहिं २ जक्खसहस्ससंपरिवुडे वेसमणे चेव धणवती अमरवतीसंनिभाए इड्ढीए पहितकित्ती गंगाए महाणदीए दक्खिणिल्लेणं कूलेणं गामागरनगरखेडखब्बडमडंबदोणमुहपट्टणासमसंबाहसहस्समंडितं थिमितमेदिणीयं वसुहं अभिजिणमाणे २ अग्गाइं वराइं रयणाइं पडिच्छमाणे २ तं दिव्वं चक्करयणं अणुगच्छमाणे २ जोयणंतरियाहिं वसहीहिं वसमाणे २ जेणेव मागहतित्थे तेणेव उवागच्छति । तं च किल चक्करयणं जोयणं गंतूण ठाति, तत्थ किल जोयणाण संखा जाता, तए णं से मागहतित्थस्स अदूरसामंते दुवालसजोयणायामं णवजोयणविच्छिन्नं वरणगरसरिच्छं विजयखंधावारणिवेसं करेति करेत्ता वड्ढतिरयणं सद्दावेति सद्दावेत्ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो ! देवाणुप्पिया मम आवासं पोसहसालं च करेहि, एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि, तए णं ते जाव पच्चप्पिणंति । तएणं से राया आभिसेगाओ हत्थिरयणाओ पच्चोरुहति २ जेणेव पोसहसाला तेणेव ॥१८४॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक उपोद्घात निर्युक्तौ ॥१८५॥

भरतस्य- दिग्विजय:

उवागच्छइ उवागच्छित्ता जाव पोसहसालं पमज्जइ पमज्जित्ता दब्भसंथारयं संथरति, मागहतित्थकुमारस्स देवस्स अट्ठमभत्तं पगेण्हति२ पोसहसालाए पोसहिए बंभयारी ओमुक्कमणिसुवन्ने ववगतमालावन्नगविलेवणे णिक्खित्तसत्थमुसले एगे अब्बीए दब्भसंथारोवगते पोसहं पडिजग्गमाणे विहरति, तए णं से अट्ठमभत्तंसि परिणममाणंसि पोसहसालाओ पडिणिक्खमित्ता ण्हाए जाव सच्छत्तं जाव चाउघंटं आसरहं दूरूढेत्ति। तए णं से चाउरंगिणीए सेणाए चक्करयणदेसितमग्गो अणेगरायसहस्साणुयायमग्गो महता उक्कुट्ठि-सीहणादबोलकलरवेणं पक्खुभियमहासमुद्दरवभूतं पिव करेमाणे करेमाणे पुरत्थाभिमुहे मागहतित्थेणं लवणसमुद्दं ओगाहति, जाव रहस्स णाभी उल्ला, तए णं तुरगे णिगिण्हति णिगिण्हइत्ता रहं ठवेति ठवेत्ता धणुं पराणुसति, तए णं तं अतिरुग्गयबाल-चंडइंदधणुसंणिकासं वरमहिसदरियदप्पियदढघणसमग्गरयितसारं उरगगवलयगवरपरहुतभमरकुसणीलीणिद्धधंतधोयपट्टं णिगु-णोवियमिसिमिसेंतमणिरयणघंटियाजालपरिक्खित्तं तडितरुणकिरणतवणिज्जबद्धचिन्धं दद्दरमलयगिरिसिहरकेसरचामरवालद्धयंद-बिंबं कालहरितरत्तपीतसुक्किलबहुण्हारुणिसंपिणिद्धजीवं चलजीवं जीवितंतकरणं धणुं गहेऊण से णरवती उसुं च वरवइरकोडिमं (डियं) वइरसारतोण्डं कंचणमणिकणगरतणधोइट्ठसुकयपुंखं अणेगमणिरयणविविहसुविरइयणामचिंधं वइसाहं ठाइऊण ठाणं आयतकन्नायतं च काऊण उसुमुदारं, इमाइं वयणाइं तत्थ भाणीय से णरवती-हंदि सुणंतु भवंतो बाहिरतो खलु सरस्स जे देवा। णागा सुरा सुवन्ना तेसिं खु णमो परिवयामि ॥ १ ॥ हंदि सुणंतु भवंतो अब्भितरओ सरस्स जे देवा। णागा सुरा सुवन्ना सव्वे ते विसयवासी इमे ॥ २ ॥ इतिकट्टु उसुं णिसिरति, परिगरणिगलितमज्झो वायुद्धुयसोभमाणकोसेज्जो। चित्तेण सोभए धणुवरेण इंदो व पच्चक्खं ॥ ३ ॥ तं चंचलायमीणं पंचमिचंदोवमं महाचावं। छज्जइ वामे हत्थे णरवइणो तंमि विजयंमि ॥ ४ ॥

॥१८५॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

तएणं से सरे दुवालस जोयणाई गंता मागहतित्थकुमारस्स भवणंसि णिवदिते महता सद्देणं, से तं दट्ठूण आसुरुत्ते जाव तिवलितं भिउडिं णिलाडे साहट्टु एवं वयासी- केस णं भो ! एस अपत्थियपत्थए० हिरिसिरिपरिवज्जिते हीणपुण्णचउद्दसे दुरंतपंतलक्खणे जे णं ममं इमाए एताणुरूवाए दिव्वाए देविड्ढीए दिव्वाए देवजुत्तीए दिव्वेणं देवाणुभावेणं लद्धे पत्ते अभिसमन्नागते भवणंसि सरं णिसिरतित्तिकट्टु सीहासणाओ अब्भुट्ठेत्ता तं सरं गेण्हति, गेण्हेत्ता णामगं अणुप्पवाएत्ति । तत्थ इमे एयारूवे अब्भत्थिए० संकप्पे समुप्पजित्था- उप्पन्ने खलु भो जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे भरहे नामं राया चाउरंतचक्कवट्टी, तं जीतमेतं तीत-पच्चुपण्णमणागताणं मागहतित्थकुमाराणं चक्कवट्टीणं उवत्थाणियं करेत्तएत्तिकट्टु एवं संपेहेइ, संपेहित्ता हारं मउडं कुंडलाई कडगाणि तुडियाणि य वत्थाणि महरिहाणि आभरणाणि य सरं च णामाहयंकं मागहतित्थोदगं च गेण्हति, गेण्हेत्ता जेणेव भरहे राया तेणेव उवागच्छति, अंतलिक्खपडिवन्ने सखिंखिणियाइं पंचवन्नाइं वत्थाइं पवर परिहिते करतलजाव जएणं विजएणं वद्धावेति, वद्धावेत्ता एवं वयासी-अभिजिए णं देवाणुप्पिएहिं केवलकप्पे भरहे वासे. पुरत्थिमेणं मागहतित्थमेराए, तं अहं णं देवाणुप्पियाणं विसयवासी अहं णं देवाणुप्पियाणं आणत्तीकिंकरे अहं णं देवाणुप्पियाणं पुरत्थिमिल्ले अंतपाले, तं पडिच्छंतु णं देवा०! मम इमं एतारूवं पीतिदाणंतिकट्टु हारं जाव तित्थोदगं च उवणेति, सेऽविय णं पडिच्छति २ तं देवं सक्कारेइ सम्माणेइ पडिविसज्जेति । तएणं से भरहे राया रहं परावत्तेति, लवणसमुद्दातो मागहतित्थेणं पच्चुत्तरति २ जेणेव विजयखंधावारणिवेसमागंतूणं रहातो पच्चोरुहित्ता मज्जणघरंसि उवगते मज्जणघरवत्तव्वता णेयव्वा जाव पडिणिक्खमति, भोयणमंडवंसि सुहासणवरगते अट्ठमभत्तं पारेति पारेत्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जाव पुरत्थाभिमुहे णिसीदति णिसीदित्ता अट्ठारस सेणिप्पसेणीओ सद्दावेति सद्दा- ॥१८६॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता...........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णिः-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥१८७॥

भरतस्य-दिग्विजयः

वेत्ता एवं वयासी- खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! उस्सुक्कं जाव मागहतित्थकुमारस्स देवस्स अट्ठाहितमहामहिमं करेह २ जाव पच्चप्पिणंति । तए णं से दिव्वे चक्करयणे वइरामयतुंबे लोहियक्खमयारए जंबूणयणेमीए णाणामणिखुरप्पवालिपरिगते मणिमुत्ताजालभूसिते सणंदिघोसे सखिंखिणीए दिव्वतरुणरविमंडलणिभे णाणामणिरयणघंटियाजालपरिक्खित्ते सव्वोउयसुरभिकुसुमआसत्तमल्लदामे अंतलिक्खपडिवण्णे जक्खसाहस्सपडिवुडे दिव्वतुडियसद्दसण्णिणादेणं पूरेंते चेव अंबरतलं णामेण य सुदंसणे णरवइस्स पढमे चक्करयणे तस्स देवस्स ताए महिमाए णिव्वत्ताए समाणीए आयुधघरसालातो पडिणिक्खमति पडिणिक्खमित्ता जाव दाहिणपच्चत्थिमं दिसिं वरदामतित्थाभिमुहे पयाए यावि होत्था, भरहेवि य णं तहेव जाव हत्थिखंधवरगते सेतवरचामराहिं उध्धुव्वमाणीहिं मागइयवरफलगपवरपरिगरखेडयवरवम्मकवयमाढीसहस्सकलिते उक्कडवरमउडतिरीडपडागज्झयवेजयंतिचामरचलंतच्छत्तंधकारकलिते असिखेवणिखग्गचावणारायकणगकप्पणिसूललउडाभिंडिमालधणुतोणसरपहरणेहि य कालणीलरुहिरपीतसुक्किकल्लअणेगचिंधसयसण्णिविट्ठं अप्फोडितसीहणायच्छेलितहयहेसितहत्थिगुलुगुलाइतअणेगरहसयसहस्सघणघणेंतणिहम्ममाणसद्दसहितेण जमगं समकं भंभाहोरंभकिणितखरमुहिमुगंदसंखीयपरिलिवव्वयपरिव्वायणिवंसवेणुवीणाविपंचिमहतिकच्छभिरिगिसिगिकलतालकंसतालकरधाणुत्थिदेण संनिनादेण सकलमवि जीवलोगं पूरयंते बलवाहणसमुदएणं जक्खसहस्ससंपरिवुडे वेसमणे चेव धणवती अमरवतीसंनिभाए इड्ढीए पहितकित्ती गामागर तहेव जाव वरदामतित्थंतेणं उवागच्छति जाव खंधावारनिवेसं करेति, करेत्ता वड्ढतिरयणं सद्दावेति २ एवं वयासी--खिप्पामेव भो ! ममं आवसहं पोसहसालं च करेहि २ जाव पच्चप्पिणाहि, तए णं स आसमदोणमुहगामपट्टणपुरवरखंधावारगिहावणविभागकुसले एगासीतिपदेसु सव्वेसु चेव वत्थूसु णेगगुणजाणगे पंडिए विहिन्नू ॥१८७॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक उपोद्घात निर्युक्तौ

॥१८८॥

भरतस्य-दिग्विजयः

पणतालीसाए देवयाणं वत्थुपरिच्छाए णेमिपासेसु भत्तसालासु कोट्टणिसु य वासयघरेसु य विभागकुसले छेज्जे वेज्झे य दाणकम्मे पहाणबुद्धी जलयाणं भूमियाण य भाजणं जलथलगुहासु जंतेसु परिहासु य कालनाणे तहेव सद्दे वत्थुपदेसे पहाणे गब्भिणिकण्णरुक्खवाल्लिवेढितगुणदोसावियाणए गुणड्ढे सोलसपासादकरणकुसले चउसट्ठिविकप्पवित्थयमती णंदावत्ते य वड्डमाणे सोत्थिरुयग तह सव्वओभद्दसन्निवेसे य बहुविसेसे उद्दंडियदेवकोट्ठदारुगिरिवातवाहणविभागकुसले-इय तस्स बहुगुणड्ढे थवतीरतणे णरिंदचंदस्स। तवसंजमणिव्विट्ठे किंकरवाणी उवट्ठाति ॥ १ ॥ सो देवकम्मविधिणो खंधावारं णरिंदवयणेणं। आवसहभवणवलितं करेति सव्वं मुहुत्तेणं ॥ २ ॥ करेति य पवरपोसह घरं जाव पच्चप्पिणाति। सेसं तं चेव जाव चाउग्घंटं आसरहंतेणं उवागच्छति। तए णं तं धरणितलगमणलहुं ततो बहुलक्खणपसत्थं हिमवंतकंदरंतरणिवायसंवड्डितचित्ततिणिसदलियं जंबूणयसुकयकुप्परं कणयडंडियारं पुलगवइरइंदणीलसासगपवालवरफलिहरयणलेट्ठुमणिविद्दुमविभूसियं अडयालीसाररयिततवणिज्जपट्टसंगहितजुत्ततुंबं वधासितपसितणिम्मितणवपट्टपुट्ठपरिणिट्ठितं विसिट्ठलट्ठणवलोहबद्धकम्मं हरिपहरणरयणसरिसचक्कं कक्केतणइंदणालसासगसुसमाहितबद्धजालककडं पसत्थविच्छिण्णसुमधुरं पुरवरं व गुत्तं सुकरणतवणिज्जजुत्तकलितं कंटकणिजुत्तकप्पणं पहरणाणुयातं खेडगकणगधणुमंडलग्गवरसत्तिकोंततोमरसरसयबत्तीसतोणपरिमंडियं कणयरयणचित्तं जुत्तं हलीमुहबलागगयदन्तचंदमोत्तियतणसोतियकुंदकुडयवरसिंदुवारकंदलवरफेणणिगरहारकासप्पकासधवलेहिं अमरमणपवयणजइणचवलसिग्घगामीहिं चउहिं चामराकणगभूसितंगेहिं तुरंगेहिं सच्छत्तं सज्झयं सघंटं सपडागं सुकयसंधिकम्मं सुसमाहितसमरकणगगंभीरतुल्लघोसं वरकुप्परं सुचक्कं वरणेमीमंडलं वरधुरातोंडं वरवइरबद्धतुंबं वरकंचणभूसितं वरायरियणिम्मितं वरतुरगसंपउत्तं वरसारहिसुसंपणिहितं वरपुरिसे वरमहारहं दुरूढे आरूढे

॥१८८॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥१८९॥

भरतस्य-दिग्विजयः

य वररयणपरिमंडितं कणगखिंखिणीजालसोभितं अयोज्झं सोदामणिकणकतवितपंकजजासुयणाजलणजलितसुयतुंडरागं गुंजद्धबंधुजीवगरत्तहिंगुलुयणिगरसिंदूररुइलकुंकुमपोरवयचलणणयणकोइलदसणावरणरइतातिरेगरत्तासोगकणगकेसुयगजतालुसुरिंदगोवगसमप्पभपगासं बिंबफलसिलप्पवालउट्ठेंतसूरसारिसं सव्वोउयसुरभिकुसुमआसत्तमल्लदामं ऊसितसेतज्झयं महामेहरसितगंभीरणिद्धघोसं सत्तुहिदयकंपणं पभाए सस्सिरीयं णामेणं पुहविविजयलंभेति वीसुतं लोगवीसुतजसे, अह तं चाउग्घंटं आसरहं पोसहिए णरवती दुरूढे सेसं तहेव, णवरं दाहिणाभिमुहे, पीतदाणं मालं मउलिं मुत्ताजालं हेमजालं कडगाणि य तुडियाणि य, सेसं तं चेव जाव उत्तरपच्चत्थिमं दिसिं पभासतित्थाभिमुहे पयाते, जाव पच्चत्थिमदिसाभिमुहे पभासतित्थेणं लवणं ओगाहति, सेसं तं चेव, पीतिदाणं चूलामणी दिव्वं उरत्थं गेवेज्जं सोणीसुत्तं च कडगाणि य तुडियाणि य। ततो णं से दिव्वे चक्के पभासतित्थकुमारस्स देवस्स अट्ठाहियाए महिमाए णिव्वत्ताए अंतलिक्खपडिवण्णे जाव अंबरतलं सिंधूए महाणदीए दाहिणिल्लेणं कूलेणं पुरत्थिमं दिसिं सिंधुदेविभवणाहिमुहे पयाते यावि होत्था, भरहेऽविय णं तहेव जाव तीए भवणस्स अदूरसामंते विजयखंधावारनिवेसणं तहेव अट्ठमभत्तग्गहणं तंमि परिणममाणंसि सिंधुदेविए आसणचलणं ओहिपउंजणं जीतकप्पसरणं जावकरेमित्तिकट्टु कुंभट्ठसहस्सं रयणचित्तं णाणामणिकणगरयणभत्तिचित्ताणि य दुवे कणगभद्दासणाइं कडगाणि य तुडियाणि य वत्थाणि य आभरणाणि य गेण्हित्ता जाव उवागच्छति जहा मागहकुमारे जाव आभरणाणि य उवणेति, रायावि तं सक्कारेति जाव अट्ठाहियाए महिमाए णिव्वत्ताए समाणीए से चक्करयणे आयुधसालाओ णिक्खमित्ता उत्तरपुरच्छिमं दिसिं वेयड्ढपव्वयाभिमुहे पयाते यावि होत्था, एयं सव्वं पुव्ववन्नियं जाव वेयड्ढपव्वयस्स दाहिणे णितंबे खंधावारं णिवेसेति, एवं जहा चेव सिंधुदेवीए तहेव वेयड्ढगिरिकुमारस्सवि

॥१८९॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक-चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥१९०॥

आसणं चलति जाव पीतिदाणं, अभिसेके मडडालंकारे य आणत्तिं च, अवसेसं तं चेव जाव कडगाणि य तुडगाणि य जाव तए णं से चक्करयणे पच्चत्थिमदिसिं तिमिसगुहाभिमुहे पयाए यावि होत्था, जाव तीए गुहाते अदूरसामंते खंधावारकरणं, तहेव अट्ठमभत्तंसि परिणममाणंसि कयमालए देवे चलियासणे उवागते जाव पीतिदाणं थीरयणस्स तिलगचोद्दसं भंडालंकारं कडगाणि य जाव आभरणाणि य, एवं जाव अट्ठाहिया णिवत्ता। तए णं से भरहे सुसेणं सेणावइरयणं सद्दावेति सद्दावेत्ता एवं वयासी-गच्छाहि णं भो सिंधूए महाणतीए पच्चत्थिमिल्लं णिक्खुडं ससिंधुसागरगिरिमेरागं समविसमणिक्खुडाणि य ओयवेहि २ अग्गाइं पराइं रयणाइं पडिच्छाहि पडिच्छाहित्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि, तएणं से सेणावई बलस्स णेता भरहे वासंमि वीसुतजसे महाबलपरक्कमे महप्पा ओयंसी तेजलक्खणजुत्ते मिलक्खुभासाविसारदे चित्तचारुभासी भरहे वासंमि निक्खुडाणं णिन्नाण य दुग्गमाण य दुक्खपवेसणाणं वियाणए अत्थसत्थकुसले रयणं सेणावई सुसेणो भरहेणं रन्ना एवं आणत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ जाव दसणहं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं सामी तहत्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता जाव सए आवासे उवागच्छित्ता कोडुंबियपुरिसे आणवेति-खिप्पामेव भो! आभिसेगं हत्थिरयणं पडिकप्पेह, हयगय जाव सेणं सन्नाहेह, जाव पच्चप्पिणहत्तिकट्टु जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छंति जाव जहा भरहो जाव ण्हाए कयबलिकम्मे जाव पायच्छित्ते सन्नद्धबद्धवम्मियकवए उप्पीलियसरासणपट्टिए पिणद्धगेवेज्जपट्टे आविद्धविमलवरचिंधपट्टे गहियाउहपहरणे अणेगगणनायग जाव संपरिवुडे सकोरेंटमल्ल-जाव जयसद्दकलालोए मज्जणघराओ पडिनिक्खमति पडिनिक्खमित्ता जाव हत्थिरयणं दूरुढे । ततेणं से हत्थिखंधवरगते जाव चामराहिं उक्खिप्पमाणाहिं २ हयगय जाव दुंदुहिनिग्घोसणाइतरवेणं जेणेव सिंधूमहानदी तेणेव उवागच्छति २

भरतस्य-दिग्विजयः

॥१९०॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥१९१॥

भरतस्य-दिग्विजयः

दिव्वं चम्मरयणं परामुसति, तए णं तं सिरिवच्छसरिसरूवं मुत्तातारयद्धचंदचित्तं अयलमकंपं अभिज्जकवयं जं तं सलिलासु सागरेसु य उत्तरणं दिव्वं चम्मरयणं सणसत्तरइयं सव्वधन्नाइं जत्थ रोहंति एगदिवसेण वाविताइं, वासं णाऊण चक्कवट्टीणं परामट्ठे दिव्वचम्मरयणे दुवालसजोयणाइं तिरियं पवित्थरति तत्थ साहियाइं, तएणं से चम्मरयणे खिप्पामेव णावाभूते जाते, तए णं से सेणावइ सखंधावारबले चम्मरयणं दूरुहति २ सिंधुं महानइं विमलजलतुंगवीइयं णावाभूतेणं चम्मरयणेणं उत्तरति, ततो महाणदिं उत्तरित्तु सिंधुं अपडिहयसासणे य सेणावति कहिंचि गामागरणगरपव्वयाणि खेडकब्बडमडंबाणि पट्टणाणि य सिंहलए बब्बरे य सव्वं च अंगलोकं विलायलोगं च परमरम्मं जवणदीवं च पवरमणिकणगरयणकोसागारं समिद्धं आरबकरोमके अलसंडविसयवासी य पिक्खुरे कालमुहे जोणए य उत्तरवेयड्ढसंसिताओ य मेच्छजाती बहुप्पगारा दाहिणअवरेण जाव सिंधू ससागरंतोत्तिय सव्वपवरकच्छं च ओवेऊण पडिणियत्तो बहुसमरमाणिज्जे भूमिभागे य तस्स कच्छस्स सुहनिसन्ने, ताहे ते जणवयाण णगराण पट्टणाण य जे य तहिं सामिया पभूतागरपती य मंडलपती य पट्टणपती य सव्वे घेत्तूण पाहुडाइं आभरणाणि रयणाणि य वत्थाणि य महरिहाणि अन्नं च जं वरिट्ठं रायरिहं जं च इच्छियव्वं एतं सेणावइस्स उवणेंति, मत्थए कयंजलिपुडा पुणरवि काऊण अंजलिं मत्थयंमि पणता तुब्भे अम्हऽत्थ सामिया, देव! तं च सरणागता मो, तुब्भं विसयवासिणोत्ति विजयं जंपमाणा सेणावइणा जहारिहं ठवितपूजिता विसज्जिता णियत्ता सगाणि णगराणि पट्टणाणि य अणुपविट्ठा।

ताहे सेणावती सविणतो घेत्तूण पाहुडाइं आभरणाणि रयणाणि भूसणाणि य पुणरवि तं सिंधुणामधिज्जं उत्तिन्ने अणहसासणबले तहेव रन्नो भरहाहिवस्स णिवेदइत्ता य अप्पिणित्ता य पाहुडाइं सक्कारियसंमाणितसहरिसे विसज्जिते सगं पडमंडव-

॥१९१॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

मतिगते । तए णं से सुसेणे सेणावती ण्हाते जाव पायच्छित्ते जिमितभुत्तुत्तरागते समाणे जाव सरसगोसीसचंदणोकिन्नगसरीरो उप्पिं पासादवरगते कुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं बत्तीसइबद्धएहिं नाडएहिं वरतरुणिसंपउत्तेहिं उवणच्चिज्जमाणे २ उवगिज्जमाणे २ उवलालिज्जमाणे २ महताऽहयणट्टगीयवाइयतंतीतलतालतुडियघणमुइंगपडुप्पवादितरवेण इट्ठे सद्द जाव पंचविहे माणुसए कामभोगे पच्चणुभवमाणे विहरति ।

तते णं से भरहे अन्नया कयाती सेणावइं सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छ णं भो ! तिमिसगुहाए दाहिणिल्लस्स दुवारस्स कवाडे विघाडेहि २ जाव पच्चप्पिणाहि, तए णं से सेणावती तहेव जहा भरहो जाव अट्ठमभत्तं गेण्हति, तंमि य परिणममाणंसि पोसहसालाओ पडिनिक्खमित्ता ण्हाते जाव धूवपुप्फगंधमल्लहत्थगते मज्जणघराओ पडिणिक्खमइ जेणेव तिमिसगुहाए से दारे तेणेव पहारेत्थ गमणाए; तए णं तस्स बहवे राईसर जाव पभितओ उप्पेगइया उप्पलहत्थगया जाव पिट्ठतो अणुगच्छंति, तए णं तस्स बहुओ खुज्जाओ जाव विणी(चिला)ताओ अप्पेगइयाओ कलहसत्थगताओ जाव धूवकडुच्छुयहत्थगताओ अणुगच्छंति, तए णं से सव्विड्डीए जाव णादितरवेणं जेणेव ताणि कवाडाणि तेणेव उवागच्छइ २ आलोए पणामं करेइ, एवं जहा भरहो चक्करयणस्स तहेव जाव मंगलए आलिहइ, आलिहित्ता दंडरयणं परामुसइ, तए णं तं भवे दंडरयणं पंचलइयं वइरसारमतियं विणासणं सव्वसत्तुसेन्नाणं खंधावारेणरवइस्स गड्डदरिविसमपब्भारगिरिपव्वताणं संमीकरणं संतिकरणं सुभकरं रन्नो हिदइच्छितमणोरहपूरगं दिव्वमपडिहतं दंडरयणतं गहाय सत्तट्ठपदे पच्चोसक्कइ, ते कवाडे तेण महता महता सद्देणं तिक्खुत्तो आउडेइ, तए णं ते दारा महता महता सद्देणं कुंचारवं करेमाणा सरसरस्स सकाइं सकाइं ठाणाइं पच्चोसक्कित्था तते णं सेणावती जाव भरहस्स तं निवेदेइ ॥ ॥१९२॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

भरहेवि यणं ण्हाते जाव गयवतिं णरवतीं दूरुढे, तए णं से भरहे मणिरयण परामुसइ, तो तं चउरंगुलप्पमाणमेत्तं च अणग्घेयं तंसं छलंसं अणोवमजुतिं दिव्वं मणिं रयणपातिसमं वेरुलियं सव्वभूतकंतं जेण य मुद्धागतेणं दुक्खं न किंचि जाव हवति, अरोगे य सव्वकालं, तेरिच्छियदिव्वमाणुसकता य उवसग्गा सव्वे ण करेंति तस्स दुक्खं, संगामेऽविय असत्थवज्झो होहिति णरो, मणिवरं धरेंतो ठितजोव्वणकेसअवट्ठितणहो, हवति य सव्वभयविप्पमुक्को, तं मणिरयणं गहाय से णरवई हत्थिरयणस्स दाहिणिल्लाए कुंभीए निक्खिवेइ । तए णं से भरहाहिवे नरिंदे हारोत्थयसुकयरइयवच्छेजाव अमरवतीसंनिभाइड्ढीए पहियकित्ती मणिरयणकउज्जोवे चक्करयणदेसियमग्गे अणेगरायवरसहस्साणुजातमग्गे महता उक्किट्ठिसिहनादबोलकलकलरवेणं पक्खुभियसमुद्दरवभूयंपिव करेमाणे करेमाणे तिमिसगुहं दाहिणिल्लेणं दुवारेणं अतीति ससिव्व मेहंधकारणिवहं ।

तए णं से भरहे छत्तलं दुवालसंसियं अट्ठकण्णिकं अहिकरणसंठितं अट्ठसोवण्णिकं कागणिरयणं परामुसति, तए णं तं चउरंगुलप्पमाणमेत्तं अट्ठसुवन्नं च विसहरणं अतुलं चउरंससंठाणसंठियं समतलं माणुम्माणपमाणजोगजुत्तोलोगे चरंति सव्वजणपन्नवणका णवि चंदे ण किर तत्थ सूरे णवि अग्गी ण इव तत्थ मणिं णो तिमिरं नासेति अंधकारे जत्थ तेहिं तकं दिव्वप्पभावजुत्तं, दुवालसजोयणाणि तस्स लेसाउ विवड्ढंति तिमिरणिगरपडिसिहिक्काओ, रत्तिं च सव्वकालं खंधावारे करेंति आलोकं दिवसभूतं, जस्स पहावेण चक्कवट्टी तिमिसगुहमतीति सेन्नसहिते अभिजेतु बितियमद्धभरहं, रायपवरे कागिणिं गहाय तिमिसगुहापुरत्थिमपच्चत्थिमिल्लेसु कडएसु जोयणंतरियाइं पंचधणुसयायामविक्खंभाइं जोयणुज्जोयकराइं चक्कनेमिसंठियाइं चंदमंडलपडिणिकासाइं एगूणपन्नमंडलाइं आलिहमाणे २ अणुपविसइ, जाव धरति चक्कवट्टी ताव किर ताणि मंडलाणि धरेंति, गुहा य किर तहा उग्घाडिया चेव ॥

भरतस्य-दिग्विजयः

॥१९३॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

तए णं सा तिमिसगुहा तेहिं मंडलेहिं आलोयभूता उज्जोयभूता जाता यावि होत्था, तीसे णं गुहाए बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं उम्मुग्गनिमुग्गाजलाओ नामं दुवे महानदीओ पण्णत्ताओ, जाओ णं तिमिसगुहाए पुरत्थिमिल्लाओ भित्तिकडगाओ पवूढाओ पच्चत्थिमेणं सिंधुमहानइं समप्पेंति, जन्नं उम्मग्गजलाए तणं वा कट्ठं वा पत्तं वा सक्करं वा आसे वा हत्थी वा रहे वा जोहे वा मणुस्से वा पक्खिप्पति तन्नं सा तिक्खुत्तो आहुणिय आहुणिय एगंते थलंसि एडेइ, जन्नं निमुग्गजलाए तन्नं सा अंतोजलंसि णिमज्जावेति ।

तए णं से वड्ढतिरयणे भरहवयणसंदेसेणं तासु णदीसु अणेगखंभसयसहस्ससंनिविट्ठं अचलमकंपं सालंबणबाहगं सव्वरयणामयं सुहसंकमं करेइ, तए णं से भरहे जाव चक्करयणदेसितमग्गे जाव समुद्दरवभूतं पिव करेमाणे सिंधूए पुरत्थिमिल्लेणं कूलेणं ताओ णदीओ तहिं संकमेण जाव सुहेण उत्तरति, तए णं तीसे गुहाए उत्तरिल्लस्स दुवारस्स कवाडा सतमेव महता महता कोंचारवं करेमाणे सरसरसरस्स सयाइं ठाणाइं पच्चोसक्कित्था ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं उत्तरद्धभरहे वासे बहवे आवाडा णाम चिलाता परिवसंति, अड्ढा दित्ता वित्ता विच्छिन्नविउलभवणसयणासणजाणवाहणाइन्ना बहुधणा बहुजातरूपरयया जाव बहुदासीदासगोमहिसगवेलगयप्पभूता बहुजणस्स अपरिभूता सूरा वीरा विक्कंता विच्छिन्नविपुलबलवाहणा बहुसु समरसंपराएसु लद्धलक्खा यावि होत्था, तएणं तेसिं विसयंमि बहूइं उप्पादितसताइं पाउब्भवित्था, तए णं ते ताणि पासित्ता जाव ओहतमणसंकप्पा झियायंति । तए णं से भरहे राया चक्करयण जाव रवभूतंपिव करेमाणे तीए गुहाए उत्तरिल्लेणं दुवारेणं णीति ससिव्व मेहंधकारणिवहाओ । तए णं ते चिलाता तं पासित्ता आसुरत्ता जाव अन्नमन्नं सद्दावेंति २ त्ता एवं वयासी–एस णं देवाणुप्पिया ! केई अप्पत्थियपत्थगे जाव अम्ह

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

विसए बलविरिएणं हव्वमागच्छति तं तहा णं घत्तामो जहा णं णो आगच्छतित्तिकट्टु (तं) अन्नमन्नस्स पडिसुणेत्ता सन्नद्धबद्ध जाव आउहप्पहरणा भरहस्स अग्गाणीएण सद्धिं संपलग्गा। तए णं तं अग्गाणीयं हतमहित जाव दिसोदिसिं पडिसेहंति, तए णं से सुसेणे सेणावती तं तहा पातित्ता आसुरुत्ते कमलामेलगं णाम आसरयणं दूरुहति, तएणं तं असीतिमंगुलमूसितं णवणउतिमंगुलपरिणाहं अट्ठसयमंगुलमायतं बत्तीसंगुलमूसितासिरं चउरंगुलकन्नाकं वीसतिअंगुलबाहाकं चतुरंगुलजन्नुकं सोलसअंगुलजंघाकं चतुरंगुलमूसित-खुरं मुत्तोलीसंवत्तवलितमज्झं ईसी अंगुट्ठपणतपट्ठं सण्णतपट्ठं संगयपट्ठं पसत्थपट्ठं सुजातपट्ठं विसिट्ठपट्ठं एणीजाणुण्णयवित्थयतत्थपट्ठं वेत्तलतकसंणिवातं अंकेल्लणपहारपरिवाजितंगं तवणिज्जथासकामिल्लाणवरकणकसुफुल्लथासकविचित्तरयणरज्जुपासं कंचणमणिकण-गपतरकणाणाविहघंटियाजालमुत्तियजालगेहिं परिमंडितेण पट्ठेणं सोभमाणेण सोभमीणं कक्केतणइंदनीलमरगतमसारगल्लमुहमंड-णरतितं आविद्धमाणिक्कसुत्तकविभूसितं कणकामयपउमसुकयतिलकं देवमतिविकप्पितं सुरवरिंदवाहणजोग्गं च तं सुरूवं दूइज्ज-माणयं च चारुचामरामेलगं धरेंतं अणट्ठब्भवाहं अभेलणयणं कोकासियबहलपत्तलच्छं सतावरणणवकणगतवितवणिज्जतालुजीहा-सयं सिरियाभिसेकघोणं पुक्खरपत्तमिव सलिलबिंदुजुयं अचंचलं चवलसरीरं चोक्खचरकपरिव्वाजको विव हिलीयमाणं २ खुरचलणचच्चपुडेहिं धरणितलं अभिहणमाणं २ दोवि य चलणे जमकसमकं मुहाओ विणिग्गमंतं व सिग्घताए मुणालतंतुउदगम-वि णिस्साए पक्कमंतं जातिकुलरूवपच्चयपसत्थबारसावत्तकविसुद्धलक्खणं सुकुलप्पसूतं मेहाविं भद्दकं विणीतं अणुकतणुकसुकुमाल-लोमणिद्धछविं सुजातं अमरमणपवणगरुलजइणचवलसिग्घगामिं इसिमिव खंतिखमए सुसीसमिव पच्चक्खतो विणीतं उदगहुतवह-पासाणपंसुकद्दमससक्करसवालुइल्लतडकडगविसमपब्भारगिरिदरीसु लंघणपीलणणित्थारणासमत्थं, अचंडपडियं दंडयाइं अणंसु-

भरतस्य-दिग्विजयः

॥१९५॥

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

याइं अकालदाउं च कालेहिंसि जियनिंद गवेसगं जितपरीसहं जच्चजातीयमच्छिहाणिसुकयत्तसुवन्नकोमलं मणाभिरामं कमलामेलं नामेणं आसरयणं सेणावती कमेण समभिरूढे कुवलयदलसामलं च रयणिकरमंडलनिभं सत्तुजणविणासणं कणकरतणडंडं णवमालियपुप्फसुरभिगंधिं णाणामणिलतकभत्तिचित्तं च पधोतमिमिमिसेंतं निक्खधारं दिव्वं खग्गरयणं लोके अणोवमाणं, तं च पुणो वंसरुक्खसिंगट्ठिदंतकालायसविपुललोहडंडकवरवइरभेदयं जाव सव्वत्थ अप्पडिहतं, किं पुण देहेसु जंगमाणं ?, पन्नासंगुलदीहो सोलस सो अंगुलाइं विच्छिन्नो । अद्धंगुलसोणीक्को जेट्ठपमाणो असी भणितो ॥ १ ॥ असिरयणं णरवइस्स हत्थातो तं गहेऊणं आवाधचिलाएहिं सद्धिं संपलग्गे यावि होत्था ।

तए णं ते हतमहिते जाव पडिसेहेति, तए णं ते वरागा भीता तत्था वहिता उव्विग्गा अत्थामा अपुरिसपरक्कमंता अधारणिज्जत्तिकट्टु अणेगाइं जोयणाइं अवक्कमंति, एगंतओ मिलायंति २ जेणामेव सिंधूमहाणदी तेणामेव उवागच्छन्ति उवागच्छइत्ता वालुयासंथारके संथरंति २ तत्थ दूरुहंति २ अट्ठमभत्ताइं पगेण्हंति२ उत्ताणगा अवसणा कुलदेवते मेहमुहे णागकुमारे देवे मणसीकरेमाणा करेमाणा चिट्ठंति । तएणं तेसिं अट्ठमभत्तंसि परिणममाणंसि तेसिं देवाणं आसणाइं चलेंति, ते ओहिणा आभोएंति. अन्नमन्नं सद्दावेंति, सद्दावेत्ता तेसिं अंतियं पाउब्भवंति, अंतलिक्खपडिवन्ना जाव एवं वयासी-भणह णं किं करामो केव भे मणसाइते?, तएणं ते चिलाता हट्ठा जाव विजएणं वद्धावेत्ता एवं व०-एस णं केइ अप्पत्थियपत्थए जाव तहणं घत्तेह जहन्नं नो आगच्छतित्ति, तए णं ते देवा एवमाहंसु-एस णं देवाणुप्पिता ! भरहे णाम राया चातुरंतचक्कवट्टी महिड्ढीए महाजुत्तीए जाव महासक्खे, णो खलु एस सक्को केणइ देवेण वा दाणवेण वा किन्नरकिंपुरिसगंधव्वमहोरगेण वा सत्थपतोगेण वा अग्गिपओगेण वा विसप्पतो-

गेण वा मंतप्पतोगेण वा उद्देवेत्तए वा पडिसेहेत्तए वा, तहाविय णं तुब्भं पियट्ठताए एयस्स उवसग्गं करेमोत्तिकट्टु तेसिंतियायो अवक्कमंति २ जाव खंधावारनिवेसस्स उप्पिं जुगमुसलप्पमाणमेत्ताहिं धाराहिं उपरोप्पिं सत्तरत्तं पवासंति ॥

तएणं से भरहे राया तं पासित्ता दिव्वं चम्मरयणं परामुसति, सेऽवि यणं खिप्पामेव दुवालस जोयणाइं तिरियं पवित्थरति, तत्थ साहियाइं तए णं से भरहे सखंधावारबले तंमि दूरुहति २ दिव्वं छत्तरयणं परामुसति, तए णं तं णवणवतिसहस्सकंचणसलागपरिमंडितं महरिहं अतोज्झं णिव्वणसुपसत्थविसिट्ठलट्ठकंचणसुपुट्ठडंडं मिदुरायतवट्टलट्ठअरविंदकन्नियसमाणरूवं वत्थिपदेसे य पंजरविराजितं विविहभत्तिचित्तं मणिमुत्तपवालतत्ततवणिज्जपंचवण्णियधोतरयणरूवरइतं रयणमिरीइसमोप्पणाकप्पकारमणुरंजिएल्लियं रायलच्छीचिंधं अज्जुणसुवण्णपंडुरपच्चत्थुयपट्ठदेसभागं तहेव तवणिज्जपट्टकम्मंतपरिगतं अधिकसस्सिरीयं सारदरयणिकरविमलपडिपुन्नचंदमंडलसमाणरूवं नरिंदवामप्पमाणपगतीपवित्थडं कुमुदसंडधवलं रन्नो संचारिमं विमाणं सूरातववातवुट्ठिदोसाण खतकरं तवगुणेहिं लद्धं 'अहतं बहुगुणदाणं उडुणविवरीतसुहकयच्छायं । छत्तरयणं पहाणं सुदुल्लभं अप्पपुन्नाणं ॥ १ ॥ पमाणरातीणं तवगुणाणं फलेक्कदेसभागं विमाणवासेवि दुल्लभतरं वग्घारितमल्लदामकलावं सारदधवलब्भयंदाणिगरप्पगासं दिव्वं छत्तरयणमहिवइस्स धरणितलपुन्नयंदो । तए णं से दिव्वे छत्तरयणे भरहेणं रन्ना परामुट्ठे खिप्पामेव दुवालस जोयणाइं पवित्थरइ साहियाइं तिरियं, तं खंधावारस्स उवरिं ठवेति, ठवित्ता मणिरयणं परामुसइ परामुसित्ता छत्तरयणस्स वत्थिभागे ठवेति ।

तस्स य अणइवरं चारुरूवं सिलणिहिअत्थमंतसेतू सालिजवगोधूममुग्गमासतिलकुलत्थसट्ठिगणिप्फावचणकोद्दवकोत्थुंभरिकंगुवरालकअणेगधन्नावरत्तहारितगअल्लकमूलकहलिद्दिलाउकतउसतुंबकालिंगकविट्ठअंबअंबिलियसव्वणिप्फादए सुकुसले गाहा-

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥१९८॥

भरतस्य-दिग्विजयः

वतिरयणेत्ति सव्वजणवीसुतगुणे । तए णं से गाहावतिरयणे भरहस्स रन्नो तद्दिवसपइन्नणिप्फादितपूइताणं सव्वधन्नाणं अणेगाइं कुंभसहस्साइं उवट्ठवेति । तत णं से राया चम्मरयणसमारूढे छत्तरयणसमोच्छन्ने मणिरयणकतुज्जोवे समुग्गगभूतेणं सुहं सुहेणं सत्तरत्तं परिवसति, णवि से खुहा न तण्हा ण विलीतं णेव विज्जए दुक्खं । भरहाहिवस्स रन्नो खंधावारस्सवि तहेव ॥ १ ॥ किल बह्मांडपुराणं, तत्थ किल साली वुप्पति पुव्वण्हे अवरण्हे जिम्मइ। तए णं तस्स सत्तरत्ते परिणममाणंसि एतारूवे अब्भत्थिए जाव समुपज्जित्था-केस णं भो अप्पत्थियपत्थिए जाव जे णं ममेतारूवाए इड्डीए लद्धाए पत्ताए जाव सत्तरत्तं वासति । तए णं एतं जाणित्ता सोलस देवसहस्सा सन्नज्झितुं पयत्ता यावि होत्था । तए णं ते देवा सन्नद्धबद्धवम्मितकवया जाव गहियाउहप्पहरणा णागकुमारंतिकं पाब्भवित्ता एवमाहंसु-हं भो किन्नं तुब्भे ण याणाह भरहं रायं महड्ढीयं जाव महाणुभागं, णो खलु सक्का केणति देवेण जाव पडिसेहेत्तए वा, तहावि णं एवं करेह, तं एवमवि गते कज्जे इतो खिप्पामेव अवक्कमह, अहव णं अज्ज पासह चित्तं जीवलोगं, तएणं ते भीता जाव मेहाणीतं साहरंति, साहरेत्ता आवाडचिलागसगासं गंतूणं तं सव्वं साहेंति, तं गच्छह णं तुब्भे ण्हाता जाव उल्लपडसाडगा ओचूलगणियत्था अग्गाइं वराइं रयणाइं गहाय पंजलिकडा पादपडिता भरहं रायाणं सरणं उवेह, पणि-वइयवच्छला खु उत्तमपुरिसा, णत्थि भे भरहस्स रन्नो अंतकायो भयमितिकट्टु जामेव दिसं पाउब्भूता तामेव पडिगता । तेऽवि तहेव करेत्ता जाव रयणाइं उवणेत्ता मत्थए अंजलिं कट्टु एवं व०-वसुधर गुणधर जयवर हिरिसिरिधितिकित्तिधारक नरिंद ! । लक्ख-णसहस्सधारक नायामिणं णे चिरं धारे ॥१॥ हयवतिगजवतिणरवतिणवनिहिवति भरहवासपढमवती । बत्तीसजणवयसहस्सरायसामी चिरं जीव ॥ २ ॥ पढमणरीसर ईसर हियईसर महिलियासहस्साणं । देवसयसहस्सीसर चोद्दसरयणीसर जसंसी ॥ ३ ॥ सागरगि-

॥१९८॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥१९९॥

भरतस्य-दिग्विजयः

रिपेरंतं उत्तरपाईणमभिजितं तुमए । तं अम्हे देवाणुप्पियस्स विसए परिवसामो ॥ ४ ॥ अहो णं देवाणुप्पियाणं इड्ढी जुत्ती जसे बले विरिए पुरिसकारपरक्कमे दिव्वा देवजुती दिव्वे देवाणुभागे लद्धे पत्ते अभिसमन्नागते तं दिट्ठा णं देवाणं इड्ढी एवं चेव जाव अभिसमन्नागया, तं खामेमु णं देवा० खमंतु देवा० खमंतु रहंतु णं देवा० णाइभुज्जो भुज्जो एवं करणताएत्तिकट्टु पादपडिता सरणं उवेंति ।

तए णं से राया तेसिं तं अग्घं पडिच्छति २ एवं वयासी-गच्छह णं भो तुब्भे मम बाहुच्छायापरिग्गहिता णिब्भया निरुव्विग्गा सुहं सुहेणं परिवसह, णत्थि भे कुतोऽवि भयमत्थित्तिकट्टु सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेति । तए णं सेणावती भरहादेसेणं पुव्वभणितविहाणेणं दोच्चंपि पच्चत्थिमिल्लं णिक्खुडं ससिंधुसागरगिरिमेरागं समविसमणिक्खुडाणि य तहेव ओयवेत्ता जाव पंचविहे भोगे पच्चणुभवमाण विहरति ।

तए णं से चक्करयणे अन्नया कयादी पडिणिक्खमति तहेव जाव उत्तरपुरत्थिमं दिसं चुल्लहिमवंतपव्वयाभिमुहं पयाते यावि होत्था, तए णं भरहेवि तहेव जाव चुल्लहिमवंतस्स दाहिणिल्ले णितंबे दुवालसजोयणायामं जाव चुल्लहिमवंतगिरिकुमारस्स देवस्स अट्ठमभत्तं पगेण्हति, तहेव जहा मागहकुमारस्स, णवरं उत्तरदिसाभिमुहे जेणेव चुल्लहिमवंते तेणेव उवा० तं पव्वयं तिक्खुत्तो रहस्सीसेणं फुसति फुसित्ता तुरए णिगिण्हति२ तहेव उड्ढं वेहासं सरं णिसिरति, सेऽविय बावत्तरिं जोयणाइं गंता तस्स देवस्स मेराए णिवडिते, सेऽवि तहेव आसुरत्ते, सेसं तं चेव, णवरं अहं देवाणुपियाणं उत्तरिल्ले अंतपाले, पीतिदाणं सव्वोसहिं च मालं च सरसं च गोसीसचंदणं कडगाणि य जाव दहोदगं च उवणेति । ॥१९९॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

भरतस्य-दिग्विजयः

तए णं से भरहे रहं परावत्तेत्ता जेणेव उसभकूडे पव्वते तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता तं पव्वयं तिक्खुत्तो रहसीसेणं फुसति रहं ठवेति, कागणिरयणं परामुसति २ उसभकूडस्स पुरत्थिमिल्लंमि कडगंसि णामगं आउडेति । 'ओसप्पिणीइमीसे ततियाएँ समाएँ पच्छिमे भाए । अहयंमि चक्कवट्टी भरहो इति णामधेज्जेणं ॥ १ ॥ अहमंसि पढमराया इहाहि भरहाहिवो णरवरिंदो । णत्थि महं पडिसत्तू जितं मए भारहं वासं ॥ २ ॥ तिकट्टु रहं परावत्तेति २ तेणेव विहिणा खंधावारमागंतूण चुल्ल०कुमारस्स अट्ठाहियं संदिसति ।

तए णं से चक्करयणे जाव णिव्वत्ताए समाणीए दाहिणं दिसिं वेयड्ढाभिमुहे पयाए यावि होत्था, सेसं तं चेव जाव उत्तरणियंबे खंधावारणिवेसं काऊण भरहराया पोसहिए णमिविणमी विज्जाहररातीं मणसी करेमाणे करेमाणे चिट्ठति, तए णं तंसि परिणममाणंसि णमिविणमी दिव्वाए मतीए चोदिंतमती अन्नमन्नस्स अंतियं पाउब्भवंति २ एवं वयासी- उप्पन्ने खलु जाव चक्कवट्टी तं जीतमेतं जाव विज्जाहरराईणं चक्कवट्टीणं उवट्ठाणियं करेत्तए, तं गच्छामो णं अम्हेऽवि जाव करेमोत्तिकट्टु विणमी णाऊण चक्कवट्टीं दिव्वाए मतीए चोदितमती माणुम्माणप्पमाणजुत्तं तेयंसीं रूवलक्खणजुत्तं ठितजोव्वणं केसव ट्ठितणहं सव्वामयणासणिं बलकरिं इच्छितसीउण्हफासजुत्तंति-तिसुब्भितणुकं तिसुतं तिवलीकं तिउन्नतं तिगंभीरं। तिसु कालं तिसु सेत तिआयतं तिसु त विच्छिन्नं ॥ १ ॥ समसरीरं भरहे वासंमि सव्वमहिलप्पहाणं सुंदरथणजहणवयणकरचरणणयणं सिरसिरजदसणजणहिदयरमणमणहरिं सिंगारागारचारु० जाव जुत्तोवयारकुसलं अमरवहूणं सुरूवं रूवेण अणुहरंतिं, सुभद्दं भद्दंमि जोव्वणे वट्टमाणिं विणमी इत्थिरयणं णमी य रयणाणि कडगाणि य तुडगाणि य गेण्हति २ ताए उक्किट्ठाए जाव विज्जाहरगतीए अंतलिक्खपडिवन्ना ॥२००॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता...........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

श्री आवश्यक-चूर्णी उपोद्घात निर्युक्तौ ॥२०१॥

दिग्जयः नवनिधयः

सखिंखिणियाइं जाव विजएणं वद्धावेंति वद्धावेत्ता एवं वयासी- अभिजिते णं देवा० जाव अम्हे देवाणु० आणत्तिकिंकरित्तिकट्टु तं समप्पेंति। तए णं भरहो ते सक्कारेति जाव पडिविसज्जेति, सेसं तं चेव. अन्ने भणंति- णमिविनमिणो रायाणो णायाणन्ति, तेहिं समं जुद्धं बारस वरिसा, पच्छा ते पराजिता समाणा विणमी इत्थिरयणं णमी रयणाणि य गहाय उवागतत्ति। तए णं से चक्के णमिविणमीणं अट्ठाहिताए णिव्वत्ताए समाणीए तहेव जाव उत्तरपुरत्थिमं दिसं गंगादेविभवणाभिमुहे पयाए यावि होत्था। भरहे तहेव जहा सिंधुदेवीए, णवरं सा से कुंभट्ठसहस्सं रयणचित्तं णाणामणिकणगरयणभत्तिचित्ताणि य दुवे कणगसीहासणाइं उवणेति जाव से चक्करयणे गंगाए महामाहिमाए णिव्वत्ताए समाणीए तहेव जाव दाहिणं दिसिं खंडगप्पवाताभिमुहे पयाए यावि होत्था। तहेव कुडुंबियाणत्ती य हत्थिरयणसेणापडिकप्पणा पोसहसाला णट्टमालगणमीकरणं, णवरं आलंकारियभंडदाणं सक्कारणयाए पडिविसज्जणया साहणाणत्ती आणुपुव्विं णेयव्वा।

तए णं से भरहे णट्टमालगस्स अट्ठाहिताए णिव्वत्ताए समाणीए सेणावतिं आणवेति- गच्छ णं भो! गंगाए पुव्विल्लं निक्खुडं जाव ओतवेहि, एवं सिंधुणिक्खुडवत्तव्वया णेयव्वा, जाव उप्पिं पासादगते विहरति। भरहो तु किल गंगादेवीए समं भोगे भुंजति वाससहस्संति। तए णं से भरहे अन्नया कयादी सेणावतिं आणवेति- गच्छ णं भो! खंडगप्पवातगुहाए उत्तरिल्लस्स दुवारस्स कवाडे विहाडेहि, एवं भाणियव्वं जाव पियं निवेयणता कोडुंबियाणत्ती गुहापवेसो मंडलालिहणा संकमकरणं, णवरं ताओ णदीओ पच्चत्थिमिल्लाओ कडगाओ पवूढाओ पुरत्थिमेणं गंगाणदिं समप्पेंति जाव दाहिणिल्लस्स दुवारस्स कवाडाणं सयमेव पच्चोसक्कणया, जाव तीसे गुहाए दाहिणिल्लेणं दारेणं णीति ससिव्व मेहंधकारणिवहाओ। तए णं से राया गंगाए णदीए ॥२०१॥

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥२०२॥

पच्चत्थिमिल्लंसि कूलंसि खंधावाराणिवेसं काऊणं जाव णिहिरयणाणं अट्ठमभत्तं पगेण्हति, णिधिरयणे मणसी करमाणे २ चिट्ठति, तस्स य अपरिमितरत्तरयणा धुवमक्खयमव्वया सदेवा लोकोपचयंकरा उवगता णव निहओ लोगवीसुतजसा । तंजहा—

णेसप्पे १ पंडुयए २ पिंगलये ३ सव्वरयण ४ महापउमे५ । काले६ य महाकाले७माणवग८महाणिही संखे ९॥१॥
णेसप्पंमि णिवेसा गामागरणगरपट्टणाणं च । दोणमुहमडंबाणं खंधावारावणगिहाणं ॥ २ ॥
गणियस्स य उप्पत्ती माणुम्माणस्स जं पमाणं च । धन्नस्स य बीयाण य णिप्फत्ती पंडुए भणिता ॥ ३ ॥
सव्वा आहरणविही पुरिसाणं जा य होंति महिलाणं । आसाण य हत्थीण य पिंगलगणिहिंमि सा भणिया ॥४॥
रयणाणि सव्वरतणे चउदसवि वराइं चक्कवट्टिस्स । उप्पज्जंती पंचेंदियाइं एगिंदियाइं च ॥ ५ ॥
वत्थाण य उप्पत्ती णिप्फत्ती चेव सव्वभत्तीणं । रंगाण य धोव्वाण य सव्वा एसा महापउमे ॥ ६ ॥
काले कालन्नाणं भव्व पुराणं व तिसुवि वंसेसु । सिप्पसयं कम्माणि य तिण्णि पयाए हितकराणि ॥ ७ ॥
लोहस्स य उप्पत्ती होइ महाकालि आगराणं च । रुप्पस्स सुवण्णस्स य मणिमुत्तिसिलापवालाणं ॥ ८ ॥
जोहाण य उप्पत्ती आवरणाणं च पहरणाणं च । सव्वा य जुद्धणीती माणवगे डंडणीती य ॥ ९ ॥
णट्टविहि णाडगविही कव्वस्स य चउविहस्स उप्पत्ती । संखे महाणिहिम्मी तुडियंगाणं च सव्वेसिं ॥ १० ॥
चक्कट्ठपतिट्ठाणा अट्ठुस्सेहा य णव य विक्खंभो । बारस दीहा मंजूस संठिता जण्हवीय मुहे ॥ ११ ॥
वेरुलियमणिकवाडा कणगमया विविहरयणपडिपुन्ना । ससिसूरचक्कलक्खण अणुसमवयणोववत्तीया ॥ १२ ॥

नव निधयः

॥२०२॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥२०३॥

भरतस्य विनीता-प्रवेशः

पलिओवमट्ठितीया णिहिसरिणामा य तेसु खलु देवा । जेसिं ते आवासा अक्केज्जा आहिवच्चाय ॥ १३ ॥
एते णव णिहिरयणा पभूतधणरयणसंचयसमिद्धा । जे वसमणुगच्छंती भरहाहिवचक्कवट्टीणं ॥ १४ ॥
तए णं भरहे जाव णिहिरयणाणं अट्ठाहियं महिमं करेति ॥

तए णं ताए णिव्वत्ताए सेणावतिं आणवेति-गच्छ णं भो ! गंगाए पुरत्थिमिल्लं दोच्चं णिक्खुडं ओयवेहि, सेऽवि तहेव जाव तमाणत्तियं पच्चप्पिणति, पडिविसज्जिते जाव भोगाइं भुंजमाणे विहरति । तए णं से चक्करयणे अन्नया कयाई अंतलिक्खपडिवन्ने जाव दाहिणपच्चत्थिमं दिसिं विणीतं रायहाणिं अभिमुहे पयाए, तए णं से भरहे राया पासति, पासित्ता हट्ठतुट्ठ० कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति सद्दावेत्ता एवं वयासी–खिप्पामेव भो ! आभिसेक्कं जाव पच्चप्पिणंति ।

तए णं से राया अज्जितरज्जो णिज्जितसत्तू उप्पन्नसंमत्तरयणचक्करयणप्पहाणे णवणिहिसमिद्धकोसे बत्तीसारायवरसहस्साणुयातमग्गे सट्ठीए वाससहस्सेहिं केवलकप्पं भरहवासं ओयवेत्ता मज्जणघरं पयाते, एवं सव्वा मज्जणघरवत्तव्वया णेयव्वा, जाव ससिव्व पियदंसणे णरवती मज्जणघराओ पडिनिक्खमति २ त्ता जेणामेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव आभिसेक्के हत्थिरयणे जाव अंजणगिरिकूडसंनिभं गजवतिं णरवती दुरूढे । तए णं भरहस्स रन्नो तं हत्थिं दूरूढस्स समाणस्स इमे अट्ठट्ठमंगलका पुरओ अहाणुपुव्वीए संपत्थिया, तं० सोत्थिय जाव भिंगारा । तयणंतरं च णं वेरुलियभिसत्तविमलदंडं जाव अहाणुपु० । तदणंतरं सत्त एगिंदियरयणा पुरतो अहाणु० तं०-चक्करयणे एवं छत्त० चम्म० दंड० आसे मणि० कागणि०, तदणं० णव महाणिहतो पुरतो अहाणु०, तं०-णेसप्पे जाव महानिही य संखे, तदणं० सोलस देवसहस्सा पुरतो अहा०, तदणं० बत्तीसं रायवरसहस्सा पु०अहा०, तयणं० सेणावतिरयणे

॥२०३॥

पुरतो अहाणु०, एवं गाहावति०, वड्ढति० पुरोहित० तदणं इत्थिरयणे पुरतो अहा० । तदणं० बत्तीसं उडुकल्लाणियासहस्सा पुरओ अहा०, एवं बत्तीसं जणवयकल्लाणियासहस्सा० बत्तिसं बत्तीसतिबद्धा णाडगसहस्सा पुरतो अहा० तदणं० तिन्नि सट्ठा सूयसया पुरतो० तदणं० अट्ठारस सेणिप्पसेणिओ पुरतो०, तदणं० चउरासीतिं आससयसहस्सा पुरतो०, तदणं० चतुरसीतिं दंतिसयसहस्सा पुरतो०, तदणं० चतुरासीतिं रहसयसहस्सा पुरतो०, तदणं० छन्नउतिं मणुस्सकोडीओ पुरतो०, तदणं० बहवे राईसर-जाव सत्थवाहपभितओ पुरतो०, तयणं० बहवे असिलट्ठिगाहा एवं कुंतचावचामरपीढपासगफलगपोत्थगवीणकूवदीवियसएहिं रूवेहिं, एवं वेसेहिं चिंधेहिं निओएहिं जाव पुरओ अहा० । तयणं० बहवे दंडिणो जहा उववाइए जाव संपट्ठिता, तए णं निओएहिं जाव पुरओ अहा० । तयणं० बहवे दंडिणो जहा उववाइए जाव संपट्ठिता, तए णं तस्स भरहस्स रन्नो पुरओ महं आसा आसवारा जाव संगेल्ली, तए णं से भरहाहिवे णरिंदो हारोत्थयसुकयरतितवच्छे जहा पुव्विं जाव अमरवतीसंनिभाए इड्ढीए पहितकित्ती चक्करयण-देसितमग्गे जाव समुद्दरवभूतं पिव करमाणे करेमाणे सव्विड्ढीए जाव णादिएणं गामागरखेडकब्बडजाव जोयणंतरियाहिं वसहीहिं वसमाणे वसमाणे विणीतं रायहाणिंतेणं उवागते, तीए अदूरे जाव खंधावारणिवेसो पोसहसालामातिगमणं विणीताए अट्ठमभत्त-गहणं तंसि परिणममाणंमि पोसहाओ पडिणिक्खमणं जाव गजवइं दूरुढे अणुपविसमाणस्स तहेव सव्वं जहा हेट्ठा, णवरं णव महा-णिहओ चत्तारि य सेणाओ ण पविसंति, तए णं तस्स विणीयं पविसमाणस्स अप्पेगतिया देवा विणीतं रायहाणिं सब्भितर-बाहिरियं आसितसंमज्जितोवलित्तं जहा विजयस्स जाव आभरणवासं वासिंसु०आहावेंति । तते णं तस्स परिविसमाणस्स सिंघाडग-जाव पहेसु बहवे अत्थत्थिता जहा सामिस्स जाव एवं वयासी-जय जय णंदा ! जाव भदं ते अजितं जिणाहि जाव धरणो विव

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक-चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥२०५॥

णागाणं जाव बहुईतो पुव्वकोडाकोडीओ विणीताए चुल्लहिमवंतगिरिसागरमेरागस्स य केवलकप्पस्स भरहवासस्स गामागरणगर-
जाव संनिवेसस्स संमं पयापालणोवज्जितलद्धजसे महता इस्सरियं कारेमाणे पालेमाणे सुहं सुहेणं विहराहिंत्तिकट्टु अभि-
णंदंति य अभित्थुणंति य। तए णं से णयणमालासहस्सेहिं पेच्छिज्जमाणे २ एवं जहा सामी जाव अपडिबुज्झमाणे २ जाव
सगभवणवरवडेंसगपडिदुवारे उवागच्छित्ता हत्थिरयणं ठवेति तातो पच्चोरुहति, सोलसदेवसहस्से सक्कारेति २ एवं बत्तीसं राय-
वरसहस्से सक्कारेति सेणावतिरयणे १ गाहावतिरयणे २ वड्ढति०३ पुरोहिय० तिन्नि सट्ठा सूयसया २ अट्ठारस सेणिप्पसेणी जो अन्ने य
बहवे रातीसरप्पभितयो सक्कारेत्ता जाव विसज्जेत्ता इत्थीरयणेणं बत्तीसाए य उडुकल्लाणियासहस्सेहिं बत्तीसाए य जणवयकल्लाणिया-
सहस्सेहिं बत्तीसाए य बत्तीसतिबद्धेहिं णाडगसहस्सेहिं सद्धिं संपरिवुडे भवणवरवडेंसगं अतीति जहा कुबेरोव्व देवराया केलास-
सिहरिसिंगभूतं । तए णं से राया मित्तणादिणियगसयणसंबंधिपरियणं पच्चुवेक्खति २ मज्जणगरं उवागच्छति तहेव जाव
ण्हाते मित्तणादिजाव भोयणमंडवंसि अट्ठमभत्तं पारेति पारेत्ता उप्पिं पासादवरगते फुट्टंतेहिं मुइंगमत्थएहिं बत्तीसबद्धएहिं नाडएहिं
उवललिज्जमाणे २ उवणच्चिज्जमाणे २ उवगिज्जमाणे २ महता जाव भुंजमाणे विहरति। विहरेत्ता तए णं तस्स अन्नया कयादी ते देवादीया
महारायाभिसेयं विन्नवंति, सेवियणं तहेव अट्ठमभत्तं गेण्हति, तंसि परिणममाणंसि ते आभिओगिया देवा विणीताए उत्तरपुरच्छिमे
दिसिभाए एगं महं अभिसेयमंडवं विउव्विसु जहा विजयस्स जाव पेच्छाहरतिसोमाणगआभिसेगपेढसीहासणादि सव्वं भाणियव्वं।
तए णं से भरहे राया पोसहसालातो पडिणिक्खमति २ ण्हाते एवं जहा विणीतं पविसंतस्स गमो तहेव णिगच्छंतस्स
जाव थीरयणेणं उडुकल्ला० जणवयकल्ला० णाडगसहस्सेहि य परिवुडे अभिसेगमंडवं अणुपविसति जाव पेढमणुप्पयाहिणीकरेमाणे

भरतस्य-राज्याभिषेकः

॥२०५॥

चक्रवर्ती भरतस्य राज्याभिषेकस्य वर्णनं क्रियते

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥२०६॥

भरतस्य राज्याभिषेकः

पुरत्थिमिल्लेणं तिसोमाणेणं दुरुहति जाव सीहासणे पुरत्थाभिमुहे सन्निसण्णे, तएणं ते बत्तीसं रायसहस्सा उत्तरिल्लेणं तिसोमाणेणं जाव भरहस्स णच्चासन्ने सुस्सूस जाव पज्जुवासंति। तए णं सेणावतीरयणे गाहावती० वड्ढति०पुरोहित० जाव सत्थवाहपभितयो तेऽवि तहेव णवरं दाहिणिल्लेण तिसोवाणेणं, तए णं आभिओग्गा देवा महत्थं महग्घं महरिहं महारायाभिसेगं उवट्ठवेंति जहा विजयस्स जाव पंडगवणे एगओ मेलायंति एवमादि।

तते णं भरहं रायाणं बत्तीसं रायसहस्सा सोहणंसि तिहिकरणणक्खत्तमुहुत्तंसि उत्तरपोट्ठवयाविजयंसि तहिं साभाविएहि य उत्तरवेउव्वियेहि य वरकमलपतिट्ठाणेहिं जहा विजए जाव महता महता रायाभिसेगेणं अभिसिंचंति २ पत्तेयं करतल जाव विहराहित्तिकट्टु आभिणंदंति अ अभिथुणंति य। तए तं रायाणं सेणावई०गाहावती० वड्ढती० पुरोहिते तिन्नि य सट्ठा सूयसया अट्ठारस सेणिप्पसेणीओ अन्ने य बहवे राईसर जाव सत्थवाहप्पभितयो एवं चेव अभिसिंचंति सोलस देवसहस्सा एवं चेव, णवरं पम्हलसूमालाए जाव मउडं पिणिद्धेंति।

तदणं० दद्दरमलयसुगंधगंधिएहिं गंधेहिं गाताइं भुकुंडेंति, दिव्वं च सुमणदामं पिणद्धंति, एवं जहा विजयस्स, किं बहुणा?, गंथिमवेढिमजाव कप्परुक्खगंपिव अलंकितविभूसितं करेंति देवा। तए णं से राया कोडुंबिए एवं वयासी-खिप्पामेव भो! हत्थिखंधवरगता विणीताए सिंघाडग जाव पहेसु महता महता सद्देणं उग्घोसेमाणा २ उस्सुकं उक्करं जाव जणजाणवदं दुवालससंवच्छरितं पमोयं घोसेह। तेऽवि तहेव करेंति जाव पच्चाप्पिणंति। ॥२०६॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

तए णं से राया सीहासणाओ अब्भुट्ठित्ता इत्थिरयणेणं जाव णाडगसहस्सेहिं सद्धिं संपरिवुडे पुरत्थिमिल्लेणं तिसोमाणेणं पच्चोरुहित्ता जाव गजवतिं दुरूढे, रायमातीवि जेणं दूरूढा तेणं पच्चोरुहंति २ रायाणं तहेव परिवारंति, तए णं अट्ठट्ठमंगलमादि सव्वं भाणियव्वं तहेव जावसिं गच्छंतएणं मज्जणघरअणुप्पवेसो, जाव अट्ठमभत्तं पारेति जाव उप्पिं विहरति। तए णं से राया दुवालससंवच्छरियंसि पमोयंसि निव्वत्तंसि समाणंसि ण्हाते जाव बाहिरियाए उवट्ठाणसालाए सीहासणवरगते सोलस य देव-सहस्से सक्कारेति संमाणेति सत्थवाहप्पभितयो, सक्कारेत्ता संमाणेत्ता उप्पिं पासादजाव विहरति।

भरहस्स णं रण्णो चक्करयणे छत्त० दंड० असि० एते णं चत्तारि एगिंदियरयणा आयुधसालाए समुप्पन्ना, चम्मरयणे मणि० कागणि० णव य महाणिहओ, एते णं सिरिघरंसि समुप्पण्णा. सेणावतिरयणे गाहावति० वड्डति० पुरोहित० एते णं चत्तारि मणुयरयणा विणीताए रायहाणीए समुप्पन्ना, आसरयणे हत्थि० एते णं दुवे पंचेंदियरयणा वेयड्ढगिरिपादमूले समुप्पण्णा, इत्थि-रयणे उत्तरिल्लाए विज्जाहरसेढीए समुप्पन्ने, तए णं से भरहे राया महता हिमवंतमलयमंदरजावरज्जं पसाहेमाणे विहरति॥ बितियो गमो रायवन्नगस्स इमो—

तत्थ य संखेज्जकालवासाउए जसंसी उत्तमअभिजातसत्तवीरियपरक्कमगुणे पसत्थवन्नसरसारसंघतणतणुकबुद्धिधारणमेहासं-ठाणसीलपगती पहाणगोरवच्छायागति अणेगवयणप्पहाणे तेजआउबलविरियजुत्ते अज्झुसिरघणनिचितलोहसकलणारायणवइरउस-भसंघयणदेहधारी उज्जुगभिंगारवद्धमाणगभद्दासणसंखच्छत्तवीयणिपडागचक्कणंगलमुसलरहसोत्थियंकुसचंददिव्वअग्गिजूवसागर-

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

श्री आवश्यक-चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥२०८॥

भ्रातृभ्यो दूतप्रेषणं

इंदज्झयपुहविपउमकुंजरसीहासणडंडकुम्मगिरिवरतुरंगवरमउडकुंडलणंदावत्तधणुकोंतगागरभेगभवणविमाणअणेगलक्खणपसत्थसुवि-
भत्तचित्तवरकरचरणदेसभागे उद्धामुहलोमजातसुकुमालणिद्धमउयआवत्तपसत्थलोमविरइतासिरिवच्छच्छन्नविउलवच्छे देहखेत्तसुविभ-
त्तदेहधारी तरुणरविरस्सिबोहितवरकमलविबुद्धगब्भवन्ने हयणासणकोसिसन्निभपसत्थपिट्ठन्तणिरुवलेवे पउमुप्पलकुंदजातिजूतवित-
वरचंपगणागपुप्फसारंगतुल्लगंधी छत्तीसाएवि पसत्थपत्थिवगुणेहिं जुत्तो अव्वोच्छिन्नवत्तपागडउभओजोणीविसुद्धनियगकुलपुत्तयं
देवेंद इव सोमताए णयणमणणिव्वुइकरे अक्खोभे सागरोव्व थिमिते फणवतिव्व भोगसमुदयसद्दव्वताए समरे अपराजिते परमवि-
क्कमगुणे अमरवतिसमाणसरिसरूवे मणुयवती भरहचक्कवट्टी चोद्दसण्हं रयणाणं णवण्हं महाणिहीणं सोलसण्हं देवसहस्साणं
बत्तीसाए रायसहस्साणं बत्तीसाए उडुकल्लाणियासहस्साणं बत्तीसाए जणवयकल्लाणियासहस्साणं बत्तीसाए बत्तीसतिबद्धाणं णाड-
गसहस्साणं तिण्हं तेसट्ठाणं सूयसताणं अट्ठारसण्हं सेणिप्पसेणीणं चउरासीए आससयसहस्साणं चउरासीए दंतिसयसहस्साणं चउ-
रासीए रहसयसहस्साणं छण्णवइमणुस्सकोडीणं बावत्तरीए पुरवरसहस्साणं बत्तीसाए जणवयसहस्साणं छन्नउइगामकोडीणं णवण-
उतीए दोणमुहसहस्साणं अडयालीसाए पट्टणसहस्साणं चउव्वीसाए कव्वडसहस्साणं चउवीसाए मडंबसहस्साणं वीसाए आगर-
सहस्साणं सोलसण्हं खेडगसयाणं चोद्दसण्हं संवाहसहस्साणं छप्पन्नाए अंतरोदगाणं एगूणपन्नाए कुरज्जाणं विणीताए रायहाणीए
चुल्लहिमवंतगिरिसागरमेरागस्स य केवलकप्पस्स भरहवासस्स अन्नेसिं च बहूणं रादीसर जाव सत्थवाहप्पभितीणं आहेवच्चं
भट्टित्तं जाव पालेमाणे ओहतविहतेसु कंटएसु उद्धितमलितेसु सव्वसत्तूसु णिज्जितेसु भरहाहिवे णरिंदे वरचंदणचच्चियंगमंगे ॥२०८॥
वरहाररयितवच्छे वरमउडविसिट्ठए वरवत्थचारुभूसणधरे सव्वोउयसुरभिकुसुमवरमल्लसोभितसिरे वरणाडगणाडइज्जवरभोगसंप-

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता...........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

श्री आवश्यक-चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥२०९॥

भ्रातृबोधः बाहुबलि-युद्धं

ललिते वरइत्थीगुम्म सद्धिं संपरिवुडे सव्वोसहिसव्वरयणसव्वसमितिसमग्गे संपुन्नमणोरहे हतामित्तसत्तुपक्खे पुव्वकततवप्पभावणिव्विट्ठसंचितफले भुंजति माणुस्सए सुभे भरहणामधेज्जो ।

एवं जहा जंबुद्दीवपन्नत्तीए भरहोवयणे तहा सव्वं भाणियव्वं । एवं जाहे बारस वरिसाणि महारायाभिसेगो वत्तो रायाणो विसज्जिता ताहे णियगवग्गं सारिउमारद्धो, ताहे दाइज्जंति सव्वे णीयल्लगा, एवं पडिवाडीए सुंदरी दाइता, सा पंडुल्लुइतमुही, सा य जद्दिवसं रुद्धा चेव तद्दिवसमारद्धा चेव आयंबिलाणि करेति, तं पासित्ता रुट्ठो ते कोडुंबिये भणति- किं मम णत्थि, जं एसा एरिसी रूवेणं जाता ?, वेज्जा वा नत्थि ?, तेहिं सिट्ठं- जहा आयंबिलेण पारेति, ताहे तस्स पयणुरागो जाओ, भणति- जदि तातं भजसि तो वच्चतु पव्वयतु, अह भोगट्ठी तो अच्छतु, ताहे पादेसु पडिता विसज्जिया पव्वइया ।

अन्नया भरहो तेसिं भातुगाणं पत्थवेति, जहा- ममं रज्जं आयाणह, ते भणंति- अम्हवि रज्जं ताएहिं दिन्नं तुज्झवि, एतु ता तातो ताहे पुच्छिज्जिहित्ति, जं भणिहीति तं काहामो ।

तेणं समएणं भगवं अट्ठावयमागतो विहरमाणो, एत्थ सव्वे कुमारा समोसरिता, ताहे ते भणंति- तुब्भेहिवि दिन्नाइं रज्जाइं णे हरति भाया, ताहे भणंति- अम्हे णं किं करेमो-किं जुज्झामो उदाहु आयाणामो ?, ताहे सामी भोगेसु नियत्तावेमाणो तेसिं धम्मं कहेति- ण मुत्तिसरिसं सुहं अत्थि, ताहे इंगालदाहगदिट्ठंतं कहेति, जहा—

एगो इंगालदाहगो, सो एगं भायणं पाणियस्स भरेऊण गतो, तं तेण उदगं णिट्ठवितं, उवरिं आदिच्चो पासे अग्गी पुणो परिस्समो दारुगाणि कोट्टेंतस्स घरं गतो, तत्थ पाणितं पीतो, एवं असब्भावपट्ठवणाए कूवतलागणदिदहसमुद्दा य सव्वे पीता, ण य ॥२०९॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥२१०॥

बाहुबलिनः केवलं

तण्हा छिज्जति, ताहे एगंमि तुच्छकुहितविरसपाणिए जुन्नकूवभिरिंडे तणपूलितं गहाय उस्सिंचाति, जं पडितसेसं तं जीहाए लिहति, से केस णं?, एवं तुब्भेहिवि अणंतरं सव्वट्ठे अणुत्तरा सव्वेऽवि सव्वलोए सद्दफरिसा अणुभूतपुव्वा तहवि तित्तिं ण गता, तो णं इमे माणुस्सए असुइए तुच्छे अप्पकालिए विरसे कामभोगे अभिलसह, एवं वेयालीयं णाम अज्झयणं भासति, 'संबुज्झह किन्न बुज्झह' एवं अट्ठाणउईए वित्तेहिं अट्ठाणउई कुमारा पव्वइता, कोइ पढमिल्लुएण संबुद्धे कोति बितिएणं ततिएणं०। जाहे ते सव्वे पव्वइता ताहे भरहेण बाहुबलिस्स पत्थवितं, ताहे सो ते पव्वइते सोऊण आसुरत्तो भणति- ते बाला तुमे पव्वाविता, अहं पुण जुद्धसमत्थो, किं वा ममंमि अजिते तुमे जितंति?, ता एहि अहं वा राया तुमं वा?, ताहे ते सव्वबलेण दोवि देसंते मिलिया, ताहे बाहुबलिणा भणितं- किं अणवराहिणा लोगेण मारिएण ?, तुमं अहं च दुयगा जुज्झामो, एवं होउत्ति, तेसिं पढमं दिट्ठिजुद्धं जातं, तत्थ भरहो पराजितो, पच्छा वायाए, तहिंपि भरहो पराजितो, एवं बाहुजुद्धेऽवि पराजितो, ताहे मुट्ठिजुद्धं जायं, तत्थवि पराजितो, ताहे सो एवं जिव्वमाणो विधुरो अह णरवती विचिंतेति-किं मन्ने एस चक्की जह दाणिं दुब्बलो अहयं, तस्सेवं संकप्पे देवता आउहं देंति डंडरयणं, ताहे सो तेण गहितेण धावति, बाहुबलिणा दिट्ठो गहितदिव्वरयणो, सगव्वं चिंतितं च अणेण-सममेतेणं भंजामि एतं, किं पुण तुच्छाण कामभोगाण कारणा?, भट्ठणिययपइन्नं मम अइवाइतुं ण जुत्तं, सोहणं मम भाउएहिमणुट्ठियं, धिरत्थु भोगाणं, जदि भोगा एरिसा अलाहि मम भोगेहिं, भावो, णहु जुज्झीहं अहंमजुज्झे पवत्तंमि, ताहे सो भणति- एतं ते रज्जं, अहं पव्वयामि, तेण तहिं भरहेण बाहुबलिस्स पुत्तो रज्जे ठवितो, पच्छा बाहुबली चिंतेति-अहं किं तायाणं पासं वच्चामि ?, ॥२१०॥
इहं चेव अच्छामि जाव केवलणाणं उप्पज्जति। एवं सो पडिमं ठितो, पव्वयसिहरो सामी जाणति तहवि ण पत्थवेति, अमूढ-

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता...........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥२११॥

मरीचेर-धिकारः

लक्खा तित्थगरा, ताहे संवच्छरं अच्छति काउस्सग्गेणं वल्लीविताणेण वेढितो पादा य वम्मिएण, पुन्ने संवत्सरे भगवं बंभी-सुंदरीओ पत्थवेति, पुव्विं ण पत्थिताओ जेण तदा सम्मं ण पडिवज्जिहिति, ताहे सो मग्गंतीहिं वल्लीहि य तणेहि य वेढितेण य महल्लेणं कुच्चेणं तं दट्ठूणं वंदितो ताहिं, इमं च भणितो- 'ण किर हत्थि विलग्गस्स केवलनाणं उप्पज्जइ'। एवं भणिऊण गताओ। ताहे सो पचिन्तितो 'कहिं एत्थ हत्थी ?, तातो य अलियं न भणति।' एवं चिंतितेण णातं, जहा माणहत्थी अत्थित्ति, को य मम माणो ?, तं वच्चामि भगवं वंदामि ते य साहुणोत्ति, पाओ उक्खित्तो, केवलनाणं च उप्पन्नं, ताहे गंतूणं केवलिपरि-साए ठितो। भरहोऽवि रज्जं भुंजति ताव मिरीयी सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जितो।

अह अन्नया कयाती० ॥ ३ ॥ १३७ ॥ मेरुगिरि० ॥ ३ ॥१३८॥ एवं विचिंतयंतस्स० ॥ ३ ॥ १३९ ॥ सो माणेण ण तरति गिहत्थत्तणं काउं, इहेव तल्लेसाए अच्छामित्ति इमं कुलिंगं विचिंतेति—

समणा तिदंडविरया० ॥ ३ ॥ १४० ॥ मणाई दंडो, अहं च एतेण पराजितो, तम्हा एते चेव वहामि वरं संभरंतो एतं मम चिंधं,

लोइंदियमुंडा संजता अहगं खुरेण ससिहाओ। थूलगपाणवहाओ वेरमणं मे सदा होउ॥ ३ ॥ १४१ ॥

इंदिएहिवि मज्झ इंदियाणि ण मुंडियाणि तो इंदिएहिं अमुंडिएहिं किं मम दव्वमुंडेणं ? तम्हा मम छिहली भवतु, खुरेण य करेमि, साधुणो य सव्वतो सव्वविरया, अहं च देसाओ करेमि। ॥२११॥

निक्किंचणा य समणा मज्झ य किंचणं कज्जेसु। पवित्तयं भवतु किंचणियावि भवतु (॥ ३ ॥ १४२ ॥)

भगवंत महावीरस्य तृतीय-भव मरीचि:, तस्य अधिकारो अत्र वर्तते

श्री आवश्यक-चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥२१२॥

श्रावक-वात्सल्यं

साधू सीलसुगंधा, अहगं च सीलेण दुग्गंधो, अहं वासेमि वत्थाणि सरीरगं च ।

ववगतमोहा समणा० गाथा ॥ ३ ॥ १४३ ॥ मोहो णाम अन्नाणं । सुक्कंबरा य समणा ० गाथा ॥३।१४४॥

सुक्कंबरा णिरंबरा य साधुणो, मम कासायाणि भवंतु सकसायस्स ।

वज्जेति वज्जभीरू० गाथा ॥ ३ १४५ ॥ वज्जणं नाम कम्मं तस्स भीता वज्जभीरू, बहूहिं जीवेहिं समाउलं जलारंभं, होउ मम परिमितेणं जलेण ण्हाणं च पियणं च, सव्वं मुसावायं, सव्वं अदिन्नादाणं, सव्वं बंभचेरं परिग्गहाओ सव्वतो इय विरतो।

एवं सो भइयमती० गाथा ॥ ३ ॥ १४६ ॥ तद्धितैर्हेतुभिर्युक्तं तस्स हिता तद्धिता सुट्ठु जुत्तां श्लिष्टमित्यनर्थांतरं, परिव्राजामिदं पारिव्राजं, पवत्तेति, सो तेसिं मज्झे उब्भड्डो दीसति तेण तस्स पासे सव्वो अल्लियति, जया तं पुच्छति ताहे अणगारधम्मं पन्नवेति, ताहे ते भणंति-किं तुमं ण करेसि ?, सो भणति-अहं ण तरामि मेरुगिरीसमभारे, जाहे तेण ते अक्खित्ता भवंति ताहे सामिस्स उवट्ठवेति । एवं सो तित्थगरेण समं विहरति ।

तेणं कालेणं तेणं समएणं समोसरणं भगवतो, ताहे भरहो रज्जं ओयवेत्ता ते य भाउए पव्वइए णाऊणं अद्धितीए भणति-किं मम इयाणिं भोगेहिं? अद्धितिं करेति, किं ताए पीवराएवि सिरीए ? जा सज्जणा ण पेच्छति० (गाथा) जदि भातरो मे इच्छंति तो भोगे देमि, भगवं च आगतो, ताहे भाउए भोगेहिं निमंतेति, ते ण इच्छंति वंतं असितुं, ताहे चिंतेति-एतेसिं चेव इयाणिं परिचत्तसंगाणं आहारादिदाणेणावि ताव धम्माणुट्ठाणं करेमीति पंच सयाणि सगडाण भरेऊणं असणं ४ ताहे निग्गतो, वंदिऊणं निमंतेति, ताहे सामी भणति-इमं आहाकम्मं पुणो य आहडं ण कप्पति साधूणं, ताहे सो भणति-ततो मम पुव्वपव-

॥२१२॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक-चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥२१३॥

त्तापि गेण्हंतु, तंपि ण कप्पति रायपिंडोत्ति, ताहे सो महदुक्खेण अभिभूतो भणति-सव्वभावेण अहं परिचत्तो तातेहिं, एवं सो ओहयमणसंकप्पो अच्छति, एत्थ य अंतरा सक्को देविंदो देवराया एयस्स अद्धितिं अवणेमित्ति ओग्गहं पुच्छति, सामी कहेति, पंचविहे उग्गहे--देविंदोग्गहे रायोग्गहे गिहवति० सागारिए० साहम्मिउग्गहे, ते पुण उत्तरुत्तरिया, देविंदोग्गहे रायोग्गहेण बाहिते ताहे सक्को भणति 'जे इमे भंते ! अज्जत्ताए समणा णिग्गंथा विहरंति एतेसि णं अहं ओग्गहं अणुजाणामित्ति वंदित्ता सुस्सूसति, ताहे भरहो भणति-अणुजाणामि जे भरहे वासे समणा णिग्गंथा०, ताहे सो तं भत्तपाणं आणीतं भणति किं कायव्वं ?, ताहे सक्को भणति-जे तव गुणुत्तरा ते पूएहि, ताहे तस्स चिंता जाता, जातिकुलबलपरिभोगेहिं णत्थि ममाहिंतो गुणुत्तरो, साहुणो गुणुत्तरा एए अम्हे निच्छंति, ताहे तस्स पुणोऽवि चिंता जाया, जहा-ममाहिंतो सावगा गुणुत्तरा, ताहे तं सावगाणं दिन्नं ।

माहनोत्पत्तिः

ताहे सो सक्कं भणति-तुब्भेहि केरिसेण रूवेण तत्थ अच्छह?, ताहे सक्को भणति-ण सक्का तं माणुसेण दट्ठुं,ताहे सो भणति-तस्स आकितिं पेच्छामि, ताहे सक्को भणति-जेण तुमं उत्तमपुरिसो तेण ते अहं दाएमि एगपदेसं, ताहे एगं अंगुलिं सव्वालंकारविभूसितं काऊण दाएति, सो तं दट्ठूण अतीव हरिसं गतो, ताहे तस्स अट्ठाहियं महिमं करेति ताए अंगुलीए आकितिं काऊण, एस इंदज्झयो, एवं वरिसे वरिसे इंदमहो पव्वत्तो पढमउस्सवो। भरहो भणति-'तुम सि देविंदो, अहं मणुस्सिंदो, भित्तामो, एवं होउ।

ताहे भरहो सावए सद्दावेत्ता भणति 'मा कम्मं पेसणादि वा करेह, अहं तुब्भं वित्तिं कप्पेमि, तुब्भेहिं पढंतेहिं सुणंतेहिं जिणसाधुसुस्सूसणं कुणंतेहिं अच्छियव्वं, ताहे ते दिवसदेवसियं भुंजंति, ते य भणंति-जहा तुब्भं जिता अहो भवान् वर्द्धते भयं मा हणाहित्ति, एवं भणितो संतो आसुरुत्तो चिन्तेति-केण हि जितो ?, ताहे से अप्पणो मती उप्पज्जति कोहादिएहिं जितो मित्ति, एवं ॥२१३॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता...........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥२१४॥

वेदोत्पत्तिः जिन-चक्र्यादिः

भोगपमत्तं संभारेंति, ताहे तस्स धम्मज्झाणं भवति किंचि कालं जाव सद्दाहिसु ण अक्खिप्पति, ताहे तं लोगेणं भुञ्जितुमारद्धं, ते महाणसिया जाणंति इमा अणवत्था, ताहे उवट्ठिता भरतरायिणो, ताहे राया भणति-पुच्छिज्जंतु को भवान् ?, श्रावकः ?, ताहे जे सावगा महंता ते पुच्छज्जंति-को भवान्? श्रावकः, श्रावकाणां कति व्रतानि ?, अस्माकं व्रतानि न सन्ति, अस्माकं पंच अनुव्रतानि सप्त शिक्षापदानि, ताहे पंचसु अणुव्वएसु सत्तसु सिक्खावएसु जे णिक्खमणपवेसं जाणंति तं जुतका कता, पच्छा रन्नो उवणीता, ते सव्वे कागणिरयणेण लंछिता, पुणरवि वुत्ता-छण्ह छण्ह मासाणं अणुयोगो जहा भवति, एवं ते उप्पन्ना माहणा णाम, जे तेसिं पुत्ता उप्पज्जंति ते साहूणं उवणिज्जंति, जति णित्थरंति तो लट्ठं,अहं न नित्थरंति ताहे अभिगयाणि सड्ढाणि भवंति, अन्नोऽवि जो कोऽवि तत्थ उवट्ठाइ तंपि ते उवणेति भरहस्स, ताहे सो काकणिरयणेण अंकिज्जति, जेऽवि ते चेडा निम्माया भवंति तेसिंपि भरहो कागणिरयणेण चिंधं करेति, पुणरवि वुं (भु) त्ता जहा छण्हं छण्हं मासाणं अणुओगो भवति । एवं ते उप्पन्ना माहणा, कामं जदा आइच्चजसो जातो तदा सोवन्नियाणि जन्नोवइयाणि । एवं तेसिं अट्ठ पुरिसजुगाणि ताव सोवन्निताणि । राया आइच्चजसे, महाजसे अतिबले य बलभद्दो । बलविरिय कत्तविरिते, जलाणाविरि दंडविरिए य ॥ ३ ॥ १५० ॥

एतेहिं अट्ठहिं राइहिं जो उसभसामिस्स महामउडो आसि सो चातितो वोढुं, सेसेहिं न चाइओ । एत्थंतरे चिरंतरगंडिता विभासियव्वा जाव सगरो जातोत्ति । आदिच्चजसादीहिं अट्ठहिं अड्ढभरहं भुत्तं , सेसेहिं भयणा ॥

एवं- अस्सावगपडिसेहे छट्ठे छट्ठे य मासि अणुओगो । कालेण य मिच्छत्तं [जओ] जिणंतरे साधुवोच्छेदो ॥ ३ ॥ १५२ ॥ द्दाणं च० चिरंतनगाथा ॥ ३ ॥ १५३ ॥ भरहेण दिन्नं, लोगोऽवि दातुं पवत्तो भरहपूजितत्ति- ॥२१४॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

चक्रिवासु-देवादिः

काउं, आरिया वेदा कता भरहादीहिं तेसिं सज्झातो होउत्ति, तेसु वेदेसु तित्थगरथुतीओ जतिसावगधम्मो संतिकम्मादि य वण्णिज्जति, अणारिया पुण पच्छा सुलसायाज्ञवल्क्यादिभिः कृता ॥ इति पुच्छात्ति दारं ॥

पुणरविय समोसरणे० ॥ ३ ॥ १५४॥ जिण चक्कि० ॥ ३ ॥१५५॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं भगवं अट्ठावयमागतो विहरमाणो, समोसरणं, भरहो णिग्गओ महिड्ढिए, वंदित्ता जिणिंदमहिमं पेच्छंतो पुच्छति, जहा–ताता ! जारिसया लोगगुरू केवली तुब्भे सरिसया एत्थ किमन्नेवि भविस्संति ?, आमं, भगवं ! केवतिया ?, अह भणति जिणवरिंदो एरसिया तेवीसं अजितादि, तेसिं वन्नो पमाणं णामं गोत्ताइं आयुआइं मातिपितरो परियायो गती य सव्वा वत्तव्वया विभासियव्वा ।

ताहे पुच्छति जारिसोमि अहं एरिसा अन्ने ताता !, अह भणति--एक्कारस सगरादि होहिंति, तेसिं वन्न पमाणादि । ताधे सामी इमाणि णव जुगलगाणि अपुट्ठो चेव वागरेति । णव बलदेवा णव वासुदेवा । वन्नादि धम्मायरिया, को वा कहिं तित्थगरे अंतरे वा सव्वा वत्तव्वता विभासियव्वा ।

उसभे भरहो अजिते सगरो मघवं सणंकुमारो य । धम्मस्स य संतिस्स य, जिणंतरे चक्कवट्टिदुगं ॥ ३-२१३ ॥
संती कुंथू य अरो अरहंता चेव चक्कवट्टी य । अरमल्लि अंतरंमि य । हवति सुभूमो य कोरव्वो ॥ ३-२१४ ॥
मुणिसुव्वए णमिंमि य होंति दुवे पउमनाभ हरिसेणा । णमिणेमिसु जयनामा अरिट्ठपासंतरे बंभो ॥ ३-२१५ ॥ ॥२१५॥
पंच सत अद्धपंचम, बायाला चेव अद्धधणुयं च । चत्ता दिवड्ढ धणुयं च चउत्थे पंचमे चत्ता ॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता...........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक-चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥२१६॥

चक्रिवासु-देवादिः

पणुतीसा तीसा पुण अट्ठावीसा य वीस धणुगाणि । पन्नरस बारसेवय अपच्छिमा सत्त य धणूणि ॥
एस ताव उस्सेहो चक्कीणं, इयाणिं आउगं तेसिं ।

चउरासीति बावत्तरी य पुव्वाण सयसहस्साइं । पंच य तिन्नि य एगं च सयसहस्सा उ वासाणं ॥
पंचणउतिसहस्सा चउरासीती य अट्ठमे सट्ठी । तीसा य दस य तिन्नि य अपच्छिमे सत्त वाससया ॥
एवं ता आयुगं गतं, इयाणिं गती-'अट्ठेव गता मोक्खं' ॥

पंचऽरिहंते वंदंति केसवा पंच आणुपुव्वीए । सेज्जंस तिविट्ठादी धम्म पुरिससीह पेरंता ॥ ३-२०६ ॥
अरमल्लिअंतरे दोन्नि केसवा पुरिसपोंडरिय दत्ता । मुणिसुव्वयणमि अंतरे णारायण कण्ह नेमिंमि ॥ ३-२०७ ॥
पढमो धणूणमसिती सत्तरि सट्ठी य पन्न पणयाला । अउणत्तीसं च धणू छव्वीसा सोलस दसेव ॥
उच्चत्तं गतं—चउरासीति बिसत्तरि सट्ठी तीसा य दस य लक्खाइं । पन्नट्ठि सहस्साइं छप्पन्ना बारसेगं च ॥
आउगं गतं —एगो य सत्त० (३-२००) । ॥ अणिदाणकडा० (३-२०१) । ॥ अट्ठंतकडा रामा० (३-२०२) । ॥
चक्किदुगं हरिपणगं पणगं चक्कीण केसवो चक्की । केसव चक्की केसव दुचक्कि केसी य चक्की य ॥३-२०८ । तिविट्ठू०
(३-४० भा.) अयले (३-४१) आसग्गीवे (३-४२) । ॥ एते खलु पडिसत्तू० (३-४३ भा.) । ॥ इयाणिं जो चक्कवट्टी ॥२१६॥
वासुदेवो वा जंमि जिणंतरे आसि तं भण्णति, एतेण संबंधेण जिणंतराणि कालतो णिदंसिज्जंति । तं जहा—

वासुदेव और बलदेवानां वर्णनं

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥२१७॥

जिनान्त-राणि

उसभो वरवसभगती ततियसमापच्छिमंमि कालंमि । उप्पन्नो पढमजिणो भरहपिता भारहे वासे ॥ १ ॥ पन्नासा लक्खेहिं कोडीणं सागराण उसभाओ । उप्पन्नो अजियजिणो ततिओ तीसाए लक्खेहिं ॥ २ ॥ जिणवसभसंभवाओ दसहिं लक्खेहिं अयरकोडीणं । अभिणंदणो य भगवं एवइकालेण उप्पन्नो ॥ ३ ॥ अभिणंदणाओ सुमती णवहिं लक्खेहिं अयरकोडीणं । उप्पन्नो सुहपन्नो सुप्पभनामस्स वोच्छामि ॥ ४ ॥ णउईय सहस्सेहिं कोडीणं सागराण पुन्नाणं । सुमतिजिणाओ पउमो एवति कालेण उप्पन्नो ॥ ५ ॥ पउमप्पभनामाओ णवहिं सहस्सेहिं अयरकोडीणं । सुहपुन्नो संपुन्नो सुपासनामो समुप्पन्नो ॥ ६ ॥ कोडीसएहिं णवहिं उ सुपासणामा जिणो समुपन्नो । चंदप्पभो पभाए पभासयंतो उ तेलोक्कं ॥ ७ ॥ णउतीय तु कोडीहिं ससीओ सुविहिजिणो समुप्पन्नो । सुविहिजिणाओ णवहिं कोडीहिं सीतलो जातो ॥ ८ ॥ सीतलजिणाउ भगवं सेज्जंसो सागराण कोडीए । सागरसयऊणाए वरिसेहिं तथा इमेहिं तु ॥ ९ ॥ छव्वीसाए सहस्सेहिं चेव छावट्ठिसयसहस्सेहिं । एतेहिं ऊणिया खलु कोडी मग्गिल्लिया होति ॥ १० ॥ चउपन्ना अयराणं सेज्जंसाओ जिणो उ वसुपुज्जो । वसुपुज्जाओ विमलो तीसहिं अयरेहिं उप्पन्नो ॥ ११ ॥ विमलजिणा उप्पन्नो णवहिं तु अयरेहि अणंतइजिणोवि । चउसागरणामेहिं अणंतईओ जिणो धम्मो ॥ १२ ॥ धम्मजिणाओ संती तिहिं तिचउभागपलियऊणेहिं । अयरेहिं समुप्पन्नो पलियद्धेणं तु कुंथुजिणो ॥ १३ ॥ पलियचउब्भागेणं कोडिसहस्सूणएण वासाणं । कुंथूओ अरणामा कोडिसहस्सेण मल्लिजिणो ॥ १४ ॥ मल्लिजिणाओ मुणिसुव्वओऽवि चउपन्नवासलक्खेहिं । सुव्वयनामातो णमी लक्खेहिं छहिं तु उप्पन्नो ॥ १५ ॥ पंचहिं लक्खेहिं ततो अरिट्ठनेमी जिणो समुप्पन्नो । तेसीतिसहस्सेहिं सतेहिं अद्धट्ठमेहिं वा ॥ १६ ॥ नेमीओ पासजिणो पासजिणाओ य होइ वीरजिणो । अड्ढाइज्जसएहिं गतेहिं चरिमो समुप्पन्नो ॥१७॥ ठवणा

॥२१७॥

अत्र भगवंत ऋषभात् आरभ्य भगवंत वीर पर्यन्त जिनानाम् अन्तरं दर्शयते |

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥२१८॥

जिनान्तराणि

कोडि लक्ख ५० उसभ	कोडि लक्ख ३० अजित	कोडिलक्ख १० संभव	कोडि लक्ख ९ अभिनंदन
कोडीण णउतिसहस्सा ९० सुमति	कोडीण णव सहस्सा ९ पउमप्पह	कोडीण णवसयाइं ९ सुपास	कोडीओ णउति ९० चंदप्पभ
कोडिओ णव ९ पुप्फदंत	कोडी ऊणाय १०० सीतल	६६२६००७ सागर५४वरि० सेज्जंस	सागर ३० वासुपुज्ज
सागर ९ विमल	सागर ४ अणंतइ	सागर३ ऊणाइं पलियचउब्भागेहिं ३ धम्मस्स	
पलितद्धं १२ संति	पलित चउब्भाओ१उणउ वासकोडि१ कुंथुस्स	वास कोडि १ अरस्स	वास लक्ख ५४ मल्लिस्स
वास लक्ख ६ मुणिसु.	वरिसलक्ख ५ नमिस्स.	वास सहस्सा ८३७५० णेमिस्स	वाससया २५० पार्श्व वर्धमान.

॥२१८॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥२१९॥

चक्र्यादियंत्रोत्पादः

एत्थ य असंमोहत्थं जिणचक्किवासुदेवाणं जो जम्मि काले अंतरे वा जं वा पमाणं आयुं वा एयस्स सुहपरिन्नाणत्थं इमो उवाओ—बत्तीसं घरयाइं काउं तिरियाययाहिं रेहाहिं । उड्डायहाहिं काउं पंच घरयाइं तो पढमे ॥ १ ॥ पन्नरस जिण निरंतर सुन्न दुगं ति जिण सुन्नतियगं च। दो जिण सुन्न जिणिंदो सुन्न जिणो सुन्न दोन्नि जिणा॥२॥ बितियपंतिठवणा-दो चक्की सुन्न तेरस पण चक्की सुन्न चक्की दो सुन्ना । चक्की सुन्न दु चक्की सुन्नं चक्की दुसुन्नं च ॥ ३ ॥ ततियपंतिठवणा—दस सुन्न पंच केसव पण सुन्नं केसी सुन्न केसी य । दो सुन्न केसवोऽविय सुन्नदुगं केसव तिसुन्नं ॥४॥ चउत्थपंतीए पमाणं पुव्वभणितं, पंचमपंतीए आउयं तहेव. तत्थ इमा ठवणा (४४ भा.) अह भणति णरवरिंदो

तत्थ मिरीई नामं० (३-२०९) तं दाएइ (३-२१०) आदिगरो दसाराणं० (३-२११) पोतणाणामं णगरी तस्स पहाणा, तहा महाविदेहे मूयाए णगरीए पियमित्तो णाम चक्कवट्टी ।
तं वयणं सोऊणं (३-२१२) अंचिताणि तणूरुहाणि-रोमाणि सरीरे जस्स ' सो विणएणमुवबओ० (३-२२३) तिक्खुत्तोत्ति त्रिकृत्वः तिन्नी वारे इत्यर्थः । वग्गुत्ति वा वायात्ति वा वयणंति वा एगट्ठा ॥

लाभा हु ते सु० (३-२१४) लाभा नाम लाहगा । दस चोद्दसमो णाम चउव्वीसतिमो ।
आदिगरो दसाराणं (३-२११) णवि ते पारिव्वज्जं वंदामि अहं, इमं च ते जम्मं । जं होहिसि तित्थगरो अपच्छिमो तेण वंदामि ॥ (३-२१५) ॥२१९॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥२२०॥

शलाकायंत्रं

ऋषभ	अजित	संभव	अभिनंदन	सुमति	पद्म	सुपार्श्व	चंद्र	सुविधि	शीतल	श्रेयांस	वासुपूज्य	विमल	अनन्त	धर्म	०	०
भरह	सगरो	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	मघवा	सनत्कुमा.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	तिविठू	दुविठू	सयंभू	पुरिसोत्तम	पुरिस०	०	०
५००	४५०	४००	३५०	३००	२५०	२००	१५०	१००	९०	८०	७०	६०	५०	४५	४२	४०॥
८४पूर्वलक्ष	७२	६०	५०	४०	३०	२०	१०	२	१	८८लक्षवर्ष	७२	६०	३०	१०	५	३

संति-णाहो	कुंथू	अरो	०	०	०	मल्लि	मुणि-सुव्वय	०	णमि	०	नेमि	०	पास	वीरो
संति-णाहो	कुंथू	अरो	०	सुभूम	०	०	पउम	०	हरिस	जयना	०	बंभदत्त	०	०
०	०	०	पुरिसपुंड	०	दत्त	०	०	णाराय	०	०	कण्हो	०	०	०
धणु ४०	धणु ३५	धणु३०	धणुह२९	धणुह२८	धणुह२६	धणुह२५	धणुह२०	धणु. १६	धणु.१५	धणु. १२	धणु.१०	धणु.७	हत्था-९	हत्थ-७
वरि-सल० १	वाससह-स्स ९६	वास-सह० ८४	वासस० ६५	वाससह-स्स ६०	वासस० ५६	वासस० ५५	वासस० ३०	वासस० १२	वासस० १०	वासस० ३	वासस० १	वाससत ७	वाससया १	वरिस ७२

॥२२०॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता..........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥२२१॥

एवन्नं थोऊणं०(३-२२६)तं वयणं सोऊणं०(३-२२७)जदि वासुदेव०(३-२२८)अहयं च दसाराणं पिया य मे चक्कवट्टिवंसस्स। अज्जो तित्थगराणं[पढमोत्ति वट्टति]अहो कुलं उत्तमं मज्झ।(३-२२९)एत्थं नीयागोयं कम्मं निबद्धं। पुच्छत्ति गतं मदकरणं

इयाणि नेव्वाणंति दारं—

एवं च सामी विहरमाणो थोवूणगं पुव्वसयसहस्सं केवलिपरियायं पाउणित्ता पुणरवि अट्ठावए पव्वए समोसढो, तत्थ चोद्दसमेण भत्तेण पाओवगतो, तत्थ माहबहुलतेरसीपक्खेणं दसहिं अणागारसहस्सेहिं सद्धिं संपरिवुडे संपलियंकाणिसण्णो पुव्वण्हकालसमयंसि अभिइणा णक्खत्तेणं सुसमदूसमाए एगूणणउतीहिं पक्खेहिं सेसेहिं खीणे आउगे णामे गोत्ते वेयणिज्जे कालगते जाव सव्वदुक्खप्पहीणे। चुलसीतीए जिणवरो समणसहस्सेहिं परिवुडो भगवं। दसहिं सहस्सेहिं समं निव्वाणमणुत्तरं पत्तो ॥१॥ भरहो य तेलोक्कबंधुणा ताएण भत्तं पच्चक्खातान्ति सोतुं परमसोयसंतत्तहिदयो पादेहिं चेव पधावितो, सरुहिरकद्दमेहि य चालिओ, सो तेण परिस्समो न चेव वेइओ, ताहे सामिं वंदित्ता पज्जुवासति परमदुही, तं समयं च णं सक्कस्स आसणचलणं, ओहीए पउंजणं, पणामादिकरणं जीतसरणं देवादिआहूयनं जहा जम्मणे जाव देवेहिं देवीहि य संपरिवुडे जाव जेणेव भगवं तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता विमणो णिराणंदे अंसुपुन्नयणे तित्थगरं तिक्खुत्तो आदाहिणपयाहिणं करेति, करेत्ता नच्चासन्ने णाइदूरे सुस्सूसमाणे जाव पज्जुवासति। एवं सव्वे देविंदा सपरिवारा जाव अच्चुए आणेयव्वा, एवं जाव भवणवासीणवि इंदा, वाणमंतराणं सोलस,जोइसियाणं दोन्नि, णियगपरिवारा नेयव्वा ' जाव य असुरावासा जाव य अट्ठावओ णगवरिंदो। देवेहि य देवीहि य अविरहियं संचरंतेहि ॥१ ॥ एवं सव्वेहिं देवावासेहिं, एवं तत्थ भगवंतो देविंदनरिंदेहिं परिवुडा णिव्वुयात्ति। इयाणिं कूडा थूभजिणघरे, एत्थ दो गाथा— ॥२२१॥

अत्र भगवंत ऋषभस्य निर्वाण-वर्णनं क्रियते

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥२२२॥

णेव्वाण चितगा ( ) एवं निव्वाणं गते भगवंते तएणं से सक्के ते बहवे भवणवातिवाणमंतरजोतिसवेमाणिए देवे एवं वयासी—खिप्पामेव भो णंदणवणाओ सरसाइं गोसीसवरचंदणकट्ठाइं साहरह २ ततो चितगाओ रएह, एगा वट्टा पुव्वेणं सामिस्स, एगा तंसा दक्खिणेणं इक्खागकुलुप्पन्नाणं, एगा चउरंसा अवरेणं अवसेसाणं अणगाराणं, तेऽवि तहेव करेंति। तए णं से सक्के आभिओगे देवे सद्दावेति सद्दावेत्ता एवं वयासी—'खिप्पामेव भो! खीरोदगसमुद्दाओ खीरोदगं साहरह, तेऽवि तहेव साहरंति, तते णं से सक्के तित्थगरसरीरगं खीरोदएणं ण्हाणेइ, ण्हाणित्ता सरसेणं गोसीसवरचंदणेण अणुलिंपति २ हंसलक्खणं पडसाडगं नियंसेति नियंसेत्ता सव्वालंकारविभूसियं करेति, तए णं भवणवई जाव वेमाणिया गणहरसरीरगाइं अणगारसरीरगाणि य खीरोदएण ण्हावेंति सरसेणं गोसीसचंदणेणं अणुलिंपंति २ अहयाइं दिव्वाइं चेव देवदूसजुयलाइं नियंसेंति २ सव्वालंकारविभूसियाइं करेंति। तए णं से सक्के बहवे भवणवति जाव वेमाणितादि एवं वयासी-खिप्पामेव भो! ईहामिगउसभतुरग जाव वणलतभत्तिचित्ताओ ततो सीयाओ विउव्वह, एगं सामिस्स, एगं गणहराणं, एगं अवसेसाणं, तेऽवि तहेव करेंति। तते णं से सक्के विमणे जाव अंसुपुन्ननयणे सामिस्स विणट्ठजम्मजरामरणस्स सरीरगं सीयं आरुभति जाव चितगाए ठवेति, तएणं ते बहवे भवणवति जाव वेमाणिया गणहराणं अणगाराण य विणट्ठ जाव सरीरगाइं सीयं आरुभेति जाव चितगाए ठावेंति। तएणं से सक्के अग्गिकुमारे देवे सद्दावेति सद्दावेत्ता 'खिप्पामेव भो! तिसुवि चितगासु अगणिकायं विउव्वह, तएणं ते अग्गिकुमारा विमणा निराणंदा अंसुपुन्ननयणा जाव विउव्वंतित्ति, अग्गिकुमारा देवा मुखतो अग्गिं विधा-सृजः, ततःप्रतीतं अग्गिमुखा वै देवाः इति। ताहे तहेव वाउकुमारा वातं विउव्वंति, जाव अगणिकायं उज्जालेंति। तए णं से सक्के ते बहवे भवणवति जाव एवं वयासी—खिप्पामेव भो तिसुवि चितगासु

निर्वाणम्

॥२२२॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥२२३॥

निर्वाणम्

अगुरुं तुरुकं घतं मधुं च भारग्गसो य कुंभग्गसो य साहरह, तेऽवि जाव साहरंति। ताहे मंसं सोणितं च झामितं, तएणं तहेव मेहकुमारा देवा तिसुवि चितगाओ खीरोदएणं निव्वावेंति। ताहे सक्को सामिस्स उवरिल्लं दाहिणं सकहं गेण्हति, ईसाणो उत्तरिल्लं गेण्हति, चमरो हेट्ठिल्लं दाहिणं बली हेट्ठिल्लं वामं, अवसेसा भवण जाव वेमाणिया जहारिहं अवसेसाइं अंगमंगाइं गेण्हंति।

तए णं से सक्के बहवे भवणवति जाव वेमाणिया एवं वयासी--खिप्पामेव भो तओ चेइअथूभे करेह, एगं सामिस्स एगं गणहराणं एगं अवसेसाणं, तेऽवि तहेव करेंति। तए णं ते बहवे भवणवति जाव वेमाणिया देवा देवीतो य तित्थगरस्स भयवतो परिणिव्वाणमहिमं करेंति, करेत्ता जेणेव णंदीसरवरे दीवे तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता अट्ठाहियाओ महामहिमाओ करेंति। एवं जहा जंबुद्दीवपन्नत्तीए जाव महिमाओ करेत्ता जेणेव साइं साइं विमाणाइं जेणेव साइं साइं भवणाइं जेणेव साओ साओ सभाओ सुहम्माओ जेणेव माणवगा चेतितखंभा तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता वइरामएसु गोलवट्टसमुग्गएसु जिणस्स सकहाओ पक्खिवंति पक्खिवित्ता विपुलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरंतित्ति।

लोगो य पच्छा छारं संचिणाति, तंमि छारेण डोंगरा कता, तप्पभितिं छारेणं डोंगरा लोगो करेइ, लोको सद्धाए तेण छारेण समालभति, कोइ पोंडगाणि करेति, तप्पभतिं लोगो छारेण समालभतीति, ते च सड्ढा अग्गिसकधादीणि जायंति, ताहे देवेहिं भणितं--इमे केरिसगा जायगा ?, ततो जायगसद्दो जातो, ताए अग्गिं घेत्तुं ते सएसु सएसु गेहेसु ठवेंति, एवं ते आहियग्गिणो जाता। ते य अग्गिणो जो सामिस्स तणओ सो दोऽवि संकमति, इक्खागाणं तणओ इतरं संकमति, सेसअणगाराणं तणओ ण संकमतित्ति। भरहो य तत्थ चेतियघरं करेति वड्ढतिरयणेणं जोयणायामं तिगाउतुस्सेहं सीहनिसादि सिद्धायतणपलिभागं अणेग- ॥२२३॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥२२४॥

अष्टापदे चैत्यं

खंभसयसंनिविट्ठं । एवं जहा वेयड्ढसिद्धाततणं जंबुद्दीवपन्नत्तीए जाव झता, तस्स णं चउद्दिसिं चत्तारि दारा सेता वरकणगथू-भिताग्गा जाव पडिरूवा । तेसिं णं दाराणं उभतो पासं दुहतो निसीहिताओ सोलस सोलस चंदणकलसा वन्नओ एवं नेयव्वं जाव सोलस सोलस वणमालाओ अट्ठट्ठमंगलगा। तेसि णं दाराणं पुरतो पत्तेयं २ मुहमंडवे पन्नत्ते, अणेगखंभसय० सभा वन्नओ, तेसिं णं मुहमंडवाणं पत्तेयं पत्तेयं तिदिसिं तओ दारा पन्नत्ता, सेता वरकणगथूभिताग्गा दारवन्नओ, जाव सोलस वणमालाओ । तेसि णं मुहमंडवाणं उल्लोओ पउमलताभत्तिचित्ता जाव भूमिलताभत्तिचित्ता अंतो बहुसम०, तेसिणं मुहमंडवाणं उप्पिं अट्ठट्ठ मंगलता पन्नत्ता सोत्थिय जाव कत्थती य छत्ता, तेसिं णं मुहमंडवाणं पुरतो पत्तेयं पत्तेयं पेच्छाघरमंडवे पन्नत्ते, मुहमंडवस्स पमाणवत्तव्वया सरिसा जाव बहुसमरमणिज्जाणं भूमिभागाणं बहुमज्झदेसभागे पत्तेयं पत्तेयं अक्खाडए पन्नत्ते, ते णं अक्खाडगा सव्ववइरामया अच्छा जाव पडिरूवा । तेसि णं अक्खाडगाणं बहुमज्झदेसभागे पत्तेयं पत्तेयं उप्पिं सीहासणा । तासिं उप्पिं विभाये लंबूसा, वन्नतो। तेसिणं पेच्छाघरमंडवाणं पुरतो पत्तेयं पत्तेयं मणिपेढिया पन्नत्ता सव्वमणिमया अच्छा जाव पडिरूवा । तासिणं मणिपेढियाणं उप्पिं पत्तेयं पत्तेयं चेइयथूभे पन्नत्ते, ते णं चेतियथूभा संखंक जाव सव्वरयणामया अच्छा उप्पिं अट्ठट्ठमंगलता । तेसिणं चेतिय-थूभाणं पुरतो पत्तेयं पत्तेयं चउद्दिसिं चत्तारि मणिपेढियाओ मणिमया । तासिं णं मणिपेढियाणं उप्पिं पत्तेयं पत्तेयं चत्तारि जिणपडिमाओ जिणुस्सेहपमाणमेत्ताओ सव्वरयणामतीतो संपलियंकणिसन्नाओ थूभाभिमुहीओ चिट्ठति, तंजहा—रिसभा वद्ध-माणा, चंदप्पभा, वारिसेणा। तेसिणं चेतियथूभाणं पुरतो पत्तेयं पत्तेयं मणिपेढिता पन्नत्ता सव्वमणिमतीओ । तासिणं पत्तेयं पत्तेयं चेतियरुक्खा वन्नओ जाव लताओ उप्पिं अट्ठट्ठ मंगलगा । तेसिणं चेइयरुक्खाणं पुरओ पत्तेयं पत्तेयं मणिपेढिया सव्वमणिमया । ॥२२४॥

अत्र वैताढ्यपर्वत-स्थित शाश्वत-जिनालयस्य वर्णनं क्रियते

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥२२५॥

अष्टापदे चैत्यं

तासिं उप्पिं पत्तेयं पत्तेयं महिंदज्झए वइरामए जाव अट्ठट्ठ मंगलगा, तेसिणं महिंदज्झयाणं पुरतो पत्तेयं पत्तेयं णंदापुक्खरणीतो जाव तिसोणपडिरूवगा तोरणाइं। तत्थणं चेइयघरे अडयालीसं दसगा मणोगुलियाणं पुरत्थिमेणं सोलस दसगा, पच्चत्थिमेणं सोलस दसगा दाहिणेणं अट्ठ दसगा उत्तरेणं अट्ठदसगा। तासु णं मणोगुलियासु बहवे सुवन्नरुप्पमया फलगा। एवं जहा सभाए जाव दामा चिट्ठंति। तत्थणं चेइए अडयालीसं दसगा गोमाणसिगाणं पुरत्थिमेणं सोलस जहा मणगुलिया, तासु बहवे सुवन्नरुप्पमता फलगा। फलएसु णागदंता। णागदंतएसु रजतामया सिक्कगा, सिक्कएसु धूवघडिताओ। तत्थणं चेतियउल्लोओ पउमलताभत्तिचित्तो जहा सूरियाभे। तस्स णं चेतियस्स अंतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे वन्नओ। तस्सणं बहुमज्झदेसभाए मणिपेढिया सव्वमणिमया जाव पडिरूवा। तीसे णं उप्पिं देवच्छंदए सव्वरयणामए अच्छे जाव पडिरूवे। तत्थ णं देवच्छंदए चउवीसाए तित्थगराणं नियगप्पमाणवन्नेहिं पत्तेयं पत्तेयं पडिमाओ कारेति। तासि णं इमेतारूवे वन्नावासे पण्णत्ते, तंजहा-अंकामयाइं णक्खाइं अंतोलोहितक्खपडिसेकाइं तवणिज्जमया हत्थपायतला कणगमया पादा कणगामयीतो जंघाओ कणगमया जाणू कणगामया ऊरु कणगामयीओ गायलट्ठीओ रिट्ठमईओ रोमरातीओ तवणिज्जमयीओ णाभीओ तवणिज्जमया बुब्बुया तवणिज्जमया सिरिवच्छा कणगामतीओ बाहाओ कणगामईओ गीवाओ रिट्ठामयाइं मज्झाइं पवालमया ओट्ठा फालितामया दंता तवणिज्जमतीओ जीहाओ तवणिज्जमया तालुया कणगमतीओ णासाओ अंतोलोहितक्खपडिसेगाओ रिट्ठामयाइं अच्छिपत्ताइं अंकमयाइं अच्छीणि अंतोलोहियक्खपडिसेकाइं रिट्ठामतीओ पुलकामतीओ दिट्ठीओ रिट्ठामयीओ भुमुकाओ कणगामया कवोला कणगामया सवणा कणगामया णिडालपट्टा, वइरामतीओ सीसघडीओ तवणिज्जमयीओ केसंतभूमीओ रिट्ठमया उवरिमुद्धया। एवं नियगवन्नवि भासा कायव्वा। ॥२२५॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

तासिणं जिणपडिमाणं पिट्ठओ एगमेगा छत्तधरा पडिमा हिमरययकुंदेदुप्पगासं सकोरंटमल्लदामं मणिमुत्तसिलप्पवालजालं फलिहदंडं धवलं आतपत्तत्तयं गहाय सलीलं धारेमाणीओ २ चिट्ठंति । तासिणं जिणपडिमाणं उभतो पासं दो दो चामरधारपडिमाओ चंदप्पभवइरवेरुलियणाणामणिरयणखचितचित्तदंडाओ सुहुमरयतदीहवालाओ संखकुंददगरयअमयमधियफेणपुंजसंनिकासाओ चवलाओ चामराओ गहाय सलीलं वीयेमाणीओ २ चिट्ठंति । तासिणं जिणपडिमाणं पुरओ दो दो णागपडिमाओ दो दो जक्खपडिमाओ दो दो भूतपडिमाओ दो दो कुंडधारगपडिमाओ सव्वरयणामयीओ । तत्थ णं देवच्छंदए चउवीसं घंटाओ चउव्वीसं चंदणकलसा, एवं एतेणं अभिलावेणं भिंगारा आदंसा थाला पातीओ सुपइट्ठा मणगुलिया वातकरगा चित्ता रयणकरंडा हयकंठा गयकंठा णरकंठा जावा उसभकंठा । पुप्फचंगेरीओ एवं मल्लचुण्णगंधवत्थआभरण०चउव्वीसं पुप्फपडला, एवं जाव चउव्वीसं आभरणपडलगा, चउव्वीसं लोमहत्थगपडलगा, चउव्वीसं सीहासणा, एवं छत्ता चामरा, चउव्वीसं तेल्लसमुग्गा एवं जाव चउव्वीसं धूयकडुच्छुयाचि । तस्स णं चितियस्स उप्पिं अट्ठट्ठमंगलगा सेया जाव उप्पलहत्थगा य । एवं तं चेइयं अणेगखंभसयसंनिविट्ठं अब्भुग्गतसुकतवयरवेइयागं तोरणवररइयसालिभंजियं सुसिलिट्ठविसिट्ठलट्ठसंठितपसत्थवेरुलियविमलखंभं णाणामणिकणगखतितउज्जलबहुसमसुविभत्तभूमिभागं ईहामियउसभतुरगणरमकरविहगवालकिंनररुरुसरभचमरकुंजरवणलतपउमलत---भत्तिचित्तं खंभुग्गतवइरवेइयापरिगताभिरामं विज्जाहरजमलजंतजुत्तमिव अच्चिसहस्समालिणीयं रूवगसहस्सकलितं भिसमीणं भिब्भीसमीणं चक्खुल्लोयणलेस्सं सुहफासं सस्सिरीयरूवं कंचणमणिरयणथूभियागं णाणाविहपंचवण्णघंटापडागपरिमंडियग्गसिहरं धवलं मिरीयिकवयं विणिम्मुयंतं लाउल्लोइयमहियं गोसीससरसरत्तचंदणदद्दरदिण्णपंचंगुलितलं उवचियवंदणकलसं चंदणघडसुकत-

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥२२७॥

तोरणपडिदुवारदेसभागं आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावं पंचवण्णसरससुरभिमुक्कपुप्फपुंजोवयारकलितं कालागरुपव-रकुंदुरुक्कतुरुक्कधूवमघमघेंतगंधुद्धुताभिरामं सुगंधवरगंधगंधितं गंधवट्टिभूतं अच्छरगणसंघसंविकिन्नं दिव्वतुडितसद्दसंपणदितं सव्वरयणामयं अच्छं जाव पडिरूवं कारवेत्ता भातुसयस्स य तत्थेव पडिमाओ कारवेति, अप्पणो य पडिमं पज्जुवासंतियं, सयं च थूभाणं एगं तित्थगरस्स व सेसाणं एगूणगस्स भाउयसयस्स, मा तत्थ कोइ अतिगमस्सतित्ति लोहमणुया ठविया जंताउत्ता, जेहिं तत्थ मणुया अइगंतुं ण सक्केंति। खंतूण य भंजूण य पासाइं दंडरयणेणं छिन्नकडगं काऊण अट्ठ पयाणि करेंति, जोयणे जोयणे पदं, पच्छा सगरपुत्तेहिं अप्पणो कित्तणनिमित्तं गंगा आणीया डंडरयणेणं। भरहोवि कालेणं अप्पसोगो जातो। ताहे पुणरवि भोगे भुंजितुं पवत्तो। एवं तस्स पंच पुव्वसयसहस्साइं अइक्कंताइं भोगे भुंजमाणस्स। इयाणिं भरहस्स दिक्खात्ति, कविलवत्तव्वया पच्छा संबंधा भन्निहिती। तत्थ—

अष्टापदे चैत्यं भरतस्य दीक्षाकेवले

आयंसघरपवेसो० ॥ ३ ॥ २४९ ॥ अह अन्नया कयाति सव्वालंकारविभूसितो आयंसघरं अतीति, तत्थ य सव्वंगिओ पुरिसो दीसति, तस्स एवं पेच्छमाणस्स अंगुलेज्जगं पडियं, तं च तेण ण णायं पडियं, एवं तस्स पलोएंतस्स जाहे तं अंगुलिं पलोएति जाव सा अंगुली न सोहति तेण अंगुलीज्जएण विणा, ताहे पेच्छति पडियं, ताहे कडगंपि अवणेति, एवं एक्केक्कं आभरणं अवणेंतेण सव्वाणि अवणीताणि, ताहे अप्पाणं पेच्छति, उच्चियपउमं व पउमसरं असोभमाणं पेच्छइ, पच्छा भणति-आगंतुएहिं दव्वेहिं विभूसितं इमं सरीरगंति, एत्थं संवेगमावन्नो। इमं च एवं गतं सरीरं, एवं चिंतेमाणस्स ईहावूहामग्गणगवेसणं करेमाणस्स अपुव्वकरणं झाणं अणुपविट्ठो केवलणाणं उप्पाडेति। तत्थ सक्को देवराया आगतो भणति--दव्वलिंगं पडिवज्जह, ॥२२७॥

अत्र चक्रवर्ती भरतस्य केवलज्ञानस्य वर्णनं क्रियते

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता..........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥२२८॥

कपिलस्य परिव्राजकता

जाहे णिक्खमणसक्कारं करेमि, ताहे संनिहिताए वाणमंतरीए देवताए लिंगग्गहणं उवट्ठवितं, ताहे सक्केण देविंदेण वंदितो, अन्नेहि य, ताहे भगवं एगं पुव्वसयसहस्सं केवलिपरियागं पाउणित्ता मासिएणं भत्तेणं अपाणगेणं समणेणं णक्खत्तेणं परिनिव्वुए अट्ठावए। भरहसामी दसहिं रायसहसहस्सेहिं सद्धिं पव्वइओ। सेसा णव चक्किणो साहस्सपरिवारा पव्वइया। आइच्चजसो सक्केण अभिसित्तो। एवं अट्ठ पुरिसजुगाणि अभिसित्तत्ति।

इयाणिं कविलित्ति दारं, तत्थ 'पुच्छंताण कहेती' ॥ ३ ॥ २५० ॥ सो य मिरिती सामिमि परिनिव्वुएवि साधूहिं समं विहरति, तस्स य विहरमाणस्स जो उवट्ठाति तं पव्वावेऊण साधूणं देति, जाव सो अन्नया कयाती गिलाणो जातो, ताहे साधुणो असंजयस्स वेयावडिया ण कज्जतित्ति तेणं ते ण करेंति, ताहे सो संकिलिट्ठो चिंतेइ--अहो इमे साधुणो निरणुकंपा, इयाणिं जदि उट्ठेमि जो य मे उट्ठावेति तं अप्पणो चेव पव्वावेमि, एवं सो अन्नया रोगविमुक्को विहरति, तत्थ कविलो नाम रायपुत्तो, सो तस्स पासे धम्मं सुणति, इमो य से अणगारधम्मं पन्नवेति, ताहे सो भणति- तुब्भे अन्नहा ठिता, इमं च अन्नहा पन्नवेह, मिरिती भणति- एस साधूणं धम्मो, अहं पावकम्मो ण सक्केमि काउं, सो भणति- एत्थ तुब्भं अत्थि किंचि ?, ताहे सो भणइ- एतेसु अत्थि, इहवि मणागं, एत्थंतरा एएण दुब्भासिएणं संसारो अणेण वड्ढितो कुधम्मं वड्ढंतेण, जेण सागरोवमकोडाकोडिं भमितो।

तंमूलं संसारो० ॥ ३ ॥ २५२ ॥ सोऽवि कविलो ण किंचि पडिवज्जति साहूणं, ताहे मिरीई चिंतेति- एस साधूणं गाहणं ण गेण्हति, मम य बितिज्जेणं कज्जं तम्हा पव्वावेमि, सो णेण पव्वावितो। एवं सो तेण समं विहरति, एवं काले वच्चंते अप्पणो ॥२२८॥

भगवंत वीरस्य कथानक मध्ये कपिलस्य शिष्यत्व-वर्णनं

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता..........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णिः-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥२२९॥

श्रीवीरस्य भवाः

आउक्खए चतुरासीतिं पुव्वसयसहस्से सव्वाउं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा अणालोयियपडिक्कंतो बंभलोए कप्पे दससागरोवमट्ठितीए देवो जातो ४ ॥

सोऽवि कविलो मुक्खो ण किंचि जाणति सत्थं वा पोत्थं वा, जोवि उवट्ठाति ण तस्स कहेतुं जाणति, णवरि आसुरिं पव्वावेति, तस्स आयारगोयरं ववदिसति, एवं जाव सोऽवि कालगतो बंभलोए उववन्नो, ओहिं पउंजति २ आसुरिं पासति, तस्स चिंता जाता, जहा-मम सीसो ण जाणइ कांचि, उवदेसं से देमित्ति सो आगासे पंचवन्नं मंडलं करेत्ता तत्थ ट्ठितो, स च तत्र दर्शयति अव्यक्तप्रभवं व्यक्तं, चतुर्विंशतिप्रकारं ज्ञानं प्रकाशयति, ततः पस्यति अज्ञानावृत्तस्य तत्रैव प्रलीयते, पश्चात्तत्षष्टितंत्रं संवृत्तं, एवं कुतित्थं जातं । तं कविलो पाढिज्जमिति । इयाणिं जहा कोडाकोडिं भमितो जह य तिविट्ठू वासुदेवो चक्कवट्टी तित्थगरो जातो मिरिती एतं पगतं मिरितीवत्तव्वयं भणति—

इक्खाएसु मिरिई चउरासीतिय बंभलोगंमि । कोसिओ कोल्लागंमी असीतिमायुं च संसारे ॥ ३ ॥ २५३ ॥

एवं सो मिरीयी तातो बंभलोगाओ चइऊणं कोल्लाओ णाम संनिवेसो तत्थ कोसितज्जो बंभणो जातो, तत्थ असीतिं पुव्वसयसहस्साइं परमाउं पालतित्ता ५ संसारं अणुपरियट्टितो. एवं चिरं कालं अणुपरियट्टित्ता थूणाणामं सन्निवेसो, तत्थ पूसमित्तो णाम माहणो आयातो, तत्थ से आउं बावत्तरिं पुव्वसयसहस्साइं, तत्थावि निव्विन्नकामभोगो परिव्वाओ पव्वातितो ६ । कालमासे कालं किंचा सोधम्मे उववन्नो अजहन्नुक्कोसट्ठितीओ ७, ततो चुतो चेइए संनिवेसे अग्गिज्जोओ माहणो जातो, चोवट्ठिं पुव्वसयसहस्साइं सव्वाउं, तत्थ परिव्वाओ जाओ ८, ईसाणे उववन्नो अजहन्नुक्कोसट्ठितीओ ९, ततो चुतो मंदिरे संनिवेसे अग्गि- ॥२२९॥

अथ भगवंत वीरस्य भवानाम् वर्णनं

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक-चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥२३०॥

श्रीवीरस्य भवाः

भूतिणाम माहणो छप्पन्नं पुव्वसयसहस्सा सव्वायुं, तत्थवि परिव्वाओ १०, सणंकुमारे मज्झिमट्ठिती उववन्नो ११, ततो चुतो सेयवियाए भारद्दाए उ माहणो जातो, चोतालीसं पुव्वसयसहस्साइं, तत्थवि परिव्वाओ १२, माहिंदे उववन्नो १३, ततो चुतो एत्थंतरे संसारं अणुपरियट्टइ, उव्वट्टिता रायगिहे थावरो माहणो जातो, चोतीसं पुव्वसयसहस्साइं , तत्थवि परिव्वाओ १४, बंभलोए सुरो १५, एताओ छप्पारिव्वज्जाओ अणुबद्धं, ततो चुतो चिरं संसारं भमितो। ततो भमित्ता रायगिहे णगरे विस्सणंदी, तस्स भाता विसाहभूती,सो य जुवराया, तस्स जुवरण्णो धारिणीए देवीए विस्सभूतित्ति नामेण पुत्तो जाओ, रन्नो पुत्तो विसाहनंदित्ति।

जातो० । ॥ ३ ॥२५७॥ रायगिहे विस्सनंदी, विसाहभूती य तस्स जुवराया, जुवरन्नो विस्सभूती, विसाहणंदी य इतरस्स, तस्स विस्सभूतिस्स वासकोडी आउं, तत्थ पुप्फकरंडगं णाम उज्जाणं, तत्थ सो विस्सभूती अंतेउरवरगतो सच्छंदसुहं पविहरति, जा सा विसाहणंदिस्स कुमारस्स माया तीसे दासचेडीओ पुप्फकरंडए उज्जाणे पुप्फाणि य पत्ताणि य आणेंति, पेच्छंति य विस्सभूतिं किड्डंतं, तासिं अमरिसो जातो, ताहे साहंति जहा एवं कुमारो उवललति, किं अम्हं रज्जेणं वा बलेण वा? जदि विसाहणंदी ण भुंजती भोगे, अम्ह णामं, किं पुण जुवरन्नो पुत्तस्स रज्जं जस्सेरिसं ललितं, सा देवी तासिं अंतियं एवं सोउं ईसाए कोवघरं पविट्ठा, जदि ता रायाए जीवंतेण एस एरिसा अवत्था जाहे राया गतो भविस्सति ताहे एत्थ अम्हे को गणेहिति?, राया गमेति, सा पसादं ण गेण्हाति, किं मे रज्जेणं तुमे वत्ति?, ताए कहितं-मम पुत्तो दासो जह अच्छाति, संणाविज्जति तहवि ण ठाति, पच्छा तेण अमच्चस्स सिट्ठं, ताहे अमच्चो तं देविं गमेति, तहवि ण ठाति, ताहे सो अमच्चो रायं भणति-मा देवीए वयणातिक्कमो कीरतु , मा अप्पाणं मारेहिति, को पुण उवातो होज्जा?, ण य अम्ह वंसे अन्नंमि आतिगते उज्जाणं अन्नो अतीति, तत्थ ॥२३०॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक-चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥२३१॥

वसंतमासं ठितो मासग्गेसु अच्छति, उवाओ कज्जतु, जो एत्थ य पच्चंतराया तस्स अत्थेण लेहो लिहिज्जतु, अन्ने पुरिसा लेहा- श्रीवीरस्य भवाः
रिया कीरंतु, ताहे ते लेहारा राउले उवणीता, एवं एतेण कयगेण कूडलेहा रन्नो उवट्ठाविया, ताहे राया जत्तं गेण्हति, कुमारेण
सुतं, ताहे भणति—मए जीवमाणे तुब्भे कीस णागच्छह?, ताहे सो गतो, ताहे चेव इमो अइगतो, सो य तं पच्चंतं गतो, किंचि
ण पेच्छति उड्डमारंतगं, ताहे आहिंडित्ता जाहे णत्थि कोवि ताहे पुणरवि पुप्फकरंडगं उज्जाणं आगतो। तत्थ दारवाला डंडग-
हितहत्था भणंति-मा सामी! अतीह, सो भणति-किं निमित्तं?, तेहिं भणितं-एत्थ विसाहणंदी कुमारो रमति, एयमट्ठं सोऊण
ताहे कुमरो आसुरुत्तो, तेणं णातं कुतकंति, तत्थ कविट्ठलता अणेगफलभरसमोणता सा मुट्ठिप्पहारेण आहता, जहा तेहिं कविट्ठे-
हिं भूमी अत्थुता एवं तुब्भं अहं सीसाइं पाडेंतो जादि अहं महल्लपिउणो गोरवं ण करेंतो, अहं मे छम्मेण णीणितो, तम्हा अला-
हि भोगेहिं, ततो निग्गतो भोगा अवमाणमूलंति संभूताणं थेराणं अंतियं पव्वइओ। तं पव्वइयं सोउं ताहे राया संतेपुरपरि-
जणो जुवराया य णिग्गतो, ते तं खमावेंति, णो य सो तेसिं संणत्तिं गेण्हति, इतरोऽवि बहूहिं छट्ठट्ठमेहिं अप्पाणं भावेमाणो
विहरइ। एवं सो भगवं विहरमाणो महुरं णगरिं पत्तो, इमो य विसाहणंदी कुमारो तत्थ मधुराए पितुत्थाए रन्नो अग्गमहिसीए
धूता लद्धेल्लिया तत्थ गतओ, तत्थ से रायमग्गे आवासो दिन्नो, सो य विस्सभूती अणगारो मासखमणपारणए हिंडंतो तं देसं
आगतो जत्थ ठाणे कुमारो विसाहनंदी कुमारो अच्छति तं देसं पत्तो, तत्थ तेहिं पारिसिच्चएहिं पुरिसेहिं भन्नति-सामी! एतं पव्व-
इतगं तुब्भे जाणह?, सो भणति-ण जाणामि, तेहिं भणितं-एस विस्सभूतिकुमारो, तं दट्ठूण तस्स ताहे चेव कोवो जातो। ॥२३१॥
तत्थंतरा सो सूतियाए गावीए सोल्लितो पडिततो, ते तेहिं उक्कट्ठिकलकलो कतो, इमं च णेहिं भाणियं-तं बलं तुज्झ कविट्ठ-

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पाडणं च कहिं गतं?, ताहे तेण ततो पलोइतं, दिट्ठो य णेण सो पावो, ताहे अमरिसेणं तं गाविं अग्गासिंगेहिं गहाय उड्ढं उव्विहति, सुदुब्बलस्साधि सीहस्स किं सियालेहिं बलं लंधिज्जति ?, ताहे चेव नियत्तो, इमो दुरप्पा मम अज्जवि रोसं ण मुयति, ताहे सो णियाणं करेति, जदि इमस्स तवनियमबंभचेरस्स अत्थि फलं तो आगमेस्साणं अपरिमियबलो भवामि १६, ताहे सो तत्थ अणालोइयपडिक्कंतो महासुक्के उववन्नो १७, तत्थ उक्कोसाट्ठिती । ततो चुतो पोयणपुरे पुत्तो पयावइस्स मियावतीकुच्छिसंभवो, भगवं ! तस्स कहं पयावतित्ति णामं ?, तस्स पढमं रिवुपडिसत्तू णामं होत्था, तस्स भद्दा देवी, तस्स पुत्तो भद्दाए अत्तए अचले णाम कुमारो होत्था, तत्थ अचलस्स भगिणी मियावती णामा दारिया अतीव रूवेण जोव्वणेण य, सा उम्मुक्कबालभावा सव्वालंकारविभूपिता पितुपादवंदिया गता, तेण सा उच्छंगे निवेसाविता, सो तीसे रूवेण य जोव्वणेण य अंगफासंमि य मुच्छितो, तं विसज्जेत्ता पउरजणवयं वाहरति, वाहरेत्ता ताहे भणति—जं एत्थ रत्तं वा रयणं वा उप्पज्जति ते कस्स ?, ताहे ते भणंति-तुब्भं, एवं तिन्नि वारा साविते सा चेडी उवट्ठविया, ताहे ओहयमणसंकप्पा ते निग्गता, ताहे तेसिं सव्वेसिं कूवमाणाणं तेण गंधव्वेण विवाहेण सयमेव विवाहिता, उप्पाइता गब्भं, ताहे सा भद्दा पुत्तेणऽयलेण समं दक्खिणावहे माहेसरिपुरिं निवेसेति, महंतीए इस्सरीएत्ति माहेस्सरी, अयलो तत्थ मातं ठावेत्ता पितुमूलं गतो, ताहे लोगेण पजावतित्ति से णामं कतं, वेदेऽप्युक्तं 'प्रजापतिः स्वां दुहितरमकामयत ।' ताहे महासुकातो चुतो तीसे मिगावतीए कुच्छिसि उववन्नो, सत्त सुविणा दिट्ठा, सुविणपाढएहिं पढमवासुदेवो आदिट्ठो, कालेण जातो, तिन्नि पिट्ठकरंडगा तेण से तिविट्ठुत्ति णामं कतं, माताए उण्हतेल्लेण परिमक्खितो, सो जोव्वणगमणुप्पत्तो । इओ य महामंडलीओ आसग्गीतो राया, सो णेमित्तीं

॥२३२॥

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

श्री आवश्यक चूर्णी उपोद्घात निर्युक्तौ ॥२३३॥

श्रीवीरस्य

अप्पणो मच्चुं पुच्छति, कतो मम भयंति?, तेण भणियं—जो एतं सीहं मारेहित्ति चंडमेहं दूतं आधरिसेहिति ततो भयं ते, तेण य सुतं—जहा पयावतिस्स पुत्ता महाबलवगा, णेमित्तियादिट्ठगा य, ताहे तं दूतं पयावतिस्स मूलं पेसेति, दूतो संपत्तो, तत्थ य अंतेपुरपेच्छणयं वट्टति, तत्थ दूतो पविट्ठो, राया उट्ठितो, तं पेच्छणयं भग्गं, ते कुमारा पेच्छणगेण अक्खित्तगा भणंति—को एसत्ति?, तेहिं भणितं-जहा अहिरण्णो दूतोत्ति, तेहिं भणितं—जया वच्चेज्जा तदा कहेज्जाह,. सो अन्नया तेण पडिपूजितो पाहुडेणं, ताहे णिग्गओ, पहावितो अप्पणो विसयस्स, कुमाराणं च मणुसेहिं कहितं, ताहे सो तेहिं गंतूणं हतमहितपवरजाव सव्वं घेत्तूणं णियत्ता, ते य से सव्वे मणूसा दिसोदिसिं पलाया, रन्ना सुतं-जहा आधरिसितो दूतो, ताहे संभमेण गंतूण णिवत्तितो, ताहे रन्ना बिगुणतिगुणं दाऊण भणितो-मा हु रन्नो साहिस्ससि जं कुमारेहिं कतं, तेण भणियं-ण साहेमि, ताहे जे ते पुरतो गता तेहिं सिट्ठं, जथा-आधरिसिओ दूतो, ताहे सो राया कुविओ, तेण दूतेण णातं जहा रन्नो पुव्वकहितेल्लयं, जहावत्तं सिट्ठं तेण, रन्ना भणितं-अन्नो दूतो गच्छतु, तं पयावइं गंतूण भणाहि-मम साली कसिज्जमाणे रक्खाहि, दूतो गतो, रन्ना कुमारा उवलद्धा-किह अकाले मच्चू खवलितो ?, तेण अम्हं अवारए चेव जत्ता आणत्ता, राया पहावितो, कुमारेहिं भणितं-अम्हे वच्चामो, ते रुज्झ तं मझ्झाए गता, ताहे ते खेत्तिए पुच्छंति-किह ते रायाणो रक्खिताइया?, ते भणंति-आसहत्थिरहपुरिसपागारं काऊणं, केच्चिरं ?, जाव करिसणं पविट्ठन्ति, तिविट्ठू भणति-को एच्चिरं कालं अच्छति?, ममं तं पदेसं दावेह, तेहिं कहितं-एयाए गुहाए, ताहे कुमारेण ततो हुत्तो रहो दिन्नो, जाव गुहं पविट्ठो, लोगेण दोहिवि पासेहि कलकलो कतो, ताहे सीहो वियंभंतो निग्गतो, कुमारो चिंतेति-एस पयायेहिं अहं रहेण, विसरिसं जुद्धं, ताहे असिखेडगहत्थो रहातो उत्तिन्नो, ताहे पुणो चिंतितं-एस दाढणक्खाउधो अहं असिखेडएणं, एवमवि ॥२३३॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

विसमं, ताहे तंपि णेण असिखेडगं छड्डितं, ततो सीहस्स अमरिसो जातो, एगं ता रहेण गुहं अतिगतो एगागी, बितियं भूमिं उत्तिण्णो, ततियं आयुधाणि मुतित्ता ठितो, अज्ज णं विणिवातेमित्ति महया अवदालितेण वयणेण उक्खंदं दाऊणं संपत्तो, ताहे तेण कुमारेण एगेण हत्थेण उवरिल्लो ओट्ठो एगेण हेट्ठिल्लो ओट्ठो गहितो, जुन्नपडगोविव विदालेऊण एगंते एडितो, ताहे लोगेण उक्कट्ठिकलयलो कतो, आभरणवत्थवासं च पाडितं, ताहे सो सीहो तेण अमरिसेण फुरुफुरेंतो अच्छति, एवं नाम अहं कुमारएण होंतएण जुद्धे मारिओत्ति, तं च किर कालं गोयमसामी भगवतो सारही आसि, तेण भणति-मा तुमममरिसं वहाहि, एत्थ को रोसो अद्धिती वा ?, एस णरसीहो, तुमं मिगसीहो, जदि सीहो सीहेण मारितो तो एत्थ को अवमाणो !, सो ताणि वयणाणि मधुमिव पिबति, सो मरित्ता नरएसु उववन्नो। सो कुमारो तं चम्मं गहाय सणगरस्स पधावितो, ते गामेल्लए भणति- गच्छह भो घोडगगीवस्स कहेह जहा अच्छसु वीसत्थोत्ति, तेहिं रन्नो सिट्ठं जहा पयावइपुत्तेण मारितोत्ति, ताहे कुद्धो दूयं पेसेति, जहा एते ते पुत्ते तुमं ममं ओलग्गए पत्थवेहि, तुसं महल्लो अच्छाहि, जाणे अहं पेच्छामि सक्कारेमि रज्जाणि से देमित्ति, तेण भणितं-अच्छंतु कुमारा, सयं चेव अहं ओलग्गामि, ताहे सो पुणो भणति- किं ता पेसेसि आओ जुद्धसज्जो णिग्गच्छसि ?, सो दूतो तेहिं धरिसेत्ता धाडितो, ताहे सो आसग्गीवो सव्वबलेण उवट्ठितो, इतरेवि देसंते ठिता, सुबहुकालं जुज्झिऊण हयगयरहणरादिक्खयं च पेच्छिऊण कुमारेण दूतो पेसितो, जहा अहं च तुमं च दोऽवि अहियपुरिसा, एतेऽन्ये पुरुषा भृत्याः अस्माकं, किंवा बहुणा अकारिजणेण मारितेण ?, अम्हे चेव लियामो, एवं होउत्ति बितियदिवसे दोऽवि रहे संपलग्गा जुज्झंति, जाहे पुण आयुहाणि खीणाणि ताहे आसग्गीवो चक्कं मुयति, तं तस्स तुम्बे णउरे पडियं, पच्छा तेणेव चक्केण आसग्गीवस्स सीसं छिन्नं, देवेहिं उग्घुट्टं-

॥२३४॥

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

एस पढमो तिविट्ठू नामेण वासुदेवोत्ति, जहा वासुदेवजरासंधाणं जुद्धं तहा वत्तव्वं । ते सव्वे रायाणो ओवतिता, ओयावितं अद्धं भरहं, कोडियसिला बाहाए धारिता लीलाकड्ढं च, एतं रहावत्तपव्वतसमीवे जुद्धं आसी, एवं परिहायमाणे बले कण्हेण किर किहवि जन्नुगाणि पाविता । तिविट्ठू चुलसीति वाससयसहस्साइं सव्वाउयं पालेत्ता १८ सत्तमाए पुढवीए अपइट्ठाणे नरए उववन्नो १९ ततो य उव्वट्टित्ता सीहत्ताए २० पुणो नरएसु २१ । ताहे कतिवयाइं तिरियमणूसभवग्गहणाइं भमिऊण अवरविदेहे मूयाए रायहाणीए धणंजयस्स पुत्तो धारणीए कुच्छिसि पियमित्तो णाम चक्कवट्टी जातो, तत्थ चतुरासीतिं पुव्वसयसहस्साइं परमाउयं पालेत्ता चक्कवट्टिभोगे चइत्ता पोट्टिलाणं थेराणं अंतियं पव्वइतो, वासकोडिं परियागं पाउणित्ता २२ महासुक्के कप्पे सव्वट्ठे विमाणे देवो जातो, सत्तरससागरोवमाट्ठितीतो २३ ।

ततो चुत्तो छत्तग्गाए णगरीए जियसत्तुस्स रन्नो पुत्तो भद्दाए अत्तओ णंदणो णामं कुमारो जातो, अचिरेणं रज्जे ठवितो, चउव्वीसं वाससहस्साइं अगारवासमज्झे वसित्ता पोट्टिल्लाणं अंतियं पव्वइतो, एक्कारस अंगाइं अहिज्जित्ता तत्थ मासंमासेणं खममाणो-एगं वाससयसहस्सं परियागं पाउणित्ता इमेहिं वीसाए कारणेहिं आसेवितबहुलीकतेहिं तित्थगरनामगोयं णिव्वत्तेति । तंजहा—

अरहंत सिद्ध० ॥ ३ ॥ २६४ ॥ दंसण० ॥ ३ ॥ २६५ ॥ अप्पुव्व० ॥ ३ ॥ २६६ ॥ पढम० ( ) तं च कहं० ( ) ॥ ३ ॥ २६७ ॥ नियमा० ॥ ३ ॥ २६८ ॥ जहा वइरनाभो, तत्थ मासियाए संलेहणाए सट्ठिं भत्ताइं आलोइयपडिकंतो समाहीए कालगतो २४ पाणते कप्पे पुप्फुत्तरवडेंसते विमाणे देवत्ताए उववन्नो २५ तत्थ वीसं सागरोवमाणि दिव्वाणि भोगाणि भुंजिऊण

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥२३६॥

गर्भसंक्रमः

माहणकुंडग्गामे० ॥ ३ ॥ २७० ॥ सुमिणअवधारगाथाहिं जं भणितं जं च पज्जोसवणाकप्पे पढमाणुओगे य तं सव्वं नायव्वं, ठाणासुन्नत्थं पुण किंचि भन्नति ।

तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे जे से गिम्हाणं चउत्थे मासे अट्ठमे पक्खे आसाढसुद्धे तस्स णं आसाढसुद्धस्स छट्ठीदिवसेणं महाविजयपुप्फुत्तरपवरपुंडरियातो महाविमाणाओ वीसंसागरोवमट्ठितीयातो अणंतरं चयं चइत्ता इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए सुसमसुसमाए समाए विइक्कंताए एवं सुसमाए सुसमदूसमाए दुस्समसुसमाए बहुवितिक्कंताए पन्नत्तरीए वासेहिं अद्धनवमेहि य मासेहिं सेसएहिं एक्कवीसाए इक्खागकुलसमुप्पण्णेहिं० गोतमसगोत्तेहिं तेवीसाए तित्थगरेहिं विइक्कंतेहिं चरिमतित्थगरे पुव्वातित्थगरनिद्दिट्ठे माहणकुंडग्गामे णगरे उसभदत्तस्स माहणस्स कोडालसगोत्तस्स भारियाए देवाणंदाए माहणीए जालंधरसगोत्ताए पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि हत्थुत्तराणक्खत्तेणं जोगमुवागतेणं आहारवक्कंतीए भववक्कंतीए सरीरवक्कंतीए कुच्छिसि गब्भत्ताए वक्कंते, से य तिण्णाणोवगते होत्था-चइस्सामित्ति जाणति चयमाणे ण जाणति चुतेमित्ति जाणति, जं रयणिं च णं देवाणंदाए कुच्छिसि गब्भत्ताए वक्कंते तं रयणिं च णं सा सयणिज्जंसि सुत्तजागरा ओहीरमाणी ओहीरमाणी इमे एयारूवे ओराले चोद्दस महासुमिणे पासित्ताणं पडिबुद्धा, तंजहा-गय उसभ सीह अभिसेय दाम ससि दिणयरं झयं कुंभं । पउमसर सागर विमाणभवण रयणुच्चय सिहिं च ॥ १ ॥ तए णं सा हट्ठतुट्ठा उसभदत्तस्स माहणस्स कहेति । ॥२३६॥ से य एवं वयासी-ओराला णं तुमे देवाणुप्पिए! सुमिणा दिट्ठा, तंजहा-अत्थलाभो देवाणुप्पिए !, एवं भोग० पुत्त० सोक्ख०, एवं खलु तुमं देवाणुप्पिए ! णवण्हं मासाणं अद्धट्ठमाण य राइंदियाण वितिक्कंताणं सुकुमालपाणिपायं अहीणपडिपुण्णपंचिंदियसरीरं

भगवंत वीरस्य गर्भ-संक्रंस्य वर्णनं

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥२३७॥

स्वप्नोपलंभः

लक्खणवंजणगुणोववेतं माणुम्माणप्पमाणपडिपुण्णसुजातसव्वंगसुंदरंगं ससिसोमागारं कंतं पियदंसणं सुरूवं दारयं पजाहिसि। सेऽविय णं उम्मुक्कबालभावे जोव्वणगमणुप्पत्ते रिउव्वेदयजुवेदसामवेदअथव्वणवेद इतिहासपंचमाणं णिघंटुछट्ठाणं संगोवंगाणं सरहस्साणं चउण्हं वेयाणं सारए पारए धारए सडंगवि सट्ठितंतविसारदे संखाणे सिक्खाकप्पे वागरणे छंदे निरुत्ते जोतिसामयणे अन्नेसु य बहूसु बंभन्नएसु णएसु सुपरिणिट्ठिते यावि भविस्सति, ओराला णं तुमे देवाणुप्पिए! जाव दिट्ठा। तए णं सा देवाणंदा एतमट्ठं सोच्चा जाव एवं वयासी--'एवमेतं देवाणुप्पिया! अवितहमेयं देवाणुप्पिया! जाव से जधेयं तुब्भे वयहत्तिकट्टु सम्मं पडिच्छति २ जाव सार्द्धं ओरालाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरति ॥

इयाणिं अवहारत्ति० तेणं कालेणं तेणं समएणं सक्के णाम देविंदे देवराया वज्जपाणी पुरंदरे सतक्तू सहस्सक्खे मघवं पाकसासणे दाहिणड्ढलोगाहिवती बत्तीसविमाणावाससयसहस्साहिवती एरावणवाहणे सुरिंदे अरयंबरवत्थधरे आलइयमालमउडे णवहेमचारुचित्तचंचलकुंडलविलिहिज्जमाणगंडे भासुरबोंदी पलंबवणमाले महिड्ढीए महजुतीए महाबले महायसे महाणुभागे महासोक्खे सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडेंसए विमाणे सभाए सुहम्माए सक्कंसि सीहासणंसि, से णं तत्थ बत्तीसाए विमाणावाससतसाहस्सीणं चउरासीए सामाणियसाहस्सीणं तावत्तीसाए तावत्तीसगाणं चउण्हं लोगपालाणं अट्ठण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणियाहिवईण चउण्हं चउरासीणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं च बहूणं सोहम्मकप्पवासीणं वेमाणियाणं देवाण य देवीण य, अन्ने पढंति-अन्नेसिं च बहूणं देवाण य देवीण य अभिओग्गउववन्नगाणं, आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरत्तं आणाईसरसेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे महताहतणट्टगीतवादियतंतीतलतालतुडियघणमुइंगपडुपडहवाइयरवेणं दिव्वाइं ॥२३७॥

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

मोगभोगाइं भुंजमाणे विहरति, इमं च केवलकप्पं जंबुद्दीवं दीवं विपुलेणं ओहिणा आभोएमाणे, पासति यऽत्थ समणं भगवं महावीरं जाव गब्भत्ताए वक्कन्तं, पासित्ता हट्ठतुट्ठचित्ते आणंदिते णंदिते पीतिमणे परमसोमणासिते हरिसवसविसप्पमाणहियए धाराहयणीमसुरभिकुसुमचंचुमालइयऊसवितरोमकूवे वियसितवरकमलाणणवयणे पयलियवरकडगतुडितकेऊरमउडकुंडलहारविरायंतरयितवच्छे पालंबपलंबमाणघोलंतभूसणधरे ससंभमं तुरियं चवलं सुरिंदे सीहासणाओ अब्भुट्ठेति, अब्भुट्ठेत्ता पादपीढाओ पच्चोरुहति, पच्चोरुहित्ता वेरुलियवरिट्ठरिट्ठअंजणणिउणोयवितमिसिमिसेंतमणिरयणमंडिताओ पाउयाओ मुयति मुयित्ता एगसाडितं उत्तरासंगं करेति करेत्ता अंजलिमउलियहत्थे तित्थगराभिमुहे सत्तट्ठ पयाइं अणुगच्छति अणुगच्छित्ता वामं जाणुं अंचेइ २ दाहिणं जाणुं धरणियलंसि णिहट्टु तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणितलंसि णिवाडेति णिवाडित्ता पच्चुण्णमति२ त्ता कडगतुंडियथंभिताओ भुताओ साहरति साहरेत्ता करतलपरिग्गहितं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी-णमोऽत्थु णं अरिहंताणं भगवंताणं आदिगराणं तित्थगराणं सहसंबुद्धाणं पुरिसोत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवरपुंडरीयाणं पुरिसवरगंधहत्थीणं लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहियाणं लोगपईवाणं लोगपज्जोअगराणं अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं जीवदयाणं धम्मदयाणं धम्मदेसयाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं दीवो ताणं सरणं गती पइट्ठा अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं० जिणाणं जावयाणं तिन्नाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोयगाणं० सिवमतुलमरुयमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावत्तयं सिद्धिगतिनामधेज्जं ठाणं संपत्ताणं, णमोऽत्थु णं समणस्स भगवतो महावीरस्स आदिगरस्स जाव संपाविउकामस्स, वंदामि णं भगवंतं तत्थगयं इहगते, पासतु मे भगवं तत्थ गते इहगतंतिकट्टु वंदति णमंसति २ सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहे सन्निसन्ने । तए णं तस्स सक्कस्स देविंदस्स देव-

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥२३९॥

इन्द्र संकल्पः

रस्रो अयमेयारूवे जाव संकप्पे समुप्पज्जित्था-उप्पन्ने खलु समणे भगवं महावीरे जंबुद्दीवे जाव माहणीए कुच्छिसि, तं णो एतं भूतं वा भव्वं वा भविस्सति वा जन्नं अरिहंता वा चक्कवट्टी वा बलदेवा वा वासुदेवा वा अंतकुलेसु वा पंतकुलेसु वा तुच्छकुलेसु वा दरिद्दकुलेसु वा किवणकुलेसु वा भिक्खागकुलेसु वा आयाइंसु वा आइंति वा आयाइस्संति वा, एवं खलु अरहंता वा चक्कवट्टी वा बलदेवा वा वासुदेवा वा उग्गकुलेसु वा भोगकुलेसु वा राइन्नकुलेसु वा इक्खागकुलेसु वा खत्तियकुलेसु वा हरिवंसकुलेसु वा अन्नतरेसु वा तहप्पगारेसु विसुद्धजातिउदितोदितकुलवंसप्पसूतेसु मुदितमुद्धाभिसित्तेसु महता रज्जसिरिं कारेमाणेसु पालेमाणेसु गब्भं वक्कमिंसु वा ३ पयाइंसु वा ३, अत्थि पुण एस भावे लोगच्छेरयभूते अणंताहिं ओसप्पिणिउस्सप्पिणीहिं वीतिक्कंताहिं समुप्पज्जति नामगोयस्स कम्मस्स अक्खीणस्स अवेदितस्स अणिज्जिन्नस्स उदएणं जन्नं अरहंता वा चक्कवट्टी वा बलदेवा वा वासुदेवा वा अंतकुलेसु वा पंतकुलेसु वा तुच्छ० दरिद्द० भिक्खाग० किविण० आयाइंसु वा ३, णो चेव जोणीजम्मणणिक्खमणेणं णिक्खमिंसु वा णिक्खमंति वा निक्खमिस्संति वा, तं जीतमेतं तीतपच्चुप्पण्णमणागताणं सक्काणं देविंदाणं देवराईणं अरहंते० तहप्पगारेहिंतो जाव कुलेहिंतो तहप्पगारेसु उग्गकुलेसु जाव विसुद्धजातिकुलवंसेसु वा साहरावेत्तए, तं सेयं खलु ममवि समणं भगवं महावीरं चरमतित्थगरं पुव्वतित्थगरानिद्दिट्ठं माहणकुंडग्गामाओ णगराओ जाव कुच्छीओ खत्तियकुंडग्गामे णगरे णाताणं खत्तियाणं सिद्धत्थस्स खत्तियस्स कासवगोत्तस्स भारियाए तिसलाए खत्तियाणीए वासिट्ठस्स गोत्ताए कुच्छिसि गब्भत्ताए साहरावेत्तए, जेविय णं से तिसलाए गब्भे तंपियणं देवाणंदाए जाव कुच्छिसि गब्भत्ताए साहरावेत्तएत्तिकट्टु एवं संपेहिति, संपेहित्ता हरिणेगमेसिं पादत्ताणीयाधिवतिं देवदूयं सद्दावेति सद्दावेत्ता एवं वयासी-उप्पन्ने खलु भो देवाणुप्पिता ! समणे भगवं एवं सव्वं ॥२३९॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥२४०॥

भणति जाव साहरित्ता मम एयमाणत्तियं खिप्पामेव पच्चप्पिणाहि, तए णं से पादत्ताणीयाधिवति देवे एवं वुत्ते समाणे हट्ठे जाव कट्टु एवं देवत्ति आणाए वयणं पडिसुणेति२ उत्तरपुरच्छिमं दिसिभागं अवक्कमति२ वेउव्वियसमुग्घाएण समोहन्नति२ संखेज्जाइं (जोयणाइं) डंडं णिसरति, तंजहा--रयणाणं वइराणं वेरुलियाणं लोहियक्खाणं मसारगल्लाणं हंसगब्भाणं पुलयाणं सोगंधियाणं जोतिरसाणं अंजणाणं पुलयाणं रयणाणं जातरूवाणं सुभगाणं अंकाणं फलिहाणं, अधाबादरे पोग्गले परिसाडेति परिसाडेत्ता अहासुहुमे पोग्गले परियादियति२ दोच्चंपि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहन्नति२उत्तरवेउव्वियं रूवं विउव्वति२ ताए उक्किट्ठाए तुरियाए चवलाए जाव जेणेव देवाणंदा तेणेव उवागच्छति२ आलोए समणस्स भगवतो महावीरस्स पणामं करेति२ देवाणंदाए सपरिजणाए ओसोवणिं दलयति२ असुभे पोग्गले अवहरति सुभे पोग्गले पक्खिवति२ अणुजाणतु मे भगवंतिकट्टु दिव्वेणं पभावेणं करतलपुडेहिं अव्वाबाहं अव्वाबाहेणं गेण्हति२ ताए उक्किट्ठाए जाव जेणेव खत्तियकुंडे गामे णाताणं जाव तिसला खत्तियाणी तेणेव उवागच्छति, तीए सपरिजणाए ओसोवणिं दलयति२ असुभे पोग्गले अवहरति२ सुभे पोग्गले पक्खिवति२ भगवं अव्वाबाहं अव्वाबाहेण ताए कुच्छिसि गब्भत्ताए साहरति, जेऽवियणं से गब्भे तंपि देवाणंदाए, जामेव दिसिं पाउब्भूते तामेव पडिगते जाव सक्कस्स एयमाणत्तियं पच्चप्पिणति। तेणं कालेणं तेणं समएणं भगवं तिण्णाणोवगते यावि होत्था-साहरिज्जिस्सामीति जाणति साहरिज्जमाणे जाणति साहरिएमित्ति जाणइ, तेणं कालेणं तेण समएणं भगवं जे से वासाणं तच्चे मासे पंचमे पक्खे अस्सोयबहुले तेरसीय बासीतीराइंदिएहिं वितिक्कंतेहिं तेसीतिमस्स रातिंदियस्स अंतरा वट्टमाणे हिताणुकंपकेणं देवेणं माहणकुंडग्गामाओ जाव अड्ढरत्तकालसमयंसि हत्थुत्तराहिं णक्खत्तेणं जाव साहरिते, जं रयणिं च णं भगवं देवाणंदाए कुच्छीओ तिसलाए कुच्छिं साहिते तं रयणिं च णं सा देवा-

गर्भान्तरे मोचने श्रेयस्ता ॥२४०॥

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

णंदा ते सुमिणे तिसलाए हडे पासित्ताणं पडिबुद्धा. तिसलावि य णं तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि सुत्तजागरा ओहीरमाणी २ इमे चोद्दस सुमिणे पासित्ताणं पडिबुद्धा, तंजहा—

गय-- (गाहा) । ॥ जाव सिद्धत्थस्स साहति, सेऽविय णं हट्ठ तुट्ठे जाव चंचुमालइयरोमकूवे ते सुमिणे ओगिण्हित्ता ईहं पविसित्ता अप्पणो साभावितेणं मतिपुव्वेणं बुद्धिविन्नाणेणं तेसिं अत्थोग्गहं करेत्ता तिसले इट्ठाहिं जाव वग्गूहिं संलवमाणे संलवमाणे एवं वयासी-ओराला णं तुमे देवाणुप्पिए ! सुमिणा दिट्ठा, जाव अम्हं कुलकेतुं एवं दीवं पव्वयं कप्पवडेंसयं तिलकं कित्तिकरं णंदिकरं जसकरं आधारं पादवं कुलविवद्धणकरं सुकुमालपाणिपायं जाव दारयं पयाहिसि । सेऽवियणं जाव जोव्वणगमणुप्पत्ते सूरे वीरे विक्केते विच्छिन्नविपुलबलवाहणे रज्जवती राया भविस्सति, तं उराला णं जाव दोच्चंपि अणुवूहति, सावियणं जाव सम्मं पडिच्छिऊणं धम्मियाहिं कहाहिं सुमिणजागरियं पडिजायरमाणी २ विहरति । तएणं सिद्धत्थे खत्तिए पच्चूसकालसमयंसि जाव सुमिणपाढए आपुच्छति, तेहिवि तहेव सिट्ठं, णवरं चाउरंतचक्कवट्टी रज्जवई राया भविस्सति जिणे वा तेलोगणायए धम्मवरचक्कवट्टी, एवं सव्वं जाव सयं भवणं अणुप्पविट्ठा ।

इयाणिं अभिग्गहोत्ति—ताहे सा ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउयमंगलपायच्छित्ता पयता सुइब्भूता तं गब्भं णातिउण्हेहिं णातिसीएहिं णातितित्तेहिं णातिकडुएहिं णातिकसाएहिं णातिअंबिलेहि णातिमधुरेहिं उदुभयमाणसुभेहिं भोयणच्छायणगंधमल्लेहिं जं तस्स गब्भस्स हितं मितं पत्थं गब्भपोसणं तं देसे य काले य आहारमाहारेमाणी विवित्तमउएसु सयणासणेसु पतिरिक्कसुहाए मणोणुकूलाए विहारभूमिए पसत्थदोहला संपुन्नदोहला जाव विणीयदोहला ववगतरोगसोगमोहभयपरित्तासा

गर्भान्तरे संक्रमः स्वप्नास्तत्फलं च

श्री आवश्यक-चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥२४२॥

निश्चलता अभिग्रहः

सुहंसुहेणं आसदति सयति चिट्ठति णिसीयति तुयट्टति सुहंसुहेणं तं गब्भं परिवहति । जं रयणिं च णं भगवं तिसलाए गब्भे वक्कंते तं रयणिं च णं वेसमणकुंडधारिणो तिरियजंभगा देवा सक्कवयणेणं विविहाइं महाणिहाणाइं सिद्धत्थरायभवणंसि भुज्जो २ उवसाहरंति, तं च णातकुलं हिरण्णेणं वड्ढित्था, एवं सुवण्णेणं धणेणं धन्नेणं रज्जेणं रट्ठेणं बलेणं वाहणेणं कोट्ठागारेणं पुरेणं अंतपुरेणं जणवदेणं पुत्तेहिं पसूहिं विपुलरयणमणिमोत्तियसंखसिलप्पवालरत्तरयणमादिएणं संतसारसावतेएणं पीतिसक्कारेणं अतीव अतीव अभिवड्ढित्था, सिद्धत्थरायस्सवि य सामंतरायाणोवि वसमागता । तए णं भगवतो अम्मापिऊणं अयमेतारूवे अज्झत्थिते पत्थिते संकप्पे समुप्पज्जित्था-जप्पभितिं च णं अम्हं एस दारए कुच्छिंसि वक्कंते तप्पभितिं च णं अम्हे हिरण्णेणं वड्ढामो जाव सक्कारेणं, तं जदा णं अम्हं एस दारते जाते भविस्सति तदा णं अम्हे एयस्स एताणुरूवं गोणं णामधेज्जं करिस्सामो वद्धमाणो इति मणोरहसहस्साइं पकरेंति । तए णं भगवं सण्णिगब्भे माऊअणुकंपणट्ठाए णिच्चले णिक्कंपे णिप्फंदे णीरेए अल्लीणपल्लीणगुत्ते यावि होत्था, तए णं सा तिसला एवं वयासी-हडे मे गब्भे, एवं चुए गलिए, एस मे गब्भे पुव्विं एयइ इयाणिं णो एयइत्तिकट्टु ओहयमणसंकप्पा चिंतासोगसागरमणुप्पविट्ठा करतलपल्लत्थमुही अट्टज्झाणोवगया भूमिगयदिट्ठीया झियाइ, तंपिय सिद्धत्थरायवरभवणं उवरयमुइंगतंतीतलतालनाडइज्जं दीणविमणदुम्मणं चावि विहरइ, तए णं भगवं एतं वियाणित्ता एगदेसेणं एजति, तएणं सा हट्ठतुट्ठा जाव रोमकूवा एवं वयासी-णो खलु मे हडे गब्भे जाव णो गलिते, पुव्विं णो एजति इयाणिं एजतित्तिकट्टु हट्ठतुट्ठा ण्हाया जाव गब्भं परिवहति, तंपिय णं सिद्धत्थरायभवणं अणुवरयमुइंगतंतीतलतालणाडइज्जआइन्नजणमणुस्से सपमुइयपकीलितं विहरति । तए णं भगवं मातुपितुअणुकंपणट्ठाए गब्भत्थो चेव अभिग्गहं गेण्हति 'णाहं समणे होक्खामि जाव एताणि एत्थ जीवंतित्ति ।

॥२४२॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता...........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] “आवश्यक” निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

॥२४३॥ इयाणिं जम्मणंति—तेणं कालेणं तेणं समएणं भगवं चित्तसुद्धतेरसीदिवसेणं णवण्हं मासाणं अद्धट्ठमाण य राइंदियाणं वितिकंताणं उच्चट्ठाणगतेसु गहेसु पढमे चंदजोगे सोमासु दिसासु वितिमिरासु विसुद्धासु जइएसु सव्वसउणेसु पयाहिणाणुकूलंसि भूमिसप्पिंसि मारुयंसि पवायंसि णिप्फण्णसस्साए मेदिणीए पमुदितपक्कीलितेसु जणवएसु अद्धरत्तकालसमयंसि हत्थुत्तराहिं णक्खत्तेणं अरोगाऽरोगं पयाया, तं रयणिं च णं बहूहिं देवेहि देवीहि य ओवयमाणेहिं उप्पयमाणेहिं एगालोए देवुज्जोए देवुक्कलिया देवसंनिवाए देवकुहुकुहुते देवदुहुदुहुते कए यावि होत्था, बहवे य वेसमणकुंडधारिणो तिरियजंभगा देवा सिद्धत्थरायभवणंसि हिरन्नवासं वासिंसु सुवण्णवासं वासिंसु एवं रयणवइरवत्थआभरणपत्तपुप्फबीयमल्लगंधवन्नचुन्नवसुहारवासं वासिंसु, तं रयणिं च णं बहवे भवणवइवाणमंतरजोतिसवेमाणिया देवा भगवतो अंतियं आगम्म खत्तियकुंडग्गामे णगरे जोयणपरिमंडलं जं तत्थ तणं वा पत्तं वा कट्ठं वा सक्करं वा असुइं पुतिं दुब्भिगंधं अचोक्खं तं सव्वं आहुणिय २ एगंते एडेंति एडेत्ता णच्चोदगणातिमट्टितं पविरलपप्फुसियं दिव्वं सुरभिं रयरेणुविणासगं गंधोदगवासं वासंति वासेत्ता णिहयरयं णट्ठरयं पणट्ठरयं उवसंतरयं पसंतरयं करेंति करेत्ता भारग्गसो य कुंभग्गसो य पुप्फवासं च मल्लवासं च गंधवासं च चुन्नवासं च भुज्जो भुज्जो वासंति, तस्स य सिद्धत्थभवणवरपोंडरीयस्स परिपेरंतेण आभरणरयणमादी जाव उवाकिरित्था, एवं सव्वं जायकम्मादि ॥ अभिसेगो य जहा उसभसामिस्स ।

तए णं से सिद्धत्थे राया भवणवातिवाणमंतरजोतिसवेमाणिएहिं देवेहिं तित्थगरजायकम्माविहाणे णिव्वत्तिए समाणे पडिबुज्झति पडिबुज्झित्ता णगरगुत्तिए सद्दावेति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! कुंडपुरे णगरे चारगसोहणं करेह ॥२४३॥

श्री वीरस्य जन्म

भगवंत वीरस्य जन्म-कल्याणकस्य वर्णनं

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥२४४॥

सिद्धार्थकृतो जन्ममहः

करेत्ता माणुम्माणवडुणं करेह २ त्ता कुंडपुरं णगरं सब्भितरबाहिरियं आसितसंमज्जितोवलित्तं सिंघाडगतियचउक्कचच्चरचउम्मुहमहापहपहेसु सित्तसुयियसंमट्ठरत्थंतरावणवीहियं मंचादिमंचकलियं णाणाविहरागभूसितज्झयपडागातिपडागमंडितं लाउल्लोइयमहियं गोसीससरसरत्तचंदणदद्दरदिन्नपंचंगुलितलं उवाचितचंदणकलसं चंदणघडसुकततोरणपडिदुवारदेसभागं आसत्तोसत्तविपुलवट्टवग्घारितमल्लदामकलावं पंचवण्णसरससुरभिमुकपुप्फपुंजोवयारकलितं कालागरुपवरकुंदुरुक्कधूवमघमघेंतगंधुद्धुताभिरामं सुगंधवरगंधगंधितं गंधवट्टिभूतं णडणट्टगजल्लमल्लमुट्ठियवेलंबगकहगपवकलासकआइंखकमंखतूणइल्लतुंबवीणियअणेगतालाचराणुचरितं करेह जाव कारवेह य, करेत्ता य कारवेत्ता य जूवसहस्सं चक्कसहस्सं च ऊसवेत्ता एतमाणत्तियं पच्चप्पिणह, तए णं ते पुरिसा जाव पच्चप्पिणंति। तए णं से सिद्धत्थे राया ण्हाए कयबलिकम्मे कतकोउयमंगलपायच्छित्ते सव्विड्ढीए सव्वजुत्तीए सव्वबलेणं सव्वसमुदएणं सव्वायरेणं सव्वविभूसाए सव्वसंभमेणं सव्वपगतीहिं सव्वणाडएहिं सव्वतालायरेहिं सव्वोरोहेणं महया वरतुरियजमगसमगपवातितेणं संखप्पणवभेरिझल्लरिखरमुहिदुंदुभिणिग्घोसणातियरवेणं समुद्धुयमुइंगं अमिलायमल्लदामं पमुदितपक्कीलितं उस्सुकं उक्करं अदेज्जं अमेज्जं अभडप्पवेसं अडंडकुडंडं अधरिमं गणितावरणाडइज्जकलियं अणेगतालायराणुचरियं सपुरजणुज्जाणजणवयं दस दिवसे ठितिवडितं करेंति, सतिए य साहस्सिए य सयसाहस्सिए य जाए य दाए य भाए य दलमाणे य दवावेमाणे य जाव लंभे पडिच्छेमाणे यावि विहरंति। तते णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो पढमदिवसे ठितिपडितं करेंति, ततियदिवसे चंदसूरदंसणियं करेंति, छट्ठे दिवसे जागरियं करेंति, एगारसमे दिवसे अतिक्कंते णिव्वत्ते असुइजातकम्मकरणे संपत्ते बारसाहे विउलं असणं ४ उवक्खडावेत्ता मित्तनाइनियगसयणसंबंधिपरिजणं नायए त खत्तिए आमंतेत्ता ण्हाया जाव पायच्छित्ता भोयणवेलाए भोयणमंडवंसि सुहासणव- ॥२४४॥

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

रगता तेहिं सद्धिं विउलं असणं ४ अस्सादेमाणा विस्सादेमाणा परिभुंजमाणा परिभोएमाणा एवं यावि विहरंति, जिमितभुत्तुत्तरागताविय णं आयंता चोक्खा सुतिभूया विउलेणं पुप्फवत्थगंधमल्लालंकारेणं सक्कारेंति संमाणेति २ तेसिं पुरतो एवं वयासी-पुव्विंपिय णं देवाणुप्पिया ! अम्हं एतारूवे अज्झत्थिए जप्पभितिं जाव नामं करेस्सामो वद्धमाण इति, तं होतु णं अज्ज अम्ह मणोरहसंपत्ती कुमारो वद्धमाणे णामेणंति णामधेज्जं करेंति।

समणे भगवं महावीरे कासवगोत्तेणं, तस्स णं ततो णामधेज्जा एवमाहिज्जंति, तंजहा-अम्मापिउसंतिए वद्धमाणे १ सहसंमुदिते समणे २ अयले भयभेरवाणं खंता पडिमासतपारए अरतिरतिसहे दविए धितिविरियसंपन्ने परीसहोवसग्गसहोत्ति देवेहिं से कतं णामं समणे भगवं महावीरे ३। भगवतो माया चेडगस्स भगिणी, भोयी चेडगस्स धुया, णाता णाम जे उसभसामिस्स सयाणिज्जगा ते णातवंसा, पित्तिज्जए सुपासे, जेट्ठे भाता णंदिवद्धणे, भगिणी सुदंसणा, भारिया जसोया कोडिन्नागोत्तेणं, धूया कासवीगोत्तेणं, तसि दो नामधेज्जा, तं०-अणोज्जगित्ति वा पियदंसणावितिवा, णत्तुई कोसीगोत्तेणं, तीसे दो नामधेज्जा (जसवतीतिवा) सेसवतीति वा, एवं (यं) नामाहिगारे दरिसितं। एवं भगवतो अम्मापियरो अणेगाइं कोउयसयाइं अणेगाइं पचंकमणादीणि उस्सवसयाणि अणेगाइं पकीलणसयाइं पकरेंताणि विहरंति।

इयाणिं वड्डित्ति, तए णं-अह वड्ढति सो भयवं दियलोयचुओ अणोवमसिरीओ। दासीदासपरिवुडो परिकिन्नो पीढमद्देहिं ॥ (६९ भा.) ॥ पीढमद्दा णाम सरिव्वया पीतिबहुला, महारायिसुया पीढं मद्दिऊणं पच्चासत्तीए आसन्ना उवविसंतित्ति। असितसिरजो सुनयणो बिंबोट्ठो धवलदंतपंतीओ। वरपउमगब्भगोरो फुल्लुप्पलगंधनीसासो ॥२४५॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक-चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥२४६॥

॥ ३ ॥ २९६ ॥ (भा. ७०) इयाणिं सरणंति—जातीसरो उ भगवं अप्परिवडिएहिं तिहि उ णाणेहिं। कंतिय य वुद्धीय य अब्भहितो तेहि मणुएहिं ॥ ३ ॥ २९७ ॥ (७१ भा.)

इयाणिं भेसणंति-- तए णं एवं वद्धमाणे भगवं ऊणअट्ठवासे जाते, से य अल्लीणे भद्दए विणीए सूरे वीरे विक्कंते, तेणं कालेणं तेणं समएणं सक्के देविंदे जहा अवहारद्दारे जाव पुरत्थाभिमुहे सन्निसन्ने भगवतो संतगुणकित्तणयं करेति-अहो भगवं! बाले अबालभावे बाले अबालपरक्कमे अवुड्ढे वुड्ढसील महावीरे ण सक्का देवेण वा दाणवेण वा जाव इंदेहिं वा भेसेउं परक्कमेण वा पराजिणितु छलेउं वा, तत्थ एगे देवे सक्कस्स एयमट्ठं असद्दहंते जेणेव भगवं तेणेव उवागते, भगवं च पमदवणे चेडरूवेहिं समं सुंकलिकडएण अभिरमति, तस्स तेसु रुक्खेसु जो पढमं विलग्गति जो पढमं ओलुभति सो चेडरूवाणि वाहेति, सो य देवो आगंतूण हेट्ठतो रुक्खस्स सामिभेसणट्ठं एगं महं उग्गविसं चंडविसं घोरविसं महाविसं अतिकायमहाकायं मसिमूसाकालगणयणं विसरोसपुन्नं अंजणपुंजणिगरप्पगासं रत्तच्छं जमलजुवलचंचलंतजीहं धरणितलवेणिदंडभूतं उक्कडफुडकुडिलचडुलकक्खडविगडफडाडोवकरणदच्छं लोहागरधम्ममाणधमधमेंतघोसं अणागलियचंडतिव्वरोसं समुहं तुरियं चवलं धमधमेंतं, एवं जथा उवासगदसासु कामदेवे जाव दिव्वं दिट्ठीविससप्परूवं विउव्वित्ता उप्पराहुत्तो अच्छति, ताहे सामिणा अमूढेणं वामहत्थेणं सत्ततले उच्छूढो, ताहे देवो चिंतेति-एत्थ ताव ण छालओ. अह पुणरवि सामी तंदूसएण अभिरमति, सो य देवो चेडरूवं विउव्विऊणं सामिणा समं अभिरमति, तत्थ सामिणा सो जितो, तस्स य उवरिं विलग्गो सामी. तएणं से देवे सामिभेसणट्ठं एगं महं तालपिसायरूवं विउव्वित्ता पव्वाड्ढिउं पवत्तो, तंजहा-सीसं से गोकिलिंजसंठाणसंठियं वियडकुप्परण्णिभं सालिभसेल्लगस-

वृद्धौ देवकृता धैर्यपरीक्षा

॥२४६॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक-चूर्णी उपोद्घात निर्युक्तौ

॥२४७॥

रिसा से केसा कविला तेएण दिप्पमाणा महल्ले उदियकभल्लसरिसोवमे णिडाले मुगुसपुच्छं व तस्स भुमुगाओ कविलजडिलाओ बिससबीभच्छं दसणाओ सीसघडी चेव उब्भडा, तस्स दोवि णयणा विणिग्गया विगतदंसणिज्जा कन्ना जह सुप्पकप्परं चेव विगतबीभच्छदंसणिज्जा, उरब्भपुडसंठिता से णासा झुसिरा इव जमलचुल्लिसंठाणसंठिता दोवि णासिकपुडा महल्लकुव्वरगसंठिता तस्स दो कवोला, घोडगपुंछंव कविलजडिलाओ उड्डलोमाओ दाढियाओ उट्ठा से घोडगस्स जह दोवि लंबमाणा पासुफालसरिसा से दंता वायपडागतुरियचवला य तस्स जिब्भा हिंगुलुगधातुकंदरबिलंव तस्स वयणं, हलकुंडगसंठिता तस्स होति हणुगा, गल्लकडिल्लं व तस्स खंडं फुट्टं कविलफरुसं महल्लं, मुइंगागारोवमा से खंधा, कोट्ठियसंठाणसंठिता दोवि तस्स बाहा, सुक्खदइयसंठाणसंठिया से हत्था, णीसालोढगसरिसा य तस्स हत्थेसु अंगुलीओ, सप्पिणीपुडसंठिता से णहा, अडतालगसंठितोदरो तस्स लोमगुविलो, विगता ण्हाविगपस्सेव उच्चे उदरंमि तस्स लंबंति दोवि थणगा, कोत्थलसरिसोवमो से मज्झे पोट्टं, अपकोट्टगोव्व वट्टा पाणी लंदसरिसोवमा से णाभि ओढियलंबंतबद्धपोट्टे भग्गकडी विगते य वंकपट्टी असरिससरिसा य तस्स दोवि फिट्टगा किंत्तपुडगसंठिया से वसणा जंतसिवगसंठाणसंठिते से नेत्ते कोत्थलसरिसोवमा से ऊरू पिडगमूलसरिसाणि तस्स जाणूणि कुडिलकुडिलाणि विगयबीभत्थदंसणाणि, जंघा से कक्खडीओ लोमेहिं उवचियाओ णीसापासाणसरिगा तस्स दोऽवि पाया णीसालोढेण सरिसगा तस्स पाएसु अंगुलीओ सप्पिणीपुडसंठिता से णक्खा, कोसीमुहसरिसातिक्खणक्खे विसमे लंबोदरपलंबे विगते बीभच्छभग्गभूमए मसिमूसामहिसकालए भरितमेहवन्ने लंबोट्ठे णिग्गयग्गदंते निल्लालियजमलजुगलजीहे आऊसितवयणगंडदेसे तहवीणेविविडफुग्गणासे विगते तहस्सुग्गभग्गभुमए खज्जोवगदित्तचक्खुरागे भिगुडीकुडिलंतलोयणे दित्तअट्टहासे उत्ता-

वृद्धौ देवकृता धैर्यपरीक्षा

॥२४७॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥२४८॥

वृद्धौ देवकृता धैर्यपरीक्षा

सणए विसालवच्छे दिवंगताहिं बाहाहिं विसालपोट्टे पलंबपोट्टे विसालकुच्छी पलंबकुच्छी तालदीहजंघे णाणाविहपंचवन्नेहिं लोमेहिं उवाचिते हिंगुलुयधातुगिरिकंदरा इव मुहेण अवतासिएण पतिभएण सरडकतवणमालए उदुरकतकन्नपूरए णउलकतकंचिपूरे मुंगुसकतसुंभलए विच्छुतकतवेकत्थे सप्पकतजन्नोवइए अभिन्नमुहनयणकन्नचरणणक्खवग्घचित्तकत्तीणियंसणे सरसरुधिरमंसावलित्तगत्ते अवदालियवयणसिंघगहितग्गहत्थे जंभितपट्टहसितपयंपियपयंभियंमि फुट्टंतवातगंठी कंपंति य घरनिवहा पहसियपच्चलितपवाडितगत्ते पणच्चमाणे पप्फोडेंते आभिवग्गंते अभिगज्जंते बहुसो बहुसो य अट्टट्टहासं विणिम्मुयंते एवं जहा उवासगदसासु कामदेवकहाणगे, एवं सामिणा दट्ठूण अभीतेणं तलप्पहारेणं आहते जहा तत्थेव णिबुड्डे, ताहे भीते देवे चिंतेति-एत्थवि ण चतितो छलेउंति, पच्छा सामिं वंदित्ता णट्ठो ॥ इयाणिं चसद्दसूचितं लेहायरियोवणयणंति दारं—

अन्नया आधितअट्ठवासजाते भगवं ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउयमंगलपायच्छित्ते पवरसेयवत्थनियत्थो सियमल्लालंकारविभूसिते पवरधवलहत्थिखंधवरगते उवरिं समुत्ताजालसितमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं सेतवरचामराहिं ओधुव्वमाणाहिं २ मित्तणातिणियगसयणसंबंधिपरिग्गणेणं णातएहिं खत्तिएहिं समणुगम्ममाणमग्गे अम्मापिऊहिं लेहायरियस्स उवणीते । इमस्स य लेहायरियस्स महतिमहालयं आसणं रातियं, सक्कस्स य आसणचलणं, सिग्घं आगमणं, ताहे सक्को तत्थ सामिं निवेसाति, सोऽवि लेहायरियो तत्थेव अच्छाति, ताहे सक्को करतलकतंजलिपुडो पुच्छति-(उपोद्घातपदपदार्थक्रमगुरुलाघवसमासविस्तरसंक्षेपविषयविभागपर्यायवचनाक्षेपपरिहारलक्षणया व्याख्यया व्याकरणार्थं) अकारादीण य पज्जाए भंगे गमे य पुच्छति, ताहे सामी वागरेति अणेगप्पगारं, इमोऽवि आयरियो सुणति, तस्स तत्थ केति पयत्था लग्गा, तप्पाभितिं च णं ऐंद्रं व्याकरणं संवृत्तं, ते

॥२४८॥

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥२४९॥

य विम्हिता, सक्केण से सिट्ठं जहा भगवं सव्वं जाणति जातिसरो तिणाणोवगतोत्ति । ताहे ताणि परितुट्ठाणि, एवं विक्खसग्गं वड्ढति । इयाणिं विवाहेत्ति दारं, जहा गाहाहिं तहा भाणियव्वं ।

अपत्यद्वारं दानद्वारं च

उम्मुक्कबालभावं० (भा १८) । ॥ (भा०१४) तिहिरिक्खंमि० (भा० १९) । ॥ (भा०११) इयाणिं अवच्चेत्ति तत्थ पंचविहे माणुस्से० (भा८०) । ॥ (भा४०) इयाणिं दाणात्ति–एवं भगवं अट्ठावीसतिवरिसो जातो, एत्थंतरे अम्मापियरा कालगता, पच्छा सामी णंदिवद्धणसुपासपमुहं सयणं आपुच्छति, समत्ता पतिन्नत्ति, ताहे ताणि बिगुणसोगाणि भणंति-मा भट्टारगा ! सव्वजगदपिता परमबंधू एक्कसराए चेव अणाहाणि होमुत्ति, इमेहिं कालगतेहिं तुब्भेहिं विणिक्खमवन्ति खते खारं पक्खेव, ता अच्छह कंचि कालं जाव अम्हे विसोगाणि जाताणि, सामी भणति-'केचिरं अच्छामि ?, ताहे भन्नति-अम्हं परं बिहिं संवत्सरेहिं रायदेविसोगो णस्सेज्जति, ताहे पडिस्सुतं तो णवरं अच्छामि जति अप्पच्छंदेण भोयणादिकिरियं करेमि, ताहे समत्थितं, अतिसयरूवंपि ताव से कंचि कालं पासामो, एवं सयं निक्खमणकालं णच्चा अवि साहिए दुवे वासे सीतोदगमभोच्चा णिक्खंते, अप्फासुगं आहारं राइभत्तं च अणाहारेंतो बंभयारी असंजमवावाररहितो ठिओ, ण य फासुगेणवि ण्हातो, हत्थपादसोयणं तु फासुगेणं आयमणं च, परं णिक्खमणमहाभिसेगे अप्फासुगेणं ण्हाणितो, ण य बंधवेहिवि अतिणेहं कतवं, ताहे सेणियपज्जोयादयो कुमारा पडिगता, ण एस चक्कित्ति । एत्थंतरे भगवं संवत्सरावसाणे णिक्खामिस्सामीति मणं पधारेति । ॥२४९॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं सक्कस्स देविंदस्स आसणे चलिते, आभोइयं जहा जीतमेतं सक्काणं अरिहंताणं भगवंताणं

अत्र भगवंत वीरस्य दीक्षा निमित्त दत्त 'वर्षीदान'स्य वर्णनं आरभ्यते

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता...........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥२५०॥

दानसंबोधद्वार

निक्खममाणाणं इमं एतारूवं अत्थसंपदाणं दलइसए, तंजहा-तिण्णि कोडिसया अट्ठासीतिं चेव कोडीओ असीतिं च सयसहस्सा, तए णं वेसमणं देवं भणति, से य तहेव साहरित्ता जाव पच्चप्पिणति।

तए णं भगवं कल्लाकल्लिं जाव मागहओ पादरासोत्ति बहूणं सणाहाण य अणाहाण य पंथियाण य पहियाण य कारोडियाण य कप्पडियाण य जाव एगं हिरण्णकोडीं अट्ठ य अणूणए सयसहस्से इमं एतारूवं अत्थसंपयाणं दलयति।

तए णं से णंदिवद्धणे राया कुंडग्गामे णगरे तत्थ तत्थ तहिं तहिं देसे देसे बहवे महाणससालाओ करेति, तत्थ बहूहिं पुरिसेहिं दिन्नभतिभत्तवेयणेहिं विपुलं असणं ४ उवक्खडावेति, जे जहा आगच्छंति सणाहे वा अणाहे वा जाव कप्पडिए वा पासत्थे वा गिहत्थे वा तस्स तहा आसत्थस्स वीसत्थस्स सुहासणजाव वरगयस्स तं असणं ४ जाव परिभाएमाणे परिवेसेमाणे विहरति।

तए णं कुंडग्गामे णगरे सिंघाडग जाव मज्झयारेसु बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खाति-एवं खलु देवाणु० कुंडग्गामे णंदिवद्धणस्स रन्नो भवणंसि सव्वकामियं किमिच्छियं विपुलं असणं ४ जाव परिवेसिज्जति,

वरवरिया घोसिज्जति, किमिच्छियं दिज्जते बहुविधीयं। असुरसुरगरुलकिन्नरनरिंदमहिताण निक्खमणे(भा.८४)

तए णं भगवं संवत्सरेण तिण्णि कोडिसया जाव दलयातित्ति। इयाणिं संबोहेत्ति-तए णं भगवं निक्खमिस्सामित्ति मणं पधारेति, तेणं कालेणं तेणं समएणं लोगंतिया देवा बंभलोगे कप्पे रिट्ठे विमाणपत्थडे सएहिं सएहिं विमाणेहिं सएहिं सएहिं पासादवडेंसएहिं पत्तेयं पत्तेयं चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं तिहिं परिसाहिं सत्तहिं अणिएहिं सत्तहिं अणियाहिवतीहिं सोलसहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं अन्नेहि य बहूहिं बंभलोगकप्पवासीहिं लोयंतिएहिं देवेहिं सद्धिं संपरिवुडा महताहतणट्टगीयवाइय जाव विहरंति, ॥२५०॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता..........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णिः-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥२५१॥

लोकान्तिकागमनं

तंजहा—सारस्सयमाइच्चा वण्ही वरुणा य गद्दतोया य। तुसिया अव्वाबाहा, अग्गिच्चा चेव रिट्ठा य (भा.८६)

तए णं तेसिं पत्तेयं पत्तेयं आसणाइं चलंति, ताहे ओहिं पउंजंति आभोएंति सामी निक्खमस्सामीति मणं पधारेंति, तं जीतमेतं लोयंतियाणं भगवंताणं निक्खममाणाणं संबोहणं करेत्तए, तं गच्छामो णं अम्हेवि सामिं संबोहेमोत्तिकट्टु एवं संपेहेंति संपेहेत्ता उत्तरपुर जाव जेणेव सामी तेणेव उवागच्छंति २ अंतलिक्खपडिवन्ना सखिंखिणियाइं पंचवण्णाइं वत्थाइं पवरपरिहिता ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं जाव हिययपल्हायणिज्जाहिं अट्ठसतियाहिं अपुणरुत्ताहिं वग्गूहिं अणवरयं अणवरयं अभिणंदमाणा य २ अभित्थुणमाणा य २ एवं वयासी—जय जय णंदा! जय जय भद्दा! जय जय नंदं ते! भद्दं ते, जय जय खत्तियवरवसभा!, बुज्झाहि भगवं! लोयणाहा पवत्तेहि धम्मतित्थं हितसुहणिस्सेसकरं जीवाणं भविस्सतित्तिकट्टु जयजयसद्दं पउंजंति २ सामिं वंदंति नमंसंति २ नमंसित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूता तामेव पडिगता। इयाणिं णिक्खमणत्ति, एत्थ निज्जुत्तिगाहाओ—

हत्थुत्तरजोगेणं (४५१) सो देवपरिग्गहितो (४६०) तए णं सामी लोगंतिएहिं संबोहिते समाणे जेणेव णंदिवद्धणसुपासप्पमुहे सयणवग्गे तेणेव उवागच्छति २ जाव एवं वयासी-इच्छामि णं तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए, ताहे ताइं अकामगाइं चेव एवं वयासी-'अहासुहं भट्टारगा!।

तए णं से णंदिवद्धणे राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति सद्दावेत्ता एवं वयासी- खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! अट्ठसहस्सं सोवण्णियाणं कलसाणं जाव भोमेज्जाणं अन्न च महत्थं महरिहं जाव उवट्ठवेह, जह मह्व्बलो, तवि उवट्ठवेंति। तेणं कालणं तेणं समएणं सक्के देविंदे देवराया जाव भुंजमाणे विहरति। तए णं तस्स आसणे चलिए आभोएति एवं जहा उसभसामिअभिसेगे तहा ॥२५१॥

अत्र भगवंत वीरस्य दीक्षा-कल्याणक वर्णनं आरभ्यते

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

इन्द्रागमनं

आगतो। णवरं तेणं दिव्वेणं जाणविमाणेणं सामिं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेति करेत्ता भगवतो उत्तरपुरच्छिमे दिसिभागे ईसिं चतुरंगुलमसंपत्तं धरणितलं तं दिव्वजाणविमाणं एवं जहा जंबुद्दीवपण्णत्तीए अभिसेगे जाव अट्ठहिं अग्गमहिसीहिं दोहि य अणिएहिं णट्टाणिएण गंधव्वाणिएण य सद्धिं ताओ दिव्वातो जाणविमाणाओ पुरत्थिमेणं तिसोवाणपडिरूवएणं पच्चोरुभति, तए णं तस्स चउरासीतिं सामाणियसहस्सीओ ताओ जाणविमाणाओ उत्तरिल्लेणं तिसोमाणपडिरूवएणं पच्चोरुभति, तएणं तस्स सक्कस्स अवसेसा देवा य देवीओ य ताओ जाव दाहिणिल्लेणं तिसोमाणपडिरूवएणं पच्चोरुभंति, तए णं से सक्के देविंदे देवराया चउरासीतीए सामाणियसाहस्सीहिं जाव सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव निग्घोसणातियरवेणं जेणेव भगवं तेणेव उवागच्छति २ सामिं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेति करेत्ता वंदति णमंसति २ णमंसित्ता जाव पज्जुवासति। एवं सव्वे इंदा आणेयव्वा जहा जंबुद्दीवपन्नत्तीए जाव सूरे आगते पज्जुवासति। तेणं कालेणं तेणं समएणं बहवे असुरकुमारा देवा सामिस्स अंतियं पाउब्भवित्था। कालमहाणलसरिसणीलगुलियागवलप्पगासा विगसितपत्ततवणिज्जरत्ततलतालुजीहा अंजणघणमसिणरुयगरमणिज्जणिद्धकेसा वामेयकुंडलधरा अद्दचंदणाणुलित्तगत्ता ईसीसिलिंधपुप्फप्पगासाइं संकिलिट्ठाइं सुहुमाइं वत्थाइं पवर परिहिता वयं च पढमं समइक्कंता वितियं च असंपत्ता भद्दे जोव्वणे वट्टमाणा तलभंगयतुडियपवरभूसणनिम्मलमणिरयणमंडितभुता दसमुद्दामंडितग्गहत्था चूलामणीविविधचित्तचिंधगता सुरूवा महिड्ढिया महाजुत्तीया महायसा महब्बला महाणुभागा महासोक्खा ॥२५२॥ हारविराइतवच्छा कडगतुडियथंभितभुया अंगयकुंडलमट्ठगंडतलकन्नपीढधारी विचित्तवत्थाभरणा विचित्तमालामेलाओ कल्लाणयपवरवत्थपरिहिता कल्लाणयपवरमल्लाणुलेवणधरा भासरबोंदी पलंबवणमालधरा दिव्वेण वन्नेणं दिव्वेण गंधेण दिव्वेणं फासेणं

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक-चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥२५३॥

इन्द्रागमनं

दिव्वेणं संघातेणं दिव्वेणं संठाणेणं दिव्वाए इड्ढीए दिव्वाए जुत्तीए दिव्वाए पभाए दिव्वाए छायाए दिव्वाए अच्चीए दिव्वेण तेएण दिव्वाए लेसाए दस दिसातो उज्जोएमाणा २ पभासेमाणा २ आगम्म २ समणं भगवं महावीरं वंदंति णमंसंति २ णमंसित्ता सुस्सूसमाणा णमंसमाणा अभिमुहा विणएणं पज्जुवासेंति । एवं णागा सुवण्णा य विज्जू अग्गी य दीव उदही दिसाकुमारा य पवण थणिया य भवणवासी णागफडागरुलवइरपुण्णकलसणितुप्फेससीहहयवरगयंकमगरंकमउडवरवद्धमाणनिज्जुत्तचित्तचिंधगया सुरूवा महिड्ढिया जाव पज्जुवासंति । तेणं कालेणं तेणं समएणं बहवे वाणमंतरा सामिस्स अंतिअं पाउब्भवित्था पिसाय भूया य जक्ख रक्खस किन्नर किंपुरिसा भुयगपतिणो य महाकाया गंधव्वगणा य णिउणगंधव्वगीतरयिणो, अणवन्निय पणवन्निय इसिवाइय भूतिवातिय कंद महाकंदिया य कुहंड पनका देवा चंचलचलचवलचित्तकीलणदवप्पिया गभिरहसितपियगीतणच्चणरती वणमालामेलमउडकुंडलसच्छंदविगुव्वितामरणचारुभूसणधरा सव्वोउयसुरभिकुसुमसुरयितपलंबसोभंतकंतविगासितचित्तवणमालरइतवच्छा कामगमा कामरूवधारी णाणाविहवन्नरागवरवत्थचित्तचित्तयणियंसणा विविहदेसिणेवत्थगहितवेसा पमुदितकंदप्पकलहकेलिकोलाहलप्पिया य हासबोलबहुला अणेगमणिरयणविविहणिज्जुत्तचित्तचिंधगया सुरूवा महिड्ढिया जाव पज्जुवासंति । तेणं कालेणं २ बहवे जोतिसिया देवा सामिस्स अंतियं पाउब्भवित्था बहस्सती चंदसूरसुक्कसणिच्चरा राहुधूमकेउबुहा अंगारया य तत्ततवणिज्जकणयवन्ना जे य गहा जोइसंमि चारं चरंति केतू य गतीरतिया अट्ठावीसतिविहा य णक्खत्तदेवतगणा णाणासंठाणसंठिताओ य पंचवन्नाओ तारगाओ ठितिलेसाचारिणो अविस्साममंडलगती पत्तेयं नामयंकपागडितचिंधमउडा महिड्ढिया जाव पज्जुवासंति । तेणं कालेणं तेणं समएणं बहवे वेमाणिया देवा सामिस्स अंतियं पाउब्भवित्था, सोहम्मीसाणा

॥२५३॥

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥२५४॥

श्रीवीरस्य दीक्षामहः

सणंकुमारमाहिंदबंभलंतयसुक्कसहस्साराणतपाणतआरणच्चुतवती पइट्ठा सामाणियतावत्तीससहिता सलोगपालग्गमहिसिप रिसाणियातरक्खेहिं संपरिवुडा देवसहस्साणुयातमग्गेहिं सुरवरगणीसरेहिं पयतेहिं समणुगम्मंता सस्सिरीया सव्वादरभूतिसमूहणायगा सोम्मचारुरूवा विमलविधुव्वंतचामरा देवसंघजयसद्दकतालोया मिगमहिसवराहछगलदद्दुरहयगयवतिभुयगखग्गउसभंकविडिमपागडीतचिंधमउडा पालयविमाणपुप्फसोमणससिरिवच्छणंदियावत्तकामपीतिमणविमलवरसव्वतोभद्दणामधेज्जेहिं विमाणेहिं तरुणदिवाकरकरतिरेगप्पभेहिं मणिकणयरयणघंटियाजालुज्जलहेमजालेपेरंतपरिगतेहिं समंतवरमुत्तदामलंबंतभूसणेहिं पयलियघंटावलिमधुरसद्दवंसतंतीतलतालगीतवाइतरवेण वरतुरितमीसएणं पूरेंता अंबरं समंता तुरितं संपत्थिता देवेंदा हट्ठतुट्ठमणसा सेसाविय कप्पतरविमाणा देवा सुरवरा सविमाणविचित्तचिंधनामंकविगडपागडमउडाडोवसुहदंसणिज्जा तेऽवि समण्णेंति सुरवरिंदे। लोगंतविमाणवासिणो चेव देवसंघा पत्तेयविरयितमणिरयणुक्कडेभिसंतणिम्मलनियंकिताविचित्तपागडितचिंधमउडा दाएंता अप्पणो समुदयं पेच्छंताविय परस्स रिद्धीओ उत्तमाओ, एवं कप्पालया सुरवरा जिणिंदचंदनिमित्तभत्तीय चोदितमती हरिसितमणसो य जीतकप्पमणुयत्तमाणा देवा जिणदंसणुस्सुया गमणजणितहासा विउलबलसमूहपिंडिता संभमेण गगणतलविमलविउलगमणचलचवलचलियमणपवणजइणवेगा णाणाविहजाणवाहणगता ऊसितविमलधवलातपत्ता विउव्वितजाणवाहणविमाणदेवरयणप्पभावेण य सव्विड्ढीय तुलियं पयाता पसिढिलवरमउडतिरीडधारी कुंडलउज्जोइताणणा मउडादित्तसिरया रत्ताभा पउमपम्हा गोरा सेता सुहवण्णगंधरसफासा उत्तमवेउव्विणो पवरवत्थगंधमल्लधारी महिड्ढीया जाव पज्जुवासंति। ॥२५४॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं बहवे अच्छरसंघा सामिस्स अंतियं पाउब्भवित्था, ताओ णं अच्छराओ धंतधोयकणगरुयगविमल-

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णी उपोद्घात निर्युक्तौ

॥२५५॥

श्रीवीरस्य दीक्षामहः

णिरुवहतपिंजराओ समइक्कंता य बालभावं मज्झिमजरढवयभावविरहिताओ अतिवरसोमचारुरूवा णिरुवहतसरसजोव्वणकक्कसतरुणवयभावमुवगताओ णिच्चमवट्ठितस्सभावसव्वंगसुंदरंगाओ इच्छितणेवत्थरइतरमणिज्जगहितवेसाओ कंतहारद्धहारवत्तरयणकुंडलवासुत्तगहेमजालमणिजालकणयजालयसुत्तयउव्विवितियकडयखड्डुयएकावलिकंठउत्तपगरयउरत्थगेवेज्जसोणिसुत्तयचूलामणिकणयतिफुल्लयसिद्धत्थिकन्नवालिससिसूरउसभचक्कयतालभंगयतुडियहत्थमालयहरिस्सयकेऊरवलयपालंबअंगुलेज्जयवलक्खदीणारमालिता चंदसूरमालिया कंचीमेहलकलावपयतरयपरिहेरयपादजालघंटियखिंखिणिरयणोरूजालतुड्डियवरणेउरचलणमालिता कणयणियलजालयमगरमुहविरायमाणणेपुरपचलियसद्दालभूसणधारीओ दसद्धवन्नरागरइतरत्तमणहरे महग्घे णासाणीसासवातवोज्झे चक्खुहरे वण्णफरिसजुत्ते आगासफलियसमप्पभे अंसुए णियत्थाओ, आदरेणं तुसारगोखीरहारदगरयपंडुरदुगुल्लसुउमालसुकतरमणिज्जउत्तरिज्जाणि पाउताओ वरचंदणचच्चिता वराभरणभूसिताओ सव्वोउयसुरभिकुसुमसुरयितविचित्तवरमल्लधारिणीओ सुगंधचुन्नंगरागवरवासपुप्फपूरयविराइता उत्तमवरधूमधूविता अधियसस्सिरीया दिव्वकुसुममल्लदामगब्भंजलिपुडाओ उच्चत्तेण य सुराण थोवूणमूसिताओ चंदाणणाओ चंदविलासिणीओ चंदद्धसमणिडालाओ उक्का इव उज्जोवेमाणीओ विज्जुघण मिरीयिसूरदिप्पंततेयअधिकतरसंनिकासाओ सिंगारागारचारुवेसाओ संगतगतहसितभणितचिट्ठितविलाससललितसंलावणि उणजुत्तोवयारकुसलाओ सुंदरथणजहणवयणकरचरणणयणलावन्नरूवजोव्वणविलासकलिताओ सुरवहूओ सिरीसणवणीतमउयसुउमालतुल्लफासा ववगतकलिकलुसधोतणिद्धंतरयमला सोम्माओ कंताओ पियदंसणाओ सुसीलाओ जिणभत्तिदंसणाणुरागेणं हरिसिताओ उवतिताचि जिणसगासं दिव्वेणं वण्णेणं जाव ठितियाओ चेव सुस्सूसमाणीओ णमंसमाणीओ अभिमुहाओ विणएणं पंजलिकडाओ पज्जुवासंति।

॥२५५॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता...........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

श्री आवश्यक-चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥२५६॥

श्रीवीरस्य दीक्षामहः

एवं एत्थ (भा. ८८) मणपरिणामो (भा. ८४) भवणवइ (भा. ८०) जाव य कुंडग्गामो (भा. ८१) तए णं से अच्चुए देविंदे देवराया आभियोगिये देवे सद्दावेति, सद्दावेत्ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! समणस्स भगवतो महावीरस्स महत्थं महरिहं विउलं णिक्खमणाभिसेयं उवट्ठवेह, एवं जहा उसभसाभिस्स जम्माभिसेगे जाव उवट्ठवेंति, एवं पाणतेवि, एवं परिवाडीए जाव सक्कस्स आभिओगा उवट्ठवेंति। तए णं ते दिव्वा कलसा य (ते) चेव कलसे अणुपविट्ठा।

तए णं से णंदिवद्धणे राया सामिं सीहासणंसि पुरत्थाभिमुहं निवेसेति निवेसेत्ता अट्ठसहस्सेणं सोवण्णियाणं कलसाणं जाव भोमेज्जाणं कलसाणं सव्वोदएहिं सव्वमट्टियाहिं जाव रवेणं महता २ णिक्खमणाभिसेगेणं अभिसिंचंति। तए णं सामिस्स महता २ णिक्खमणाभिसेगंसि वट्टमाणंसि सव्वेवि इंदा छत्तचामरकलसधूवकडुच्छुतपुप्फगंध जाव हत्थगता हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिया जाव हियया पंजलियडा सामिस्स पुरतो चिट्ठंति जाव वज्जसूलपाणी, अन्नेविय णं देवा य देवाओ य वंदणकलसहत्थगता एवं भिंगार-आदंसथालपातीसुपतिट्ठावातकरगचित्तरयणकरंडा पुप्फचंगेरी जाव लोमहत्थचंगेरी पुप्फपडल जाव सीहासणछत्तचामरतेल्लसमुग्गय जाव धूवकडुच्छुगत्ति जाव अप्पेगतिया देवा कुंडग्गामं णगरं आसितसंमज्जितोवलित्तं करेंति जाव आधावंति, जहा विजयस्स। तए णं से णंदिवद्धणे राया दोच्चंपि उत्तरावक्कमणं सीहासणं रयावेति, सामिं सीतापीतेहिं कलसेहिं जाव अलंकारितसभाए सीहासणे पुरत्थाभिमुहे सन्निसन्ने,तए णं सामिस्स इंदा महरिहं सुबहुअलंकारियभंडं उवणेंति, तप्पढमताए पम्हलसुकुमालाए सुरभीए गंधकासाइए गायाइं लूहेंति, लूहेत्ता सरसेणं गोसीसचंदणेण गाताइं अणुलिंपंति, अणुलिंपेत्ता णासाणीसासवातवोज्झं चक्खुहरं वन्नफरिसजुत्तं हतलालापेलवातिरेयं चवलं कणगखतितंतकम्मं आगासफालितसमप्पभं अहतं दिव्वं देवदूसजुयलं णियंसेंति णियंसेत्ता

॥२५६॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥२५७॥

श्रीवीरस्य दीक्षामहः

कडिसुत्तगं पिणिद्धंति, तए णं तं पवरजच्चमुत्तियं सुसज्जितं सुरभिगंधमल्लफरिसजुत्तं अवगतमलसकलाणित्तलुज्जलजहिच्छितविभागर-
यितसमणिजणजुत्तिजोइयखयवड्डिविसेसजणिततणुयत्तमज्झपीवरसुजातरूवं णिम्मलतवणिज्जसुत्तकायितचउसट्ठिसिलिट्ठलट्ठकट्टितसु-
लिट्ठपमाणलट्ठलक्खणगुणोववेतं पविसरपरिरत्तपंचवन्नियविराइतं वातविहुतपरिज्जमाणं रमणिज्जपट्टियागोच्छपल्लवइतं थवलमहा-
पत्तइंदकायोमं (व) उरणभंगणड्डयंदं णिसाकरकरातिरेगसीतलतरं उसिणपसरसतुरितावसारं ऊरलत्थीहत्थविच्छूरं कुंदकुसुमाणिरुह-
पहतणिकरगोरं हारं आभरणपडीहारं पिणिद्धिंति हट्ठतुट्ठमणसा, तयणंतरं च णं मणियणोवगूढसंखसोभंतमज्झागरमुहणिग्गतसरं
तवणिज्जमयं विचित्तमणिरयणभत्तिचित्तं पालंबं अप्पणो पमाणेण सुप्पमाणं पिणिद्धंति वयणकमलणालं, तदणं० च णं तवणिज्ज-
मयाइं चंचलचलंतचलियसोदामणिप्पभाइं विमलमिसिमिसंतमणिरयणपरिमंडिताइं गंडपरिपुंछकाइं कवोलनोयल्लगाइं मुहलच्छी-
दीवगाइं आभरणोदारचारुथिक्किकल्लचिल्लकाइं कन्नेसु कुंडलाइं पिणिद्धंति हट्ठतुट्ठमणसा, तहेव तं धम्मगं च सुहफासिससुसंपयुत्तं विमलं
सिरिविभूसेक्कमउडपडिसवत्ति अमंगलासंतिरोगदोसावहारकं अवरिसं पवरलक्खणगुणोववेयं मंगल्लं उत्तमं पवित्तं अवणितमउ-
डसिरिकूडभूतं गुणागरं सिरिवरं महातेयकंतिजुत्तं रूवणाभातारकं पुढविरयणसव्वसारं देविंदणरिंदमुद्धकतणिलयणं अग्घं चूला-
मणिं पिणद्धिंति हट्ठतुट्ठमणसा, तयणंतरं च णं अतिरुग्गयसिसिरसमयरवितरुणमंडलणिभं जंबूणयविमलविपुलविदालितं सोलस-
पररयणकलितविणियुत्तदेसभागं मंगलभत्तिसहस्ससोभंतसस्सिरीयं मरगयमणयमगररयणवालरुयगकक्केतणकणगचित्तणिज्जुत्तचारु-
णिम्मलविच्चिरमुहसतविणिग्गओग्गिन्नपवरसुत्तियपतरपलंबंतदामकलितं तवणिज्जविचित्तमुत्तियाजालरयणपचालितघंटियसद्दालम-
धुरमुहलं अतिसयमतिविभवणितुणाविणइतमणोरहुप्पादकं अहियपेच्छणिज्जरूवं मणिरयणजलंतजालमालाकुलाभिरामं आभरणवडेंसयं ॥२५७॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥२५८॥

श्रीवीरस्य दीक्षामहः

पभासमुदओपहारं रयणुक्कडं मउडं पिणद्धंति हट्ठतुट्ठमणसा, एवं हारं पिणिद्धंति २ अद्धहारं पिणद्धंति २ एकावलिं २ मुत्तावलिं २ कणगावलिं २ रयणावलिं २ मुरविं कंठे २ मुरविं पलंबं २ पादावलंबाइं पलंबाइं २ कडगाइं २ तुडियाइं २ केऊराइं २ अंगयाइं २ दसमुद्दियाणंतकं २ कडिसुत्तगं२ कुंडलाइं २ चूलामणिं२ चित्तरयणसंकडं मउडं२ दिव्वं सुमणदामं २ददरयमलयसुगंधिगंधिए य गंधे पिणिद्धंति २ त्ता जाव णाणामणिकणगरयणविमलमहरिहणिउणोवइवितमिसिमिसेंतविरइतसुसिलिट्ठविसिट्ठलट्ठतेलोक्कवीरवलए आविंधंति २ तए णं ते सामिं गंथिमवेढिमपूरिमसंघातिमेणं चउव्विहेणं मल्लेणं कप्परुक्खयंपिव अलंकितविभूसितं करेंति, ताहे सुगंधगंधाइं पक्खिवंति२ एवं वासाइं जाव चुन्नाइं पक्खिवंति२ ताहे पत्तेयं पत्तेयं करतलपरिग्गहितं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुण्णाहिं मणामाहिं ओरालाहिं कल्लाणाहिं सिवाहिं धन्नाहिं मंगल्लाहिं मितमधुरसस्सिरीयाहिं वग्गूहिं अभिणदमाणा य अभिथुणमाणा य एवं वयासी- जय जय णंदा ! जय जय भद्दा ! जय जय णंदा ! भद्दं ते, जय जय खत्तियवर-वसभा ! अजियं जिणाहि इंदियसेन्नं जियं पालयाहि समणधम्मं जियमज्झे वसाहि बहूइं दिवसाइं बहूइं पक्खाइं बहूइं मासाइं बहूइं उडूइं बहूइं अयणाइं बहूइं संवच्छराइं, अभीता परीसहोवसग्गाणं खंतिखमा भयभेरवाणं धम्मे अविग्घं भवउत्तिकट्टु जयजयसद्दं पउंजंति, पउंजेत्ता णट्टविहिं उवदंसेंति जहा सूरियाभो। तए णं से णंदिवद्धणे राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति सद्दावेत्ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! अणेगखंभसयसंनिविट्ठं एवं सीयावन्नओ जहा णातेसु मेहकुमारस्स जाव तुरियं चवलं वेगिकं पन्नासधणुआयामं पणुवीसधणुविच्छिन्नं छत्तीसधणुमुव्विद्धं चंदप्पभं सीतं उवट्ठवेह, तए णं ते जाव उवट्ठवेंति। तए णं से अच्चुए आभियोगिए देवे सद्दावेति सद्दावेत्ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो जाव चंदप्पहं सीयं उवट्ठवेह, णवरं जाणविमाणवन्नओ,

॥२५८॥

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥२५९॥

तेऽवि जाव उवट्ठवेंति । तए णं सा सीता तं चेव सीतं अणुप्पविट्ठा ।

एत्थ-चंदप्पभा य० ॥ भा. ९२ ॥ पंचासति० ॥ भा. ९३ ॥ सीयाय मज्झयारे ॥ भा. ९४ ॥ तए णं सामी वेसालीए केसालंकारेणं मल्लालंकारेणं आभरणालंकारेणं वत्थालंकारेणं चउव्विहेणं अलंकारेणं अलंकारिए पडिपुण्णालंकारे सीहासणाओ अब्भुट्ठेति अब्भुट्ठेत्ता जेणेव चंदप्पभा सीता तेणव उवागच्छति उवागच्छेत्ता चंदप्पभं सीयं अणुप्पयाहिणीकरेमाणे २ चंदप्पभं सीयं दुरुहति २ सीहासणवरगते पुरत्थाभिमुहे सन्निसन्ने ।

तए णं भगवतो कुलमहत्तारिता ण्हाया जाव सरीरा हंसलक्खणं पडसाडयं गहाय जाव सीयं दूरुहति २ त्ता सामिस्स दाहिणे पासे भद्दासणवरंसि सन्निसन्ना, एवं सामिस्स अम्मधाती उवगरणं गहाय वांमे पासे संनिसन्ना, तए णं सामिस्स पिट्ठतो एगा वरतरुणी सिंगारागारचारुवेसा संगतगत जाव रुवजोव्वणविलासकलिता हिमरयजाव धवलं आयवत्तं गहाय सलीलं धरेमाणी २ चिट्ठति, तए णं सामिस्स उभओ पासिं दुवे वरतरुणीणो जाव चवलाओ चामराओ गहाय जाव चिट्ठंति, तए णं सामिस्स उत्तर-पुरच्छिमेणं एगा वरतरुणी जाव सेयं रययामयं विमलसलिलपुन्नं मत्तगयमुहाकीतिसामाणं भिंगारं गहाय जाव चिट्ठति । एवं दाहिणपुरत्थिमेणं एगा वरतरुणी चित्तं कणगदंडं जाव तालवेंटं गहाय चिट्ठति, केति पुण भणंति- सव्वं देवा य देवीओ य ।

तए णं सामिस्स पिट्ठतो सक्कादिया देविंदा हिमरययकुंदेंदुपगासाइं वेरुलियविमलदंडाइं जंबूणयकन्नियागाइं वइरसंधीणि मुत्ताजालपरिगताणि अट्ठसहस्सवरकंचणसलागाणि दद्दरमलयसुगंधिं सव्वोउयसुरभिसीयलच्छायाइं मंगलभत्तिचित्ताइं चंदागारो-

श्रीवीरस्य दीक्षामहः

॥२५९॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता...........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥२६०॥

श्रीवीरस्य दीक्षामहः

धमाइं जाव सकोरेंटमल्लदामाइं छत्ताइं सलीलं धरेमाणा धरेमाणा चिट्ठति । तए णं सामिस्स उभतो पासिं चंदप्पभवेरुलियणाणा-मणिकणगरयणखचियचित्तदंडाओ सुहुमरययदीहवालाओ संखकुंददगरयअमयमहियफेणपुंजसंनिकासाओ सव्वरयणामतीओ अच्छाओ चामराओ जाव वीएमाणा २ चिट्ठंति, एवं तएणं से णंदिवद्धणे राया अट्ठारस सेणिप्पसेणीओ सद्दावेति सद्दावेत्ता एवं वयासी-तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! ण्हाया जाव सव्वालंकारविभूसिया सीयं परिवहह, तए णं ते जाव सिवियं परिवहंति, तए णं से सक्के देविंदे देवराया चंदप्पभाए सीयाए दाहिणिल्लं उवरिल्लं बाहं गेण्हति, ईसाणे देविंदे देवराया उत्तरिल्लं उवरिल्लं बाहं गेण्हति, चमरे असुरिंदे दाहिणिल्लं हेट्ठिल्लं बाहं गेण्हति, बली [धायरणिंदे] वइरोयणिंदे उत्तरिल्लं हेट्ठिल्लं बाहं गेण्हति, अवसेसा भवणवइवाणमंतरजोइसवेमाणिता देवा जहारिहं चंदप्पभं सीयं गेण्हंति । एवं एत्थ

आलतिय०॥ भा. ९५ ॥ छट्ठेणं०॥ भा. ९६ ॥ सीहासणे०॥ भा. ९७॥ पुव्विं० भा.॥९८॥ चलचवलकुंडलधरा, सच्छंदविउव्विताभरणधारी । असुरसुरवंदियाणं, वहंति सीयं जिणिंदाणं भा ॥९९॥ कुसुमाणि० ॥ भा. १०० ॥ वणसंडो य०॥ भा. १०१॥ सिद्धत्थवणं० ॥ १०२ ॥ अयसि० ॥ भा. १०३ ॥ वरपडह० ॥ भा. १०४ ॥

तए णं सामिस्स सीयं दूरुढस्स समाणस्स तप्पढमयाए इमे अट्ठट्ठमंगलया पुरतो अहाणुपुव्वीए संपट्ठिता, तंजहा- सोत्थिय सिरिवच्छ णंदियावत्त वद्धमाणय भद्दासण कलस मच्छ दप्प सव्वरयणामया पासादीया जाव अभिरूवा पडिरूवा, तयणंतरं च णं पुन्नकलसा भिंगारदिव्वा य छत्तपडागा सचामरा दंसणरचितआलोकदरिसणिज्जा वातुद्धयविजयवेजयंती य समूसिया गगणतल-

॥२६०॥

प्रत सूत्रांक [-] दीप अनुक्रम [-]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता...........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥२६१॥

श्रीवीरस्य दीक्षामहः

मणुलिहंती पुरतो अहाणुपुव्वीए संपट्ठिता । तयणंतरं च णं वेरुलियभिसंताविमलदंडं पलंबकोरंटमल्लदामोवसोभितं चंदमंडलणिभं समूसितविमलमातवत्तं पवरं सीहासणं च मणिरयणपादपीढं सपाउयाजोगसमाजुत्तं बहुकिंकरामरपरिक्खित्तं सच्छत्तभिंगारं जाव संपट्ठितं, तयणंतरं च णं तरमल्लिहायणाणं हरिमेलामउलिमल्लियच्छाणं चंचुच्चियललितपुलियचलचवलचंचलगतीणं लंघणवग्गणा-धावणाधारणतिवदिजइणसिक्खितगतीणं ललंतलासगललामवरभूसणाणं मुहमंडगओचूलगथासगअमिलाणचामरगंडेगपरिमंडितक-डीणं किंकरवरतरुणपरिग्गहिताणं अट्ठसयं वरतुरगाणं पुरओ अहाणुपुव्वीय संपत्थियं, तयणंतरं च णं ईसीदंताणं ईसीमत्ताणं ईसीतुंगाणं ईसीउच्छंगविसालविउलदंताणं ईसीकंचणकोसीपिणिद्धदंताणं कंचणमणिरयणभूसियाणं वरपुरिसारोहसुसंपउत्ताणं अट्ठ-सयं कुंजरवराणं पुरतो अहाणुपुव्वीए संपत्थियं, तयणंतरं च णं सच्छत्ताणं सज्झयाणं सघंटाणं सपडागाणं सतोरणवराणं सणंदि-घोसाणं हेमवंतचित्तताणिसकणगणिजुत्तदारुयाणं कालायससुकतणेमीयंतकम्माणं सुसंविद्धचिक्कमंडलधुराणं आइण्णवरतुरगसंपउ-त्ताणं कुसलणरच्छेदसारहिसुसंपग्गहिताणं हेमजालगवक्खजालखिंखिणिघंटाजालपरिक्खित्ताणं बत्तीसतोणपरिमंडिताणं ससंकडवडें-सयाणं सचावसरपहरणावरणभरितजुद्धसज्जाणं अट्ठसयं रहाणं पुरतो जाव संपत्थियं, तयणंतरं च णं सन्नद्धबद्धवम्मियकवयाणं उप्पीलियसरासणपट्टियाणं पिणिद्धगेवेज्जविमलवरबद्धचिंधपट्टाणं गहियाउहपहरणाणं अट्ठसयं वरपुरिसाणं पुरतो जाव संपत्थियं, ॥२६१॥
तयणंतरं च णं हयाणीयं गच्छति, तयणंतरं च णं गयाणीयं गच्छति, तयणंतरं च णं पायत्ताणियाणीयं गच्छइ, तयणंतरं च णं वइराभयवट्टलट्ठसंठितसिलिट्ठपरिवट्ठमट्ठसुपतिट्ठियविसिट्ठे अणेगवरपंचवण्णकुडभीसहस्सपरिमंडिताभिरामे वाउद्धतविजयवेजयंति-

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥२६२॥

श्रीवीरस्य दीक्षामहः

पडागच्छत्तादिच्छत्तकलिते तुंगे गगणतलमभिकंख(लंघ)माणसिहरे जोयणसहस्समूसिते महतिमहालए महिंदज्झए पुरतो अहाणुपुव्वीए संपत्थिए। तयणंतरं च णं बहवे

असिलट्ठ० (औप०) कुंत० (औप०) जाव संपत्थिया, तयणंतरं च णं बहवे डंडिणो बहवे मुंडिणो बहवे दंढिणो जाव बहवे जडिणो हासकारका दवकारका खेड्डकारका चाडुकारका कंदप्पिया कुक्कुतिया गायंतया वायंतया नच्चंतया हसंतया रमंतया हसावेंतया रमावेंतया जाव आलोयं च करेमाणा जयजयसद्दं च पउंजेमाणा जाव संपत्थिया, तयणंतरं च णं बहवे उग्गा भोगा राइन्ना खत्तिया जाव सत्थवाहप्पभितयो ण्हाता जहा उववातिए जाव अप्पेगतिया पायविहारेण महता पुरिसवग्गुरापरिक्खित्ता सामिस्स पुरतो य मग्गतो य पासओ य अहाणुपुव्वीए संपत्थिता। एवं बहवे देवा देवीओ य सएहिं २ रूवेहिं सएहिं २ वेसेहिं सएहिं २ चिंधेहिं सएहिं २ निओएहिं पुरओ य मग्गओ य पासओ य अहाणुपुव्वीए संपत्थिया। तए णं से णंदिवद्धणो राया ण्हाते जहा कूणिते जाव हत्थिखंधवरगते सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं सेतवरचामराहिं ओधुव्वमाणीहिं २ हतगयरहपवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे महता भडचड जाव परिक्खित्ते सामिं पिट्ठतो २ अणुगच्छति। तते णं सामिस्स पुरतो महं आसा आसवारा उभतो पासिं नागा णागधरा पिट्ठतो रहा रहसंगेल्ली। ॥२६२॥

तए णं से समणे भगवं महावीरे वेसालीए दक्खे पडिन्ने पडिरूवे अल्लीणे भद्दए विणीए णाते णातपुत्ते णातकुलविणिवत्ते विदेहे विदेहदिन्ने विदेहजच्चे विदेहसूमाले सत्तुस्सेहो समचउरंससंठाणसंठिते वज्जरिसभणारायसंघयणे अणुलोमवायुवेगे कंकग्ग-

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥२६३॥

श्रीवीरस्य देहवर्णनं

हणी कवोयपरिणामे सोणिपोसपिट्ठंतपरिणते पउमुप्पलगंधसरिसणीसाससुरभिवयणे छवीणिरातंकउत्तमपसत्थअतिसेसणिरुवमतणू जल्लमलकलंकसेयरयदोसवज्जियसरीरे णिरुवलेवे छायाउज्जोवितंगमंगे घणणिचियसुबद्धलक्खणुन्नयकूडागारणिभपिंडितसिरे सामलिबोंडघणणिचियतच्छोडितमिउविसयपसत्थसुहुमलक्खणसुगंधसुंदरभुयमोयगभिंगणेलकज्जलपहट्ठभमरगणणिद्धणिगुरुंबणिचितकुंचितपदाहिणावत्तमुद्धसिरए दालिमपुप्फप्पगासतवणिज्जसरिसनिम्मलसुणिद्धकेसंतकेसभूमी छत्तागारुत्तिमंगदेसे उडुवइपडिपुण्णसोमवयणे णिव्वणसमलट्ठमट्ठचंदद्धसमणिडाले आणामितवरचेरुलियतणुकसिणद्धसंठितसंगतआयतसुयायभुमए अल्लीणप्पमाणजुत्तसवणे सुमणे पीणमंसलकवोलदेसभाए कोकासियधवलपत्तलच्छे विप्फालियपोंडरीयणयणे गरुलायतउज्जुतुंगणासे ओयवियसिलप्पवालबिंबफलसंनिभाधरोट्ठे पंडुरससिसगलविमलनिम्मलसंखगोक्खीरफेणदगरयमुणालियाधवलदंतसेढी अंकूडदंते अफुडितदंते अविरलदंते सुणिद्धदंते सुजातदंते एगदंतसेढीविव अणेगदंते हुतवहणिद्धंतधोततत्ततवणिज्जरत्ततलतालुजीहे मंसलपसत्थसंठितसद्दूलविउलहणुए सारयणवधणितमधुरगंभीरकोंचनिग्घोसदुंदुभिस्सरे अवट्ठितसुविभत्तचित्तमंसू चतुरंगुलसुप्पमाणवरकंबुसरिसगीवे वरमहिसवराहसीहसद्दूलउसभणागवरपडिपुण्णविउलवट्टखंधे पुक्खरवरफलिहवट्टितभुए भुयगीसरविउलभोगआदाणफलिहउच्छूढदीहबाहू जुयसंनिभपीणरइयपीवरपयोट्ठसंठितसुसिलिट्ठविसिट्ठउवचितघणथिरसुबद्धसुणिगूढपव्वसंधी रत्ततलोवचियतमउयमंसलपसत्थलक्खणसुजातअच्छिद्दजालपाणी पीवरवट्टितसुजातकोमलवरंगुली आयंबतलिणसुइरुविलणिद्धणक्खए चंदपाणिलेहे संखपाणिलेहे चक्कपाणिलेहे सोत्थियपाणिलेहे रविससिसंखवरचक्कसोत्थियविभत्तसुविरयितपाणिलेहे अणेगवरलक्खणुग्गमपसत्थसुविरयितपाणिलेहे, उवचितपुरवरकवाडविच्छिन्नपिहुलवच्छे, कणगसिलातलुज्जलपसत्थसमतलउवचितसिरिवच्छरयितवच्छे अकरंडुयकण- ॥२६३॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता...........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥२६४॥

श्रीवीरस्य देहवर्णनं

गरुइलनिम्मलसुजातणिरुवहतदेहधारी अट्ठसहस्सपडिपुन्नवरपुरिसलक्खणधरे संनतपासे संगतपासे सुंदरपासे सुजातपासे मितमाइ-
यपीणरइतपासे झसविहगसुजातपीणकुच्छीसमोदरे पउमविगडनाभी साहतसोणंदमुसलदप्पणणिगारियवरकणगवरुयसरिसवरवइरव-
लितमज्झे गंगावत्तयपयाहिणावत्ततरंगभंगरविकिरणतरुणबोहितअकोसायंतपउमगंभीरवियरणाभे उज्जुयसमसहितसुजातजच्चतणु
कसिणणिद्धआएज्जलडहसूमालमउयरमणिज्जरोमरायी पमुदितवरतुरगसीहअतिरेगवट्टितकडी पसत्थवरतुरगसुजातगुज्झदेसे आइन्न-
हयव्व निरुवलेवे गयससणसुजातसंनिभोरू वरवारणमत्ततुल्लविक्कमविलसितगती समुग्गणिमुग्गगूढजन्नू एणीकुरुविंदावत्तवट्टाणुपु-
व्वजंघे संठितसुसिलिट्ठविसिट्ठगूढगोप्फे सुपतिट्ठयकुम्मचारुचलणे अणुपुव्वसुसाहतपीवरंगुलीए उन्नततणुतंबनिद्धनखे रत्तुप्पलपत्त-
मउयसुकुमालमंसलतले नगणगरमगरसागरचक्कंकवरंकमंगलंकितचलणे निविट्ठचलणे विसिट्ठरूवे हुतवहनिद्धूमजलिततडितडियत-
रुणरविकिरणसरिसतेए अब्भहियं रज्जतेयलच्छीय दिप्पमाणे सूरे वीरे विक्कंते पुरिसोत्तिमे पुरिससीहे पुरिसवरपुंडरीए पुरिसवर-
गंधहत्थी तीसं वासाइं विदेहंसि कट्टु अम्मापितिहिं देवत्तिगएहिं गुरुमयहरएहि य अब्भणुन्नाते समत्तपइन्ने पुणरवि लोयंतिएहिं
जीतकप्पेहिं देवेहिं संबोहिते तेणं अणुत्तरेणं आभोहिएणं णाणदंसणेणं अप्पणो णिक्खमणकालं आभोगेऊण चिच्चा हिरण्णं चिच्चा
सुवण्णं चेच्चा धणं चेच्चा रज्जं चेच्चा रट्ठं एवं बलं वाहणं कोसं कोट्ठागारं चेच्चा पुरं चेच्चा जणवयं चेच्चा धणकणगरयणमणि-
मोत्तियसंखसिलप्पवालरत्तरयणमादीयं संतसावतेज्जं विच्छड्डइत्ता विगोवइत्ता दाणं दाइयाणं परिभाएत्ता जे से हेमंताणं पढमे मासे
पढमे पक्खे मग्गसिरबहुले तस्स णं मग्गसिरबहुलस्स दसमीपक्खेणं पातीणगामिणीए छायाए पोरुसीए अहिणिव्वट्टाए पमाणपत्ताए
सुव्वएणं दिवसेणं विजएणं मुहुत्तेणं चंदप्पभाए सीयाए सदेवमणुयासुराए परिसाए समणुगम्ममाणमग्गे संखियचक्कियणंगलिय-

॥२६४॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

॥२६५॥

सुहमंगलियपूसमाणवद्धमाणघंटियगणेहिं ताहिं इट्ठाहिं जाव वग्गूहिं अभिणंदिज्जमाणे य अभिथुव्वमाणे य अब्भुग्गयभिंगारे पग्गहिततालयंटे ऊसवितसेतछत्ते पवीयितसेतचामरावालवीयणीए सव्विड्ढीए सव्वजुत्तीए सव्वबलेणं सव्वसमुदएणं सव्वविभूतीए सव्वविभूसाए सव्वसंभमेणं सव्वपगतीहिं सव्वणातगेहिं सव्वणाडगेहिं सव्वतालातरेहिं सव्वपुप्फगंधमल्लालंकारेणं सव्वतुडिगसद्दसंनिनादेणं एवं महता इड्ढीए जाव महता समुदएणं महता वग्तुडितजमगसमगपडुप्पवातियसंखपणवभेरिझल्लरिखरमुहिहुंदुहुडुक्कितमुरवमुइंगदुंदुभिणिग्घोसणादितरवेणं कुंडपुरं मज्झंमज्झेणं जेणेव णातसंडवणे उज्जाणे जेणेव असोगवरपायवे तेणेव पहारेत्थ गमणाए।

तए णं सामिस्स तहा णिग्गच्छमाणस्स अप्पेगतिया देवा कुंडपुरं णगरं सब्भिंतरबाहिरियं आसियसंमज्जितं जधा अभिसेगे जाव आहावंति परिधावंति। तए णं सामिस्स कुंडपुरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छमाणस्स सिंघाडगतिगचउक्क जाव पहेसु बहवे अत्थत्थिया कामत्थिया लाभत्थिया जाव करोडिया अन्ने य तहा बहवे नरनारी देवदेविसंघाता ताहिं इट्ठाहिं जाव गाहियाहिं वग्गूहिं अभिनंदमाणा य अभित्थुणंता य एवं वयासी-जय जय नन्दा! जय जय भद्दा! जय जय णंदा! भद्दं ते जय जय खत्तियवरवसभा! बुज्झाहि भगवं लोगणाहा! पवत्तेहि धम्मतित्थं हियसुहनिस्सेयसकरं सव्वजीवाणंति, जय जय णंदा धम्मेणं जय जय णंदा तवेणं जय जय णंदा भद्दं ते अभग्गेहिं णाणदंसणचरित्तमुत्तमेहिं अजिताइं जिणाहि इंदियाइं जितं च पालेहि समणधम्मं जितविग्घोऽविय वसाहि तं देव! सिद्धिमज्झे णिहणाहि य रागदोसमल्ले तवेण धितिधणितबद्धकच्छो मद्दाहि य अट्ठकम्मसत्तू झाणेण उत्तमेण सुक्केण अप्पमत्तो हराहि आराहणापडागं च वीरतेलोक्करंगमज्झे पावयवितिमिरमणुत्तरं केवलं च णाणं गच्छय मोक्खं ॥२६५॥

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता..........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥२६६॥

श्रीवीरस्य दीक्षामहः

परं पदं जिणवरोवदिट्ठेणं सिद्धिमग्गेणं अकुडिलेणं हंता परीसहचमुं अभिभविया गामकंटओवसग्गाणं, धम्मे ते अविग्घमत्थुत्तिकट्टु अभिणंदंति य अभित्थुणंति य ।

एवं समणे भगवं महावीरे विसालीए पिंडीभूततेलोक्कलच्छिसमुदए वयणमालासहस्सेहिं अभिथुव्वमाणे २ णयणमालासहस्सेहिं पेच्छिज्जमाणे २ हिययमालासहस्सेहिं उन्नंदिज्जमाणे २ मणोरहमालासहस्सेहिं विच्छिप्पमाणे २ कंतिरूवगुणेहिं पत्थिज्जमाणे २ अंगुलिमालासहस्सेहिं दाइज्जमाणे २ दाहिणहत्थेणं णरणारिदेवदेविसहस्साणं अंजलिमालासहस्साइं पडिच्छमाणे २ भवणपंतिसहस्साइं अइच्छमाणे २ तंतीतलतालतुडितगीतवादितरवेणं मधुरेण य मणहरेणं जयसद्दघोसमीसिएणं मंजुमंजुणा घोसेणं अपडिबुज्झमाणे २ कंदरदरिविवरकुहरगिरिवरयासउदुद्दाणभवणदेवकुलसिंघाडयतियचउक्कचच्चरआरामुज्जाणकाणणसभपवपदेसियाए पडेंसुआयवसहस्ससंकुलं करेंते हयहेसियहत्थिगुलगुलाइयरहघणघणाइतसद्दमीसिएण य महता कलकलरवेणं जणस्स मधुरेणं पूरयंते सुगंधवरकुसुमउब्भिद्धवासरेणूकविलं णभं करेंते कालागरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कधूवनिवहेणं जीवलोगमिव वासंते समंततो खुभितचक्कवालं पउरजणबालवुड्ढासमुदितरितपधाइतविउलतोलबोलबहुलं णभं करेंते कुंडग्गामं मज्झंमज्झेणं जेणेव णातसंडवरुज्जाणे जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता असोगवरपायवस्स अहे सीयं ठवेति ठवेत्ता सीयाओ पच्चोरुहति पच्चोरुहित्ता सयमेव आभरणालंकारं ओमुयति । तते णं सा कुलमहतरिया हंसलक्खणेणं पडसाडएणं आभरणमल्लालंकारं पडिच्छति २ हारवारिधारसिंदुवारच्छिन्नमुत्तावलिप्पगासाइं अंसूइं विमुयमाणी २ कंदमाणी विलवमाणी जाव समणं भगवं महावीरं एवं वयासी-णाएसिणं ॥२६६॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥२६७॥

श्रीवीरस्य दीक्षामहः

तुमं जाता कासवगोत्तेसिणं तुमं जाता ! उदितोदितणातकुलणभतलमियंकसिद्धत्थजच्चखत्तियसुते सि णं तुमं जाता ! वासिट्ठ-
गोत्तजच्चखत्तियाणिए तिसलाए अत्तए सि णं तुमं जाया ! जच्चखत्तिए सि णं तुमं जाता ! बहुपुरिसविढत्तनिम्मलजसकित्तिवत्त-
संजलणणातकुलवरवडेंसए सि णं तुमं जाता ! गब्भसुकुमाले सि णं तुमं जाता! अभिनिव्वट्टजोव्वणे सि तुमं जाया ! अभिनिव्व-
दलायक्खे सि णं तुमं जाया ! अप्पडिरूवरूयलावन्नजोव्वणगुणे सि णं तुमं जाता ! अहियसस्सिरीएणं तुमं जाया ! अहियपेच्छणि-
ज्जे सि णं तुमं जाता ! अहियपीहणिज्जे सि णं तुमं जाता ! अहियपत्थणिज्जे सि णं तुमं जाता ! अहियअभिनिविट्ठमतिविन्नाणे
सि णं तुमं जाता ! देविंदणरिंदपहितकित्ती सि णं तुमं जाता, सुहोसिएसि णं तुमं जाया ! एत्थ य तिव्वं चंकमियव्वं गरुयं
आलम्बेयव्वं असिधारं महव्वयं चरियव्वं, तं घडियव्वं जाया ! जतितव्वं जाता ! परक्कमेयव्वं जाता, अस्सिं च णं अट्ठे णो पमाए-
यव्वंतिकट्टु णंदिवद्धणप्पमुहे सयणवग्गे सामिं वंदति णमंसति अभिणंदति अभित्थुणति, थुणेत्ता एगंते अवक्कमति, सेसाणवि
आणंदअंसुपातो । तए णं सामी एवमेतमिति वयासी २ त्ता सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेति, तते णं से सक्के देविंदे देवराया
सामिस्स केसे हंसलक्खणेणं पडसाडएणं पडिच्छति, पडिच्छित्ता अणुजाणतु मे भगवंतिकट्टु खीरोदगसमुद्दे साहरति, ततेणं सामी
णमोऽत्थुणं सिद्धाणंतिकट्टु सामाइयं चरित्तं पडिवज्जति, तंसमयं च णं देवाण मणुस्साण य निग्घोसे तुरियगमगीतवादितनिग्घोसे
य सक्कवयणसंदेसेणं खिप्पामेव निलुक्के यावि होत्था, ताहे करेमि सामाइयं सव्वं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि जाव वोसिरामित्ति,
भदंतत्ति ण भणति जीतमिति, जंसमयं च णं सामी सामाइयं पडिवज्जति तंसमयं च णं सामिस्स मणुस्सधम्मातो उत्तरिए मणप-

॥२६७॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता...........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] “आवश्यक” निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

श्री आवश्यक-चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥२६८॥

श्रीवीर-स्योपसर्गाः

उज्जवणाणे णामं णाणे समुप्पन्ने। सामी छट्ठेणं भत्तेणं अप्पाणएणं हत्थुत्तराहिं णक्खत्तेहिं जोगमुवागतेणं एगं देवदूसमादाय णिग्गिणे भवित्ताणं तं वामे खंधे काउं, जीतमिति, आगाराओ अणगारियं पव्वइए। एत्थ गाहाओ—

एवं सदेवमणु. ॥भा.१०५॥ उज्जाणं संपत्तो ॥भा.१०६॥ जिणवर० ॥भा.१०७॥ दिव्वा मणुस्सा ॥भा.१०८॥ काऊण० ॥ भा. १०९ ॥ तिहिं नाणेहिं ॥ भा. ११० ॥

तए णं सामी अहासंनिहिए सव्वे नायए आपुच्छित्ता णायसंडबहिया चउब्भागऽवसेसाए पोरुसीए कंमारग्गामं पहावितो, एत्थंतरा पितुवयंसो धिजातितो उवाट्ठितो, अन्ने भणंति- जदा चरित्तं पडिवज्जति तदा उवट्ठितो, सो य दाणे कहिंपि गतेल्लओ, पच्छा आगतो भज्जाते अंबाडिए, सामिणा एवं परिचत्तं तुमं पुण वाइंगणिवणाणि हिंडसि, जाहि जदि एत्थंतरेऽवि लभेज्जासित्ति, सो भणति जहा- सामि ! मम न किंचि तुब्भेहिं दिन्नं, इयाणिंपि देहित्ति, ताहे सामिणा तस्स देवदूसस्स अद्धं दिन्नं, अन्नं परिचत्तंति, तं तेण तुन्नागस्स उवणीयं, जहा एयस्स दसिया बंधाहि, तेण पुच्छितं-इमं कओत्ति ?, भणइ- भगवया दिन्नंति, तुन्नाओ भणइ-तंपि से अद्धं आणेहि, जया पडिहिति भगवओ अंसाओ तदा आणेज्जासि, तो णं अहं तुन्नेहामि ताहे सयसहस्सं मोल्लं भविस्सइ, तो तुज्झवि अद्धं ममवि अद्धंति, पडिवन्नो, ताहे सो भगवं पओलग्गिओ, सेसं उवरिं भन्निही। तत्थ य दो पंथा-एगो पाणिएणं एगो पालीए, सामी पालीए जा वच्चति ताव पोरुसी मुहुत्तावसेसा जाता, संपत्तो य तं गामं, तस्स बाहिं सामी पडिमं ठितो, स हि भगवान् दिव्वेहिं गोसीसातीएहिं चंदणेहिं चुन्नेहिं तहा वासेहि य पुप्फेहि य वासियदेहो निक्खमणाभिसेगेण य आभिसित्तो ॥२६८॥

अथ उपसर्गस्य वर्णनं आरभ्यते

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥२६९॥

श्रीवीरस्योपसर्गाः

विसेसेणं इंदएहिं चंदणादिगंधेहिं वासितो, अतो तस्स पव्वइयस्स विसेसओ चत्तारि साहिए मासे सो दिव्वो गंधो ण फिडितो, अतो से सुरभिगंधेणं भमरा मधुकरा य पाणजातीया बहवे दूराओवि पुप्फितेवि लोद्धकुंदादिवणसंडे चतिन्ति, दिव्वेहिं गंधेहिं आगरिसिता तं तस्स देहमागम्म आरुज्झ कायं विहरंति विंधंति य, केइ मग्गतो गुगुममेंता समभेंति, जदा पुण किंचिवि ण साएंति तदा आरुसिया णहेहि य मुहेहि य खायंति, वसंतकालेवि किर जंकिंचि रोमकूवेसु सिणेहं भवति तदा विलग्गितुं तं पिबित्ता आरुसिताण तत्थ हिंसिसु, मुइंगादीवि पाणजातीतो आरुज्झ कायं विहरंति जाव गाते वत्थे वा चंदणादिविलेवणाणं चुन्नाईणं च केति अवयवा धरिता ताव ते खाइंसु, तेहिं निट्ठिएहिं पच्छा ते ठितस्स वा चंक्कमंतस्स वा आरुट्ठा समाणा कायं विहिंसिसु, जे वा अजितिंदिया ते गंधे अग्घात तरुणइत्ता तग्गंधमुच्छिता भगवंतं भिक्खायरियाए हिंडंतं गामाणुग्गामं दूइज्जंतं अणुगच्छंता अणुलोमं जायंति-देहि अम्हवि एतं गंधजुत्तिं, तुसिणीए अच्छमाणे पडिलोमे उवसग्गे करेंति, देहि वाहिं वा पेच्छसि, एवं पडिमं ठियंपि उवसग्गेंति, एवं इत्थियाओऽवि तस्स भगवतो गातं रयस्वेदमलेहि विरहितं निस्साससुगंधं च मुहं अच्छीणि य निसग्गेण चेव नीलुप्पलपलासोवमाणि बीयअंसुविरहियाणि दट्ठुं भणंति सामिं-कहिं तुब्भे वसहिं उवेह ?, पुच्छंति भणंति अन्नमन्नाणि, एवं सव्वा चरिया जहा ओहाणसुए 'अहासुयं वइस्सामी' च्चातिणा तहा विभासियव्वा, एत्थ पुण जत्थ किंचि उवसग्गो वा वासारत्तो वा कारणं वा किंचि तं भवति, तए णं भगवतो कम्मारग्गामे वाहिं पडिमं ठियस्स गोवनिमित्तं सक्कस्स आगमो वागरेति देविंदो । कोल्लागबले छट्ठस्स पारणे पयस वसुहारा ॥ ४६१ ॥ तत्थ एगो गोवो सो दिवसं बइल्ले वाहेत्ता गामसमीवं पत्तो, ताहे चिंतेति- एते गामसमीवे खेत्ते चरंतु, अहंपि ता गाइओ दोहेमि, सोऽवि ताव अंतो ॥२६९॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक-चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥२७०॥

इन्द्र-प्रार्थना

परिकम्मं करेति, ते बइल्ला चरंता अडविं पइट्ठा, सो गोवो निग्गतो, ताहे पुच्छति-कहिं ते बइल्ला?, ताहे सामी तुण्हिक्को अच्छति, सो चिंतेइ- एस ण जाणति, तो मग्गितुमाढत्तो, ते य बइल्ला जाहे धाता ताहे गामसमीवं आगता माणुसं दट्ठूण रोमंथेंता अच्छंति, ताहे सो आगतो पेच्छति तत्थेव निविट्ठे, ताहे आसुरुत्तो, एतेण दामएण हणामि, एतेण मम चोरिता एते बइल्ला, पभाए घेत्तुं वच्चीहामि, ताहे सक्को देविंदो देवराया चिंतेइ-किं अज्ज सामी पढमदिवसे करेति ?, जाव पेच्छति तं गोवं धावंतं, ताहे सो तेण थंभितो, पच्छा आगतो तं तज्जेति- दुरात्मा न जाणसि सिद्धत्थरायपुत्तो अज्ज पव्वतितो, ताहे तंमि अंतरे सिद्धत्थो सामिस्स मातुत्थितापुत्तो बालतवोकम्मेणं वाणमंतरो जातेल्लओ, सो आगतो, ताहे सक्को भणति- भगवं ! तुब्भ उवसग्गबहुलं तो अहं बारस वासाणि वेयावच्चं करेमि, ताहे सामिणा भणितं- नो खलु सक्का ! एवं भूअं वा ३ जं णं अरिहंता देविंदाण वा असुरिंदाण वा नीसाए केवलणाणं उप्पाडेंति उप्पाडेंसु वा २ तवं वा करेंसु वा २ सिद्धिं वा वच्चिंसु वा ३, णण्णत्थ सएणं उट्ठाण-कम्मबलविरियपुरिसक्कारपरक्कमेणं, ताहे सक्केण सिद्धत्थो भणितो- एस तव णीयल्लओ पुणो य मम वयणं, सामिस्स जो परं मारणंतियं उवसग्गं करेति तं वारेहि, एवमस्तु तेण पडिसुतं, सक्को पडिगतो, सिद्धत्थो ठितो, सामिस्स य अगारवासं मोत्तूण संजयस्स सतो एयं चउत्थभत्तं, नत्थि अन्नं, अवसेसं कालं जहन्नगं छट्ठभत्तं आसि। ततो बीयदिवसे छट्ठपारणए कोल्लाए संनिवेसे घतमधुसंजुत्तेणं परमन्नेणं बलेण माहणेण पडिलाभितो पंच दिव्वा जहा उसभस्स । ॥२७०॥

दूइज्जंतग पितुणो वयसं तिव्वा अभिग्गहा पंच । अचियत्तोग्गह ण वसण णिच्चं वोसट्ठ मोणेणं ॥ ४-१।४६२।

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक-चूर्णी उपोद्घात निर्युक्तौ ॥२७१॥

अभिग्रह-पंचकं

पाणीपत्तं गिहिवंदणं च तह धद्धमाण वेगवती । धणदेव सूलपाणी दसमं वासऽट्ठितग्गामो ॥४-२।४६३।
रोहा य सत्त वेयणि थुति दस सुमिणुप्पलऽद्धमासे य। मोराए सक्कारं सक्को अच्छंदए कुविते ॥४-३।४६४।

ताहे सामी विहरमाणो गतो मोरागं संनिवेसं, तत्थ दूइज्जंतगा णाम पासंडत्था, तेसिं तत्थ आवासा, तेसिं च कुलवती भगवतो पितुमित्तो, ताहे सो सामिस्स सागतेणं उवगतो, ताहे सामिणा पुव्वपतोगेण तस्स सागतं दिन्नं, सो भणति-अत्थि घरं एत्थ कुमारवर ! अच्छाहि, तत्थ सामी एगंतराइं वासिऊण पच्छा गतो विहरति, तेण भणियं-विवित्ताओ वसहीओ, जदि वासारत्तो कीरति तो आगमेज्जाह, ताहे सामी अट्ठ उउबद्धिए मासे विहरित्ता वासावासे उवग्गे तं चेव दूइज्जंतगगामं एति, तत्थेगंमि मढे वासावासं ठितो, पढमपाउसे य गोरूवाणि चारिं अलभंताणि जुण्णाणि तणाणि खायंति, ताणि य घराणि उव्वेल्लेंति, पच्छा ते वारेंति, सामी ण वारेइ, पच्छा ते दूइज्जंतगा तस्स कुलवइस्स साहेंति, जहा एस एताणि ण वारेति, ताहे सो कुलवती तं अणुसासेति, भणति कुमारवरा ! सउणीवि ताव णेड्डुं रक्खति, तुमंपि वारेज्जासित्ति सप्पिवासं भणति, ताहे सामी अचितत्तोग्गहोत्ति निग्गतो, इमे य तेण पंच अभिग्गहा गहिता, तंजहा—अचियत्तोग्गहे ण वसितव्वं, निच्चं वोसट्ठे काए मोणं च, पाणीसु भोत्तव्वं, ता केई इच्छति-सपत्तो धम्मो पन्नवेयव्वोत्ति तेण पढमपारणगे परपत्ते भुत्तं, तेणं परं पाणिपत्ते, गोसालेण किर तंतुवायसालाए भणियं—अहं तव भोयणं आणामि, गिहिपत्ते काउं, तंपि भगवया नेच्छियं, उप्पन्नणाणस्स उ लोहज्जो आणेति ॥ धन्नो सो लोहज्जो खंतिखमो पवरलोहसरिवन्नो । जस्स जिणो पत्ताओ इच्छइ पाणीहिं भोत्तुं जे ॥ १ ॥ किं तत्थ ता ण अडितवां ?, ॥२७१॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥२७२॥

भणितं च-" देविंदचक्कवट्टी मंडलिया ईसरा तलवरा य। अभिगच्छंति जिणिंदं गोयरचडियं ण सो अडति ॥ १ ॥' छउमत्थकाले अडितं, गिहत्थी न वंदियव्वो न अब्भुट्ठेयव्वोत्ति। तत्थ अद्धमासं अच्छित्ता ततो पच्छा अट्ठियग्गामं वच्चति, तस्स पुण अट्ठियगामस्स पढमं वद्धमाणयं णामं होत्था, तो किह जातो अट्ठितगामो ?, आस्थिग्रामः

तत्थ धणदेवो नाम वाणियओ पंचहिं पुरस्सरेहिं गणिमधरिममेज्जस्स भरितेहिं तेणंतेण आगतो, तस्समीवे वेगवती णाम णदी, तं सगडाणि उत्तरंति, तस्स य एगो बतिल्लो सो मूलधुरे जुप्पति, ताहच्चएणं (बलेणं) ताओ भंडीओ उत्तिन्नाओ, पच्छा सो छिन्नो पडितो, सो वाणियतो तं अवहाय तणं पाणितं च पुरतो छड्डेऊणं गतो, सो य तत्थ वालियाए जेट्ठामूले मासे अतीव उण्हेण तण्हाए य परिताविज्जति, वद्धमाणओ य लोगो तेणंतेणं तणं च पाणियं वहति, ण य तस्स कोइ देति, ताहे सो गोणो तस्स लोगस्स पदोसमावन्नो, सो तत्थ अकामतण्हाए य अकामछुहाए य तत्थ चेव गामे अग्गुज्जाणे सूलपाणी वाणमंतरो उववण्णो, उवउत्तो पासइ तं बलद्दसरीरगं, ताहे आसुरुत्तो मारिं विउव्वति, सो गामो मरिउमारद्धो, एवं अद्दण्णो समाणा कोउगसयाणि करेंति, तहवि ण ठ्ठाति, ताहे भिन्नो गामो अन्नेसु संकंतो, तत्थवि ण मुंचति, ताहे तेसिं चिंता जाता-अम्हेहिं तत्थ ण णज्जति कोऽवि देवो वा दाणवो वा विराहितो, तम्हा तहिं चेव वच्चामो, आगता समाणा णगरदेवताए विउलं बलिउवहारं करेत्ता समंततो उम्मुहा सरणंति जं अम्हेहिं सम्मं ण चेट्ठितं तस्स खमहा, ताहे अंतलिक्खपडिवन्नो सो देवो ते भणति-तुब्भे दुरात्मा णिरणुकंपा तेणंतेण जाव एह य, ण य तस्स गोणस्स तणं वा पाणियं वा दिन्नं, तस्स मे एतं फलं, ते ण्हाता पुष्फबलिहत्थगता भणंति-दिट्ठो कोवो, पसादं ॥२७२॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता...........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक-चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥२७३॥

शूलपाणि चैत्यं

इच्छामो, ताहे भणाति-एताणि माणुस्सट्ठियाणि पुंजं काऊणं उवरिं देवकुलं करेह, बलिवद्दं च एगपासेत्ति, अन्ने भणंति-तं बइल्लरूवं करेह, तस्स य हेट्ठा ताणि बइल्लट्ठियाणि निक्खणह, तेहिं अचिरेणं कयं, तत्थ इंदसम्मो णाम तस्स पडियरओ, ताहे लोगो पंथियादी पेच्छति-पंडरट्ठियं गामं देवकुलं च, ताहे पुच्छंति अन्ने--कयराओ गामाओ आगता ?, भणंति-जत्थ ताणि अट्ठियाणि, एवं सो अट्ठितगामो जातो। तत्थ पुण वाणमंतरघरे जो रत्तिं परिवसति तत्थ सो सूलपाणी संनिहितो तं रत्तिं वाहेत्ता पच्छा मारेति, ताहे तत्थ लोगो दिवसं अच्छिऊणं पच्छा विगाले अन्नत्थ वच्चति, इंदसम्मोऽवि धूवं दीवगं दातुं दिवसतो चेव जाति। इतो य तत्थ सामी आगतो दूइज्जंतगाण पासातो, तत्थ य सव्वलोगो तद्दिवसं पिंडितो अच्छति, सामिणा देवकुलितो अणुन्नवितो, सो भणति-गामो जाणति, सामिणा गामो मिलितओ चेव अणुन्नवितो, सो गामो भणइ--ण सक्का एत्थ वसिउं पुंज्जे, सामी भणति-णवरि तुब्भे अणुजाणह, ताहे भणंति--ठाह, तत्थेक्केका वसहिं देंति, सामी णेच्छति, भगवं जाणति-सो संबुज्झिहितित्ति, ताहे गंता एगकोणे पाडिमं ठितो, ताहे सो इंदसम्मो सूरे धरेंते चेव धूवपुप्फं दाऊण कप्पडियकरोडिया सव्वे पलोएत्ता तंपि देवज्जगं भणति-तुब्भेवि णीह, मा मारिज्जिहिह, भगवं तुसिणीओ अच्छति, ताहे सो वंतरो चिंतेति--देवकुलिएण गामेण य भन्नंतोऽवि न जाति पेच्छ से अज्जं जं करेमि, ताहे सञ्झाए अट्टट्टहासं मुयंतो बीहावेइ, भीमं अट्टट्टहासं मुंचंतो ताहे भेसेउं पवत्तो, ताहे सव्वो लोगो तं सद्दं सोऊण भीतो भणति--एस सो देव्वज्जतो मारिज्जति, तत्थ य उप्पलो नाम पच्छाकडो परिव्वाओ पासावच्चिज्जो नेमित्तिओ भोमउप्पातासिमिणंतलिक्खअंगसरलक्खणवंजणअट्ठंगमहानिमित्तजाणओ जणस्स सोऊण चिंतेति-मा तित्थकरो होज्जात्ति अद्धितिं करेति, बीहेति य तत्थ रत्तिं गंतुं, ताहे सो वाणमंतरो जाहे सद्देण ण बीहेति ताहे हत्थिरूवेण उवसग्गं

॥२७३॥

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥२७४॥

शिरआदि-वेदनाः७ स्वप्नाः१०

करेति पिसायरूवेण य, एतेहिवि जाहे ण तरति खोभेउं ताहे पभायसमए सत्तविहं वेयणं करेति, तंजहा-सीसवेयणं १ कन्नवेयणं २ अच्छिवेयणं ३ दंतवेयणं ४ णहवेयणं ५ नकवेयणं ६ पिट्ठिवेयणं ७ एकेका वेयणा समत्था पागतस्स जीतं संकामेतुं, किं पुण सत्त तायो उज्जलाओ ?, भगवं अहियासेति, ताहे सो देवो जाहे न तरइ चालेउं वा खोभेउं वा ताहे तंतो संतो परितंतो पायपडिओ खामेइ-खमेह भट्टारगत्ति, ताहे सिद्धत्थो उद्धातितो-हं भो सूलपाणी ! अपत्थियपत्थया न जाणसि सिद्धत्थरायसुयं भगवंतं तित्थगरं, जति सक्को देवराया जाणंतो तो ते णं पावेंतो,ताहे सो भीतो दुगुणं खामेति, ताहे सिद्धत्थो धम्मं कहेति, तत्थ उवसंतो सामिस्स महिमं करेति, तत्थ लोगो चिंतेति सो तं देवज्जतं मारेत्ता इयाणिं कीलेति । सामी य देसूणचत्तारि जामे अतीव परिताविती समाणो पभायकाले मुहुत्तमेत्तं निद्दापमादं गतो, तत्थिमे दस महासुमिणे पासित्ताणं पडिबुद्धो, तंजहा-तालपिसाओ हतो १ सेयसउणो चित्तकोइलो य दोधेवे पज्जुवासंता दिट्ठा २-३ दामदुगं च सुरभिकुसुममयं ४ गोवग्गो य पज्जुवासंतो ५ पउमसरो विउद्धपंकओ ६ सागरो य मि णित्थिन्नोत्ति ७ सूरो य पइन्नरस्सिमंडलो उग्गमतो ७ अंतहि य मे माणुसुत्तरो वेढिओत्ति ९ मंदरं चारुढो मित्ति१०, लोगो पभाते आगतो, उप्पलो य इंदसम्मो य, ते अच्चणियं दिव्वं गंधचुन्नपुप्फवासं च पासंति भट्टारगं च अक्खयसव्वंगं, ताहे सो लोगो सव्वो सामिस्स उक्किट्ठिसीहणादं करेंतो पादेसु पडितो भणति, जहा देवज्जतेण देवो उवसामितो, महिमं पगतो, उप्पलोऽवि सामिं दट्ठुं पहट्ठो वंदति, ताहे भणति-सामी ! तुब्भेहिं अंतिमरातीए दस सुमिणा दिट्ठा, तेसिं इमं फलंति-जो तालपिसायो हतो तमचिरेण मोहणिज्जं उम्मूलेहिसि १ जो य सेयसउणो तं सुक्कज्झाणं झाहिसि २ जो विचित्तो कोइलो तं दुवालसंगं पन्नवेहिसि ३ गोवग्गफलं च ते चउव्विहो समणसंघो भविस्सति, ५ पउमसरो चउव्विहदेवसंघातो ॥२७४॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

भविस्सति ६ जं च सागरं तिन्नो तं संसारमुत्तारिहिसि ७ जो य सूरो तमचिरा केवलनाणं ते उप्पज्जिहिति ८ जं च अंतेहिं माणुसुत्तरो वेढितो तं ते निम्मलजसकित्तिपयावा सयले तिहुयणे भविस्सति ९ जं च मंदरमारुढोसि तं सीहासणत्थो सदेवमणुयासुराए परिसाए धम्मं पन्नवेहिसित्ति १० दामदुगं पुण ण जाणामि, सामी भणति-हे उप्पला! जं नं तुमं न याणसि तं नं अहं दुविहमगाराणगारियं धम्मं पन्नवेहामित्ति ४ ततो उप्पलो वंदित्ता गतो। तत्थ सामी चत्तारि मासे अद्धमासं खममाणो एतं पढमं समोसरणं वुच्छो। एत्थ इमाओ मूलभासागाहाओ—

भीमट्टहास हत्थी पिसाय णागा य वियण सत्तेमा। सिर कन्न णास दंते णहऽच्छि पट्ठी य सत्तमिया ४-४।४६५॥

ताल पिसायं दो कोइला य दामदुगमेव गोवग्गं। सर सागर सूरंते मंदर सुविणुप्पले चेव ॥ ४-५।४६६॥

मोहे य झाण पवयण धम्मे संघे य देवलोगे य। संसारत्ताण जसे धम्मं परिसाए मज्झंमि ॥४-६।४६७॥

पच्छा सरदे निग्गओ मोरायं नाम सन्निवेसं गओ, तत्थ सामी बहिं उज्जाणे ठिओ, तत्थ य मोराराए सन्निवेसे अच्छंदगानामं पासंडत्था, तत्थ एगो अच्छंदओ तत्थ गामे अच्छइ, सो पुण तत्थ गामे कोंटलवेंटलेण जीवति, सिद्धत्थगो एकल्लओ अच्छंतओ अद्धितिं करेति बहुसंमोइतो य, भगवतो य पूयं अपेच्छंतो, ताहे सो वोलेंतं गोहं सद्दावेत्ता वागरेति, जहिं प्धावितो जं जिमितो जं पंथे दिट्ठं जे य सुविणगा दिट्ठा, ताहे सो आउट्टो गामं गंतुं मित्तपरिजिताण परिकहेति, सव्वहिं गामे फुसितं एस देवज्जतो उज्जाणे अतीतवट्टमाणाणागतं जाणति, ताहे अन्नोऽवि लोओ आगतो, सव्वस्स वागरेति, लोगो तहेव आउट्टो महिमं ॥२७५॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक-चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥२७६॥

अच्छंद-कवृत्तं

करेति, सो लोगेण अविरहितो अच्छति, ताहे सो लोगो भणइ-एत्थ अच्छंदओ णाम जाणंतओ, सिद्धत्थो भणति-से ण किंचि जाणति, ताहे लोगो गंतुं भणति-तुमं ण किंचि जाणसि, देवज्जतो जाणति, सो लोगमज्झे अप्पाणं ठाविउकामो भणति-एह जामो, जदि मज्झ जाणति तो जाणति, ताहे लोगेण परिवारितो एति, भगवतो पुरतो ठ्ठितो, तणं गहाय भणति-किं एतं छिज्जिहिति?, जइ भणिहिइ छिज्जिहिइ तो ण च्छिदिस्सं, अह भणिहिति णवि तो छिंदिस्सामि, सिद्धत्थेण भणितं-ण छिज्जिहिति, आढत्तो छिंदितुं, सक्केण य उवओगो दिन्नो, ताहे अच्छंदगस्स कुवितो।

तणछेयंगुलि कम्मार वीरघोसमाहिसिंदु दसपलिए। बिइइंदसम्म ऊरण बदरीए दाहिणुक्कुरुडे ॥ ४-८।४६९ ॥
ततियमवच्चं भज्जा कहए णाहं ततो पिउवयंसो। दक्खिणवाचाल सुवन्नवालुया कंटए वत्थं ॥ ४-९।४७० ॥

ताहे तेण वज्जं पक्खित्तं, अच्छंदगस्स अंगुलीओ दसवि भूमीए पडिताओ, लोगेण खिंसितो गतो, ताहे सिद्धत्थो तस्स पदोसमावन्नो तं लोगं भणति-एस चोरो, कस्सेतेण चोरितं?, सिद्धत्थो भणति-अत्थि एत्थ वीरघोसो नाम कम्मकारो ?, सो पाएहिं पडितो, अहंति, तुज्झं सुए काले दलपलियं वट्टयं णट्ठपुव्वं ?, आमं अत्थि, तं एतेण हरितं, तं पुण कहिं ? तं तस्स पुरोहडे महिसिंदुरुक्खस्स पुरत्थिमेणं हत्थमेत्तं गंतूणं तत्थ णिक्खतं, वच्चह, ते गता, दिट्ठं, ताहे आगता कलकलं करेमाणा, अन्नंपि सुणेह, किं अत्थि इहं इंदसम्मो णाम गाहावती ?, तेहिं भणितं-अत्थि, ताहे सो सयमेव उवट्ठिओ भणति-अहं, आणावेह, अत्थि तुज्झं ऊरणओ असुयं कालं णट्ठो?, अत्थि, सो एतेण मारेत्ता खइतो, अट्ठियाणि से बदरीए दाहिणे पासे उक्कुरुडियाए, गता जाव ॥२७६॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता..........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥२७७॥

वस्त्रार्ध-पातः

दिट्ठाणि, पुणरवि कलकलं करेमाणा आगता, भणति-एतं ताव बितियं, ताहे भणति-अलाहि अन्नेण, ताहे ते निबंधं करेंति, पच्छा भणति-जहा तं अवच्चं, भज्जा से कहेहीति, सा पुण तस्स चेव छिद्दाणि मग्गमाणी अच्छति, ताहे ताए सुतं, जहा सो धरिसितो अंगुलीओ छिन्नाओ, सा य तेण तद्दिवसं पिट्टितया, ताहे सा चिंतेति-णवरि गामो एतु, ताहे ते आगता पुच्छंति, सा भणति-मा से णामं गेण्हह, भगिणीए पतित्तणं करेति, स मं णेच्छति, ताहे ते उक्कुट्ठिं करेमाणा तं पणेंति, एस पावो, एवं तस्स उड्डाहो जातो जहा तस्स कोऽवि भिक्खंपि ण देति, ताहे सो अप्पसागारियं आगतो भणति-भगवं ! तुब्भे अण्णत्थवि जुज्जह, अहं कहिं जामि ?, ताहे अचियत्तोग्गहोत्तिकाऊण सामी निग्गतो, ताहे ततो निग्गतो समाणो दो वाचालातो दाहिणवाचाला य उत्तरवाचाला य, तासिं दोण्हं अंतरा दो णदीओ-सुवन्नकूला य रूप्पकूला य, ताहे सामी दक्खिणवाचालाओ उत्तरवाचालं वच्चाति, तत्थ सुवण्णकूलाए पुलिणे तं वत्थं कंटियाए लग्गं, ताहे तं थितं, सामी गतो, पुणो य अवलोइतं, किं निमित्तं ?, केती भणंति-जहा ममत्तीए, अन्ने भणंति-मा अत्थंडिले पडितं, अवलोइतं सुलभं वत्थं पत्तं सिस्साणं भविस्सति?, तं च भगवता य तेरसमासे अहाभावेण धरियं, ततो वोसिरियं, पच्छा अचेलते, तं एतेण पितुवंतसधिज्जातितेण गहितं, तेण उवट्ठितं तुन्नागस्स, तेण तुन्नितं, ताहे सयसहस्समोल्लं जातं, इमस्सवि पन्नासं सहस्साइं इमस्सवि पन्नासं ॥

उत्तरवाचालंतर वणसंडे चंडकोसिओ सप्पो । ण डहे चिंता सरणं जोइस कोवाऽहि जातोऽहं ॥ ४-१०।४७१ ॥ ॥२७७॥

ताहे सामी उत्तरवाचालं वच्चति, तत्थ अंतरा कणगखलं णाम आसमपदं, दो पंथा-उज्जुओ य वंको य, जो सो उज्जुओ

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता...........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक-चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥२७८॥

सो कणगखलमज्झेण वच्चति, वंको परिहरंतो, सामी उज्जुएण पधाइतो। तत्थ सामी गोवालएहिं वारितो, जथा एत्थ दिट्ठिविसो सप्पो, मा एतेण वच्चह, सामी जाणति-जहा सो भव्वत्ति संबुज्झिहिति, ताहे गतो, गंता जक्खघरगमंडवियाए पडिमं ठितो, सो पुण सप्पो को पुव्वभवे आसि ?, खमओ, पारणए खुड्डएण समं वासियस्स गतो, तेण मंडुकलिया विराहिता, सो खुड्डएण पडिचोदितो, ताहे सो अण्णं मतेल्लितं दावेति, भणति-इमावि मए मारिता ?, जातो लोएण मारियाओ ताओ दावेति, ताहे खुड्डएण णातं-वियाले आलोएहिति, सो वियाले आवस्सगआलोयणाए आलोइत्ता णिविट्ठो, खुड्डओ चिंतेति-णूणं से विस्सरितं, तेण सारितो, रुट्ठो खुड्डगस्स आहणामित्ति उद्धातितो, तत्थ खंभे आवडितो मतो विराहितसामण्णो कालगतो जोइसिएहिं उववण्णो, ततो चुतो कणगखले पंचण्हं तावससयाणं कुलवइस्स तावसीपोट्टे आयातो, दारओ जातो, तत्थ से कोसिओत्ति नामं कतं, सो य तेण सभावेण अतीव चंडकोवो, तत्थ य अण्णेऽवि अत्थि कोसिया, ताहे से चंडकोसिओत्ति णामं कतं, सो य कुलवती जातो, सो तत्थ वणसंडे मुच्छितो, तेसिं तावसाणं ताणि फलाणि ण देति, ते अलभंता दिसोदिसिं गता, जो व तत्थ गोवालगादि एति तंपि हंतूणं धाडेति, तस्स य अदूरे सेयविया णाम णगरी, ताओ रायपुत्तेहिं आगतेहिं विहरितपडिणिवेसेण भग्गो विणासिओ य, तस्स गोवालेहिं कहितं, सो कंटियाणं गतओ, ताओ छड्डेत्ता परसुहत्थगतो रोसेणं धमधमेंतो कुमारेहिं एंतो दिट्ठो, ते तं दट्ठूण पलायंति, सोऽवि कुहाडहत्थो पहावितो, आवडितो पडितो, सो कुहाडो से अद्दो ठितो, तत्थ से सिरं दोभागे कयं, तत्थ मतो तंमि चेव वणसंडे दिट्ठीविसो सप्पो आयातो, तेण रोसेण लोभेण य तं वणसंडं रक्खति, ते तावसा सव्वे दड्ढा, जे अदड्ढगा ते णट्ठा, सो तिसञ्झं तं वणसंडं परियंतेऊणं जं सउणगमवि पासति तं डहति,

चणुकौशिकवृत्तं ॥२७८॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता...........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

श्री आवश्यक-चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥२७९॥

ताहे सामी तेण दिट्ठो, भगवं च गंतूण तत्थ पडिमं ठितो, आसुरुत्तो ममं ण जाणसित्ति सूरिएणाझाइत्ता पच्छा सामिं पलोएति जाव सो ण डज्झति जहा अन्ने, एवं दो तिन्नि वारे, ताहे गंतूण डसति, डसित्ता सरत्ति अवक्कमति मा मे उवरिं पडिहिति, तहवि ण मरति, एवं तिन्नि वारे, ताहे पलोएंतो अच्छति अमरिसेणं, तस्स तं रूवं पलोएंतस्स ताणि विसभरिताणि अच्छीणि विज्झाताणि, सामिणो कंतिं सोम्मतं च दट्ठूणं, ताहे सामिणा भणियं—उवसम भो चंडकोसिया! उवसामित्ति, ताहे तस्स ईहापूहमग्गणगवेसणं करेंतस्स जातिस्सरणं समुप्पन्नं, ताहे तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेत्ता वंदति णमंसति, णमंसेत्ता ताहे भत्तं पच्चक्खाति, मणसा तित्थगरो जाणाति, ताहे सो बिले तोंडं छोढूणं एवं ठिओ, माऽहं रुट्ठो समाणो लोगं मारेहं, सामी तत्थ अणुकंपणट्ठाए अच्छति, तं सामीं दट्ठूण गोवालगवच्छवालगा अल्लियंति, रुक्खेहिं आवरेत्ता अप्पाणं पाहाणे खिवंति, ण चलंतित्ति अल्लीणा, रुट्ठेहिं घट्टितो तहवि ण फंदति, तेहिं लोगस्स सिट्ठं, ताहे लोगो आगंतु सामिं वंदित्ता तंपि सप्पं वंदति महं च करेति, अन्नाओ य घयविक्किणियातो तं सप्पं घतेण मक्खंति, फरुसोत्ति सो पिपीलियाहिं गहितो, तं वेयणं सम्मं अहियासेति, अद्धमासस्स कालगतो सहस्सारे उववन्नो ॥ चंडकोसिकःकंबलशंबलौ च

उत्तरवाचाला णागसेण खीरेण भोयणं दिव्वा । सेयवियाए पएसी पंच रहे णेज्जरायाणो ॥ ४-११।४७२ ॥

पच्छा सामी उत्तरवाचालं गतो, तत्थ पक्खखमणपारणए अतिगतो, तत्थ णागसेणेण गाहावतिणा खीरभोयणेण पडिलाभितो, तत्थ पंच दिव्वाणि । पच्छा सेयवियं गतो, तत्थ पएसी राया समणोवासए, सो महेति सक्कारेति, ततो सुरभिपुरं वच्चति, ॥२७९॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥२८०॥

कंबलशंबलौ च

तत्थ अंतराए णेज्जगा रायाणो पंचहिं रहेहिं एंति पएसिस्स रन्नो पासं, तेहिं तत्थ गतेहिं सामी पूतितो य वंदितो य । ततो सुरभिपुरं गतो, तत्थ गंगा उत्तरियव्विया, तत्थ सिद्धजत्तो णाम णाविओ, खेमिलो नेमित्तियो, तत्थ य णावाए लोगो विलग्गति, तत्थ य कोसिएण महासउणेण वासितं, तत्थ सो नेमित्तिओ वागरेति-जारिसं सउणेण भणियं तारिसं अम्हेहि मारणंतियं पावियव्वं, किं पुण ?, इमस्स महरिसिस्स पभावेण मुच्चीहामो, सा य णावा पहाविता, एत्थंतरा सुदाढेण णागकुमारेणाभोइतं, तेण दिट्ठो सामी, तं वेरं सरित्ता कोवो जातो, सो य किर सीहो वासुदेवत्तणे मारितेल्लओ, सो त संसारं चिरं भमित्ता सुदाढो णागो जातो, सो संवट्टगवातं विउव्वित्ता णावं उब्बोलेतुं इच्छति । इतो य कंबलसंबला दो णागकुमारा तं आभोएंति, का पुण कंबलसंबलाणं उप्पत्ती ?—

मधुरा णगरी, तत्थ जिणदासो सड्ढो साधुदासी साविगा, दोऽवि अभिगताणि परिमाणकडाणि, तेहिं चउप्पतस्स पच्चक्खाणं गहितं, दिवसदेवसियं गोरसं गेण्हंति, तत्थ य एगा आभीरी गोरसं गहाय आगता, तत्थ सा ताए साविया भन्नति-मा तुमं अन्नत्थ भमाहि, णिच्चं तुमं इहं एज्जासि, जत्तियं तुमं आणेसि तत्तियं अहं गेण्हामि, एवं तासिं संगतं जातं, इमावि से गंधपुडियाइं देति, इमावि कुतियाओ दुद्धं दहिं वा देति, एवं तासिं दढं सोहियं जायं। अन्नया तासिं गोवाणं विवाहो जाओ, ताहे आभीरी ताणि निमंतेइ, ताणि भणंति--अम्हे वाउलाणि न तरामो गंतुं, जं तत्थ भोयणे उवउज्जति कडुहुंडाइ वत्थाणि वा आभरणाणि वा बहुवरस्स तेसिं दिन्नाइं, तेहिं अईव सोभावियं, लोगेण य सलाहियाणि, तेहिं तुट्ठेहिं दो तिवरिसा गोणपोतलगा हट्ठसरीरा उवणीता कंबलसंबलत्ति णामेणं, ताणि नेच्छंति, इतराणि बला बंधिऊण गताणि, ताहे तेण सावएण चिंतियं--जइ मुच्चीहिंति ताहे ॥२८०॥

प्रत सूत्रांक [-]
दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक-चूर्णी उपोद्घात निर्युक्तौ ॥२८१॥

पुष्यसामुद्रिकः

लोगो वाहेहिति, एत्थ चेव अच्छंतु, ताहे से फासुगा चारी किणिऊण दिज्जति, एवं पोसेज्जंति, सो य सावतो अट्ठमिचाउद्दसीसु उववासं करेति, पोत्थयं च वाएति, तेऽवि तं सोऊण भद्दया जाता, उवसंता संता सन्निणो जद्दिवसं सावओ ण जेमेति तद्दिवसं तेवि ण चरंति, तस्स सावगस्स भावो जातो, जहा इमे भविया उवसंता, अब्भहितो णेहो जातो, ते रूवस्सिणो, तस्स य सावगस्स मित्तो, तत्थ भंडीरवडजत्ता, तारिसा णत्थि अन्नस्स बइल्ला, ताहे तेण ते भंडीए जोतेत्ता णीया अणापुच्छाए, तत्थ अन्नेणवि जाइज्जंता तस्स दिन्ना, ताहे ते च्छिन्ना आणेउं बद्धा, तत्थ ते णवि चरंति णवि पाणितं पिबंति, जाहे सव्वहा ण इच्छंति ताहे सो सावतो तेसिं भत्तं पच्चक्खाति णमोक्कारं च से देति, ते कालमासे कालं किच्चा णागकुमारेसु उववन्ना, ओधिं पउंजंति जाव पेच्छंति तित्थगरस्स उवसग्गं, अलाहि ता णं अन्नेणं, सामी मोएमोत्ति आगता, एगेण णावा गहिता, एगो सुदाढेण समं जुज्झति, सो महिड्ढीओ, तस्स पुण चयणकालो, इमे य अहुणोववन्नगा, सो तेहिं पराजितो, ताहे ते नागकुमारा तित्थकरमहिमं करेंति, सत्तं रूवं च गायंति, एवं लोगोऽवि । ततो सामीवि उत्तिन्नो, तत्थ तेहिं देवेहिं सुरभिवासं वुट्ठं, तेऽवि पडिगता, एत्थ गाहाओ-

सुरभिपुर सिद्धदत्तो गंगा कोसी विदू य खेमिलओ । णाग सुदाढे सीहे कंबलसबला य जिणमहिमा ।४-१२।७३।
मधुराए जिणयासो आहीर विवाह गोण उववासे । भंडीर मित्त बंधे भत्ते णागोहि आगमणं ॥४-१३।४७४॥
धीरवरस्स भगवतो णावारूढस्स कासि उवसग्गं । मिच्छादिट्ठि परद्धं कंबलसबला समुत्तारे ॥ ४-१४।४७५॥

ततो भगवं उदगतीराए पडिक्कमित्तु पत्थिओ, गंगामट्टियाए य तेण मधुसित्थेण लक्खणा दीसंति, तत्थ पूसो णाम सामुद्दो ॥२८१॥

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ
॥२८२॥

गोशालक-वृत्तं

सो ताणि सोचिते लक्खणाणि पासति, ताहे-एस चक्कवट्टी एगागी गतो वच्चामिणं वागरेमि तो मम एत्तो भोगवत्ती भविस्सति, सेवामि णं कुमारत्ते, सामीवि थुणागसंनिवेसस्स बाहिं पडिमं ठितो, तत्थ सो तं पडिमं ठितं तित्थगरं पेच्छति, ताहे तस्स चित्तं जातं-अहो इमं मए पलालं अहिज्जितं, इमेहिं लक्खणेहिं एतेण समणएण ण होयव्वं, अलाहि, जहा सामि एतं होतु एत्तियं। इतो य सक्को देवराया पलोएति अज्ज कहिं सामी ?, ताहे पेच्छति तित्थंकरं, तं च पूसं, तत्थ आगतो, सामीं वंदित्ता भणति सो पूसं-तुमं लक्खणं ण जाणसि, एसो अपरिमितलक्खणो, ताहे सक्को अब्भिंतरलक्खणं वण्णेति, गोक्खीरगोरहिरं प्रशस्त०,सत्थं ण होति अलियं, एस धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टी देवदेवेहिं पूइज्जिहिति। ततो सामी रायगिहं गतो, तत्थ णालंदाए बाहिरियाए तंतुवालयसालाए एगदेसंसि अहापडिरूवं उग्गहं अणुन्नवेत्ता पढमं मासक्खमणं विहरति, एत्थंतरा मंखली एति। तस्स उप्पत्ती—

तेणं कालेणं तेणं समएणं मंखली णाम मंखे, तस्स भद्दा भारिया गुव्विणी, सरवणे संनिवेसे गोबहुलस्स गोसालाए पसूता दारगं, तस्स गोणं नामं कयं गोसालोत्ति, संवड्ढति मंखसिप्पं अहिज्जति, अहिज्जित्ता चित्तफलगं कारेति, कारेत्ता सो एगल्लतो विहरंतो रायगिहतंतुवायसालाए ट्ठितो। जत्थ सामी ठिओ तत्थ एगदेसंमि वासावासं उवगतो, भगवं मासखमणपारणए अब्भिंतरियाए विजयस्स घरे विपुलाए भोयणविहीए पडिलाभितो, तत्थ पंच दिव्वाणि, भणति य वंदित्ता-अहं तुब्भं सीसोत्ति, सामी तुसिणीओ णिग्गतो, बितियं मासक्खमणं ठितो, बितियपारणए आणंदस्स घरे खज्जगविधीए, ततिए सुदंसणस्स घरे सव्वकामगुणिएणन्ति, भगवं चउत्थं मासक्खमणं उवसंपज्जित्ताणं विहरति। गोसालो य कात्तियपुण्णिमाए दिवसओ पुच्छति-'किमहं अज्ज भत्तं लभेज्ज'-त्ति, सिद्धत्थेण भणितं-कोद्दवअंबिलसित्थाणि कूडगरूवगं च दक्खिणं, ताहे सो सव्वादरेण हिंडति, एवं तेण मंडीसुणएण जहा ण

॥२८२॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥२८३॥

गोशालक स्थापमानं

कर्हिंवि संभाइयं, ताहे अवरण्हे एगेण से कम्मारएण दिन्नं, ताहे जिमितो, रूवओ य से दक्खिणं दिन्नो, तेण परिक्खावितो जाव कूडओ, ताहे भणति-'जेण जहा भवियव्वं ण तं भवइ अन्नहा' लज्जिओ आगतो। चउत्थे मासक्खमणे भगवं णालंदाओ निग्गतो कोल्लागं गतो। तत्थ बहुलो माहणो माहणे भोआवेति, भगवं च अणेण मधुघयसंजुत्तेण परमन्नेण पडिलाभितो, पंच दिव्वाइं, गोसालोऽवि तंतुवायसालाए सामिं अपेच्छमाणो अब्भिंतरबाहिरं ण पेच्छति, ताहे जहेव पण्णत्तीए जाव दिट्ठो, ताहे सामी तेण समं वासावगमाओ सुवन्नखलयं वच्चति, तत्थंतरा गोवालगा वइयाहिंतो खीरं गहाय महल्लीए थालीए णवएहिं चाउलेहिं पायसं उवक्खडेंति, ताहे गोसालो भणति-एह एत्थ भुंजामो, ताहे सिद्धत्थो भणति—एस निम्माणं चेव ण गच्छति, एस उरुभज्जिहिति, ताहे सो असद्दहंतो ते गोवए भणइ-एस देवज्जतो तीताणागतजाणतो भणति-एस थाली भज्जिहिति, तो पयत्तेण सारवेह, ताहे पयत्तं करेंति, वंसविदलेहि य थाली बद्धा, तेहिं अतिबहुया तंदुला छूढा, सा फुट्टा, पच्छा गोवा जं जेण कमल्लं आसाइतं सो तत्थ चेव पजिमितो, तेण ण लद्धं, ताहे सुट्ठुतरं नियती गहिता। एत्थ गाहाओ—

थूणाए बहिं पूसो लक्खण अब्भिंतरे य देविंदो। रायगिह तंतुसाला मासक्खमणं च गोसाले ॥ ४-१५।४७२ ॥
मंखलि मंख सुभद्दा सरवण गोबहुलमेव गोसालो। विजया णंद सुणंदे भोयण खज्जे य कामगुणे ॥४-१६।४७३॥
कोल्लाए बहुल पायस दिव्वा गोसाल दट्ठु बाहिं तु। सुवन्नखलए पस्सा थाली णियतीय गमणं च ॥ ४-१७।४७४॥ ॥२८३॥

ताहे सामी बंभणागामं पत्तो, तत्थ णंदो उवणंदो य दोन्नि भातरो, गामस्स दो पाडगा, तत्थ एगस्स एगो इतरस्सवि एगो,

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता...........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] “आवश्यक” निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

श्री आवश्यक-चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥२८४॥

सिंहस्कंद-कृतो गो-शालवधः

तत्थ सामी णंदस्स पाडगं पविट्ठो णंदघरं च, तत्थ दवि दोसीणेण य पडिलाभितो णंदेण, गोसालो उवणंदस्स, तेण उवणंदेण संदिट्ठं देह भिक्खत्ति, तत्थ अदेसकाले सीतकूरो णिणितो, सो तं ण इच्छति, पच्छा सा दासी उवणंदेण भणिता, जहा-एयस्स चेव उवरिं छुभह, छूढो, सो अप्पत्तिएण भणति-जदि मम धम्मायरियस्स अत्थि तवो वा तेओ वा तो एयस्स घरं डज्झतु, तत्थ अहासंनिहिएहिं वाणमंतरेहिं मा भगवतो अलियं भवतुत्ति तं घरं दड्ढं, ततो सामी णिग्गतो चंपं गतो, तत्थ वासावासं ठाति। तत्थ दुमासक्खमणेण ठाति, चत्तारिवि मासे विचित्तं तवोकम्मं ठाणादिए पडिमं ठाइ, ठाणुक्कुडुए एवमादीणि करेति। तत्थ चत्तारि मासे वसित्ता जं चरिमं दोमासियापारणयं तं बाहिं पारेति, एत्थ—

बंभण गामे णंदोवणंद तेण उवणंद य पविट्ठे। चंपा दुमासखमणे वासावासं मुणी खमति ॥ ४-१८।४७५॥

ताहे कालायं णाम संनिवेसं तत्थ वच्चति, गोसालेण समं भगवं सुन्नघरे पडिमं ठितो, गोसालो तिंतस्स दारपेह ठितो, तत्थ सीहो णाम गामउडपुत्तो विज्जुमतियाए गोट्ठिदासियाए समं तं चेव सुन्नघरं पविट्ठो, तत्थ तेण भन्नति-जइ एत्थ कोति समणो वा बंभणो वा पट्ठितो वा सो साहतु जा अन्नत्थ वच्चामो, सामी तुण्हिक्को अच्छति, इतरोऽवि तुण्हिक्को, ताहे ताणि तत्थ अच्छित्ता णिग्गताणि, णिंताण गोसालेण सा महिला छिक्का, सा भणति-एत्थ एस कोति, तेण अतिगंतूण पिट्टितो, एस वुत्तो-अहो अम्हे अणायारं करेंताणि दिट्ठाणि, ताहे सामिं भणति-अहं एक्कल्लओ पिट्टिज्जामि, तुब्भे ण वारेह, सिद्धत्थो भणति—कीस सीलं ण रक्खसि ?, किं अम्हेऽवि पिट्टिज्जामो ?, कीस वा अणंतो ण अच्छसि ?, तो दारे ठितओ बाहिं, ततो निग्गतो सामी पत्तकालयं ॥२८४॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता...........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

नाम गामो तत्थ गतो, तत्थवि तहेव सुन्नघरे ठितो, गोसालो तेण भएण तद्दिवसं कोणे ठितो, तत्थ खंदो णाम गामउडपुत्तो अप्पणिज्जियाए दासीए दंतिलियाए समं महिलाए लज्जंतो तमेव सुन्नघरं गतो, तेहिवि तहेव पुच्छियं, तहेव तुण्हिक्का अच्छंति, जाहे ताणि णिग्गच्छंति ताहे गोसालेण हसितं, ताहे सो पुणोऽवि पिट्टितो, ताहे सो सामिं खिंसति-अम्हे हम्मामो तुब्भेऽवि ण वारेह, किं अम्हे तुब्भे ओलग्गामो ?, ताहे सिद्धत्थो भणति-तुमं अप्पदोसेण हंमसि, कीस पुण तुंडं ण रक्खसि ?। एत्थ-

कालाते सुन्नगारे सीहो विज्जुमती गोट्ठिदासी य । खंदो दित्तिलियाए पत्तालयसुन्नगारंमि ॥ ४ ॥ १९।४७६॥

ततो कुमारायं संनिवेसं गता, तस्स बाहिया चंपरमणिज्जं णाम उज्जाणं, तत्थ भगवं पडिमं ठितो, तत्थ कुमाराए संनिवेसे कूवणओ णाम कुंभकारो, तस्स कुमारावणे पासावच्चिज्जा मुणिचंदा णाम थेरा बहुसुता बहुपरिवारा, ते तत्थ परिवसंति, ते य जिणकप्पपरिकम्मं करेंति सीसं गच्छे ठवेत्ता, ते सत्तभावणाए अप्पाणं भावेंति 'तवेण सत्तेण सुत्तेण, एगत्तेण बलेण य । तुलणा पंचहा वुत्ता, जिणकप्पं पडिवज्जतो ॥ १ ॥ एताओ भावणाओ, ते पुण सत्तभावनाए भावेंति, 'पढमा उवसयंमि बितिया बाहिं ततिया चतुक्कम्मी । सुन्नघरंमि चउत्थी तह पंचमिया मसाणंमि ॥ १ ॥ सो य बितियाए भावेति । गोसालो य भगवं भणति-'एह देसकालो हिंडामो' सिद्धत्थो भणति--अज्ज अम्हं अंतरं, सो हिंडंतो ते पासावच्चिज्जे थेरे पेच्छति, भणति--के तुब्भे ?, ते भणंति-समणा णिग्गंथा, सो भणति--अहो निग्गंथा, इमो भे एरिओ गंथो, कहिं तुब्भे निग्गंथा ?, सो अप्पणो आयरियं वन्नेति, एरिसो महप्पा, तुब्भेत्थ के ?, ताहे तेहिं भणति-जारिसओ तुमं तारिसओ धम्मायरिओऽवि सयंगिहीतलिंगो, ताहे सो रुट्ठो, मम ॥२८५॥

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता..........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

श्री
आवश्यक
चूर्णौ
उपोद्घात
निर्युक्तौ

॥२८६॥

धम्मायरियं सवधत्ति, ताहे भणति-जति मम धम्मायरियस्स तवो वा तेयो वा अत्थि तो तुब्भं पडिस्सतो डज्झउत्ति, तेहिं भणितं-ण तुज्झ भणितेण अम्हे डज्झामो, ताहे सो गतो सामिस्स साहति-अज्ज मए सारंभा सपरिग्गहा दिट्ठा, ते भणंति-जारिसो तं०-सव्वं साहति, ताहे सिद्धत्थेण भणितो-ते पासावच्चिज्जा थेरा साधू, ण तेसिं पडिस्सतो डज्झति, ताहे रत्ती जाता, ते मुणिचंदा आयरिया बाहिं पडिमं ठिता, सोऽवि कूवणओ तद्दिवसं सेणीभत्ते पत्तेणं वियाले एति मत्तल्लओ जाव पासति ते मुणिचंदायरिते, सो चिंतति-एसो चोरोत्ति, ते य तेण गलए गहिता, ते निरुस्सासा कता, ण य झाणाओ कंपिता, केवलनाणं उप्पण्णं, आउं च निट्ठियं, सिद्धो, तत्थ अहासन्निहिएहिं वाणमंतरेहिं देवेहिं महिमा कता, ताहे गोसालो बाहिं ठितो पेच्छति देवे उप्पयंते य निवयन्ते य, सो जाणति-एस सो पडिस्सतो डज्झति, सामिस्स साहति-भगवं! तेसिं पडिणीयाण घरं डज्झति, सिद्धत्थो भणति-न तेसिं पडिस्सओ डज्झति, तेसिं आयरियस्स केवलणाणं उप्पण्णं, सो य सिद्धिं गतो, तस्स देवा महिमं करेंति, ताहे सो चिंतति-जामि पेच्छामि जाव सो तं पदेसं गतो ताव देवा महिमं काऊण गता, ताहे तस्स तं गंधोदकं पुप्फवासं च दट्ठूण अब्भधियं हरिसो जातो, ते सीसे उवड्डवेति-अरे तुब्भे ण किंचि जाणह, एरिसगा चेव बोद्दा हिंडह. उट्ठेह, आयरियंपि कालगतं ण जाणह, सव्वं रत्तिं सुवह, ताहे ते जाणंति-एस सच्चयं चेव पिसाओ, रत्तिंपि हिंडति, ताहे तस्स सद्देण पुणो उट्ठिता गता य आयरियसगासं, जाव पेच्छंति कालगतं ताहे ते अद्धितिं करेंति-अम्हेहिं ण णाया आयरिया कालं करेंता, सोऽवि चमढेत्ता गतो, ताहे सामी ततो चोरागसन्निवेसं गता, तत्थ चारियत्तिकाऊण ओउंवालगं अगडे पज्जिज्जंति, पुणो य उत्तारिज्जति, तत्थ ताव पढमं गोसालो, सामी ण ताव, तत्थ य सोमाजयंतीओ उप्पलस्स भगिणीओ पासावच्चिज्जाओ दो परिव्वाइयातो ण तरंति पव्वज्जं काऊण ताहे परि-

मुनिचंद-
केवलं
दरिद्रस्थ-
विरावासः

॥२८६॥

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

नैमित्तिक-कृता गर्भपाक-दानावस्था

क्खाइयत्तं करेति, ताहे सुतं-केवि दो जणा ओंबालए पज्जिज्जंति, ताओ पुण जाणंति-जहा चरिमतित्थयरो पव्वतितो, तो ताओ तत्थ गताओ जाव पेच्छंति, ताहिं मोइओ, ते य ओद्धंसिया-अहो विणस्सिउकामत्थ, तेहिं भएण खमिता, महितो य, एत्थ—

मुणिचंदो कुमाराए कुवणय चंपरमणिज्ज उज्जाणे। चोराग चारि अगडे सोम जयंती उवसमंती ॥४-२०।४७७॥

ततो भगवं पिट्ठीचंपं गतो, तत्थ वासावासं पज्जोसवेइ, चाउम्मासियखमणं च वयं विचित्तं पडिमादीहिं, बाहिं पारेत्ता कतंगलं गतो, तत्थ दरिद्दथेरा णाम पासंडत्था सारंभा समहिला, ताण वाडगस्स मज्झे देउलं, तत्थ सामी पडिमं ठितो, तद्दिवसं च सफुसितं सीतं पडति, ताणं च तद्दिवसं जागरओ, ते समहिला जागरओ गायंति। तत्थ गोसालो भणति-एसोऽवि णाम पासंडो भवति सारंभो समहिलो य, सव्वाणि य एगट्ठाणि गायंति य, ताहे सो तेहिं बाहिं णिच्छूढो, सो तहिं माहमासे तेण सीतेण सतुसारेण संकुचितो अच्छति, तत्थ तेहिं अणुकंपतेहिं पुणोवि अतिणीतिए अन्नेहिं, एवं तिन्नि वारे निच्छूढो अतिणीतो य, पुणो भणति-जदि अम्हे फुडं भणामो तोवि णिच्छुब्भामो, तत्थ अन्नेहिं भणितं-एस देवज्जगस्स कोऽवि पेढियावाहो छत्तधारो वा असि, तुण्हिक्का अच्छइ, सव्वाउज्जाणि खडखडावेह जह से सद्दोऽवि ण सुव्वति। एत्थ—

पिट्ठीचंपा वासं तत्थ मुणी चाउमास खमणेणं। कयगलदेउलवासं दरिद्दथेरा य गोसालो ॥ ४-२१।४७८ ॥ ॥२८७॥

पच्छा पभाए सामी सावत्थिं गतो, तत्थ सामी बाहिं पडिमं ठितो, तत्थ सो पुच्छति-भगवं!, तुब्भ अतीह?, सिद्धत्थो भणति-अज्ज अम्ह अंतरं, सो भणति-अज्ज अहं किं आहारं लभीहामि?, ताहे सिद्धत्थो भणति-अज्ज तुमए माणुसमांसं खाइयव्वंति,

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

सो भणति-तं अज्ज जेमेमि जत्थ मंससंभवो णत्थि, किमंग पुण माणुसमंसं ?, सो पहिंडितो, तत्थ सावत्थीए पितुदत्तो णाम गाहावती, तस्स सिरिभद्दा णाम भज्जा, सा य णिंदू, सा अन्नया कयाई सिवदत्तं नेमित्तियं पुच्छति-किह मम पुत्तो होज्जा ?, सो भणति-जो सुतवस्सी तस्स तं गब्भं ससोणितं रंधिऊण पायसं करेत्ता ताहे देह, णिग्गंथस्स य देह, तस्स य घरस्स अन्नतोमुहं दारं करेज्जासि, मा सो जाणित्ता डहिहित्ति, एवं ते थिरा पया भविस्सति, ताए य तहा कतं, सो हिंडन्तो तं घरं पविट्ठो, सो य से पायसो घयमधुसंजुत्तो दिन्नो, तेण चिंतितं- एत्थ कओ मंसंति ?, ताहे तुट्ठेण भुत्तं, ताहे गंतूण भणति-चिरं ते निमित्तकत्तणं करेंतस्स अज्ज सि णवरि फिडितो, सिद्धत्थो भणति ण विसंवदाति, जदि न पत्तियासि तो वमेहि, तेण वंतं, जाव दिट्ठा पम्हवाला य विकुच्चियए य अवयवा, ताहे सो रुट्ठो तं घरं गंतुं मग्गति, तेहिवि तं बारं ओहाडियगं, तेण ण जाणति, आवाडीओ करेति, जाहे ण लभति ताहे भणइ-जदि मम धम्मायरियस्स तवो तेयो वा अत्थि तो डज्झतु, ताहे सव्वा बाहिरिया डड्ढा ताहे सामी हलेदुता णाम गामो तं गतो, तत्थ महतिमहप्पमाणो हलेदुगरुक्खो, तत्थ सावत्थीओ णगरीओ अन्नो लोगो एंतो तत्थ वसति सत्थनिवेसो, तत्थ सामी पडिमं ठितो, तेहिं सत्थिएहिं रत्तिं सीयकाले अग्गी जालिओ, ते पभाए संते उट्ठेत्ता गता, सो अग्गी तेहिं न विज्झाविओ, सो डहंतो २ सामिस्स पासं गतो, सो भगवं परितावेति, गोसालो भणति-भगवं णासह नासह एस अग्गी एइ, सामिस्स पादा डड्ढा, गोसालो णट्ठो। एत्थ—

सावत्थी सिरिभद्दा णिंदू भोयण पिउदत्त तहय सिवदत्ते।

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक-चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥२८९॥

चेटत्रासादि

दारअगणी णग्गवाले हलिद्दु पडिमा अगणी वहिया ॥ ४-२२।४७९ ॥

ततो णंगला णाम गामो, तत्थ गतो, सामी वासुदेवघरे पडिमं ठितो, सोऽवि ठितो, तत्थ चेडरूवाणि खेलंति, सो य कंदप्पिओ, ताणि अच्छिकडुभिकाभियाएहिं बीहावेति, ताहे ताणि धावंताणि पडंति, जाणूणि य छोडिज्जिंति, अप्पेगतियाण खुखपगा हिज्जंति, पच्छा तेसिं अम्मापियरो एंति, तेहिं सो पिट्टिज्जति, अन्ने भणंति-एयस्स देवज्जगस्स एस णूण दासो ण ठाति अप्पणो ठाणे, अन्ने वारेंति-अलाहि, देवज्जगस्स खमियव्वं, पच्छा सो भणति-अहं हंमामि तुब्भे ण वारेह, ताहे सिद्धत्थो भणति-तुमं एकज्जो ण अच्छसि। ततो पच्छा आवत्ता णाम गामो, तत्थवि सामी पडिमं ठितो बलदेवस्स घरे, तत्थवि मुहं अवयासेतु बीहावेति, अविय पिट्टितिवि, ताणि चेडरूवाणि रुयंताणि मायापितूणं साहेंति, तेहिं घव्वितो मुक्को य देवज्जगस्स गुणेणं, तत्थ पुणोऽवि भणति-तुब्भे ममं ण वारेह, सिद्धत्थो भणति-तुमं एकज्जो ण ठासि, अन्ने भणंति-तेसिं चेडरूवाणं अम्मापितीहिं भणति-भट्टारगो, एतस्स दोसो जो ण वारेति, तेहिं बाहाहिं गहितो, अच्छामोत्ति, ताहे बलदेवरूवेण अहासाभिहिता देवता उट्ठाइता, ततो पायवाडिताणि सामिं खामेंति। एत्थ--

तत्तो य णंगलाए, डिंभ मुणी अच्छिकड्ढणं चेव। आवत्ते मुहयासे, मुणिओत्ति य बाहि बलदेवो॥ ४-२३।४८०॥

ततो पच्छा चोरायनामं संनिवेसं गतो, तत्थ घडाभोज्जं तद्दिवसं रज्झति य पच्चति य, सामी य एगंते पडिमं ठितो, सो भणति--अज्ज एत्थ चरियव्वं, ताहे सिद्धत्थो भणति-अज्ज अम्हे अच्छामो, सो तहिं उक्कुडनिउडियाहिं पलोएति केवलं देस- ॥२८९॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

कालमेघहस्तिनौ

कालो भविस्सइत्ति ?, तत्थ चोरभयं, ताहे ते जाणंति एस पुणो पुणो पलाएति मन्ने एस चारितो होज्जा, ताहे सो तेहिं घेत्तूण णिसद्धं हम्मति, सामी पच्छन्ने अच्छति, ताहे सो भणति--जति मम धम्मायारियस्स अत्थि तवो तेतो वा तो सव्वो एस मंडवो डज्झतु, ततो डड्ढो । पच्छा ते लंबुगं गता, तत्थ दो पच्चंतिया भायरो मेहो य कालहत्थी य, सो कालहत्थी चोरेहिं समं उद्धाइओ, इमे य दुयगे पेच्छति, ते भणंति--के तुब्भे ?, सामी तुसिणीओ अच्छति, ते तत्थ हम्मंति ण य साहेंतित्ति, तेण ते बंधिऊण महल्लस्स भातुगस्स पेसिया, तेण जं चेव भगवं दिट्ठो तं चेव उट्ठेत्ता पूतितो खामितो य, तेण सामी कुंडग्गामे दिट्ठेल्लओ, ततो मुक्को समाणो भगवं चिंतेति-बहुं कम्मं निज्जरेयव्वं लाढाविसयं वच्चामि, ते अणारिया, तत्थ णिज्जरेमि, तत्थ भगवं अत्थारिय-दिट्ठंतं हिदए करेति, ततो भगवं निग्गतो लाढाविसयं-पविट्ठो, कम्मनिज्जरातुरितो, तत्थ हीलणनिंदणाहिं बहुं निज्जरेति जहा बंभचेरेसु, पच्छा ततो णीति, तत्थ पुन्नकलसा णाम अणारियगामो. तत्थंतरा दो तेणा लाढाविसयं पविसितुकामा, ते अवसउणो एतस्सेव वहाए भवतुत्तिकट्टु असिं कड्ढिऊणं सीसं छिंदामीत्ति पहाविता, ताहे सिद्धत्थेण ते असी तेसिं चेव उपरि छूढो, तेसिं सीसाणि छिन्नाणि, अन्ने भणंति--सक्केण ओहिणा आभोइत्ता दोऽवि वज्जेण हता। एवं विहरंता भद्दियं णगरीं गता, तत्थ वासारत्ते चाउम्मासखमणेण अच्छति, विचित्तं तवोकम्मं ठाणादीहिं । एत्थ गाथाओ-

चोरा मंडव भोज्जं गोसाले वहण तेय झामणया । मेहो य कालहत्थी कलंबुयाए य उवसग्गो ॥४-२४।४८०॥

लाढेसु व उवसग्गा घोरा पुन्नकलसा य दो तेणा । वज्जहया सक्केणं भद्दिय वासासु चउमासो ॥४-२५।४८१॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

ताहे बाहिं पारेत्ता विहरंतो कदलीनाम गामो, तत्थ सरदकाले अच्छारियभत्ताणि दधिकूरेण णिसट्ठं दिज्जंति, तत्थ गोसालो भणति--वच्चामो, ताहे सिद्धत्थो भणति--अम्हं अंतरं, सो तहिं गतो, भुंजति लभति दधिकूरं, सो य वड्डिफोडो ण चेव धाति, तेहिं भणितं-वड्ढं भायणं करेह, करंवितं, पच्छा ण णित्थरति, ताहे से उवरिं छूढं, ताहे उक्कीलंतो गच्छति। ततो भगवं जंबुसंड णामं गामं गतो, तत्थवि संमेछो, तहेव अच्छारियभत्तं, तत्थ पुण खीरं कूरं, तहिंपि तहेव धरिसिओ जिमिओ य। एत्थ--

कदलिसमागम भोयण मंखलि दधिकूर भगवतो पडिमा। जंबूसंडे गोट्ठिय भोयणं भगवतो पडिमा ॥४-२६।४८२॥

ततो-तंबाए णंदिसेणो पडिमा आरक्खित हण भये डहणं। कूविय चारिय मोक्खो विजयपगब्भा य पत्तेयं॥४-२७।४८३

तेणेहि पहे गहितो गोसालो मातुलोत्ति वाहणता। भगवं वेसालीए कम्मारघणेण देविंदो ॥ ४-२८।४८४॥

पच्छा तंबायं णाम गामं एंति, तत्थ णंदिसेणा णाम थेरा बहुस्सुया बहुपरिवारा, ते तत्थ जिणकप्पस्स पडिकम्मं करेंति पासावच्चिज्जा, इमेवि बाहिं पडिमं ठिता, गोसालो अतिगतो, तहेव पेच्छति पव्वतिते, तत्थ पुणो खिंसति, ते आयरिया तद्दिवसं चउक्के पडिमं ठायंति, पच्छा तहिं आरक्खियपुत्तेणं हिंडंतेणं चोरोत्ति भल्लएण आहतो, केवलणाणं, सेसं जहेव मुणिचंदस्स जाव गोसालो बोहेत्ता आगतो। ततो पच्छा कूविया णामं संनिवेसो, तत्थ गता, तेहिं चारियत्तिकाऊण घेप्पंति, तत्थ बज्झंति पिट्टिज्जंति य, तत्थ लोगसमुल्लावो अपडिरूवो देवज्जतो रूवेण य जोव्वणेण य चारिओत्ति गहिओ, तत्थ विजया पगब्भा य दोन्नि पासंतेवासिणीओ परिव्वाइया सोऊण लोगस्स तित्थगरो इतो वच्चामो ता पुलएमो, को जाणति होज्जा?, ताहिं मोतितो,

॥२९१॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक-चूर्णी उपोद्घात निर्युक्तौ ॥२९२॥

पृथग्भाव: वैशाल्यां स्थानं

दुरप्पा ! ण जाणह चरिमतित्थकरं सिद्धत्थरायसुतं, अज्ज भे सक्को उवालभतित्ति ताहे मुक्का सामिया य । ततो मुक्का समाणा निग्गता, तत्थ अंतराण दुवे पंथा, ताहे गोसालो भणति--तुब्भे ममं हम्ममाणं ण वारेह, अविय-तुब्भेहिं समं बहूवसग्गं, अवि च अहं चेव पढमं हम्मामि, तो वरं एगल्लो विहरिस्सं, सिद्धत्थो भणति--तुमं जाणसि, ताहे सामी वेसालीमुखो पधावितो, इमो य भगवतो फिडितो एगल्लओ वच्चति, अंतरा य छिण्णट्ठाणं, तत्थ चोरो रुक्खाविलग्गो पलोएति, तेण दिट्ठो, भणति-एगो णग्ग-समणओ एति, ते भणंति--एसो ण बीभेति, णत्थि हरियव्वयंति, अज्ज से णत्थि फेडओ, जं अम्हे परिभवति, आगतो पंचहिवि चोरसएहिं वाहितो मातुलोत्तिकाउं, पच्छा चिंतेति- वरं सामिणा समं, अविय-कोति सामिं मोएति, तस्स निस्साए मज्झवि मोक्खणं भवति, ताहे सामिं मग्गितुमारद्धो, सोऽवि ताव मग्गति । सामीवि वेसालिं गतो, तत्थ कम्मारसालाए अणुन्नवेत्ता पडिमं ठितो, सा साहारणा, जे साधीणा ते अणुन्नविता, अन्नदा तत्थ एगो कम्मारो छम्मासा पडिभग्गतो, आढत्तो सोभणतिथिकरणे आयोज्जाणि गहाय आगतो, सामिं च पडिमं ठितं पासति. अमंगलंति सामिं आहणामित्ति चम्मट्ठेण पहावितो, सक्केण ओही पउत्तो जाव पेच्छति, तहेव णिमिसंतरेण आगतो, सक्केण तस्स चेव उवरि घणो पावितो, तह चेव मतो । ताहे सक्को वंदित्ता गतो ।

गामाग बिहेलगजक्ख तावसी उवसमावसाणथुती । छट्ठेण सालिसीसे विसुज्झमाणस्स लोगोधी ॥४-४८५॥१९

सामी गामायं संनिवेसं एति, तत्थ उज्जाणे बिभेलओ णाम जक्खो, सो भगवतो पडिमं ठितस्स पूयं करेति, ततो सामी सालिसीसयं णाम गामो तहिं गतो, तत्थ उज्जाणे पडिमं ठितो, माहमासो य वट्टति, तत्थ कडपूयणा वाणमंतरी सामिं ॥२९२॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक-चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥२९३॥

कटपूतनोपसर्गः

दट्ठूणं तेयं असहमाणी पच्छा तावसरूवं विउव्वित्ता वक्कलनियत्था जडाभारेण य सव्वं सरीरं पाणिएण ओल्लेत्ता दहंमि उवरिं ठिता सामिस्स अंगाणि धुणति वायं च विउव्वति, जदि पागतो सो फुट्टितो होन्तो, सा य किल तिविट्ठुकाले अंतपुरिया आसि, ण य तदा पडियरियत्ति पदोसं वहति, तं दिव्वं वेयणं अहियासंतस्स भगवतो ओही विगसिओ सव्वं लोगं पासितुमारद्धो, सेसं कालं गब्भातो आढवेत्ता जाव सालिसीसं ताव सुरलोगप्पमाणो ओही एकारस य अंगा सुरलोगगप्पमाणमेत्ता, जावतियं देवलोगेसु पेच्छिताइता। सावि वंतरी पराजिता संता ताव उवसंता पूयं करेति।

पुणरवि भद्दियणगरे तवं विचित्तं तु छट्ठवासंमि। मगहाए निरुवसग्गं मुणि उवुबद्धंमि विहारित्था ॥ ४-४८६॥३०

ततो भगवं भद्दियं नाम णगरिं गओ, तत्थ छट्ठं वासावासं उवगतं, तत्थ वरिसारत्ते गोसालेण समं समागमो, छट्ठे मासे भगवतो गोसालो मिलितो। तत्थ चतुमासखमणं, विचित्ते य अभिग्गहे कुणति भगवं ठाणादीहिं, बाहिं पारेत्ता ततो पच्छा मगहविसए विहरति निरुवसग्गं अट्ठमासे उदुबद्धिए।

आलभियाए वासं कंडग तव (हि) देउले पराहुत्तो। मद्दणदेउलसारिय मुहमूले दोसुवि मुणिस्ति ॥४-४८७॥३१

एवं विहरिऊणं आलभितं एति, तत्थ सत्तमं वासावासं उवगतो चाउम्मासखमणेण, ततो बाहिं पारेत्ता कंडगं नाम संनिवेसं तत्थ एति, तत्थ वासुदेवघरे सामी कोणे ठितो पडिमं, गोसालोवि वासुदेवपडिमाए अधिट्ठाणं मुहे काउं ठितो, सो वासपडियरओ आगतो तं तहाठितं पेच्छति, ताहे चिंतेति--मा लोगो भणिही धम्मिओ रागदोसिओत्ति, गामं गंतूण कहेति--एह पेच्छह, मा भणिहिह राइतओत्ति, ते आगता, ताहे दिट्ठो पिट्टितो, पच्छा णिव्वासिज्जति य, अन्ने भणंति -एस पिसाओ, ताहे मुक्को, ताहे निग्गया ॥२९३॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥२९४॥

चारकतया ग्रहणं

समाणा मद्णाणाम गामो, तत्थ बलदेवघरे सामी अंतो कोणे पडिमं ठितो, सो गोसालो तस्स मुहे सागारितं पदातुं ठिओ, तत्थवि तहेव कहितं, ततो य पिट्टिऊण मुणिउत्तिकाऊण मुक्को, मुणिओ नाम पिसाओ। तत्थ सामीवि पिट्टिता, ताहे बलदेवपडिमा णंगलं गहाय उट्ठिता, ते भीया खामियं च।

बहुसालगसालवणे कडपूयण पडिम विग्घ सोवसमे। लोहग्गलंमि चारिय जियसत्तू उप्पले मोक्खो ॥४-३२।४८९॥

ततो निग्गता बहुसालगं णाम गामो तत्थ गता, तत्थ बाहिं सालवणं णाम उज्जाणं, तत्थ ठितो, तत्थ य सालज्जा णाम वाणमंतरी, सा भगवतो पूयं करेति, एवं अम्हं, अन्नेसिं आदेसो-जहा सा कडपूयणा वाणमंतरी भगवतो पडिमागयस्स उवसग्गं करेति, ताहे संता तंता पच्छा महिमं करेति, ततो निग्गता गता लोहग्गलं रायहाणिं, तत्थ जियसत्तू राया, सो य अन्नेण राइणा समं विरुद्धो, तस्स चारपुरिसेहिं गहिता पुच्छिज्जंता ण साहंति, तत्थ य चारियत्ति रन्नो अत्थाणीवरगतस्स उवट्ठाविता, तत्थ उप्पलो अट्ठियग्गामतो, सो य पुव्वामेव अतिगतो, सो य ते आणिज्जंते दट्टूण उट्ठितो तिक्खुत्तो वंदति, पच्छा सो भणति-ण एस चारितो, एस सिद्धत्थरायसुतो धम्मवरचक्कवट्टी, एस भगवं, लक्खणाणि से पेच्छह, तत्थ सक्कारेऊण मुक्को ॥

तत्तो य पुरिमताले वग्गुरईसाण अच्चए महिमं।
मल्लिजिणायणपडिमा [ओण्णाए वंतुरगा] वंसकुडगंसि बहुगोट्ठी ॥ ४-३३।४९० ॥

ततो पुरिमतालं एति, तत्थ वग्गुरो णाम सेट्ठी, तस्स भद्दा भारिया वंझा अवियाउरी जाणुकोप्परमाता, बहूणि देवसतोवाइ-

॥२९४॥

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥२९५॥

याणि काउं परिसंता, अचया सगडमुहे उज्जाणियाए गताणि, तत्थ पासंति जुन्नदेउलं सडितपडितं, तत्थ मल्लिसामिणो पडिमा, तं णमंसंति, तेहिं भणितं—जदि अम्ह दारओ वा दारिया वा पयाति ता एतं देउलं करेमो, एतब्भत्ताणि य होमो, एवं णमंसित्ता गयाणि, तत्थ य अहासंनिहियाए वाणमंतरीदेवयाए पाडिहेरं कतं, आहूतो गब्भो, जं चेव आहूतो तं चेव देवउलं काउमारद्धाणि, अतीव पूजं तिसंझं करेंति, पव्वइया य अल्लियंति, एवं सो सावओ जातो। इतो य सामी विहरमाणो सगडमुहस्स उज्जाणस्स णगरस्स य अंतरा पडिमं ठितो। तेणं कालेणं तेणं समएणं ईसाणे देविंदे देवराया जहा अभिसेगे जाव जाणविमाणेणं सव्विड्ढीए सामीं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं काऊणं वंदति णमंसति, णमंसित्ता जाव पंजलिकडे भगवतो चरितं आगातमाणे सामिंमि दिव्वदिट्ठीए पज्जुवासेमाणे चिट्ठति, वग्गुरो य तं कालं ण्हातो ओल्लपडसाडओ सपरिजणो महता इड्ढीए विविहकुसुमहत्थगतो तं आयतणमच्चतो जाति, तं च वितिवयमाणं ईसाणिंदो पासति, भणति य--भो वग्गुरा! तुब्भं पच्चक्खतित्थगरस्स महिमं ण करेसि, तो पडिमं अच्चतो जासि, जा एस महतिमहावीरवद्धमाणसामी जगनाहेति लोगपूज्जेति, सो आगतो मिच्छादुकडं काउं खामेति महिमं करेति। ततो सामी उण्णागं वच्चति, तत्थ अंतरा वधुवरं सपडिहुत्तं एति, ताणि पुण दोवि विरूवाणि दंतिल्लगाणि य, तत्थ गोसालो भणति--अहो इमो सुसंजोगो, 'तत्तिल्लो पहराओ जाणति दूरेवि जो जहिं वसति। जं जस्स होति सरिसं तं तस्स वितिज्जयं देति ॥ १ ॥ जाहे ण ठाति ताहे तार्हि पिट्टित्ता बद्धो, ताहे वंसीकुडंगे छूढो। तत्थ पडितो उत्ताणओ अच्छति, वाहराति य सामिं, तत्थ सिद्धत्थो भणति---सतं कडं, तो ताहे सामि अदूरं गंतुं पडिच्छति, पच्छा ते भणंति---णूणं एस एयस्स देवज्जगस्स पीढियावाहो वा छत्तधरो वा आसि ओसट्ठितो, तो णं मुएह, ततो मुक्को, अन्ने भणंति--पहिएहिं ओतारिओ

वग्गुरश्रावकः सुरिमताले महिमा

॥२९५॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक-चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥२९६॥

अनार्ये-विहारः

सामिं अच्छंतं दट्ठूणं ।

गोभूमि वज्जलाढेत्ति गोवकोहे य बंसि जिणुदसमो । रायगिहऽट्ठमवासं भवज्जभूमी बहुवसग्गा ॥४-३४।४९१॥

ततो विहरंतो सामी गोभूमी वच्चति, तत्थ अंतरा अडविघणं, सदा गावीओ चरंति तेण गोभूमी। तत्थ गोसालो गोवालए भणति--अरे वज्जलाढा ! एस पंथो कहिं वच्चति ?, वज्जलाढा णाम मेकच्छा (मेच्छा), ताहे ते गोवा भणंति-कीस अक्कोससि ?, सो भणति-असुगए सुयपुत्ता सुट्ठु अक्कोसामि, तुब्भे एरिसगा मेच्छा, ताहे तेहिं मिलित्ता पिट्टिऊण बंधित्ता वंसीसु छूढो, तत्थ अन्नेहिं पुणो मोइतो अणुकंपाए, ततो विहरंता रायगिहं गता। तत्थ अट्ठमं वासारत्तं, चाउम्मासखमणं, विचित्ते य अभिग्गहे, बाहिं पारेत्ता सरदे समतीए दिट्ठंतं करेति, सामी चिंतेति-बहुं कम्मं ण सक्का णिज्जरेउं, ताहे सतेमेव अत्थारियदिट्ठंतं पडिकप्पेति, जहा एगस्स कुडुंबियस्स साली जाता, ताहे सो कप्पाडियपंथिए भणति-तुब्भं हिइच्छितं भत्तं देमि मम लुणह, पच्छा भे जहासुहं वच्चह, एवं सो ओवातेण लुणावेति, एवं चेव ममवि बहुं कम्मं अच्छति, एतं तऽच्छारिएहिं णिज्जरावेयव्वंति य अणारियदेसेसु, ताहे लाढावज्जभूमिं सुद्धभूमिं च वच्चति, ते णिरणुकंपा णिद्दया य, तत्थ विहरितो, तत्थ सो अणारिओ जणो हीलति निंदति जह बंभचेरेसु 'छुच्छुकरेंति आहंसु समणं कुक्कुरा दसंतु' त्ति (८-८३) एवमादि, तदा य किर वासारत्तो, तंमि जणवए केणइ दइवनिओगेण लेहट्ठो आसी वसहीवि न लब्भति। तत्थ य छम्मासे अणिच्चजागारियं विहरति। एस नवमो वासारत्तो।

अणियतवासं सिद्धत्थपुरं तिलत्थंबपुच्छ णिप्फत्ती । उप्पाडेति अणज्जो गोसालो वासबहुलाए ॥ ४-३५।४९२ ॥

॥२९६॥

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

श्री आवश्यक चूर्णी उपोद्घात निर्युक्तौ

॥२९७॥

तिलस्तंबः वैश्याय-नोत्पत्तिः

ततो निग्गता पढमसरयदे, सिद्धत्थपुरं गता, सिद्धत्थपुराओ य कुंमागामं संपत्थिया, तत्थ अंतरा एगो तिलथंभओ, तं दट्ठूण गोसालो भणति-भगवं ! एस तिलथंभओ किं निप्फज्जिहिति नवत्ति ?, सामी भणइ-निप्फज्जिही, एते य सत्त पुप्फजीवा ओद्दाइत्ता एतस्सेव तिलथंभस्स एगाए सिंबलियाए पच्चायाहिंति, तेण असद्दहंतेण अवक्कमित्ता सलेट्ठुओ उप्पाडितो एगंते य एडिओ, अहासंनिहितेहि य देवेहिं 'मा भगवं मिच्छावादी भवतु' त्ति वुट्ठं, आसत्थो बहुला य गावी आगता तेण य पएसेण, ताए खुरेण निक्खतो, तो पड्ढितो पुप्फा य पच्चायाता, ताहे कुंमागामं संपत्ता। तस्स बाहिं वेसियायणो बालतवस्सी आतावेति, तस्स पुण वेसियायणस्स का उप्पत्ती ?।

मगहा गोब्बरगामे गोसंखी वेसियाणपाणामा। कुंमग्गामाआवण गोसाले कोहण पउट्ठो ॥ ४-३६। ४९३ ॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपाए णयरीए रायगिहस्स य अन्तरा गोब्बरगामो, तत्थ गोसंखी नाम कुडुंबिओ, जो तेसिं आभीराण अधिवती, तस्स बंधुमती भज्जा अवियाइणी, इतो य तस्स अदूरसामंते गामो चोरेहिं हतो, ते हंतूण बंदिग्गहं च काऊण पधाइता, एगा य अचिरप्पसूइता पईंमि मारिते चेडेण समं गहिता, सा तं चेडं छड्डावित्ता, सो चेडो तेण गोसंखिणा गोरूवाण गतेण दिट्ठो, गहितो य, अप्पाणिज्जिताए महिलिताए दिण्णो, तत्थ य पगासितं, जहा मम महिलाए गूढो गब्भो आसी, तत्थ छगलयं मारेत्ता लोहियगंधं करेत्ता सूतियाणेवत्थेण ठिता, सव्वं जं इतिकायव्वं तं कीरति, सोऽवि ताव एवं संवड्ढति सावि से माता चंपाए विक्कीया, वेसियाए थेरीए गहिया, एस ममं धूतत्ति, ताए जो गणियाणं उवयारो तं सिक्खाविया, सा तत्थ णामनिग्गता गणिया जाता, सो य गोसंखियपुत्तो तरुणो जातो, घयसगडेहिं चंपं गतो, वयंसगा य से, सो तत्थ णागरं जणं पेच्छति जहिच्छियं अभिरमंतं, तस्सवि ॥२९७॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥२९८॥

वैश्यायन-वृत्तं

इच्छा जाता अहंपि ताव रमामि, सो तत्थ गतो वेसं, तत्थ सच्चेव से माता अभिरुतिता, मोल्लं देति, वियाले कदुहंडेऊण अप्पाणं वच्चति, तत्थ तस्स वच्चंतस्स अंतरा पाओ अमेज्झेण लित्तो, सो जाणति इमो मम पादो ण णज्जति कहंपि बुड्डो, तत्थंतरा एतस्स कुलदेवता, सा चिंतेइ-मा अकिच्चमायरतु, बोहेमित्ति तत्थ गोट्ठए गाविं सवच्छं विउव्वति, विगुरुव्विऊण अच्छति, ताहे सो तं पातं तस्स वच्छयस्स उवरिं फुसति, ताहे सो वच्छतो भणति—एस ममं अंमो मीढलेत्तयं पादं उवरिं फुसति, ताहे सा गावी माणुसियाए वायाए भणति—किं तुमं पुत्ता ! अद्धितिं करेसि ?, एसो य अज्ज मायाए समं वासं गच्छति, तं एस एरिसयं अकिच्चं ववसति, अन्नं किन्न काहिति ?, ताहे तं सोऊणं तस्स चिंता जाता, भणति-गतो पुच्छीहामि, ताहे पविट्ठो पुच्छति-का तुज्झ उप्पत्ती ?, ताहे भणति-किं तुज्झ उप्पत्तीए ?, सा महिलाभावं दाएति, ताहे सो भणति—अहंपि एत्तियं चेव मोल्लं देमि साह सब्भावं, तीए सवहसाविताए सव्वं सिट्ठं, ताहे सो निग्गतो, सग्गामं गतो, अम्मापितरो पुच्छति, ताणि ण साहेंति, ताहे सो ताव अणसितो ठितो जाव से कहितं, ताहे सो तं मातं वेसाओ मोएत्ता पच्छा विरागं गतो, एतावत्था विसयत्ति पाणामाए पव्वज्जाए पव्वइओ एसा उप्पत्ती ॥ सो य विहरंतो तंकालं कुम्मग्गामे आतावेति, तस्स छप्पदीओ जडाहिंतो आइच्चताविता पडंति, जीवहियाए पडियाओ सीसे छुभति, तं गोसालो दट्ठूण ओसरित्ता तत्थ गतो भणति-किं भवं मुणी मुणितो उयाहु जूयासेज्जातरो ?, कोऽर्थः ?—‘मन ज्ञाने’ ज्ञात्वा प्रव्रजितो नेति, अहवा किं इत्थी पुरिसे ?, एक्कसिं दो तिन्नि वारे, ताहे वेसियायणो रुट्ठो तेयं निसिरति, ताहे सामिणा तस्स अणुकंपट्ठाए वेसियायणस्स उसिणतेयपडिसाहरणट्ठाए एत्थंतरा सीतलिता लेस्सा णिसिरिया, सा जंबुद्दीवं बाहिरओ वेढति उसिणा तेयलेस्सा, भगवतो सीतलिता तेयल्लेसा अब्भंतरओ वेढति, इतरा तं परिचयंति सा तत्थेव

॥२९८॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥२९९॥

वैश्यायन-वृत्तं

सीतलाए विज्झविता, ताहे सो भगवतो लद्धिं पासित्ता भणति-से गतमेतं भगवं ! गतमेतं भगवं !, ण जाणामि जहा तुब्भं सीसो, खमह, ताहे गोसालो पुच्छति-सामी ! किं एस जूयासेज्जातरो पलवति ?, सामिणो कहितं-जहा पव्वत्तिए, ताहे भीतो पुच्छति-भगवं ! किह संखित्तविउलतेयलेस्सो भवति ?, भगवं भणति-जे णं गोसाला ! छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं आयावेति, पारणए सणहाए कुम्मासपिंडियाए एगेण य वियडासएणं जावेति जाव छम्मासा, से णं संखित्तविउलतेयलेस्से भवतित्ति । अन्नदा सामी कुंमग्गामाओ सिद्धत्थपुरं संपत्थितो, पुणरवि तिलथंभस्स अदूरसामंतेण जाव वतिवयति ताहे पुच्छइ-भगवं ! जहा न निप्फण्णो, भगवता कहितं-जहा निप्फण्णो, तं एवं वणप्फईण पउट्टपरिहारो, पउटपरिहारो नाम परावत्य परावत्य तस्सिमत्रेव सरीरके उववज्जंति तं, सो असद्दहंतो गंतूणं तिलसंगलियं हत्थे पप्फोडेत्ता ते तिले गणेमाणो भणति-एवं सव्वजीवावि पयोट्टपरिहारंति, णितितवादं धणितमवलंबित्ता तं करेति जं भगवता उवदिट्ठं, जहा संखित्तविपुलतेयलेस्सो भवति । ताहे सो सामिस्स मूलाओ ओप्फिडो सावत्थीए कुंभगारसालाए ठितो, तेयनिसग्गं आआवेति, छहिं मासेहिं संखित्तविपुलतेयलेस्सो जातो, कूपतडे दासीए विणासितो, पच्छा छद्दिसाचरा आगता, ताहे निमित्तउल्लोओ से कहितो, एवं सो अजिणो जिणपलावी विहरति । एसा से अवत्था ।

वेसालाए पडिमं डिंभमुणिओत्ति तत्थ गणराया । पूएति संखणामो चित्तो णावाए भगिणिसुतो ४-३७४९४

भगवंपि वेसालिं णगरिं संपत्तो, तत्थ संखो णाम गणराया, सिद्धत्थरन्नो मित्तो, सो तं पूजेति, पच्छा वाणियग्गामं पधावितो, तत्थंतरा गंडइता णदी, तं सामी णावाए उत्तिण्णो, ते णाविया सामिं भणंति-देहि मोल्लं, एवं वाहंति, तत्थ संखरन्नो भाइणेज्जो चित्तो णाम दूइकाए गएल्लओ णावाकडएण एति, ताहे तेण मोइतो महितो य । ॥२९९॥

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

श्री आवश्यक चूर्णी उपोद्घात निर्युक्तौ ॥३००॥

भद्राद्याः प्रातिमा

वाणियगामायावण आणंदो ओहि परिसहसहत्ति ।सावत्थीए वासं चित्ततवो साणुलट्ठि बर्हि ॥ ४-३८।४९५ ॥

ताहे वाणियग्गामं गतो, तस्स बाहिं पडिमं ठितो, तत्थ आणंदो नाम समणोवासगो छट्ठंछट्ठेण आतावेति, तस्स य ओहि-नाणं उप्पन्नं, जाव तित्थगरं पेच्छति, तं वंदति णमंसति, भणति य-अहो सामी परीसहा अधियासिज्जंति, वागरेति य जहा एच्चिरेण कालेणं तुब्भं केवलनाणं उप्पज्जिहिति पूजेति य । पच्छा सामी सावत्थिं गतो, तत्थ दसमं वासारत्तं विचित्तं तवोकम्मं ठाणादीहिं ।

पडिमा भद्दमहाभद्द सव्वतोभद्द पढमिया चउरो। अट्ठ य वीसाऽऽणंदे बहुलिय तह उज्झिति य दिव्वा ॥४-३९।४९६॥

ततो साणुलट्ठितं णाम गामं गतो, तत्थ भद्दं पडिमं ठाति, केरिसिया भद्दा ?, पुव्वाहुत्तो दिवसं अच्छति, पच्छा रत्तिं दाहिणहुत्तो अवरेण दिवसं उत्तरेण रत्तिं, एवं छट्ठेण भत्तेण णिट्ठिता। तहवि ण चेव पारेति, अपारितो चेव महाभद्दं ठाति, सा पुण पुव्वाए दिसाए अहोरत्तं, एवं चउसुवि चत्तारि अहोरत्ता, एवं दसमेण णिट्ठिता। ताहे अपारितो चेव सव्वतोभद्दं पडिमं ठाति, सा पुण सव्वतोभद्दा इंदाए अहोरत्तं, पच्छा अग्गेयाए, एवं दससुवि दिसासु सव्वासु, विमलाए जाइं उड्ढलोतियाणि दव्वाणि ताणि झाति, तमाए हिट्ठिल्लाइं, चउरो दो दिवसा दो रातिओ, अट्ठ चत्तारि दिवसा चत्तारि रातीतो, वीसं दस दिवसा दस राईओ, ॥३००॥
एवं एसा दसहिं दिवसेहिं बावीसइमेण णिट्ठाति। पच्छा तासु सम्मत्तासु आणंदस्स गाहावतिस्स घरे बहुलियाए दासीए महा-णसिणीए भायणाणि खणीकरेंतीए दोसीणं छड्डेउकामाए सामी पविट्ठो, ताए भन्नति-किं भगवं ! एतेण अट्ठो ?, सामिणा पाणी

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥३०१॥

पसारितो, ताए परमाए सद्धाए दिन्नं, पंच दिव्वाणि, मत्थओ धोओ, अदासीकता ।

दढभूमी बहुमेच्छा पेढालग्गाममागतो भगवं । पोलासचेइयंमी ठितेगराइं महापडिमं ॥ ४-४०।४९७ ॥

ततो सामी दढभूमीं गतो, तीसे बाहिं पेढालं नाम उज्जाणं, तत्थ पोलासं चेतियं, तत्थ अट्ठमेणं भत्तेण अप्पाणएण ईसिंपब्भारगतेण, ईसिपब्भारगतो नाम ईसिं ओणओ काओ, एगपोग्गलनिरुद्धदिट्ठी अणिमिसणयणो तत्थवि जे अचित्तपोग्गला तेसु दिट्ठिं निवेसेति, सचित्तेहिं दिट्ठी अप्पाइज्जति, जहा दुव्वाए, जहासंभवं सेसाणिवि भासियव्वाणि । अहापणिहितेहिं गत्तेहिं सव्विदिएहिं गुत्तेहिं दोवि पादे साहट्टु वग्घारियपाणी एगराइयं महापडिमं ठितो ।

संगम-कोपसर्गाः

सक्को य देवराया सभागतो भणति हरिसितो वयणं । तिन्निवि लोगऽसमत्था जिणवीरमणं चलेउं जे ॥४-४१।४९८॥
सोहम्मकप्पवासी देवो सक्कस्स सो अमरिसेण । सामाणियसंगमओ बेति सुरिंदं पडिणिविट्ठो ॥४-४२।४९९॥
तेलोक्कं असमत्थंति वेहए तस्स चालणं काउं । अज्जेव पासह इमं मम वसगं भट्ठजोगतवं ॥ ४-४३।५०० ॥
अह आगतो तुरंतो देवो सक्कस्स सो अमरिसेणं ।कासी य य (ह) उवसग्गं मिच्छादिट्ठी पडिनिविट्ठो ॥४-४४।५०१॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं सक्के देविंदे देवराया जहा अवहारे जाव बहूहिं देवेहिं देवीहि य सद्धिं संपरिवुडे विहरति जाव सामिं च तहागतं ओहिणा आभोएति, आभोएत्ता हट्ठतुट्ठचित्ते आणंदिए जाव सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी-णमोत्थुणं अरहंताणं जाव सिद्धिगतिणामधेयं ठाणं संपत्ताणं, णमोऽत्थुणं समणस्स भगवतो महतिमहावीरवद्धमाणसामिस्स णातकुलव-

॥३०१॥

संगम-कृत् उपसर्गस्य वर्णनं

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

श्री आवश्यक चूर्णी उपोद्घात निर्युक्तौ

॥३०२॥

संयमिनः श्रीवीर-वर्णनं

रवर्डेसयस्स तित्थगरस्स सहसंबुद्धस्स, पुरिसोत्तमस्स पुरिससीहस्स पुरिसवरपुंडरियस्स पुरिसवरगंधहत्थिस्स, अभयदयस्स जाव ठाणं संपावितुकामस्स, वंदामि णं भगवंतं तिलोगवीरं तत्थ गतं इहगते, पासतु मे भगवं तत्थ गए इहगतंतिकट्टु वंदति नमंसति नमंसित्ता जाव सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहे संनिसन्ने । तए णं से सक्के देविंदे सामिगुणातिसयअक्खिप्पमाणहियए एवं उप्पन्नंदिज्जमाणहियए० हियए संभंते जाव हरिसवसविसप्पमाणहियए धाराहयणीमसुरभिकुसुमचंचुमालइयऊसवियरोमकूवे वियसियवरकमलाणणवयणे बहवे सामाणियतायत्तिंसगादयो देवा य देवीओ य आमंतेत्ता एवं वयासी–हं भो देवा ! समणे भगवं महावीरे तिलोगमहावीरे निच्चं वोसट्ठकाए चियत्तदेहे जे केति उवसग्गा समुप्पज्जंति, तंजहा- दिव्वा वा माणुस्सा वा तिरिक्ख-जोणिया वा पडिलोमा वा अणुलोमा वा, तत्थ पडिलोमा वासेण वा जाव काए आउडेज्जा, अणुलोमा वंदेज्ज जाव पज्जुवा-सेज्ज वा, ते सव्वे सम्मं सहति जाव अहियासेति । तए णं से भगवं समणे इरियासमिते भासासमिते जाव पारिट्ठावणियासमिते मणसमिए वतिसमिते कायसमिते मणगुत्ते वतिगुत्ते कायगुत्ते गुत्तिंदिए गुत्तबंभयारी अकोहे अमाणे अमाए अलोभे संते पसंते उवसंते पडिणिव्वुडे अणासवे अममे अकिंचणे छिन्नसोते निरुवलेवे कंसपाती इव मुक्कतोये संखे इव निरंगणे जच्चकणगंव जायरूवे आदंसपलिभा इव पागडभावे जीवेविव अप्पडिहतगती गगणमिव निरालंबणे वायुरिव अप्पडिबद्धे सारयसलिलंव सुद्धहियए पुक्खरपत्तं व निरुवलेवे कुम्मे इव गुत्तिंदिए खग्गिविसाणं व एगजाए विहग इव विप्पमुक्के भारंडपक्खी विव अप्पमत्ते मंदरो विव अप्पकंपे सागरो विव गंभीरे चंदोविव सोमलेस्से सूरो विव दित्ततेये कुंजरोविव सोंडीरे सीहोविव दुद्धरिसे वसभोविव जाय-त्थामे वसुंधराविव सव्वफासविसहे सुहुतहुतासणोविव तेयसा जलंते, णत्थि णं तस्स भगवतो कत्थति पडिबंधे भवति, तंजहा-

॥३०२॥

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥३०३॥

दव्वतो जाव भावतो, दव्वतो इह खलु माता मे पिता मे जाव सच्चित्ताचित्तमीसएसु वा दव्वेसु, एवं तस्स ण भवति, खेत्तओ गामे वा णगरे वा रण्णे वा खेत्ते वा खले वा घरे वा जाव अंगणे वा, एवं तस्स ण भवति, कालतो- समए वा आवलियाए वा आणापाणूए वा थोवे वा खणे वा लवे वा मुहुत्ते वा दिवसे वा अहोरत्ते वा पक्खे वा मासे वा उडुए वा अयणे वा संवच्छरे वा अन्नतरे वा दीहकालसंजोगे, एवं तस्स ण भवति। भावतो-कोहे वा [ण्क] पेज्जे वा दोसे वा कलहे वा अब्भक्खाणे वा पेसुण्णे वा परपरिवादे वा अरातिरतीएवा मायामोसे वा मिच्छादंसणसल्ले वा, एवं तस्स ण भवति।

से णं भगवं वासावासवज्जं अट्ठ गेम्हहेमंतियाइं मासाइं गामे एगरादीए णगरे पंचराइए ववगयहस्ससोगअरतिरतिभयपरित्तासे णिरहंकारे लहुभूए अगंधे वासीचंदणसमाणकप्पे समतिणमणिलेट्ठुकंचणे समसुहदुक्खे इहलोयपरलोयअप्पडिवद्धे जीवियमरणे निरावकंखी संसारपारगामी कंमसंगणिग्घातणट्ठाए अब्भुट्ठिते, एवं च णं विहरति।

तं अहो भगवं तिलोगवीरे तिलोगसारे तिलोगब्भहितपरक्कमे तेलोक्कं अभिभूत ट्ठिते, ण सक्का केणइ देवेण दाणवेण वा जाव तेलोकेण वा झाणाओ मणागमवि चालेउंतिकट्टु वंदति णमंसति।

इतो य संगमको सोधम्मकप्पवासी देवो सक्कसामाणिओ अभवसिद्धीओ, सो भणति--अहो देवराया रागेण उल्लावेति, को नाम माणुसमेत्तो देवेण न चालिज्जति ?, अज्जेव णं अहं चालेमित्ति, ताहे सक्को न वारति, मा जाणिहिति परनिस्साए भगवं तवोकम्मं करेतित्ति। एवं सो आगतो।

संगमकृत उपसर्गाः श्रीवीर-वर्णनं

॥३०३॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥३०४॥

संगमक कृता उपसर्गाः

धूली १ पिवीलियाओ २ उदंसा ३ चेव तहय उण्होला ४ ।
विच्छुय ५ नउला ६ सप्पा ७ य मूसगा ८ चेव अट्ठमगा ॥४-४५॥५०२ ॥
हत्थी ९ हत्थिणियाओ १० पिसायए ११ घोररूववग्घे य १२ ।
थेरो १३ थेरी १४ सूतो १५ आगच्छइ पक्कणो य तथा १६ ॥४-४६॥५०३ ॥
खरवात १७ कलंकलिया १८ कालचक्कं तहेव य १९ ।
पाभाइयउवसग्गे २० वीसइमे तहय अणुलोमे ॥ ४-४७ ॥ ५०४ ॥

ताहे सामिस्स उवरिं वज्जधूलीवरिसं च वरिसेति जाव अच्छीणि कण्णा य सव्वसोत्ताणि पूरियाणि, निरुस्सासो जातो, तेण सामी तिलतुसतिभागमेत्तंपि झाणाओ ण चलितो । ताहे संतो तं साहरित्ता ताहे कीडियाओ विउव्वति, वज्जतुंडाओ समंततो विलग्गातो खायंति, अन्नाओ सोत्तेहिं अंतोसरीरगं अणुपविसित्ता अण्णेण सोत्तेण अतिंति अन्नेण णिंति, चालणी जारिसो कओ, तहवि भगवं न चलिओ । ताहे उदंसे विउव्वति वज्जतुंडे, जे लोहितं एगेण पहारेण णीणिंति । जाहे तहवि ण सक्का ताहे उण्हेलाओ विउव्वति । उण्होला-तेल्लपातियाओ । तातो तिक्खेहिं तुंडेहिं अतीव दसंति, जहा जहा उवसग्गं करेति तहा तहा सामी अतीव झाणेण अप्पाणं भावेति, जहा--'तुमए चेव कतमिणं, ण सुद्धचारिस्स दिस्सए दंडो' । जाहे ण सक्का ताहे विच्चुए विउव्वति, ते खायंति । तहवि ण सक्का, ताहे णउले विउव्वनि, ते तिक्खाहिं दाढाहिं दसति, खंडखंडाइं च अवणेंति, पच्छा सप्पे विसरोससंपुण्णे

॥३०४॥

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥३०८॥

संगमक कृता उपसर्गाः

उग्गविसे डाहजरकारए जहा कामदेवस्स, तेहिवि ण सक्का। पच्छा मूसए विउव्वइ, ते तिक्खाहिं दाढाहिं दसंति, खंडाणि य अवणेत्ता तत्थेव वोसिरंति मुत्तपुरिसं, तो अतुला वेयणा। जाहे ण सक्का ताहे हत्थिरूवं विउव्वति, जहा कामदेवे, तेण हत्थिरूवेण सोंडाए गहाय सत्तट्ठतले आगासे उव्विहित्ता पच्छा दंतमुसलेहिं पडिच्छति, पुणोऽवि भूमीए ओविंधति, चलणतलेहिं मंदरगरुएहिं मलेति। जाहे ण सक्का ताहे हत्थिणियारूवं विउव्वति, ताहे हत्थिणिया सुंडएहिं दंतेहिं विंधति फालेति य, पच्छा कातितेण सिंचति, तंमि य मुत्तचिक्खल्ले खारे पाडेत्ता चलणेहिं मलेति। जाहे ण सक्का ताहे पिसायरूवं विउव्वति, जहा कामदेवस्स, तेण उवसग्गं करेति। जाहे ण सक्का ताहे वग्घरूवं विउव्वति, सो दाढाहि य नक्खेहि य फालेति, खारकाइएण य सिंचति। जाहे ण सक्का ताहे सिद्धत्थरायरूवं विउव्वति, सो कट्ठाणि कलुणाणि विलवति--एहि पुत्तगा!,.विभासा, मा उज्झाहि। ताहे तिसलाविभासा। जाहे ण सक्का ताहे सूतं, किह ?, सो ततो खंधावारे विउव्वति, सो परिपेरंतेसु आवासितो, तत्थ सूतो पत्थरे अलभंतो दोण्हवि पादाण मज्झे वज्जग्गि जालेत्ता पायाण उवरि उक्खलिथं काउं पयइओ। जाहे एएणऽवि ण सक्का तओ पक्कणं विउव्वति, सो ताणि पंजरगाणि बाहासु गलए य कन्नेसु य ओलएति, ते सउणा गातं तुंडेहि खायंति विंधंति य, सन्नं काइयं च वोसिरंति। पच्छा खरवायं विउव्वति, जेण सक्को मंदरोत्ति चालेउं, न पुण सामी चलइ, तेणुव्विहित्ता २ पाडेति। पच्छा कलंकलितावायं विउव्वति, तेण जहा चक्काइद्धओ तहा भमाडिज्जइ, णत्तिआवत्तं वा। एवंपि ण सक्का ताहे कालचक्कं विउव्वति, तं विउव्विऊण उड्ढं गगणगतलं गतो एत्ताहेणं मारमित्ति मुयति वज्जासणिसंनिभं, जं मंदरंपि चुरेज्जा, तेण पहारेण भगवं ताव निब्बुड्डो जाव अग्गणहा हत्थाणं। जाहे तेणावि ण सक्को ताहे चिंतेति--न सक्को एस मारेउंति अणुलोमे करेमि। ताहे सामाणियदेविड्ढिं देवो दाएति, सो

॥३०५॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥३०६॥

देवीकृता उपसर्गाः

विमाणगतो भणति य-वरेह महरिसि ! निप्फत्ती सग्गमोक्खाणं। ताहे पभायं विउव्वति, लोगो सव्वो चंकमितुं पयत्तो, भणति- देवज्जगा ! अज्जवि अच्छसि?, भगवंपि कालमाणेण जाणति जहा ण ताव पभायंति जाव सभावपहायंति, एस वीसतिमो । अन्ने भणंति- जहा किर दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवजुत्तिं दिव्वं देवपभावं उवदंसेति, मणोहरे य सद्दरूवगंधरसफरिसे सुसंभिते छप्पिय उड्ड मणुन्ने मणाणुकूलं च दप्पणं विहणं सुहारिं विचित्तवरपुप्फवद्दलं सुगंधि रम्मं, तह मेहवद्दलं विचित्तं, दंसेति य इत्थिया सुरूवा, पेसेइ य अच्छरा सुरम्मा सोम्मा सव्वंगसुंदरीओ पहाणमहिलागुणेहिं जुत्ता अक्कंतविसप्पिमयुयसूमालकुंमसंठितविसिट्ठचलणा उज्जुमयुयपीवरसुसाहतंगुलीओ अब्भुन्नतरयिततलिणतंबसुनिभरुयिरणिद्धणक्खा रोमरहितवट्टलट्ठसंठियअजहन्नपसत्थलक्खणअकोप्पजंघजुयला सुणिमियसुणिगूढजाणुमंडलपसत्थसुबद्धसंधी कदलीखंभातिरेगसंठिताणिव्वणसुकुमालमउयमंसलअविरलसमसहितसुजातवट्टपीवरनिरंतरोरू अट्ठावयवीतिपट्ठसंठितपसत्थविच्छिन्नपिहुलसोणी वयणायामप्पमाणदुगुणितविसालमंसलसुबद्धजहणवरधारिणीओ वज्जविराइयपसत्थलक्खणनिरोदरी तिवलिवलिततणुणमितमज्झिताओ उज्जुयसमसहितजच्चतणुकसिणनिद्धआएज्जलडहसुजातमउयसुविभत्तकंतसोभंतभरुइररमणिज्जरोमराती गंगावत्तपयाहिणावत्ततरंगभंगरविकिरणतरुणबोहितआयोसायंतपउमगंभीरवियडणाभा अणुब्भडपसत्थसुजातपीणकुच्छी संनतपासा संगतपासा सुजातपासा मितमाइयपीणरइयपासा अकरंडुयकणगभयगनिम्मलसुजातनिरुवहतगातलट्ठीओ कंचणकलसप्पमाणसमसहितलट्ठचुब्बुयआमेलगजमगजुयलवट्टियअक्खुत्तयपीणरयितसंठितपीवरपओहराओ भुजगअणुपुव्वतणुगगोपुच्छवट्टसमसहितणमितआदेज्जललितबाहा तंबणहा मंसलग्गहत्था पीवरकोमलवरंगुली निद्धपाणिलेहा रविससिसंखवरचक्कसोत्थियविभत्तसुविरातियपाणिलेहा पीणुन्नयकक्खवक्कत्थीपएसा पडिपुन्नगलकवोला चतुरंगुलसुपमाण- ॥३०६॥

अथ देवीकृत् उपसर्गस्य वर्णनं क्रियते

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥३०७॥

देवीकृता उपसर्गाः

कंबुवरसरिसगीवा मंसलसंठितपसत्थहणुगा दाडिमपुप्फपगासपीवरपलंबकुंचियवराहरा सुंदरुत्तरोट्ठा दहिदगरयकुंदचंदवासंतिमओलअच्छिद्दविमलदसणा रत्तुप्पलपत्तमउयसुमालतालुजीहा कणवीरमुकुलअकुडिलअब्भुग्गतउज्जुतुंगणासा सारदणवकमलकुमुदकुवलयविमलदलनियरसरिसलक्खणपसत्थअजिम्मकंतणयणा पत्तधवलायततंबलोयणा आणामियचावरुइलकिण्हसराइसंगयसुजाततणुकसिणणिद्धभुमया अल्लीणपमाणजुत्तसवणा सुसवणा पीणमट्ठरमणिज्जगंडलेहा चउरंसपसत्थसमनिडाला कोमुतिरयणियरविमलपडिपुन्नसोम्मवयणा छत्तुन्नयउत्तिमंगा अकविलपसिणिद्धसुगंधदीहसिरया छत्तधयजूवथूभदामिणिकमंडलूकलसघंटवाविसोत्थियपडागजवमच्छकुंभरहवरमगरज्झयसुकथालअंकुसाअट्ठावयसुप्पतिट्ठगमयूरसिरिआभिसेयतोरणमेदिणिउदधिवरपवरभवणधरागिरिवरआदंससलीलगजउसभसीहचामरअमरवतिपहरणउत्तमपसत्थबत्तीसलक्खणधरीओ हंससारित्थसुगतीओ कोइलमधुरगिरसूसराओ कंता सव्वस्स अणुमयाओ धवगतवलिपलियवंगदुव्वन्नवाहिदोहग्गसोगमुक्का उच्चत्तेण य णराण थोवूणमूसियाओ । इच्छितनेवत्थरइतरमणिज्जगहितवेसाओ कंतहारद्धहारपदत्तरयणकुंडलवासुत्तगहेमजालमणिजालकणयजालयसुत्तयविउव्वितियकडयखड्डगएगावलिकंठसुत्तमगरयउरत्थगेवेज्जसोणिसुत्तयचूलामणिकणयतिलयफुल्लयसिद्धत्थियकन्नवालिससिसूरउसभचक्कयतलभंगयतुडियहत्थमालयहेरिसयकेयूरवलयपालंबअंगुलेज्जयवलक्खदीणारमालियाचंदसूरमालियाकंचिमेहलकलावपतरयपरिहेरयपादजालघंटियखिंखिणिरयणोरुजालछुद्दियवरनेउरचलणमालिया कणयणियलजालयमगरमुहविरायमाणनेउरपयलियसद्दालभूसणधरीओ दसद्धवन्नरागरइतरत्तमणहारमहग्घणासाणीसासवातवोज्झे चक्खुहरे वन्नफुरिसजुत्ते आगासफालियसमप्पभे अंसुए नियत्थाओ आदरेण तुसारगोक्खीरहारदगरयपंडरदुगुल्लसुओमालसुकतरमणिज्जउत्तरिज्जाणि पाउयाओ वराभरणभूसिताओ सव्वोउयसुरभिकुसुमसुरइत-

॥३०७॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥३०८॥

देवीकृता उपसर्गाः

विचित्तमल्लधारिणीओ सुगंधचुण्णंगरागवरवासपुप्फुत्तरपविराइआओ वरचंदणचच्चिताओ उत्तमवरधूवधूविताओ अधिअसस्सिरीआओ दव्वकुसुममल्लदामगब्भंजलिपुडाओ चंदाणणाओ चंदविलासिणीओ चंडद्धसमणिडालाओ उक्का इव उज्जोवेमाणीओ विज्जुघणमिरीथिसूरदिप्पंततेयअधिकतरसंनिकासाओ सिंगारागारचारुवेसाओ संगतगतहसितभणितचिट्ठितविलाससललियसंलावनिपुणजुत्तोवयारकुसलाओ सुंदरथणजहणवयणकरचरणणयणलायन्नवन्नरूवजोव्वणविलासकलियाओ सुरवरवधूओ सिरीसणवणीतमउलसुकुमालतुल्लफासाओ ववगतकलिकलुसवातनिद्धंतरयमउलाओ सोमाओ कंताओ पियदंसणाओ सुसीलाओ सिंगाररसुतुद्दयाओवि पेच्छिऊणंपि बहूणं मयणुम्मायजणणीओ, एगंतरतिपसन्ननिच्चं पमत्तविसयसुहमुच्छिताओ समतिकंता य बालभावं मज्झिमजरढवयविरहिताओ अतिवरसोमचारुरूवनिरुवहतसरसजोव्वणकक्कसतरुणवयभावमुवगताओ सभावसव्वंगसुंदरंगीओ।

तए णं ताओ सामिं अप्पडिरूवरूवलायन्नजोव्वणसोहग्गअपरिमितगुणसयसहस्सकलितं बहूहिं मउएहिं अणुलोमेहिं सिंगारएहिं कोलुणिएहिं उवसग्गेहिं उवसग्गेंति। तप्पढमताए बहुसमरमणिज्जं भूमिभागं विउव्वति, तत्थ णं अणेगखंभसयसंनिवद्धं जाव सिरीए अतीव उवसोभेमाणं पेच्छाहरमंडवं, तत्थ णं दिव्वणट्टगीतवादितविहिं उवदंसेंति, जाव जुत्तोवचारकलिताओ होऊण सामिस्स पुरतो समामेव समोसरणं करेंति, समामेव पंतीओ बंधंति, समामेव ओणमंति, समामेव उन्नमंति, एवं सहिता २ संगता २ थिमिता २ समामेव पसरंति २ समामेव आउज्जविहाणाइं गेण्हंति, गेण्हेत्ता समामेव पवाइंसु पगाइंसु पणच्चिसु पमुदितपक्कीलितगीतगंधव्वहरिसितमणा सिरेणं एगतारं उरेणं मंदं कंठेण तारं तिविहं तिसमयरेयकरं तिगुंजावंकं कुहरोवगूढं सुरतीअणअतिवरचारुरूवं गज्जं पज्जं कत्थं गेयं पदबद्धं पायबद्धं उक्खित्तपयत्तमंदरोइंदयावसाणं सत्तसरसमण्णागयं अट्ठरससंपउत्तं एक्कार- ॥३०८॥

प्रत सूत्रांक [-] दीप अनुक्रम [-]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता...........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥३०९॥

सालंकारं छद्दोसविप्पमुक्कं अट्ठगुणोववेतं रत्तं तित्थाणकरणसुद्धं सक्कतिदीहरकुंजंतवंसतंतीतलताललवहगहसुसंपउत्तं मधुरं समं सललितं मणोहरं मउयरिभितपदसंचारं दिव्वं णट्टं सज्जं गेयं पगीता यावि होत्था।

किं तं उद्धमताणं संखाणं सिंगाणं संखियाणं खरमुहीणं पेयाणं पिरिपिरियाणं, आहम्मंताणं पणवाणं पडहाणं, अप्फालिज्जंताणं भंभाणं होरंभाणं, तालिज्जंताणं भेरीणं झल्लरीणं दुंदुभीणं, आलिप्पंताणं मुरवाणं मुतिंगाणं, उत्तालिज्जंताणं णंदीमुत्तिंगाणं, आलिंगगाणं पुत्तुयाणं गोमुहीणं मद्दलाणं, मुच्छिज्जंतीणं वीणाणं विवच्चीणं वलुक्कीणं, फंदिज्जंतीणं भामरीणं छब्भामरीणं, परिवायणीणं सारिज्जंतीणं पव्वीसगाणं सुघोसाणं णंदिघोसाणं, कुट्टिज्जंताणं महतीणं कच्छभीणं चित्तवीणाणं, आमोडिज्जंताणं आमोडगाणं झुंकाणं णउलाणं, छिप्पंताणं तुबकाणं तुंबवीणाणं, अच्छिज्जंताणं मुकुंदाणं हुडुक्कीणं विंखाणं, वाइज्जंताणं करडाणं डिंडिमकाणं किणिकाणं कडंबाणं, उत्तालिज्जंताणं दद्दरिकाणं कुदुव्वराणं कलासिकाणं, आतालिज्जंताणं तालाणं तोलाणं कंसतालाणं, घट्टिज्जंतीणं रिकिसिकाणं लत्तिकाणं मकरिकाणं सुंसुमारिताणं, फूमिज्जंताणं वंसाणं वालाणं वेलूणं परिलीणं पच्चगाणं, एवमादियाणं एगूणपन्नाणं आउज्जविहाणाणं पवाइज्जंताणं। तएणं से दिव्वे गीते दिव्वे वादिते दिव्वे णट्टे एवं अब्भुते सिंगारे ओराले मणुन्ने मणहरे ओम्मिज्जालामालाभूते कहक्कहभूते दिव्वे देवरमणे पवत्ते यावि होत्था।

तए णं ताओ देवीओ सामिस्स तप्पढमयाए सोत्थियसिरिवच्छणंदियावत्तवद्धमाणगभद्दासणकलसमच्छदप्पणमंगलपविभत्तिणाम दिव्वं णट्टविधिं उवदंसेति, एवं दिव्वं देविड्ढिं जाव बत्तीसतिविहं णट्टविहं उवदंसेति, सामीवि समदरिसी। जाहे ण सक्का

देवीकृता उपसर्गाः ॥३०९॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

ताहे अवितित्ता कामाणं मेथुणसंपगिद्धा य मोहभरिया पइरिक्कं काऊण पत्तेयं २ मधुरेहि य सिंगारएहि य कलुणेहि य उवसग्गेहिं उवसग्गेउं पवत्ता यावि होत्था।

उवरिं सामिस्स सललितं णाणाविहचुण्णवासमयं दिव्वं घाणमणणिव्वुतिकरिं सव्वोउयकुसुमवुट्ठिं पमुंचमाणीओ णाणामणिकणगरयणघंटियणिधुरमेहलारवेण य दिसाओ पूरयंतीओ वयणमिणं बेंति सासकलुसा-सामि होल वसुल गोल णाह दातित पिय कंत रमण निग्घिण नित्थक्क च्छिन्न निक्किव अकतण्णुय सिढिलभाव लुक्ख देव सव्वजीवरक्खग ण जुज्जसि अम्हे अणाहा अवयक्खितुं, तुज्झ चलणओवायकारिया गुणसंकर! अम्हे तुम्हे विहूणा ण समत्था जीवितुं खणंपि, किं वा तुज्झ इमेण गुणसमुदएण?, एवंविहस्स इमं च विगतघणविमलससिमंडलोवमं सारयणवकमलकुमुदविमकुलदलनिकरसरिसणयणवयणपिवासागता ण सद्धामो पेच्छिउं जे, अवलोए ता इतो अम्हे णाह! जा ते पेच्छामो वयणकमलं णयणुस्सवसच्छहं जगस्स, एवं सप्पणयमधुराइं पुणो कलुणगाणि वयणाणि जंपमाणीओ सरभसउवगूहिताइं बिब्बोयविलसिताणि य विहसितसकडक्खदिट्ठणिस्ससितभणितउवललितललितधियगमणपणयखिज्जियपसादिताणि य पकरेमाणीओत्ति जाहे न सक्का ताहे जामेव दिसं पाउब्भूया जाव पडिगता। एवं अणेगाइं अणुलोमाइं दंसेति। पच्छा भणति-तुट्ठोमि तुज्झ महरिसि! वरेहि, किं देमि?, सग्गं वा ससरीरं णेमि मोक्खं वा पावेमि?, तिन्निवि लोए तुज्झ पाएसु पाडेमि? तिण्ह वा लोगाण तुमं सामिं करेमि?, एवं

उवहतमतिविन्नाणो ताहे वीरं बहुं पसाहेउं। ओहीए निज्झायति झायति छज्जीवहितमेव ॥४--४९।५०६॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता..........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

श्री आवश्यक-चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥३११॥

जाहे ण तरति ताहे सुट्ठुतरं पडिनिवेसं गतो कल्ले काहंति । पुणोवि अणुकड्ढति ।

वालुयपंथे तेणा माउल पारणग तत्थ काणच्छी । तत्तो सुभोम अंजलि सुच्छेत्ताए य विडरूवं ॥४-५०।५०७॥

संगमक-कृता उपसर्गाः

ताहे पभाते सामी वालुयानामग्गामो तं पहावितो, तत्थ अंतरा पंच चोरसता विगुव्वति, वालुगं च जत्थ खुप्पति, पच्छा तेहिं माउलोत्ति वाहितो पव्वयगुरुतरगेहिं, सागतं च वज्जसरीरा देंति, जेहिं पव्वतावि फुट्टिज्जा । ताहे वालुगं गतो, सामी भिक्खं हिंडति, तत्थाऽऽवरेतुं भगवतो रूवं काणच्छि अविरतियाण देंति, जाओ तत्थ तरुणीओ तत्थ हम्मति, ताहे निग्गतो भगवं सुभोमं वच्चति, तत्थवि अतिगतो भिक्खायरियाए, तत्थवि आवरेत्ता महिलाणं अंजलिकम्मं करेति, पच्छा तेहिवि पिट्टिज्जति, ताहे भगवं णीति, पच्छा सुच्छेत्ता णामं गामो, तहिं वच्चति, जाहे अतिगतो सामी भिक्खाए ताहे इमो आवरेत्ता विडरूवं विउव्वति, तत्थ हसति य अट्टट्टहासे य मुंचति गायति य काणच्छिया य जहा विडो तहा करेति असिट्ठाणि य भणति, तत्थवि हम्मति, ताहे ततोवि णीति ।

मलए पिसायरूवं सिवरूवं हत्थिसीसए चेव । ओहसणं पडिमाए समाण सक्को जवणपुच्छा ॥४-५१।५०८॥

ततो मलयं गामं गतो, तत्थ पिसायरूवं विउव्वति, उम्मत्तयं भगवतो रूवं करेत्ता तत्थ अविरतियाओ अवतासेति गेण्हति य, तत्थ चेडरूवेहिं छारक्कयारस्स भरिज्जति, लेट्ठुएहि य हम्मति, ताणि य बीहावेंति, ताणि छोडियपाडियाणि णासंति, तत्थवि कहिते हम्मति । ततो विनिग्गतो हत्थिसीसं णाम गामो तहिं गतो, तत्थवि भगवं भिक्खायरियाए अइगतो, तत्थवि भगवतो सिव- ॥३११॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥३१२॥

संगमक कृता उपसर्गाः

रूवं विउव्वति, सागारियं च से कसाइययं करेति, जाहे अविरइयं पेच्छति ताहे उद्वेति, पच्छा हम्मति, ताहे भगवं चिंतति-एस निरायं उड्डाहं करेति अणेसणं च, तम्हा गामं चेव ण पविसामि, बाहिं अच्छामि, अन्ने भणंति-जहा पंचालदेवो तहा विगुव्वति, तदा किर पंचालो उप्पन्नो, ततो गामस्स बाहिं निग्गतो, जतो महिलाजूहं ततो सागारिएणं कसाइतेणं अच्छति, ताहे किर ढोंढसिवा पवत्ता, जम्हा सक्केण पूतितो भगवं तहा ठिओ, ताहे सामी चिंतति-एस निरायं उड्डाहं करेति, तम्हा गामं चेव न अतिमि, एगंते अच्छामि, ताहे संगमओ ओहसति-ण सक्कासि तुमं ठाणाओ चालेउंति, पेच्छामि ता गामं अतिहि, ताहे सक्को आगतो, पुच्छति-भगवं ! जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? अव्वाबाहं फासुविहारं ?, वंदित्ता पडिगतो ।

ओसलि खुड्डगरूवं संधिच्छेदो इमोत्ति वज्झो य। मोएइ इंदजालिय तत्थ महाभूतिलो नामं ॥ ४-५२|५०९ ॥

ताहे सामी तोसलिं गतो, बाहिं पडिमं ठितो, ताहे सो देवो चिंतेति-एस ण पविसति, तो एत्थवि से ठियस्स करेमि, ताहे खुड्डगरूवं विउव्वित्ता संधिं छिंदति, उवगरणेहिं गहिएहिं, वत्तीए तत्थ गहितो, सो भणति-मा मं हणह, अहं किं जाणामि?, आयरितेण अहं पेसितो, कहिं सो?, एस बाहिं असुगउज्जाणे, तत्थ हम्मति वज्झति य. मारिज्जतुत्ति वज्झो णीणिओ, तत्थ भूतिलो नाम इंदजालितो, तेण सामी कुंडग्गामे दिट्ठतो, ताहे सो मोएति, साहति य जहा-एस रायसिद्धत्थपुत्तो, मुक्को खामितो य, खुड्डओ मग्गिओ, ण दिट्ठो, णायं जहा देवो से उवसग्गं करेति ।

मोसलि संधिसमागममागहओ रट्ठितो पितुवयंसो। तोसालि य सत्त रज्जू वावत्ती. तोसली मोक्खो॥४-५३|५१०॥

॥३१२॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥३१३॥

संगमक-कृता उपसर्गाः

तातो भगवं मोसलिं गतो, बाहिं पडिमं ठितो, इमो खुड्डगरूवं विउव्वित्ता खत्तं खणति, तत्थवि तहेव घेप्पति, बंधिऊणं मारिज्जइत्ति, तत्थ सुमागधो णाम रट्ठिओ सामिस्स पितुवयंसो, सो मोएति, कहितं च, खुड्डओ गहितो, तहेव भट्ठो। ततो भगवं तोसलिं गतो, तत्थवि बाहिं पडिमं ठितो, तत्थवि देवो खुड्डरूवं विउव्वित्ता संधिमग्गं सोहेति, पडिलेहेति य, सामिस्स पासे सव्वाणि खत्तोवकरणाणि विगुव्वति, ताहे सो खुड्डओ गहितो, तुमं कीस एत्थ सोहेसि?, सो साहति-मम धम्मायरियो रत्तिं मा कंटए भज्जाहिहिति, सो रत्तिं खणओ णीहिति, सो कहिं?, कहितो, गता, दिट्ठो सामी, ताणि य परिपेरंतेण पासति, गहितो, आणीतो, ताहे उक्कलंबितो, एक्कसिं रज्जू छिन्नो, एवं सत्त वारा छिन्नो, ताहे सिट्ठं तस्स तोसलियस्स खत्तियस्स, सो भणति-मुयह एस अचोरो, निद्दोसो, तं खुड्डयं मग्गह, जाव ण दीसति, ताहे णायं तं जहा देवोत्ति।

सिद्धत्थपुरे तेणोत्ति कोसिओ आसवाणिओ मोक्खो। वयगामहिंडणेसण बितियदिणे बेति उवसंतो॥ ४-५४।५११॥

ततो सिद्धत्थपुरं नाम गामो, तत्थ भगवं गतो, तत्थवि तेण देवेण तहा कयं जहा तेणोत्ति गहितो, तत्थ कोसिओ नाम आसवाणियओ, तेण सामी कुंडगामे दिट्ठेल्लओ, तेण मोयावितो, केती भणंति-तत्थ कोसितो नाम आसवाणिओ सामिं दट्ठुं निग्गमए अमंगलंति असिं कड्ढिऊण आगतो, सक्केण तस्सेव उवरिं दिन्नो, स मतो य, ततो सामी वयग्गामं गोउलं पत्तो, तत्थ य तद्दिवसं छणो, सव्वत्थ परमन्नं उवक्खडियं, चिरं कालं तस्स देवस्स ठितगस्स उवसग्गं काउं, सामी चिंतेति-गता छम्मासा, मा गतो होज्जत्ति अतिगतो जाव अणेसणातो करेति, जाव सामी उवउत्तो पासति, ताहे अद्धहिंडितो चेव नियत्तो, बाहिं पडिमं ठितो, ॥३१३॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

सो य सामीं ओहिणा आभोएइ-किं भग्गपरिणामो नवत्ति?, ताहे सामी तहेव विसुद्धपरिणामो छज्जीवहितं झायति, ताहे दट्ठुं आउट्टो, ण तीरेति चालेउंति, जो एच्चिरेणवि कालेणं छम्मासेहिं ण चलिओ एस दीहेणावि कालेणं ण सक्को चालेउं, ताहे पादेसु पडितो भणति-सच्चं सच्चं जं सक्को भणति, सव्वं खामेमि। भगवं अहं भग्गपइन्नो तुज्झे समत्तपइन्ना। भणति य—

वच्चह हिंडह ण करेमि किंचि इच्छा ण किंचि वत्तव्वो। तत्थेव वत्थवाली थेरी परमन्न वसुहारा ॥ ४-५५।५१२ ॥

जहा एत्ताहे अतीह पारेह, ण करेमि उवसग्गं भगवं ?, सामी भणति-भो संगमया ! णाहं कस्सति य वत्तव्वो, इच्छाए अतीमि वा ण वा, ता बीयदिवसे तत्थेव गामे भगवं हिंडमाणो वत्थवालथेरीए दोसीणेण पायसेण पडिलाभितो, पंच दिव्वाणि, एगे भणंति-तद्दिवसं ताए खीरं ण लद्धं, बितियदिवसे ओहारेऊण उवक्खडितं, तेण पडिलाभितो, पंच दिव्वा।

छम्मासे अणुबद्धं देवो कासी य सो तु उवसग्गं। दट्ठूण वयग्गामे वंदिय वीरं पडिनियत्तो ॥ ४-५६।५१३ ॥
देवो चु(ठि)तो महिड्ढी सो मंदरचूलियाए सिहरंमि। परियरिओ सुरवहूहिं तस्स य अयरोवमं सेसं ॥४-५७।५१४॥

इतो य सोहम्मे सव्वे देवा तद्दिवसं उव्विग्गमणा अच्छंति, संगमतो सोहम्मं गतो, तत्थ सक्को तं दट्ठूण परम्मुहो भणति देवे-भो सुणह ! एस दुरप्पो, ण एतेण अम्हं चित्तरक्खा कता अन्नेसिं च देवाणं, पुणो य तित्थगरपडिणीओ, ण एतेण अम्हं कज्जं, असंभासो निव्विसओ य कीरतु, ताहे पाएण निच्छूढो, सो मंदरचूलियाए उवरिं जाणतेणं विमाणेणं आगम्म ठितो, देवीहि विन्नवितो, ताओ विसज्जिताओ, सेसा देवा इंदेण वारिया, तस्स सागरोवमं एक्कं सेसा ठिती।

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता...........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥३१९॥

आलभि-कादौ विहारः

आलभिय हरि पियपुच्छ जितउवसग्गात्ति थोवमवसेसं। हरिसह सेयवि सावत्थि खंद्पडिमा य सक्को उ ॥ (आलभियाए हरि विज्जु जिणस्स भत्तीए वन्दओ एइ। भगवं पिअपुच्छा जियउवसग्गत्ति थेवमवसेसं ॥५१५॥ हरिसह सेयवियाए सावत्थी खंधपडिम सक्को य। ओयरिउं पडिमाए लोगो आउट्टिओ वंदे ॥ ५१६ ॥ (इत्येवं गाथाद्वयं हारिभद्रीयवृत्तिगतं)

ततो आलभियं गतो, तत्थ हरिविज्जुकुमारिंदो एति, ताहे सो वंदित्ता भगवतो महिमं काऊण भणाति-भगवं! पियं पुच्छामि, णिच्छिन्ना उवसग्गा, बहुं गतं थोवयं अवसेसं, अचिरेण ते कालेण केवलणाणं उप्पज्जिहिति। ततो सेयावियं गतो, तत्थ हरिस्सहो पियं पुच्छओ एति, ततो सावत्थिं गतो, बाहिं पाडिमं ठितो, तत्थ य लोगो खंदपडिमाए महिमं करेति, सक्को ओहिं पउंजति, जाव पेच्छइ खंदपडिमाए पूयं, सामिं णाढायंतित्ति, ओतिन्नो, सा य अलंकिता रहं विलग्गिहितित्ति, सक्को य आगतो, तं पडिमं अणुपविट्ठो, ताहे पच्चक्कमिता, लोगो तुट्ठो देवो सयमेव रहं विलग्गतित्ति, जाव सामीं गंतूणं वंदति, ताहे लोगो आउट्टो, एस देवेदेवोत्ति महिमं करेंति जाव अच्छितो।

कोसंबी चंदसूरोतरणं वाणारसीय सक्को उ। रायगिहे ईसाणो महिला जणओ य धरणो य ॥ ४-६०।५१७॥

ताहे सामी कोसंबिं गतो, तत्थ चंदसूरा सविमाणा महिमं करेंति, पियं च पुच्छंति, वाणारसीय सक्को पियं च पुच्छति, रायगिहे ईसाणो पियं पुच्छति, महिलाए वासारत्तो एक्कारसमो, चाउम्मासखमणं करेति, तत्थ धरणो आगतो पियं पुच्छओ, ॥३१९॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता...........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥३१६॥

वैशाल्यादौ विहारः

जणओ य महिमं करेति।

वेसालि भूयणंदो चमरुप्पाओ य सुंसुमारपुरे। भोगपुरसिंदिकंडग माहिंदो खत्तिओ कुणति॥ ४-६०।५१८॥

ततो निग्गतो वेसालिं एति, तत्थ भूताणंदो पियं पुच्छति, णाणं च वागरेति। पच्छा सुंसुमारपुरं एति, तत्थ चमरो उप्पतति जहा पण्णत्तीए, पच्छा भोगपुरं एति, तत्थ माहिंदो णाम खत्तिओ सामिं दट्ठूण सिंदिकंदएण आहणामित्ति पधाइतो, सिंदि-खज्जूरी।

वारण सणंकुमारो णंदिग्गामे य पिउसहा वंदे। मेंढियगामे गोवो वित्तासणगं च देविंदो॥४-६२।५१९॥

एत्थंतरा सणंकुमारो एति, तेण धाडितो तासितो य, पियं च पुच्छति, ततो णंदिग्गामं गतो, तत्थ णंदी नाम भगवतो पितुमित्तो, सो महेति। ततो मेंढियं एति, तत्थ गोवो जहा कंमारगामे, तत्थेव सक्केण तासितो वालरज्जुएणं आहणंतो

कोसंबीए सयाणिउ अभिग्गहो पोसबहुलपाडिवए। चाउम्मास मिगावति विजय सुगुत्तो य णंदा य॥४-६३।५२०॥

तच्चावादी चंपा दधिवाहण वसुमती विजयणामा। धण धवण मूलालोयण संपुल दाणे य पव्वज्जा॥४-६४।५२१॥

ततो कोसंबिं गतो। तत्थ य सयाणिओ राया, तस्स मिगावती देवी, तच्चावादी णाम धम्मपाढओ, सुगुत्तो अमच्चो, णंदा से महिला, सा समणोवासिया, सा सड्ढित्ति मिगावतीए वयंसिया, तत्थेव णगरे धणावहो सेट्ठी, तस्स मूला भारिया, एवं ते सकम्मसंपउत्ता अच्छंति। सामी य इमं एतारूवं अभिग्गहं अभिगेण्हति, चउव्विहं-दव्वतो ४, दव्वतो-कुंमासे सुप- ॥३१६॥

भगवंत महावीरस्य विशिष्ट अभिग्रह एवं चंदनबालाया: वृतान्त कथयते

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥३१७॥

कुलमाषाद्यभिग्रहः

कोणेणं, खित्तओ एलुगं विक्खंभइत्ता, कालओ नियत्तेसु भिक्खायरेसु, भावतो जदि रायधूया दासत्तणं पत्ता णियलबद्धा मुंडियसिरा रोयमाणी अब्भत्तट्ठिया, एवं कप्पति, सेसं ण कप्पति, कालो य पोसबहुलपाडिवओ । एवं अभिग्गहं घेत्तूणं कोसंबीए अच्छति, दिवसे दिवसे य भिक्खायरियं फासेति, किं निमित्तं?, बावीसं परिसहा भिक्खायरियाए उदिज्जंति, एवं चत्तारि मासे कोसंबीए हिंडति, ताहे णंदाए घरमणुपविट्ठो, ताते सामी णातो, ताए परेण आदरेण भिक्खा णीणिता, सामी विनिग्गतो, सा अधितिं पकता, ताहे दासीओ भणंति--एस देवज्जओ दिवे दिवे एत्थ एति, ताहे ताए णातं-नूणं भगवतो कोति अभिग्गहो, ताहे निरायं चेव अद्धिती जाया। सुगुत्तो अमच्चो आगतो, ताहे सो पुच्छति, भणति—किं अद्धितिं करेसि?, ताए से कहितं, भणति—किं अम्हं अमच्चत्तणेण ?, एच्चिरं कालं सामी भिक्खं ण लभति, किं च ते विन्नाणेणं ? जदि एतं अभिग्गहं ण जाणासि, तेण सा आसासिता, कल्ले समाणे दिवसे जहा लभति तहा करेमि। एताए कहाए वट्टमाणीए विजया णामं पडिहारी मिगावतीए सतिया, सा केणवि कारणेण आगता, सा तं उल्लावं सोऊणं मिगावतीए साहति, मिगावतीवि तं सोउणं महता दुक्खेण अभिभूता, सा चेडगधूता, अतीव अद्धितिं पकया, राया य आगतो पुच्छति, भणति किं तुज्झ रज्जेण मए वा ?, एवं सामिस्स एवतियं कालं हिंडतस्स अभिग्गहो ण णज्जति, ण वा जाणासि एत्थ विहरंतं, तेण आसासिता, तहा करेमि जहा कल्ले लभति, ताहे सुगुत्तं अमच्चं सद्दावेति अंबाडेति य, जहा तुमं सामिं आगतं ण जाणासि ?, अज्ज किर चउत्थो मासो हिंडंतस्स, ताहे तच्चावादी सद्दावितो, ताहे सो पुच्छति सयाणिएणं-तुज्झं धम्मसत्थे सव्वपासंडाणं आयारा आगता, ते तुमं साहह, इमोऽवि भणितो-तुमं बुद्धिबलिओ साह, ते भणंति— ॥३१७॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता..........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक-चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥३१८॥

बहवे अभिग्गहा, ण णज्जति अभिप्पाओ दव्वजुत्ते य खे० सत्त पिंडेसणाओ सत्त पाणेसणाओ, ताहे रन्ना सव्वत्थ संदिट्ठा, लोगेणवि परलोककंखिणा कता, सामी आगतो, ण य तेहिं पगारेहिं गिण्हति, एवं च ताव एवं। इओ य सयाणिओ चंपं पधाविओ दहिवाहणं गेण्हामित्ति, णावाकडएण गतो एगाए रत्तीए, अचिंतिया चेव णगरी वेढिया, तत्थ दहिवाहणो पलातो, रन्ना जग्गहो घोसितो, एवं जग्गहे दिन्ने दहिवाहणस्स रन्नो धारणी देवी, तीसे धूया वसुमती, सा सह धूयाए एगेण ओट्टिएण गहिता, राया नियत्तो, सो उट्टितो चिंतेति, भणइ य—एस मे भज्जा, इमं च दारियं विक्केसं, सा देवी तेण मणोमाणसिएण दुक्खिएण अप्पणो धूयाए य एस ण णज्जति किं ममं पावेहिति, एयं वा चेडिं, एवं सा अंतरा कालगता, पच्छा तस्स उट्टियस्स चिंता जाता-दुट्ठं मए भणितं महिला होहितित्ति, एतं न भणामि, मा एसावि मरिहिति, तो मे मोल्लंपि ण होहिति, ताहे अणुयत्तंतेण आणीता, वीहीए ओड्डिया, धणवाहेण दिट्ठा अणलंकितलावन्ना, अवस्सं रन्नो ईसरस्स वा एसा, मा आवइं पावउत्ति जत्तियं सो भणति तत्तिएण मोल्लेण गहिता, तेण समं मम सुहं तत्थ णगरे आगमणं गमणं च होहितित्ति, तेण नियगं घरं णीता, पुच्छिता-का सि तुमंति, ण साहति, पच्छा तेण धूतत्ति गहिता, एवं सा ण्हाणिला, मूलिगावि भणिता—जहा एस तुज्झ धूयत्ति, एवं सा तत्थ जहा नियए घरे तह सुहंसुहेण अच्छति, ताएवि सो सपरिजणो लोगो सीलेण य विणएण य सव्वो अप्पणिज्जओ कओ, ताहे ताणि भणंति सव्वाणि—अहो इमा सीलचंदणत्ति, ताहे से बितियंपिय णामं कयं चंदणत्ति, एव य कालो वच्चति। ताए य घरिणीए अवमाणो जायति मच्छरिज्जति य, को जाणति कयाइ एस एतं पडिवज्जेज्जा ?, ताहे अहं घरस्स अस्सामिणी भविस्सामि, तीसे य वाला अतीव रमणिज्जाऽतिकिण्हा य, अन्नया कयाई सो सेट्ठी मज्झण्हे जणविरहिते आग-

चन्दन-बाला वृत्तं

॥३१८॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक-चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥३१९॥

चन्दन-बाला वृत्तं

तो जाव णत्थि कोयि जो पादे सोचेति, ताहे सा पाणितं गहात निग्गता, तेण वारिया, सा मइ(हु)ए पधोता, ताए धोवंतीए ते वाला वड्डेल्लगा फिट्टा, मा चिक्खल्ले पडिहिंतित्ति तस्स य हत्थे लीलाकट्ठतं तेण ते धरिता बद्धा य, मूला य ओलोयणवरगता पेच्छाति, ताए णायं-विणासितं कज्जं, जदि किहइ परिणेति तो अहं का?, सा सामिणी, वासो नगरेवि मे णत्थि, जाव तरुणओ वाधी ताव णं तिगिच्छामित्ति सेट्ठिंमि निग्गए ताहे य ण्हावितं चाहरावेत्ता बोडाविता णियलेहि य बद्धा पिट्टिया य, परियणो य अणाए वारितो-जो वाणियगस्स साहति सो मम णत्थि, ताए सो पिल्लितेल्लओ, घरे छोढूण बाहिरिं कुडंडिता, सो कमेण आगतो पुच्छति-कहिं चंदणा ?, न कोतिवि साहति भएण, सो जाणति-नूणं सा रमति उवरिं वा, एवं रत्तिंपि पुच्छिता, जाणति सा सुत्ता णूणं, बितियदिवसेवि ण दिट्ठा, ततिए दिवसे घणं पुच्छति, साहह, मा भे मारेह, ताहे थेरदासी एगा चिंतेति—किं मम जीवितेणं ?, स जीवतु वराई, ताए कहितं-असुगघरे, तेण उग्घाडिया, छुहाहतं पेच्छिता, कूरं पमग्गितो जाम(समा)वत्तीए णत्थि, ताहे कुंमासा दिट्ठा, ते दाउं लोहारघरं गतो जा णियलाणि छिंदावेमि, ताहे सा हत्थी जथा कूलं संभरितुमारद्धा एलुगं विक्खंभतित्ता, तेहिं पुरतो कएहिं हिदयब्भंतरतो रोवति, सामी य अतिगतो, ताए चिंतियं-एतं सामिस्स देमि मम एतं अधम्मफलं, भणति—भगवं ! कप्पति?, सामिणा पाणी पसारितो, चउव्विहोवि पुन्नो, पंच दिव्वाणि, ते से वाला तदवत्था, ताहे चेव ताणि नियलाणि फुट्टाणि, सोवण्णिताणि कडगाणि णीउराणि य जाताणि, देवेहि य सव्वालंकारा कता, सक्को य देवराया आगतो, पंच दिव्वाणि, अद्धतेरस हिरण्णकोडीओ पडियाओ। इतो य कोसंबीए सव्वतो उक्कुट्ठं—केणइ पुन्नमंतेण अज्ज सामी पडिलाभितो, ताहे राया संतेपुरपरियणो आगतो। तत्थ संपुलो णाम दहिवाहणस्स कंचुइज्जो, सो बंधित्ता आणियओ, तेण सा नाया, सो पादेसु ॥३१९॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥३२०॥

सुमंगलादौ विहारः

पडित्ता परुन्नो--अहो इमा वसुमती, राया पुच्छति, ताहे तेण कहियं-देव! रायाओ इमा, ताहे सव्वेण लोगेण नायं जहा दहिवाहणस्स धूयात्ति, मिगावती भणति-मम भगिणिधूयत्ति, अमच्चो य सपत्तीओ आगतो, सामिं वंदति। पच्छा सामी निग्गओ। ताहे राया तं वसुहारं पगहिओ, सक्केण वारियं, जस्स एसा देइ तस्स आभव्वंति, सा पुच्छिया, भणति-मम पिउणो, ताहे सेट्ठिणा गहियं। ताहे सक्केण भणितं-चरमसरीरा एसा, एयं संगोवाहि जाव सामिस्स नाणं उप्पज्जति, एसा पढमा सिस्सिणी सामिस्स, ताहे कण्णंतेपुरं छूढा संवड्ढति, छम्मासा तदा पंचहिं दिवसेहिं ऊणगा जद्दिवसं सामिणा भिक्खा लद्धा, सावि मूला लोगेणं अंबाडिता हीलिया य।

तत्तो सुमंगल सणंकुमार सुच्छित्तएहिं माहिंदो। पालय वाइल वाणिए अमंगलं अ घणो असिणा ॥४-६५।५२२॥

ततो सामी निग्गतो सुमंगला णाम गामो तहिं गतो, तत्थ सणंकुमारो एति वंदति पियं च पुच्छति, तत्थ पढमं सिंदीकंडगनिमित्तं आगतो, ततो सामी पालयं नाम गामं गतो, तत्थ वाइलो नाम वाणिययो जत्ताए पहावितो सामीं पेच्छति, सो अमंगलंति काऊण असिं गहाय पधातिओ, एतस्सेव फलउत्ति तस्स सिद्धत्थेण सहत्थेण सीसं छिन्नं।

चंपा वासावासं जक्खिदो सातिदत्त पुच्छा य। वागरण दुह पएसण पच्चक्खाणे य दुविहे तु ॥४-६६।५२३॥

ततो सामी चंपं नगरिं गतो, तत्थ सातिदत्तमाहणस्स अग्गिहोत्तवसहिं उवगतो, तत्थ चाउम्मासं खमति, तत्थ पुण्णभद्दमाणिभद्दा दुवे जक्खा रत्तिं पज्जुवासंति, चत्तारिवि मासे रत्तिं रत्तिं पूयं करेंति, ताहे सो माहणो चिंतेति-किं एस जाणति तो णं देवा महेंति?, ताहे विन्नासणनिमित्तं पुच्छति-को ह्यात्मा?, भगवानाह-योऽहमित्यभिमन्यते, स कीदृक्?, सूक्ष्मोऽसौ, किं तत्सूक्ष्मं?, यन्न ॥३२०॥

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

श्री आवश्यक चूर्णो उपोद्घात निर्युक्तौ

॥३२१॥

गोपकृतः शलाको-पसर्गः

गृह्णीमः, ननु शब्दगंधानिलाः किम्?, न, ते इंद्रियग्राह्याः, तेन ग्रहणमात्मा, ननु ग्राहयिता हि सः। कतिविहे णं भंते! पएसणए?, कइविहे णं पच्चक्खाणे ?, भगवानाह-सातिदत्ता ! दुविहे पदेसणये धम्मियं अधम्मियं च, पएसणयं नाम उवदेसो । पच्चक्खाणे दुविहे- मूलगुणपच्चक्खाणे य उत्तरगुणपच्चक्खाणे य । एतेहिं पदेहिं सव्वं तस्स उवागतं

जंभियगामे णाणस्स उप्पदा वागरेति देविंदो । मेंढियगामे चमरो वंदण पियपुच्छणं कुणति ॥४-६७।५२४॥

ततो भगवं निग्गतो, जंभियगामं गतो, तत्थ सक्को आगतो, वंदित्ता पूयं करेत्ता णट्टविहिं उवदंसेत्ता णं वागरेति जहा एत्तिएहिं दिवसेहिं केवलणाणं उप्पज्जिहिति । ततो मेंढियग्गामं वच्चति, तत्थ चमरो वंदयो पियपुच्छओ य आगच्छति, वंदितुं पुच्छति, वंदितुं पुच्छितुं च पडिगतो ।

छम्माणि गोव कडसलपवेसणं मज्झिमाए पावाए । खरतो वेज्जो सिद्धत्थवाणिओ णीहरावेति ॥ ४-६८।५२५ ॥

ततो सामी छंमाणिं णाम गामो तहिं गतो, तस्स बाहिं पडिमं ठितो, तत्थ सामिसमीवे गोवो गोणे छड्डेऊणं गामं पविट्ठो, दोहणादीणि काउं निग्गतो, ते य गोणा अडविं अणुपविट्ठा चरियव्वयस्स कज्जे, ताहे सो आगतो पुच्छति- देवज्जगा ! कहिं बइल्ला ?, भगवं मोणेण अच्छति, ताहे सो परिकुवितो भगवतो कन्नेसु काससलागाओ छुभति, एगा इमेण कन्नेण एगा इमेण, ताहे पत्थरेण आहणाति जाव दोवि मिलिताओ, ताहे मूलभग्गाओ करेति मा कोति उक्खाणिहित्ति, केति भणंति- एगा चेव जाव इतरेणं कन्नेणं निग्गया, ताहे अ भग्गा,-कन्नेसु तउं तत्तं गोवस्स कतं तिविट्टुणा रन्ना । कन्नेसु वद्धमाणस्स तेण छूढा कड-

॥३२१॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥३२२॥

श्रीवीरस्य केवलोत्पादः

सलागा ॥ १ ॥ भगवतो य तद्दारवेयणिज्जं कम्मं उदिन्नं । ततो मज्झिमं पावं गतो, तत्थ सिद्धत्थो नाम वाणियतो, तस्स घरं भगवं अतिगतो, तस्स मित्तो खरओ णाम वेज्जो, ते दोवि सिद्धत्थघरे अच्छंति, सामी य भिक्खस्स पविट्ठो, वाणियतो वंदति थुणति य, वेज्जो य तित्थगरं पासिऊण भणति- अहो भगवं सव्वलक्खणसंपुन्नो, किं पुण ससल्लो ?, ताहे सो वाणिओ संभंतो भणति- पलोएहि कहिं सल्लो ?, तेण पलोएंतेण दिट्ठो कन्नेसु, तत्थ तेण वाणिएण भन्नति- णीणेहि एतं महातवसिस्स, सव्वस्संपि चयेमो, पुन्नं होहिति तववि मज्झवि, भणति- निप्पडिकंमो भगवं नेच्छिहिति, ताहे पडियरावितो जाव दिट्ठो उज्जाणे पडिमं ठितो, ते ओसहाणि गहाय गता, तत्थ भगवं तेल्लदोणीए निवज्जावितो मद्दितो य, पच्छा बहवेहिं पुरिसेहिं जंतितओ अक्कंतो य, पच्छा संडासएण गहाय कड्ढितो, तत्थ सरुहिराओ सलागाओ अंछिताओ, तासु य अछिज्जंतीसु भगवता आरसितं, ते य मणूसे उप्पाडेत्ता उट्ठितो, तत्थ महाभेरवं उज्जाणं जातं देवउलं च, पच्छा संरोहणं ओसहं दिन्नं जेण ताहे चेव पउणो, ताहे वंदित्ता खामेत्ता य गता ॥ सव्वेसु किर उवसग्गेसु दुव्विसहा कतरे ?, कडपूयणासीयं कालचक्कं एतं चेव सल्लं कड्ढिज्जंतं, अहवा जहन्नगाण उवरि कडपूयणासीतं, मज्झिमाण कालचक्कं, उक्कोसगाण उवरिं सल्लुद्धरणं ॥ एवं गोवेण आरद्धाउवसग्गा गोवेण चेव निट्ठिता । गोवो सत्तमिं गतो, खरतो सिद्धत्थो य दियलोगं तिव्वमवि उदीरंतावि सुद्धभावा ।

जंभियबहि उजुयालियतीरवियावत्तसामसालअहे । छट्ठेण उक्कुडुयस्स उप्पन्नं केवलं नाणं ॥ ४-६९ । ५२६ ॥ ॥३२२॥

ताहे सामी जंभियगामं णाम णगरं गतो, तस्स बाहिया वियावत्तस्स चेतियस्स अदूरसामंते, वियावत्तं णाम अव्यक्तमित्यर्थः, अप्पागडं संनिपडितं, उज्जुयालियाए णदीए तीरंमि उत्तारिछे कूले सामागस्स गाहावतिस्स कट्ठकरणंसि, कट्ठकरणं नाम छेत्तं,

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥३२३॥

श्रीवीरस्य तपः संकलना

सालपादवस्स अहो उक्कुडुयणिसेज्जाए गोदोहियाए आतावणाए आतावेमाणस्स छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं अणुत्तरेणं णाणेणं अणुत्तरेणं दंसणेणं अणुत्तरेणं चरित्तेणं अणुत्तरेणं आलएणं अणुत्तरेणं विहारेण, एवं अज्जवेणं मद्दवेणं लाघवेणं खंतीए मोत्तीए गुत्तीए तुट्ठीए अणुत्तरेणं सच्चसंजमतवसुचरितसोवचइयफलपरिनिव्वाणमग्गेणं अप्पाणं भावेमाणस्स दुवालसहिं संवच्छरेहिं विति-क्कंतेहिं तेरसमस्स संवच्छरस्स अंतरा वट्टमाणस्स वइसाहसुद्धदसमीए पादीणगामिणीए छायाए अभिनिव्वट्टाए पोरुसीए पमा-णपत्ताए सुव्वएणं दिवसेणं विजएणं मुहुत्तेणं हत्थुत्तराहिं नक्खत्तेणं जोगमुवागतेणं झाणंतरियाए वट्टमाणस्स एकत्तवितक्कं वोली-णस्स सुहुमकिरियं अणियट्टिमपत्तस्स अणंते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवलवरनाणदंसणे समुप्पन्ने ॥ तए णं से भगवं अरहा जिणे जाते केवली सव्वन्नू सव्वदारिसी अरहस्सभागी सनेरतियतिरियनरामरस्स लोगस्स पज्जवे जाणाति पासति, तंजहा— आगतिं गइं ठितिं चयणं उववायं तक्कं मणोमाणासितं भुत्तं कडं पडिसेवितं आवीकम्मं रधोकम्मं तं तं कालं मणवयणकायिते जोए, एवमादी जीवाणवि सव्वभावे मोक्खमग्गस्स य विसुद्धतराभे भावे जाणमाणे पासमाणे, एस खलु मोक्ख-मग्गे मम य अन्नेसिं च जीवाणं हितसुहनिस्सेसकरे सव्वदुक्खविमुक्खणे परमसुहसमाणणे भविस्सइत्ति । एवं च केवलणाणं तवेण उप्पन्नंतिकाऊणं जो छउमत्थकालियाए भगवता तवो कतो सो सव्वो वन्नेयव्वो—

जो य तवो० ॥५-१॥५२७॥ णव किर चाउम्मासे० ॥ ५-२ ॥५२८॥ एगं किर छम्मासं० ॥५-३॥ ५२९ ॥ भद्दं च महाभद्दं०॥ ५-४ ॥ ५३० ॥ गोयर० ॥ ५-५ ॥ ५३१ ॥ दिवसे दिवसे भगवं भिक्खं हिंडेति एव छम्मासे । हिंडति पंचदिवसूण वत्थाणगरीए अव्वहिओ भगव ॥ १ ॥ दस दो य० ॥ ५-६ ॥ ५३२ ॥ दो चेव य छट्ठ ॥ ५-७ ॥५३३-५३४॥ ॥३२३॥

भगवंत वीर कृत् (बाह्य) तपस: वर्णनं क्रियते

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥३२४॥

महासेने आगमनं समवसरण द्वाराणि

एस ताव खमणकालो । इमो पारणगकालो—

तिन्नि सते दिवसाणं ॥ ५-८ ॥ ५३५ ॥ पव्वज्जाते० ॥ ५-९ ॥ ५३६ ॥ बारस चेव य ॥ ५-१० ॥ ५३७ ॥

एवं तवोगुणरओ अणुपुव्वेणं मुणी विहरमाणो। घोरं परीसहचमुं अहियासेत्ता महावीरो ॥५-११॥५३८॥

उप्पन्नंमि अणंते नट्ठंमि य छाउमत्थिए णाणे । रातीए संपत्तो महसेणवणं तु उज्जाणं ॥५-१२॥५३९।५४२॥११५भा.

किमिति ? । जाहे सामिस्स केवलनाणं उप्पन्नं ताहे इंदादीया देवा सव्विड्डीए हट्ठतुट्ठा णाणुप्पदामहिमं करेंति । तत्थ भगवं जाणति- णत्थि एत्थ पव्वयंततो, जत्थ नत्थि पव्वसंततो तत्थ ण पवत्तिज्जति, ततो य बारसेहिं जोयणेहिं मज्झिमा नाम नगरी, तत्थ सोमालिज्जो नाम माहणो, सो जन्नं जयइ, तत्थ य एक्कारस अज्झावगा आगता भवियरासी य, ताहे सामी तत्थ मुहुत्तं अच्छति जाव देवा पूयं करेंति, एस केवलकप्पो किर जं उप्पन्ने नाणे मुहुत्तमेत्तं अच्छियव्वं, ताहे सामी रत्तीय तं वच्चति, तत्थ वच्चंतो असंखेज्जाहिं देवकोडीहिं परिवुडो देवुज्जोएण सव्वो पंथो उज्जोवितो जथा दिवसो, जत्थ भगवतो पादा तत्थ देवा सत्त पउमाणि सहस्सपत्ताणि णवणीतफासाणि विउव्वंति, मग्गतो तिन्नि पुरओ तिन्नि एगं पायाणिक्कमे, एगे भणंति- मग्गतो सत्त पउमाणि दीसंति, जत्थ पाओ कीरति ताहे अन्नं दीसति, मग्गओ सत्त दीसंति, मग्गओ सत्त दो पादेसु एवं णव । एवं जाव मज्झिमाए णगरीए महसेणवणं उज्जाणं संपत्तो । तत्थ देवा बितियं समोसरणं करेंति, महिमं च सुरुग्गमणे, एगं जत्थ नाणं बितियं इमं चेव । अहवा एगं छउमत्थकालियाए एगं इमं चेव । एत्थं सामन्नेण समोसरणादिवत्तव्वया णेया गाहाहिं— ॥३२४॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता...........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥३२५॥

समव-सरणं

समोसरणे केवतिया रूवपुच्छवागरण सोयपरिणामे। दाणं च देवमल्ले मल्लायणे उवरि तित्थं ॥५-१८॥५४३॥

इह पुण इमं णाणत्तं जाव सामी ण पावइ ताव रत्तिं चेव देवेहिं तिन्नि पागारा कता, अंतो मज्झे बाहिंति, अब्भंतरं वेमाणिया सव्वरयणामयं णाणामणिपंचवन्नेहिं कविसीसएहिं, मज्झिमं जोइसिया सोवन्नं रयणकविसीसगं, बाहिरं भवणवासी ता रयतं हेमजंबूणतकविसीसगं, अवसेसं जं वातविउव्वणं वरिसणं पुप्फोवगारो य धूवदाणं च तं वंतरा करेंति, असोगवरपायवं जिणउच्चत्ताओ बारसगुणं सक्को विउव्वति, ईसाणो उवरिं छत्ताइच्छत्तं चामरधरा य, बलिचमरा असोगहेट्ठओ पेढं देवछंदगं सीहासणं सपायपीढं फालियामयं धम्मचक्कं च पउमपतिट्ठियं। ताहे सामी पयाहिणं करेमाणो पुव्वदारेण पविसित्ता 'नमो तित्थस्स' त्ति नमोक्कारं काऊण सीहासणे पुव्वाभिमुहो निसीयति। ताहे देवा अवसेसाहिं दिसाहिं सपरिकराणि मुहाणि विउव्वंति, एवं सव्वो लोगो जाणति अम्हं कहेतित्ति। तत्थ समोसरणेत्ति दारं। समोसरणं नाम एत्थं वायोदगपुप्फवासपागारत्तयादिभिः भगवतो विभूती। तत्र—

जत्थ०॥ ५-१९ ॥ ५४४-५४८ ॥ जत्थ अपुव्वं णगरे गामे वा जत्थ वा तहाविहो देवो महिड्ढीओ वंदओ एति तत्थ नियमेण भवति। ताहे जोयणपरिमंडलं संवट्टयं वायं सुरभिगंधोदयं निहतरयं पुप्फवद्दलयं वा, एतं अभियोगा देवा करेंति॥ पागारा तिन्नि, ते को करेति?, उच्यते—

अब्भंतर० ॥ ५-२४ ॥ ५४९ ॥ अब्भिंतरिल्लं पागारं वेमाणिया देवा करेंति, मज्झिमं जोतिसिया, बाहिरिल्लं भवणवासी करेंति। अब्भिंतरिल्लो रयणमयो मज्झिल्लो कणयमओ बाहिरिल्लो रयतमयो। ॥३२५॥

अथ समवसरण वक्तव्यता प्रकाश्यते

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥३२६॥

समव-सरणं

मणिरयण० ॥ ५-२५ ॥ ५५०-५५२ ॥ अब्भिंतरस्स मणिमया कविसीसया, मज्झिमस्स रयणमया, बाहिरिल्लस्स हेममया, हेमं-सुवन्नं । सव्वरयणमया दारा । तेसिं पागाराणं तिण्हवि सव्वरयणमया चेव तोरणा, पडागाहिं सएहि य विभूसिया । अब्भिंतरपागारस्स य बहुमज्झे चेतियरुक्खो, तस्स हेट्ठा रयणमयं पेढं, तस्स पेढस्स उवरिं चेतियरुक्खस्स हेट्ठा देवच्छंदओ भवति, तस्सब्भंतरे सीहासणं भवति, तस्सोवरिं छत्तातिछत्तं, उभयो पासे य दो जक्खा चामरहत्था, चसदा पुरओ धम्मचक्कं च पउमपइट्ठितं । एताणि को करेंति ?, उच्यते—

चेतियदुम० ॥ ५-२८ ॥ ५५३ ॥ सिद्धा । जं चक्कंति वाउदयादि ॥ आह- किं सव्वत्थ एवं ?, उच्यते—

साधारणओसरणे० ॥ ५-२९ ॥ ५५४ ॥ जत्थ बहवे तहाविहा देवा एंति इंदा वा तत्थ एवं करेंति, जत्थ पुण कोति तारिसओ महिड्ढीओ देवो एति तत्थ सो चेव एगो एयाणि सव्वाणि करेति, 'भयणा उ सेसेसु इयरेसि' न्ति जइ इंदा ण एंति तो भवणवासिमाइणो करेंति वा ण वा ।

सूरुदय० ॥५-३० ॥ ५५५-५५७ ॥ तत्थ भगवं पढमपोरुसीए ओगाहंतीए आगंतूणं पुव्वउत्ति-पुरत्थिमेणं दारेणं पविसित्ता चेतियरुक्खं आदाहिणं करेत्ता सीहासणे पुरत्थाभिमुहो निसीयति । जत्थ य भगवं एंतो पादे ठवेति तत्थ सहस्सपत्ताणि दो पउमाणि भवंति, पिट्ठओ य सत्त पउमाणि दीसंति, जतो य भगवओ मुहं न भवति ताहिं तीहिं दिसाहिं देवा पडिरूवताइं विउव्वंति, ॥३२६॥ सीहासणाइं समत्तसरीराइं सचामराइं सछत्ताइं सधम्मचक्काइं जहा सव्वो जणो जाणति मम सपडिहुत्तोत्ति । भगवतो य पादमूलं जहन्नेणं एगेणं गणहरेणं अविरहियं अवस्सं भवति, सो पुण जेट्ठो वा अन्नो वा, पाएण जेट्ठो भवति ।

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णी उपोद्घात निर्युक्तौ ॥३२७॥

समवसरणे पर्षन्निवेशः

तित्थादिसेस०।५-३३।५५८॥ केवलिणो०।५-३४।५५९। जो तित्थं सो पुव्वदारेण पविसित्ता तित्थगरं तिक्खुत्तो वंदित्ता दाहिणपुरत्थिमे दिसिभाए निसीयति, सेसा गणहरा एवं चेव काउं तित्थस्स मग्गतो पासेसु निसीयंति। जे केवलिणो ते पुरत्थिमेणं दारेण पविसित्ता भगवं तिक्खुत्तो पयाहिणं काउं 'नमो तित्थस्स'त्ति भणित्ता तित्थस्स गणहराण य पिट्ठतो निसीदंति। जे च सेसा अतिसेसिता-मणपज्जवनाणी ओहिनाणी चोद्दसदसणवपुव्विणो खेलोसहिपत्तादी य ते पुरत्थिमेण दारेण पविसित्ता भगवंतं पयाहिणीकरेत्ता वंदित्ता य 'नमो तित्थस्स नमो केवलीणं'ति भणित्ता केवलीणं पिट्ठतो निसीदंति। अवसेसा संजया निरतिसेसिया पुरत्थिमेणं चेव दारेण पविसित्ता भगवंतं पयाहिणं काउं वंदित्ता 'णमो तित्थस्स (नमो केवलीणं) नमो अतिसेसियाणं'ति भणित्ता अतिसेसियाणं पिट्ठतो निसीदंति। वेमाणियाणं देवीओ पुरत्थिमेण चेव दारेण पविसित्ता भगवंतं पयाहिणीकरेत्ता वंदित्ता 'णमो तित्थस्स नमो साधूण य' भणित्ता निरतिसेसियाणं पिट्ठतो ठायंति, ण णिसीदंति। समणीओ पुरत्थिमेण चेव दारेणं पविसित्ता तित्थगरं पयाहिणं करेत्ता वंदित्ता य 'नमो तित्थस्स नमो अतिसेसियाणं'ति भणित्ता वेमाणियदेवीणं पिट्ठतो ठायंति, न निसीदंति। भवणवासिणीओ वंतरीओ जोतिसिणीओ एताओ दाहिणेणं दारेणं पविसित्ता तित्थगरं पयाहिणीकरेत्ता वंदित्ता य दाहिणपच्चत्थिमेण ठायंति, भवणवासिणीणं पिट्ठतो जोतिसिणीओ, तासिं पिट्ठतो वंतरीओ ॥

भवण०॥५-३५॥५६०॥११६-११९ भा०। भवणवासी देवा जोतिसिया देवा वाणमंतरा देवा, एते अवरदारेणं पविसित्ता तं चेव विधिं काउं उत्तरपच्चत्थिमेण ठायंति यथासंख्यं पिट्ठओ, वेमाणिया देवा मणुस्सा माणुस्सीओ उत्तरेणं दारेणं पविसित्ता ॥३२७॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥३२८॥

समवसरणे पर्षन्निवेशः

उत्तरपुरत्थिमे ठायंति, जहासंखं पिट्ठतो। 'जं च निस्साए' त्ति जो परिवारो जन्निस्साए आगतो सो तस्सेव पासे निविसति, ण अन्नत्थ ।

एगे०।५-४०॥५६१॥ तित्थं असेससंजया एगं वेमाणिया देवीओ समणीओ, एतं तिगं भगवतो दाहिणपुरच्छिमेणं संनिविट्ठं, भवणवासिणीओ वंतरीओ जोइसिणीओ एतं तिगं भगवतो दाहिणपच्चच्छिमेणं सन्निविट्ठं, भवणवतिवाणमंतरजोतिसियपुरिसा एतं तिगं भगवतो उत्तरपच्चत्थिमेणं संनिविट्ठं, वेमाणियदेवा मणुस्सा मणुस्सीओ एतं तिगं भगवतो उत्तरपुरत्थिमेणं संनिविट्ठं, आदिले य तिगे चरिमे य तिगे पुरिसा इत्थीओ य, मज्झिल्लेहिं दोहिं तिएहिं इत्थीओ पुरिसा य अमिस्सा ॥ तत्थ सव्वेसिं देवणराणं इमा मज्जाया—

एन्तं महिड्ढियं०।५-४१॥५६२॥ जे अप्पिड्ढिया भगवतो समोसरणे निसन्ना ते एंतं महिड्ढीयं पणिवयंति, अह महिड्ढीया पढमं निसन्ना पच्छा जे अप्पिड्ढिया एंति ते पुव्वड्ढिते महिड्ढीए पणिवयंता वयंति सट्ठाणं, सेस कंठं ॥ आह–पागाराणं अंतरेसु को ठायति ?, उच्यते–

बितियंमि०।५-४२।५६३॥ कंठा। सव्वबाहिं पागाराणं तिरिया वा मणुया वा देवा वा होज्जा, एक्कया मीसया वा, एवं संनिविट्ठे समोसरणे भगवं धंमं कहेति। जदि–

सव्वं०।५-४३।५६४॥ कंठा। कहं पुण ण भविस्सति एस भावो जं न पडिवज्जिहिति चउण्हं सामाइयाणं अन्नतरं?, उच्यते- ॥३२८॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता..........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥३२९॥

श्रुतरूप-तीर्थनतिः

मणुए०।५-४४।५६५॥ मणुयाणं जो पडिवज्जति सो चउण्हं अन्नतरं पडिवज्जेज्जा, तिरियाणि तिन्नि-सम्मत्तसुत्तचरित्ताचरित्ताइं, दोन्नि, एगं वा, एतेसिं जदि णत्थि कोति पडिवज्जंतओ तो देवेसु अवस्सं केणति सम्मत्तं पडिवज्जियव्वं॥ ताहे भगवं--

तित्थपणामं०।५-४५।५६६॥ 'नमो तित्थस्स' त्ति भणित्ता पणामं च करेत्ता साहारणेणं सद्देणं अद्धमागहाए भासाए, साविय णं अद्धमागहा भासा भासिज्जमाणी सव्वेसिं तेसिं आयरियमणायरियाणं अप्पप्पणो भासापरिणामेणं परिणमति। आह-किं भगवं कतकिच्चे तित्थपणामं करेति?, उच्यते--

तप्पुव्विया०।५-४६।५६७॥ तत्थ सुयणाणेणं भगवतो तित्थकरत्तं जातं, तित्थगरो य सुतवातिरित्तो होंततो सुयणाणेणं वायजोगीहोऊणं धम्मं कहेति, लोगो य पूतियपूयओ, तो जदि अहं एयं पूएमि तो लोगो जाणिहिति-जदि तित्थगरस्स एस गुरू कओ को जाणति किंपि एत्थ परिवसति?, किं च-विणयमूलो धम्मो पन्नवेयव्वो, तो अहं चेव पढमं विणयं पउंजामि, पच्छा लोगो सुट्ठुतरं सद्दहिस्सति, किं च-जहा कयकिच्चोवि होन्तओ तित्थगरो धम्मं कहेति तहा तित्थमवि नमति। समोसरणत्ति दारं गतं। इयाणिं केवतिएत्ति दारं। केदूरातो आगंतव्वं समोसरणं? केण वा आगंतव्वं? कंमि वा कज्जे आगंतव्वं अवस्सं?, उच्यते--

जत्थ अपव्वो०।५-४७॥५६८॥ कंठा। केवतियात्ति गतं, इयाणिं रूवपुच्छात्ति दारं, केरिसयं भगवतो रूवं?, एस पुच्छा, उच्यते-

सव्वसुरा० ।५-४८ ।५६९॥ गणहरआहार० ।५-४९॥५७०॥ जं तित्थगरस्स रूवं ततो अणंतगुणपरिहीणं गणहराणं, जं गणहराण रूवं ततो अणंतगुणपरिहीणं आहारगसरीरस्स, ततो अणंतगुणपरिहीणं अणुत्तरोववादियाण देवाणं, ततो अणंतगुणपरिहीणं ॥३२९॥

तीर्थ-स्थापना एवं गणधराणां वर्णनं

उवरिमगेवेज्जाणं, एवं जाव सोहम्मगाणं, ततो अणंतगुणपारिहीणं भवणवासीणं, ततो जोतिसियाणं, 'वण' त्ति ततो वाणमंतराणं, वाणमंतराहिंतो अणंतगुणपरिहीणं चक्कवट्टीणं, ततो वासुदेवाणं, ततो बलदेवाणं, ततो मंडलियाणं, सेसरायाणो पिहुजणो य छट्ठाणगतो । रूपादि-श्रेष्ठता

संघयणं० ।५–५०॥५७१॥ भगवतो अणुत्तरं संघयणं अणुत्तरं रूवं अणुत्तरं संठाणं, एवं वन्नो गती सत्तं, सारो दुविहो बाह्योऽभ्यन्तरश्च, बाह्यो गुरुत्तं, अब्भंतरो णाणादी, अणुत्तरो उस्सासनिस्सासगंधो । आदिग्गहणेण गोखीरपंडुरं मंससोणितं ॥ आह—एवमादीयाणि अणुत्तराइं कस्स कम्मस्स उदएण ?, उच्यते, एवमादीणि अणुत्तराइं भवंति नामोदया तस्स ॥ आह—अन्नेसिं पगडीणं णामस्स जे पसत्था उदया जहा इंदियाणि सरीरं अंगाणि इत्यादि अन्नेसिं च खतिए भावे वट्टमाणस्स, खतोवसमिए वा, छउमत्थकालेत्ति भणितं होंति, किन्न होंति अणुत्तरा उदया ?, उच्यते—

पगडीणं० ।५–५१॥५७२॥ जे एताए पुरिल्लगाहाए णामस्स पकारा ण गहिता तस्सेव नामस्स जे अन्ने प्रकारा तेसिं अन्नेसिंपि अणुत्तरा उदया सुभाणं, जओ जारिसो तित्थगरस्स सद्दो तारिसा ण अन्नस्स छउमत्थकालेऽवि, एवं गंधो रसो फासो इत्यादि खयोवसमियं गुणसमुदयं, खाइके भावे वट्टंतस्स अविकप्पं आहंसु, खओवसमियं प्रतीत्य अणंतगुणाभ्यधिकमित्यर्थः, अथवा क्षायिकगुणसमुदायं अविकल्पं-एगलक्षणं सव्वुत्तमं 'आहंसु' तीर्थकरा उक्तवंतः ॥ आह—जओ खतिए भावे वट्टंतस्स जहा अस्साता वेदणिज्जंति, आदिग्गहणेणं जातो य णामस्स अप्पसत्थाओ ताओ तस्स ण किह बाहाकरीओ भवंति ?, उच्चते— ॥३३०॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

व्याकर-णादीनि

अस्साय० । ५-५२॥५७३॥ कंठा ॥ आह—जदि तित्थकरो रूपवं तो सुंदरं?, अह जदि विरूवो?, उच्यते, जदि रूपवं तो सुंदरं, कहं?, उच्चते–

धम्मो० । ५—५३॥५७४॥ कंठा । **इयाणिं वागरणोत्ति** दारं, तत्थ भगवं सव्वेसिं देवणरतिरियाणं एगवागरणेणं सव्वसंसए छिंदति । जदि पुण एक्केक्कस्स एक्केकं संसयं परिवाडीए छिंदेज्जा तो को दोसो होज्जा?, उच्चते—

कालेण० । ५-५४॥५७५॥ एगवागरणे पुण एते ण भवंति गुणा य, के ते?, उच्चते—

सव्वत्थ० । ५-५५॥५७६॥ कंठा ॥ आह-तेसिं तं एगवागरणं कहं सव्वे संसए छिंदति?, सभासाए य परिणमंति?, एतेणाभिसंबंधेण **सोयपरिणामेत्ति** दारं पत्तं उच्चते—

वासोदय । ५-५६॥५७७ ॥ जहा वरिसोदगस्स एगरसवन्नगंधफासस्सवि भायणविसेसे जत्थ पडति तत्थ पिहप्पिहा वन्नादिणो परिणमंति, एवं तेसिं सव्वेसिं सोयाराणं अप्पणिच्चए २ सोतिंदिएणप्पप्पणो सभासापरिणामेणं संसयवोच्छित्तिपरिणामियं परिणमति ॥ किं च–

साधारण० । ५-५७॥५७८॥ सा भगवतो वाणी जम्हा साधारणा णरगादिदुक्खेहिंतो रक्खणाओ, जम्हा य असपन्नत्ति-अणन्नसरिसा, अतस्तस्यामर्थोपयोगो भवति श्रोतॄणां, एतेहिं चेव गुणेहिं सा गिरा गाहगी भवति, जतो य एरिसगुणा सा अतो ण णिव्विज्जति सोता, दिट्ठंतो एगस्स वाणियगस्स एगा किढीदासी, किढी थेरी, सा गोसे कट्ठाणं गता, तण्हाछु- ॥३३१॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥३३२॥

श्रोतृ-परिणामः दानं च

हाकिलंता मज्झण्हे आगता, अतिथोवा कट्ठा आणियत्ति पिट्टित्ता अजिमितपीता पुणो पट्ठविता, सा य वड्डं कट्ठभारं गहाय ओगा-हंतीए पोरुसीए आगच्छति, को य कालो ?, जेट्ठामूलमासो, अह ताए थेरीए कट्ठभाराओ एगं कट्ठं पडितं, ताहे ताए थेरीए ओणमित्ता तं कट्ठं गहितं, तं समयं च भगवं तित्थगरो धम्मं पकहितो जोयणणीहारिणा सरेणं, सा थेरी तं सुद्दं सुणेति तहेव ओणता सोउमाढत्ता, उण्हं तण्हं छुहं परिस्समं च ण विंदति जाव सूरत्थमणे तित्थगरो धम्मं कहेतुं उट्ठितो, एस दिट्ठंतो । एवं-

सव्वाउयंपि सोता० ॥५-५८॥५७९॥ कंठा। सोयपरिणामोत्ति गतं, इयाणिं दाणं वत्ति तित्थगरो जत्थ समोसरति गामादिसु तत्थ जो निवेदेति रायादीणं किं तस्स वित्तिदाणं ? किं च पीतिदाणं ?, उच्यते—

वत्तीओ० ॥ गाथाद्वयं ॥ ५-५९ ॥ ५-६० ॥ चक्कवट्टी वित्तिं देंति निउत्तस्स अद्धतेरस सुवण्णकोडीओ, केसवा एतप्पमाणमेव रुप्पं देंति, मंडलिया अद्धतेरसरुप्पसहस्साणि वित्तिं दिंति, पीतिदाणं पुण अद्धतेरसरुप्पसहस्साइं देंति ॥

भत्तिविभवाणु० ॥ ५-६१ ॥ ५८२ ॥ कंठा। के पुण एवं दाणे गुणा ?, उच्यते–

देवाणु० ॥ ५-६२ ॥ ५८३ ॥ एवं तीर्थकरभक्त्यां क्रियमाणायां देवा अनुवर्तिता भवंति, कथं ?, जो तित्थगराण भत्तिं करेति स देवाणं प्रियो भवति, भक्तिश्चैवं कृता भवति, तित्थगरपूया चेवं थिरीकया भवति, सत्ते अणुकंपत्ति निवेदंतस्स अणुकंपा कता भवति, सातोदयं च वेयणिज्जं कम्मं उवचितं भवति, एते दाणगुणा भवंति । तित्थं च एवं पभावितं भवति। दाणं वत्ति दारं गतं । इयाणिं 'देवमल्ले मल्लाणय'ति दारं, तित्थगरो पढमपोरुसीए धम्मं ताव कहेति जाव पढमपोरुसीउग्घाडवेला, ॥३३२॥
एस देवमल्लो भवति । ताहे बली एति, मल्लंति बलीए णामं, तं को करेति ? केरिसी वा सा ?, उच्यते--

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥३३३॥

बलिः

राया व० ॥ ५-६३ ॥ ५८४-५८५ ॥ ५८६-५८७ ॥ गाथाद्वयं कंठं । तं आढकं तंदुलाणं सिद्धं, देवमल्ले राया व रायमच्चो वा पउरं वा गामो वा जाणवतो महाय महता तुरियरवेणं देवपरिवुडो पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं पविसति, एयं आणयणं, जाहे सा पविट्ठा अब्भंतरपागारंतरं भवति ताहे तित्थयरो धम्मं कहेंतो तुण्हिक्को भवति, ताहे सो रायादी बलिहत्थगतो देवपरिवुडो तित्थकरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं काउं तित्थगरस्स पादमूले तं बलिं निसिरति, तस्सऽद्धं अपडितं देवा गेण्हंति, सेसस्स अद्धं अहिवती गेण्हति, सेसं पागतजणो गेण्हति, ततो सित्थं जस्स मत्थए छुब्भति तस्स पुव्वुप्पन्नो वाही उवसमति, अणुप्पन्ना य रोगातंका छम्मासा ण उप्पज्जंति, ततो बलिए दिन्नाए तित्थगरो उट्ठित्ता पढमपागारस्स उत्तरेणं बारेण निग्गंतु पुव्वाए दिसाए देवच्छंदओ तत्थ जहा समाधीते अच्छति । देवमल्ले मल्लोणयणाति दारं गतं । इयाणिं 'उवरि तित्थं'ति दारं, उवरिं पोरुसीए उट्ठिते तित्थकरे गोयमसामी अन्नो वा गणहरो बितियपोरुसीए धम्मं कहेति, स्यान्मतिः- किं कारणं तित्थकर एव द्वितीयायां पोरुष्यां धर्मं न कथयति ?, उच्यते--

खेदविणोदो० ॥ ५-६७ ॥ ५८८ ॥ तित्थगरस्स खेदविणोदो भवति, परिश्रमविश्राम इत्यर्थः, शिष्यगुणाश्च दीपिताः-प्रभाविता भविष्यंति । 'पच्चतो उभयतोवि'त्ति गिहत्थाण य पव्वइयाण य, जारिसं तित्थकरो कहेति तारिसं सिस्सोऽवि कहेति, अहवा 'पच्चओ उभयतोवि'त्ति न शिष्याचार्ययोः परस्परविरुद्धं वचनं, 'सीसायरियकमो'त्ति आचार्यादुपाश्रुत्य योग्यशिष्येण तदर्थान्वाख्यानं कर्तव्यमिति ॥ स्यान्मतिः-कहिं उ बेट्ठो कहेति ?, उच्यते-- ॥३३३॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥३३४॥

उपरि तीर्थ द्वारं गणधर निष्क्रमणं

रायोवणीय० ॥ ५-६८ ॥ ५८९ ॥ रायोवणीतसीहासणवेट्ठो वा कहयति, तदभावे तित्थकरपादपीठोववेट्ठो कहयति । स्यान्मतिः-किं सो कहयति ?–

संखातीते०॥ ५-६९ ॥५९०॥ उवरि तित्थंति दारं गतं । ताव तित्थगरस्स निक्खमणं भणितं ॥ इयाणिं गणहराणं भणियव्वं, जहितं सामाइयं कहिज्जिहिति, भगवता अत्थो भणितो, गणहरेहिं गंथो कओ वाइओ य इति । तत्थ भगवतो समोसरणे निप्फन्ने एत्थंतरे देवजयजयसद्दसंमिस्सदेवदुंदुहिसद्दायण्णणुप्फुल्लणयणगगणावलोयणोवलद्धसग्गवधूसमेतसुरवरेंदाणं जन्नवाडसमब्भागतजणाणं परितोसो संजातो-अहो जन्निए ! सुजट्ठं २, विग्गहवंतो किल देवा एत्थ आगता इति । तत्थ य वेदवी रुत्विज उन्नयविसालकुलवंसा एक्कारस जच्चमाहणा जन्नवाडंमि समागता । जहा को ?—

पढमेत्थ इंदभूती० ॥ ६-३ ॥ ५९१ ॥ ते य किह पव्वइया इंदभूतिपमोक्खा ?, तंमि जन्नवाडे आगता, तत्थ इमाओ गाहाओ घोसेयव्वाओ–

एक्कारसवि गणहरा० ॥ ६-३ ॥५९२॥ पढमेत्थ इंदभूती० ॥ ६-३ ॥५९३॥ मंडिय० ॥ ६-४ ॥ ५९४ ॥ एक्कारसनिक्खमणं ॥ ६-५ ॥ ५९५ ॥ ५९६-५९७ ॥ जह एक्कारस निक्खंता, आणुपुव्वी परिवाडी कमो एगट्ठा, जहा य तित्थं सुहम्माओ पसूतं, जहा य निरवच्चा अवसेसा परिनिव्वुता, एयं सव्वं भणीहामि । तत्थ ताव पढमं इंदभूतिस्स भणामि-इंदभूति नामो पंचखंडियसयपरिवारो सव्वपहाणो मगहाविसए, सो य जन्नदिक्खितो मक्खितो य मज्झिमाय अच्छति ॥ इओ य ॥३३४॥

अत्र गणधर-वक्तव्यता आरभ्यते

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥३३५॥

गणधर दीक्षा

उज्जाणे देवुज्जोयं पासित्ता हरिसियमणो चिंतिऊणं भासति तेसिं पुरओ- अहो मया मंतेहिं सुरा आहूया जे जन्ने समुवट्ठिता, एवं वोत्तूणं खंडिगेहिं सह निग्गतो, उज्जाणे अपासमाणो उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए देवसंनिवायं पासति, भासति य- किमेतंति ?, अन्नेहिं से कहितं, जहा-एस सिद्धत्थरायपुत्तो महावीरवद्धमाणो तवं कातुं केवली जाओ किल सव्वन्नू सव्वभावदरिसी, तं वयणं सोऊणं भासति अमरिसिओ-को अन्नो ममाहिंतो अब्भहितो जत्थ देवा एंति ?, ता एह वच्चामो जा णं पराजिणामि, किं सो जाणति ?, एतेण पणिहाणेण पहावितो पंचखंडितसयपरिवारो । तत्थ इमा

दट्ठूण० । ६-४ । ५९८॥ दट्ठूण कीरमाणीं । पच्छा छत्तादीए य अतिसए भगवतो पासितुं चिंतेति-अहो सुप्पउत्तो डंभो, जाणति दूरे गंतुं चिट्ठितो, ताहे णायएण जगसव्वबंधुणा

आभट्ठो० य । ६-४ ॥५९९॥ ताहे अच्छरं से जातं, णाममवि मम जाणति, ताहे पुणोवि अप्पाणं आसासेति-को वा मम सव्वसत्थविसारदस्स णामं वा गोत्तं वा ण मुणति?, एवं तेण अप्पा समासासितो, तस्स य संसतो-किं मन्ने जीवो अत्थि णत्थि ?, ण पुण अहंमाणेण कंचि पुच्छति, काणि य ते वेदपदाणि जेसिं सो सम्मं अत्थं न जाणति?, एतेहि य कारणेहिं संसयः-उभयोपचारात् १ अनुपलब्धेः २ विप्रतिपत्तिभ्यश्च ३, तत्थ उभयोपचारो यथा शरीरे च आत्मोपचारः, यथा कंचित्पिपीलिकादिसत्त्वं दृष्ट्वा ब्रवीति लोकः-यथेदं जीवं न हिंसि, शरीरव्यतिरिक्ते च यथा कंचित् मृतं दृष्ट्वा लोको ब्रवीति-गतःसजीवः यस्येदं शरीरामिति १, तथाऽनुपलब्धिर्द्विधा सतामसतां च, तत्र सतां मूलोदकपिसाचादीनां, असतां शशविषाणादीनां २, विप्रतिपत्तिश्चाचार्याणां, एके ॥३३५॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

आहुः-‘एतावानेव पुरुषो, यावानिंद्रियगोचरः । भद्रे! वृकपदं पस्य, यद्वदंत्यबहुश्रुताः ॥ १॥ पिब खाद च साधु सोभने!, यदतीतं वरगात्रि! तन्न ते । नहि भीरु! गतं निवर्तते, समुदयमात्रमिदं कडेवरम् ॥ २ ॥ अन्ये त्वाहुः-‘वासांसि जीर्णानि यथा विहाय, नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि । तथा शरीरान्यपरापराणि, जहाति गृह्णाति च पार्थ! जीवः ॥ १ ॥’ एतानि संशयनिमित्तानि तस्स, ततो सो चिंतेति-जदि मज्झ एतं संशयं जाणेज्ज छिंदेज्ज वा तो मे विम्हओ होज्जा, एवं चिंतेतो पुणो सामिणा भणितो-गोयमा! किं जीवो अत्थि उदाहु णत्थित्ति एस तुह संसयो, संसयकारणाणि य भणिताणि, केसिंचिय वेदपदाणं सम्मं अत्थो न णज्जातित्ति अत्थो समट्ठो?, हंता अत्थि, एवं गोयमा ! अत्थि जीवो, जो अहमिति पडिवज्जति, उवओगलक्खणो, कत्ता य करणसहितो-काया अन्नो, मुत्तो, निच्चो, कत्ता तहेव भोत्ता य । तणुमेत्तो गुणवन्तो, उद्धगती वन्नितो जीवो ॥ १ ॥ सुद्धपद-वाच्यत्वात्, भोक्तृयोगोपयोगसंसारमोक्खसद्भावात्, एते हेतवो वाच्याः, वेदपदाण य अत्थो भगवता से कहितो। एत्थ संभंतो, संबुद्धो य भणइ पंचखंडितसते-एस सव्वन्नू, अहं पव्वयामि तुब्भे जहिच्छियं करेह, ते भणंति-जदि तुब्भे एरिसगा होंतगा पव्वयह तो अम्हं का अन्ना गतित्ति, एवं सो पंचसयपरिवारो पव्वतितो । एवं-

६००-६०१॥ **तं पव्वइतं सोउं०** ।६-१९॥६०२॥ उव्विग्गो, तहेव समाभट्ठो, संसयो वागरितो ।

किं मन्ने अत्थि कम्मं० । ६-२५॥६०४॥ वेयपयाण य अत्थो कहितो जाव

छिन्नंमि संसयंमि ।६-२६ । ६०५॥पंचसयपरिवारो पव्वतितो । ततिओवि तहेव आगतो, णवरि चिंतेति-वंदामि णं, जदि तेऽवि पांत्तयाविया, एवं जाव पंचसतपरिवारो पव्वतितो, णवरं संसओ तज्जीवतस्सरीरिउत्ति । एवं वियत्तोऽवि, संसतो पंच ॥३३६॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥३३७॥

गणधराणां क्षेत्रादि

भूता अत्थि णत्थि?, एवं सेसावि, इमाओ चिंताओ, इमो य परिवारो-जीवे १ कम्मे २ तज्जीव ३ भूत ४ जारिसतो इहलोए तारिसतो परलोगेऽवि ५ बंधमोक्खे संसयो ६ देवा अत्थि णत्थि ७ एवं नेरतिया ८ पुन्नपावं अत्थि णत्थि ९ परलोगो अत्थि णत्थि? १० णेव्वाणं अत्थि नत्थि? ११। आइल्लाणं पंच पंच सता, मंडिय मोरियपुत्ताणं अद्धुट्ठद्धुट्ठसता, सेसाणं चउण्हं तिन्नि तिन्नि सया। अकंपियअयलभातीणं एगो गणो, मेयज्जपभासाणं एगो गणो, एवं णव गणा होंति।

जदा य गणहरा सव्वे पव्वजिता ताहे किर एगनिसेज्जाए एगारस अंगाणि चोद्दसहिं चोद्दस पुव्वाणि, एवं ता भगवता अत्थो कहितो, ताहे भगवंतो एगपासे सुत्तं करेति, तं अक्खरेहिं पदेहिं वंजणेहिं समं, पच्छा सामी जस्स जत्तिओ गणो तस्स तत्तियं अणुजाणति, आतीए सुहम्मं करेति, तस्स महल्लं आउयं, एत्तो तित्थं होहितित्ति। तत्थ सक्कादओ देवा सव्वदेवसमोसरणं, सव्वड्ढगावि देवा पणामं तत्थगया कुव्वंति, सयं सामी चुन्नाणि छुहति, जाहे य ते थालं करेंति ताहे अज्जसुहम्मस्स निसिरंति गणं। एवं ता पव्वइता। इयाणिं तेसिं गणहराणं उट्ठाणपरियाणितं इमाए गाथाए अणुगंतव्वं सव्वं—

खेत्ते काले जम्मे०। ६-६५॥६४२॥ तत्थ पढमं खेत्तं, मगहा जणवए गोयमणामो (गोबरनामो) णाम गामो, तत्थ तिन्नि गोयमा जाता, कोल्लाए संनिवेसे वियत्तो सुहम्मो य, तंमि चेव मगहाजणवते मोरियसंनिवेसे मंडिया मोरिया दो भायरो, अयलो य कोसलाए, कोसला नाम अयोज्झा, मिहिलाए अकंपितो जातो, तुंगियसंनिवेसे मेयज्जो वच्छभूमित जातो, पभासो रायगिहे जातो। **खेत्तदारं गतं ॥ कालेत्ति दारं,** गोयिमसामिस्स जेट्ठाणक्खत्तं। ॥३३७॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता...........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्‌घात निर्युक्तौ

॥३३८॥

गणधराणां क्षेत्रादि

जेट्ठा कत्तिय साती० ।६-६९॥६४६॥ कालेत्ति दारं गतं । जम्मम्मि दारे को कातो पितामाताए जातो?--तिण्हं वसुभूती पिता, धणमित्तो वियत्तस्स, धंमिल्लो सुधम्मस्स, धणदेवो मंडियपिया, मोरियस्स मोरितो चेव, अकंपियस्स देवो, अयलभायस्स वसू, मेयज्जस्स दत्तो, पभासस्स बलो ॥ इमातो मातरो--तिण्हं पुहवि माता, वियत्तस्स वारुणी, भद्दिला सुहम्मस्स, वीरदेवी मंडियमोरियपुत्ताणं, जयंती अकंपितस्स, नंदा अयलभायस्स, वरुणदेवा मेयज्जस्स, अतिभद्दा पभायस्स । जंमंति दारं गतं । इयाणिं गोत्तत्ति दारं—

तिन्नि य गोयमगोत्ता भारद्दा अग्गिवेस वासिट्ठा । कासव गोयम हारिय कोडिन्नदुगं च गोत्ताइं ॥६-७२॥६४९॥

गोत्तन्ति गतं । अगारपरियायो—

पन्ना छत्तालीसा बायाला होंति पन्नपन्ना य । तेवन्न पंचसट्ठी अडयालीसा य छायत्ता ॥६-७३॥६५०॥

छत्तीसा सोलसगं अगारवासो भवे गणहराणं । छउमत्थयपरियागं अहक्कमं कित्तइस्सामि ॥६-७४॥६५१

इयाणिं छउमत्थपरियायो—

तीसा बारस दसगं बारसया चत्त चोद्दस दुगं च । णवगं बारस दस अट्ठगं च छउमत्थपरियायो ।६-७५।यथासंखं छउमत्थप्परीयागं अगारवासं च वोसिरित्ताणं । सव्वाउयस्स सेसं जिणपरियागं वियाणाहि ॥६॥७६॥६५३॥

बारस सोलस अट्ठारसेव अट्ठारसेव अट्ठेव । सोलस सोलस एगवीस चोद्द सोल सोले य ॥६-७७॥६५४

॥३३८॥

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥३२९॥

गणधर क्षेत्रादि कालद्वारं

इयाणिं सव्वाउयं—

बाणउती चउसत्तरि सत्तरि तत्तो भवे असीती य। एगं च सयं तत्तो तेसीती पंचणउती य ॥६-७८॥६५५॥
अट्ठत्तरिं च वासा तत्तो बावत्तरिं च वासाइं। बावट्ठी चत्ता खलु सव्वगणहराउयं एयं ॥६-७९॥६५६॥

इयाणिं आगमेत्ति दारं, सो आगमो दुविहो--लोइतो लोउत्तरिओ य, लोइतो चोद्दस विज्जाठाणाणि,-अंगानि चतुरो वेदा, मीमांसा न्यायविस्तरः। धर्मशास्त्रं पुराणं च, विद्या ह्येताश्चतुर्दश ॥ १ ॥ तत्रांगानि षट् तद्यथा--सिक्षा कल्पो व्याकरणं छंदो निरुक्तं ज्योतिषं चेति, लोउत्तरो दुवालस अंगा चोद्दस पुव्वाणि। ते य--

सव्वे य माहणा जच्चा० ।६-८०॥६५७॥ एस दुविहोऽवि आगमो तेसिं। इयाणिं परिनेव्वाणं-सामिस्स जीवंते णव कालगता, जो य कालं करेति सो सुधम्मसामिस्स गणं देति, इंदभूती सुधम्मो य सामिंमि परिनिव्वुए परिनिव्वुता। को केण तवेण परिनिव्वुतो ?--

मासं पाओवगता ।६-८२॥६५९॥ सव्वातो आमोसहिमादियाओ लद्धीओ, संघयणं संठाणं च सव्वेसिं च पढमं चसद्-सूइतमिति। एवं सामिस्स भासगस्स गाहगाण गणहराणं निग्गमो भणितो। निग्गमेत्ति दारं गतं। इयाणिं तं कतरंमि खेत्ते निग्गयंति खेत्तदारं पत्तं, तं ताव अच्छतु, कालदारं भणामि बहुवत्तव्वंतिकाउं, पच्छा खेत्तादीणि संबद्धाणि। अन्ने भणंति--जेण काले बद्धं सव्वं, अथवा अन्नोन्नाणुगता दोऽवि भावा, अहवा कालो चेव पुव्वं, जेण कालाणुयोगो पुव्वं पच्छा दव्वाणुयोगो। ॥३२९॥

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥३४०॥

द्रव्य कालादि

अन्ने भणंति--आगासत्थिकातो दव्वं, कालो गुणः, योगश्च पूर्वं, तेण काल एव भवे य पूर्वं, अहवा-कत्थइ देसग्गहणं कत्थति भन्नंति निरवसेसाइं । उक्कमकमजुत्ताइं कारणवसतो निरुत्ताइं ॥ १ ॥ अन्ने भणंति—खेत्ता कालो अंतरंग इति दरिसणत्थं कालदारं ताव वन्निज्जति, कालंतरंगदरिसणहेतुं विवज्जओत्ति ओवाणाओ अंतरंगत्तं, पुण कालो दव्वस्स चेव पज्जाओ, खेत्तं पुण आहारमेत्तमिति । सो य कालो एक्कारसविहो, णामकालो ठवणकालो दोऽवि गता, सेसो--

दव्वे अद्ध०६-८३॥६६०॥ दव्वकालो अद्धाकालो आहाउयकालो उवक्कमकालो देसकालकालो कालकालो पमाणकालो वन्नकालो भावकालो, तत्थ दव्वकालो नाम जो जस्स जीवदव्वस्स अजीवदव्वस्स वा संचिट्ठणाकालो सो दव्वकालो, जहा- 'नेरतिए णं भंते ! नेरइए'त्ति, संचिट्ठणा, अजीवाणं धम्मत्थिकायादीणं सव्वद्धा, परमाणुमादीणं च जा जस्स संचिट्ठणा, एस दव्वकालो, जंमि वा काले दव्वं वण्यते, अह नेरइए य ४, गतिरागतिं पडुच्च सादिया सपज्जवसिया, सिद्धा संसारविगमं (पडुच्च) सादिया अपज्जवसिता, भविया संसारं पडुच्च अणादीया सपज्जवसिया, अभवसिद्धिया संसारं पडुच्च अणादीया अपज्जवसिया, अचेयणस्स अत्थस्स चउव्विहा ठिती इमा-पोग्गलपरमाणुसमादिं पडुच्च सादीया सपज्जवसिया १ अणागतद्धा सादीया अपज्जवसिया २ अणागतद्धा णाम वट्टमाणसमयं पडुच्च जे एस्सा समया, तीतद्धा अणाइया सपज्जवसिआ ३, अतीतद्धा नाम वट्टमाणसमयं पडुच्च जे अतीता समया, तिन्नि काया दव्वट्ठपदेसट्ठयं पडुच्च अणादीया अपज्जवसिया ४. तिन्नि काया नाम धम्मत्थिकायो अधम्मत्थिकायो आगासत्थिकायो. अहवा दवितं तु तं चेव, उक्तंच- 'समयाति वा आवलियाति वा जीवाति या अजीवाति य ॥३४०॥

'काल'स्य एक्कारस-भेदानां वर्णनं

प्रत सूत्रांक [-] दीप अनुक्रम [-]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता...........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥३४१॥

पवुच्चंति' अथवा 'कालश्चेत्येके' (तत्त्वा०५-३८) एस दव्वकालो । अद्धाकाले अणेगविहे, से णं समयद्धयाए, आवलियद्धयाए जाव ओसप्पिणिअद्धयाए, जुगं पंचसंवच्छरं जाव परियट्टा भाणियव्वा ॥ अहाउकालो नाम–

नेरइय०॥ ६-८७ ॥ ६६४ ॥ नेरतिय जाव देवाणं आहाउयं जं जेण निव्वत्तियमन्नभवे सेत्तं पालेमाणे सो भवति अहाउकाले । उवक्कमकालो दुविहो- सामायारीउवक्कमकालो आउउवक्कमकालो य, उवक्कमकालो नाम अपत्तावत्थापावणपत्थावो, तत्थ जो सो सामायारीउवक्कमकालो सो तिविहो, तंजहा- ओहसामायारी पदविभागसामायारी दसविहसामायारी । तत्थ ओहसामायारी ओहनिज्जुत्ती पदविभागसामायारी कप्पववहारा, ओहसामायारी णवमस्स पुव्वस्स ततियाओ आयारवत्थूतो वीसतिमं पाहुडं, तत्थ ओहपयपाहुडं, ताओ निज्जूढा उवक्कामिता । कप्पव्ववहारा णवमाओ पुव्वाओ ततियाओ आयारवत्थुओ वीसइमं पाहुडं तओ, दसविहसामायारी उत्तरज्झयणेहिंतो नीणिता, तत्थ कप्पववहारा सट्ठाणे भन्निहिंति । ओहसामायारी पुण भवति, तं वक्खेउकामो णिज्जूहगो णिज्जूहितु पवत्तो मंगलत्थं अरहंतादीणं णमोकारं करेति–

अरहंते वंदित्ता०॥ओघानिर्युक्तिः १॥ एत्थंतरे ओहनिज्जुत्तिचुन्नी भाणियव्वा जाव सम्मत्ता । एतं ओहनिज्जुत्तीए ठाणं, एत्थंतरे वक्खाणिज्जतित्ति, एवं ओहसामायारी गता । इयाणिं दसविहसामायारी, सा इमाए गाहाए अणुगंतव्वा, तंजहा—

इच्छा मिच्छा तहक्कारो आवसिया य निसीहिया । आपुच्छणा य पडिपुच्छा छंदणा य निमंतणा ॥७॥१॥६६६॥
उवसंपया य काले सामायारी भवे दसविहाओ । एतेसिं तु पयाणं पत्तेय परूवणं वोच्छं ॥ ७ ॥ २ ॥ ६६७ ॥

इच्छाकारादि सामाचार्यः ॥३४१॥

अत्र ईच्छाकार-आदि सामाचारी वर्णयते

प्रत सूत्रांक [-]
दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥३४२॥

इच्छा-कारादि सामाचार्यः

एत्थ कारसद्दो पयोगाभिधाती दट्ठव्वो, सो य सव्वदारेसु संबज्झति, इच्छग्गहणे य इच्छकारगहणं, सट्ठाणे इच्छकारपयोगो, दसविधसामायारीए पढमभेदोत्ति वुत्तं भवति, एवं मिच्छादुक्कडपयोगो, तहात्ति पयोगो जाव उवसंपदाकारपतोगो विभासियव्वो। तत्थ इच्छाकारपतोगो णाम जं इच्छया करणं, न पुण बलाभियोगादिणा, इच्चेयस्स अत्थस्स संपच्चयत्थं इच्छाकारसद्दं पउंजंति। एसो य कंमि विसए केण कायव्वोत्ति ?, भण्णइ-जति अब्भत्थेज्ज परं कारणजाते, ता अब्भत्थंतएण इच्छक्कारपयोगो कायव्वो, अहवा अणब्भत्थिओऽवि कोई कारणजाते करेज्ज तत्थवि तेण करेंतेण इच्छक्कारपओगो कायव्वो, तस्स अणब्भत्थितकरेंतगा पविरलात्ति कोइग्गहणं, आह- किमिति इच्छाकारपयोगो कीरति ?, उच्यते, बलाभियोगकरणं मा भूदिति, जतो ण कप्पति बलाभितोगो तु, तुसद्दा कत्थति कप्पतिवि, एतीए गाहाए अवयवत्थो भण्णति-जदित्ति अब्भुवगमे, जं अब्भत्थणाए अब्भुवगमं करेति आयरितो तं दरिसेति, जथा साधूणं अब्भत्थेउं ण वट्टति परो उ, किमिति ?, अणिगूहितबलविरिएण ताव होयव्वंति, बलं सामत्थं विरियं तु उच्छाहो। आह- जदि साधूणं परो अब्भत्थेउं ण वट्टति तो किं अब्भुवगमं करेति ?, भण्णति- जति अब्भत्थेज्ज परं कारणजाते, ण अण्णहा, कारणजातं दंसेति-जदि तस्स सो अणलो--असमत्थो ण याणती वा, अण्णं वा करेति, गिलाणादीहि वा वावडो होज्जा, ताहे तत्थ रातिणियं वज्जेत्ता इच्छकारं करेति सेसाणं, ते य किह भणंति ?, एतं ता मम कज्जं इच्छाकारेण करेहि, तुमं कारेंतुंपि न वट्टति साधू, इच्छा मे जदि अत्थित्ति भणितं होति, 'करेज्ज वा से कोति'त्ति तत्थ अहवा विधिणा से तं तं सतं करेंतं अण्णं वा अब्भत्थेंतं पासित्ता अण्णो निज्जरट्ठी भणेज्ज- अहं तुब्भं एतं इच्छकारेण करेमि, तत्थवि जस्स किज्जिहिति सो भणति- करेहि इच्छाकारेण, णणु किमिति सोवि इच्छक्कारं करेति ?, भण्णति- मज्जादामूलियं, साधूणं

॥३४२॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता..........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] “आवश्यक” निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥३४३॥

इच्छा-कारादि सामाचार्यः

एस मज्जादामूलं, अहवा एतेहिं कारणेहिं परं अब्भत्थेज्ज- सयं करेति कोति किंचि लेवणादि, अन्नस्स वा करेंतं दट्ठूण तत्थवि भणेज्ज-इच्छकारेण ममवि एतं पकियओ करेहि लेवादि संसट्ठकप्पणं, तत्थवि तेण भाणियव्वं- करेमि इच्छाकारेण, अहं सेणाडो गिलाणादीण व कज्जे वावडो तो तं कारणं दीवेति, एतेण ण करेमि, इतरहा नियमा कायव्वं साधूण अण्णन्नेण, अणुग्गहोत्ति, एवं ता अन्नं आणवेति । जति अब्भत्थेज्ज परो तं साधुं तहेव नेयव्वं । अप्पणा परेण वा । अहवा एतेण जदि अब्भत्थेज्ज परं किंचि करेमि वेयावच्चं कज्जहेतुं वा णाणादीणं निज्जराहेउं वा, तत्थवि से कोइ अणुग्गहं करेज्जा, कोति णवि समत्थो जाए स विन्न-वणा, तत्थवि तेसिं दोण्हवि भवे इच्छकारपयोगे, जत्थवि राइणियं वा ओमं वा सुत्तत्थाणि पुच्छति तत्थवि इच्छा कायव्वा, उव-हिमादीण वा निमंतणे इति । सीसो आह- भगवं ! किमिति सव्वत्थ इच्छक्कारपयोगो रातिणियादीणंपि ?, आयरितो भणति-वच्छ ! जेण आणाबलाभियोगो निग्गंथाणं सेहेऽवि ण वट्टति, किमंग पुण राइणिए ?, तम्हा-इच्छा पउंजियव्वा सेहे राइणिए तहा । किं सव्वत्थ आणाबलाभियोगे ण वट्टति ?, उच्यते—जो पुण खग्गूडो तंमि आणावि बलाभिओगोवि कीरति, तंमिवि पढमं इच्छा पउञ्जति जदि करेति सुंदरं, अह ण करेति ताहे बलामोडीए कारिज्जति, तारिसा ण संवासेयव्वा, अह ते भाया भागणेज्जादी वा ण तरंति परिच्चतितुं ताहे आणाबलिभितोगोवि कीरति ॥

जह जच्चबाहलाणं० । ७-१३॥६९८॥ जहा जदा किर जच्चबाहलो आसकिसोरो दमिज्जातीत्ति ताहे वेयालियं अभिवा-सिऊण पहाए अग्घेत्तुण वाहियालिं नीतो, खलिणं से ढोइतं, सयमेव तेण गहितं, विणियत्ति राया सयमेवारूढो, सो हितइच्छितं वूढो, रन्ना आहारलयणादीहिं सम्मं पडियरितो, पतिदिहं च विणीयत्तणओ एवं वहति, ण तस्स बलाभियोगो पवत्तति । अवरो

॥३४३॥

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥३४४॥

इच्छा-कारादि सामाचारी

पुण मगहादिजणवदजातो आसो, सोऽवि तहेवाभिवासितो किर मातं पुच्छति-किं एतं कज्जति ?, सा भणति-तुज्झ पुत्त ! अमंगलपडिघातो कीरति, कल्लं वाहिज्जिहिसि, तो तुज्झ कल्लं जवा य खलिणं य पणामिज्जिहिति, ता खलिणं लएज्जाहि, विलग्गे य तस्स मणीसितं वहेज्जासि, पदे पदे पदसतं करेज्जासि, एवं होउत्ति पडिस्सुतं, बितियदिवसे कयकोउओ सतमेव खलिणं गेण्हति, राया सहरिसो सयमेव विलग्गो, जहा भणितं तहा वूढं, पच्छा राया सयमेव वीसामेतुमारद्धो, तो अणेगा पुरिसा णिवतिता, तेहिं उव्वलितो ण्हवितो य, सव्वप्पहाणो य से आहारो दिन्नो, पच्छा णाणालंकारविभूसितो मायाए मूलं गतो, तुट्ठो पुणरवि बितियादिवसे णिसि मातं पुच्छति, सा भणति-अज्ज वामं वामेण वहसुत्ति, एवं करेमि, कल्लं तहेव कतो, ता सो णेच्छति खलिणं वा किंचि कातुं, ताहे णिसट्ठापहते बला कवितं दाऊण वाहितो, पुणो जवसं णिरुद्धं, ताहे सो छुहातितो मातं भणति-अज्ज ते मारावितो, सा भणति---दोऽवि ते मग्गा दिट्ठा, जेण रुच्चति तेण वच्चसु, ततियदिवसे मणीसितं वूढो, पुणो सक्कारितो । एवमिहावि--

पुरिसज्जाए० ॥ ७-१४।६१९ ॥ विपत्ती अविणीयस्स, संपत्ती विणयस्स उ । किं च-एगस्स साधुस्स लद्धी अत्थि, ण करेति बालवुड्ढाणं, आयरिएहिं पडिचोदितो-कीस अज्जो ! ण करेसि ?, भणति---ण कोति ममं अब्भत्थेति, ताहे आयरितो भणति-तुमं अब्भत्थणं मग्गंतो चुक्किहिसि लाभगं, जहा सो मरुतो णाणमएण मत्तो, कत्तियपुण्णिमाए लोगो दाणं देति, राया य, अन्ने धेज्जाइया गंतुं गंतुं आणेति, एगो नेच्छति, भज्जाते भणितो- जाहि, सो भणति-एगं ताव शूद्राणां प्रतिग्रहं गृह्णामि, द्वितीयं तेषां गृहं गच्छामि ?, यस्यासप्तमस्य कुलस्य कार्यं सो मम आनयित्वा प्रयच्छतु, एवं सो जावज्जीवाए दरिद्दो जातो, एवं ॥३४४॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता...........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥३४५॥

इच्छाकारादिसामाचारी

तुमंपि अब्भत्थणं मग्गंतो चुक्किहिसि, एतेसिं पुण बालगिलाणाणं अन्ने अत्थि करेंतगा, तुज्झवि एसा लद्धी एवं चेव विराहिति जहा तस्स मरुयस्स । एवं भणितो पडिभणति-एवं सुंदरं जाणंता अप्पणा कीस ण करेह ?, आयरिया भणंति-अज्जो ! सरिसो तुमं तस्स वाणरगस्स, जहा एगो वाणरगो रुक्खे अच्छति सीतवातेण झडिज्जंतो, ताहे सुहरीए सउणियाए भणितो-वाणरगा ! वाणरगा! णिरत्थयं वहसि बाहुदंडाइं । जो पायवस्स सिहरे ण करेसि कुडिं पडालिं वा ॥१॥ केती अन्नंपि भणंति-वासेण झडिज्जंतं रुक्खग्गे वाणरं थरथरंतं । सुघराणाम सउणिया, भणति तयाणिं वएसंती ॥ १ ॥ छेत्तूण मे तणाइं आणेऊणं च रुक्खसिहरम्मि । वसही कया निवाता तत्थ वसामिं निरुव्विग्गा ॥ २॥ एत्थ हसामि रमामि य वासारत्ते य णविय ओल्लामि। अंदोलमाणि वाणर! वसंतमासं विलंबेमि ॥ ३ ॥ हत्था तव माणुसगस्स जारिसा हिदयए य विन्नाणं । हत्था विन्नाणं जीवितं च मोहप्फलं तुज्झं ॥४॥ विसहसि धारप्पहरे ण य इच्छसि वसहिमप्पणो काउं । वाणर ! तुमे असुहिते अम्हेवि धितिं ण विंदामो ॥ ५ ॥ सो तीए एवं वुत्ते तुण्हिक्को अच्छति, ताहे दोच्चंपि भणति, सो रुट्ठो रुक्खं दुरुहितुमाढत्तो, सा णट्ठा, तेण तीसे य तं घरं सुंबं २ विक्खिन्नं । अन्ने भणंति-जह पढमं तह बितियं तह ततियं तह चउत्थयं भणितं । पंचमियं रोसवितो संदट्ठो वाणरो पावो ॥ १ ॥ कुद्धो संदट्ठोट्ठो लंकाडाहे व जहय हणुमंतो । रोसेण धमधमेंतो उप्फिडितो तं गतो सालं ॥ २ ॥ आकंपितंमि तो पादवंमि फिरिडित्ति णिग्गता सुघरा । अन्नंमि दुमंमि ठिता झडिज्जते सीतवातेणं ॥ ३ ॥ इतरोवि य तं नेड्डं घेत्तूणं पादवस्स सिहराओ। कूलं एकेक्कं अंछिऊण तो उज्झती कुवितो ॥ ४ ॥ भूमिगतंमि तो निड्डयंमि अह भणति वाणरो पावो । सुघरे अणुहितहिदए ! सुण ताव जहा अविरियासि ॥ ५ ॥ णित्तसि ममं मयिहरिया, णेवासि मम सेड्डिया व णिद्धा वा । सुघरे ! अच्छसु विघरा, जा वहासि ॥३४५॥

श्री आवश्यक-चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥३४६॥

इच्छाकारादिसामाचारी

लोगतत्तीसु ॥ ६ ॥ भणति य इदाणिं सुहं अच्छ, एवं तुमंपि मम चेव उवरिएण जातो। किंच-मम अन्नंपि णिज्जरादारं अत्थि, तेण मम बहुतरिया णिज्जरा, तं लाभं चुक्कीहामि, जधा सो वाणियतो, दो वाणियगा ववहरंति, एगो पढमपाउसे मा मोल्लं दायव्वं होहितित्ति सयमेव आसाढपुण्णिमाए घरं पत्थतितो, बीएण अन्नेसिं अड्डं वा पादं वा छावितं, सतं ववहरति, तेण तद्दिवसं बिगुणो तिगुणो लाभो लद्धो, इतरो फिट्टो, एवं चेव अज्जो! जादि अप्पणा एतं वेयावच्चं करेमि तो सुत्तत्थादीणि गच्छे अदेंतो चुक्कीहामि, तेहिं णट्ठेहिं मम गच्छसारक्खणाए बहुतरिया निज्जरा णत्थि, एत्थ 'सुत्तत्थेसु अचिंतण०'गाहा वन्नेयव्वा (आवश्यकहारिभद्रीयवृत्तिः पत्र २६३) इच्छत्ति पदं गतं। इयाणिं मिच्छा, मिच्छत्ति मिच्छादुक्कडपयोगो, मिच्छादुक्कडपतोगो नाम जं कहमवि पावकम्मे आसेविते अकरणीतमेयंति अभिप्पाएण अपुणकरणताए अब्भुट्ठियं मिच्छादुक्कडंति पउंजंति, मिच्छत्ति वा वितहंति वा असच्चंति वा असड्डियंति वा अकरणीयंति वा एगट्ठा. दुक्कडंति वा सावज्जमणुट्ठितंति वा पावकम्ममासेवितंति वा वितड्डमाइन्नंति वा एगट्ठा, एसो य जत्थ जेण जहा कायव्वो तं भन्नति--

संजमजोए अब्भुट्ठिएण०।७-२०॥६८२॥ संजमजोगे जंकिंचि वितहमायरियंति, एत्थ संजमजोगो नाम सावज्जजोगपरिन्नावावारो, संजमोत्ति वा सामाइयंति वा एगट्ठा, वितहमायरियं नाम पडिसिद्धकरणादि आसेवितं, तत्थ अब्भुट्ठितेणंति-अपुणकरणादि अब्भुववट्ठितो अब्भुट्ठितो, तेण 'मिच्छा एतंति वियाऊणं'ति मिच्छा अकरणिज्जं एयं जं किंचि संजमजोगे वितहमायरितं इति, एवं वियाणिऊण- वितहं जाणिऊण, परिन्नाय इत्यर्थः, एवं मिच्छत्ति कायव्वं, मिच्छत्ति मिच्छादुक्कडपतोगो, अहवा सामन्नेण जहा मिच्छादुक्कडप्पयोगो कायव्वो तं भन्नति एताए गाहाए, तं०-संजमजोगे पुव्वभणिते अब्भुवेच्च ठितेणं जं वितहमाय-

॥३४६॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता...........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णिः-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥३४७॥

इच्छाकारादिसामाचारी

रियं मिच्छा एतं वियाणिऊण इति-एवं मिच्छात्ति कायव्वा इति। एत्थ सीसो आह–भगवं! जदि संजमजोगे जं वितहमातिन्नं तत्थ मिच्छात्ति सामायारीं पउंजति तो अम्हे पुणो पुणो वितहमायरिऊण मिच्छात्ति करेमो तो पडिकंतं भविस्सति, मिच्छकारो परिजितो, एवं च सोग्गती अदुलभा इति, आयरितो भणति--वच्छ!

यदि य०। ७-२१ ॥ ६८३ ॥ जदि णाम पावकम्ममासेविऊण अवस्सं मिच्छादुकडपयोगेण पडिकम्मियव्वं तो वरं तं चेव ण कायव्वं। स्यान्मतिः-एवं पुण मिच्छादुकडवत्तिया गुणा ण भवंतित्ति, भन्नति-जदि तं चेव ण करेति तो होति पए पडिकंतो, पएत्ति पढमं सुतरामित्यर्थः। यस्तु मिच्छाकारो परिजितो सो पत्तकालो इच्छिज्जइत्ति, जो य ते अभिप्पातो जहा किर वितहं आयरिऊण मिच्छात्ति सामायारिं करेमो तो मुच्चिहामो, एत्थ भन्नति---

जं दुक्कडंति०। ७-२२ ॥ ६८४ ॥ जं कारणं पडुच्च दुकडंति मिच्छत्ति मिच्छदुकडं पउंजइ तं कारणं भुज्जो अपूरेंतो--असेवंतो तिविहेण पडिक्कंतो, पुव्वासेवितं पडुच जो एवं मिच्छत्ति करेति तस्स खलु दुकडं मिच्छत्ति, सो मिच्छादुकडसामायारीए वट्टतित्ति भणितं होति। पुणो आह सीसा--सुट्ठु एतं जं तं चेव ण कायव्वं, ता होइ पए पडिक्कंतो इच्चादि, किं तु अम्हे एवं न चएमो तो दोऽवि करेमो को दोसो?, भन्नति—

जं दुक्कडंति०। ७-२३ ॥ ६८५ ॥ जं पडुच्च मिच्छदुकडं उप्पन्नं तं चेव निसेवती पुणो पावं तत्थ पच्चक्खमुसावादो मायानियडीपसंगो य पुणो पुणो करंतस्स। इयाणिं तहत्तिपओगो–तहत्ति पओगो नाम जं एवमेतं अवितहमेतं जहेतं तुब्भे व- ॥३४७॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥३४८॥

दशधा-सामाचारी

दह इच्चेतस्स अत्थस्स संपच्चयत्थं सविसए तहत्ति सद्दं पउंजति, सो य सविसयो इमो—

कप्पाकप्पे०। ७-२६ ॥ ६८८ ॥ कप्पो-विहि अकप्पो-अविहि पाडिसेहो वितहमायरणा इति, अहवा कप्पो जिणथेरादीयाणं अकप्पो विवरीतं, तंमि जाणियव्वयं पडुच्च निट्ठं गतो परिनिट्ठितो, पंच ठाणा महव्वयाणि पंच, संजमेण तवेण य अब्भुओ संजमतवड्ढएत्ति वा आउत्तेत्ति वा अविधिपरिहारित्ति वा एगट्ठा, तुसद्दा एसोऽवि जदि उवउत्तो अप्पणा य अवधारितं तो तस्स अविकप्पेण तहक्कारो कायव्वो, अन्नस्स पुण विभासाए॥ अह तस्स कत्थ कायव्वो ?, भन्नति- --

वायणपडिसुणणाए०। ७-२७।६८९ ॥ वायणा सुत्तप्पयाणं तीए पडिसुणणाए, जहा आयरितो सुत्तं देंतो भणति एवं तं पढिज्जति, तो तंमि पडिसुते तहत्ति काऊण तहा पडिच्छति, एवं उवदेसे पडिसुणणाएवि, उवदेसो जहा 'जयं चरे जयं चिट्ठे'च्चादि, तहा ' सुत्तअत्थकहणाए ' सुत्तकहणा जहा अन्नहा सुत्तं कुढंतो भन्नति-एवं एतं, ण एवं, इच्चादि, अत्थकहणाए अत्थि कहिज्जंते-अत्थाहिगारस्समत्तीए पडिसुणिऊण तहकारो कायव्वो, किमिति?, अवितहमेतं जहेवं तुब्भे वदहत्तिकट्टु तहक्कारो, तहा 'पडिसुणणाए'त्ति पडिसुणणाए जहा जं सो कारवेति, जहा असुयं करेहि, तं पडिसुणिऊण तहत्तिकाऊण तहेव कीरइत्ति । अन्ने पुण किल एस इच्छात्ति सामायारीए विसओ इति, वायणपडिसुणणाएत्ति अभिन्नं पदं, उवरिल्लं पडिसुणणाए पदं उवदेसे सुत्तअत्थकहणाए एतेहिं समं संबंधेति, तहासद्दं तु एतंसद्देण सह, तेण तहमेतंति भवति, ततः कोऽर्थः ?-वायणपडिसुणणाए उवदेसे पडिसुणणाए सुत्तकहणे पडिसुणणाए एवं अत्थे, एतेसु अवितहमेतं सव्वं तहमेतं तुब्भे वदहत्तिकट्टु तहकारो कायव्वोत्ति। अन्ने भणंति- ॥३४८॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पडिसुणणाएत्ति प्रतिपृच्छोत्तरकालं आयरिए कथयति सति पडिसुणणाए, केती पुण विभासंति–तहक्कारो णाम वायणादिसु जं जहा तस्स भणणं तस्स तहा करणंति तहकारसामायारीति ॥ एसा य दसविहचक्कवालसामायारी सट्ठाणप्पओगतो सुपरिजिता कातव्वा । जे य गुणा एते काकूए दरिसेति—

जस्स य इच्छाकारो० ।७-२८॥६९०॥ चसद्दा सेससामायारीगहणं, एत्थ सोग्गती णाणदंसणचरणाणं भवति, अहवा सोग्गती सुदेवत्तादिका, एत्थ सीसो आह–णणु उवरि भंनिही 'साधू खवेंति कम्मं अणेगभवसंचित' मिती, तो किं तेण सोग्गती ण भवति ?, उच्यते, जाव सव्वकम्मक्खयो ण भवति ताव सुदेवत्तादिगं सुगतिं गमतित्ति दरिसिज्जति, स्याद् बुद्धिः-किं पुण एवं सुगती कम्मक्खयो वा इति ?, उच्यते–जेण इच्छत्तिसामायारीए अज्झायणापरिहरणादि मिच्छत्ति दुक्कडगरहणादि तहत्ति सुकतानुमोदणादि इति विभासियव्वं । पुणो आह–एतं वरं उवरि भणितं होन्तं, सव्वं दसविहसामायारिं वन्निऊण इति, उच्यते, एवं वा भवति, 'एवं वा' इति अणियतो एस ववहारोत्ति ज्ञापितं, अहवा सिद्धंतसेलीए कहिंचि अन्नत्थवि भवति, तेण इहवि भणितं तत्थ दट्ठव्वंति । अन्ने पुण इमं गाथासुत्तं उवरिं 'एयं सामायारिं जुंजंता' एतीए गाथाए पुव्वं भणंति, केती पुण चसद्देण सेससामायारीगहणं ण भणंति, तिण्हं चेव पुव्विल्लीणं, महत्थतरियातोत्तिकाउं इति ॥ इयाणिं आवसिया निसीहिया च भवति, एत्थ ताव सीसो आह— ॥३४९॥

आवसियं च० ।७-२९॥६९१॥ एवं च भणिए आयरियो एतस्स चेवाभिप्पायमुवलक्खितुं अनूज्ज दंसेति, तव किलाय-

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥३५०॥

दशधा सामाचारी

मभिप्रायः, जहा आवसियं च गाथा, अत्थो पुण होति सो चेवत्ति जो किर अत्थो निसीहियाए साध्यो सो आवस्सियाएवि सिज्झति, जो वा आवस्सियाए साध्यो सो निसीहियाएवि, तो किमुभयोर्ग्रहणं ?, न पुण अन्नतरीए एगाए चेवेति, तथाहि-अतिं-तेहिं निसीहिया कीरति जहा पावकम्मनिसेहकिरिया मम इमा किरिया इति संपच्चयत्थं, एस तु आवस्सियाएवि सिज्झति, जतो पावकम्मनिसेहकिरियावि आवस्सगं, आवस्सिया नाम अवस्सकायव्वजोगकिरिया इति, पावकम्मनिसेहकिरियत्ति वा अवस्सकम्मं-तिवा अवस्सकिरियत्ति वा एगट्ठा, एवं इतरत्थवि भावेतव्वमिति, एत्थ आयरितो भणति-जदि एवं तो अन्नाओवि एत्थ संपतन्ति, तत्थ किमिति न भन्नति?, अह तत्थवि, एवं च ववहारो ण इाति, तम्हा कहंचिदभेदेवि किंचि विसेसं पडुच्च भेदपरूवणा ण कज्ज-तित्ति त्याज्यं, सीसो आह-जति एवं तो साहह को विसेसो ?, उच्यते-णिंतस्स तहा आवस्सियापयोगे अयमर्थः-अवस्सकायव्वकर-णपवत्तस्स णिग्गमकिरिया इमा इतियावत्, अतिंतस्स तहा निसीहियापयोगे पुण पडिसिद्धनिसेवणनियत्तस्स अतिसमणकिरिया इमा इतियावत्, अनयोश्च महान्विशेष इति । एस एव अत्थो विसेसिततरो विसयविभागनिरूवणेण निज्जुत्तीए निदंसिज्जति ॥ तत्थ सीसो आह--किं जहा तहा गच्छतो आवस्सियाकरणं सामायारी ण भवति ?, उच्यते--सोम्म ! जहा तहा गमणंपि ताव ण वट्टति, जतो अगच्छतो इमे गुणा--

एगग्गस्स०।७-२१॥६९३॥ जहा जदा किर साधू पडिस्सए अच्छति तदा एगग्गो पसंतो, एवं च तस्स इरियादीया दोसा ण भवंति, दुविहा य विराहणा--आयविराहणा पडणादिणा संजमविराहणा विक्खेवादिणा, स्वाध्यायध्यानादयश्च गुणा भवन्ति,

॥३५०॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

जदि एवं मा चेव गम्मउ, भंनति, गंतव्वमवस्सकारणंमि, कातियउच्चारभत्तपाणगुरुनियोगादिविहाणंमि, ताहे तत्थ आवस्सिया-हिं वित्तिआ तं करेति, जदि पुण एतेसुवि पत्तेसु अवस्सगंतव्वएसु ण णीति तो ते गुणा न भवन्ति, होंता दोसा भवंति, अन्ने य बहुदोसा इति ॥ किं च--

आवस्सियाओ०।७-३२॥६९४॥ कारणेऽवि अवस्स गच्छंतो जदि आवस्सतेहिं सव्वेहिं जुत्तजोगी अच्छति, आवस्सगाणि इरियादिभणिताणि, तेहिं जुत्तजोगी, तहा मणवयणकायइंदियगुत्तो, तो तस्स आवस्सियाओ-आवस्सियाकरणं आवस्सिया होतित्ति, इमा सामायारी भवतीत्यर्थः । कत्थ पुण अतिंतो निसीहितं कुणति ?, 'सेज्जं ठाणं च जहिं चेएति' सेज्जा-सयणीयं ठाणं-अच्छियव्वं, चसद्दा अन्नंपि तहाविहं, जत्थ चेतेति-करेति, किमिति? तत्थ निसीहियं करेइ, जम्हा तत्थ निषेधवाभिषिद्धः नियत्तो तेणं तु निसीहिया होति, निसीहियं करेति । पाठंतरं वा—

सेज्जं ठाणं च जहा(या) चेएति तदा निसिहिया होति । जम्हा तदा निसेहो निसेहमतिया य सा
जेणं ॥ ७ ॥ ३४ ॥ ६९५ ॥ इति

किंच- आवास्सियं च णेंतो जं च अतिंतो निसीहियं कुणति । इत्थं इमं पयोयणं- जन्नं सो णिंतो संनं निवेदेति, जहाऽहं सेज्जानिसीहियाए अभिमुहोत्ति मम वट्टमाणि वट्टेज्जाह, गुरुनिवेदणं च विणयप्पयोगो य एवमादि, सेज्जानिसीहिया नाम वसहिनिसेहकिरिया, तीए अभिमुहोत्ति, अवस्सं गमणाभिमुहोऽहमिति जं भणितं, तहा अतिंतोऽवि सन्नं निवेदेति, जहाऽहं

अथ दशधा सामाचारी वर्णयते

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥३५२॥

दशधा सामाचारी

निसीहियाए पावनियत्तीए तुब्भं अभिमुहो, तुब्भे मा सागारिकादिभया वित्तसेज्जा, हत्थपादे वा णाउंटावेज्जा इच्चादि । तहा तत्थवि----

जो होति निसिद्धप्पा०। ७-३५ ॥ १२१ भाष्यं ॥ कंठा । एवं च परूविते मा सीसस्स अच्चंतभेदबुद्धीए परिणमिस्सति जहा किर आवस्सिगनिसीहियाणं सामिविसयसरूवअभिधाणपयोयणमादीणि भिन्नाणि तो एगाहिगरत्तमवि णत्थि, तहा जो आवस्सगजुत्तजोगी सो अन्नो चेवत्ति, ण णज्जति य को णिसिद्धप्पा को वा आवस्सगजुत्तजोगीति, उभयैकपदव्यभिचाराशंकाप्यत्र स्यादित्याह--

आवस्सयंमि जुत्तो ॥ ७-३६ ॥ १२२ भाष्यं ॥ जो आवस्सयंमि जुत्तो सो नियमा निसिद्धो इति नायव्वो, जो वा निसिद्धप्पा सो नियमा आवस्सए जुत्तोत्ति । एवं च व्याख्या-जो आवस्सयंमि जुत्तो सो नियमा निसिद्धो, जो पुण निसिद्धप्पा सो आवस्सए जुत्तो वा ण वा, जतो समितो नियमा गुत्तो, गुत्तो समियत्तणंमि भयणिज्जोत्ति । अहवाविति पक्षांतरेण परूवणाभेदेण नयमतेणेत्यर्थः । अपि संभावने । एतदपि संभाव्यते, जहा-जो निसिद्धप्पा सो नियमा आवस्सए जुत्तो इति, आवस्सगं नाम अवस्सकायव्वं करणं । जुत्तो पवत्तो । निसिद्धो नाम पडिसिद्धनिसेवणनियत्तो इति ॥ इयाणिं आपुच्छणाय योगो--

आपुच्छणा उ कज्जे ॥ ७-३७ ॥ ६९७ ॥ जया किंचि साधू काउमणो भवति तदा आपुच्छतित्ति । इयाणिं पडिपुच्छापयोगो । सो य पुव्वनिसिद्धंमि होइ पडिपुच्छत्ति, पढमं संदेसओ दिन्नो, तं कहमवि ण ताव कीरति,तो काउमणो पच्छा पडिपुच्छति-

॥३५२॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥३५३॥

दशधा सामाचारी

किं करेमि नवत्ति?, जहा रातीणं दो तिन्नि वारा पुच्छिज्जतित्ति । इयाणिं छंदणादारं । तं कहं छंदणा?, पुव्वगहितेणं भत्तेण वा पाणेण वा वत्थेण वा पत्तेण वा, छंदणा णाम इमं अत्थि गेण्हह । निमंतणा णवि ताव गेण्हति, भणति-अच्छ तुमं, अहं ते दाहामि, जाचाणेमित्ति । इयाणिं उवसंपदा । उवसंपदा तिविहा-णाणोवसंपदा (दंसणोपसंपदा चरित्तोवसंपदा य, तत्थ) णाणोवसंपदा तिविहा-सुत्तनिमित्तं अत्थनिमित्तं तदुभयनिमित्तं, सुत्ते तिविहा-वत्तणानिमित्तं संधणानिमित्तं, गहणनिमित्तं, वत्तणा-नाम पुव्वगाहियस्स अथिरस्स परियट्टणं करेति, संधणा नाम उज्जुयारणा, गहणं नाम जं अभिनवगहणं करेति, एवं चऽत्थेवि, एवं उभयेऽवि । दरिसणेवि दरिसणप्पभावगाणि सत्थाणि जहा गोविंदज्जुत्तिमादीणि । एत्थ संदिट्ठो संदिट्ठस्स ० चत्तारि भंगा, एत्थ संदिट्ठो संदिट्ठस्स जदि तो सुद्धो, सेसेसु तिसु असामायारीए वट्टति । चरित्तनिमित्तं दुविहा उवसंपदा-वेयावच्चनिमित्तं वा खमणनिमित्तं वा, वेयावच्चं दुविहं-इत्तिरियं आवकहितं च, वेयावच्चकरो पुण आयरियाण होज्जा वा ण वा, जति णत्थि ताहे घेप्पति, अह अत्थि सो दुविहो-इत्तिरिओ आवकहितो य, आगंतुगो दुविहो-इत्तिरितो आवकहिओ य, जदि दोऽवि आवकहिता ताहे जो सलद्धितो, दोऽवि सलद्धिया जो चिराणओ सो करेति, पाहुणओ वुच्चति-उवज्झायाणं करेहि, थेरस्स पवत्तिस्स गिलाणस्स सेहस्स एवमादि, जदि नेच्छति तो चिराणओ एताणि कारिज्जति, इमो आयरियस्स, जति नेच्छति तो विसज्जिज्जति । जइ इत्तिरिया दोऽवि तो एको पडिक्खाविज्जदि, अन्नस्स वा कारिज्जति, नेच्छंते विवेगो । इयाणिं संजोगो-आवकहितो विस्सामिज्जति, आगंतुओ इत्तिरिओ कारिज्जति, एवं विभासा, तस्स अन्नस्स नेच्छइ विवेगो । एवं जहाविधीते विभासा । इयाणिं खमणे, सो य दुविहो--इत्तिरिओ आवकहितो य, आवकहितो भत्तपच्चक्खाणओ, इत्तिरिओ दुविहो-वियट्ठखमओ अवियट्ठो य,

॥३५३॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥३५४॥

दशधा सामाचारी आयुरुपक्रमाः

ताहे सो पुच्छिज्जति-तुमं अज्जो ! विकिट्ठतवेण केरिसो होसि ?, सो भणति-गिलाणोवमो, सो पडिसिज्झति, भन्नति-ण तुज्झ एतं कम्मं, सुत्ते अत्थे य आदरं करेहि, विगिट्ठेवि तहेव पन्नविज्जति, अन्ने भणंति-विगिट्ठखमगो पारणगकाले गिलाणोवमोवि-इच्छिज्जति, जो तु मासादिखमतो सो इच्छज्जति चेव, जो मासादिखमणं करेति भत्तं वा पच्चक्खाति, तत्थ आयरितो जदि अणापुच्छाए पडिवज्जति तो असमायारीए वट्टति, ते णेच्छंतित्ति काउं, सो अप्पणा आढत्तो पडिलेहणादि काउं, तेसिं वा अन्नोऽवि खमओ अत्थि, ते तेण वाउला, ते भणंति-एतस्स समत्ते करेहामो, ताहे पडिच्छाविज्जति, अह पुण दोण्हवि समत्था पडिवज्जंति य ताहे करेंति। एवं पडिच्छिते जे न करेंति तत्थ आयरितेण ते सारेयव्वा, जं वामयं जाणति, एतेण खमतो सीदतित्ति, किं च तस्स कायव्वं उव्वत्तण परित्तण मत्तगतिएण वा। एस संजतोवसंपदा। इयाणिं गिहिणोवसंपदा, जत्थ साधू पंथे पहे देवकुलादिसु वा अच्छिउकामो तत्थ अणुन्नवेत्ता ठातियव्वं, मा आदिन्नादाणवेरमणादियारदोसा होज्जा, जादिवा साधू भिक्खायरियाए पविट्ठो केणति वाघातेण अच्छियव्वं भवति तत्थ अणुन्नवेयव्वं। इत्तिरियंपि ण कप्पति अवियाणं खलु परोग्गहादीसु चिट्ठितुं निसीतित्ता, ततियव्वयरक्खणट्ठाए ताहे कारणं दीवेत्ता अच्छति। ण य ताण कुच्चविच्चाणि निज्झातियव्वाणि, जत्थ रुक्खे वीसमति तत्थ जति अत्थि पंथिओ सो अणुन्नविज्जति, नत्थि ताहे अणुयाणतु देवता जस्सोग्गहो एसो, सेत्तं दसविहा सामायारी। इयाणिं पदविभागसामायारी कप्पववहारा पदविभागः, तदुपरिष्टाद्वक्ष्यति। सट्ठाणे तेसिं पुण इमो अधिकारो-कप्पंमि कप्पिया खलु मूलगुणा चेव उत्तरगुणा य। ववहारे ववहरिया पायच्छित्ताभवंते य ॥१॥ सेत्तं सामायारिउवक्कमकालो। (आउ)कालो सत्तविहो-

अज्झवसाणनिमित्ते ॥८-१।७२४॥ अज्झवसाणमेव निमित्तं अज्झवसाणनिमित्तं, अहवा अन्नं अज्झवसाणं, अन्नं निमित्तं च,

॥३५४॥

अथ आयुष्य-काल वर्णयते

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

अज्झवसाणं तिविहं-रागज्झवसाणं भय-स्नेहज्झवसाणं च, रागज्झवसाणं जहा एगस्स गावीओ हिताओ, ताहे कुविताओ पच्छतो लग्गा, तेहिं नियत्तियाओ, तत्थ एगो तरुणो कुप्पासं पविसिओ पट्टबद्धओ तिगंडकंडगसज्जो जहा विज्ञाहरो परमरूवदरिसणिज्जो, सो तिसातितो एगं गामं पविट्ठो, ताहे मग्गिए एगाए तरुणीए पाणियं णीणितं, सो पवीतो, सा ओयत्तेति तस्स सरीरं, ता सो धातो, जाहे ण ठाति ताहे उट्ठेत्ता पधावितो, सावि तहेव ओयत्तेति, जाहे सो अद्देसो जातो ताहे सा तहेव ओयल्ली। णेहज्झवसाणं माया-पुत्तादिवत्, जहा एगस्स वाणियगस्स तरुणि महिला, ताणि य परोप्परं अतीव अणुरत्ताणि, ताहे सो वाणिज्जेण गतो, पडिणियत्तो, वसहीए एगाहेण पावतित्ति, ताहे से वयंसगा भणंति-पेच्छामो किं सच्चो अणुरागो णवा?, ताहे एगेण आगंतूण भज्जा से भणिता-सो मतो, सा भणति-सच्चं मतो ?, तं वक्कं भणित्ता मता, ताहे इतरस्सवि अधाभावेण कहितं, सोवि मतो।

भयज्झवसाणेणं जहा गयसुमालमारगस्स सोमिलस्स, तेणं कालेणं तेणं समएणं बारवती णामं णयरी होत्था, पातीयपडीणायता उदीणदाहिणविच्छिण्णा णवजोयणविच्छिन्ना दुवालसजोयणायामा धणवतीमतिनिम्माया चामीकरपवरपागारा णाणामणिपंचवन्नकविसीसगसोहिया अलयापुरिसंकासा पमुदितपक्कीलिता पच्चक्खं देवलोगभूता, तीसेणं बहिता उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे रेवतेणामं पव्वतो होत्था, तुंगे जाव निच्चच्छणए दसारवीरपुरिसरवरकबलवगाणं, तस्स णं पव्वयस्स अदूरसामंतेणं णंदणवणे णामे उज्जाणे होत्था, वन्नओ जहा दसन्ने, तस्सणं मज्झभागे सुरप्पिए णामं जक्खायतणे होत्था, वन्नओ, तत्थ णं णगरीए कण्हे णाम वासुदेवे राया होत्था, महताहिमवंत एवं जहा दसन्नभद्दे जाव रज्जं पसाहेमाणे विहरति, से णं तत्थ समुद्दविजयपामोक्खाणं दसण्हं दसाराणं बलदेवपामोक्खाणं पंचण्हं महावीराणं उग्गसेणपामोक्खाणं सोलसण्हं राईसहस्साणं पज्जुन्नपामोक्खाणं ॥३८६॥

भव-अध्यवसाय निमित्त (गजसुकुमाल-मारक) सोमिलस्य द्रष्टांत

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता...........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

श्री आवश्यक-चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥३६६॥

भयाध्ययने सोमिलवृत्तं

अद्धुट्ठाणं कुमारकोडीणं संबपामोक्खाणं सट्ठीय दुद्दंतसाहस्सीणं वीरसेणपामोक्खाणं एगवीसाए वीरसहस्साणं महसेणपामुक्खाणं छप्पन्नाए बलवगसाहस्सीणं रुप्पिणिपामोक्खाणं बत्तीसाए महिलासाहस्सीणं अणंगसेणपामोक्खाणं अणेगाणं गणियासाहस्सीणं अन्नासिं च बहूणं ईसरतलवर जाव सत्थवाहप्पभितीणं वेयड्ढगिरिसागरपेरंतस्स य दाहिणड्ढभरहस्स बारवतीए णगरीए आहेवच्चं जाव पालेमाणे विहरति। तेणं कालेणं तेणं समएणं अरहा अरिट्ठणेमी, वन्नओ, बारवतीए जाव विहरति। तेणं कालेणं तेणं समएणं अरहतो अरिट्ठणेमिस्स अंतेवासी छब्भातरो अणगारा जाव उग्गतवा ओराला चोद्दसपुव्वी चउन्नाणोवगता सरिसगा सरित्तया सरिव्वता णीलुप्पलगवलप्पगासा सिरिवच्छंकियवच्छा पसत्थबत्तीसलक्खणधरा कुसुकुलयभद्दलगा णलकुब्बरसामाणा ओयंसी तेयंसी वच्चंसी, जसंसी ते य पव्वज्जादिवसादो आरब्भ सामिणा अब्भणुन्नाता छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं विहरंति।

तए णं ते अन्नया पारणगंसि पढमाए सज्झायंति बितियाए झाणं ततियाए तिहिं सिंघाडएहिं बारवतिं अडंति। तत्थ णं एगे संघाडए उच्चणीयमज्झिमाइं कुलाइं अडंते वासुदेवस्स देवतीए देवीए गिहमणुपविट्ठे, सा य तं पासित्ता हट्ठ जाव भद्दासणातो अब्भुट्ठेत्ता पाउयाओ ओमुयति, ओमुयित्ता अंजलिमउलियहत्था सत्तट्ठ पदे गंता तिक्खुत्तो आयाहिण जाव णमंसित्ता सिंघकेसरगमच्छंडिकामोदकथालेणं सतं चेव पडिलाभेति, पडिलाभेत्ता वंदति, वंदित्ता पडिविसज्जेति, तया णं दोच्चे संघाडए, एवं तच्चेऽवि, णवरं तच्चं पडिलाभेत्ता एवं वयासी--किं णं भंते! कण्हस्स वासुदेवस्स इमीसे बारवतीए जाव देवलोगब्भूताए णिग्गंथा अडमाणा भत्तपाणं ण लभंति ?, तो णं ताइं चेव कुलाइं भत्तपाणाए भुज्जो भुज्जो अणुपविसंति?, तत्थ णं देवजसे णामं अणगारे एवं व०-णो खलु देवाणुप्पिए! एवं एतं, किं तु अम्हे छब्भायरो सरिसगा जाव संघाडएणं अडमाणा तुज्झ गेहं अणुप्पविट्ठा, तं ॥३६६॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णी उपोद्घात निर्युक्तौ

॥३५७॥

भयाध्यदसाने सोमिलवृत्तं

णो चेव णं ते अम्हे, अन्ने णं अम्हेत्तिकट्टु जाव पडिगता। तए णं तीसे अब्भत्थिए समुप्पज्जित्था, एवं खलु अहं पोलासपुरे णगरे अतिमुत्तेण कुमारसमणेणं बालत्तणे वागरिता-तुमण्णं अट्ठ पुत्ते पयाइस्ससि सरिसए जाव णलकुब्बरसामाणे, णो चेव णं भरहे वासे केवतिकालाओ अन्नाओ अम्मयाओ तारिसए त्ति, तन्नं मिच्छा, इमन्नं पच्चक्खमेव दीसति, अन्नाओवि पयाताओ, तं गच्छामि णं सामिं पुच्छामित्तिकट्टु सामिअंतियं उवगता जाव पज्जुवासेति। सामिणा तीसे अज्झत्थियं कहियं जाव अत्थे समट्ठे?, हंता अत्थि, एवं खलु देवाणु०! तेणं कालेणं तेणं समएणं भद्दिलपुरे णागस्स गाहावतिस्स सुलसा भारिया नेमित्तिएण निंदू वागरिता, तए णं सा बालप्पभितिं चेव हरिणेगमेसिं देवं भत्ता यावि होत्था, तं तीसे भत्तिबहुमाणेणं स देवे आराहिते यावि होत्था, तए णं तुमंपि सावि समामेव दारए सवह, सा णं विणिघातमावन्ने पंयाति, से देवे तीए अणुकंपणट्ठा ते गेण्हेत्ता तव अंतियं साहरति, जेविय णं ते तव पुत्ता तेवि य तीए साहरति, तं तव चेव णं ते पुत्ता, णो सुलसाए, तए णं सा सामिं वंदति, वंदित्ता जेणेव ते छ अणगारा तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता ते वंदति, वंदित्ता आगतपण्हागा पप्पुतलोयणा कंचुकपरिक्खित्तिया संवरितवलयबाहा ऊसवितरोमकूवा ते छप्पि अणगारे ताए इट्ठाए दीहाए सोम्माए सप्पिवासाए निब्भराए अणिमिसाए दिट्ठीए देहमाणी २ सुचिरं निरिक्खइ २ वंदइ वंदित्ता पुणो सामिं वंदित्ता जामेव दिसिं तामेव पडिगता जाव सयणिज्जंसि निसन्ना चिंतेति-एवं खलु अहं सरिसगे जाव सत्त पुत्ते पयाता, णो चेव णं मए एगस्सावि बालत्तणए समणुभूते, एसवि य णं कण्हे वासुदेवे णिच्चप्पमत्ते सयं पललिते कंदप्परती मोहणसीले छण्हं छण्हं मासाणं ममं अंतियं पादवंदए आगच्छति, तं धन्नाओ णं ताओ अम्मगाओ जासिं माऊणं णियगकुच्छिसंभूतगाइं थणदुद्धलुद्धयाइं मधुरसमुल्लावगाइं मम्मणपजंपियाइं थणमूला कक्खदेसभागं ॥३५७॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥३५८॥

भयाध्ययने सोमिलवृत्तं

अतिसरमाणाइं मुद्धगाइं पुणो य कोमलकमलोवमेहिं हत्थेहिं गिण्हिऊण उच्छंगनिवेसिताइं देंति समुल्लावगे सुमधुरे, पुणो पुणो मंजुलप्पभाणिते, अहं णं अहण्णा ४ एत्तो एगतरमवि ण पत्ता, ओहत जाव झियाइ, इमं च णं कण्हे जाव विभूसिते पादवंदए आगच्छति, तं पासति, पादग्गहणं करेति, करेत्ता एवं व०-अन्नया णं तुब्भे अम्माओ! ममं पासित्ता हट्ठ जाव भवह, किन्नं अज्ज जाव झियाह?, तए णं सा तं सव्वं परिकहति, सेवि एवं व०-मा णं जाव झियाह, अहं णं तहा घत्तिस्सामि जहा णं ममं सहोदरे जाव भविस्सतित्तिकट्टु ताहिं इट्ठाहिं जाव वग्गूहिं समासासति २ अट्ठमं पगेण्हति, पगेण्हेत्ता जहा भरहे तहा हरिणेगमेसिं आराहेति, सेऽवि एवं व०- होहिति तव देवलोगच्चुते सहोदरगे, तिन्नि वारे पडिभणित्ता पडिगते, कण्हेऽवि तं सव्वं देवतीए पडिकहेत्ता पडिगते, तए णं सा अन्नया कयाती गयं सुमिणे पासित्ता पडिबुद्धा जाव परिवुडा वहति, तए णं सा णवण्हं मासाणं जाव जासुमणावत्तबंधुजीवसमप्पभं सव्वणयणकंतं सुकुमालं जाव सुरूवं गजतालुयसमाणं दारगं पयाता, जम्मणं जहा सामिस्स सिद्धत्थो करेति जाव जम्हाणं अम्हं इमे दारगे गततालुयसमाणे तं होऊ णं एतस्स णामधिज्जं गयसुकुमाले २, सेसं जहा मेहे जाव अलं भोगसमत्थे जाते यावि होत्था।

तेणं कालेणं तेणं समएणं बारवतीए सोमिले णामं माहणे परिवसति, अड्ढे जाव सुपरिणिट्ठिते यावि होत्था। तस्स सोमस्सिरी णाम माहणी होत्था, तेहिं सोमा णामं दारिया होत्था सूमाला जाव सुरूवा, रूवेण य जोव्वणेण य लायन्नेण य जाव उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा यावि होत्था। तएणं सा अन्नया कयादी ण्हाता जाव विभूसिता बहूहिं खुज्जाहिं जाव परिक्खित्ता सयायो गिहातो पडिनिक्खमति २ रायमग्गंसि कणगतिंदूसगेणं कीलमाणी २ चिट्ठति। ॥३५८॥

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥३५९॥

मथाध्ययसाने सोमिलवृत्तं

तेणं कालेणं तेणं समएणं अरहा अरिट्ठणेमी समोसढे, परिसा निग्गया, कण्हेवि य णं इमीसे कहाए लद्धट्ठे सभाए सुहम्माए कोमुदियं भेरिं तालावेत्ता जहा सक्के घंटं जाव ण्हाते विभूसिते गयसुकुमालेणं सद्धिं विजयखंधहत्थिखंधवरगते जहा दसन्नभद्दे जाव बारवतीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छति । तं च सोम्मं दारितं पासइ २ त्ता तीसे रूवे य ३ जाव विम्हिए पुच्छति–कस्सेसा किं वा णामे ?, ते णं तएणं कोडुंबियपुरिसा साहंति सव्वं, तए णं कण्हे एंव व०-गच्छह णं भो तुम्हे सोमिलं जातित्ता सोमं कण्णंतेपुरंसि पक्खिवह, ते णं एसा गयसुकुमालस्स पढमपत्ती भविस्सइ, तेवि जाव पक्खिवंति, कण्हेविय णं जाव सहसंबवणे सामिं पज्जुवासति, धम्मकहा, धम्मे, कण्हे, परिसा पडिगता, तए णं से गयसुकुमाले सामिस्स धम्मं सोच्चा जा णवरं अम्मापितरो आपुच्छामि, अहासुहं०, तए णं से सामिं वंदित्ता जाव पडिगते अम्मापिऊण पादवडणं करेति करेत्ता एवं व०-एवं खलु अम्मतातो ! मए सामिस्स अंतिए धम्मो णिसंतो. सेविय मे जाव अभिरुतिते, तएणं अम्मापियरो एवं वयासी-धन्नेऽसि णं तुमं जाता ! जाव कयकल्लाणे सि णं तुमं जाता! जन्नं तुमे जाव अभिरुतिते, तए णं सो दुच्चंपि तच्चंपि एवं भणति जहा जमाली जाव तं इच्छामि णं पव्वइत्तए, तए णं सा देवती तं अणिट्ठं जाव फरुसं गिरं सोच्चा माणसिएणं महया दुक्खेणं अभिभूता समाणी सेआगतरोमकूवा पगलंतचिलिणगाता सोयभरुपवेतितंगमंगी नित्तेया दीणविमणवयणा करतलमलितव्व कमलमाला तक्खणओलुग्गदुब्बलसरीरा लायन्नसुन्नच्छायगतासिरीया पसिढिलभूसणपडंतखुभितसंचुन्नितधवलवलयपब्भट्ठउत्तरिज्जा मुच्छावसणट्ठचेतगरुई सुकुमाल विकिन्नकेसहत्था परसुणिकित्तव्व चंपयलता णिव्वत्तमहव्व इंदलट्ठी विमुक्कसंधिबंधणा कोट्टिमतलंसि धसत्ति सव्वंगेहिं संनिवतिता, तए णं सा संभमोयत्तितंतरिता कंचणभिंगारमुहविणिग्गतसीतलजलनिमलधारपरिसिच्चमाणनिव्वावितगायलट्ठी

॥३५९॥

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

उक्खेवगतालियंटवीयणगजणितवातेण सफुसितेणं अंतपुरपरिजणेण आसासिता समाणी मुत्तावलिसंनिगासपवडंतअंसुधाराहिं सिंचमाणी पयोहरे कलुणविमणदीणा रोयमाणी कंदमाणी तप्प०सोत० विलव० गजसूमालं एवं व०-तुमंसि णं जाता ! अम्हं एगे पुत्ते इट्ठे कंते पिए मणुन्ने मणामे थेज्जे वेसासिए संमए बहुमए अणुमए भंडकरंडगसमाणे रयणे रयणभूते जीवितुस्सविए हिदय-णंदिजणणे उंबरपुप्फं व दुल्लहे सवणताए, किमंग पुण पासणताए ?, तं नो खलु जाया ! अम्हे इच्छामो तुज्झं खणमवि विप्पतोगं सहित्तए, तं अच्छाहि ताव जाता ! भुंजाहि ताव जाता ! विपुले माणुस्सए कामभोगे जाव ताव वयं जियामो, ततो पच्छा अम्हेहिं कालगतेहिं परिणतवए वड्ढितकुलवंसतंतुकज्जंमि णिरवयक्खे जाव पव्वइहिसि, तए णं से एवं व०-तहेव णं तं अम्मताता ! जहेव णं तुब्भे ममं एवं वयह--तुमं णं जाता ! अम्हे जाव पव्वइहिसि, किं पुण अम्मताता ! माणुस्सते भवे अणेगजाति एवं जहा पुंडरीए जाव पुव्वं वा पच्छा वा अवस्सविप्पजहणिज्जे, से केस णं जाणति अम्मतातो ! के पुव्विं गमणाए के पच्छा गमणाए ? तं इच्छामि जाव पव्वइत्तए । तए णं अम्मापियरो एवं व०-इमं च ते जाता ! सरीरगं पतिविसिट्ठरूवं लक्खणवंजणगुणोववेयं उत्तम-बलविरियसत्तजुत्तं विन्नाणवियक्खणं ससोहग्गगुणसमुइतं अभिजातमहक्कमं विविहवाहिरोगरहितं निरुवहउदत्तलद्धपंचेंदियपडं पढमजोव्वणत्थं अणेगउत्तमगुणेहिं जुत्तं तं अणुहोहि ताव जाया ! नियता सरीररूवसोहग्गजोव्वणगुणेहिं ततो पच्छा जाव पव्वइहिसि, तए णं सो एवं वयासी--तहेव णं तं जाव किं पुण अम्मतातो ! माणुस्सयं सरीरं दुक्खायतणं जहा पुंडरीए जाव अवस्सविप्पजहियव्वंति, सेसं तं चेव । तए णं तं अम्मापितरो एवं व०- अम्हे णं तुज्झ जाता ! विउलकुलबालियाओ कलाकुस-लसव्वकाललालितसुहोइताओ मद्दवगुणजुत्तणिउणविणओवयारपंडितवियक्खणाओ मंजुलमितमधुरभणितविहसितविप्पेक्खितगति-

भयाध्य० सोमिलवृत्ते गजसुकुमाल वृत्तं

॥३६०॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥३६१॥

भयाध्य सोमिलवृत्ते गजसुकुमा- लवृत्तं

विलासचिट्ठितविसारदाओ अविकलकुलसीलसालिणीओ विसुद्धकुलवंससंताणतंतुवद्धणपगब्भउब्भवपभाविणीओ सरिसताओ सरिव्वयाओ सरित्तयाओ सरिसलावन्नरूवजोव्वणगुणोववेताओ जाव सिंगारागारचारुवेसातो मणोऽणुकूलहिदइच्छिताओ अट्ठ तुज्झ गुणवल्लभाओ उत्तमाओ निच्चं भावाणुरत्तसव्वंगसुंदरीओ वरेमो, तं भुंजाहि ताव जा ताहिं सद्धिं विउले माणुस्सए कामभोगे, ततो पच्छा भुत्तभोगी विसयविगतवोच्छिन्नकोतुहल्ले अम्हेहिं कालगतेहिं जाव पव्वइहिसि, तए णं से एवं व०-तहेव णं तं जाव किं पुण अम्मतातो ! माणुस्सगा कामभोगा तहेव जाव अवस्सं विप्पजहियव्वत्ति, सेसं तं चेव। तए णं तं अम्मापितरो एवं व०-इमे ते जाता ! अज्जगपज्जगपितुपज्जतागते सुबहू हिरन्ने य सुवन्ने य कंसे य दूसे य विउले धणकणग जाव सन्तसारसावतेज्जे अलाभि जाव आसत्तमतो कुलवंसाओ पगामं दातुं पगामं भोत्तुं परियाभाएतुं तं अणुहाहि ताव जाता ! विपुले माणुस्सते इड्ढिसक्कारसमुदए, ततो पच्छा अणुहूतकल्लाणे वड्ढितकुलवंस जाव पव्वतिहिसि, तए णं से एवं व०-तहेव ण तं जाव किं पुण अम्मतातो ! हिरण्णे य तहेव जाव विप्पजहितव्वेत्ति, सेसं तं चेव। तए णं तं अम्मापितरो जाहे णो संचाएंति बहूहिं विसयाणुलोमा आघवणाहि य पन्नवणाहि य जहा पुंडरीए जाव पव्वइहिसि, तए णं से एवं वयासी-तहेव णं तं जाव किं पुण अम्मतातो ! निग्गंथे पावयणे कीवाणं एवं तहेव जाव पव्वतित्तएत्ति।

तए णं से कण्हे इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे जेणेव गयसूमाले तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता गयसुकुमालं आलिंगति २ उच्छंगे निवेसेति, निवेसेत्ता एवं वयासी-तुमन्नं ममं जाता ! सहोदरे कणीयसे भाता, तं मा णं तुमं जाता ! इयार्णि जाव पव्वयाहि, अहं णं तुमे बारवतीए णगरीए महता २ रायाभिसेगेण अभिसिंचिस्सामि, तए णं से गयसूमाले कण्हेणं एवं वुत्ते समाणे णो ॥३६१॥

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥३६२॥

भयाध्य सोमिलवृत्ते गजसुकुमा-लवृत्तं

आढाति णो परिजाणति, तए णं से कण्हे दोच्चंपि तच्चंपि तहेव भणति, तए णं से गयसूमाले कण्हं अम्मापियरो य दोच्चंपि एवं व०- एवं खलु देवा०! माणुस्सगा कामभोगा खेलासवा जाव विप्पजहियव्वा, तं इच्छामि णं जाव पव्वतित्तएत्ति। तए णं तं गयसूमालं ताणि जाहे णो संचातंति बहूहिं आघवणाहिं ४ आघवित्तए वा ४ ताहे अकामगाइं चेव एवं व०- तं इच्छामो ते जाता! एगदिवसमवि रज्जसिरिं पासित्तएत्ति, तए णं से गयसूमाले कण्हं अम्मापियरं च अणुयत्तमाणे तुसिणीए संचिट्ठति, तए णं से कण्हे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति, सद्दावेत्ता एवं व०- खिप्पामेव भो गयसूमालस्स महत्थं महरिहं जाव रायाभिसेयं उवट्ठवेह, एवं रायाभिसेगो भरहाभिसेगाणुसारेण विभासियव्वो, निक्खमणं सामिऽणुसारेणं इंदादिवज्जं, जाव कण्हे गयसूमालं पुरतो कट्टु जेणेव अरहा अरिट्ठणेमी तेणेव उवा० जाव णमंसित्ता एवं व०- एवं खलु भंते! गयसूमाले खत्तियकुमारे अम्हं एगे पुत्ते इट्ठे जाव किमंग पुण पासणयाए? से जहा णामए उप्पलेइ वा पउमेति वा जाव सहस्सपत्तेइ वा पंके जाते जलसंवड्ढे णोपलिप्पति पंकरएणं नोवलिप्पइ जलरएणं, एवामेव गयसूमालेऽवि कामेसु जाते भोगेसु संवड्ढे णोवलिप्पति कामरएणं णोवलिप्पति भोगरएणं णोवलिप्पति मित्तनातिनियगसयणसंबंधिपरियणेणं, एस णं भंते! संसारभउव्विग्गे भीते जम्मणमरणाणं इच्छति सामिणं अंतिए जाव पव्वइत्तए, तं अम्हे णं एतं सामीणं सीसभिक्खं दलयामो, पडिच्छंतु णं सामी सीसभिक्खं, अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं, तएणं से गयसूमाले सामिस्स उत्तरपुरत्थिमं दिसिं गंता सयमेव आभरणादिता मुयति, देवती पडिच्छति, अणुसट्ठिं दलयति जहा सामिस्स कुलमहतरिता, जाव पडिगता, तए णं से पंचमुट्ठियं लोयं करेत्ता सामिं तिक्खुत्तो जाव णमंसित्ता एवं व०- आलित्ते णं भंते! लोए, पलित्ते णं भंते! लोए जराए मरणेण य, से जहाणामए केती गाहावती अयारंसि झियायमाणंसि जे से

॥३६२॥

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

श्री
आवश्यक
चूर्णौ
उपोद्घात
निर्युक्तौ

॥३६३॥

मयाध्य
सोमिलवृत्ते
गजसुकुमा-
लवृत्तं

तत्थ भंडे भवति अप्पसारे मोल्लगुरुगे तं गहाय आताए एगंतमवक्कमति, एस मे नित्थारिते समाणे पच्छा तूराए हिताए सुहाए खमाए निस्सेसाए आणुगामियत्ताए भविस्सति, एवामेव ममवि आता एगे भंडे इट्ठे कंते मणुन्ने महग्घे जाव मंडकरंडग-समाणे मा णं सीतं मा णं उण्हं मा णं खुहा मा णं पिवासा मा णं चोरा मा णं वाला जाव मा णं परिस्सहोवसग्गा फुसंतुत्ति-कट्टु एस मे णित्थारिते समाणे हिताए जाव संसारवोच्छेदणाए भविस्सति, तं इच्छामि णं भंतेहिं सयमेव पव्वावितं, एवं मुंडा-वितं सेहावितं सिक्खावितं सयमेव आयारगोयरविणयवेणइयचरणकरणजातामाताउत्तियं धम्ममाइक्खितं, सामीवि तहेव करोति जाव धम्ममाइक्खति, एवं देवाणुप्पिया ! गंतव्वं एवं चिट्ठियव्वं एवं निसीतियव्वं तुयट्टियव्वं भुंजियव्वं भासियव्वं, एवं उट्ठाय उट्ठाय पाणेहिं भूएहिं जीवेहिं सत्तेहिं संजयेणं संजमियव्वं, अस्सिं च णं अट्ठे णो पमादेयव्वं, तए णं से तहारूवं धंमियं उवदेसं सम्मं संपडिच्छति २ जाव तमाणाए तहा संजमति, एसे जाते इरियासमिए जाव निग्गथं पावयणं पुरओ काउं विहरति ।

तए णं से जं चेव दिवसं पव्वइते तस्सेव दिवसस्स पच्छावरण्हकालसमयंसि जेणेव अरहा अरिट्ठणेमी तेणेव उवागच्छति २ तिक्खुत्तो वंदति २ एवं व०- इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाए महाकालंसि सुसाणंसि एगराइयं महापडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, अहासुहं, तए णं से हट्ठे जाव सामिं वंदित्ता तंमि मसाणे थंडिलं पडिलेहेत्ता ईसिं पब्भारगतेणं कातेणं जाव दोवि पादे साहट्टु एगरातियं महापाडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरति । इमं च णं सोमिले माहणे सामिधेयस्स अट्ठाए बारवतीओ बहिया पुव्वनिग्गए, तं गहेऊण पडिनियत्तमाणे संझाकालसमयंसि पविरलमणूसंसि गयसूमालं तहा पासति, पासित्ता तं वेरं सरति २ आसु- ॥३६३॥
रुत्ते जाव एवं मन्नित्था-एस णं भो गयसूमाले अपत्थिय जाव परिवज्जिते जे णं ममं धूयं सोम्मं दारियं बालं अपदुप्पन्नं अकयवे-

प्रत सूत्रांक [-] दीप अनुक्रम [-]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता..........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

श्री आवश्यक-चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥३६४॥

भयाध्य सोमिलवृत्ते गजसुकुमालवृत्तं

मणस्सं विप्पजहित्ता मुंडे जाव पव्वतिते, तं सेयं खलु ममं एयस्स वेरनिज्जातणं करेत्तए, एवं संपेहेति २ दिसापडिलेहणं करेति२ सरसं मत्तियं गेण्हति २ तस्स मत्थए मत्तियापालिं बंधति बंधित्ता जलंतीओ चिगताओ पप्फुल्लकेसुयसामाणे खदिरंगाले कभल्लेणं गेण्हति २ तस्स मत्थए पक्खिवइ, भीते ६ ततो खिप्पामेव अवक्कमति अवक्कमित्ता जाव पडिगते। तए णं तस्स गयसूमालस्स सरीरगंसि वेयणा पाउब्भूता उज्जला जाव दुरहियासा, तं सो सोमिलस्स मणसाऽवि अप्पदुस्समाणे जाव सम्मं अधियासेति, तए णं तस्स सुभेणं परिणामेणं पसत्थेणं अज्झवसाणेणं लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं तदावरणिज्जाणं खएणं कम्मरयविकिरणकरं अपुव्वकरणं अणुपविट्ठस्स अणंते जाव केवलवरणाणदंसणे समुप्पन्ने, ततो पच्छा सिद्धे जाव पहीणे। तत्थ णं आहासंनिहितेहिं देवेहिं सम्मं आराहितेत्तिकट्टु दिव्वे सुरभिगंधोदयवासे वुट्ठे दसद्धवन्ने कुसुमे निवादिते चेलुक्खेवि कते दिव्वे य गीतगंधव्वणिणादे कते यावि होत्था। तए णं से कण्हे कल्लं पाउ जाव वंदपरिक्खित्ते बारवइं मज्झंमज्झेणं सामितेणं निग्गच्छाति, तत्थ य एगं पुरिसं पासइ- जुन्नं जाव जराकिलंतं महइमहालयाओ इट्ठगरासीओ एगमेगं इट्ठगं गहाय बहिया रत्थापहातो अंतो गिहंसि अणुप्पवेसमाणं, तए णं कण्हे तस्स अणुकंपणट्ठयाए हत्थिखंधवरगते चेव एगं इट्ठगं गेण्हति गेण्हित्ता जाव गिहंसि अणुप्पवेसेति, तए णं अणेगेहिं पुरिससहस्सेहिं से इट्ठगरासी खिप्पामेव अणुप्पवेसिते, तते णं से कण्हे जाव सामिं वंदति वंदित्ता अवसेसे अणगारे वंदति वंदित्ता गयसूमालं अपासमाणे सामितेणं एवं वदासी- कहि णं भंते ! से मम सहोदरए ? जेणं वंदामि, तए णं सामी एवं वयासी- साहिते णं कण्हा ! गयसूमालेणं अणगारेणं अप्पणो अट्ठे, कहं णं भंते !०?, एवं खलु कण्हा ! गयसूमाले कल्लं सव्वं कहेति जाव विहरति। तए णं तं एगे पुरिसे पासति, पासित्ता आसुरुत्ते दिसालोयं करेत्ता सरसं मत्तियं गेण्हति सेसं तं चेव जाव ॥३६४॥

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥३६८॥

सोमिलवृत्तं गजसुकुमालवृत्तं

पहीणे । एवं खलु कण्हा ! जाव साहिते अप्पणो अट्ठे । तए णं कण्हे एवं वयासी-केस णं भंते ! से पुरिसे अपत्थिय जाव परिवज्जिते जे णं मम सहोदरस्स अणगारस्स एवं करेति ?, सामी आह- मा णं कण्हा ! तुमं तस्स पयोसमावज्जाहि, एवं खलु कण्हा ! तेणं तस्स साहेज्जे दिन्ने, कहं णं भंते !०, से णूणं कण्हा तुमं ममं वंदए आगच्छमाणे एगं पुरिसं तं चेव जाव पवेसिते, जहा णं तुमे तस्स साहेज्जे दिन्ने एवामेव गयसूमालस्सवि अणेगभवसयसहस्ससंचितं कम्मं उदीरमाणेणं बहुकम्मनिज्जरत्थकारे दिन्ने, से णं भंते ! पुरिसे मए कहं जाणियव्वे ?. जे णं कण्हा तुमं णगरं अणुपविसमाणं पासित्ता ठितए चेव हिदयभेदेण कालं करिस्सइ तं नं जाणेज्जासि, एस भे, से णं अपतिट्ठाणे नरए णेरइत्ताए उववज्जिहि । तए णं से कण्हे सामिं वंदित्ता जाव जेणेव सए गिहे तेणेव पहारेत्थ गमणाए, सोमिलेवि य णं पभाते चिंतेति- एवं खलु कण्हे अरहतो वंदति, निग्गते णं, णातमेतं अरहता, सिद्धमेतं भविस्सइ कण्हस्स, तं ण णज्जति कण्हे ममं केणइ कुमारेण वा मारेस्सतित्तिकट्टु भीते ४ सगाओ गिहाओ पडिणिक्खमति २ बारवतीए इतो ततो आधावमाणे कण्हस्स पुरतो सपडिदिसिं हव्वमागते, तए णं से कण्हं सहसा पासति पासित्ता भीते ५ जाव कालं करेति २ धरणिं जाव संनिवतिते, कण्हेणं दिट्ठे, णातो, तए णं कण्हे आसुरुत्ते जाव एवं वयासी-एस णं भो जाव परिवज्जिते जेणं ममं सहोदरे अणगारे अकाले चेव जीविताओ ववरोविते, तं बारवतीए एतं घोसेत्ता पाणेहिं एतं अंछविंछिं कारेत्ता तं ठाणं पाणिएणं अब्भुक्खेत्ता जाव पच्चप्पिणह, तेऽवि तहेव करेंति । तए णं कण्हे तस्स सव्वस्सहरणं करेति, करेत्ता पुत्तदारे य से वस्से ठवेति, ठवेत्ता समुद्दविजयादीणंतेणं गंता सव्वं परिकहेति, तए णं तं दसारकुलं पवणवेगवित्तासितं पिव णागभवणं वाउलीभूतं गतसूमालस्स मणोरहचरिमनिबद्धं च, एवं कण्हसमासणं च गब्भं च जं बालभावं च जोव्वणं च पव्वज्जं च पडिमं च जाव

॥३६५॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता..........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥२६६॥

नेव्वाणचरिमनिबंधं च उकित्तमाणं २ महता २ सद्देणं कुहुकुहुकुहस्स परुन्नं जाव कालंतरेण अप्पसोगं जातं यावि होत्था । एवं अंतगडदसासु ॥ निमित्तं—

दंडकससत्थरज्जू० ॥८-२।७२५॥ मुत्तपुरिसनिरोहे०॥८--३।७२६॥ दंडेहिं ताव पिट्टितो जाव मतो, एतं निमित्तं, एवं सव्वत्थ विभासा । एतेहिं निमित्तेहिं वाघातो आउयस्स भवति, आहारे जो अतिबहुत्तेण मरति, तत्थ मरुएण दिट्ठंतो-सो अट्ठारस वारा भुंचे पच्छा सूलेण मतो । अन्नो अणहारेण मतो । विसेण वा संजुत्तं जो आहारं भुंजति । वेयणा अच्छिवेयणादी सीतादी वा । परघातो विज्जुए वा तडीए वा पेल्लियस्स । फासे जहा तयाविसेणं सप्पेणं छित्तेणं विसं चडति, जहा वा बंभदत्तस्स इत्थि-रयणं तंमि मते पुत्तेण भणितं-मए सद्धिं भोगे भुंजाहि, तीए भणितं--ण तरसि, ण पत्तियति, ताहे तीए घोडतो आणाविओ, पट्ठीए आलिद्धो, कसओ कडिं णीतो जाव सव्वो गलितो, ताहे सुक्कक्खएणं मतो, तहवि ण पत्तियत्ति, ताहे लोहपुरिसो आणीतो ताहे उवसन्तो जाव विलीणो। आणापाणुनिरोहेणं जहा छगलगादी । एस सत्तविहो आयुउवघातो । एवमादीहिं जे सोवक्कमा तेसिं आयुवाघातो भवति, सेसाणं ण उवक्कामिज्जति । के पुण सोवक्कमा निरुवक्कमा वा ?, नेरइया देवा असंखेज्जवासाउगा तिरिया मणुया य उत्तमपुरिसा चरिमसरीरत्ति, सेसा भतिया, देवा णारया असंखेज्जवासाउया य छम्माससेसाउया आउगाणि बंधंति, परभविआयुआणि, सेसा तिभागसेसाउया निरुवक्कमा, जे ते सोवक्कमा ते सिया तिभागसेसाउआ परभविआयुअं पकरेंति सिय तिभागतिभागतिभागसेसाउआ सिअ तिभाग २ सेसाउआ पकरेंति, कोऽनयोः प्रतिविशेषः ?, इमाणं संनिचयो तिव्वो इमाणं सो सिढिलो, सोवक्कमस्स उवक्कमेत्तस्स आरद्धं जत्थ रुव्वा (च्च) ति तत्थ ओयड्डिज्जति, निरुवक्कमेणं अवस्सं तं ठाणं पावियव्वं । तिभागो

निमित्तै-रायुर्भेदः ॥२६६॥

अथ आयु:भेदा: वर्णयते

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥२६७॥

देशकाल-कालौ

वीप्सार्थः, अणेगे तिभागा होंति जावतीएहिं आउयं त्रिभागं देति । जो एगंसि भाए वट्टति तत्थ आलावतो, जे जीवे असंखेज्जद्धपविट्ठे सव्वनिरुद्धो सआउते सव्वमहतीए आउयबंधगद्धाए चरिमकालसमयंसि वट्टमाणे जहन्नियं सो अपज्जत्तगनिव्वत्तिं निघत्तेति, एयस्स भागस्स हेट्ठा ण तरति आउयं बंधिउं, तेण य सव्वजीवाणं आउबंधो अणाभोगभिनिव्वित्तिओ, तेण सो अंतोमुहुत्तिओ, आवलियाएवि अंतो । आह--जति आउयबंधो उवक्कामिज्जति तेण कयविप्पणासो अकयब्भागमो य होइ, कहं ?, जेण वाससयं आउयं बद्धं, सो तं सव्वं आउयं न भुंजति जहा तेण कयविप्पणासो, तस्स य तत्थं मारिव्वए जं आरओ मरति तेणं अकयब्भागमो भवति, एस यदि दोसो भवति तो णत्थि मोक्खो, मोक्खगयावि पडंतु, उच्यते--नायमस्माकमुपालंभः, एकोऽवि दोसो न भवति, कहं ?, जेण तं सव्वं वेदेति, कहं !, पलालवट्टिदिट्ठंतसाहणा, जहा पलालवट्टी हत्थसयदीहा अंते पलीविया चिरेण डज्झति, वेंटिया तक्खणा च्चेव डज्झति, एसो से उवणतो, अहवा अग्गिकव्याधिनिदर्शनात् फलपाचननिदर्शनाच्चेति । इयाणिं देशकाल-कालः । देशकालो नाम प्रस्तावः । सो दुविहो--पसत्थो अप्पसत्थो--

निम्मच्छियं महुं० ॥८--५।७२९॥ पसत्थो जहा भिक्खस्स कालो, सज्झायस्स तवस्स णाणादीणं वा । एवमादि ॥ तत्थ-

निदूधूमगं च गामं० ॥८--४।७२८॥ महिलातित्थं णाम निवाणतडं । एस पसत्थो देसकालो । इयाणिं कालकालो, कालकालो नाम मरणकालो, अन्ने भणंति--कालकस्य सत्त्वस्य कालधर्मणा संयोगो यः स कालकालो भवति । तत्थ कालकाले--

कालेण कतो कालो० ॥८--६।७२९॥ पमाणकालो दुविहो--दिवसप्पमाणकाले य रत्तिप्पमाणकाले य, चउपोरुसिये दिवसे चतुपोरुसिया राती भवति, उक्कोसिया अड्ढपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा रातीए वा पोरुसी भवति, जहन्निया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा ॥२६७॥

अथ ‘काल’द्वार वर्णनं आरभ्यते

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

रातीए वा पोरुसी भवति, जदा णं भंते ! उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा रातीए वा पोरुसी भवति तदा णं कतिभागमुहुत्तभागेणं परिहायमाणी य २ जहन्निता तिमुहुत्ता दिवसस्स वा रातीए वा पोरुसी भवति?, जया वा जहन्निया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा रातीए वा पोरुसी हवति तदा णं कतिभागमुहुत्तजोगेणं परिवड्ढमाणी य २ उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा रातीए वा पोरुसी भवति ?, सुदंसणा ! जदा णं उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा रातीए वा पोरुसी भवति तदा णं बावीससयभागमुहुत्तभागेणं परिहायमाणी २ जहन्निया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा रातीए वा पोरुसी भवति, जया वा जहन्निया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा रातीए वा पोरुसी भवति तया णं बावीससतभागमुहुत्तभागेणं परिवड्ढमाणी २ उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स राईए वा पोरुसी भवइ । कया णं भंते ! उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स वा रातीए वा पोरुसी भवति ?, कया वा जहण्णा तिमुहुत्ता दिवसस्स वा रातीए वा पोरुसी भवति ?, सुदंसणा ! जया णं उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे हवइ जहन्निया दुवालसमुहुत्ता राती हवइ तदा णं उक्कोसिया अद्धपंचममुहुत्ता दिवसस्स [वा रातीए वा] पोरुसी भवति, जहन्निया तिमुहुत्ता रातीए पोरुसी भवति, जदा वा उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राती भवति जहण्णे दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवति तदा णं उक्कोसिता अद्धपंचममुहुत्ता रातीए पोरुसी भवति, जहन्निया तिमुहुत्ता दिवसस्स पोरुसी भवति ॥ कया णं भंते ! उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति ? जहन्निया दुवालसमुहुत्ता राती भवति ?, कदा वा उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राती भवति ? जहन्नए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवति ?, सुदंसणा ! आसाढपुन्निमाए उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति, जहन्निया दुवालसमुहुत्ता रादी भवति, पोसपुन्निमाए णं उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राती भवति, जहन्नए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवति । अत्थि णं भंते ! दिवसा य रातीतो य

॥३६८॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥३६९॥

क्षेत्रद्वारे महासेन वने छत्र रचना

.समा चेव भवंति?, हंता अत्थि, कया णं भंते ! दिवसा य रातीतो य समा च्चेव भवंति ?, सुदंसणा ! चेत्तासोयपुन्निमासु णं, एत्थ णं दिवसा य रातीओ य समा चेव भवंति, पन्नरसमुहुत्ते दिवसे पन्नरसमुहुत्ता राती भवति, चतुभागमुहुत्तभागूणा चउमुहुत्ता दिवसस्स वा रातीए वा पोरुसी भवति । सेत्तं पमाणकाले । एवं जहा महाबले सव्वं ॥ वन्नकालो जो कालतो वन्नो, भावकालो छण्हं भावाणं जस्स जस्स जो कालो ठितिविसेसो पज्जवा सा, एसो वा एगगुणकालगादी, तत्थ ओदतितो अत्थेगतितो अणादीओ अपज्जवसितो, अत्थेगतितो अणादीतो सपज्जवसितो, अत्थेगतितो सादीओ सपज्जवसितो य, खतितो सादीओ अपज्जवसितो, णवरं दाणादिलद्धिपणयं चरित्तं च सादीओ सपज्जवसिदो, खतोवसमिओ जहा उदयितो, पारिणामिओ दुविहो- सादीओ वा सपज्जवसिओ पुग्गलत्थिकातादी, अणादीयो वा अपज्जवसितो आगासादी, एत्थ जा जस्स भावस्स संचिट्ठणा ठिती अंतरं वा सो भावकालो, अहवा णाणदंसणचरित्ताणं जो कालो सो भावकालो, तत्थ उदयियो भावो अभवियाणं मिच्छादयो भावा अणादीया अपज्जवसिया, भवियाणं ते चेव मिच्छत्तादयो अणादीया सपज्जवसिया, णारगादी सादी सपज्जव०, उवसमिओ पुण उवसामगसेढिमादी पडुच्च सादी सपज्जवसितो, खइओ सम्मत्तणाणदंसणसिद्धत्ताइं पडुच्च सादी अपज्जवसितो, खओवसमिओ णाणाइं केवलवज्जा सादी सपज्जवसिता, मतिअन्नाण- सुयअन्नाणा भव्वाणं अणादी सपज्जवसिया, ताइं चेव अभव्वाणं अणादी अपज्ज०, पारिणामिओ पोग्गलधम्मो सादी सपज्जव०, धम्माधम्मागासत्थिकाया पारिणामिएण भावेण अणादी अज्जव०, एस भावकालो ।

॥३६९॥

एत्थ कतरेण अधिकारो ?, एत्थ पमाणकालेण अधिकारो, तत्थवि दिवसपमाणकालेण, तत्थवि पढमपोरुसीए भासितं, एस तुसद्दत्थो, भावकालेवि सति तेणं खतोवसमिएण य अधिकारो, सेसाणि विकोवणट्ठाए भणिताणित्ति ॥ इयाणिं खेत्तं, क्षितो त्राणं क्षेत्रं, तं चउव्विहं- नामस्थापने पूर्ववत् । दव्वखेत्तं महसेणवणुज्जाणं, भावखेत्तं गणधरा

वइसाहसुद्ध० ॥८-११॥७३४॥ खइयम्मि० ॥८-१२॥७३५॥ तं कहं गहितं गोयमसामिणा ?, तिविहं(तीहिं) निसेज्जाहिं चोद्दस पुव्वाणि उप्पादिताणि । निसेज्जा णाम पणिवतिऊण जा पुच्छा । किं च वागरेति भगवं ? 'उप्पन्ने विगते धुवे', एताओ तिन्नि निसेज्जाओ, उप्पन्नेत्ति जे उप्पन्निमा भावा ते उवागच्छंति, विगतेत्ति जे विगतिस्सभावा ते विगच्छंति, धुवा जे अविणासधम्मिणो, सेसाणं अणियता णिसेज्जा, ते य ताणि पुच्छिऊण एगतमं ते सुत्तं करेंति जारिसं जहा भणितं । ततो भगवं अणुन्नमणसी करेति, ताहे सक्को वइरनाभे थाले दिव्वगंधगंधिकाणि चुन्नाणि छोढूण सामिं उवगतो, ताहे सामी सीहासणाओ उट्ठेत्ता पडिपुण्णमुट्ठिं केसराणं गेण्हति, ताहे गोयमसामीप्पमुहा एक्कारसवि गणहरा तीसी ओणता परिवाडीए ठायंति, ताहे देवा आउज्जगीयसद्दं निरुंभंति, पुव्वं तित्थं गोयमसामिस्स दव्वेहिं पज्जवेहिं अणुजाणामित्ति चुन्नाणि सीसे छुभति, ततो देवताणिवि चुन्नवासं पुप्फवासं च वासंति, गणं च सुहम्मसामिस्स धुरे ठावेत्ता णं अणुजाणाति । एवं सामातियं गोयमसामिस्स अणंतरणिग्गतं, सेसं परंपराए । एवं सामातियं निग्गतं, खेत्तत्तिदारं गतं । इयाणिं पुरिसेत्ति दारं । पुरं नाम सरीरं, पुरे शयनात् पुरुषः, तस्स दसविहो निक्खेवो । णामट्ठवणाओ गताओ ।

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता..........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥३७१॥

अर्थ पुरुषे मम्मण कथा

दव्वाभिलाव०॥८-१३॥७३६॥ दव्वपुरिसो दुविहो- आगमतो नोआगमतो य, आगमतो तहेव, णोआगमतो तिविधो- जाणगसरीर ३, वतिरित्तो तिविहो- एगभविओ बद्धाउओ अभिमुहनामगोत्तो, अहवा दव्वपुरिसो दुविहो-मूलगुणनिव्वत्तपुरिसो य उत्तरगुणनिव्वत्तपुरिसो य, मूले सरीरं उत्तरे चित्रकं, अभिलावपुरिसो घडो पडो रधो, चिंब(चिंध)पुरिसो महिला पुरिसनेवत्थेण नेवत्थिता, प्रजननसहितो वा नपुंसकः, वेदपुरिसो पुरिसवेदं जा वेदेति, धम्मपुरिसो साधू, अत्थपुरिसो मम्मणपणिओ, कोऽर्थः?- सारक्खणपिंडणसमत्थो ॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे सेणिओ चेल्लणा देवी, मम्मणो पंनिओ, अणेगा तस्स पन्नवाडा, अन्नदा मह्वासरिसं पडति, राया य ओलोयणे देवीय समं अच्छति, ण कोति लोगो संचरति । ताहे रायाणि पेच्छति मणूसं णदीओ बुडित्ताणं किंपि गेण्हंतं, ताहे भणति--"मासैरष्टभिरह्ना च, पूर्वेण वयसाऽऽयुषा । तत् कर्तव्यं मनुष्येण, यस्यांते सुखमेधते ॥ १ ॥" सो य अह्वगं उक्कड्ढति, मा पणएण उच्छाइज्जिहितित्ति । देवी रायाणं भणति--जहा णदीओ तहा रायाणोऽवि, कहं ?, जहा णदीतो समुद्दं पाणियभरितं पविसंति, एवं तुब्भेऽवि ईसराणं देह, ण दमगदुग्गयाणं, सो भणति--कस्स देमि ?, ताहे सा तं दरिसेति, ताहे मणुस्सेहिं आणावितो, रन्ना पुच्छितो, सो भणति--बइल्लो मि बितिज्जओ णत्थि, राया भणति--जाह गोमंडले, जो पहाणो बतिल्लो तं से देह, तेहिं दरिसिता, सो भणति--ण एत्थ तस्स सरिसतो अत्थि, तो केरिसओ तुज्झ ?, मणूसा गता, जाव रन्नो घराणुरूवं घरं अतिणीता, तेण जेमाविता, ताहे से तेण सिरिघरे सव्वरयणामओ बइल्लो दरिसितो बितिओ य अद्धकतओ य, तेहिं रन्नो निवेदितं, ॥३७१॥

अथ 'मम्मण'श्रेष्ठिन: कथानकं

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

कारणद्वारं

राया विम्हिओ भणति--अहंपि ता तं पेच्छामि, पन्निओ भणति--सत्तमे दिवसे, ताहे जहा सालिभद्देण आयोतितं एवं तेणवि सक्कारेत्ता संतेपुरं रायाणं तोसिय घरं अतिणीओ मणिरयणपणासितंधकारं, एगं च निम्मायं, वीथस्स य सिंगाणि कुकह पट्ठी य अणिम्मविता, ताहे विम्हितो भणति-सच्चं मम णत्थि एरिसो, धन्नोऽहं जस्स मे एरिसा मणूसा, ताहे उस्सुंको कतो, राया तेण विपुलेहिं मणिरयणेहिं पूजिओ। एस अत्थपुरिसो ॥ भोगपुरिसो चक्कवट्टी। भावपुरिसो जो जीवो अवगतवेदो पगातित्थो। एत्थं भावपुरिसेण वेयपुरिसेण य अहिकारो, सेसा विकोवणट्ठाए। भावपुरिसो सामी वेदपुरिसो गोयमसामी। पुरिसेत्ति दारं गतं ॥

इयाणिं कारणं, तं चउव्विहं--णामट्ठवणाओ गताओ, दव्वकारणं दुविहं--तद्दव्वकारणं अन्नदव्वकारणं च, तद्द्रव्यकारणं घटस्य मृत्पिंडः, अन्यद्रव्यकारणं चक्रदंडसूत्रोदकपुरुषप्रयत्नादयः, अथवा द्रव्यकारणं द्विविधं-समवायिकारणं असमवायिकारणं च, समवातिकारणं पटस्य तंतवः, तंतुसु पडो समवेत इति, असमवायिकारणं वेमनलकाअंछनिकातुरिविलेखनादीनि, अहवा निमित्तकारणं च नैमित्तिककारणं च, कडस्स वीरणा निमित्तं, नैमित्तिकानि पुरुषप्रयत्नरज्जुकीलकादीनि, एवं घटपटादीनामपि। अथवा इदं षड्विधं--द्रव्यकारणं, कारणंति वा कारगंति वा साहणंति वा एगट्ठा, तंजहा--कर्ता करणं कर्म संप्रदानमपादानं संनिधानमिति, तत्र निदर्शनं घटभावे कर्ता कुलालः, क्रियानिवर्तक इति, करणं दंडाद्युपकरणं, क्रियानिवर्तनमिति, कर्माणि निर्वर्त्यो घट एव, क्रियमाणक्रियया व्याप्यमान इति, संप्रदानं यदर्थं करणं, यन्निमित्तमसौ क्रियते, क्रियया व्याप्यते यन्निमित्त-मिति, यत्प्रयोजनमंगीकृत्येत्यर्थः, अपादानं मृत्, पिण्डेऽवधिरिति, सन्निधानमधिकरणमाधार इति, स च देशदेशकालादि, यथा ॥३७२॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

चक्रमस्तकादौ स्वप्रस्तावे च निष्पद्यते घट इति, एवं पटादावपि भाव्यं । भावकारणं दुविहं-पसत्थं अपसत्थं च । प्रत्यय लक्षणद्वारे

तत्थ जं अप्पसत्थं तं संसारस्स, तं एगविहं वा दुविहं वा तिविहं वा चउ०पंच० छव्विहं वा, एवमादि बहुप्पगारं वा, तत्थ असंजमो संसारस्स एगविहं कारणं, पयत्तवतो पावकम्मेहिंतो नियत्ती संजमो, तव्विवरीतो असंजमो, दुविहे-अन्नाणं अविरती य, तिविहं अन्नाणं मिच्छत्तं अविरती य, एवं विभासा । पसत्थं मोक्खकारणं, एगो संजमो, दोन्नि विज्जा चरणं च, त्रीणि ज्ञानदर्शनचारित्राणि, एवं विवरीतं विभासा । अहवा जत्तियाणि असंजमट्ठाणाणि ताणि संसारस्स, संजमट्ठाणाणि मोक्खस्सत्ति, एत्थ पसत्थभावकारणेण अहिगारो । कहं ? -

तित्थगरो किं कारण भा० ॥८--१९।७४२॥ तं किह वेदेयव्वं ?, अगिलाए धंमं कहेंतेणं पव्वावेंतेण सिक्खावेंतेण य, तं च कहिं बद्धं किह वा बद्धं ?, तित्थगरभवग्गहणाओ ततियं भवग्गहणं ओसक्कतित्ताणं, नियमा मणुयगतीए, नियमा सम्मद्दिट्ठी तिण्हं अन्नतरो संजतो वा असंजतो वा मीसो वा, इत्थी वा पुरिसो वा पुरिसणपुंसतो वा, सुक्कलेसो उत्तमसंघयणो अच्चंतं विसुज्झमाणपरिणामो, तत्थ बद्धं वेदेयव्वं, कहं बद्धं ?. वीसाए कारणेहिं बद्धं ।

नियमा० ॥८--२१।७४४॥ **गोयमम दा० सामादियं** ॥८--२२।७४५॥ णाणनिमित्तं, णाणं किं निमित्तं ?, सुंदरमंगुलाणं भावाणं उवलद्धिनिमित्तं, सुंदरमंगुलभावा किं निमित्तं उवलब्भंते ?, तेहिं उवलद्धेहिं पवित्ती निवित्ती य भवति, सुभेसु पवित्ती ॥३७३॥ असुभेसु निवित्ती, पवित्तिणिवित्तिओ य संजमतवनिमित्तं, संजमतवा अणासववोदाणनिमित्तं, अणासववोदाणा अकिरियानिमित्तं,

अथ लक्षण-द्वारं कथयते

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक-चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥३७४॥

लक्षणद्वारं

अकिरिया असरीरतानिमित्तं, असरीरता सिद्धिनिमित्तं, सिद्धी अव्वाबाहकारणं इत्यर्थं सामाइयं सुणंति । अहवा ताओ गाहाओ। कारणंति दारं गतं ॥ इयाणिं पच्चओ, सो चउव्विहो— णामट्ठवणाओ गताओ । दव्वपच्चओ जो कम्हिवि संकिज्जति से तेसिं पच्चयं करेति, तेल्लं तत्तमासगं उक्कड्डति, जति अकारी तो ण डज्झति, फलादिणा वा दव्वेण पच्चयं करेति, दव्वपच्चओ एवमादि, भावपच्चतो तिविहो- ओहि०मण० केवलणाणं च, अहवा को पच्चओ अरहतो जेण मते जहत्थमिदं भणितं, को वा गणहराणं जेण एस जहत्थं भणति तो अम्हे णिसामेमो, एवमेतं न अन्नहा इति ?, भन्नति—

केवलणाणित्ति अहं० ॥८-२७॥७५०॥ एतेसिंपि पच्चयो, 'वीतरागो हि सव्वन्नू, मिच्छा णेव पभासति । जम्हा तम्हा वती तस्स, तच्चा भूतत्थदरिसणी ॥१॥ ति। पच्चएत्ति दारं गतं । इयाणिं लक्खणेत्ति दारं, लक्खिज्जति जेण तं लक्खणं, तं च चोद्दसविहं, नामस्थापने पूर्ववत्, दव्वलक्खणं जहा अग्गिस्स उण्हता खंडस्स मधुरता एवमादि, अहवा आपो द्रवाः स्थैर्यवती वा पृथिवी [वृत्तं] सारिसलक्खणं यथा- अस्मिन् देशे घटा ऊर्ध्वग्रीवा अधस्तात्परिमण्डला विकुक्षिणः तथाऽन्येष्वपि देशेषु, सामान्यलक्षणं अप्पितववहारिगं अणप्पितववहारिगं च, अप्पितववहारिगं जहा पढमसमयसिद्धो पढमसमयसिद्धस्स सिद्धत्तणेण अप्पितववहारितो, अवंतरसामन्नेण समाण इत्यर्थः, अन्नो अणप्पितववहारिको, तेण सामन्नेण ण समाणो, अन्नेण समान इत्यर्थः, एवं घटपटरथसर्षपाद्या भावाः । अहवा इमो पगारो- गमितं प्रदर्शितं उपनीतं अर्पितमित्यर्थः, अर्पितववहारिगं जहा सिज्झमाणो आदिट्ठो एगसमयसिद्धस्स सिद्धत्तणेण समाणो, अणप्पितववहारिगं जहा एगो सरिसवो तहा बहवे, जहा बहवे तहा एगो सरि- ॥३७४॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥३७५॥

लक्षणद्वारं

सवो, एस वितिओ पगारो सामन्नलक्खणस्स । आगारलक्खणं अणेगविहं गंतुमागारं देति भोत्तुमागारं देति सोतुमागारं देति, एवं वक्तुं द्रष्टुमित्यादि, कहं गंतुं ?-अवलोयणा दिसाणं वियंभणं साडगस्स संठवणा । आसणासिढिलीकरणं पट्ठितलिंगाणि चत्तारि ॥ १ ॥ भोत्तुं-निज्झाति भोयणविधिं वदणं पस्संदते य से बहुसो । दिट्ठी य भमति तत्थेव पडति छायस्स (बुभुक्षितस्य) लिंगाणि ॥ १ ॥ रसणं वा विक्कियते ततो हुत्तं वा पुलोएति । सोत्तुं जहा 'ओहीरते य णिद्दाति तस्सविय सइयकामयंतस्स । दुहियस्स ओमिलाइ मज्झत्थं वीयरागस्स ॥ १ ॥ द्रष्टुं जहा- आगारेहिं सुणेमो णाणावन्नेहिं चक्खुरागेहिं । जणमणुरत्तविरत्तं पहट्ठचित्तं च दुट्ठं च ॥ १ ॥ आकारैरिंगितैर्भावैः, क्रियाभिर्भाषितेन च । नेत्रवक्त्रविकारैश्च, गृह्यतेऽन्तर्गतं मनः ॥ २ ॥ अच्छीणि चेव जाणंति० ॥ ३ ॥ रुट्ठस्स खरा दिट्ठी उप्पलधवला पसन्नचित्तस्स । दुहियस्स ओमिलायति गंतुमणस्सुस्सुया होति ॥ ४ ॥ गंतुं पडिआगतलक्खणं चउव्विहं- पुरतो वाहतं पच्छतो वाहतं दुहतो वाहतं दुहतो अवाहतं, पुरतो वाहतं जहा- जीवे भंते ! नेरतिते ? नेरतिते जीवे?, गोयमा ! जीवे सिया नेरतिते सिय अनेरतिते, नेरतिते पुण नियमा जीवे'। पच्छतो वाहयं जहा 'जीवति भंते ! जीवे ? जीवे जीवति ?, गोयमा ! जीवति ता नियमा जीवे, जीवे पुण सिय जीवति सिय नो जीवति ?, दुहओ वाहयं जहा 'भवसिद्धिए णं भंते ! नेरतिते ? नेरइए भवसिद्धिए ?, गोयमा ! भवसिद्धिए सिय नेरतिते सिय अनेरतिते, नेरतितेऽवि सिय भवसिद्धिए सिय अभवसिद्धिते, दुहतो अव्वाहतं जहा-जीवे भंते ! जीवे ?, जीवे जीवे ?, गोयमा ! जीवे नियमा जीवे, किमुक्तं भवति ?-जीव उपयोगः, उपयोगोऽपि जीवः । णाणत्तीलक्खणं चउव्विहं, दव्वतो ४, दव्वणाणत्ती दुविहा- तद्दव्वणाणत्ती अन्नदव्वणाणत्ती य, तद्दव्वणाणत्ती जहा ॥३७५॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

लक्षणद्वारं

परमाणुपोग्गले परमाणुपोग्गलस्स दव्वतो णाणा, अन्नदव्वणाणत्ती परमाणुपोग्गले दुपदेसियादीण दव्वतो नाणा, एवं दुपदेसियाणवि भावेयव्वं, एवं खेत्तओ एगपदेसोगाढादीणा, कालओ एगसमयट्ठितीगादीणा, भावओ एगगुणकालगादीणा तन्नाणत्ती अन्नदव्वजाणत्ती य भावेयव्वा।अन्ने भणंति-तद्दव्वणाणत्ती जहा परमाणुपोग्गले परमाणुपोग्गलस्स, (अण्णा) दव्वतो अ णाणत्ती परमाणुपोग्गले परमाणुपोग्गलवतिरित्तस्स, दव्वतो णाणत्तीअणाणत्तिउभयादेसेणं अवत्तव्वं, एवं दुपएसियादि जाव दसपदेसितो तिधा भाणियव्वो, एवं तुल्लअसंखेज्जपदेसिओ, एवं तुल्लअणंतपदेसिओ उ, खेत्ततो एगपदेसोगाढे पोग्गले एगपदेसोगाढवतिरित्तस्स पोग्गलस्स खेत्तओ णाणत्ती एवं जाव तुल्लअसंखेज्जपएसोगाढेत्ति, एवं कालतोवि भाणियव्वं, भावतो एगगुणकालगादी, जं से णाणत्तं सा से णाणत्ती, जं से अणाणत्तं सा से अनाणत्तीति ।

निमित्तलक्खणं अट्ठंगमहानिमित्तं, तंजहा- भोमुप्पातं सुविणंतालिक्खं अंगं सरं लक्खणं वंजणं, उप्पादलक्खणं अप्पितववहारितं अणप्पियववहारियं, अप्पियववहारियंति वा विसेसादिट्ठंति वा एगट्ठा, तव्विवरीतमियरं, तत्थ अप्पितं जहा पढमसमयसिद्धो सिद्धत्तणेण उप्पन्नो, अणप्पितो जो जेण भावेण उप्पन्नो । विगतिलक्खणं दुविहं- अप्पितवव० अणप्पि०, अप्पियं जहा चरिमसमयभवसिद्धिओ भवसिद्धियत्तणेणं विगतो, अणप्पितं जो जेण भावेण विगतो। वीरियलक्खणं, वीरियंति वा सामत्थंति वा सत्तीति वा एगट्ठा, जहा वायामलक्खणो जीवो, तेसुं तेसुं भावेसु यस्मादुत्पद्यते, विरियंति बलं जीवस्स लक्खणं, जं च जस्स सामत्थं दव्वस्स चित्तरूवं जहा विरियं महोसहादीणंति। भावलक्खणं छव्विहं-उदतितो उदयलक्खणो, उवसामितो उवसमलक्खणो, ॥२७६॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥३७७॥

लक्षणं-नयाश्च

खतियो अणुप्पत्तिलक्खणो, खतोवसमितो मीसलक्खणो, परिणामितो परिणामलक्खणो, संनिवातितो संजोगलक्खणो, सामातियं पडुच्च भावलक्खणं भंनति, अहवावि भावलक्खणं चतुव्विहं सद्दहणमादीति, तंजहा-सद्दहणलक्खणं जाणणालक्खणं विरतिलक्खणं विरताविरतिलक्खणं, सद्दहानलक्खणं सम्मत्तसामाइयं जाणणालक्खणं सुतसामातियं विरतिलक्खणं चरित्तसा० विरताविरतिलक्खणं चरित्ताचरित्तसामाइयं, तित्थगरा एवं चउलक्खणसंजुत्तं सामाइयं परिकहेंति । तेऽवि गोयमसामिप्पभितयो जम्हा चतुलक्खणसंजुत्तमेव तित्थकरो भासति तेण तहेव निसामेंति । लक्खणं गतं ॥

इयाणिं नए समोतारणा, नयंतीति नया, वत्थुतत्तं जहा अवबोहगोयरं पावयंतित्ति, अन्ने भणंति-नयंतीति नयाः कारगाः व्यंजगाः प्रकाशका इत्यर्थः, ते य सत्त-णेगमो संगहो ववहारो उज्जुसुतो सद्दो समभिरूढो एवंभूतो य । एतेसिं लक्खणं विभासितव्वं, तत्थ णेगेहिं माणेहिं मिणतित्ति णेगमो, ण एगगमो णिरुत्तविहाणेण, माणंति वा परिच्छेदोत्ति वा गहणपगारोत्ति वा एगट्ठा, मिणतित्ति वा परच्छिंदतित्ति वा गिण्हतित्ति वा एगट्ठा, सामन्नमणेगप्पगारं विसेसं वा अणेगप्पगारं जेण गमेति एत्थ पत्थयवसहिपएसदिट्ठंतेहिं तेण णेगमो, घटदिट्ठंतेण वा, जहा-घटो णामट्ठवणादव्वभावभेदभिन्नो वत्थुपरिणामो पृथुबुध्नोदराद्याकारो सौवर्णः मार्तिकः पाटलिपुत्रीयः वासंतकः पीतः कृष्णश्चेत्येवमादि भाव्यं ।

॥३७७॥

संगहितपिंडितत्थं० ॥ ८-३२ ॥ ७५६ ॥ समस्तो गृहीतः-उपात्तः संगृहीतः, कथं ?, पिंडितः संमीलितः क्रोडीकृतः अभेदीकृतः सामान्यीकृत इत्यर्थः, कोऽसौ ?-अर्थत इत्यर्थः, संगहितो पिंडितो अत्थो जमेतं संगहितपिंडितत्थं । किं तं ?-संग-

प्रत सूत्रांक [-] दीप अनुक्रम [-]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता..........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] “आवश्यक” निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥३७८॥

नया-धिकारः

हवयणं-संगहभणणं, एवं समासतो ब्रुवते तद्विदः, किमुक्तं भवति ?-सामान्यार्थावधारणं विशेषार्थावधारणं वा, यदुक्तं-तत्र सामान्यविशेषयोरपृथक्त्वात् सामान्यस्यैवावधारणे विशेषस्य तदंतर्भूतस्यावधारणमेवेति सामान्यमेव संगृह्णाति संग्रहवचनं, यथा पूर्वाभिहितः अनेकप्रकारोऽपि घटः मानादिभेदेऽवि घटसामान्यान्तर्भूत इत्यभिन्न इति ।

वच्चति विणिच्छियत्थं ववहारो सव्वदव्वेसु । सामान्येन-घटत्वमात्रेण संव्यवहर्तुं न शक्यत इति विनिश्चयार्थं व्रजति व्यवहारः, अधिकश्चयो निश्चयः-सामान्यं विगतो निश्चयः विनिश्चयः-निःसामान्यभावः तन्निमित्तं व्रजति-गच्छति सर्वद्रव्यविषये, विशेषमात्रावलंबी व्यवहार इत्यर्थः, यथा घटमानयेत्युक्ते न ज्ञायते कतमो घट इति निश्चयः क्रियते, सौवर्णं राजतं वा इत्यादि भाव्यं । एवं व्यवहारेणोक्ते सत्याह ऋजुसूत्रः-यथा सामान्येन न शक्यते संव्यवहर्तुं तथाऽतीतेन भग्नेन अनागतेन वा अनुत्पन्नेन इति । पच्चुप्पन्नग्गाही उज्जुसुतोत्ति वर्तमानमेव गृह्णातीत्यर्थः । एवं ऋजुसूत्रेण स्वमते स्थापिते आह शब्दः-यथाऽतीतानागताभ्यां न शक्यते संव्यवहर्तुं तथा नामस्थापनाद्रव्यलिंगवचनभिन्नैर्घटैर्न संव्यवहारः शक्यते कर्तुमिति, तत्र लिंगभिन्नो यथा तटस्तटी तटमिति, वचनभिन्नो यथा आपो जलमिति, अतः इच्छति विसेसिततरं पच्चुप्पण्णं णयो सद्दोत्ति, किमुक्तं भवति ?-वर्तमानेनापि भावघटेनैव लिंगवचनाभिन्नेन संव्यवहारः प्रवर्तत इत्येवंभूतो भावघटः प्रमाणं, स तु घटः कुंभो वित्ति । एवं तेनाप्यभिहिते आह समभिरूढः यथा नामादिघटैर्न शक्यते संव्यवहर्तुं तथा घट इत्युक्ते न कुटे संप्रत्ययः, भिन्नप्रवृत्तिनिमित्तत्वात्, ततश्च यदा घटार्थे कुटादिशब्दः प्रयुज्यते तदा वस्तुनः कुटादेस्तत्र संक्रांतिः कृता भवति, एवं च वत्थूओ संकमणं होति अवत्थू णये समभिरूढेत्ति, सर्वधर्माणां नियतस्वभावत्वादन्यत्र संक्रांत्योभयस्वभावापगमतो

॥३७८॥

अत्र ‘नय’अधिकार: कथयते

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥३७९॥

नया-धिकारः

अवस्तुतेत्यर्थः । एवमभिरूढेनाभिहिते आहैवंभूतः-यथा घट इत्युक्ते कुट इत्यवस्तु, एवं घट इत्युक्ते यदा न चेष्टते तदा न घटो, यदैवासौ चेष्टते तदैव घटः, 'घट चेष्टाया' मितिकृत्वा, एवं यदैव पुरं दारयति तदैव पुरंदरः, नान्यदा, मा भूत्सर्वपुरंदरप्रसंग इति । वंजणमत्थ तदुभयं एवंभूतो विसेसेतित्ति, इदमुक्तं भवति--व्यंजनं विशेषयति, एवं अर्थं, तदुभयं च । तत्र व्यंजनं यथा-घटशब्दः तदेव व्यंजनं यदैव विशिष्टचेष्टावन्तमर्थं व्यनक्ति, अन्यदा त्वव्यंजनम्-अवस्त्विति, अतिप्रसंगात्, तथा अर्थं विशेषयति, यथा-यदैव विशिष्टचेष्टावानर्थस्तदैव घटः, अन्यदा त्वघटो, अवास्त्वित्यातिप्रसंगादेव, तथा तदुभयं शब्दमर्थेन विशेषयत्यर्थं च शब्देन, यथा यदैव योषिन्मस्तकव्यवस्थितो जलाहरणादिचेष्टावानर्थो घटशब्देन व्यज्यते तदैवासौ घटः, तद्व्यंजकश्च शब्दः, अन्यदा तु वस्त्वंतरस्येव चेष्टाऽयोगादघटत्वं, तद्ध्वनेश्चाव्यंजकत्वमवस्तुत्वमिति नयसमासार्थः । एवमेते सप्त नयाः, किमर्थं मूलग्रहणं इति चेत् ? उच्यते-भेदोपप्रदर्शनार्थं ?, को भेदः ?, भन्नति—

एक्केक्को य सयविहो० ॥ ८-३६ ॥ ७५९ ॥ एक्केक्को शतभेद इति सप्त शतानीति, बितिओऽविय आदेसो पंच सया, नणु किमिति?, तिन्निऽवि सद्दनया एगो चेव, तेण पंच सया, णेगमसंगहववहारउज्जुसुयसद्दा । एत्थ उदाहरणं-एत्थ एक्केक्को उ सयभेद इति पंच सया । अपिचसद्दादन्नोऽवि आदेसो, जहा छ मूलनया, णेगमो दुविहो-संगहितो य असंगहितो य, संगहितो अ संगहं पविट्ठो, असंगहितो ववहारं पविट्ठो, एक्केको य सयविहो, एवं छस्सया । अहवा चत्तारि मूलनया, नेगमो संगहितो संगहे पविट्ठो, असंगहितो असंगहं, तेण संगह ववहार उज्जुसुय सद्दा चत्तारि णया । तेवि भज्जमाणा एक्केक्को सयविहो, एवं चत्तारि नयसया । अहवा दो मूलनया-दव्वट्ठिओ य पज्जवट्ठितो य, एक्केको सयविहो, एवं दो णयसया । अहवा दो नया वावहारिओ णेच्छतितो ॥३७९॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

य, तो उदाहरणं-वावहारियणयस्स कालतो भमरो, णेच्छतियणयस्स पंचवन्नो जाव अट्ठफासो । अहवा दो मूलणया-अप्पियववहारितो य अणप्पियववहारितो य, उदाहरणं जीवो नारकत्वेनार्पितः जीवत्वेनानर्पितः, एवं तिर्यग्मनुष्यदेवत्वेनापि भाव्यं । अहवा दो नया तीयभावपन्नवतो य पडुप्पन्नभावपन्नवतो य, उदाहरणं-'नेरतियाणं भंते ! किं एगिंदियसरीराइं ?' आलावओ, एवं एते उल्लोयेण णया भणिता । एतेहिं किं पयोयणं ?, भन्नति—

एतेहिं दिट्ठिवादे० ॥ ८-३७ ॥ ७६० ॥ एतेहिं सत्तहिं णयसएहिं पंचहिं वा दिट्ठिवाते परूवणा-पन्नवणा उवप्पदरिसणा, किं दिट्ठिवादे सव्वत्थ एतेहिं परूवणा ?, उच्यते, क्रत्थइ सुत्तट्ठमत्तकहणा य । इहइं कालियसुत्ते अणब्भुवगमो सतेहिं, मूलणयेहिं तु सत्तहि अधिकारो प्रायशः, ते पुण समासतो तिन्नि-एक्को दव्वट्ठितो सुद्धो संगहो, पज्जवट्ठितो सुद्धो एवंभूतो, मज्झिमा दव्वट्ठितपज्जवट्ठिता, एतेहिं तिहिं किं कारणं अहिगारो ?, जेण भणितं—

णत्थि णतेहिं विहूणं० ॥ ८-३८ ॥ ७६१ ॥ को दृष्टान्तः ?-यथा वृक्ष इति प्रातिपादिके सर्वासां विभक्तीनां समवतारः, यथा वा सर्वं वाङ्मयं धातुविभक्तिलिंगैर्व्याप्तमिति, यदि एवं तो ओसन्नग्गहणं किं ?, सव्वत्थ किमिति ण भण्णति ?, भण्णति-आसज्ज तु सोतारं णए णयविसारदो बूया, पुरिसज्जातं पडुच्च व जाणयो सव्वे णये पन्नवेज्जा । जतो—

मूढणातियं सुतं कालियं० ॥८-३९॥७६२॥ मूढा-अविभागत्था गुप्ता नया जंमि अत्थि तं मूढणतियं, तेण ण णया सव्वत्थ समोतरंति । इह किं कदादी समवतरिज्जियाइया ?, भन्नति-अपुहुत्ते समोतारो णत्थि पुहुत्ते समोतारो । अन्ने भणंति-इहं कालियाणुओगे अणुब्भवगम्मंति सर्वे, किमर्थमिति चेत् व्यवहारविधिरिक्तत्वात् सूक्ष्म उपरिष्टत्वात् । जेण भन्नाति-'तेसामेव विय-

श्री आवश्यक चूर्णी उपोद्घात निर्युक्तौ ॥३८१॥

नया-धिकारः

प्पा साहप्पसाहा सुहुमभेदा, उक्तं च-ववहारेणऽत्थपत्ती अणप्पितणये अ तुच्छभासाए । मूढणयअगमिएण य कालेण य कालियं नेयं ॥१॥ जत्थवि होज्ज तत्थवि तिहिं आदिल्लेहिं नतेहिं, किं कारणं तिहिं अहिगारो ?, किं नयविरहितं णो अत्थि ?, उच्यते-

णत्थि णतेहि विहूणं०॥ ८-३९ ॥ ७६१ ॥ किन्न परूविज्जंति ?, उच्यते—

मूढणइयं सुतं० ॥ ८-३९ ॥ ७६२ ॥ जेण तंताइयं दव्वं ण भवाति, कहं ?, जेण णिच्चवादे अनियुक्तत्वप्रसंगः, अणिच्चवादे वैफल्यं भवति, तेण ते भवंति य न भवंति य, तेण मूढणतियं जेण य मुज्झति पन्नवतो एतेहिं सव्वेहिं समोतारे, ता ण सकातित्ति भणितं होति, जदा पुहुत्तं आसि तदा एगंमि अणुतोगे चत्तारिवि परूविज्जाइंतया, पुहुत्ते कते समाणे पत्तेयं २ भासिज्जंति ते अत्था, ततो तु वोच्छिन्ना, चरणे सेसा तिन्निवि ण भासिज्जंति, एवं सेसेसुवि । कदा पुण पुहुत्तं जातं ? केच्चिरं वा कालं अपुहुत्तं आसि ? जाव अज्जवइरा ताव अपुहुत्तं आसि, तेसिं आरतो पुहुत्तं जातं, जहा-इमं कालियं, इमो धम्मो, इमं गणितं, इमं दवियं, को पुण अज्जवइरो जंमि अपुहुत्तमासि ? जेण य कारणेण पुहुत्तं कतमिति इच्छामि तेसिं अज्जवतिराणं उड्डाणपारियाणियं सोतुं, किह पुहुत्तं जातं ? ।

तुंबवणसंनिवेसा० ॥ ८--४१।७६४ ॥ पुव्वभवे सक्कस्स देवरन्नो वेसमणस्स सामाणिओ आसि, इतो य वद्धमाणसामी तेणं कालेणं तेणं समएणं पिट्ठिचंपाणाम णगरी, तत्थ सालो राया, महासालो जुवराया, तेसिं सालमहासालाणं भगिणी जसवती, तीसे पीढरो भत्तारो, जसवतीए अत्तओ पिढरपुत्तो गागली णाम कुमारो, सामी समोसढो सुभूमिभागे, सालो निग्गतो, धम्मं सोच्चा जं नवरं महासालं रज्जे ठावेमि, सो अतिगतो, तेण आपुच्छितो महासालोऽवि भणति--अहंपि संसारभउव्विग्गो जहा

॥३८१॥

अथ वज्रस्वामि कथानक आरभ्यते

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

तुब्भे इहं मेढी पमाणं तहा पव्वातियस्सवि, ताहे गागली कंपिल्लाओ सद्दावेऊण पट्टो बद्धो, अभिसित्तो, राया जायो, तस्स माया कंपिल्लपुरे णगरे दिन्निया पिढरस्स, तेण ततो सद्दावितो, सो पुण तेसिं दो सिवियाओ कारेइ, जाव ते पव्वतिया, सा भगिणी समणोवासिया जाता। तए णं ते समणा होंतगा एक्कारस अंगा अहिज्जिता, ततेणं समणे भगवं महावीरे बहिता जणवयविहारं विहरति। तेणं कालेणं २ रायगिहं णगरं, रायगिहे समोसढो, ताहे सामी पुणो निग्गओ चंपं पधावितो, ताहे सालमहासाला सामिं आपुच्छति-अम्हे पिट्ठीचंपं वच्चामो, जति णाम ताण कोऽपि बुज्झेज्जा, सम्मत्तं वा लभेज्जा ?, सामीवि जाणति जहा ताणि संबुज्झीहिंति, ताहे सामिणा गोयमसामी से बितिज्जओ दिन्नो, सामी चंपं गतो, तत्थ समोसरणं, गागली पिढरो जसवती य निग्गयाणि, भगवं धम्मं कहेति, ताणि धम्मं सोऊण संविग्गाणि, ताहे गागली भणति-जं णवरं अम्मापियरो आपुच्छामि जेट्ठपुत्तं च रज्जे ठवेमि, ताणि आपुच्छिताणि भणंति--जदि तुमं संसारभयुव्विग्गो अम्हेऽवि, ताहे से पुत्तं रज्जे ठावेत्ता अम्मापितीहिं सह पव्वतितो, गोयमसामी ताणि घेत्तूणं चंपं वच्चति, तेसिं सालमहासालाणं पंथं वच्चंताणं हरिसो जातो--जाहे (जहा) संसारं उत्तारियाणि, एवं तेसिं सुभेणं अज्झवसाणेणं केवलणाणं उप्पन्नं, इतरेसिंपि चिन्ता जाता जहा अम्हे एतेहिं रज्जे ठविताणि संसारा मोइताणि, एवं चिंतेंताणं सुभेण अज्झवसाणेणं तिण्हवि केवलणाणं उप्पन्नं, एवं ताणि उप्पन्ननाणाणि चंपं गयाणि, सामी पयाहिणं करेमाणाणि तित्थं णमिऊण केवलपरिसं पधाविताणि, गोयमसामीवि भगवं वंदिऊण तिक्खुत्तो पादेसु पडितो उट्ठितो भणति--कहिं वच्चह ? एह तित्थकरं वंदह, ताहे सामी भणति--मा गोयमा ! केवली आसाएहि, ताहे आउट्टो खामेति, संवेगं च गतो, तत्थ गोयमसामिस्स संका जाता-माऽहं ण सिज्झिज्जामित्ति, एवं च गोयमसामी चिंतेति। इतो य देवाण संलावो वट्टति-

॥३८२॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णी उपोद्घात निर्युक्तौ ॥३८३॥

वज्रस्वाम्य-धिकारः

जो अट्ठावयं विलग्गति चेतियाणि य वंदति धरणिगोयरो सो तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झति, ताहे सामी तस्स चित्तं जाणाति ताव-
साण य संबोहणयं, एयस्सवि थिरता भविस्सतित्ति दोवि कताणि, एयस्सवि पच्चतो, तेऽवि संबुज्झिस्संतित्ति, सोऽवि सामिं आ-
पुच्छति अट्ठावयं जामित्ति, तत्थ भगवता भणितो-वच्च अट्ठावयं चेतियाणं वंदओ, तएणं भगवं हट्ठतुट्ठो वंदित्ता गतो, तत्थ य
अट्ठापदे जणवादं सोऊण तिन्नि तावसा पंचपंचसयपरिवारा पत्तेयं ते अट्ठावयं विलग्गामोत्ति तत्थ किलिस्संति, कोडिन्नो दिन्नो
सेवालो, जो कोडिन्नो सो चउत्थं २ काऊण पच्छा मूलं कंदाणि आहारेति सचित्ताणि, सो पढमं मेहलं विलग्गो, दिन्नो छट्ठंछट्ठेणं
काऊणं परिसडितपंडुपत्ताणि आहारेति, सो बितियं मेहलं विलग्गो, सेवालो अट्ठमं काऊण जो सेवालो सयंमतेल्लओ तं आहा-
रेति, सो ततियं मेहलं विलग्गो, एवं तेऽवि ताव किलिस्संति। भगवं च गोयमं ओरालसरीरं हुतवहतडिततडियतरुणरविकिरण-
सरिसतेयं एज्जंतं पेच्छंति, ते भणंति--एस किर एत्थ थुल्लओ समणो विलग्गिहिति ?, जं अम्हे महातवस्सी सुक्खा भुक्खा ण
तरामो विलग्गितुं, भगवं च गोयमे जंघाचारणलद्धीए तंतुलूतापुडगंपि णीसाए उप्पयति, जाव ते पलोएंति, एस आगतोत्ति २
एसो अदंसणं गतोत्ति, ताहे ते विम्हिता जाता पसंसंति, अच्छंति य पलोएंता जदि ओतरति ता एयस्स वयं सीसा, एवं ते
पडिच्छंता अच्छंति, सामीवि चेतियाइं वंदित्ता उत्तरपुच्छिमे दिसीभागे पुढविसिलापट्टए तुयट्टो, असोगवरपादवस्स अहे तं
रयणिं वासाए उवगतो॥ इतो य सक्कस्स लोयपालो वेसमणो, सोऽवि अट्ठापदं चेतियवंदओ एति, सो चेतियाणि वंदित्ता गोयम-
सामिं वंदति, ताहे सो धम्मं कहेति, भगवं अणगारगुणे परिकहेतुं पवत्तो, अंताहारा पंताहारा एवं वन्नेति जहा दसन्नभद्दकहाणगे
अणगारवन्नगे, वेसमणो चिंतेति--एस भगवं एरिसे साधुगुणे वन्नेति, अप्पणो य सा इमा सरीरसुकुमारता, एरिसा देवाणवि

॥३८३॥

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

श्री आवश्यक-चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥३८४॥

वज्रस्वाम्य-धिकारः

णत्थि, तत्थ भगवं तस्स आकूतं णाउं पोंडरीयं णामं अज्झयणं पन्नवेति, जहा

पोक्खलावतीविजए पोंडरीगिणी णगरी णलिणिगुम्मं उज्जाणं, तत्थ णं महापउमे णाम राया होत्था, पउमावती देवी, ताणं दो पुत्ताणं पुंडरीए कंडरीए य सुकुमाला जाव पडिरूवा, पुंडरीए जुवराया यावि होत्था। तेणं कालेणं तेणं समतेणं थेरा भगवंतो जाव नलिणिवणे उज्जाणे समोसढा, महापउमे णिग्गते, धम्मं सोच्चा जं णवरं देवाणु० पोंडरीयं कुमारं रज्जे ठवेमि, अहासु०, एवं जाव पोंडरीए राया जाते जाव विहरति। तएणं से कंडरीए कुमारे जुवराया जाते, तएणं से महापउमे राया पुंडरीयं रायं आपुच्छति, तए णं से पुंडरीए एवं जहा ओदायणो, णवरं चोद्दस पुव्वाइं अहिज्जति, बहूहिं चतुत्थछट्ठ बहूइं वासाइं सामन्नं मासियाए सट्ठिं भत्ता जाव सिद्धे। अन्नया ते थेरा पुव्वाणुपुव्विं जाव पुंडरिगिणीए समोसढा, परिसा निग्गया, तए णं से पुंडरीए राया कंडरिएणं जुगरन्ना सद्धिं इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठ जाव गते, धम्मकहा, जाव से पुंडरीए सावगधम्मं पडिवण्णे जाव पडिगते, सावए जाते। तए णं से कंडरीए जुवराया थेराणं धम्मं सोच्चा हट्ठ जाव जहेदं तुब्भे वदह जं णवरं देवाणु०! पुंडरीयं रायं आपुच्छामि, तएणं जाव पव्वयामि, अहासुहं०, तएणं से कंडरीए जाव थेरं णमंसति णमंसित्ता अंतियाओ पडिनिक्खमति २ तामेव चाउघंटं आसरहं दुरूहति २ जहा जमाली तहेव जाव पच्चोरुहति, जेणेव पुंडरीए राया तेणेव उवागच्छति, करतल जाव पुंडरीयं एवं वयासी- एवं खलु मए देवाणु० थेराणं जाव धम्मे णिसंते, सेऽवि य मे इच्छिते पडिच्छिते अभिरुतिते, तए णं अहं देवाणु०! संसारभउव्विग्गे भीते जम्मणमरणाणं, इच्छामि णं तुज्झेहिं अब्भणुण्णाते समाणे थेराणं जाव पव्वतित्तएत्ति, तएणं से पुंडरीए कंडरीयं एवं वयासी- मा णं तुमं देवाणु० इयाणिं थेराणं जाव पव्वयाहि, अहं णं तुमं महता महता रायाभिसेगेणं अभिसिंचिस्सामि, तएणं से ॥३८४॥

वज्रस्वामी-कथानक मध्ये पुंडरिक-कंडरिक कथानक वर्णयते

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता..........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥३८५॥

वज्रस्वाम्यधि० कंडरीक-वृत्तं

कंडरीए कुमारे पुंडरीयस्स रन्नो एयमट्ठं णो आढाति णो परिजाणाति तुसिणीते संचिट्ठति, तए णं से कंडरीए पोंडरीयं रायं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी-इच्छामि णं देवाणुप्पिया! जाव पव्वइत्तएत्ति, तएणं से पुंडरीए राया कंडरीयं कुमारं जाहे णो संचाएति विसयाणुलोमाहिं बहूहिं आघवणाहि य सन्नवणाहि य विन्नवणाहि य आघवेत्तए वा० ताहे विसयपडिकूलाहिं संजमभउव्वेगकारीहिं पन्नवणाहिं पन्नवेमाणे २ एवं वयासी- एवं खलु जाता! निग्गंथे पावयणे सच्चे अणुत्तरे केवलिए एवं जहा पडिक्कमणे जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेन्ति, किं तु अही वा एगंतदिट्ठीए खुरो इव एगंतधाराए लोहमया व जवा चव्वेयव्वा वालुयाकवले इव निरस्साए गंगा वा महाणदी पडिस्सोतं गमणताए महासमुद्दे इव भुयाहिं दुत्तरे तिक्खं कमियव्वं गरुयं लंबेयव्वं असिधारं वतं चरितव्वं, णो य खलु कप्पति जाता! समणाणं णिग्गंथाणं पाणातिवाए वा जाव मिच्छादंसणसल्ले वा नो० जाता! से अहाकम्मिएइ वा उद्देसिए वा मिस्सजाते इ वा उद्दएए पूतिते कीए पामिच्चे अच्छेज्जे अणिसट्ठे अभिहडेति वा ठतिएइ वा रतितएति वा कंतारभत्तेइ वा दुभिक्खभत्तेइ वा गिलाणभत्तेइ वा वद्दलियाभत्तेइ वा पाहुणगभत्ते इवा सेज्जातरपिंडेति वा रायपिंडेति वा मूलभोयणेति वा कंदभो० फलभो० बीयभो० हरियभोयणेति वा भोत्तए वा पातए वा, तुमं च णं जाता! सुहसमुचिते, णो चेव णं दुहसमुचिते, णालं सीतं णालं उण्हं णालं खुहा णालं पिवासा णालं चोरा णालं वाला णालं दंसा णालं मसगा णालं वातियपेत्तियसेंभियसन्निवाते विविहे रोगातंके उच्चावए वा गामकंटगे वा बावीसं परीसहोवसग्गे उदिन्ने समं अहियासेत्तएत्ति, तं णो खलु जाता! अम्हे इच्छामो तुज्झं खणमवि विप्पओगं, तं अच्छाहि ता जाता! अणुभवाहि रज्जसिरिं, पच्छा पव्वइहिसि, तए णं से कंडरीए ॥३८५॥
एवं वयासी- तहेव णं तं देवाणु० जहेतं तुब्भे वयह, किं पुण देवाणु०! निग्गंथे पावयणे कीवाणं कायराणं कापुरिसाणं इहलोग-

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक-चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥३८६॥

पडिबद्धाणं परलोगपरंमुहाणं विसयतिसियाणं दुरणुचरे पागतजणस्स, वीरस्स निच्छियस्स ववसियस्स णो खलु एत्थं किंचि दुक्करं करणताए, तं इच्छामि णं देवाणु०! जाव पव्वतित्तएत्ति, तए णं तं कंडरीयं पुंडरीए राया जाहे नो संचातेति बहूहिं आघवणाहि य ४ आघवेत्तए वा ४, ताहे अकामए चेव निक्खमणं अणुमन्नित्था। तएणं से पुंडरीते कोडुंबिए सद्दावेति, एवं जहा जमालिस्स निक्खमणं तहेव पुंडरीओ करेति, पव्वइतो जाव सामाइयमादीयाइं एक्कारस अंगाइं अधिज्जेति २ बहूहिं चउत्थच्छट्ठट्ठमजाव विहरति। अन्नया तस्स कंडरीयस्स अन्तेहि य पंतेहि य जहा सेलगस्स जाव दाहवक्कंतीए यावि विहरति॥

ततेणं ते थेरा भगवंतो अन्नया कयादी पुव्वाणुपुव्विं चरमाणा जाव पुंडरिगिणिए नलिणिवणे समोसढा, तए णं से पुंडरीए राया इमीसे जाव पज्जुवासति, धम्मकहा. तएणं से पोंडरीए राया धम्मं सोच्चा जेणेव कंडरीए अणगारे तेणेव उवागच्छति २ कंडरीयं वंदति णमंसति २ कंडरीयस्स सरीरगं सव्वाबाहं सरुयं पासति २ जेणेव थेरा तेणेव उवागच्छति, थेरे वंदति वंदित्ता एवं वयासी-अहं णं भंते! कंडरीयस्स अणगारस्स अहापवत्तेहिं तेगिच्छिएहिं फासुएसणिज्जेहिं अहापवत्तेहिं ओसहभेसज्जभत्तपाणेहिं तिगिच्छं आउंटामि, तुब्भे णं भंते! मम जाणसालासु समोसरह, तएणं थेरा पुंडरीयस्स रन्नो एयमट्ठं पडिसुणेंति २ जाव जाणसालासु विहरंति। तते णं से पुंडरीए कंडरीयस्स तेगिच्छं आउट्टेति, ततेणं तं मणुन्नं असणं४ आहारितस्स समाणस्स से रोगातंके खिप्पामेव उवसंते हट्ठे जाते अरोगे बलियसरीरे जहा सेलओ तहा मुक्केवि समाणे तंसि मणुन्नंसि असणे ४ समुच्छिते जाव अज्झोववन्नो, मज्जपाणगंसि य, णो संचाएति बहिता अब्भुज्जतेणं जाव विहरित्तएत्ति। तए णं से पुंडरीते इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे जेणेव कंडरीए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता कंडरीयं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेति २ वंदति वंदित्ता एवं वयासी-ध-

वज्रस्वा-म्यधि० कंडरीक-वृत्तं

॥३८६॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥३८७॥

वज्रस्वाम्यधि० कंडरीकवृत्तं

ण्णोसि णं तुमं देवाणुप्पिया!, एवं सपुन्नेऽसि णं० कयत्थे० कयलक्खणे० सुलद्धे णं तव देवाणुप्पिया! माणुस्सए जम्मजीवितफले जं णं तुमं रज्जं च जाव अंतेपुरं च विच्छड्डतित्ता जाव पव्वतिते, अहं णं अधन्ने अकतपुन्ने जं नं माणुस्सते भवे अणेगजातिजरामरणरोगसोगसारीरमाणसपकामदुक्खवेयणावसगसतोवद्दवाविभूते अधुवे अणितिए असासए संझब्भरागसरिसे जलबुब्बुयसमाणे कुसग्गजलबिंदुसन्निभे सुमिणगदंसणोवमे विज्जुलयाचंचले अणिच्चे सडणपडणविद्धंसणधम्मे को पुव्विं पच्छा वा० अवस्सविप्पजहियव्वतेत्ति । तथा माणुस्सगं सरीरगंपि दुक्खायतणं विविधवाधिसतसंनिकेतं अट्ठितकडट्ठाट्ठियं छिराण्हारुजालओणद्धसंपिणद्धं मट्टियभंडंव दुब्बलं असुइसंकिलिट्ठं अणिट्ठवियं सव्वकालसंठप्पयं जराकुणिमं जज्जरघरं व सडणपडणविद्धंसणधम्मयं पुव्विं पच्छा वा अवस्सविप्पजहियव्वं भविस्सतित्ति, कामभोगावि य णं माणुस्सगा असुती असासया. वंतासवा एवं पित्ता० खेला० सुक्का० सोणितासया उच्चारपासवणखेलसिंघाणगवंतपित्तमुत्तपूयसुक्कसोणितसमुब्भवा अमणुन्नदुरुयमुत्तिपूतियपुरीसपुन्ना मतगंधुस्सासा असुभसिस्सा सव्वियणगा बीभच्छा अप्पकालिया लहुसगा कलमला विवासदुक्खं बहुजणसाधारणा परिकिलेसकिच्छदुक्खसज्झा अबुहजणनिसेविता सदा साधुजणगरहणिज्जा अणंतसंसारवद्धणा कडुफलविवागा चुडुलिव्व अमुंचमाणदुक्खाणुबंधिणो सिद्धिगमणाविग्घा पुव्विं वा पच्छा वा अवस्सविप्पजहियव्वा भविस्संतित्ति, जेऽवि य णं रज्जे हिरन्ने सुवन्ने य जाव सावतेज्जे सेऽविय णं अग्गिसाहिते चोरसाहिते रायसाहिते मच्चुसाहिते दातियसाधिते अधुवे अणितिते असासए पुव्विं पच्छा वा अवस्सविप्पजहियव्वे भविस्सतित्ति । एवंविहम्मिवि रज्जे य जाव अंतेपुरे य माणुस्सएसु य कामभोगेसु मुच्छिते ४ नो संचाएमि जाव पव्वतित्तए, तं धन्ने सि णं तुमं जाव सुलद्धेणं जं नं पव्वतिते । तते णं से कंडरीए पुंडरीएणं एवं वुत्ते तुसिणीए संचिट्ठति, ततेणं से पोंडरीए दोच्चंपि तच्चंपि एवं वता- ॥३८७॥

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥३८८॥

वज्रस्वाम्यधि० कंडरीकवृत्तं

सी–धम्मेसिणं तुमं जाव अहं अधन्ने, ततेणं से दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्ते समाणे अकामए अवसंवसे लज्जाति य गारवेण य पुंडरीयं राय आपुच्छाति २ थेरेहिं सद्धिं बाहिया जणवयविहारं विहरति।

ततेणं से कंडरीए थेरेहिं सद्धिं कंचि कालं उग्गंउग्गेणं विहरेत्ता ततो पच्छा समणत्तणपरितंते समणत्तणनिव्विन्ने समणनिब्भच्छिते समणगुणमुक्कजोगी थेराणं अंतियाउ सणितं २ पच्चोसक्काति २ जेणेव पुंडरिगिणी जेणेव पुंडरीयस्स रन्नो भवणे जेणेव असोगवणिया जेणेव असोगवरपायवे जेणेव पुढविसिलापट्टगे तेणेव उवागच्छति उवागच्छेत्ता जाव सिलापट्टयं ओहयमण जाव झियाति। ततेणं पुंडरियस्स अम्मधाती तत्थ आगच्छति जाव तं तहा पासति पासित्ता पुंडरियस्स साहति, सेवि त णं अंतेपुरपरयालसंपरिवुडे तत्थ गच्छति, गच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं जाव धन्ने णं सव्वं जाव तुसिणीए।

ततेणं पुंडरिए एवं वयासी—अट्ठो भंते! भोगेहिं?, हन्ता अट्ठो, तते णं कोडुंबियपुरिसे सद्दावेत्ता कलिकलुसेणवाभिसित्तो रायाभिसेगेणं जाव रज्जं पसासेमाणे विहरति। तते णं से पुंडरिए सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेति, करेत्ता चाउज्जामं धम्मं पडिवज्जति पडिवज्जित्ता कंडरियस्स आयारभंडगं सव्वसुभसमुदयंपिव गेण्हति २ इमं अभिग्गहं गेण्हति २ कप्पति मम थेराणं अंतिए धम्मं पडिवज्जेत्ता पच्छा आहारित्तएत्तिकट्टु थेराभिमुहे निग्गतो।

कंडरियस्स तु तं पणीतं पाणभोयणमाहारितस्स नो संमं परिणतं, वेतणा पाउब्भूया उज्जला विउला जाव दुरहितासा, तते णं से रज्जे य जाव अंतेपुरे य मुच्छिते जाव अज्झोववन्ने अट्टदुहट्टवसट्टो अकामगे कालं किच्चा सत्तमपुढविए तेत्तीससागरट्ठितीए जातो।

॥३८८॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥३८९॥

पुंडरिएऽविय णं थेरे पप्प तेसिमंते दोच्चंपि चाउज्जामं धम्मं पडिवज्जति पडिवज्जेत्ता छट्ठक्खमणपारणगंसि अडित्ता जाव आहारिते, तेण य कालातिक्कंतसीतललुक्ख अरसविरसेण अपरिणतेण वेयणा दुरहियासा जाता, तते णं से अधारणिज्जमिति कट्टु करतलपरिग्गहितं जाव अंजलिं कट्टु नमोत्थुणं अरिहंताणं जाव संपत्ताणं णमोत्थु णं थेराणं भगवंताणं मम धम्मातरिताणं धम्मोवतेसगाणं, पुव्विंपि त णं मते थेराणं अंतिए सव्वे पाणातिवाए पच्चक्खाते जावज्जीवाते जाव सव्वे य मिच्छादंसणसल्ले पच्चक्खाते, इयाणिंपि य णं तेसिं चेव भगवंताणमंतिगे सव्वं पाणाइवातं जाव सव्वमकरणिज्जं जोगं पच्चक्खामि, जंपि य मे इमं सरीरगं जाव एतंपि चरिमेहिं उस्सासनिस्सासेहिं वोसिरामित्ति, एवमालोतितपडिक्कंते समाहिप्पत्ते कालं किच्चा सव्वट्ठसिद्धे तेत्तीससागरोवमाऊ देवे जाते । ततो चतित्ता महाविदेहे सिज्झिहिति ॥ तं मा तुमं दुब्बलत्तं बलियत्तं वा गेण्हेहि । जहा सो कंडरीतो तेणं दुब्बलेणं अट्टदुहट्टवसट्टो सत्तमाए उववन्नो, पुंडरिओ पडिपुन्नगलकवोलो सव्वट्ठसिद्धे उववन्नो । एवं देवाणुप्पिता ! बलिओ दुब्बलो वा अकारणं, एत्थ झाणनिग्गहो कातव्वो, झाणनिग्गहो परमं पमाणं । तत्थ वेसमणो अहो भगवता आकूतं णातंति एत्थ अतीव संवेगमावन्नो वंदित्ता पडिगतो । तत्थ वेसमणस्स एगो सामाणितो देवो तेण तं पोंडरीयज्झयणं ओगाहितं पंच सतोाण, संमत्तं च पडिवन्नो, केति भणंति अ-जंभगो सो, ताहे भगवं कल्लं चेतिताणि वंदित्ता पच्चोरुहति, ते तावसा भणंति-तुब्भे अम्हं आयरिया अम्हे तुब्भं सीसा, सामी भणति-तुज्झ य अम्ह य तिलोगगुरू आयरिया, ते भणंति-तुब्भवि अन्नो आयरियो?, ताहे सामी भगवतो गुणसंथवं करेति, ते पव्वाविता, देवताए लिंगाणि उवणीताणि, ताहे ते भगवया सद्धिं वच्चंति, भिक्खा वेला य जाता, भगवं भणति-किं आणिज्जतु ?, ते भणंति-पायसो, भगवं च सव्वलद्धिसंपन्नो पडिग्गहं घयमधुसंजुत्तस्स भरेत्ता आगतो, ताहे भणिता-परिवाडीए ठाह, ॥३८९॥

वज्रस्वाम्यधि० कंडरीकवृत्तं

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥३९०॥

वज्रस्वाम्य-धिकारः

ते ठिता, भगवं च अक्खीणमहाणसिओ, ते धाता, ताहे सुट्ठुतरं आउट्टा, ताहे सयं आहारेंति। ताहे पुणरवि पट्ठितो, तेसिं च सेवालभक्खाणं जेमिन्ताणं चेव नाणं उप्पन्नं, दिन्नस्स वग्गे छत्तादिच्छत्तं पेच्छंताणं, कोडिन्नस्स वग्गे सामीं दट्ठूणं उप्पन्नं, गोयमसामी पुरतो कड्ढेमाणो सामीं पयाहिणीकरेति, तेऽवि केवलिपरिसं पहाविता, गोयमसामी भणति- एह सामीं वंदह, सामी भणति- गोयम! मा केवली आसाएहि, गोयमसामी आउट्टो मिच्छादुक्कडं करेति। ततो गोयमसामिस्स सुट्ठुतरमधिती जाता, ताहे सामी गोतमं भणति- किं देवाणं वयणं गेज्झं आउ जिणाणं ?, गोयमो भणति- जिणवराणं, तो कीस अद्धितिं करेसि ?, ताहे सामी चत्तारि कडे पन्नवेति, तंजहा- सुंबकडे विदल० चम्म० कंबलकडे, एवं सीसावि, गोयमसामी य कंबलकडसामाणो, किंच- चिरसंसट्ठोसि गोयमा! जाव अविसेसमणाणत्ता भविस्सामो, ताहे सामी दुमपत्तयं नाम अज्झयणं पन्नवेति।

देवोऽवि वेसमणसामाणिओ तओ चइत्ताणं तुंबवणसण्णिवेसे धणगिरि णाम गाहावती, सो य सड्ढो, सो य पव्वइतुकामो, तस्स य मातापितरो धरेंति, पच्छा सो जत्थ जत्थ वरेति तत्थ तत्थ विप्परिणामेति, जथा- अहं पव्वइउकामो, तस्स य तदाणुरूवस्स गाधावतिस्स धूया सुणंदा णाम, सा भणति- ममं देह, ताहे सा दिण्णा, तीसे य भाया अज्जसमिओ नामं पुव्वं पव्वइयओ, तीसे य सुणंदाए कुच्छिंसि सो देवो उववण्णो, ताहे भणति धणगिरि- एस ते गब्भो बितिज्जओ होहिति, सो सीहगिरिस्स पासे पव्वइतो। इमाऽवि णवण्हं मासाणं दारओ जातो, तत्थ य महिलाहिं आगताहिं भण्णति- जइ से ण पिता पव्वइतो होन्तो तो लट्ठं होंतं, सो सण्णी जाणति-जहा मम पिता पव्वइओ, तओ तस्सेवं अणुचिन्तेमाणस्स जातिस्सरणं उप्पण्णं, ताहे रत्तिं दिवा य रोएति, वरं सा णिव्विज्जंती तो सुहं पव्वइस्सन्ति। एवं छम्मासा वच्चंति। अन्नया आयरिया समोसढा, ताहे समिओ

॥३९०॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥३९१॥

वज्रस्वाम्य-धिकारः

धणगिरी य आपुच्छंति जहा सण्णायगाणि पेच्छामोत्ति संदिसावेति, सउणेण वाहरितं, आयरिएहिं भणितं- महंतो लाभो अज्ज, सचित्तं वा अचित्तं वा लभह तं सव्वं लएह, ते गता, उवसग्गिज्जितुमारद्धा, अण्णाहिं महिलाहिं भण्णत्ति- एतेसिं दारगं उवट्ठवेहि, तो कहिं नेहिंति ?, पच्छा ताए भणितं- मए एवतियं कालं संगोवितो एत्ताहे तुमं संगोवेहि, ताहे तेण भणितं-मा पच्छाणुतप्पिहिसि, ताहे सक्खी काऊण गहितो छम्मासिओ, ताहे तेण चोलपट्टएण पत्ताबंधितो, न रोवति, जाणति सण्णी, ताहे तेसु अतितेसु आयरिएहिं भाणं भरियंति हत्थो पसारितो, दिण्णो, हत्थो भूमिं पत्तो, भणाति- अज्जो ! णज्जति वइरंति, जाव मुक्कं पेच्छति देवकुमारोवमं दारगं, भणति- सारक्खेह दारगं एतं, पवयणस्स आहारो एसत्ति, तत्थ से वइरोत्त्वेव णामं कतं । ताहे संजतीणं दिण्णो, तासिं सेज्जातरकुले सेज्जातराणि जाहे अप्पणगाणं चेडरूवाणं पीहगं वा ण्हाणं वा मद्दणं वा करेन्ति ताहे पुव्वं तस्स देंति, जाहे उच्चारादी आयरति ताहे आगारं करेति, रुयति वा, एवं संवड्ढति, फासुयपडोयारो तेसिं इट्ठो, साधूवि बाहिं विहरंति ।

ताहे सा णंदा पमग्गिता, ताओ निक्खेवोत्ति ण देन्ति, सा आगता २ थणं देति, एवं तिवरिसो जातो, अण्णदा साधू विहरेन्ता आगता, तत्थ राउले ववहारो जातो, सो भणति-ममेताए दिण्णओ, णगरं नंदाए पक्खितं, ताहे बहूणि खेलणगाणि कताणि, एवं रण्णो पासे ववहारच्छेदो, तत्थ पुव्वाहुत्तो राया, दक्खिणओ संघो, सयणपरिजणो वामगपासे णरवतिस्स, तत्थ राया भणति- मम कतत्थे तुब्भे, जत्तो चेडो वयति तस्स भवतु, तेहिं पडिस्सुतं, को पढमं वाहिरउ ?, पुरिसातीयो धम्मत्ति पुरिसो वाहरतु, णगरजणो आह- एतेसिं संचितओ, माता सद्दावेउ, अविय माता दुक्करकारिया, पुणो य पेलवसत्ता, तम्हा एसा चेव ॥३९१॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता..........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णिः-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक-चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥३९२॥

वज्रस्वाम्य-धिकारः

पढमं वाहरतु, ताहे सा आसहत्थिरहउसभएहिं मणिकणगरतणचित्तेहिं बाललोभणएहि य भणइ-अवलोएह ता वइरसामी !, ताहे पलोएन्तो अच्छति, जाणति- जइ संघं अवमण्णामि तो दीहो संसारो, अवि य-एसावि पव्वइस्सति, एवं तिण्णि वारे वाहरितो ण एति ताहे पिता भणति- जइ सि कतव्ववसाओ धम्मज्झयभूसियं इमं वइर !। गेण्ह लहुं रयहरणं कम्मरयपमज्जणं धीर ! ॥१॥ ताहे तुरितं गंतूणं गहितं, लोगो भणति- जयति धम्मो, उक्कुट्ठिसीहणातो य कतो, ताहे माता चिंतेति- मम भत्ता पव्वइतो, भाता पुत्तो य, अहं किं अच्छामि ?, एवं सावि पव्वइता।

ताहे साधूणीण चेव पासे अच्छति, तेण तासिं पासिं एकारस अंगाणि कण्हाहाडेण गहिताणि, पदाणुसारी सो भगवं, ताहे अट्ठवासओ संजतिपडिस्सताओ निक्कालिओ, ताहे उज्जेणिं गतो। तत्थ आयरियाणं पासे अच्छति, ताहे तत्थ य अहोधारं वासं पडति, ते य से जंभगा तेण अंतेण वोलेन्ता पेच्छंति, ताहे परिक्खानिमित्तं ओतिण्णा, वाणियगरूवेणं अल्लइत्ता उवक्खडंति, सिद्धे निमंतेन्ति, ताहे पट्ठितो जाव कणगफुसितमत्थि ताहे पडिनियत्तेति, ताहे ठाति, पुणो सद्दावेंति, एवं(तिन्नि वारे) करांति, ताहे भगवं उवउत्तो-दव्वओ ४, दव्वतो फूसफलादी खत्ततो उज्जेणी कालतो पाउसो भावतो ओसक्कणातिसक्कणा हट्ठतुट्ठा य, ताहे णेच्छ-ति, देवा तुट्ठा भणेंति--तुमं दट्ठुमागता, पच्छा वेउव्वियं वेज्जं देंति। पुणरवि अण्णदा जेट्ठमासे घतपुण्णेहिं सण्णाणिग्गतं तत्थवि निमंतेंति, तत्थवि उवओगो-दव्वतो, तेहिं णभगामिणी विज्जा दिण्णा, एवं सो विहरति। ताणि य पदाणुसारिणा गहियाणि अंगाणि इह संजताण मूले थिरतराणि जाताणि, तत्थवि जो अज्झाति उवरिल्लं पुव्वगतं तंपि सव्वं पुव्वगतं गेण्हति, ॥३९२॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥३९३॥

एवं तेण बहुयं गहितं, जाहे वुच्चति पढाहि ताहे एंतगंपि तं घोसएहिं कोडेंतो अच्छति अण्णं सुणंतो, अण्णदा आयरिया साहुसु भिक्खं गतेसु मज्झण्हे सण्णाभूमिं गता, वइरसामीवि पडिस्सयवालो अच्छति, सो तेसिं साधूणं वेंटियाओ मंडलीए रएत्ता मज्झे अप्पणा ठाउं वायणा पदिण्णो, ताहे परिवाडीए एक्कारसवि अंगाइं वाएति पुव्वगतं च, जाव य आयरिया आगता, ते चिंतेंति- लहुं साहू आगता, सद्दं सुणेंति मेघोघरसितगंभीरं, बहिता सुणंता अच्छंति, णातं जहा वइरोत्ति, ताहे ओसरित्ता पुणो सद्दवडियं कातूण अल्लीणा, महल्लं च निसीहिं करेंति, मा से संका भवेज्जा, ताहे तेण तुरियं वेंटियाओ सट्ठाणे ठवियाओ, ठवेत्ता निग्गंतूण दंडगं गेण्हति पादे य पमज्जति, ताहे आयरिया चिंतेंति-मा एतं साधू परिभविस्संति तो जाणावेमि, ताहे रत्तिं आयरिया साधू आपुच्छंति, जथा-अमुगगामं वच्चामि, तत्थ दो व तिण्णि व दिवसे अच्छिस्सामि, तत्थ जोगपडिवण्णगा भणंति- अम्हं को वायणायरिओ?, आयरिएहिं भणितं- वइरोत्ति, तेहिं विणीतेहिं तहत्ति पडिस्सुतं, णूणं आयरिया जाणगा, तेऽवि साहुणो पडिलेहित्ता कालनिवेदणादि वइरसामिस्स अप्पेंति, ताहे सव्वम्मि कते पच्छा णिसेज्जा रइता, सोऽवि भगवं निविट्ठो, एवं ते आगता, जहा आयरियस्स तहा सव्वं विणयं पयुंजंति, जेवि पुव्वतीता आलावगा तंपि ते विण्णासणनिमित्तं पुच्छंति, जेऽविय मंदमहावी तेवि ठवेतुमारद्धा, तत्थ भगवं बालो अबालभावो, ताहे करकरस्स कड्ढति, एवं ते तुट्ठा भणंति—जदि आयरिया अच्छेज्ज कइवय दिवसे तो अम्हं एस सुतखंधो समप्पेज्जा, एवं तेसिं आयरियाणं पासे जं चिरस्स परिवाडीए गेण्हंति तं इमेण एक्काए पोरिसीए सारितं, एवं सो तेसिं बहुमओ जातो, आयरितावि णातूणं जाणाविता साधुत्ति ताहे तस्स अणुकंपणट्ठा आगता, अवसेसं अज्झाविज्जउत्ति, पुच्छंति-किध सरति सज्झाओ ?, ताहे तुट्ठा साहंति जथा सरितं, ताहे ते भणंति- एसो चेव

अपृथक्त्वानुयोगे वज्रस्वाम्युदाहरणं ॥३९३॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णी उपोद्घात निर्युक्तौ ॥३९४॥

अपृथक्त्वानुयोगे वज्रस्वाम्युदाहरणं

अम्हं वायणायरिओ भवतु, आयरिया भणंति- होहिति, मा तुब्भे एयं परिभविहिहत्ति सो तुब्भं जाणणाणिमित्तं अहं गतो, णवि य एस कप्पो, एतेण कण्णाहाडियगं, एतस्सवि उस्सारकप्पो कीरति, एवं सो उस्सारिज्जति, बीयाए से पोरिसीए अत्थो कहिज्जति, एस तदुभयकप्पजोग्गो, तत्थ जे अत्था आयरियस्स संकिता तेवि तेण उग्घाडिया, जावतियं दिट्ठिवायं ते जाणंति तत्तिओ गहिओ, ते विहरंता दसपुरं गता, उज्जेणीए भद्दगुत्ता णाम आयरिया थेरकप्पट्ठिता, तेसिं दिट्ठिवाओ अत्थि, संघाडओ से दिण्णो, ताहे गओ भद्दगुत्ताणं पासे, भद्दगुत्ता य थेरा सुविणयं पासंति पाभातियं, ताहे पभाते साहूणं साहंति, जहा मम पडिग्गहो खीरभरितो सो आगंतूण सीहपोतएणं पीतो लेहितो य, तस्स किं फलं होज्जत्ति?, ते अण्णमण्णाणि वागरेंति अजाणंता, गुरू भणंति- ण जाणह तुब्भे, अज्ज मम पाडिच्छओ एहिति, सो सव्वं सुत्तं अत्थं च घेच्छिहिति, भगवंपि बाहिरियाए वुत्थो, ताहे अतिगतो पगते, दिट्ठो, सुतपुव्वो एस सो वइरो, तुट्ठो उववूहिओ य, ताहे सो सव्वो पढिओ, ताहे अणुण्णाणिमित्तं जहिं उद्दिट्ठो तहिं चेव वच्चति, दिट्ठिवाओ जेण चेव उद्दिट्ठो ते चेव अणुजाणंति, ताहे दसपुरं एति, ताहे तेहिं अणुण्णा समारद्धा, ताव णवरं देवेहिं अणुण्णा उवट्ठविता, दिव्वाणि पुप्फाणि चुण्णा य—

जस्स अणुण्णा० ॥८-४४॥७६७॥ अण्णदा सीहगिरी भत्तं पच्चक्खाति तस्स गणं दातुं, ताहे पंचहिं अणगारसएहिं संपरिवुडो विहरति, जत्थ जत्थ वच्चति तत्थ तत्थ ओराला कित्तिवण्णसद्दा परिभमंति अहो भगवं। किंच— ॥३९४॥

जेणुद्धरिया विज्जा० ॥ ८-४६ ॥ ७६९ ॥ महापरिण्णाए विज्जा पम्हुट्ठा आसी सा पदाणुसारिणा तेणुद्धरिता—

भणति य आहिंडेज्जा० ॥ ८-४७ ॥ ११० ॥ भणति य धारेतव्वा० । ८-४८ ॥ १११ ॥ अहं एव

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥३९५॥

पवयणउवग्गहनिमित्तं धारेमि, एवं विहरंतो भगवं भवियजणविबोहणं करेति। तेणं कालेणं तेणं समएणं पाडलिपुत्ते नगरे धणो सेट्ठी, तस्स धूता अतीव दरिसणिज्जा, तस्स य सालासु साहूणीओ ठियाओ, सभावेण य एस लोगो कामितकामओ, ताओ य संजतीओ आराहाइओ वइरसामिस्स गुणकित्तणं करेंति, सेट्ठिधूता चिंतेति—जदि सो मम पती तो णवरि भोगा, इहरहा अलाहि, वरगा एंति, पडिसेहिज्जंति, ताहे साहति, जहा सो पव्वइओ महात्मा नेच्छति, सा भणति-जदि णेच्छति तो पव्वइस्सामि। इतो य भगवं पाडलिपुत्ते आगतो, तत्थ राया सपुरजणजाणवतो णिग्गतो अम्भोगतियाए, ते य पव्वतिया फड्डगफड्डएहिं एन्ति, तत्थ अत्थि बहवे ओरालसरीरा, राया पुच्छति-इमो भगवं ?, ताहे सीसति-जहा ण भवति, जत्थ अपच्छिमं वंदं तत्थ पविरल-पव्वइय सद्धिं संपरिवुडो, एस आयरिओ, आयरिया ण तथा पडिरूवा, तत्थ पडिओ पादेसु, ताहे उज्जाणे ठिता, धम्मो कहितो, खीरासवलद्धी भगवं, राया हतहिदओ कतो, अंतेउरे साहति गंतुं, ताओ भणति—अम्हेऽवि वच्चामो, सव्वं अंतेपुरं निग्गतं, सा य सेट्ठिधूता लोगस्स सुणेत्ता किह पेच्छेज्जामित्ति अच्छति, बितियदिवसे ताए पिता विण्णवितो—तस्स मे देहि, ताहे सव्वालंकार-विभूसिदा अणेगाहिं धणकोडीहिं नीता, धम्मो कहितो, भगवं च खीरासवलद्धीओ, लोगो भणति-अहो सुस्सरो भगवं, सव्वगुण-संपण्णो, णवरि रूवविहूणो, जदि से रूवं होन्तं तो सव्वगुणसंपदा होंती, भगवं तेसिं मणोगतं णाऊणं तत्थ पउमं विउव्वति, तस्स उवरि निविट्ठो, रूवं विउव्वति अतीवसोम्मं जारिसं परं देवाणं, लोगो आउट्टो भणति-एवं एतस्स साभावितं रूवं, मा पत्थ-णिज्जो होहामित्ति तो विरूवेण अच्छति, सातिसउत्ति राया भणति—अहो भगवओ एतमवि अत्थि, ताहे अणगारगुणे वण्णेति, पहू असंखेज्जे दीवसमुद्दे विउव्विता आइण्णविप्पइण्णे करेत्तएत्ति, ताहे तेण रूवेणं धम्मं कहेति, ताहे सेट्ठिणा णिमंतिओ भगवं

अपृथक्त्वा-नुयोगे वज्रस्वाम्यु-दाहरणं

॥३९५॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक-चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥३९६॥

अपृथक्त्वा-नुयोगे वज्रस्वाम्यु-दाहरणं

विसए निंदेति, भणइ—जदि ममं इच्छति तो पव्वयतु, ताहे पव्वइया। एवं विहरंतो पुव्वादिसाउ उत्तरापहं गतो।

तत्थ दुब्भिक्खं जातं, पंथावि वोच्छिण्णा, ताहे संघो उवट्ठितो-भगवं! नित्थारेहित्ति, ताहे पडविज्जाए संघो ठविओ, तत्थ य सेज्जातरो चारीए गतो, एति य, उप्पत्तिए पासति, चिंतेति-कोइ विणासो तो संघो जाति, ताहे असियएण सिहलिं छिंदित्ता भणति—अहंपि भगवं! तुब्भं साहम्मिओ, ताहे सोऽवि विलइओ इमं सुत्तं सरंतेणं—साहम्मियवच्छल्लंमि उज्जता उज्जता य सज्झाए। चरणकरणंमि य तहा तित्थस्स पभावणाए य ॥ १ ॥ एवं पच्छा उप्पतिओ भगवं, पत्तो पुरियं नगरिं, तत्थ सुभिक्खं, तत्थ सावगा बहुगा, एवं तत्थ उड्डाहा, तत्थ य राया तच्चन्नियसड्ढो, तत्थ य अम्हच्चयाणं सड्ढाणं तेसिं च वरुद्धएण मल्लारुभणाणि वट्टंति, सव्वत्थ तच्चन्नियसड्ढा पराजीयंती, ताहे तेहिं राया पुप्फाणि वाराविओ, पज्जोसवणाए सड्ढा अद्दण्णा, जतो पज्जोसवणाए पुप्फाणि णत्थित्ति, ताहे सबालवुड्ढा वयरसामिं उवट्ठिता, तुब्भे जाणह जदि तुब्भेहिं जाणएहिं पवयणं ओहाभिज्जति, एवं बहुप्पगारं भणिए ताहे उप्पतितो माहेसरिं गतो, तत्थ य हुतासणगिहं नाम वाणमंतरं, तत्थ कुंभो पुप्फाण उट्ठेति, तत्थ भगवतो पितुमित्तो तडितु, तत्थ गतो, सो संभन्तो भणति-किमागमणपयोयणं?, भगवता भणितं- पुप्फेहिं पयोयणं, तेण अणुग्गहो, ता तुब्भे गहेह जाव एमि, पच्छा सिरिसगासं गतो, सिरीए चेतियअच्चणियानिमित्तं पउमं छिण्णगं, ताहे वंदित्ता सिरीए निमंतिओ, तं गहाय अग्गिहरं एति, तत्थ कुंभं पुप्फाण छोढूण अण्णाणि तु सारियाणि, एवं जंभगगणपरिवुडो दिव्वेण गीतगंधव्वणिणादेन आगतो आगासेणं, तस्स य पउमस्स बेंटे वइरसामी, तत्थ तच्चण्णिया भणंति-अम्हं एतं पाडिहेरं, अग्घं गहाय निग्गता, तं विहारं वोलेत्ता अरहंतघरं गता, तत्थ देवेहिं महिमा कता, तत्थ लोगस्स अतीव बहुमाणो जातो, राया ॥३९६॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥३९७॥

पृथक्त्वे दश-पुरोत्पत्तिः

आउट्ठावितो समणोवासओ जाओ। एवं सो भगवं विहरंतो ततो आभीरविसयं गतो। एसो सो णयविसारतो एतातो अपुहुत्तं। इदाणिं जेण पुहुत्तं कतं तस्स उप्पत्ति—

देविंदवंदिएहिं० । ८-५१ ॥ ७७४ ॥ इदाणिं तेसिं आउट्ठाण पारियाणियं, तेणं कालेणं तेणं समएणं दसपुरं नगरं, तत्थ सोमदेवो बंभणो. अड्डो०, रोद्दसोम्मा भारिया समणोवासिया, तेसिं पुत्ते रक्खिए णाम दारए, तस्स अणुमग्गजाते फग्गुरक्खिए। दसपुरं नगरंति, तं कह उप्पण्णं, ? । तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपानगरी, तत्थ कुमारनंदी सुवण्णकारे परिवसति. से णं इत्थीलोलए आवि होत्था, से णं जत्थ सुणइ वा पासइ वा इत्थिं रूविंणि तत्थ पंच सुवण्णसते दातूणं तं परिणेति, एवं तेण पंच सता पिंडिता, ताहे सो ईसालुओ एगक्खंभं पासादं करेत्ता ताहिं समगं ललति, एवं सो ताहिं समं विहरति। तस्स पियवयंसए णाइले नाम समणोवासए

अण्णदा णंदिस्सरवरे जत्ता आणत्ता, इतो य पंचसेलगवत्थव्वाओ वाणमंतरीओ णंदिस्सरं वच्चंति, ताणं च देवो चुयओ, ताओ भणंति—कंचि एत्थ वुग्गाहेमो, एवं चिन्तेत्ता पट्ठियाओ, ताओ विनियंतीओ चंपमज्झेण गच्छंति, तं पेच्छंति पंचहिं महिलासतेहिं सद्धिं ललंतं, तासिं च विज्जुमाली अहिवती, सो चुतो ताहे भणंति—एस इत्थीलोलो, एस होहिति, ताहे ताओ तस्स उज्जाणगतस्स दिव्वाणि रूवाणि पदंसिदाओ, ताहे सो भणंति—काओ तुब्भे?, ताओ भणंति–देवताओ अम्हे, सो तासु मुच्छितो, आढत्तो घेत्तुं, ताहे भणितं—जदि तं अम्हेहिं कज्जं तो पंचसेलं एज्जाहि, सो मुच्छितो राउले सुवण्णं दाऊण पडहगं नीणेति, कुमारनंदिं जो पंचसेलगं णेति तस्स एत्तियओ कोडीओ देति, एगेण थेरेण सुतं संजत्तिएण, पडहओ

॥३९७॥

दशपुर-उत्पत्ति एवं आर्य रक्षितस्य कथानक कथयते

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥३९८॥

पृथक्त्वे दश-पुरोत्पत्तिः

खोडितो, वहणं कारितं, पत्थयणस्स भरितं, मुक्कं, थेरेणं तं दव्वं पुत्ताण दवावियं, जाहे दूरं समुद्दमतिगतो ताहे थेरेण भणितं-किंचि पेच्छसि ?, सो भणति—किंचि कालगं, एस वडो समुद्दकूले पव्वतपादे जातो, एतस्स हेट्ठेण वहणं जाहिति, तो तुमं अमूढो वडे लग्गेज्जासि, ताहे पंचसेलयाओ पक्खी एहिंति, तेसिं पादेसु अप्पाणं बंधाहि, ते तहिं तं णेहिंति, जदि किहइ ण लग्गासि तो वलयामुहंमि बुड्डसि, एवं सो विलग्गो नीतो य पक्खीहिं, ताहे ताहिं वंतरीहिं भमंतीहिं दिट्ठो, ताहिं से रिद्धी दाइता, सो पगहितो, ताहे ताहिं भणितो-ण एतेण सरीरकेण अम्हे भुज्जामो, ता किह ?, ताहिं भणितं- किंचि जलणपवेसादि करेहि जहा पंचसेलगे उववज्जामित्ति, किह एत्ताहे जामि ?, ताहिं करतलपुडसंपुडएण णीतो, ताहे आणीउं सए उज्जाणे ठवितो, ताहे लोगो पुच्छओ एति, भणति-'दिट्ठं सुतमणुभूतं जं वत्तं पंचसेलए दीवे'। ताहे इंगिणिणिवक्को झाति, सड्डो य से मित्तो, तेण वारिओ-न सुंदरतरगा भोगा, पव्वयाहि, बहूहिं पण्णवणाहिं न सक्किओ, सड्ढस्स विणिव्वेओ जातो, जहा एस अन्नानी भोगाण कज्जे किलिस्सतित्ति अम्हे जाणंता कीस अच्छामोत्ति पव्वइतो, कालं किच्चा अच्चुते उववण्णो, इतरोऽवि मरित्ता पंचसेलए जक्खो जातो, सो तं ओहिणा पेच्छति, अण्णदा णंदिस्सरजत्ताए पलायंतस्स पडहो गलए लग्गति, ताहे वाएति, तत्थ सव्वे देवा मेलीणा, सड्ढो आगतो तं पेच्छाति, सो तं दट्ठूणं तेयं असहंतो नस्सति, सो तेयं साहरित्ता भणति- भो ममं जाणसि ?, सो भणति- को सक्काइए इंदे ण जाणति ?, ताहे सो तं सावगरूवं दंसेति, ताहे जाणाविओ भणति- संदिसह एत्ताहे किं करेमित्ति, देवेण भणितं- वद्धमाणसामिस्स पडिमं करेहि, ततो ते संमत्तबीयं होहिति, तदा य सामी जीवति, ताहे गोसीसमइं पडिमं महाहिमवंतातो करेत्ता कट्ठसंपुडए छुभित्ता आगतो भरहवासं, समुद्दे पवहणं पासति उप्पातिएण छम्मासे भमंतं, ॥३९८॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥३९९॥

पृथक्त्वे दश-पुरोत्पत्तिः

ताहे थंभितं, सा य खोडी दिण्णा, भणितो य-देवाहिदेवस्स पडिमं करेज्जह, वीतिभयए उत्तारियाउ, उद्दायणो राया तावसभत्तो, तस्स पभावती देवी समणोवासिया, उद्दायणस्स वाणियएहिं कहितं-देवाहिदेवस्स पडिमत्ति, ताहे इंदादीणं कीरति, परसू ण वहति, पभावतीए सुतं, सा भणति-वद्धमाणसामी देवाधिदेवो तस्स कीरतु, जं चेव आहतं जाव पुव्वणिम्माया पडिमा, अंतेपुरे चेतियघरं कारितं, पभावती ण्हाता तिसञ्झं अच्चेति, अण्णदा देवी नच्चति राया वाएति, सो सीसं न पेच्छति देवीए, अद्धीती से जाता, देवी लक्खेत्ता भणति- किं दुट्ठु नच्चितं ?, निबंधे सिट्ठं, सा भणति- मया सुचिरं सावगत्तणं परिपालियं, अण्णदा ण्हाता चेडिं भणति-पोत्ताइं आणेहि, ताए से रत्तगाणि आणियाणि, रुट्ठा अद्दाएण आहता चेतियघरं पविसंतीए रत्तगाणि देसित्ति, आहता चेडी मता, ताहे चिंतेति-मए खंडितं सीलं, तो किं मे जीविएणंति रायाणं आपुच्छति, भत्तं पच्चक्खामित्ति, निब्बन्धे राया भणति- जदि परं संबोहेसि, पडिस्सुतं, भत्तपच्चक्खाणेण मता देवलोकं गता, जियपडिमं देवदत्ता दासचेडी खुज्जा सुस्सूसति।

देवो संबोहेति, न संबुज्झति, सो य तावसभत्तो, देवो तावसरूवं करेति, अमतफलाणि गहाय आगतो, रण्णा आसादियाणि, मुच्छिओ भणति-कहिं?, तेण भणितं-नगरस्स अदूरे आसमो तहिं, तेण समं गतो, तेहिं पारद्धो, णासंतो वणसंडे साहवो पेच्छति, तेहिं धम्मो कहितो, संबुद्धो, देवो अत्ताणं दरिसेति, आपुच्छित्ता गतो, जाव अत्थाणीए चेव अत्ताणं पेच्छति, एवं सड्ढो जातो। इओ य गंधारओ सावओ, सो सव्वाओ जम्मभूमीओ वंदित्ता वेयड्ढे कणगपडिमाओ सुणेत्ता उववासेण ठितो, जदि वा मओ दिट्ठाओ वा, देवताए दंसिताओ, तेण वंदियाओ, देवयाए से तुट्ठाए सव्वकामियाओ गुलियाओ दिण्णाओ, ताण सतं परिमाणतो, ततो णिन्तो सुणेति वीतिभए जिणपडिमा गोसीसचंदणमती, वंदओ एति, आगतो वंदति, तत्थ पडिभग्गो, देवदत्ताए पडियरिओ ॥३९९॥

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥४००॥

सम्मं, तुट्ठेण गुलिताण सतं दिण्णं, सो पव्वइतो।

अण्णदा ताए चिंतियं- ममं कणगसरिसो वण्णो भवतुत्ति जाव रूवं जातं जथा देवकण्णगा, एत्ताहे चिंता जाता-भोगे भुंजामि, इमो राया मम पिता, अण्णे य गोहा, ताहे पज्जोयं रोएति, तं मणसीकाऊण गुलिया खइया, तस्सवि देवताए कहितं- एरिसी रूववतित्ति, तेण सुवण्णगुलियाए दूतो पट्ठवितो, ताए भण्णति- पेच्छामि तुमे, आगतो नलगिरिणा, सा भणति- जदि पडिमं णेहि तो जामि, ताहे पडिमा णत्थित्ति रत्तिं वुट्ठो, पडिगतो, अन्नं जिनपडिमरूवं कातुं आगतो, तत्थ ठामे ठवेत्ता जीयस्सामी सुवण्णगुलिया य आणीया, ताहे तत्थ नलगिरिणा मुत्तियं लेंडं च मुक्कं जाव तेण गंधेण हत्थी उम्मत्ता, तं च दिसं गंधो एति जाव पलोइज्जइ नलगिरिस्स पदं, किं निमित्तमागतोत्ति जाव चेडी न दीसति, राया भणति- चेडी नीता नाम, पडिमं पलोएह, णवरि अच्छतित्ति निवेदितं, अच्चणवेलाए राया आगतो जाव पेच्छति पुप्फाणि सुक्काणि, निव्वण्णेति, ताहे नातं पडिरूवगंति, ताहे भणति पडिमा हरिता, दूतो विसज्जितो, नवि ममं चेडीए कज्जं, विसज्जेहि पडिमं, सो न देति, ताहे पहावितो जेट्ठमासे दसहिं रातीहिं समं, मरुं उत्तरंताणं खंधावारो तिसाए पमओ, रण्णो निवेदितं, रण्णा पभावती चिंतिता. आगता, तीए तिण्णि पुक्खराणि कतानि, अग्गिमस्स मज्झिमस्स पच्छिमस्स, ताहे आसत्थो गतो उज्जेणिं, भणितो य पज्जोतो-किं लोगेण मारिएणं?, अस्सरथहत्थिवादेहिं वा जेण रुच्चति तेण जुज्झामो, ताहे पज्जोतो भणति-रहेहिं जुज्झामो, ताहे णलगिरिणा पडिकप्पितेण आगतो, राया य रहेण, रण्णा भणितो-असच्चसंधोऽसित्ति, तथावि ते णत्थि मोक्खो, ताहे रण्णा रहो मंडलीए दिण्णो, हत्थी वेगेण पत्थितो, ओलग्गति, रहेण जीतो, ताहे जं जं पादं उक्खिवति तत्थ तत्थ राया सरे छुभति, जाव हत्थी पडितो, उत्तरंतो

पृथक्त्वे दश-पुरोत्पत्तिः

॥४००॥

प्रत सूत्रांक [-] दीप अनुक्रम [-]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता..........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥४०१॥

दश-पुरोत्पत्तिः आर्य-रक्षिताश्च

बद्धो, निडाले य से अंको कओ दासीवतिओत्ति उद्दायणस्स रन्नो, पच्छा णियगं नगरं पहावितो, पडिमा णेच्छतित्ति, अंतरा वासेण ओबद्धो, ताहे उक्खंदभतेण दसवि रायाणो ठिता धूलीपागारे करेत्ता, जं च राया जेमेति तं च से दिज्जति, पज्जोसवणा य जाता, ताहे सो पुच्छिज्जति-किं अज्ज जेमेसि?, सो चिंतेति—मा मारेज्जेज्जामि, ताहे भणाति- किं अज्ज पुच्छिज्जामि?, भणितो—अज्ज रण्णो अभत्तट्ठो, पज्जोसवणात्ति कहितं, ताहे सो सोचितुमारद्धो—मम मातापिता संजताणि, अहं न जाणामि जथा पज्जोसवणात्ति, अहंपि सावओ, न जेमेमित्ति, रण्णो कहितं, भणति-जाणामि जहा सो धुत्तो, किं पुण मम एतंमि बद्धेल्लए पज्जोसवणा चेव न सुज्झति, ताहे मुक्को खामिओ य, पट्टो य से बद्धो सोवण्णो, मा एताणि अक्खराणि दीसिहिन्ति, सो य से विसओ दिण्णो, तप्पभिर्ति पट्टबद्धगा रायाणो आढत्ता, पुव्वं बद्धमउडा आसी, वत्ते वासारत्ते राया गतो, तत्थ जो वाणियवग्गो आगतो सो तहिं चेव ठितो, ताहे तं दसपुरं जातं। एवं दसपुरं उप्पण्णं।

तंमि दसपुरे सोमदेवो माहणो, रुद्दसोमा भज्जा सड्ढी, तीसे जेट्ठपुत्तो रक्खितो बितियओ फग्गुरक्खियओ, तत्थ उप्पण्णगा अज्जरक्खिता, सो य तत्थ जं अत्थि पिउणो तं अज्झाइओ, घरेण तीरति पढितुंति ताहे गतो पाडलिपुत्तं, तत्थ चत्तारि वेदा संगोवंगे अधीतो समत्तपारायणो साखापारओ जदा जातो, किं बहुणा?, चोद्दसवि विज्जाठाणाणि गहियाणि, ताहे आगतो दसपुरं, ते य रायकुले सेवगा, णज्जंति रायकुले, तेण संविदितं रण्णो कतं, जहा एमित्ति, ताहे उब्भितपडागं सयमेव राया निग्गतो, तं अणुगतियाए दिट्ठो सक्कारितो अग्गोयरो य दिण्णो, एवं सो णगरेण सव्वेण अभिणंदिज्जंतो अप्पणो घरं पत्तो, तत्थवि बाहिरब्भंतरिया परिसा आढाति, तंपि चंदणकलसादि सोयंमि, सो तत्थ बाहिरियाए उवट्ठाणसालाए ठिओ लोगस्स अग्घं पडिच्छ-

॥४०१॥

श्री आवश्यक-चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥४०२॥

आर्य-रक्षिताः

ति, ताहे वयंसगा य मित्ता य सव्वे पेच्छगा आगता, दिट्ठपरिचियस्स य लोगस्स अग्घेण पज्जेण य जाव से घरं भरितं दुपद-चतुष्पदहिरण्णसुवण्णाण, ताहे चिंतेति—अम्मं न पेच्छामि, ताहे घरं अतिगतो, मातं पासति, मातं अभिवादेति, ताए भण्णति—सागततं पुत्तत्ति, पुणरवि मज्झत्था चेव अच्छति, ताहे सो भणति—किं णं अम्मो तुब्भं न तुट्ठी? (जेण मए एतेण णगरं विम्हियं चउद्दसण्हं विज्जाठाणाणं आगमे कए, सा भणति-कहं पुत्त! मम तुट्ठी भविस्सति?, जेण तुमं बहूणं सत्ताणं वहं अहिज्जिउं आगओ, जेण संसारो वड्ढिज्जइ तेण कहं तुस्सामि?, किं तुमं दिट्ठिवायं पठिउमागओ?, पच्छा सो चिंतेइ-कित्तओ वा सो होहिति जामि) कहिं सो अम्मा?, सा साहति—साधूणं दिट्ठिवातो, ताहे सो नामं मंतेति, सोऽक्खरार्थं वीमंसेतुमारद्धो, दृष्टीनां वादो दृष्टिवादो, ताहे भणति-नाम चेव सुंदरं, जदि ताव सत्थं नज्जति तो अज्झायितव्वं, किं पुण जेण अम्मापि तुस्सति?, वच्चामि, कहिं ते दिट्ठिवाउजाणंतगा?, इहेव अम्हं उच्छुघरे उज्जाणे तोसलिपुत्ता नाम आयरिया, कल्लं अज्झामि, मा तुज्झे उस्सुगाओ भवह, ताहे सो रत्तिं चिंतितो न चेव सुत्तो, बियदिवसे य पभाते चेव पट्ठितो, तस्स य ओवणगरगामे पितिमित्तो वसति, तेण सो न दिट्ठओ, अज्ज पेच्छामि णंति उच्छुलट्ठीओ गहाय एति नव पडिपुण्णाउ एगं च खंडं, इतरो य नीति, इमो य पत्तो, को तुमं?, अज्जरक्खितोत्ति, ताहे सो तुट्ठो अणुवूहति, सागतं?, अहं तुब्भे दट्ठुं आगतो, ताहे सो भणति-अतीहि, अहं सरीरचिंताए निज्जामि, एताओ य उच्छुलट्ठीओ अम्माए हत्थे देज्जाहि, भणेज्जसु य-दिट्ठो मए अज्जरक्खिओ, अहमेव पढमं दिट्ठो, ताहे सा तुट्ठा, मम पुत्तेण सुदरं मंगलं दिट्ठं, नव पुव्वा घेतव्वा खंडं च, इतरोवि तं चेव चिंतेइ-मए णव अंगाणि अज्झयणाणि वा घेत्तव्वाणि, दसमं न सव्वं, ताहे गतो उच्छुघरं, तत्थ चिंतेति— किह एमेव अइमि जहा गोहो अजाणंतो?, जो एतेसिं सावगो भविस्सति तेण

॥४०२॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

उपचारेण अवीहामि, एगपासे अच्छति पल्लीणो, तत्थ ढड्डरसावओ, सो सरीरचिंतं काऊणं साधूण पडिस्सयं वच्चति, ताहे तेण दूरे ठितेण तिण्णि निसीहियाओ कताओ, एवं सो इरियादी ढड्डरेण सरेण करेति, सो पुण मेहावी तं उवधारेति, सोऽवि तेणेव कमेणं उवागतो सव्वेसिं साधूणं वंदणयं कतं, सो सावओ तेण न वंदिओ, ताए आयरिएहिं नातं-नवगसड्ढो, पच्छा पुच्छंति—कतो धम्मागमो?, तेण भणितं—एतस्स मूलाओ सड्ढस्स, साहूहिं कहितं— जहा सड्ढीए भूणओ जो कल्लं हत्थिखंधएण अतिणीओ, किहत्ति ?, ताहे सव्वं साहति—अहं दिट्ठिवातं अज्झाइतुं तुज्झ पासं आगतो, आयरिएहिं भणितं—अम्हं दिक्खं अब्भुवगतेहिं अज्झाइज्जति, सोऽवि अब्भुवगतो, एवं भवतु, परिवाडीए अज्झामि, ताहे सो भणति—ममं एत्थ न जाइ पव्वइउं, अण्णत्थ वच्चामो, एस राया अणुरत्तो अण्णोऽवि लोगो न ताव पेच्छति, बलावि एते ममं णेज्जा, तम्हा अन्नहिं वच्चामो, ताहे गता ते पव्वइता तं घेत्तूणं, एसा पढमा सेहनिप्फेडिया, एवं तेण अचिरेण कालेण आयाराती जाव एक्कारस अंगाइं अहिज्जिताई, जो य दिट्ठिवाओ तोसलिपुत्ताणं आयरियाणं सोऽणेण गहितो, तत्थ य अज्जवइरा सुव्वंति जुगप्पहाणा, तेसिं दिट्ठिवाओ बहुओ अत्थि, ताहे सो वच्चति, उज्जेणिमज्झेणं, तत्थ य भद्दगुत्ता थेरा, तेसिं अंतियं अतिगतो, तेहिं अणुवूहितो—धण्णोऽसि कयत्थो य, अण्णं च-संलिहियसरीरो मम य निज्जावओ नत्थि तुमं निज्जावओ होहि, तेण पडिसुतं तहत्ति, ठितो, ताहे अच्छति, तेहिं कालं करंतेहि भण्णति—मा वइरसामिणा समं अच्छेज्जासि, वीसुं पडिस्सए ठिओ पढिज्जासि, जो तेहिं समं एगमवि दिवसं संवसति सो ते अणुमरइ, पडिसुणाति, कालगतेहिं वइरसामिस्स पासं गतो, बाहिं ठिओ, तेऽवि सुविणगं पेच्छंति, तेसिं पुण थेवं सिद्धं जातं, तेहिवि तहेव परिणामितं, पभाते अतिगतो, तेहिं पुच्छितो-कतो एसि?, तेण भणितं-तोसलिपुत्ताण पासातो, ते भणं- ॥४०३॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥४०४॥

आर्य-रक्षिताः

ति–तुब्भे अज्जरक्खिया?, (आमं) साधु सागयं, तो कहिं ठितो सि?, बाहिं, ताहे आयरिया भणंति—बाहिठियाण किं अज्झाइ-
उं जाइ?, तुमं किं न जाणसि?, ताहे सो भणइ—खमासमणेहिं अहं भद्दगुत्तेहिं थेरेहिं भणितो बाहिं ठाएज्जासि, ते उवउत्ता जा-
णंति–सुंदरं, न निक्कारणे आयरिया भणंति, अच्छह, ताहे अज्झाइउं पवत्तो, अचिरेण नव पुव्वाणि अधिताणि, दसममाढत्तो
घेत्तुं, ताथे अज्जवइरा भणंति—जवियाइं करेहि, एयं परिकम्ममेयस्स, ताणि य सुहुमाणि, गाढं गणिते तं सुहुमं, चउवीसं जवि-
या, सोवि ताव तं अज्झाइ।

इतो य मायापियरं सोगेण गहियं, उज्जोयं करिस्सामित्ति अंधकारतरं कयं, ताहे ताणि अप्पाहिंति, फग्गुरक्खिओ य पट्ठ-
विओ, डहरओ भाया, जइ वच्चह तो सव्वाणि पव्वयंति, ताहे भणइ-जइ ताणि पव्वयंति तो तुमं चेव पव्वयाहि, सो पव्वइओ,
अज्झातितो य, सो य जवितेसु अतीव घोलितो, ताथे पुच्छइ–दसमस्स पुव्वस्स किं गयं? किं सेसं ?, तत्थ बिंदुसमुद्दसरिसव-
मंदरेहिं दिट्ठंतं करेंति, बिंदुमेत्तं गतं समुद्दो अच्छति, ताहे सो विसायमावन्नो–कत्तो मम (सत्ती) एतस्स पारं गंतुं ?, ताहे सो आपुच्छति-
अहं वच्चामि, एस मम भाता आगतो, ताहे भणंति–अज्झाहि ताव, एवं सो निच्चमेव आपुच्छति, तत्थ अज्जवइरा उवउत्ता—किं
ममातो चेव एवं वोच्छिज्जं गतं, ताहे नातं-विसज्जितो पुणो ण एस्सति एसो, आउं च थोवमप्पणो णाऊण विसज्जितो। सोऽवि
ताव दसपुरं गतो, पव्वावेति सिक्खावेति य सन्नायगा सव्वे माया पिता य, सोवि ताव विहरति।

इतो य वइरसामी दक्खिणावहे विहरति, दुब्भिक्खं च जायं बारसवरिसगं, सव्वतो समंता छिन्ना पंथा, निराधारं जातं, ताहे
वइरसामी विज्जाए आहडं पिंडं तद्दिवसं आणेति, पच्छा तं सव्वेसिं पव्वइगाणं दाएति, एतं बारसवरिसे भोत्तव्वं, अन्नं भिक्खं

॥४०४॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता...........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥४०५॥

आर्य-रक्षिताः

णत्थि, जदि जाणह उस्सरंति संजमगुणा तो भुज्जतु, अह जाणह नवि तो भत्तं पच्चक्खामो, ताहे ते भणंति–किं एरिसण विज्जापिंडेण भुत्तेण ?, एवं निच्छितववसाया, आयरिएहि य पुव्वामेव णाऊण एगो पव्वइयतो य पत्थवियो पेसवणं वइरसेणो णामेण सो भणिततो–जाहे तुमं सतसहस्सनिप्फण्णं भिक्खं लभिहिसि ताहे जाणेज्जाहिसि जहा नट्ठं दुभिक्खंति, इमे य निच्छियववसाया, तत्थ य एगो खुड्डओ तं भणंति-तुमं नियत्त, सो णेच्छति, ताहे सो गामे विभोलिज्जति ताव पव्वइयगा तं गिरिं विलग्गा, आयरिया जाणंति—जहा खुड्डओ आराहओ, चित्तरक्खणट्ठा लोगस्स, सो य सव्वं जाणति, ताहे सो ताणं गतमग्गेण आगंतूण मा तेसिं असमाही होहितित्ति तस्सेव हेट्ठे सिला तत्थ खुड्डओ पाओवगओ, सो तेण उण्हेण णवणीओ जहा विराओ, अचिरकालेण· वि कालगतो, देवेहि य महिमा कता, ताहे आयरिया भणंति—खुड्डएण अट्ठो साहितो, तत्थ ते साधुणो दुगुणाणियसद्धासंवेगा जाता, जदि ताव बालेण होन्तएणं एवं कतं ता अम्हे कीस ण सुंदरं करेमो?, तत्थ य देवता पडिणीया, सा ते साधुणो सात्रिगारूवेण भत्तपाणेण निमंतेति-अज्ज मे पारणयं करेह, ताहे आयरिएहिं नातं जहा अचितत्तोग्गहोत्ति, तत्थ यब्भासे अण्णो गिरी, तं गता, तत्थ ताहे देवताए काउस्सग्गो कतो, सावि अब्भुट्ठिता, अणुग्गहोत्ति अणुण्णातं, ताहे समाहीए विहिए कालगता, ताहे इंदेण रहेण वंदिता पदाहिणीकरेंतेणं, तत्थ रहावत्तो च्चेव सो य पव्वतो जातो, तंमि य भगवंते अद्धणारायं दस य पुव्वा वोच्छिण्णा, बीओ आदेसो·वइरसामीणं सिंभो जातो, पच्छा ताहे भणितं—जहा ममं सुठिं आणेह, आणीता, तेहिं कण्णे ठविता, जेमेत्ता खाइस्संति, तं च पम्हुट्ठं, ताहे वियाले आवस्सयं करेंतस्स मुहपोत्तियाए चालितं, पडितं, ता से उवयोगो जातो, अहो पमत्तो जातो, पमत्तस्स य णत्थि संजमो, तं सेयं खलु मम भत्तं पच्चक्खाइत्तए, एवं संपेहेत्ता पच्चक्खातं, कालगता ।

॥४०५॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥४०६॥

आर्य-रक्षिताः

सो य साधू पेसणेणं पेसियल्लओ भमंतो पत्तो सोपारगं, तत्थ य साविया आगता, सा ईसरी, सा य चिंतेति-किह जीवीहामो?, पडिक्कओ णत्थि, ताए तद्दिवसं सतसहस्सेणं भत्तं निप्फादितं णत्थि पडिक्कउत्तिकाऊणं, मा य अम्हे सव्वं कालं उज्जलं जीवित्ता एत्ताहे एत्थ चेव देहबलिगाहिं वित्तिं कप्पेमोत्ति, एत्थ सतसहस्सणिप्फण्णे विसं छोढूणं जेमामो तो सणमोक्काराणि कालं करेहामो, ताए सज्जितं ता, णवि ता विसेण संजोइज्जइ, एवं च सा संपेहेत्ता अच्छति,सो य साधू हिंडंतो तत्थ संपत्तो, ताहे सा हट्ठतुट्ठा तं पडिलाभेति, एवं च सव्वं परमत्थं साहति, ताहे सो साधू भणति-मा भत्तं पच्चक्खाह, महं वइरस्सामिणा सिट्ठं-जया तुमं सतसहस्सणिप्फण्णाओ भोयणाओ भिक्खं लभिहिसि ततो पाए चेव सुभिक्खं भविस्सतित्ति, ताहे पव्वइस्सह, ताहे सा वारिता। इओ य वहणेण तद्दिवस्सं चेव तंदुला आणीया, ताहे पडिक्कओ जातो, एवं सोऽवि ताव जीविओ, ताणि य तस्स साधुस्स अंतियं पव्वयियाणि। ततो वइरसामिस्स पउप्पयं जातं वंसो य वड्ढितो ॥ इतो य अज्जरक्खिएहिं आगंतूणं सव्वो सयणवग्गो पव्वाविओ, माता पिता भाता भगिणी, जो सो तस्स खंतओ सोऽवि तेसिं अणुरागेणं तेहिं चेव समं अच्छति, न पुण लिंगं गेण्हति लज्जाए, किह समणओ पव्वइस्सं?, एत्थ मम धूताओ सुण्हाओ पव्वावियाओ, तासिं पुरओ न तरति नग्गो अच्छितुं, एवं सो तत्थ अच्छति, बहुसो आयरिया भणंति, ताहे सो भणति—जदि ममं जुवलएणं कुंडियाए छत्तएणं उवाहणाहिं जण्णोवइएण य समं तो पव्वयामि, पव्वइतो, सो पुण चरणकरणसज्झायं अणुयत्तंतेहिं गेण्हावितव्वो, ताहे ते भणंति—अच्छह तुब्भे कडिपट्टएणं, सोवि थेरो भणंति—छत्तएण विणा ण तरामि, ताहे भणंति—अच्छउ छत्तयंपि, करगेण विणा दुक्खं उच्चारपासवणं वोसिरितुं, बंभसुत्तगंपि अच्छउत्ति अवसेसं सव्वं परिहरति। अण्णदा चेतियवंदणयाए गता, आयरिया चेडरूवाणि गाहेंति, भणह--सव्वे वंदामो एतं ॥४०६॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥४०७॥

पृथक्त्वानुयोगे आर्यरक्षिताः

छत्तइल्लं मोत्तुं, एवं भणिओ, ताहे सो जाणति—इमे मम पुत्ता णत्तुया य वंदिज्जंति, अहं कीस ण वंदिज्जामि?, ताहे भणति–किं नाहं पव्वइउत्ति?, ताणि भणंति-कओ पव्वइतगाण छत्तगाणि भवंति?, ताहे सो जाणति-एताणिवि ममं पडिचोएंति, दे छड्डेमि, ताहे पुत्ता भणंति—अलाहि पुत्ता! छत्तगेणं, ताहे ते भणंति-अलाहि, जाहे उण्हं होहिति ताहे कप्पा उवरिं कीरिहिति, एवं ताणि मोत्तुं करइल्लं, तत्थ से पुत्तो भणति—मत्तएण चेव सण्णाभूमिं वा गंमति, एवं जण्णोवतियंपि मुयति, ताहे आयरिया भणंति–को वा अम्हे ण जाणति जहा बंभणा ?, एवं तेण ताणि मुक्काणि, पच्छा ताणि पुणो भणंति-सव्वे वंदामो मोत्तूण कडिपट्टइल्लं, ताहे सो रुट्ठो भणति--सह अज्जयपज्जयएहिं मा वंदह, अण्णे वंदेहिंति मम, एतं कडिपट्टयं न छड्डेमि, तत्थ य साधू भत्तपच्चक्खायओ, ताहे तस्स निमित्तं कडिपट्टयवोसिरणट्ठताए आयरिया वण्णेंति-एतं महाफलं भवति जो साहुं वहति, तत्थ य पढमं पव्वइया भणिएल्लया-उब्भे भणेज्जह अम्हे एतं वहामो, एवं ते उट्ठेंति, तत्थ य आयरिया भणंति--अम्हं सयणवग्गो मा णिज्जरं पावतु ?, तो तुब्भे चेव सव्वे भणह अम्हे चेव वहामो, ताहे सो थेरो भणति-किं पुत्ता ! एत्थ बहुतरिया निज्जरा ?, आयरिया भणंति-बाढं, किं एत्थ भाणितव्वं ?, ताहे सो भणति-तो खाइ अहंपि वहामि, आयरिया भणंति-एत्थ उवसग्गा उप्पज्जंति चेडरूवाणि णग्गेन्ति, जदि तरसि अहियासितुं तो वहाहि, अह णाहियासेसि ताहे अम्हं न सुंदरं भवति, एवं सो थिरो कतो, जाहे सो उक्खित्तो साधू मग्गतो पव्वइयाउ ठिताओ ताहे खुड्डगा भणिता-एत्ताहे कडिपट्टयं मुएह, ताहे सो मोत्तुं आरद्धो, ताहे अण्णेहिं भणितो-मा मुंचसि, तत्थ से अण्णेण कडिपट्टओ पुरतो कातूण दोरेण बद्धो, ताहे सो लज्जिओ तं वहति, मग्गओ मम पेच्छंति सुण्हाओ नत्तुईओ य, एवं तेणवि उवसग्गो उट्ठिओत्तिकातूण वूढं, पच्छा आगतो तहेव, ताहे आयरिया भणंति-किं अज्ज खंत !

॥४०७॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता...........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥४०८॥

इमं ?, ताहे सो भणति-साहासियज्जे (अहियासियव्वे) पुत्त ! उवसग्गो उट्ठितो, आणेह साडयं, ताहे भणति-किं साडएणं ? जं दट्ठव्वं तं दट्ठं, चोलपट्टओ चेव मे भवतु, एवं ता सो चोलपट्टयं गेण्हाविओ ।

पच्छा भिक्खं न हिंडति, ताहे आयरिया चिंतेंति--जदि एस भिक्खं न हिंडति तो को जाणति कदाति किंचि भवति ?, पच्छा एकल्लओ किं काहिति?, अविय-एसो निज्जरं पावेतव्वो, तम्हा (तहा) कीरतु जहा एसो हिंडति, एवं च आयवेयावच्चं से, पच्छा परवेतावच्चंपि काहिति, एवं चिंतेत्ता आयरिया ते सव्वे अप्पसारियं आमणितूण गता, जहा सव्वे आगता एकल्लया समुद्दिसह, पुरतो य खन्तस्स भणंति--खन्तस्स वट्टेज्जाह, अहं वच्चामि गामं, एवं गता आयरिया, तेऽवि आगता समाणा सव्वे एकल्लया समुद्दिसंति, सो चिंतेंति--ममं एस दाहिति, एसो दाहिति, एक्कोवि तस्स न देति, अण्णो दाहिति, एस वराओ किं लभति ?, अण्णो दाहिति, एवं तस्स न केणति किंचिवि दिण्णं, ताहे आसुरुत्तो न किंचि आलवति, चिंतेति-कल्लं ता एतु मे पुत्तो तो णं पावेमि जं केणति (ण) पाविता, ताहे बितियदिवसे आगता आयरिया, ताहे ते भणंति--खंता! किह वट्टियं भे ?, ताहे सो भणति-जदि तुमं पुत्ता! न होंतो तो हं एक्कंपि दिवसं न जीवंतो, एते य जे अण्णे मम पुत्ता नत्तुगा य एतेऽवि न किंचि देंति, ताहे आयरिएण समक्खं ते खिंसिता, तेवि य अब्भुवगता, आयरिया भणंति-आणेह, अहं अप्पणावि जामि, खंतस्स पारणयं आणेमि, ताहे सो खंतो भणति--किह मम पुत्तो हिंडिहिती ?, प्रकृष्टो न कदाति हिंडियपुव्वो, अहं चेव हिंडामि, ताहे सो खंतो अप्पणा णिग्गतो, सो य पुण लद्धिसंपण्णो चिरावि गिहत्थत्तणे, सो य अहिंडतो न जानति कत्तो दारं वऽवदारं वा ?, ताहे सो एगं घरं अवद्दारेण अतिगतो, तत्थ य अण्णादिवसं पगतं वत्तेल्लयं, तत्थ घरसामिणा भणिता-'कत्तो पव्वइतओ अतिगतो ?, घरस्स किं

पृथक्त्वानुयोगे आर्यरक्षिताः

॥४०८॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥४०९॥

आर्यरक्षित-वृत्ते गोष्ठामा-हिलः

दारं नत्थि ?, कीस अवदारेण अतीसि ?, ताहे तेण तत्थुप्पण्णं चेव भणितं--सिरीअ एंतीए किं दारं अवदारं वा ?, जत्तो अतीति तत्तो सुंदरा, ताहे तेहिं भणितं-- देह से भिक्खं, तत्थ लड्डुगा बत्तीसं लद्धा, सो ते घेत्तूण आगतो, आलोयियं तेणं, पच्छा आयरिया भणंति-तुज्झं बत्तीसं सीसा होर्हिति परंपरएण आवलिया ठावया, ताहे आयरिया भणंति-जा तुब्भे पुव्वं राउला लभह किंचिअतिसेसं ताहे कस्स देह ?, तेण भणितं-बंभणाणं, एवं चेव अम्हं साधुणो पूयणिज्जा, एतेसिं एस पढमलाभो दिज्जउ, एवं होतुत्ति तं सव्वं साहूण दिण्णं, ताहे पुणो अप्पणो अट्ठाए उत्तिण्णो, पच्छाऽणेणं परमण्णं घतमहुसंजुत्तं आणितं, पच्छा सयं समुद्दिट्ठो, एवं सो अप्पणा चेव पढितो लद्धिसंपण्णो बहूणं बालदुब्बलाणं आधारो जातो । एवं तस्सण्णायगपव्वज्जा ।

तत्थ य गच्छे तिण्णि पूसमित्ता—एगो दुब्बलियपूसमित्तो एगो घयपूसमित्तो एगो पोत्तपूसमित्तो, जो दुब्बलिओ सो झरओ, एगो घतं उप्पायेति एगो पोत्ताणि, तस्स घतपूसमित्तस्स इमा लद्धी-दव्वतो घतं उप्पाएतव्वं, खेत्तओ जहा उज्जेणीए, कालतो जेट्ठासाढकाले, भावतो धिज्जातिणी तीसे भत्तुणा दिवसे २ छहिं मासेहिं पसाविहित्ति पिंडिओ वारतु घतस्स वितायाए उवयुज्जि-तात्ति, सा य कछे वा परे वा वियाहितित्तिकाऊणं, तेण य जाततिं, अण्णं णत्थि, तहवि पिंडितं सा हट्ठतुट्ठमाणसा देज्जा, परिमाणं तु जत्तियं गच्छस्स उवयुज्जति, सो य निंतो चेव पुच्छति-कस्स केत्तिएण घएण कज्जं ?, पोत्तपूसमित्तस्स एमेव सत्ता, द-व्वादि, दव्वओ वत्थं खेत्तओ वइद्धदेसे महुराए वा, कालओ वासासु सीतकाले वा, भावतो जहा काइ रंडा तीसे केणति उवाएण बहूहिं दुक्खेहिं छुहाए य मरंतीए कत्तिऊण एगा पोत्ती वुणावेत्ता कल्लं नियंसेहामित्ति, एत्थंतरा पोत्तिपूसमित्तेण जाततिं, सा हट्ठतुट्ठा देज्जा, परिमाणओ सव्वस्स गच्छस्स उप्पाएज्जा ।

॥४०९॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥४१०॥

आर्यरक्षित-वृत्ते गोष्ठामाहिलः ॥४१०॥

एस दोऽहं जो दुब्बलियपूसमित्तो तेण णव पुव्वाणि गहितेल्लगाणि, सो ताणि रत्तिं च दिवसं झरति, एवं सो झरणाए दुब्बलो जातो, जदि सो न झरेज्जा ताहे तस्स सव्वं चेव पम्हुसेज्जा, तस्स पुण दसपुरे चेव नीयल्लगाणि, ताणि पुण रत्तवडोवासगाणि आयरियाणं पासे अल्लियंति, तत्थ ताणि भणंति—अम्हं भिक्खुणो झाणपरा, तुज्झं झाणं णत्थि, आयरिया भणंति-अम्हं चेव झाणं, तेसिं कुतो झाणं?, एस तुब्भं जो नियल्लओ दुब्बलियपूसमित्तो एस झाणेण चेव दुब्बलो, ताणि भणंति-एस गिहत्थत्तणे निद्धाहारेहिं बलिओ, इदाणिं णत्थि, तेण दुब्बलो, आयरिया भणंति—एस नेहेण विणा न कदाति जेमेति, ताणि भणंति—कतो तुब्भं णेहो?, घतपुस्समित्तो आणेति, ताणि न पत्तियंति, ताहे भणिताणि—एस तुब्भं घरे किं आहारेताइओ ?, ताणि भणंति—निद्धपेसला आहारेताइओ, तेसिं संबोधि णातुं ताण घरं विसज्जिओ, एत्ताहे देह तं, ताणि तहेव दातुं पवत्ताणि, सोवि झरति, तंपि णज्जति छारे छुब्भति, ताणि गाढतरं देंति, एवं निव्विण्णा, ताहे आवादियाणि, किह?, सो भणितो-मा णिद्धं आहारेहि, मा य चिंतेहि, ताहे सो पुणोऽवि पोराणसरीरो जातो, ताहे ताण उवगतं, ताहे तेसिं धम्मो कहितो, सावगाणि जाताणि।

तत्थ य गच्छे इमे चत्तारि जणा-सो चेव दुब्बलो१ विञ्झो२ फग्गुरक्खितो३ गोट्ठामाहिल्लोत्ति४। जो सो विंझो सो अतीव मेहावी सुत्तत्थतदुभयाणं गहणधारणसमत्थो, सो पुण ताव महल्लाए मंडलीए विसूरति, ताहे सो आयरिए भणति-अहं विसूरामि, न सक्का मंडलीं वोलेत्ता, तो मम संदिसह, आयरिया भणंति-आमं अज्जो!, ताहे तस्स दुब्बलिओ दिण्णो वायणायरिओ, कतिवि दिणे उवट्ठितो मम नासति, जं च सन्नायतघरे णाणुपेहितं तं च संकितं जातं, तो मम अलाहि, जदि अहं एतस्स वायणं दाहामि तो मम नवमं पुव्वं पम्हुसिहिति, ताहे आयरिया चिंतेंति—जति ताव एतस्स परममेहाविस्स एवं झरंतस्स णासति अन्नस्स नट्ठेल्लयं चेव, एवं ते उवओगं

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥४११॥

आर्यरक्षित-वृत्ते गोष्ठामाहिलः

मता, ताहे तेहिं गहणधारणादुब्बलत्तणं णातूणं चत्तारि अणुयोगद्दारा कता सुहगहणधारणा भविस्संति, काणि पुण ताणि ?—
कालियसुतं० ॥ ८-५६ ॥ १२६ मू. भा. ॥ जं च महाकप्प० ॥ ८-५५ ॥१११ भा.॥ एकारस अंगा सबाहिरगा जं च महाकप्पसुतादि एतं चरणकरणे ठवितं, इसिभासिता उत्तरज्झयणा य धम्माणुयोगो जातो, चंदसूरपण्णत्तीओ एस कालाणुयोगो, दिट्ठिवाओ दवितणुओगो, अपुहुत्ते एगम्मि सुत्ते चत्तारिवि अणुयोगा आसि, अपुहुत्ते अत्थो वोच्छिण्णो एगेण एगो ठितो, एवं जुगमासज्ज अणुयोगो कतो चउधा, एतन्निमित्तं विंझस्स गहणं कतं। जंनिमित्तं चत्तारि अणुयोगद्दारा कता जेण कयो सो भणितो। अण्णोऽविय आयरियाणं भाता बहुस्सुतो फग्गुरक्खितो अण्णोऽविय आयरियाणं मामओ गोट्ठामाहिल्लो, एते उवरिं भण्णिहिंति।
देविंदवंदिएहिं० ॥ ८-५१ ॥ ११६ ॥ किह देवेहिं वंदिता ?, ते य नाम विहरंता महुरानगरिं गता, तत्थ भूतगुहाए ठिता वाणमंतरघरे, इतो य सक्को देवराया महाविदेहे सीमंधरसामिं पुच्छति नियोदे, तत्थ से वागरिता, ताहे भणति—अत्थि पुण भरहे कोइ णिओते वागरेंतो ?, भगवता भणितं—अत्थि पुण, को ?, अज्जरक्खिओ, तत्थ आगतो सक्को माहणरूवेण, तं थेररूवं कातूणं, पव्वइयगा य निग्गता भिक्खस्स, सो य अतिगतो, ताहे वंदित्ता पुच्छति—भगवं ! मज्झ सरीरे इमो महल्लव्वाही इमं च भत्तं पच्चक्खाएज्जामि, तो जाणह-मम केच्चियं आउं होज्जा?, जविएहि य किर भणिता आयुसेढी, तत्थ उवउत्ता आयरिया जाव आयुं पेच्छति वरिससतं दो तिण्णि, ताहे चिंतेति—एस भारहओ तु मणूसो ण भवति, वाणमंतरो विज्जाहरो वा जाव दो सागरोवमट्ठीती ताहे भूयाउ साहरित्ता भणति-सक्को भविज्जा, वाढंति भणितं, पादेसु निवडितो, ताहे सव्वं साहति, जहा महाविदेहे सीमंधरसामी पुच्छिता, तेहिं कहितो, इहं वामि आगतो, तं इच्छामि णं सोतुं निओते, ताहे कहिता, भणति—सणाहं ॥४११॥

***यत् अत्र 'चूर्णि' संपादने "जं च महाकप्प" गाथा, भाष्य-गाथा रूपेण निर्दिष्टा, सा गाथाः वृत्तिकारेण निर्युक्ति-गाथा ७७७ रूपेणा निर्दिष्टाः

***निह्नव (गोष्ठा माहिल) वृतांत आरभ्यते

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता..........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णिः-1

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ
॥४१२॥

आर्यरक्षित-वृत्ते गोष्ठामाहिलः

भरहन्ति, इदाणिं वच्चामि, भणंति आयरिया--अच्छह ताव मुहुत्तगं जाव संजता एन्ति, सो भणति-वच्चामि, आयरिया भणंति-एत्ताहे दुक्कहा संजाता, जा थिरा भवंतु जे चला जहा एत्ताहेवि देविंदा एन्ति, ताहे सो भणति-जदि ते ममं पेच्छंति तेण चेवऽप्पसत्तत्तेण निदाणं वा काहिंति, तेण वच्चामि, किंच चिंधं कातूणं वच्च, ताहे दिव्वा गंधादी पकिण्णा, पडिस्सयं च अण्णओमुहं कातूण गतो, ताहे आगता संजता, ते पुंच्छति-कहिं एतस्स दारं ?, आयरिएहिं वाहिता-इतो एहत्ति, सिट्ठं च जहा सक्को आगतो, ते भणंति-अहो अम्हेहिं न दिट्ठो ?, कीस मुहुत्तं न धारिओ ?, तं चेव साहंति जहा अप्पिड्ढिया मणुया मा णियाणं काहिंति, पाडिहेरं कातूण गतोत्ति। एवं ते देविंदवंदिया भण्णंति।

ते अण्णदा विहरंता दसपुरं गता, मथुराए य अकिरियवादी उट्ठिओ, जथा-नत्थि माता नत्थि पिता एवमादिणाहीयवादी, तत्थ संघसमवाओ कओ, तत्थ पुण वादी णत्थि, ताहे इमेसिं पयट्ठियं इमे य जुगप्पधाणा, ताहे आगता, तेसिं साहंति, ते य महल्ला, तहे तेहिं गोट्ठमाहिल्लो पयट्ठितो, तस्स य वादलद्धी अत्थि, सो गतो, तेण सो वादे पराजिओ, सोवि ताव तत्थ सड्ढेहिं रुद्धो वरिसारत्ते ठिओ अच्छति।

इतो य आयरिया समिक्खंति-को गणहरो भवेज्जा?, ताहे दुब्बलियपुस्समित्तो समिक्खितो, जो पुण तेसिं सयणवग्गो सो बहुओ,(तस्स)गोट्ठामाहिलो फग्गुरक्खितो वा अणुमतो, गोट्ठामाहिलो आयरियाण मातुलओ, तत्थ आयरिया सव्वे सद्दावेत्ता दिट्ठंतं करेंति, जहा तिण्णि कुडा-निप्फावकुडे तेल्ल० घतकुडो, ते पुण सव्वे हेट्ठाहुत्ता कता निप्फावा सव्वे णिंति, तेल्लमवि णीति, तत्थ पुण अवयवा लग्गंति, घतकुडेहिं बहु चेव लग्गति, एवमेव अहं अज्जो ! दुब्बलियपूसमित्तं प्राति सुत्तत्थतदुभयेसु निप्फावकुडसमाणो ॥४१२॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

जाओ, फग्गुरक्खितं प्रति तेल्लकुडसमाणो, गोट्ठामाहिलं प्रति घयकुडसमाणो, एवं एस सुत्तेण य अत्थेण य उववेतो, एस तुब्भं आयरिओ भवतु, तेहिं सव्वं पडिच्छितं, इतरोऽवि भणितो—जहाऽहं वट्टिओ फग्गुरक्खितस्स गोट्ठामाहिल्लस्स य तथा तुमे वट्टितव्वं, ताणिवि भणिताणि-जहा तुब्भं मम वट्टिताइं तहा एतस्सवि वट्टेज्जाह, अविय-अहं कते वा अकए वा ण रूसामि, एस न खमिहिति, एवं दोऽवि वग्गे अप्पाहेत्ता भत्तं पच्चक्खातं, कालगता, दियलोगं गता। इतरेणवि सुतं जहा आयरिया कालगता, ताहे आगतो पुच्छति गोट्ठामाहिल्लो-को गणहरो ठवितो ?, कुडगादिट्ठंतो य सुतो, ताहे वीसुं पडिस्सए ठाइतूण पच्छा आगतो, ताहे तेहिं सव्वेहिं अब्भुट्ठितो, इह चेव ठायह, ताहे णेच्छति, सोऽवि बाहिं ठितो अण्णाणि वुग्गाहेति, ताणि ण सक्कंति।

इतो य आयरिया अत्थपोरिसिं करेंति, सो ण सुणति, भणति- तुब्भत्थ निप्फावकुडा कहेह, तहेव तेसु उट्ठितेसु विंझो अणुभासति, अट्ठमे कम्मप्पवादपुव्वे कम्मं वण्णिज्जति, किह कम्मं अच्छति?, जीवस्स कम्मस्स य कहं बंधो ?, तत्थ ते भणंति- बद्धं पुट्ठं निकातियं, बद्धं जहा सूतिकलावओ, पुट्ठं जहा घणनिरंतराओ कताओ, निकाइतं जथा तावेतूण पिट्टिताओ, एवं कम्मं रागद्दोसेहिं जीवो पढमं बंधति, पच्छा तं परिणामं अमुंचंतो पुट्ठं करेति, तेणेव संकिलिट्ठं परिणामं अमुंचंतो किंचि निकाएति, निकाइतं निरुवक्कमं उदए, णवरि अण्णहा तं नवि वेतिज्जति, ताहे सो गोट्ठामाहिलो वारेति, एत्तिए ण भवंति, अण्णदावि अम्हेहिं सुतं, जदि एत्तिए कम्मं बद्धपुट्ठनिकातितं एवं भे मोक्खो न भविस्सति, कह खातिं बज्झति ?, भणति—सुणह—

पुट्ठो जथा अबद्धो कंचु० ॥ ९-९ ॥ १४३ मू. भा। जथा सो कंचुओ तं कंचुइणं पुरिसं फुसति, ण पुण सो

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

कंचुओ सरीरेण समं बद्धो, एवं चेव कम्मंपि पुट्ठं, ण पुण बद्धं जीवप्पदेसेहिं समं, जस्स य बद्धं तस्स कम्मस्स संसारवोच्छित्ती न भविस्सति, ताहे सो भणति–अम्हं आयरिएहिं एत्तियं भणितं, एसो न याणति, ताहे सो संकितो समाणो पुच्छितुं गतो, मा मए अण्णथा गहितं भवेज्जा, ताहे पुच्छिया आयरिया, ते भणंति–अम्ह न होति एयंति, जस्स पुण अबद्धं कम्मं तस्स इमे दोसातो-संसारो नत्थि, वेदणा वा, जहा आगासगता पल्लवा ते ण बाहिज्जति एवं तस्स कम्मंपि, जदि देवलोकं वच्चति ताहे छड्डेतुं वच्चति, उड्ढगामी जीवा अहोगामी पोग्गला इति तस्स संसारो चेव न होहिति, एवं जीवसरीराणवि अबाहेण भवितव्वं, जथा कंचुए छिज्जंते तस्स बाधा नत्थि, एवमाइया दोषाः, जं पुण अम्ह पक्खे मोक्खाभावेत्ति भणितं तं न भवति, जतो असंखेज्ज-कालाओ उप्पिं कम्मस्स ठिती चेव णत्थि, तो ठित णेहक्खयातो मोक्खोऽवि भवति, जथा-परमाणुपोग्गलाणं जथा तहाखंधत्त-परिताणं ठितिणेहक्खयातो वियोगो भवतित्ति, तेणं गंतूण सिट्ठं, एत्तिए भणितं आयरिएहिं, एवं पुणरवि सो संलीणो अच्छति, समप्पतु ता तो खोभेहामि ।

अण्णया नवमे पुव्वे पच्चक्खाणे साधूणं जावज्जीवाए तिविहं तिविहेण पाणातिवायं एवं पच्चक्खाणं वण्णिज्जति, ताहे सो भणति-अवसिद्धंतो, न होति एवं, कहं पुण कातव्वं?, सव्वं पच्चक्खामि पाणातिवातं अपरिमाणाए तिविहं तिविहेणं एवं सव्वं, आयक-हितं किंनिमित्तं परिमाणं ण कीरति ?, जो सो आसंसादोसो नियत्तिओ भवति, जावज्जीवाए पुण भणंतेणं परेण अब्भुवगतं भवति, जहा हंत्थामि पाणेत्ति, एतंनिमित्तं अपरिमाणाए कातव्वं, ताहे विंझो भणति–ण होति एत्तिए, जं च तस्स अवसेसं नव-मस्स पुव्वस्स तं सम्मत्तं । ताहे सो भणति–अण्णहा आयरिएहिं भणितं, तुमं अण्णहा पण्णवेसित्ति, ताहे सो भणति-एत्तिए भणितं ॥४१४॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ||४१५||

गोट्ठा-माहिलवृत्तं

आयरिएहिं, आसंसा पुण एवं न भवति,जतो न मता आसेविस्सामोत्ति परिमाणं करेंति, किं तु मा जत्थ वा तत्थ वा वयपरिच्चाम-परिणामो भविस्सति, मताणं च देवभावादो अवस्संभावी पच्चक्खाणाभावो, अपरिमाणे वयकरणे तत्थासेवणे किंतु भवतुत्ति ? जावज्जीवाए भणंतित्ति । ते य सव्वे भणंति-जहा एत्तिएण भणितं आयरिएहिंति, जेऽवि अण्णे थेरा बहुस्सुता अण्णगच्छेल्लया तेऽवि पुच्छिया एत्तिए चेव भणंति, ताहे भणति-तुब्भे किं जाणह ?, तित्थकरेहिं एत्तिए भणितं, तेहिं भणितं-तुमं न जाणासि, जाहे न ठंति, ताहे संघ समाओ कओ, देवताए य काउस्सग्गो कतो, जा भद्दिया सा आगता भणेति-संदिसहत्ति, ताहे भणिता-वच्च, तित्थयरं पुच्छ-किं जं गोट्ठामाहिल्लो भणति तं सच्चं? जं दुब्बलियप्पमुहो संघो भणति तं सच्चं?, ताहे सा भणति-अणुबलं देह, काउस्सग्गो दिण्णो, ताहे सा गता, तित्थगरो पुच्छितो, तेहिं वागरितं, जहा-संघो सम्मावादी, इतरो मिच्छावादी, निण्हओ एस सत्तमो, ताहे आगताए भणितं, उस्सारेह, संघो सम्मावादी, एस मिच्छावादी, निण्हओ य सत्तमो, ताहे सो भणइ-एस अप्पिड्ढिया वराई, का एताए सत्ती गंतूण ?, तीसेवि न सद्दहति, ताहे पूसमित्ता गमेन्ति, जथा-अज्जो ! पडिवज्ज, मा उग्घाडिज्जिहिसि, णेच्छति, ताहे सो संघेण वज्झो कतो बारसविहेणं संभोएण, तंजहा-उवहि १ सुत २ भत्तपाणे ३, अंजलीपग्गहे इय ४ । दायणा ५ य निकाए ६ य, अब्भुट्ठाणेत्ति आयरे ७ ॥ १ कितिकम्मस्स य करणे ८ वेयावच्चकरणे इय ९ । समोसरण १० सण्णिसेज्जा ११, कहाए य निमंतणे १२ ॥ २ ॥ एस बारसविहो सउत्तरभेदो जहा पंचकप्पे, सत्तमो निण्हउत्ति, एवं अणालोइयपडिक्कंतो कालगतो, एस सत्तमो निण्हओ । एतेण भणितेण अवसेसा सूइता ते पढमेल्लुगे, ण जाणामो ते, तेण सुणिउमिच्छामो, तत्थ इमे निण्हगा— ||४१५||

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता..........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

श्री आवश्यक-चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥४१६॥

जमालिवृत्तं

बहुरयपदेसअव्वत्त० ।८-५६ ॥ ७१८ ॥ बहुरताणं किह उप्पत्ति ?, तेणं कालेणं० कुंडपुरं नगरं, तस्स सामिस्स जेट्ठा भगिणी सुदंसणा नाम, तीए पुत्तो जमाली, सो सामिस्स मूले पव्वइतो पंचहिं सतेहिं समं, तस्स य भज्जा सामिणो धूता अणोज्जंगी नाम, बीयं नामं से पियदंसणा, सावि तमणुपव्वतिया ससहस्सपरिवारा, जहा पण्णत्तीए तहा भाणितव्वं, एक्कारस अंगा अधीता, सामिणा अणणुण्णातो सावत्थिं गतो पंचसतपरिवारो, तत्थ तेंदुगुज्जाणे कोट्ठगे चेतिते समोसढो, तत्थ से अन्तपन्तेहिं रोगो उप्पण्णो, न तरति तिट्ठेतुं अच्छितुं, ताहे सो समणे भणति-मम सेज्जासंथारगं करेह, ते कातुमारद्धा, पुणो अधरो भणति-कतो ? कज्जति ?, ते भणंति-न कतो, अज्जावि कज्जति, ताहे तस्स चिंता जाता-जण्णं समणे भगवं० आइक्खति 'चलमाणे चलिते उदिरिज्जमाणे उदीरिए जाव निज्जरिज्जमाणे निज्जिण्णे' तण्णं मिच्छा, इमं णं पच्चक्खमेव दीसति सेज्जासंथारए कज्जमाणे अकडे संथारेज्जमाणे असंथारिए, तम्हा णं चलमाणेऽवि अचलिए जाव निज्जरिज्जमाणेऽवि अणिज्जिण्णे, एवं संपेहेति२ निग्गंथे सद्दाविति सद्दावेत्ता एवं वयासी-जण्णं समणे०महावीरे एवमाइक्खति चलमाणे चलिते जाव तण्णं मिच्छा, इमं णं पच्चक्खमेव दीसति जाव तम्हा णं अणिज्जिण्णे, ततेणं जमालिस्स एवं आइक्खमाणस्स जाव परूवेमाणस्स अत्थेगतिया णिग्गंथा एतमत्थं सद्दहंति, अत्थेगतिया णो सद्दहंति, जे ते सद्दहंति ते णं जमालिं चेव अणगारं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति, जे ते णो सद्दहंति ॥४१६॥
ते णं एवमाहंसु, जण्णं सामी आइक्खति तण्णं तह चेव, जं णं तुमं वयसि तं णं मिच्छा, कहं ?, 'चलमाणे चलिते' इत्यत्र चलितमिति स्थितिक्षयाद् यदुदितं तच्चलितमित्युच्यते, उदितं तु विपाकाभिमुखीभूतं, तच्चैवं चलत्कर्म उदयावलिकाले चलति, तस्य कालस्य असंख्येयसमयत्वात्, आदिमध्यान्तवच्च, कर्मपुद्गलानामपि अनन्ताः स्कन्धाः अनंताः प्रदेशाः क्रमेण पइसमयमेव

अत्र 'जमाली' प्रथम-निह्नवस्य कथानकं आरभ्यते

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥४१७॥

जमालिवृत्तं

चलन्ति, तत्र योऽसावाद्यश्चलनसमयस्तस्मिंस्तच्चलदेव चलितं, कथं पुनस्तद्वर्तमानं सदतीतं भवति ?, तत्र दृष्टांतः-यथा पटः उत्पत्तिकाले प्रथमतंतुप्रवेशे उत्पद्यमान एवोत्पन्नो भवति, उत्पद्यमानत्वं तु यतस्तस्मात्कालात्प्रभृतिः,तस्यायं व्यपदेशो दृष्टः-उत्पद्य पट इति, तत्रोपपत्तिः-उत्पत्तिक्रियादिकाल एव प्रथमतंतुप्रवेशे तदुत्पन्नं, यदि हि तदा नोत्पन्नं स्यात् अतस्तस्याः क्रियाया वैयर्थ्यं स्यान्निष्फलत्वात्, उत्पाद्योत्पादनार्था हि यतः क्रिया भवति, यथा च तस्मिन् क्षणे तन्नोत्पन्नं तथोत्तरेष्वपि क्षणेषु नैव तस्योत्पत्तिः स्यात्, को हि तासामुत्तरासां च क्रियाणामात्मनि रूपविशेषः येन प्रथमया नोत्पन्नं ताभिरुत्पद्यते ?, अतः सर्वदैवानुत्पत्तिप्रसंगः, इष्टा चोत्पत्तिः,अंत्यतंतुप्रवेशे पटस्य दर्शनात्, अतः प्रथमविहरण एवांगुल्यादेः किंचिदुत्पन्नं तदुत्तरक्रियया नो(चेदु)त्पद्यते, ततस्तदेकदेशोत्पादन एव क्रियाणां कालानां च क्षयः स्यात्,यदि तु तद्देशोत्पादननिरपेक्षान्या क्रिया भवति तदा उत्तरांशानामनुक्रमणं युज्यते, अनेन न्यायेन यथा पर उत्पद्यमान एवोत्पन्नः तथा तेनैव न्यायेन असंख्यातसमयपरिमाणत्वादुदयावलिकाया आदिसमयात् प्रतिसमयं चलदेव तत्कर्म चलितं,कथं?,यतो यदि हि तत्कर्म चलनाभिमुखीभूतं उदयावलिकायाःआदिसमय एव न चलितं स्यात् , ततस्तस्याद्यसमयचलनस्य वैयर्थ्यं स्यात्, तत्राचलितत्वात् , यथा च तस्मिन्समये न चलितं तथा द्वितीयादिसमयेष्वपि न चलेत्, को हि तेषामात्मनि रूपविशेषः येन प्रथमसमये न चलितं उत्तरेषु चलतीति ?, अतः सर्वदैवाचलनप्रसंगः, अस्ति चान्त्यसमये चलनं, स्थितेः परिमितत्वात्, कर्माभावदर्शनात्, अतः आवलिकाकालादिसमय एव किंचिच्चलितं, यच्च तस्मिंश्चलितं तन्नोत्तरेषु समयेषु चलति, यदि तु तेष्वपि तदेवाद्यं चलनं भवेत् ततस्तस्मिन्नेव चलने सर्वेषामुदयावलिकाचलनसमयानां क्षयः स्यात्, यदि तु तत्समयचलननिरपेक्षानि अन्यसमयचलनानि स्वचलनरूपाणि भवन्ति तत उत्तरचलनानुक्रमणं युज्यते, अत एव ॥४१७॥

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता..........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णिः-1

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥४१८॥

जमालिवृत्तं

वर्तमानमेव तच्चलनमतीतं भवति, एवं उदीरिज्जमाणादिसुवी भावेयव्वमिति, तम्हा कज्जमाणे कडे संथरिज्जमाणे संथरितेत्ति । जाहे न ठाति ताहे निग्गंथा जमालिस्स अंतिताओ जथा पण्णत्तीए जाव सामिं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति। साविय णं पियदंसणा ढंकस्स कुंभकारस्स घरे ठिता, सा आगता चेतियवंदिता, ताहे तंपि पण्णवेति, सावि विप्पडिवण्णा तस्स णेहाणुरागेण, पच्छा गता अज्जाणं परिकहेति, तं च ढंकं भणति, सो जाणति जथा-विप्पडिवण्णा नाहच्चएणं, ताहे सो भणति-अहं न याणामि एयं विसेसतरं, एवं तीसे अण्णदा कदायी सज्झायपोरिसिं करेंतीए तेण भायणाणि उव्वत्तंतेणं तत्तोहुत्तो इंगालो छूढो जथा तीसे संघाडी एगदेसंमि दड्ढा, सा भणति-इमा अज्जा! संघाडी दड्ढा, ताहे सो भणति-तुब्भे चेव पण्णवेह जथा-डज्झमाणे अदड्ढे, केण तुब्भं संघाडी दड्ढा ?, एत्थ सा संबुद्धा, तहत्ति पडिसुणेति, इच्छामो अज्ज ! सम्मं पडिचोदणा, ताहे सा गंतूण जमालिं पण्णवेति, सो जाहे न गेण्हति ताहे गता सहस्सपरिवारा सामिं उवसंपज्जित्ताणं विहरति ।

इमो चिंतंतो लहुं चेव गतो चंपं नगरं, सामिस्स अदूरसामंते ठिच्चा सामिं भणति-जथा णं देवाणुप्पियाणं बहवो अंतेवासी समणा निग्गंथा छउमत्था भवित्ता छउमत्थावक्कमणेण अवक्कंता, नो खलु अहं तथा छउमत्थो भवित्ता छउमत्थावक्कमणेण अवक्कंते,अहंणं उप्पण्णणाणदंसणधरे अरहा जिणे केवली भवित्ता केवलिअवक्कमणेणं अवक्कंते, ततेणं भगवं गोतमे जमालिं एवं वदासी-नो खलु जमाली केवलिस्स णाणे वा दंसणे वा खलंसि वा थंभंसि वा जाव कहिंचि वाऽऽवरिज्जति वा, जदि णं तुमं जमाली उप्पण्णणाणदंसणधरे तो णं इमाइं दो वागरणाइं वागरेहि-सासते लोके? असासते ?, सासते जीवे? असासए ?, तए णं से जमाली भगवता गोतमेणं एवं उत्ते समाणे संकिते लज्जिए जाव णो संचाएति भगवतो गोतमस्स किंचिवि पमोक्खमक्खातित्तएत्ति तुसिणीए ॥४१८॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

संचिट्ठति, जमालीति समणे भगवं महावीरे जमालिं एवं वयासी-अत्थि णं जमालि! ममं बहवे अंतेवासी छउमत्था जे णं पहू एतं वागरणं एवं वागरेत्तए जथा णं महं, नो चेव णं एतप्पगारं भासं भासित्तए जथा णं तुमं, सासए लोए जमाली, जं ण कयायि णासी न कदायि न भवति न कदायि न भविस्सति, भुविं च भवति य भविस्सति य, धुवे जाव निच्चे, असासए लोए जमाली !, जण्णं उस्सप्पिण्णी भवित्ता ओसप्पिण्णी भवति, सासते जीवे जमाली !, जं णं ण कदायि णासी जाव णिच्चे, असासते जीवे, जण्णं नेरइए भवित्ता तिरिक्खजोणिए भवति तिरिक्खजोणिए भवित्ता मणुस्से भवइ२ भवित्ता देवे भवति, तते णं से जमाली सामिस्स एवं आइक्खमाणस्स एतमट्ठं नो सद्दहति, असद्दहंते सामिस्स अंतियाओ अवक्कमति २ बहूहिं असब्भावुब्भावणाहि मिच्छत्ताभिनिवेसेहि य अप्पाणं च परं च तदुभयं च वुग्गाहेमाणे वुप्पाएमाणे बहूइं वासाइं सामण्णपरियायं पाउणति, बहूहिं छट्ठट्ठमादीहिं अप्पाणं भावेति, भावेत्ता अद्धमासियाए संलेहणाए अप्पाणं झूसेति २ तीसं भत्ताइं अणसणताए छेदेति, छेदेत्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंते कालमासे कालं किच्चा लंतए कप्पे तेरससागरोवमट्ठितिकेसु देवेसु देवत्ताए उववण्णे, एवं जथा पण्णत्तीए जाव अंतं काहितित्ति। एताए दिट्ठीए बहुए जीवा रता तेण बहुरतत्ति भण्णति, अहवा बहुसु समएसु कज्जसिद्धिं पडुच्च रता-सत्ता बहुरता इति। चोद्दस वासाणि तदा सामिणा उप्पडितस्स णाणस्स ताहे सो पढमओ निण्हओ उप्पण्णोत्ति ॥

बितिओ सामिणा सोलसवासाइं उप्पाडितस्स णाणस्स तो उप्पण्णो। तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे गुणसिलए चेतिए वसू नाम भगवंतो आयरिया चोद्दसपुव्वी समोसढा, तस्स सीसो तीसगुत्तो नाम, सो आतप्पवादपुव्वे इमं आलावगं अज्झाति-

'तिष्यगुप्त' द्वितिय-निह्नवस्य कथानकं आरभ्यते

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

"एगे भंते ! जीवप्पदेसे जीवेत्ति वत्तव्वं सिया ?, णो तिणत्थे, एवं दो जीवप्पदेसा तिण्णि संखेज्जा असंखेज्जा जाव एगप्पदेसूणेवि य णं जीवे णो जीवेत्ति वत्तव्वं सिया,जम्हा कसिणे पडिपुण्णे लोगागासप्पदेसउल्लपदेसे तु जीवेति वत्तव्व" मित्यादि, एत्थ सो विप्पडिवण्णो, जदि सव्वेऽवि जीवप्पदेसा एगप्पदेसहीणा जीवव्ववएसं न लभंति तो णं एसे चेव एगे जीवप्पदेसे जीवेत्ति, तब्भावभावित्वात् जीवव्ववदेसस्सत्ति, ताहे सो भणति-नो खलु एगप्पदेसमेत्तनिबंधणे जीवव्ववदेसे, किंतु कसिणपडिपुण्णलोगागासप्पदेसतुल्लपदेसानिबंधणेत्ति, तं नो खलु एगे जीवप्पदेसे जीवेत्ति, जाहे न ठाति ताहे से काउस्सग्गो कओ एएहिं, सो बहूहिं असब्भावुब्भावणाहिं मिच्छत्ताभिनिवेसेहि य अप्पाणं च परं च वुग्गाहेमाणो गतो आमलकप्पिं नगरिं,तत्थ अंबसालवणे ठितो, तत्थ मित्तसिरी नाम सवणोवासओ तप्पमुहा य अण्णे, ते निग्गता आगता साहुणत्ति, सोऽवि जाणति जहा एते निण्हगत्ति, पच्छा सो पण्णवेति, सोऽवि जाणति तहाइ माइट्ठाणेणं गतो धम्मं सुणेति, सो ते ण विरोहेति, पण्णवेहामि णं, एवं सो कमं पडिच्छंतो जाव तस्स संखडी विपुलविच्छिण्णा जाता, ताहे ते णिमंतिया-तुब्भे मम घरे पादाद्याकमणं करेह, एवं ते आगता, ताहे तस्स निविट्ठस्स तं विपुलं खज्जयं नीणितं, ताहे सो ताओ एक्केक्काओ खंडं देति कूरस्स कुसणस्स वत्थस्स, ते जाणंति-एस पच्छा पुणो दाहिति अम्हं, पच्छा पादेसु पडिओ सयणं च भणति-वंदह, साधू पडिलाभिता, अहोऽहं धण्णो सपुण्णो जं तुब्भे ममं चेव घरे आगता, ताहे भणंति-किं धरिसिया अम्हे?, ताहे सो भणति-तुब्भ मतेणं सिद्धंतेण पडिलाभिता, जदि नवरि वद्धमाणसामिस्स तणएणं सिद्धंतेणं पडिलाभेमि, एत्थ संबुद्धा, इच्छामो अज्जो ! सम्मं पडिचोयणा, ताहे पच्छा सावएणं पडिलाभिता मिच्छादुक्कडं च णं कतं, एवं ते सव्वे संबोहिता, आलोइयपडिक्कंता विहरंति । बितिओ निण्हओ गतो ॥

तिष्यगुप्त आषाढाचार्य शिष्याश्च

॥४२०॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥४२१॥

इयाणिं ततियओ, तेणं कालेणं० समणस्स भगवतो दो वाससताणि चोद्दसुत्तराणि सिद्धिं गतस्स तो उप्पण्णो। सेयविया नयरी, पोलासं उज्जाणं, तत्थ अज्जासाढा नाम आयरिया वायणाइरिया, तेसिं च बहवे सीसा आगाढजोगपडिवण्णगा, अज्झायंति ते, तेसिं च रत्तिं विसूइया जाता, निरुद्धवातेण न चेव कोइ उट्ठवितो जाव कालगता सोहम्मे नलिणिगुम्मे विमाणे उववण्णा, ओहिं पयुंजंति जाव पेच्छंति तं सरीरगं ते य साधुणो आगाढजोगपडिवण्णगा, एते न जाणंति, ताहे तं चेव सरीरगं अणुप्पविट्ठा, पच्छा उट्ठवेंति- वेरत्तियं पकरेह, एवं तेणं तेसिं दिव्वप्पभावेणं लहुं चेव समाणितं, पच्छा निप्फण्णेसु तेसु भणाति- खमह भंते! जं मए असंजतेण वंदाविता,अहं अमुगदिवसं कालगतेल्लओ, एवं सो खामेत्ता गतो,तेऽवि तं सरीरगं छड्डेतूण इमे एयारूवे अज्झत्थिए सव्वो गच्छो विप्पडिवण्णो-एच्चिरकालं असंजतो वंदिउत्ति, ताहे ते अव्वत्तभावं भावेंति जथा- सव्वं अव्वत्तं भणेज्जह, संजतोवि वा देवोवि वा,मा मुसावादो भवेज्जा असंजतवंदणं च,जहा तुमं ममं न पत्तियसि जहा संजतो न वा?,तुमंपि एवं भाणितव्वो। एवं संजतेवि सावगेऽवि ता एवं विभासा, एवं ते असब्भावेणं अप्पाणं३, तत्थ अणुसासिता ण ठिता, अणिच्छंता बारसविहेणं संभोएणं उग्घाडिता। ताहे विहरंता रायगिहं नगरं गता, तत्थ मुरियवंसप्पभूतो बलभद्दो नाम राया, सो य समणोवासओ, तेण आगमिता जहा इहमागतात्ति, ताहे तेण गोहा आणत्ता-वच्चह गुणसिलए पव्वइयगा ते इहं आणेह, ताहे तेहिं आणीता, ह (भ) णिया य-लहु कडगमद्देण मद्दह, ताहे हत्थीहिं कडगएहि य आणीएहिं भणंति-अम्हे जाणामो जहा तुमं सावओ, सो भणति-कहिं थ सावओ?, तुब्भे केवि चारा णु चोरिया णु अभिमरा णु?, ते भणंति-अम्हे समणा णिग्गंथा, सो भणइ-किह तुब्भे समणा?, तुब्भे अव्वत्ता, तुब्भे समणा वा चारिगा वा?,अहंपि समणोवासओ वा ण वा,ते संबुद्धा लज्जिता पडिवण्णा नीसं-

आषाढाचार्य शिष्याः कौडिन्यश्च

॥४२१॥

आषाढाचार्य-शिष्या: तृतीय-निह्नवस्य कथानकं

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता..........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] “आवश्यक” निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णिः-1

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥४२२॥

सामुच्छेदिकः

किया समणा निग्गंथावो (मो) त्ति, ताहे अंबाडिता, खरेहिं मउएहि य मए तुब्भे संबोहणट्ठाए कतं, मुक्का खामिया य। एवं ततिओ गतो ॥

सामिस्स दो वाससताणि वीसुत्तराणि सिद्धिं गतस्स तो चउत्थो उप्पण्णो। महिला नगरी, लच्छीघरं चेतियं, महागिरी य आयरिया, तत्थ तेसिं सीसो कोडिण्णो, तस्सऽवि आसमित्तो सीसो, पुण अणुप्पवादे पुव्वे नेउणियावत्थुं, तत्थ छिण्णच्छेदणय-वत्तव्वयाए आलावओ, जथा- सव्वे पडिपुण्णसमयनेरयिया वोच्छिज्जिस्संति, एवं जाव वेमाणियत्ति, एवं तस्स तम्मि विगिच्छा जाता, जथा- सव्वे संजता वोच्छिज्जिस्संति, एवं सव्वेसिं समुच्छेदो भविस्सति, ताहे तस्स थिरं चित्तं जातं, सो आयरिएहिं भण्णाति- एयं एगसमयवत्तव्वयं, मा एवं गेण्हाहि, सो णेच्छति, एवं सो णातूण निण्हउत्ति उग्घाडिओ, सो समुच्छेदणयं वागरेंतो हिंडति, जथा उ सुण्णो लोगो भविस्सति, एवं असब्भावुब्भावणाए भावेंतो कंपेल्लपुरं गतो। तत्थ खंडरक्खा णाम समणोवासगा, ते य सुंकपाला, तेहिं ते आगमितेल्लता, तेहिं मारेउमारद्धा, ताहे ते भीता भणंति- अम्हे सुतं जहा तुब्भे सड्ढा, तहावि एत्तिए संजते मारेह, ते भणंति- जे पव्वइयगा ते वोच्छिण्णा, इमे अण्णे चोरा वा०, तुब्भे किं अच्छह ?, तुब्भं चेव सिद्धंतो, सामिस्स पुण सिद्धंतेण ण वोच्छिज्जंति, जेण जथा वट्टमाणसमयनेरइया वोच्छिज्जंति एवं तत्थ अण्णे उववज्जिस्संति, तो कह संताणा-विच्छेदे सति वोच्छेदं पण्णवेह, अण्णे भणंति-तत्थ इमो आलावो जहा सव्वे पढमसमयनेरइया वोच्छिज्जंतित्ति, एवं पंचगति-यावि, एत्थ सो वितिगिच्छितो खणिगत्तवत्तणत्ता अहेतुगविणासवादं पण्णवेति, जथा- खणिगा पदत्था, पढमसमयिगाणं च अच्चंतभेदो, एवं बितिसमयगादीणंपि, मोग्गरादिकारणनिरवेक्खो य विणासो, जतो भूती चेव विणासे हेतुत्ति, ताहे तहेव जाव ॥४२२॥

सामुच्छेदिकः चतुर्थ-निह्नवस्य कथानकं

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥४२३॥

खंडरक्खेहिं सावगेहिं मारिउमारद्धा, भणंति- अम्हे ते संजता जे पुव्वं तुमए अमुगत्थ दिट्ठा, तुम्हेवि किल पुव्वदिट्ठगा ते चेव सड्ढगा, तथावि एत्तिए संजते विणासेह, ते भणंति- जे ते पव्वइयगा ते तदा चेव सत एव विणट्ठा, तुब्भे अण्णे च्चेव चोरा वा चारिया वा जाव सत एव विणस्सह, को तुब्भं विणासेति ?, तुब्भं चेव सिद्धंतो, जदि परं सामिस्स सिद्धंतेणं ते चेव तुब्भे तेहिं चेव अम्हेहिं विणासिज्जह, जतो तं चेव वत्थु कालादिसामग्गि पप्प पढमसमयकत्तेण वोच्छिज्जति, दुसमयकत्तेण उप्पज्जति, एवमादि,एत्थ ते संबुद्धा भणंति-इच्छामो अज्जो! सम्मं पडिचोदणा,एवमेतं तहत्ति,एवं तेहिं संबोहिता मुक्का खामिता पडिवण्णा य॥

इदाणिं पंचमो-सामिस्स अट्ठावीसाइं दो वाससताइं सिद्धिं गतस्स तो उप्पण्णो। उल्लुगानाम नदी,तीसे तीरे उल्लुगतीरं नगरं, बीए तीरे खेडगथामं, तत्थ महागिरीणं आयरियाणं सीसो धणगुत्तो नाम, तस्सवि सीसो गंगेयो नाम आयरिओ, सो पुव्विमे तडे उल्लुगतीरे नगरे, आयरिया से अवरिमे तडे, ताहे सो सरदकाले आयरियं वंदओ उच्चलिओ, सो य खल्लीडो, तस्स उल्लुगं नदीं उत्तरंतस्स सा खल्ली उण्हेण डज्झति, हेट्ठा य सीतलेण, पाणीएण सीतं, ताहे सो चिंतेति जथा-सुत्ते भणितं एगा किरिया वेदिज्जति-सीता उसिणा वा, अहं च दो किरियाओ वेदेमि, अतो दोऽवि किरियाओ एगसमएण वेदिज्जंति, ताहे आयरियाण साहति, तेहिं भणितं-मा अज्जो ! एवं पण्णवेहि, नत्थि एगसमएण दोऽवि किरियाओ वेदिज्जंतित्ति, जतो सीतफासस्स य उसिणफासस्स य जुगवं संफासा भवंति, न पुण जुगवं संवेदणं, जीवतदुपयोगस्वाभाव्यात्, जथा--दीहसक्कुलीभक्खणकाले पंचण्हं अत्थाणं पंचण्हं च इंदियाणं वावारो भवेज्जा, ण व जुगवं संवेदणमिति, जं पुण तहावि संवेदणकालभेदो परिवक्ो नोवलक्खिज्जति तं अतिसुहुमो कालोत्ति, जथा--उप्पलपत्तसतवेहे, समयो सहुमोत्ति न लक्खिज्जति। एवं सो असद्दहंतो असब्भावणाए अप्पाणं ३

द्युपयोग-वादी

॥४२३॥

गांगेयाचार्य पंचम-निह्नवस्य कथानकं

वुग्गाहेति, साहुणो पण्णवेति, परंपरेण सुतं, वारितो, जाहे ण ठाति ताहे उग्घाडितो, सो हिंडंतो रायगिहं गतो महातपोतीरप्पभे पासवणे, तत्थ मणिनागो नाम नागो, तस्स चेतिते वेणति, सो तत्थ परिसामज्झे कहेति, जहा-एवं खलु जीवेण एगसमएण दो किरियाओ वेदिज्जंति, ताहे तेण नागेण तीसे चेव परिसाए मज्झे भणितो-मा एतं पण्णवणं पण्णवेहि, एसा पण्णवणा दुट्ठु सेहा !, अहं एच्चिरं कालं वद्धमाणसामिस्स मूले सुणेमि जथा-एगा किरिया (एगममएण वेइज्जति) तुमं सि लट्ठतराए उ जातो, छड्डेहि एतं वादं, मा ते दोसेण नासेहामि, एतं ते ण सुंदरं, भगवता एत्थ ठितेण समोसरितेण वागरितं, एवं सो पण्णवितो अब्भुवगतो उवट्ठितो भणति- मिच्छामि दुक्कडंति । एस पंचमो निण्हओ ५ ॥

इदाणिं छट्ठओ, पंच सता चोताला सिद्धिं गतस्स वीरस्स तो तेरासियदिट्ठी उप्पण्णा । अंतरंजिया नाम नगरी, तत्थ भूतगुहं नाम चेतियं, तत्थ सिरिगुत्ता नाम आयरिया ठिता, तत्थ बलसिरी नाम राया, तेसिं पुण सिरिगुत्ताणं थेराणं सड्डियरो रोहगुत्तो नाम, सो पुण अण्णगामे ठितल्लओ, पच्छा तत्तो एति, तत्थ य एगो परिव्वायगो पोट्टं लोहपट्टेणं बंधिऊण जंबूसालं च गहाय हिंडति, पुच्छितो भणति-नाणेणं पोट्टं फुट्टति, तो लोहपट्टेण बद्धं, जंबूसाला य जहा जंबुदीवे नत्थि मम पडिवादी, ताहे तेण पडहओ णीणावितो जहा सुण्णा परप्पवाता, तस्स य लोगेण पोट्टसालो नामं कतं, पच्छा तेण रोहगुत्तेण वागरितं-मा तालेहि पडहगं, अहं से वादं देमि, एवं सो पडिसेहेत्ता गतो आयरियसगासं आलोएति-एवं मए पडहगो खोडितो, आयरिया भणंति-दुट्ठु कतं, सो विज्जाबलितो वादे पराजितोऽवि विज्जाहिं उवट्ठाति, सो भणति-किं सक्का एत्ताहे निलुक्कितुं ?, ताहे तस्स आयरिया इमाओ विज्जाओ सिद्धेल्लियाओ देंति तस्स परिवक्खा

॥४२४॥

त्रैराशिक षष्ठम्-निह्नवस्य कथानकं

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥४२५॥

मोरी णतुलि० ॥ ८-७५ ॥ १३८ भा० ॥ रयहरणं च से अभिमंतेतूण दिण्णं, जदि अण्णंपि उट्ठेति तो रयहरणं भमाडेज्जाह, अजेज्जो जहा होसि, इंदेणावि ण सक्को जेतुं, ताहे ताओ विज्जाओ गहाय गतो सभं, भणितं चऽणेण-एस किं जाणति ?, एतस्सेव पुव्वपक्खो होतु, परिवायओ चिंतेति-एते निउणा तो एताण चेव सिद्धंतं गेण्हामि, जथा मम दो रासी-जीवरासी अजीवरासी य, ताहे इतरेण तिण्णि रासी कता, सो जाणति, जथा-एतेण अम्हं सिद्धंतो गहितो तेण तस्स बुद्धिं परिभूत तिण्णि रासी ठविता--जीवा अजीवा णोजीवा, जीवा संसारत्था अजीवा घडादी नोजीवा (घरकोइलाई) छिन्नपुच्छा, दिट्ठंतो जथा-दंडस्स आदी मज्झो अग्गं च, एवं सव्वभावावि तिविहा, एवं सो तेण निप्पट्ठपसिणवागरणो कतो, ताहे सो परिव्वायगो रुट्ठो विंछुए मुयति, ताहे सो तेसिं पडिपक्खे मोरे मुयति, तेहिं विंचुएहि हतेहिं पच्छा सप्पे मुयति, ताहे तेसिं पडिघाते णउले मुयति, ताहे उंदरे, तेसिं मज्जारे, मिगे तेसिं वग्घे, ताहे सुयरे तेसिं सीहे, ताहे कागे तेसिं उलुगे, ताहे पोतागिं, पोतागी सकुलिया, तीसे संपाती, संपाती ओलावी, एवं जाहे न तरति ताहे गद्दभी मुक्का, तेण सा रयहरणेण आहता, ताहे सा तस्सेव परिव्वायगस्सेव उवरिं छेरेत्ता गता, ताहे सो परिवायओ हीलिज्जंतो निच्छूढो। एवं सो तेणं परिव्वाओ पराजितो, ताहे आगतो आयरियसगासे आलोएति, ताहे आयरिएहिं भणितं कीस ते उट्ठिएण ण भणितं-णत्थि तिण्णि रासी, एतस्स बुद्धिं परिभूत मए पण्णवितातो, इदाणिं पडिगंतुं भणाहि, सो णेच्छति, मा उब्भावणा होहितित्ति न पडिसुणेति, पुणो पुणो भणितो भणाति-को व एत्थ दोसो?, किं च जातं जदि तिण्णि रासी भणिता ?, अत्थि चेव तिण्णि रासी, अज्जो ! असब्भावो तित्थगराणासायणा य, तथावि न पडिवज्जति, एवं सो आयरिएहिं समं संपलग्गो, ताहे आयरिया राउलं गता भणंति-तेण मम सीसेण अवसिद्धंतो भणितो, अम्हं दुवे चेव रासी, इदाणिं सो विप्पडिवण्णो,

त्रैराशिकाः

॥४२५॥

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

तो तुब्भे अम्हं वादं सुणेह, पडिसुणंति, तत्थ रायसभाए मज्झे रण्णो पुरतो आवाडितं, एवं जहेगदिवसं एवं उट्ठाए छम्मासा गता, ताहे राया भणति--ममं रज्जं सीदति, ताहे आयरिएहिं भणितं-इच्छाए मए एच्चिरं कालं धरिओ, एत्तो एत्ताहे णं पासह कल्लं दिवसे आगते समाणे निगिण्हामि, ताहे पभाए भणति-कुत्तियावणे परिक्खिज्जतु, तत्थ सव्वदव्वाणि अत्थि, आणेह जीवे अज्जीवे नोजीवे य, ताहे ताए देवताए जीवा अजीवा य दिण्णा, नोजीवे नत्थित्ति भणाति, अजीवं वा पुणो देति, एवमादिकाणां चोताल-सतेण पुच्छाणं निग्गहितो, नगरे य घोसितं-जयति महतिमहावीरवद्धमाणसामीति, सो य निव्विसओ कतो, पच्छा निण्हतुत्तिकातूणं उग्घाडितो । छट्ठ तु एसो । तेण वतिसेसितसुत्ता कता छ, उलुगो य गोत्तेणं, तेण छउलुउत्ति जातो । चोतालसतं पुण इमं, तेण छम्मूलपदत्था गहिता, तंजथा-दव्वं गुणा कम्मं सामण्णं विशेषाः समवायः, तत्थ दव्वं नवधा, तंजहा-पुढवी आउ तेउ वाउ आकासं कालो दिसा जीवो मणा । गुणा सत्तरस, तंजहा-रूवं रसो गंधो फासो संखा परिमाणं पुहुत्तं संयोगो विभागो परत्तं अपरत्तं बुद्धी सुहं दुक्खं इच्छा दोसो पयत्तो य । कम्मं पंचधा–उक्खेवणं अवक्खेवणं आउंचणं पसारणं गमणं च । सामण्णं तिविहं–महासामण्णं सत्तासामण्णं सामण्णविसेससामण्णं, अन्ने भणंति–सत्तासामण्णं सामण्णसामण्णं विसेससामण्णं, अंतविसेसे एगविहो, एवं समवादोऽवि, अण्णे पुण पभणंति, सामण्णं दुविहं–परमपरं च, विसेसो दुविहो–अन्तविसेसो अणंतविसेसो य । एते छत्तीसं । एक्केकंमि चत्तारि २ विकप्पा–पुढवि अपुढवि णोपुढवि णोअपुढवि, एवमवादिष्वपि, तत्थ पुढविं देहित्ति मट्टिया देति, अपुढविं देहित्ति मट्टिय-वतिरित्ते देति, णोपुढविं देहित्ति णो किंचि देति, पुढविवतिरित्तं वा पुण्ण देवि, णोअपुढविं देहित्ति न किंचि देति, मत्तियं वा पुणो देति, एवं जथासंभवं विभासा ॥ ६ सत्तमो पुण पंचसता चुलसीता सिद्धिं गतस्स सामिस्स अबद्धिगदिट्ठी उप्पण्णा ।

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

दसपुर नगरुच्छु० ॥ ९८८-१४२ ॥ भा० । पुट्टो० ॥ ९८९-१४३ ॥ भा० । पच्चक्खाणं सेयं० ॥ ९९०-१४४ ॥ एतं पुव्वं चेव भणितं । एते निण्हगा अभिसंबंधे सत्त भणिता । एते य एगदेसविसंवादिणो, इमे अण्णे पभूततरविसंवादिणो बोडिया भण्णंति—

छव्वास सयाइं णवुत्तराइं सिद्धिं गतस्स वीरस्स । तो बोडियाण दिट्ठी रहवीरपुरे समुप्पण्णा ॥ १४५ ॥ भा. तेणं कालेणं० रहवीरपुरं नाम कव्वडं, तत्थ दीवगं उज्जाणं, तत्थ अज्जकण्हा आयरिया समोसढा, तत्थ एगो सिवभूती नाम साहस्सिमल्लो, सो रायाणं उवगतो, तुमं ओलग्गामित्ति, जा परिक्खामित्ति, रायाए अण्णदा भणितो- वच्च मातिघरे सुसाणे कण्हचउद्दसीए बलिं देहि, सुरा पसुओ य दिण्णो, अण्णे य पुरिसा भणिता-एवं बीभावेज्जाह, सो गंतूण मातीणं बलिं दातुं छुहितो-मित्ति तत्थेव सुसाणे तं पसुं पउलेत्ता खाति, ते य गोहा सिवावासितेहिं समंता भेरवं करेंति, तस्स रोमुब्भेदोवि ण कज्जति, ताहे उवट्ठितो गतो, तेहिं सिट्ठं, वित्ती दिण्णा । अण्णदा सो राया दंडे आणवेति- वच्चह मधुरं गेण्हह, ते सव्वबलेणं निद्धातिया, ततो अदूरसामंते गंतूणं भणंति-अम्हेहिं न पुच्छितं-कतरं महुरं वच्चामो ?, राया य अविण्णवणिज्जो, ते गोंगताए त अच्छंति, सिवभूती य आगतो भणति-किं भो अच्छह ?, तेहिं सिट्ठं, सो भणति-दोऽवि गेण्हामो समं चेव, ते भणंति-न सक्का दोविभागि-एहिं, एक्केकाय बहू कालो होतित्ति, सो भणति-जं दुज्जयं तं मम देह, भणितो जा णेज्जाहि, भणति— सूरे त्यागिनि विदुषि च वसति जनः स च जनाद् गुणीभवति । गुणवति धनं धनाच्छ्रीः श्रीमत्याज्ञा ततो राज्यम् ॥१॥ एवं भणित्ता पहावितो पंडुमहुरं, तेण तत्थ पच्चन्ता तावयितुमारद्धा, दुग्गे ठितो, एवं ताव जाव नगरे सेसं जातं, पच्छा नगरमवि गहितं, उवविता ततो निवेदितं

‘बोटिकः’ सप्तम-निह्नवस्य कथानकं

प्रत सूत्रांक [-] दीप अनुक्रम [-]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता..........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥४२८॥

अणेण रण्णो, तुट्ठेण भणितं-भण किं देमि, ?, सो चिंतेतुं भणति-जं मए गहितं तं सुगहितं, जहिच्छितो भविस्सामि, एवं होतुत्ति, सो य बाहिं चेव हिंडंतो अद्धरत्ते आगच्छति वा न वा, तस्स य भज्जा ताव ण जेमेति सुवाति वा जाव न आगतो भवति, सा निव्विण्णा, अण्णदा मातरं से वड्डति-तुज्झ पुत्तो दिवसे दिवसे अद्धरत्ते एति, अहं जग्गामि छुहातिया य अच्छामि, ताहे ताए भण्णति-मा दारं देज्जाहि, अहं अज्ज जग्गामि, सो आगतो बारं मग्गति, इतरीए अम्बाडिओ, भणिओ य-जत्थ इमाए वेलाए उग्घाडिताणि दाराणि तत्थ वच्च, तस्स भवितव्वयाते णं मग्गंतेण उग्घाडिओ साधुपडिस्सओ दिट्ठो, तत्थ गतो वंदति, भणति-पव्वावेह ममं, ते णेच्छंति, तेण सयं लोओ कतो, ताहे से लिंगं दिण्णं, अण्णदा चीवरजायणिताए तेण कंबलरयणं लद्धं, तं तस्स अणापुच्छाए गुरूहिं फालेत्ता साधूण णिसेज्जाओ कताओ, अण्णे भणंति- तं तस्स रण्णा दिण्णं, ताहे सो कसादितो चीवराणि छड्डेत्ता गतो, अण्णे भणंति-जिणकप्पे वण्णिज्जंते भणति- किं एस एवं न कीरति ?, तेहिं भणितं-वोच्छिण्णो, ममं न वोच्छिज्जतित्ति सो चेव परलोगत्थिणा कातव्वो, किं उवहिपरिग्गहेण ?, परिग्गहसब्भावे कसायमुच्छाभयादयो बहू दोसा, अपरिग्रहत्वं च सुते भणितं, अचेला य जिणिंदा जिणकप्पियादयो य, तो अचेलता सुंदरत्ति, एवं सव्वं जधाय निग्गतो। तस्सुत्तरा भगिणी उज्जाणे ठितस्स वंदिया गता, तं दट्ठूण ताएऽवि छड्डितं, ताहे भिक्खं पविट्ठा, गणिताए दिट्ठा, मा विरज्जिहितित्ति उरे से पोती बद्धा, सा णेच्छति, सो भणति-अच्छतु एतं तव देवताए दिण्णंति, अण्णे भणंति-सेज्जातरीए दिण्णं बद्धं च, तेण य दो सीसा पव्वाविता-कोडिण्णो कोट्टिवीरो य, ततो सीसपसीसाणं परंपरं फासो जातो। ताणं दोसेणं मिच्छत्तं वड्डितं। एवं बोडितज्जणा जाता।

एवं एते भणिता० । ६-९५ ॥ १८६ ॥ मोत्तूण अतो एक्कं० । ८-९६ ॥ १८५ ॥ गोट्ठामाहिलं एकं मोत्तूणं सेसाणं

दिगम्बरो-त्पत्तिः

॥४२८॥

निह्नव-अधिकारस्य उपसंहार क्रियते

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥४२९॥

निह्नवाधिकारोपसंहारः

जावज्जीवितं पच्चक्खाणं, दो दो दोसा, बहुरता जीवप्पदेसिए भणंति-तुब्भं दोहिं कारणेहिं मिच्छादिट्ठी, जेण भणह-एगो जीवप्पदेसो जीवोत्ति १ जं च भे चलमाणं चलितं२, इमेऽवि पडिभणंति-तुब्भेऽवि जं भणह-चलमाणे अचलिते १ जं च जीवप्पदेसे जीवेत्ति न भणेह २, एवं सेसावि परोप्परं दो दोसे छुभंति, गोट्ठामाहिलस्स तिन्नि, मोत्तूणं गोट्ठामाहिल्लं सेसाणं संजयाणं पच्चक्खाणं जावज्जीवाए, एस एक्को बितिओ पुट्ठं जथा अबद्धं कंचु०,जं च अम्हेच्चयं न सद्दहेसि, एस ततियओ, अण्णे भणंति-एक्केक्कस्स दो दोसा, एगं अप्पणा विप्पडिवण्णा, बितियं परं वुग्गाहेंतित्ति॥ आह-सव्वत्थ संपडिवण्णा जदि कहमवि एगत्थ विप्पडिवण्णा तो किं जातं ?, भण्णति—

सत्तेया दिट्ठीओ० । ८-९६ । १८७ ॥ जदिवि एगत्थ विप्पडिवत्ती तथावि एताओ सत्तवि दिट्ठीओ जातिजरामरणगब्भवसहिस्स संसारस्स मूलं भणंति । णणु किं ते समणसरूवा ण ?, भण्णति-निग्गंथा इव पडिभासंते, जतो इमं चेव लिंगं, ण पुण निग्गंथा चेव, किं तु निग्गंथरूवा इति ॥ एत्थ सीसो आह-जदि तो एवं तो जं ते पडुच्च आहाकम्मादि जातं तं कहं परिहरणाएत्ति ?, आयरिया भणंति—

पवयणनिज्जूढाणं० । ८-९८ ॥ ७८७ ॥एतेसिं पवयणनिज्जूढाणं कारितं आहाकम्ममादि सेज्जा वा पणुवीसाए दोसाणं एक्कतरं, कहं पण्णवीसा ?, सोलस उग्गमदोसा णव एसणा दोसा, संकितं मोत्तूण, सो आतसमुत्थोत्ति तं भजितं परिहरणाए, किं निमित्तं ?, जदि सो जाणति जहा एते निण्हगत्ति तेसिं मए भत्तं कतं ताहे घेप्पंति, अह विसेसं चेव ण जाणति ताहे ण घेप्पति, ॥४२९॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता..........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णिः-1

श्री आवश्यक-चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥४३०॥

मूलगुणे वा अविसोहिकोडीए उत्तरगुणे वा विसोहिकोडीउत्ति । जं पुण बोडियनिमित्तं कतं तं कप्पति, जेण ते विसरिसा भिच्छादिट्ठिगा य ॥ एवं णयसमोतारणावसरेणं भणिता जहा उप्पण्णा णिण्हगा, भणिता य णयविसारदा अज्जवतिरा अज्जरक्खिगा य ॥ इदाणिं अणुमतेत्ति दारं— (अनुमतद्वारं)

तवसंजमो० ॥ ८-१०० ॥ ७८९ ॥ तवो दुविहो, संजमो सम्मं पावोवरमो, सो य सत्तरसविहो, एतेण चरित्तसामाइयं दुविहंपि गहितं, निग्गंथं पव्वयणं वा, अणेण सुतसामाइयं सम्मत्तसामाइयं च, ववहारग्गहणेण य णेगमसंगमववहारा ववहारिगत्ति गहिता, विभत्तिविपरिणामो य एत्थ दट्ठव्वो । ततः कोऽर्थः ?, नेगमसंगहववहाराणं चत्तारिवि सामाइया अणुमया, जेण एतेहिं मोक्खो साहिज्जति, उज्जुसुतादीणं पुण चउण्हं सुद्धनयाणं संजमसामाइयं चेव अणुमतं, जेण तेण णेव्वाणं सेज्झतित्ति । इदाणिं 'किं कतिविहं कस्स' एसा गाथा घोसेतव्वा, तत्थ किन्तिदारं– किं सामाइयगं दव्वं गुणो उभयं वा ?, दव्वंपि किं जीवदव्वं अजीवदव्वं मीसं वा?, गुणोऽवि किं जीवगुणो अजीवगुणो वा हवेज्जा?, एमादि आसंकासंभवे सति आह-किं सामाइयकं?, स्वरूपतोऽर्थतो नयतः सिद्धांततो वेति, भण्णति—

आया खलु० ॥ ८-१०१ ॥ ७९० ॥ आता जीवो, खलु विसेसणे, सामाइगं 'सामं समं च सम्मं' इच्चादिणा सुत्तफासे भणिहिति, पच्चक्खायंतको पच्चक्खाणं करेंतो,पच्चक्खाणं नाम पच्चक्खेयसावज्जजोगपरिण्णा, वट्टमाणनिद्देसेण परिणामित्तं दंसेति, ततः कोऽर्थः ?, सावज्जजोगपरिण्णापरिणामपरिणतो जीवो सामाइकं भवति स्वरूपतः, इतरस्तु विभाषेति विशेषणार्थः । ॥४३०॥ अथ केनार्थेनैवमुच्यत इति, भण्णति —

'सामायिक' व्याख्या एवं स्वरुपं व्यक्तिक्रियते

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥४३१॥

सामायिके द्रव्यपर्याय विचारः

आया, आयादिति आयो-लाभस्तमाश्रित्य, किमुक्तं ?, लभा जे सामादयो तेसिं लाभं पडुच्च, सामस्स परपीडापरिणाए आयो तंमि जीवे अत्थि सो सामाइकं भण्णतित्ति १ समस्स वा रागदोसमाध्यस्थ्यस्य रागदोसपरिणाए आयो तंमि अत्थित्ति सो सामाइकं भण्णति२ सम्मस्स वा णाणादितिगस्स आयो तम्मि अत्थित्ति सो सामाइकं भण्णति३, यावत् तं पुण सावज्जजोग-परिण्णालक्खणं पच्चक्खाणं 'आवाए सव्वदव्वाणं' आवातो-विसयो प्राप्तिः गोचरा एगट्ठा, कथं ?, जेण संमत्तं सव्वदव्वेसुवि, जदि एगमवि ण सद्दहति तो मिच्छत्तं,सुतचारित्ताइं सव्वदव्वेसु,नो सव्वपज्जवेसु सुतं, जदि सव्वपज्जवेसु तो सव्वण्णू होज्जा, चरित्ते पुण एवं सव्वदव्वेसु, न सव्वपज्जवेसु, जेण—

पढमंमि सव्वजीवा० ॥ ८-१०३ ॥ ७९१ ॥ पढमे महव्वते सव्वजीवा पच्चक्खाणविसतो, जतो भणितं-दव्वतो णं पाणातिपाते छसु जीवनिकाएसु, बीए मुसावादवेरमणे चरमे य परिग्गहवेरमणे सव्वदव्वाइं, भणितं च- दव्वतो णं मुसावादे सव्वदव्वेसु, परिग्गहे-सचित्ताचित्तमीसेसु सव्वदव्वेसु, जेण अविरती परिग्गहोत्ति, सेसा महव्वता-अदिण्णादाणवेरमणं मेहुणवेरमणं, चखलु-सद्दा वयमवि रातीभोयणवेरमणं च,एते तेसिं चेव सव्वदव्वाणं एगदेसेणं, जेण दव्वतो णं अदिण्णादाणे गहणधारणिज्जेसु दव्वेसु, दव्वतो णं मेहुणे रूवेसु वा रूवसहगतेसु वा दव्वेसु, दव्वतो णं रातीभोयणे असणे वा ४, जया एताणि पंचवि रातीभोयणवेरमणछट्ठाणि हवंति तदा पडिपुण्णं भवति चारित्तं, सव्वपज्जवेसु पुण न भवति चरित्तं, जतो सव्वतो पाणातिपाताओ सव्वहा वेरमणं नत्थि, किं तु सावज्जजोगप्पगारेण वा, एवं मुसावादवेरमणादिसुवि भावेतव्वं, उत्तं च-बितियचरिमव्वताइं(सव्वदव्वाइं)इति चारित्तमिह सव्वदव्वेसु, ण तु सव्वपज्जवेसुं, सव्वाणुवयोगभावतो चारित्ताचारित्तसामायियं नो सव्वदव्वेसु, नो सव्वपज्जवेसु, एवं तं खलु

॥४३१॥

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

श्री
आवश्यक
चूर्णौ
उपोद्घात
निर्युक्तौ

॥४३२॥

नयैः
सामायिक
विचारः

पच्चक्खाणं आवाए सव्वदव्वदव्वाणंति, एतस्स पुण विसयनिरूवणस्स उवरि केसुत्ति दारं सत्थाणं, जेण तत्थ भण्णिहिति- 'सव्वगतं सम्मत्तं सुते चरित्ते ण पज्जवा सव्वे । देसविरतिं पडुच्चा दोण्हवि पडिसेहणं कुज्जा ॥ १ ॥' इह पुण पच्चक्खाणप्पसंगेणागतंति तातो चेव दारातो एतं विसयनिरूवणं कतंति ॥ इदाणिं विसेसणविसेस्सभावं पडुच्च आता जथा सामाइयं भवति तथा नयतो विभासिज्जति—

सावज्जजोगविरतो० । ६--१०२ ॥ १४९ भा०। एत्थ पच्छाणुपुव्वी–संगहस्स यां तां गतिं गत्वा आता सामायिकं, अतो सामाइकस्स अड्डविशेषणानां विशेष्ये संग्रहात्, न त्वनात्मा इति, ताहे ववहारो भणति- णो एवं ववहरितुं सक्का, जेण जदि आता चेव सामाइयं तो यो यो आता सो सो सामाइकमिति पत्तं, तं मा भणह- आता सामाइकं, भण-जतमाणो आता सामाइकं, जतमाणो नाम प्रयत्नपर इति, ताहे उज्जुसुतो भणति--जदि एवं तो तामलिमादिणोऽवि जतमाणा, तेऽवि सामायिकं पत्ता, तं मा एवं भण, भण-उवउत्ते जतमाणो आता सामायिकं, उवउत्तो नाम ज्ञेयप्रत्याख्येयपरिज्ञापर इत्यर्थः, ताहे सद्दो भणति-जदि एवं तो अविरतसम्मदिट्ठिदेसविरतादयोऽवि एवंप्रायास्तेवि सामाइकं पत्ता, तं मा एवं भण, भण-छसु संजतो उवउत्तो जयमाणो आया सामाइयं, छसु संजतो नाम छसु जीवनिकाएसु संघट्टणपरितावणादिविरओ इति, ताहे समभिरूढो भणति--जदि एवं तो पमत्तसंजतादयोऽवि एवंपाया तेऽवि सामाइयं पत्ता, तं मा एवं भण, भणसु-तिगुत्तो छसु संजतो इच्चादि, तिगुत्तो नाम मणवयणकाएहिं गुत्तो, अकुसलमणादिनिरोधि कुसलमणादिउदीरगो इत्यर्थः, तज्जातीयग्रहणात्पंचसमिओ य इति, ताहे एवंभूतो भणति—जदि एवं तो अप्पमत्तसंजतादओऽवि सामाइगं पत्ता, तं मा एवं भण, भण- सावज्जजोगविरतो इच्चादि, तत्थ सावज्जजो-

॥४३२॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥४३३॥

नयैः सामायिक-विचारः

गविरतो नाम परिण्णातसावज्जवावारो, परिण्णातो दुविहाए परिण्णाए- ज्ञपरिण्णाए पच्चक्खाणपरिण्णाए य सावज्जो वावारो जेण सो परिण्णायसावज्जवावारो, सावज्जो नाम कम्मबंधो-अवज्जं सह तेण जो सो सावज्जो, जोगोत्ति वा वावारोत्ति वा वीरियंति वा सामत्थंति वा एगट्ठा इति, तदेवंभूतस्यायमभिप्रायो-यदुत यदैवैतत्सर्वविशेषणविशिष्ट आत्मा तदैव सामाइकं भवति, नान्यदेति, नेगमस्स पुण सुद्धासुद्धभेदत्ता समस्तैतद्विशेषणविशिष्ट अण्णतरएगातीसिसणाविसिट्ठो वा दुगतिगचतुष्कपंचगसंजोगविगप्पविसेसणविसिट्ठो वा आता सामाइयं भवतित्ति । अण्णे पुण भणंति-संगहस्स तहेव आता सामाइयं करेंतो, आता सामाइयस्स अट्ठेत्ति, ववहारो तहेव भणति- सावज्जजोगाविरतो आता सामायियंति, उज्जुसुतो पुण संजमं चेव सामाइयं पुच्छति, एवं सम्मत्तसुत्ताइंपि सामाइयं पावंति, तो भणति- परिण्णातसावज्जजोगोऽवि जदा पंचसमितो तिगुत्तो तदा सामाइयंति, सद्दो पुण देसाविरातिसामाइयं णेच्छति, एवं च देसविरतोऽवि सामायियं पावति, जतो सोऽवि सामाइयं करेंतो सावज्जजोगाविरतो तिगुत्तो य भवति, तो एवमवि जदा छसु संजमो तदा सामाइयंति, समभिरूढो पुण पमत्तसंजतो जाव सुहुमसरागो ताव सामाइयं नेच्छति, एवं च एतेऽवि सामायियं पावेंति, तो एवमवि जदा उवउत्तो तदा सामायियंति, एवंभूतश्च उपशांतरागादय एव तद्वंतो अतस्त एव सामायिकमिति, एवंभूतो पुण अकेवलीसामायिकयं नेच्छति, केवलीवि सव्वो सामाइयंति णेच्छति, ते एवमवि जदा जतमाणो तदा सामाइयंति भणति, नान्यदा । एतद्विशेषणविशिष्टश्च समुद्घातादिगतः केवली अजोगीकेवली वा तावतो, अतः स एव सामायिकमित्येवंभूताभिप्राय इति ॥ नेगमस्स पुण तहेव सव्वविगप्पेहिं आता सामाइयं, अन्यतरविशेषणसद्भावेऽपि विशेषणार्थाव्यभिचारात् इति भावनीयं एत्थ ।

॥४३३॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥४२४॥

इदाणिं दव्वगुणनिरूवणं पडुच्च सामाइयं नयतश्चिन्त्यते-णणु पुव्वं पुच्छितं-किं सामाइयं दव्वं गुणो उभयमिच्चादि, तत्थ य उत्तरं भणितं- आता खलु सामाइयमिच्चादि, तत्किं पुनरेवं चिन्त्यते?, भण्णति, तत्र स्वरूपतः सावज्जजोगप्रत्याख्यानपरिणामपरिणत आत्मा सामायिकमित्याभिहितं, एवं च द्रव्यगुणसमुदयः सामाइकमित्युक्तं भवति, अत्र तु नयतश्चिन्त्यते, यतो केइ नया दव्वं सामायियंति पडिवन्ना, केइ पुण गुणोत्ति, जदि एवं तो साह—को नयो दव्वं गुणं वा सामाइयं इच्छतित्ति ?, भण्णति—

जीवो गुणपडिवण्णो० (८-१०४ ॥ ७९२ ॥ तत्थ दोहिं नयेहिं मग्गिज्जति- दव्वाट्ठितेण पज्जवाट्ठितेण य, जतो ते सत्त एतेसु चेव समोतरंति, आदितिगं णयाणं दव्वाट्ठितो, उवरिल्ला चत्तारि पज्जवाट्ठितो, तत्थ दव्वाट्ठितस्स जीवो गुणपाडिवण्णो सामाइयं, को गुणो?, णाणादितिगस्स आयो, तं पडिवण्णो तेण पडिवण्णो, जीवस्तु द्रव्यमतो द्रव्यमेव सामायिकं, यत्तु गुणप्रतिपन्न इत्युक्तं तद्विशेषणभावेन गुणीभूतमिति, जीव एव सामायिकं, वाचकलावकपावकवदिति। पज्जवनयाट्ठितस्स पुण अयमभिप्रायो-यदुत जं चेव गुणं पडिवण्णो आता सामाइयंति भणितो सो चेव गुणो सामायियं, समाय एव सामायिकमितिकृत्वा, जं पुण 'आता खलु सामायियं' ति भणितं तं जीवस्स एस गुणोत्ति, अयमस्याभिप्रायः-यो एस णाणादितिगस्स आयो गुणो एस जीवस्सात्ति उवयारतो आता सामायियं भण्णति, यथा शुक्लः पटः पीता हरिद्रा कृष्णो भ्रमरः, तत्त्वतस्तु स एव गुणः सामायिकमिति पज्जवज्जिट्ठित एवाह, इतश्चैतदंगीकर्तव्यं, यतः उप्पज्जंति वियंति य परिणमंति य गुणा न दव्वाइंति ७९३। अयमभिप्रायो- यदुत सामायिकं उप्पज्जति विगच्छति परिणमति य, परिणमति नाम संखातीताइं तारतम्माइं अणुभवति, एसो य सभावो गुणाणं, जतो उप्पज्जंति वियंति य परिणमंति य गुणा, ण दव्वाइं, जेण दव्वं निच्चमवठितस्सभावं, उक्तं च- "जीवे दव्वट्ठताए

सामायिकस्य द्रव्यत्वादिविचारः ॥४२४॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥४३५॥

सामायिकस्य द्रव्यत्वादि-विचारः

सासए, पज्जवट्ठताए असासए” अतो गुण एव सामायियमिति । एवं पज्जवट्ठितेण भणिते दव्वट्ठित आह-इत्थं चैतदङ्गीकर्तव्यं, यदुत द्रव्यमेव सामायिकं, जतो—दव्वप्पभवा य गुणा, ण गुणप्पभवाइं दव्वाइं ॥ ८-१०५।७९३ ॥ इति, अयमभिप्रायो-यदुत यो भवतो गुणो सामायियत्तणेणाभिमतो सो जीवप्पभवो, न तु तप्पभवो जीवः, यतो-दव्वप्पभवा गुणा, ण गुणप्पभवाइं दव्वाइं, दव्वे पभवो जेसिं ते दव्वप्पभवा, जतो य जीवे चेव उप्पायविगमपरिणामप्पगारेहिं तस्सप्पभवो अतो तग्गुणपडिवण्णो जीव एव उप्पज्जति विगच्छति परिणमति य, सामाइयं च भण्णति, जेथा- तंतुप्पभवो आताणविताणादिभावो, न तु तप्पभवा तंतवः, आताणविताणादिं भावं पडिवण्णा य तंतव एव उप्पज्जंति वयंति य परिणमंति य, पडो य भण्णाति, जथा वा पोग्गलदव्वेसु चेव उप्पादविगमपरिणामप्पगारेहिं पुढवीभावस्स पभवो अतो तब्भावपडिवण्णा पोग्गला चेव उप्पज्जंति विगच्छंति परिणमंति य, पुढवीदव्वं भण्णति । अतो दव्वमेव सामाइयामिति स्थितं । एवं भणितं नयतो सामाइयं॥ एवं च नयविगप्पजायपरूवणं सोतूण वाउलितो सीसो आह-भगवं ! किमेत्थ तत्तं ?, अतः सिद्धान्ततो भणति- जं जं जे जे भावा० । ८—१०६ । ७९४ ॥ तत्थ गुरू भणति- सोम्ममुह ! जं जिणो जाणति तं तत्तं, किं पुण जिणो जाणति ?, भण्णति—जं जं किंचि वत्थुं, जे जे केइ भावे, तं तं वत्थुं ते ते सव्वे भावे व परिणमति, सव्वं वत्थुं सव्वभावपरिणामि त्ति जं भणितं, तथाहि- “एको भावः सर्वभावस्वभावः, सर्वे भावाः सर्वभावस्वभावाः । एको भावस्तत्त्वतो येन दृष्टः,सर्वे भावास्तत्त्वतस्तेन दृष्टाः ॥ १ ॥ पयोगवीससात्ति केइ भावे पओगतो परिणमति केइ वीससा, तं परिणामि वत्थुं तहा सव्वभावपरिणामिप्पगारेण जाणाति, जं पुण अपज्जवतं तत्थ जाणणा णत्थि त्ति, तत्किमुक्तं भवति ?- सामाइयं सव्वनयाभिप्पाएहिं परिणमति, अतो जेण जेण णय-

॥४३५॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता...........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥४३६॥

सामायिक-भेदाः

भिप्पाएण परूविज्जति तेण तेण स्यात्, सव्वणयसमूहमतं जिणमयंति ॥ किन्ति दारं गतं ॥ इदाणिं कतिविहंति दारं—

सामाइयं च तिविहं० । ८—१०७ ॥ ७९५ ॥ तंजथा- सम्मत्तसामाइयंपि तिविहं- खइयं उवसमियं खओवसमियं, अहवा तिविहं-सम्मत्तसामाइयं चरित्तसामाइयं सुतसामाइयं, चसद्दा सत्थाणे भेदं इच्छंति, चरित्तसामाइयं दुविहं, तंजहा- अगारसामाइयं अणगारसामाइयं च, सुतसामाइयं तिविहं- सुत्तं अत्थो तदुभयं च, सम्मत्तसामाइयं- कारगं रोचगं दीवगं, कारगं जथा साधूणं, रोचगं सेणियादीणं, दीवगं अभवसिद्धियस्स, मिच्छदिट्ठिस्स वा भवसिद्धियस्स, अभवसिद्धियस्स कहं?, सो एक्कारस अंगाइं पढति न य सद्दहति, धम्मं च कहेति, एयं दीवगं, अहवा निसग्गसम्मदंसणं च अधिगमसम्मदंसणं च, निसर्गः स्वभावः परिणाम इत्यनर्थान्तरं, जं उवदेसमंतरेणवि गेण्हति तं निसग्गसम्मदंसणं, अधिगमसम्मदंसणं च जं जीवादिनवपयत्थे उवलभितूण गेण्हतित्ति । सामाइयस्स भेदनिरूवणं कतं, इदाणिं अज्झयणस्स भेदनिरूवणं कज्जति—

अज्झयणंपिय तिविहं ०।८-१०८।।७९६।। **सेसेसुवि अज्झयणेसु होति एसेव निज्जुत्ती**, अण्णेसुवि अज्झयणेसु भेदनिरूवणा एसा चेव भेदकहनिज्जुत्ती, सव्वत्थ अज्झयणभेदचिन्तायां सुत्तअत्थतदुभयभेदेण तिविहं अज्झयणंति भाणियव्वं जं भणितं, अण्णे भणंति-सुतसामाइयस्स भेदो दरिसितो पुव्वद्धेण, उत्तरद्धेण पुण सामण्णा उवघातनिज्जुत्ती सव्वअज्झयणेसुत्ति अतिदेसो कतो, सेसेसुवि अज्झयणेसु होति एसेव निज्जुत्ती, जथा सामाइयं उद्देसादीहिं दारेहिं मग्गितं एवं चतुव्वीसत्थयादीणिवि उद्देसादीहिं मग्गितव्वाणि, मज्झे पुण अतिदेसो तुलादंडणातेण मज्झग्गहणे आद्यंतयोर्ग्रहणमिति । अण्णे पुण इमा गाधा उवरिं चेव निरुत्तदारअवसाणे वक्खाणंति ॥ इदाणिं कस्सत्ति सामाइयं दारं, तत्थ गाथा— ॥४३६॥

सामायिकस्य भेदानां वर्णनं क्रियते

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥४३७॥

जस्स सामाणिओ अप्पा ०।८-१०९।७९७॥ संजमो सत्तरसविधो, नियमो इंदियनियमो नोइंदियनियमो, तवो सब्भिंतरबाहिरो, एत्थ सामाणिओ, ण पत्थो, संनिहित इत्यर्थः, तस्स सामाइयं इति केवलिभासितं, इतिशब्द समाप्तर्थे, एतेसु तिसु संपुण्णं सामाइयं भवतित्ति ॥ अधवा-जो समो ०।८-११०।७९८। देससामाइयं पुण सावगस्स भवतित्ति, सामिं पडुच्च जस्स सामाइयं एतं निरूवितं । इदाणिं अत्थसंबधं पडुच्च निरूविज्जति, कस्स अत्थस्स साहगं सामाइयंति?, भण्णति—

सामायिकस्य स्वामी

सावज्जजोगप्परिवज्जण० ॥ ८-१११ । ७९९ ॥ सावज्जजोगपरिवज्जणनिमित्तं सामाइयं, किं अविसेसेण सामाइयं सावज्जजोगपरिवज्जणनिमित्तं ?, उच्यते, केवलियं पसत्थं, केवलियं नाम संपुण्णं, सव्वसामाइयमित्यर्थः, तं पसत्थयं सावज्जजोगपरिवज्जणे अधिगमुवगारित्ति जं भणितं, कस्स सगासाओ पसत्थं ?, गिहत्थधम्मा, देससामायिकादित्यर्थः, एवं परमं णच्चा कुज्जा बुहो आतहितं परत्थं, परो- मोक्खो तदत्थं, एत्थ सीसो आह-जदि केवलियं सामाइयं एवंभूतं तो वरं एयं चेव कीरतु, किं देससामाइयस्स बहुसो करणेण ?, भण्णति- को वा किमाह ?, एवं ताव लद्धं चेव, किंतु जदा एतं कातुमसत्तो तदा देससामाइयंपि ताव बहुसो कुज्जा, यस्मादाह—

सामाइयंमि तु कते० ॥ ८-११३ । ८०१ ॥ किं च-जीवो पमादबहुलो० ॥८-११४।८०२॥ बहुसो-अणेगसो, बहुविहेसु अत्थेसु रागद्दोसादीहिं अण्णमण्णं भावं णिज्जति तेण पमत्तो, सामाइयं करेन्तो अप्पमत्तो भवतित्ति । अहवा सामण्णेण कस्स सामाइयं भवतित्ति?, भण्णति- मज्झत्थस्स, जतिभागगता मत्ता मज्झत्थस्स ततिभागगता सामाइयस्स, को य मज्झत्थो?— ॥४३७॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता...........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥४३८॥

सामायिक-प्राप्तौ क्षेत्र-दिकालादि

जो नवि वट्टति रागे० ॥ ८-११५ । ८०३ ॥ कस्सत्ति दारं गतं । इदाणिं कहिन्ति दारं, कहिं तं पुण सामाइयं होज्जा ?, तत्थ इमे दारा–

खेत्तदिस० ॥ ८-११६ । ८०४-५-६ ॥ याव चक्कमंते य, किं कहितं?- एतेसु पदेसु कहिं पडिवज्जमाणओ पुव्वपडिवण्णओ वा ?, तत्थ ताव खेत्तं तिविहं- उड्ढलोगो अहोलोगो तिरियलोगो, अहोलोगे संमत्तसुयाणं पडिवत्ती होज्जा, पुव्वपडिवण्णओवि, दो सामाइयाणि सेसाणि नत्थि, एवं उड्ढलोगेऽवि, मेरु तिरियलोगोत्तिकाउं, तिरियलोए चउण्हवि पुव्वपडिवण्णओ पडिवज्जमाणओवि अत्थि । दिसत्ति दारं, सा सत्तविधा,नामट्ठवणाओ गताओ, दव्वदिसा जहण्णेण तेरसपदेसियं दव्वं, तं जहण्णयं दसदिसागं, तेरसपदेसियंपि जहण्णयं दव्वं भवति, दसपदेसियंपि, तत्थ पुण तेरसपदेसिए परिमंडलं संठाणं भवति, दसपदेसिए दिसाओ भवंति, रुयओ य सो भण्णति, उक्कोसेणं अणंतपदेसियं असंखेज्जपदेसोगाढं, एस दव्वदिसा । खेत्तदिसा इंदग्गेयी जहा भगवतीए जाव तमा, तावखेत्तदिसा जतो सूरो उट्ठेति सा पुव्वा, पदाहिणओ सेसियाओ, सव्वेसिं च भरहेरवतपुव्वविदेहअवरविदेहगाणं मणूसाणं मंदरो उत्तरओ, लवणो दाहिणओ, एसा तावखेत्तदिसा । पण्णवगदिसा जतोहुंतो पण्णवओ निव्वेट्ठो पण्णवेति सा तस्स पुव्वा, सेसिया पदाहिणओ । वासस्सवि सच्चेव । भावदिसा(अट्ठारसहा)तंजहा-पुढविकाइया आउ०तेउ०वाउ०अग्गबीया मूलबीया पोरबीया खंधबीया बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पंचेंदिया-तिरिक्खा नेरइया देवा संमुच्छिममणुया कम्मभूमगा अकम्मभूमगा अंतरदीवगा, एसा अट्ठारसविधा भावदिसा, जतो संसारी एताहिं दिस्सातित्ति । एत्थ पुण चउहिं दिसाहिं अहिगारो-खेत्तदिसतावखेत्तपण्णवगभावदिसासु, नामादी तिण्णि परूवणनिमित्तं, न एत्थ कोइ पडिवज्जति, खेत्तदिसासु पुव्वादियासु

॥४३८॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥४३९॥

सामायिक-प्राप्तौ क्षेत्र-दिक्कालादि

महादिसासु पडिवज्जमाणएवि पुव्वपडिवण्णएवि चत्तारिवि सामाइया, अण्णदिसासु चउण्हवि णावि पुव्वपडिवण्णओ नावि पडिवज्जमाणओ, जतो तासु सुद्धासु जीवो नवगाहति, फुसणा पुण ताण भवेज्जा, तावखेत्तपण्णवगदिसासु पुण अट्ठसुवि पुव्व-पडिवण्णएवि पडिवज्जमाणएवि चउण्हवि सामाइयाण होज्जा , उड्डअहदिसिदुगे संमत्तसुताणं एवं चेव, देसविरतिसव्वविरतीण पुण पुव्वपडिवण्णओ सिया, नो पडिवज्जमाणओ, भावदिसाए एगेंदिएसु चउण्हवि सामाइयाण न पडिवज्जमाणओ, ण वा पुव्व-पडिवण्णओ, विगलिंदिएसु दोण्ह पुव्वपडिवण्णओ होज्जा, नेतरः, पंचिंदियतिरिएसु सव्वविरतिवज्जा तिण्णि सामाइया, पुव्व-पडिवण्णओ नियमा, सिय पडिवज्जमाणओवि, भयणिज्जा,सिय नारगदेवअकम्मभूमजअंतरदीवनरेसु संमत्तसुताणं पुव्वपडिवण्णओ अत्थि, पडिवज्जमाणओ सिय, कम्मभूमजेसु चत्तारिवि सामाइया पुव्वपडिवण्णओ पडिवज्जमाणओवि भणेज्जा, संमुच्छिमन-रेसु नत्थि एक्कंपि ॥

कालेत्ति दारं—कालो तिविधो- ओसप्पिणिकालो उस्सप्पिणीकालो णोओसप्पिणीउस्सप्पिणीकालो य, तत्थ भरहेरवएसु ओसप्पिणीकालो उस्सपिणीकालो य एत्तियं छव्विहो,तंजथा-ओसप्पिणीए सुसमसुसमा समा चउहिं सागरोवमकोडाकोडीहिं पवाहओ गच्छति पढमा१बीया सुसमा तीहिं गच्छति२तातिया सुसमादुस्समा दोहिं गच्छति३चउत्था दुस्समसुसमा सागरोवमकोडाकोडीए बातालीसवाससहस्सूणाए गच्छति४पंचमा दूसमा एक्कवीसाए वाससहस्सेहिं गच्छति ५ दूसमदूसमावि एगवीसाए चेव वाससहस्सेहिं गच्छति ६, एवं चेव पच्छाणुपुव्वीए उस्सप्पिणीएवि । एवं वीसाए सागरोवमकोडाकोडीहिं दोवि गच्छंति, नोओस-प्पिणीउस्सप्पिणीकालो पुण चउव्विहो, तंजथा-सुसमसुसमाआदिपलिभागो सुसमादिपलिभागो सुसमदूसमाआदिपलिभागो दूसमसु- ॥४३९॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥४४०॥

सामायिक-प्राप्तौ क्षेत्र-दिकालादि

समाआदिपलिभागो, तत्थ पढमो देवकुरुउत्तरकुरासु, बीओ हरिवासरम्मगेसु, तातिओ हेमवतएरण्णवएसु, चउत्थो विदेहेसुत्ति । तत्थ ओसप्पिणिउस्साप्पिणि छच्चेसु अरासु नोओसप्पिणिउस्साप्पिणीए य चउव्विधाएवि एतेसु संमत्तसुताइं पडिवज्जेज्जा, पुव्वपडिवण्णएवि अत्थि, त पुण सुसमसुसमादिसु पुव्वकोडिदेसूणायुसेसा पडिवज्जंति, साहरणं पुण पडुच्च अण्णतरंपि होज्जा, चरित्तं चरित्ताचरित्तं च ओसप्पिणिं पडुच्च ततियचउत्थपंचमासु समासु पडिवज्जमाणओवि पुव्वपडिवण्णओवि, उस्सप्पिणिं पडुच्च ततियचउत्थासु समासु दोवि भणेज्जा, नोओसप्पिणिउस्सप्पिणिं पडुच्च चउत्थे पलिभागे पुव्वपडिवण्णओ पडिवज्जमाणओवि दोण्हवि भणेज्जा, अण्णे पुण भणंति-णोओसप्पिणिउस्सप्पिणिकालो एगविहो चेव चउत्थसमापलिभागो होज्जा, नो सेसासु, तंमि काले चउव्विहंपि सामाइयंपि पुव्वपडिवण्णओ पडिवज्जमाणओवि भणेज्जा, जं चरित्ताचरित्तसामाइयं सुतसामाइयं सम्मत्तसामाइयं च एवं तितयंपि बाहिरएसुवि दीवसमुद्देसु जत्थवि नत्थि सुसमाइओ कालो तत्थवि भणेज्जा ॥

गतित्ति दारं-सा चतुव्विधा, नेरइयदेवेसु संमत्तसुताणं पडिवज्जमाणोवि पुव्वपडिवण्णओवि, तिरिएसु तिण्हं दोण्णवि, मणुएसु चउण्हं दोण्णवि, भवसिद्धिओ चउण्हं पडिवज्जमाणओ वा पुव्वपडिवण्णओ वा होज्जा, अभविए एगमवि नत्थि। सण्णी चत्तारिवि दोहिवि पगारेहिं, असण्णी दोण्हं पुव्वपडिवण्णओ होज्जा संमसुताणं, नोसण्णिणोअसण्णि चरित्ताचरित्तसुतवज्जिताणं दोण्हं पुव्वपडिवण्णओ अत्थि, पडिवज्जमाणओ नत्थि । ऊसासओ चउण्हवि पुव्वपडिवण्णओ पडिवज्जमाणओ वा भणेज्जा, एवं नीसासओवि, नोऊसासगनीसासगो आणापाणुपज्जत्तिअपज्जत्तगो सम्मत्तसुताणं पुव्वपडिवण्णओ होज्जा, सेसं नत्थि सव्वं, सेलेसिं गतो पुण संमत्तचरित्ताणं पुव्वपडिवण्णओ होज्जा,सेसं नत्थि। दिट्ठी तिविहा-सम्मदिट्ठी मिच्छदिट्ठी सम्ममिच्छदिट्ठी,एत्थ दो ॥४४०॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

नया- ववहारो निच्छओ य, ववहारस्स मिच्छादिट्ठी होंतओ पडिवज्जति, नेच्छइयस्स सम्मद्दिट्ठिरेव, जेण "नेरइए भंते ! नेरइएसु उववज्जति अनेरइए?०'आलावओ,सम्मत्तसुता एवं पुव्वपडिवण्णओ, एतेसिं संमदिट्ठी नो मिच्छादिट्ठी, दोवि सामाइया, केती पुण सुतसामाइतं मिच्छादिट्ठीवि पुव्वपडिवण्णओ भणंति,दो पुण सामाइया-चरित्तं चरित्ताचरित्तं च पुव्वपडिवण्णओ वा पडिवज्जमाणओ वा सम्मदिट्ठी,नो मिच्छादिट्ठी,सम्मत्तसुतेसुवि णत्थि,अण्णे पुण भणंति-चरित्तं चरित्ताचरित्तं पुव्वपडिवण्णओ होज्जा,नो पडिवज्जमाणओ। आहारओ चउहिवि पुव्वपडिवण्णओ पडिवज्जमाणओ वा भणेज्जा, अणाहारओ चरित्ताचरित्तवज्जेसु पुव्वपडिवण्णओ होज्जा। पज्जत्तओ जथा आहारओ, अपज्जत्तओ दोण्णि पुव्वपडिवण्णओ होज्जा। किं सुत्तो पडिवज्जति ? जागरो पडिवज्जति ?, सुत्तो दुविहो-निद्दासुत्तो य भावसुत्तो य, भावसुत्तो अण्णाणी, जागरो दुविहो- निद्दाजागरो सम्मदिट्ठी, निद्दासुत्तो चउहिवि पुव्वपडिवण्णओ अत्थि, पडिवज्जमाणओ नत्थि एगमवि, भावसुत्तो पडिवज्जमाणओ पुव्वपडिवण्णओ वा नत्थि एगमवि, नयमतेण वा सिय दोण्हं पडिवज्जमाणओ, निद्दाजागरो चउण्हवि पुव्वपडिवण्णओ पडिवज्जमाणओ होज्जा, भावजागरो पुव्वपडिवण्णओ सुतसंमेसु अत्थि, पडिवज्जमाणओ नत्थि, नयमतेण वा सिया, चरित्तं चरित्ताचरित्तं च पुव्वपडिवण्णओ पडिवज्जमाणगोवि भणेज्जा। जम्मं तिविहं-अंडजं पोतजं जरायुजं, अंडजा चरित्तवज्जाइं तिण्णि पुव्वपडिवण्णया पडिवज्जमाणगा य भणेज्जा, एवं पोतजावि, जरायुजा चउसुवि पुव्वपडिवण्णगा पडिवज्जमाणगा वा भणेज्जा, उववाइयं सम्मसुताण पुव्व० पडिवज्जमाणगा य भणेज्जा। ठितिदारं उक्कोसं गंठिओ जस्स उक्कोसा ठिती कम्मपगडीणं आउयवज्जाणं, उक्कोसट्ठिती पुव्वपडिवण्णओ वा पडिवज्जमाणओ वा चत्तारि नत्थि, आउयस्स देवेहिं परं संमत्तसुताणि पुव्वपडियण्णओ होज्जा,पडिवज्जमाणओ नत्थि, अज- ॥४४१॥

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥४४२॥

सामायिक-प्रापकाः

हण्णुक्कोसट्ठितीओ चउहिंवि पडिवज्जमाणओ पुव्वपडिवण्णओ वा होज्जा, जहण्णकम्मट्ठितिगा पुव्वपडिवण्णगा चरित्ताचरित्तवज्जेसु तिसु होज्जा, पडिवज्जमाणगा चतुसुवि न होज्जा ॥ पुरिसवदेगा चतुहिंवि पुव्वपडिवज्जमाणगा वा होज्जा, एवं इत्थिनपुंसा अवेदगा चरित्ताचरित्तवज्जेसुवि होत्था पुव्वपडिवण्णगा,जेण गिहत्थी उवसमगादी नत्थि, पडिवज्जमाणगा चउहिंवि णत्थि। संणत्ति दारं- चउसुवि सण्णासु उवउत्तो चउण्हंपि एगतरंपि न पडिवज्जति , पुव्वपडिवण्णगा चउण्हंपि होज्जा , णोसण्णोवउत्ता पडिवज्जमाणगावि होत्था चत्तारिवि,पुव्वपडिवण्णगावि, अण्णे भणंति-नोसण्णोवउत्ता चरित्ताचरित्तवज्जेसु तिसुवि पुव्वपडिवण्णगा होज्जा, नो पडिवज्जमाणगा, अण्णे पुण भणंति-णोसन्नोवउत्ता संमचरित्ताणं पुव्वपडिवण्णगा अत्थि, सेसं नत्थि। कसायेत्ति दारं- सकसायी चउण्हवि पुव्व०, पडिवज्जमाणओवि होज्जा, अकसायी चरित्ताचरित्तवज्जाणं तिण्हं पुव्वपडिवन्नओ होज्जा, पडिवज्जमाणओ नत्थि, अवसेसो पुण जहा हेट्ठा 'पढमेल्लुयाणं उदये' (१०८) गाथाहिं भणितो। अहवा कोहकसायी पडिवज्जति पुव्वपडिवण्णओवि चउहिंवि, एवं माणी०। आउत्ति दारं-संखेज्जवासाऊ किंचि दुविहोवि भणेज्जा, असंखेज्जवासाउ दोसु संमसुतेसु दुविहोवि भणेज्जा। णाणित्ति दारं-किं णाणी पडिवज्जति अण्णाणी?, एत्थ दो णया जथा दिट्ठी, एवं ता ओहेणं। इदाणिं विभागेण-पंचण्हं णाणाणं भाणितव्वं, आभिणिबोहियसुतणाणी एते पडिवज्जमाणया संमत्तसामाइयं सुत्तसामाइयं च जुगवं पडिवज्जंति, पुव्वपडिवण्णओ नत्थि, अण्णे भणंति- पुव्वपडिवण्णओवि अत्थि, चरित्तं चरित्ताचरित्तं च पुव्वपडिवण्णओ पडिवज्जमाणओवि भणेज्जा,ओहिण्णाणी संमत्तसुत्तसामाइए पडिवज्जमाणओ नत्थि, पुव्वपडिवण्णओ होज्जा, चरित्ताचरित्तं पडिवज्जमाणओ ओहिण्णाणी नत्थि,पुव्वपडिवण्णओ होज्जा, चरित्तं पुव्वपडिवण्णओ वा पडिवज्जमाणओ वा होज्जा, अण्णे

॥४४२॥

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

मणंति-चरित्ताचरित्तवज्जाणं तिण्हं पुव्वपडिवण्णओ वा पडिवज्जमाणओ वा होज्जा, चरित्ताचरित्तं पडिवज्जमाणओ ओहिनाणी नत्थि, पुव्वपडिवण्णओ होज्जा। मणपज्जवणाणी संमं सुतं चरित्तं च तिण्णि पुव्वपडिवण्णओ होज्जा, पडिवज्जमाणओ (वि) चरित्तसामाइयं मणपज्जवणाणं च समयं चेव होज्जा, जथा-सामिणो, सम्मत्तसुते णत्थि पडिवज्जमाणओ, चरित्ताचरित्तं पुव्वपडिवण्णओ वा पडिवज्जमाणओ वा णत्थि। केवलनाणी चरित्ते पुव्वपडिवण्णओ होज्जा, सम्मत्ते य पडिवज्जमाणओ नत्थि,सेसेसु दोसुवि नत्थि दुविधोवि। सजोगी चतुहिंवि दुविहोवि होज्जा, अजोगी जथा केवलणाणी, मणवइकाया जथासंभवं विभासेज्जा। सागारोउत्तो चतुहिंवि दुविहोवि होज्जा, अणागारोवउत्तो चतुहिंवि पुव्वपडिवण्णओ होज्जा, पडिवज्जमाणओ नत्थि, जेण सव्वाओ लद्धीओ सागारोवयोगोवउत्तस्स भवंति, नो अणागारोवउत्तस्स। ओरालियसरीरी चउहिंवि दुविहोवि होज्जा, वेउव्विओ य सरीरी सम्मत्तसुते पडिवज्जमाणओ होज्जा, सेसाण णत्थि, पुव्वपडिवण्णओ पुण चउसुवि होज्जा, आहारगसरीरी सम्मत्तसुतचरित्ते पुव्वपडिवण्णओ होज्जा, नो पडिवज्जमाणओ, चरित्ताचरित्तं दोसुवि णत्थि, तेयग-कंमगाणि तदंतग्गताणि चेव कृत्वा नोच्यन्ते, अथोच्यन्ते ततः सम्मत्तसुताणं पुव्वपडिवण्णओ होज्जा, सेसं नत्थि। संठाणे छव्विहे संघयणे य छव्विहे पुव्वपडिवण्णओवि पडिवज्जमाणओवि चत्तारिवि सामाइया भणेज्जा। माणत्तिदारं, माणं नाम सरीरोगाहणा, किं जहण्णोगाहणओ॰ पडिवज्जति उक्कोसोगाहणओ॰अजहण्णुक्कोसोगाहणओ पडिवज्जति?, नेरइयदेवा जहण्णोगाहणा ण किंचि पडिवज्जंति, पुव्वपडिवण्णया संमत्तसुतेसु होज्जा, सेसा णत्थि, उक्कोसोगाहणा पुव्वपडिवण्णगा पडिवज्जमाणगावि संमत्तसुतेसु होज्जा, एवं अजहण्णुक्कोसोगाहणावि, तिरिक्खजोणिया जहण्णोगाहणगा ण किंचि पडिवज्जंति, पुव्वप-

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक-चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥४४४॥

सामायिक-प्रापकाः

डिवण्णगावि णत्थि, एगिंदिए पडुच्च, अह बेंदियादी तो अत्थि, उक्कोसोगाहणगो अजहण्णुक्कोसोगाहणगोवि तिसु सामाइएसु पडिवज्जमाणओ वा पुव्वपडिवण्णओ वा होज्जा, मणूसो जहण्णोगाहणओ पुव्वपडिवण्णओ वा पडिवज्जमाणओ वा चउण्हवि सामाइयाण एक्कंपि णत्थि, संमुच्छिमे पडुच्च, उक्कोसोगाहणओ दोसु दुविहोवि भणेज्जा संमत्तसुते, अजहण्णुक्कोसोगाहणओ चउसुवि दुविहोवि भणेज्जा । **लेसत्ति दारं**, दव्वलेसं पडुच्च छसु लेसासु चत्तारिवि सामाइया दुविहावि होज्जा, भावलेसं पडुच्च छहिं लेसाहिं चउहिं सामाइएहिं पुव्वपडिवण्णओ होज्जा, पडिवज्जमाणयं पडुच्च चत्तारिवि सुक्कलेसाए होज्जा, अहवा पुव्वपडिवण्णगं पडुच्च सव्वासुवि लेसासु होज्जा चतुरोवि, पडिवज्जमाणयं पडुच्च संमत्तसुताइं सव्वासु तेउपम्हसुक्कासु चरित्तं चरित्ताचरित्तं च पडिवज्जति, किं वड्ढमाणओ पडिवज्जति? पुच्छा, चत्तारिवि सामाइया वड्ढमाणओ पडिवज्जति, नो हीयमाणओ, पुव्वपडिवण्णओ दोहिवि परिणामेहिं होज्जा, अवट्ठियपरिणामओ न किंचि पडिवज्जति, पुव्वपडिवण्णओ होज्जा । किं साता-वेदओ पडिवज्जति? पुच्छा, दोण्णिवि पडिवज्जंति चत्तारिवि सामाइया, पुव्वपडिवण्णगावि चत्तारिवि सामाइए । किं समोहतो असंमोहतो पुच्छा, दोण्णिवि एते चत्तारिवि सामाइया पुव्वपडिवण्णा पडिवज्जमाणगा वा होज्जा ॥ समुद्घात एव कर्म समुद्-घातकर्म,किं? निव्वेढिन्तो पडिवज्जति संवेढन्तो पडिवज्जति? निव्वेढन्तो पडिवज्जति,णो संवेढन्तो,सा पुण निव्वेढणा चतुव्विधा-दव्वनिव्वेढणा खेत्तनि० कालनि० भावनिव्वेढणा, दव्वनिव्वेढणा नाम जे सम्मत्तसुतचरित्तावरणपोग्गला ठिता ते निव्वेढेमाणो पडिवज्जति, खेत्तनिव्वेढणा नाम जेसु खित्तपदेसेसु पुणो पुणो आजायन्तओ, जथा ‘अयं णं भंते ! जीवे एतंसि महालयंसि लोयंसि अयवाडगादिट्ठंतेणं इमीसे रतणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससतसहस्सेसु०’ एवमादितं निव्वेढमाणो पडिवज्जति, ॥४४४॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णी उपोद्घात निर्युक्तौ

॥४४५॥

सामायिक-प्रापका:

कालनिव्वेढणा अणंतो कालो जं चेव संमत्तं पडिवन्नं भवति ताहे निव्वेढितो भवति, भावनिव्वेढणा जं कोहादीणि निव्वेढेऊण पडिवज्जति,एवं चउव्विहंपि सामाइयं निव्वेढित्ता पडिवज्जति,नो अनिव्वेढित्ता, अहवा भावनिव्वेढणा उदइयादी, पुव्वपडिवण्णओ चत्तारिवि सामाइए निव्वेढंतओ वा होज्जा संवेढन्तओ वा॥उव्वट्टेत्ति दारं, नेरइएसु अणुव्वट्टो जीवो पुव्वपडिवण्णओ वा पडिवज्जमाणओ वा सम्मत्तसुतेसु दोसु होज्जा, उव्वट्टस्स दुगं तिगं वा चउक्कं वा होज्जा, तिरिएसु अणुव्वट्टमाणस्स तिण्णिवि दोहिवि पगारेहि होज्जा, उव्वट्टस्स दुविहं तिविहं चउव्विहं वा होज्जा दोसुवि पगारेसु, मणुएसु अणुव्वट्टस्स चउहिवि पुव्वपडिवण्णओ पडिवज्जमाणओ वा होज्जा.उव्वट्टस्स दुगं तिगं वा होज्जा, देवेसु अचुतस्स दुगं,चुतस्स दुगं तिगं चउक्कं वा दोहिवि पगारेहिं होज्जा, सव्वत्थ उव्वट्टमाणओ न किंचि पडिवज्जति, पुव्वपडिवण्णओ दुगो वा होज्जा। किं आसवओ पडिवज्जति नीसवओ पडिवज्जति आसवनीसवओ पडिवज्जाति ?, जं सामाइयं पडिवज्जति तस्स तदावरणिज्जाणं णिस्सवओ पडिवज्जति, जे त तदावरणिज्जा पोग्गला वट्टंति ते निस्सवमाणो, अण्णे पुण आसवन्ति चेव ते निस्सवमाणो पडिवज्जति, नो आसवओ पडिवज्जति,अण्णे ण पुण भणंति आसवओ वा निस्सवओ वा आसवनीसवओ वा पडिवज्जति, पुव्वपडिवण्णेऽओ आसवओ वा०तिण्णिवि होज्जा, अण्णे पुण भणंति--आसवओ न पडिवज्जति तदावरणाणं,अण्णेसिं आसवओवि पडिवज्जति,एवं णीसवमाणेऽवि भजितो, नीसव० तदावरणाणं णिस्सवणे, अण्णेसिं आसवणे, चतुसु दोसु तदावरणमीसएवि पुव्वपडिवण्णओ। किं अलंकारं आविद्धन्तो पडिवज्जति अलंकितो०पडिमुंचंतो पडि०उम्मुक्को पडि०, चतुसुवि चत्तारि सामाइए पडिवज्जेज्जा, पुव्वपडिवण्णयावि चत्तारिवि चउसुवि होज्जा। किं आसणत्थो पडि०, सयणत्थो पडि०, दोवि चत्तारिवि सामाइए पडिवज्जति, पुव्वपडिवण्णगावि चउसुवि

॥४४५॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥४४६॥

मनुष्य दुर्लभता दृष्टान्ताः

होज्जा । किं ठाणत्थो पडिवज्जति चक्कंमंतो पडिवज्जति, एमेव होति । कहिन्ति दारं गतं । इदाणिं केसुत्तिदारं, केसु य दव्वेसु पज्जवेसु वा सामाइयं ?–

सव्वगयं संमत्तं० । ८-१४६ । ८३० ॥ पढमंमि सव्वजीवा (७९१) एताओ किंतिदारे भणिताओ । केसुत्ति दारं गतं। इदाणिं कहन्ति दारं, चउव्विहस्स सामाइकस्स कहं लंभो भवति?, जदा इमाणि ठाणाणि लद्धाणि भवंति तदा चरित्तसामाइयं लब्भति, काणि पुण ताणि ठाणाणि ?—

माणुस्सखेत्त० । ८-१४७ । ८३१ ॥ तत्थ ताव माणुस्सं इमेहिं दसहिं दिट्ठंतेहिं जहा दुल्लभं तहा परूवेति—

चोल्लगपासग० । ८-१४८ । ८३२ ॥ चोल्लगत्ति, जहा बंभदत्तस्स एगो कप्पडिओ ओलग्गओ, बहुसु आवतीसु अवत्थासु य सव्वत्थ ससहाओ आसी, तेण पवन्नं रज्जं, तस्स बारससंवच्छरिओ अभिसेओ, सो कप्पडिओ तत्थ अल्लियावंपि न लभति, ततोऽणेण उवाओ चिंतितो-वाहणा बंधिऊणं धयो कतो, ततो धयवाहएहिं समं पहावितो, रण्णा दिण्णो(ट्ठो) ओतिण्णेणं उवग्गहितो, अण्णे उण भणंति-ताहे तेणं दारवाले सेवमाणेण बारसमे संवत्सरे राया दिट्ठो, ताहे सो राया तं दट्ठूणं संभंतो, इमो सो वराओ जो मम दुक्खसहाओ, एत्ताहे से करेमि वित्तिं, रण्णा भणितो-भण किं देमि वित्तिं?, सो भणति-देहि ममं चोल्लए घरे, जाव सव्वंमि भरहे जाहे निट्ठियं होज्जा ताहे पुणोवि तुब्भं घरे, राया भणति- किं ते एतेण ?, देसं देमि, सुहं छत्तच्छायाए मायंगेहि य(अच्छ),ताहे सो चिंतेति-किं ममं एद्दहेण अहट्टेण ?, एवं तेण भणिते ताहे तत्थेव पढमं जिमितो, रण्णा से जुगलगं दीणारो य ॥४४६॥

मनुष्य-भव प्राप्तेः दुर्लभत्वं "दश-द्रष्टांताः"

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

॥४४७॥

दिण्णो, एवं सो परिवाडीए सव्वेसु राउलेसु बत्तीसाए रायवरसहस्सेसु तेसिंपि जे भोइया तत्थ नगरे अणेगाओ कुलकोडीओ, सो नगरस्स चेव कया अंतं काहिति, ताहे पुणो गामे, ताहे पुणो भरहस्स, अवि सो वच्चेज्जा ण य माणुसत्तणाओ भट्ठो ।

पासयत्ति, चाणक्कस्स सुवण्णं नत्थि, ताहे केण उवादेण विढवेज्ज सुवण्णं, ताहे जंतपासगा कता, केई भणंति-वरदिण्णगा, एगो दक्खो पुरिसो सिक्खाविओ, दीणाराणं थालं भरियं, सो भणति-जइ ममं कोइ जिणति तो थालं गेण्हतु, अहं जति जिणामि तो एगं दीणारं जिणामि, तत्थ इच्छाए जंतं पाडति, एवं न तीरति जेतुं, जहा सो जिप्पति एवं माणुसलंभो अवि णाम विभासा ।

धण्णेत्ति जेत्तियाणि भरहे धण्णाणि ताणि सव्वाणि पिंडियाणि, तत्थ पत्थो सरिसवाणं छूढो, ताणि सव्वाणि अद्दूयालियाणि, तत्थ एगा जुण्णथेरी सुप्पं गहाय ते वियणेज्जा, पुणोवि पत्थं पूरेज्जा, अवि सा देवप्पभावेण पूरेज्जा न य माणुसाओ० । अहवा भणिता सव्वधण्णाणि विभत्ताणि करेहि ।

जूए, जथा-एगो राया तस्स रण्णो सभा खंभसतसंनिविट्ठा जत्थ अत्थाणियं देति, एक्केक्को य खंभो अट्ठसतं २ अंसियाणं, तस्स य पुत्तो रज्जकंखी, सो य राया थेरो, ताहे चिंतेति कुमारो-अहं एतं मारेतुं रज्जं गेण्हामि, तं च अमच्चेण नातं, ताहे सो राया विदितत्थो तं पुत्तं भणति-अम्हं जो कमं न सहति सो जूतं खेल्लति, जदि जिणाति रज्जं से दिज्जति, किह पुण जिणियव्वं ?, तुज्झं एगो आयो अवसेसा अम्हं, जदि तुमं एतं एक्किक्कं अंसितं अट्ठसतं वारा जिणासि तो तुब्भं रज्जं, अवि सो देवतप्पभावा विभासा ॥

रयणे । जथा एगो वाणियओ, तस्स पुत्ता, सो य महल्लो, रतणाणि से अत्थि, तत्थ महे अण्णे वाणियगा कोडिपडागाओ ॥४४७॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक-चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥४४८॥

मनुष्य दुर्लभता दृष्टान्ताः

उवट्ठवेंति, सो न उट्ठवेति, ताहे तस्स पुत्ता थेरे पउत्थे सव्वाणि विकिणंति-पडागाओ काहामोत्ति, ते य वाणियगा समंततो गता पारसदीवादीणि, सो य थेरो आगतो, सुतं जथा विकियाणि, ते अम्बाडेति-लहुं आणेह, ताहे ते सव्वतो हिंडितुमारद्धा, किं ते सव्वरतणाणि पिणेज्जा ?, अवि य देवप्पभावेणं विभासा।

सुविणएत्ति, जथा-दोण्णि कप्पडिया, एगेण कप्पडिएण सुविणए चंदो पीतो, तेण कप्पडियाणं कहितं, तेहिं भणितं-चंदप्पमाणं पूयलियं लभिहिसि, लद्धा य घरच्छायणियाए, अण्णेणवि दिट्ठो, सो ण्हातो, ताहे फलं वा किंचि वा गहाय सुविणपाढकस्स कहेति, तेण भणितं-राया भविस्सति, इतो य सत्तमे दिवसे तत्थ राया अपुत्तो मतो, सो य निवण्णो अच्छति जाव आसो अहियासितो आगतो, तेण पट्ठे विलइओ, एवं सो य राया जातो, तांहे कप्पडिओ तं सुणेति, जहा तेणवि दिट्ठो एरिसओ सुविणओ, सो आदेसफलेण किर राया जातो, सो चिंतेति-वच्चामि जत्थ गोरसो, तं जेमेत्ता सुयामि, अत्थि पुण सो पेच्छेज्जा ?, अविय सो०, न य माणुसातो।

चक्केत्ति दारं-इंदपुरं नयरं, इंददत्तो राया, तस्स इट्ठाण वराण देवीणं बावीसं पुत्ता, अण्णे भणंति-एक्काए देवीए, ते सव्वे रज्जेसु रण्णो पाणसमा, अण्णा एगा अमच्चस्स धूता, सा जं परं परिणेंतेण दिट्ठेल्लिया, सा अण्णदा ण्हाता समाणी अच्छति, ताहे सा रण्णा दिट्ठा, का एसत्ति?, तेहिं भणितो-तुब्भं देवी, ताहे सो ताए समं एकं रत्तिं वुत्थो, सा य रितुण्हाया, तीसे गब्भो लग्गो, सा य अमच्चेण भणितेल्लिया-जया तुब्भं गब्भो लग्गति तदा ममं साहेज्जा, ताहे सो ताए सो दिवसो सिट्ठो वेला मुहुत्तो य, ॥४४८॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥४४९॥

मनुष्य दुर्लभता दृष्टान्ताः

जं च रायाए उल्लावियं सातियंकारो, तेण तं पत्तए लिहियं, सो सारवेति जाव नवण्हं मासाणं दारओ जाओ, तस्स य दासचेडाणि तद्दिवसजातगाणि, तं०-अग्गियओ पव्वयओ बहुलिया सागरओ, ताणि सहजायगाणि, तेग सो कलायरियस्स उवणीओ, तेण लेहा-दियाओ गणियप्पहाणाओ कलाओ गहियाओ, जाहे तं चेडं गाहिंति आयरिया ताहे ताणि वट्टंति य वीउल्लंति य पुव्वपरिसएणं ताणेंति राडेंति, तेण ताणि न चेव गणियाणि, गहियाओ कलाओ, तेवि अण्णे गाहिज्जंति बावीसं कुमारा, जस्स ते आयरियस्स अप्पिज्जंति तं मत्थएहिं पिट्टेंति, अह ते कोइ पिट्टेति ताहे साहिंति अम्मामिस्सियाणं, ताहे ताओ भणंति-किं सुलभाणि पुत्तजंमाणि ?, ताहे ण सिक्खिता । इतो य मथुराए राया जितसत्तू, तस्स सुता सिद्धिका, अण्णे भणंति-णेव्वुती, सा रण्णो अलंकिता उवणीता, ताहे राया भणति-जो तुह भत्ता रोयति सो ते, ताहे ताए णातं-जो सूरो वीरो विक्कंतो होज्जा सो ममं, सो पुण रज्जं देज्जा, ताहे सा तं बलवाहणं गहाय गता इंदपुरं नगरं, तत्थ इंददत्तरण्णो बहवे पुत्ता, अहवा दूतो पयट्टिओ, ताहे सव्वे रायाणो आवाहिया, ताहे तेण रण्णा सुतं, जहा-सा एति, ताहे हट्ठतुट्ठो उस्सितपडागं०, रंगो य कतो, तत्थेगंमि अक्खे अट्ठ चक्का असमाणं संभमंति, तेसिं परतो धीतिगा ठविता, सा पुण अच्छिमि विंधतव्वा, राया संनद्धो सह पुत्तेहिं निग्गतो, ताहे सा कण्णा सव्वालंकारविभूसिया एगंमि पासे अच्छति, सो रंगो रायाणो य ते घरडंडभडभोइया जारिसो दोवतीए, एत्थ रण्णो जेट्ठपुत्तो सिरिसाली नाम कुमारो, सो भणितो-पुत्ता ! एसा दारिया रज्जं च घेत्तव्वं एतं राधं विंधेतूणं, ताहे सो तुट्ठो, अहं णूणं अण्णेहिंतो रायीहिंतो लट्ठओ, ताहे सो भणितो-विंधत्ति, ताहे सो अकतकरणो तस्स समूहस्स मज्झे धणूतं घेत्तुं चेव ण चएति, कहवि णेण गहितं, तेण जत्तो वच्चतु ततोकडं वच्चतुत्ति मुक्कं, तं भग्गं, एवं कासइ एगं वोलीणं कासइ दोण्णि कासइ तिण्णि अण्णेसिं ॥४४९॥

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥४५०॥

मनुष्य-दुर्लभता-दृष्टान्ताः

बाहिरेण चेव नीति, तेणवि अमच्चेण सो णत्तुओ पसाहिओ तद्दिवसं आणिओ तत्थ अच्छति, ताहे सो राया ओहतमणसंकप्पो करतल० अहो अहं धरिसिओत्ति, ताहे अमच्चो पुच्छति-किं तुज्झे देवा! ओहतमणा?, ताहे सो भणति-एतेहिं अहं निप्पहाणो कतो, ताहे अमच्चो भणति-अत्थि तुब्भं अण्णोऽवि पुत्तो सो कतकरणो सुरिंददत्तो नाम कुमारो, तं सोऽवि तावविण्णासउ, ताहे राया पुच्छति-कतो मम पुत्तो ?, ताहे ताणि से कारणाणि सिट्ठाणि, ताहे सो राया तुट्ठो, ताथे भणितो-सेयं तव एते अट्ठ चक्के भेत्तूणं तव रज्जसुहं निव्वुतिदारियं च संपावित्तए, ताहे सो कुमारो ठाणं ठाति धणुं गेण्हति लक्खभिमुहं सरं सज्जेति, ताणि य दासरूवाणि चत्तारिवि सव्वतो रोडेंति, अण्णे य दोण्णि पुरिसा असिव्यग्रहस्तास्तिष्ठंति, ते बावीसंपि कुमारा एस विंधिस्सतित्ति ते विसेसउल्लुंठणाणि विग्घाणि करेंति, ताहे सो पणामं उवज्झायस्स रण्णो रंगस्स य करेति, सोवि से उवज्झाओ भयं दाएति-एते दोण्णि पुरिसा जदि फिट्टसि ततो सीसं पाडेंति, सो ते पुरिसे कुमारे य तेवि चत्तारिवि दासरूवे अगणेंतो ताणं अट्ठण्हं रहचक्काणं छिद्दाणि जाणितूणं एकं छिद्दं लक्खेति, तं अप्फिडियाए दिट्ठीए तेण अण्णंमि मतिं अकुणमाणेण सा धीया अच्छिमि विद्धा, तत्थ उक्कुट्ठिसीहणादसाधुक्कारो दिण्णो, सा य लद्धा, जथा तं दुक्खं भेत्तुं एवं माणुसत्तणं।

चंमे, जहा-एगो दहो जोयणसतसहस्सविच्छिण्णो चंमोनद्धो, एगं से छिद्दं कच्छभ मेत्तं तंबहुमज्झदेसभाए, तत्थ कच्छभेण कहवि गीवा उब्बुड्डाविता, तेण जोतिसं दिट्ठं कोमुईए पुप्फफलाणि य, सो गतो सयणिज्जगाणं दाएमित्ति, आणेति, आणेत्ता सव्वतो घुलति, न पेच्छति, अविय सो०, न य माणुसातो ॥ ॥४५०॥

जुगे-पुव्वंते होज्ज० ॥ ८-१५७ ॥ ८३३ ॥ एवं दुल्लभं। इदाणिं परमाणू, जथा-एगो खंभो महप्पमाणो, से देवेणं

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

चुण्णेतुं अविभाइमाणि कातूणं नालियाए पक्खित्तो, पच्छा मंदरचूलियाठिएण फूमितो,ताणि नट्ठाणि,अत्थि पुण कोइ जो तेहिं चेव पोग्गलेहिं तमेव खंभं निव्वत्तेज्जा ?, नो तिणट्ठे०, एस अभावे, एवं नट्ठो माणुसाओ न पुणो० । अहवा सभा अणेगखंभसतसंनिविट्ठा, सा कालंतरेण झामिता पडिता, अत्थि तं पुण कोइ जो तेहिं चेव पोग्गलेहिं पुणो करेज्जा ?, नो तिनट्ठे०, एवं माणुसंपि दुल्लभं । मानुषत्व-दौर्लभ्ये दृष्टान्तः

एतेहिं दसहिं पदेहिं जहा माणुस्सं दुल्लभं१ एवं एतेहिं चेव दिट्ठंतेहिं खेत्तं आयरियं२ जाति३ कुलं४ आरोग्गं५ रूवं६ आयुं७ बुद्धी८सवणं धम्मस्स९गहणं१०तंमि य सद्धा११संजमो१२ तंमि य असढकरणं१३ लोगे दुल्लभाणि । एवं दुल्लभाणि एताणि दसहिं पदेहिं, एतेहिवि पदेहिं लद्धेहिं इमेहिं कारणेहिं दुल्लभं सामाइयं, जथा—

आलस्समोहवण्णा० । ८-१५८ । ८४१ । आलस्सिण साहूणं पासं नल्लियति १ अहवा निच्चप्पमत्तो मोहाभिभूतो इमं से कातव्वं नेच्छइ सुणेतुं २ अहवा अवन्ना, किं एते जाणंते ? नग्गा हिंडंति ३ अथवा थंभेणं, किंचि जाणेज्जा, अहवा अट्ठविहस्स य तस्स अण्णतरेण थंभेणं ४ अहवा दट्टूणं चेव पव्वइयए कोहो उप्पज्जति ५ पमाएणं पंचविहस्स अण्णतरेणं ६ अहवा किविणता-मा एतेसिं किंचि दायव्वं होहित्ति तेण णल्लियति ७ भतेण वा एते णरगतिरियभयाइं दाएंति, अलाइं एतेहिं सुतेहिं ८ सोगेण धणसयणादिवियोगेण अभिभूतो ण अल्लियइ ९ अण्णाणेण वा कुपहेहिं मोहितो इमंमि से ण चेव धम्मसण्णा उप्पज्जति १० ॥४५१॥ अहवा वक्खेवेणं अप्पणो निच्चमेव वाउलो ११ कोउहल्ले वा कुहेडगादिसिक्खणादिसु १२ अहवा रमणसीलो वट्टखेल्लियादिएहिं१३

प्रत सूत्रांक [-] दीप अनुक्रम [-]

आलस्याद्या विघ्नाः यानावरणाद्युपमा व्रतादीनां

एतेहिं कारणेहिं लद्धूण सु० ।८-१५९।८४२। अहवा कम्मरिवुजयेण सामाइयं लब्भति, सो य जयो सामग्गीय विणा न भवति, संजोगेण भवति, जथा -जोधस्स रिवुजयो, सा य सामग्गी इमा—

जाणावरण० ।८-१६०।८४३। जाणं रहो आसो हत्थी वा जदि नत्थि तो किं करेतु पाइक्को?, लद्धेसुवि आवरणं जदि कवयादि नत्थि तो एगप्पहारो कीरति, सति आवरणे पहरणेण विणा किं सक्का हत्थेण जुज्झितुं ?, सति पहरणे कुसलत्तं नत्थि, न जाणति किह जोहेतव्वं ?, सति कोसल्ले नीतीय विणा किं करेतु, समूहे मारिज्जति अवक्कमणं उक्कमणं अयाणंतो, जहा अगलुदत्तो दक्खत्तणेण फेडेति डेवेति वा जाव मुहं विडंबितं ताव सराण पूरियं ।एतेसु सव्वेसुवि लाइएसु जदि ववसाओ नत्थि न चेव जुज्झति अणेच्छंतो, सति ववसाये सरीरेण असमत्थो किं करेतु ?, एतेण संपण्णो रिउं जिणति। एवमिहावि जाणं महव्वयाणि, आवरणं खंती, झाणं पहरणं, कुसलत्तणं कतजोगित्तं, नीती साहूणवि जहा इमं एतेण उवाएणं कातव्वं एतेण नवि, दक्खत्तं पडिलेहणवेयावच्चादीसु, ववसाओ तवसंजमकरणे उवसग्गसहणे वा दुग्गावतीए वा सरीरस्स जदि आरोग्गं, एतेहिं सामग्गीकारणेहिं सव्वेहिं कम्मरिवुं जिणति, ताहे सामाइयं लब्भति । अहवा इमेहिं कारणेहिं सामाइयं लब्भति—

दिट्ठे सुतमणु० ॥ ८-१६१ ॥ ८४४ ॥ दट्ठुं बोधी, जहा सेज्जंसो उसभसामिं, सयंभुरमणमच्छो वा जहा पडिमासंठिते मच्छे पउमे य दट्ठूणं तित्थगर०,मच्छपउमाणं सव्वसंठाणाणि अत्थि, मोत्तुं वलयसंठाणं, सोचूणं जहा आणंदकामदेवाणं तत्थ- तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणियगामिथं नाम नगरे होत्था, दूतिपलासए चेतिए, जितसत्तू राया, तत्थ णं आणंदे नामं ॥४५२॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता..........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णिः-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥४५३॥

सामायिक लाभहेतवः

गाहावती परिवसति, अड्ढे दित्ते वित्ते विच्छिण्णविपुलभवणसयणासणजाणवाहणाकिण्णे बहुधणबहुधण्णजातरूवरयए आयोगपयोगसंपत्ते विच्छड्डितपउरभत्तपाणे बहुदासीदासगोमहिसगवेलगप्पभूते बहुजणस्स अपरिभूते यावि होत्था, तस्स णं सिवणंदा नाम भारिया, वण्णओ, से णं आणंदे तत्थ बहूणं राईसर जाव सत्थवाहप्पभितीणं अट्ठारसण्हं सेणिप्पसेणीणं सगस्स कुडुंबस्स कज्जेसु कोडुंबेसु य जाव पडिपुच्छणिज्जे सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था जाव चक्खुभूतेत्ति,तस्स णं णगरस्स बहिया अदूरसामंते उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए कोल्लाए नाम सन्निवेसे होत्था, तस्स णं आणंदस्स केइ मित्तणाति जाव परिजणे वसति अड्ढे जाव अपरि भूते। तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे जाव संपाविउकामे वाणियगामस्स दूतिपलासए चेतिए समोसढे जाव विहरति। परिसा निग्गता, जितसत्तू निग्गतो जाव पज्जुवासति। तते णं से आणंदे बहुजण जाव एतमट्ठं निसम्म ण्हाति जाव पादचारविहारेणं जाव पज्जुवासति । ततेणं सामी आणंदस्स तीसे य परिसाए धम्मं परिकहेति, परिसा पडिगया, तते णं से आणंदे धम्मं सोच्चा हट्ठ जाव उट्ठेति उट्ठेत्ता सामिं वंदति नमंसति नमंसेत्ता एवं वयासी-सद्दहामि णं भंते! निग्गंथं पावयणं, पत्तियामि णं भंते! निग्गंथं पावयणं, किं तु जथा णं देवाणुप्पियाणं अंतियं राईसरादयो चइत्ता हिरण्णं जाव पव्वयंति नो खलु अहं तहा संचाएमि, अहंणं दुवालसविहं सावगधम्मं पडिवज्जिस्सामित्ति, अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं, तते णं तस्स सामी सावगधम्मविहिं उवदंसेति, सेवि य णं पडिवज्जति, एवं जथा उवासगदसासु, इच्छापरिमाणं पुण करेमाणे णण्णत्थ चउहिं हिरण्णकोडीहिं निहाणपउत्ताहिं एवं वड्ढिपउत्ताहिं परिमलपवित्थरोवउत्ताहिं, अवसेसं हिरण्णविधिं पच्चक्खाति जावज्जीवाए, एवं नण्णत्थ चउहिं हलसतेहिं नियत्तणसातिएणं हलेणं, णण्णत्थ चउहिं दाससतेहिं, चउहिं दासीसतेहिं, चउहिं वएहिं वयपवरेहिं दस-

॥४५३॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ||४६४||

आनन्द कामदेववृत्तं

गोसाहस्सिएणं वएणं, चउहिं भंडीसएहिं दिसाजत्तिएहिं, चउहिं भंडीसएहिं संवहणिएहिं, चउहिं वहणसतेहिं दिसाजत्तिएहिं सतसाहस्सिएणं वहणेणं, चउहिं वहणसतेहिं संवहणिएहिं, एवमादि पंचअतियारपेयालविसुद्धं करेति जाव एवं अप्पाणं भावेमाणस्स चोद्दस वासाइं विइक्कंताइं, पच्छा एकारस उवासगपडिमाफासणं एक्कारसपडिमं ठितस्स ओहिण्णाणुप्पत्ती- तिदिसिं लवणसमुद्दे पंचजोयणसतियखेत्तपासणं उत्तरेणं चुल्लहिमवंतं जाव उड्ढं जाव सोहम्मो कप्पो अहे जाव लोलुयपत्थडंतरं चुलसीतिवाससहस्सट्ठितिगं जाणति पासति, एवं से आणंदे समणोवासए उत्तमेहिं सीलव्वएहिं जाव अप्पाणं भावेत्ता वीसं वासाइं समणोवासयपरियागं पाउणित्ता एकारसोवासगपडिमाओ संमं काएण फासेत्ता मासियाए संलेहणाए आलोइयपडिकंते समाधिपत्ते कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडेंसगस्स महाविमाणस्स उत्तरपुरच्छिमेणं अरुणे विमाणे देवत्ताए उववण्णे चउपलियट्ठितिके, ततो चुए महाविदेहे सिज्झिहिति जाव अंतं काहिति ॥

एवं कामदेवस्सवि, चंपा नगरी पुण्णभद्दे चेइए जितसत्तू राया कामदेवे गाहावती भद्दा भारिया सामिआगमणं । जहा आणंदे तेणेव कमेण सावगधम्मं पडिवज्जति, नवरं छ हिरण्णकोडीओ जाव छव्वहणसतात्ति तहेव जाव एक्कारसमं पडिमं पडिवण्णस्स एगे देवे पिसायहत्थिपण्णगरूवेण उवसग्गेति, से य न खुभति जथा उवसगदसासु जाव सामी समणे आमंतेत्ता एवं वयासी-जदि ताव अज्जो ! कामदेवेणं समणोवासगेणं उवसग्गा संमं सहिता किमंग पुण अज्जो ! सवणेण वा समणीय वा दुवालसंगं गणिपिडगं अहिज्जमाणेणं ?, ततेणं ते समणा णिग्गंथा तं उवदेसं संमं विणएण पडिस्सुणेंति, एवं जाव कामदेवे सामिणा उववूहिते-धण्णे सि णं तुमं कामदेवा ! जाव जस्स णं णिग्गंथे पावयणे तव इमेयारूवा पडिवत्ती लद्धा पत्ता जाव अभि- ||४५४||

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

समण्णागता, ततेणं से कामदेवे हट्ठे जाव वंदित्ता पडिगते, एवं जथा आणंदे तहेव जाव सिज्झिहिति, नवरं अरुणाभे विमाणे, सेसं तं चेव।

अणुभूते जथा—वक्कलचीरिस्स। को य वक्कलचीरी ?, तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपानगरीए सुधम्मगणहरो समोसढो, कोणिओ राया वंदितुं निग्गते कतप्पणामो य जंबुनामरूवदंसणविम्हितो गणहरं पुच्छति—भगवं ! इमीसे महईए परिसाए एस साहू घतसित्तोव्व वण्ही दित्तो मणोहरसरीरो य, किं मण्णे एतेण सीलं सेवितं ? तवो वा चिण्णो दाणं वा दिण्णं जतो से एरिसी तेयसंपत्ती?, ततो भगवता भणितो—सुणाहि रायं जहा तव पितुणा सेणिएण रण्णा पुच्छितेण सामिणा कहितं—तेणं कालेणं तेणं समएणं गुणसिलए चेतिए सामी समोसरितो, सेणिओ राया तित्थगरदंसणसमुस्सुओ वंदओ णिज्जाइ, तस्स य अग्गाणीए दुवे पुरिसा कुडुंबसंवइं कहं करेमाणा पस्संति एगं साधुं एगचलणपरिट्ठितं समूसवियबाहुजुयलं आतावेंतं, तत्थेक्केण भणितं—अहो एस महप्पा रिसी सूराभिमुहो तप्पति, एतस्स सग्गो मोक्खो वा हत्थगतोत्ति, बितिएण पच्चभिण्णाओ, ततो भणति—किं ण याणसि एस राया पसण्णचंदो ?, कतो एयस्स धम्मो ?, पुत्तोऽणेण बालो ठवितो, सो य मंतीहिं रज्जाओ मोइज्जति, सोऽणेण वंसो विणासिओ, अंतेउरजणोवि ण णज्जति किं पाविहितित्ति, तं च से वयणं झाणवाघातं करेमाणं सुतिपहमुवगतं, ततो सो चिन्तेतुं पयत्तो—अहो ते अणज्जा अमच्चा मया संमाणिया निच्चं पुत्तस्स मे विपडिवण्णा, जदि हं होंतो एवं च चेट्ठंता तो णे सुसासिते करेंतोमि, एवं च से संकप्पयंतस्स तं कारणं वड्ढमाणमिव जातं, तेहि य समं जुद्धजोणिं मणसा चेव काउमारद्धो, पत्तो य सेणिओ राया तं पदेसं, वंदितोऽणेण विणएण, पेच्छति णं झाणनिच्चलत्थं, अहो अच्छरितं एरिसं तवस्सिसामत्थं रायरिसिणो पसन्नचंद- ॥४५९॥

प्रत सूत्रांक [-] दीप अनुक्रम [-]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता..........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥४५६॥

वल्कल-चीरिवृत्तं

स्सत्ति चिन्तयन्तो पत्तो तित्थगरसमीवं, वंदितूण विणएण पुच्छति—भगवं ! पसण्णचंदो अणगारो जंमि समए मता वंदिओ जदि तंमि समए कालं करेज्ज का से गती भवेज्जा ?, भगवता भणितं- सत्तमपुढविगमणजोग्गो, ततो चिंतेति—साहुणो कहं नरकगमणंति ?, पुणो पुच्छति--भगवं ! पसन्नचंदो जइ इदाणिं कालं करेज्ज कं गतिं वच्चेज्जत्ति?, भगवता भणितं--सव्वट्ठसिद्धि-गमणजोग्गो इदाणिंति, ततो भणति—कह इमं दुविहं वागरणंति ?, नरगामरेसु तवस्सिणोत्ति, भगवता भणितं--झाणविसेसेण, तंमि य इमंमि समए एरिसी तस्स असातसातकम्मादाणता, सो भणति- कहं ?, भगवता भणितं- तव अग्गाणितपुरिसमुहनिग्गतं पुत्तपरिभववयणं सोतूण उज्झितपसत्थज्झाणे तुमे वंदिज्जमाणो मणसा जुज्झति तिव्वं पराणीएण समं, तओ सो तंमि समए अहरगतिजोग्गो आसि, तुमंमि य उवगते जातकरणसत्ती सीसावरणेण पहरामि परंति लोइते सीसे हत्थं निक्खिवंतो पडिबुद्धो, अहो अकज्जं, कज्जं पयहितूण परत्थे जदिजणविरुद्धं मग्गमवतिण्णोत्ति चिंतितूण निंदणगरहणं करेंतो मणं पणमितूण तत्थ गतो चेव आलोइयपडिक्कंतो पसत्थज्झाणी संपत्तं तं चऽणेण कम्मं खवितं सुभं अज्जितं, तेण पुण कालविभागेण दुविहगतिनिद्देसो । ततो कोणिओ पुच्छति- कहं वा भगवं ! बालं कुमारं ठवेतूण पसण्णचंदो राया पव्वइतो ?, सोतुमिच्छं, ततो भणति-पोतणपुरे णगरे सोमचंदो राया, तस्स धारिणी देवी, सा कदाइ तस्स रण्णो ओलोयणगतस्स केसे रएति, पलितं दट्ठूणं भणति- सामि ! दूतो आगतोत्ति, रण्णा दिट्ठी वितारिया, ण य पस्सति अपुव्वं जणं, ततो भणति- देवि ! दिव्वं ते चक्खु, तीय पलियं दंसितं, धम्मदूतो एसोत्ति, तं च दट्ठूण दुम्मणस्सितो राया, तं नातूण देवी भणति- लज्जह वुड्ढभावेण ?, निवारिज्जिही जणो, ततो भणति-देवि ! न एवं, कुमरो बालो असमत्थो पयापालणे होज्जत्ति मे मण्णु जातं, पुव्वपुरिसाणुचिण्णेण मग्गेण ण गतोऽहंति, न ॥४५६॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥४५७॥

वल्कलचीरिवृत्तं

विचारो, तुमं पसन्नचंदं सारक्खमाणी अच्छसुत्ति, सा णिच्छिता गमणे, ततो पुत्तस्स रज्जं दातूण धातिदेविसहितो दिसापोक्खियतावसत्ताए पदिक्खितो चिरसुण्णे आसमपदे ठितो,देवीय पुव्वाहूतो गब्भो परिवद्धति,पसण्णचंदस्स य चारपुरिसेहिं निवेदितो पुण्णसमए पसूता, कुमारो वक्कलेसु ठवितोत्ति वक्कलचीरिरित्ति, देवी विसूइयारोगेण मता, वणमहिसीदुद्धेण य कुमारो वद्धाविज्जति, धातीवि थोवेण कालेण कालगता, किढिणेण वहति रिसी वक्कलचीरिं, परिवाङ्कितो य लिहितूण दंसिओ चित्तकारेहिं पसण्णचंदस्स, तेण सिणेहेण गणिकादारियाओ रूवस्सिणीओ खंडमयाविविहफलेहिं णं लंभेहित्ति पत्थविताओ, ताओ णं फलेहिं मधुरेहि य वयणेहिं सुकुमालपीणुण्णतथणसंपीलणेहि य लोभेन्ति, सो कतसमवातो गमणे जाव अतिगतो तावसभंडगं घेत्तुं ताव रुक्खारूढेहिं चारपुरिसेहिं तासिं सण्णा दिण्णा रिसी आगतोत्ति, ताओ दुतमवक्कंताओ, सो तासिं वीधिमणुसज्जमाणो ताओ अप्पस्समाणो अण्णतो गतो, सो अडवीय परिब्भमंतो रहगतं पुरिसं दट्ठूण तातं अभिवादयामित्ति भणंतो रहिणा पुच्छितो–कुमार ! कत्थ गंतव्वं ?, सो भणति-पोतणं नाम आसमपदं, तस्स य पुरिसस्स तत्थेव गंतव्वं, तेण समयं वच्चमाणो रथिणो भारितं तातत्ति आलावति, तीय भणितो-को इमो उवयारो?, रथिणा भणितं- सुंदरि ! इत्थिविरहिते णूणं एस आसमपदे वड्ढितो, ण याणति विसेसं, न से कुप्पितव्वं, तुरये भणति-किं इमे मिगा वाहिज्जंति तात ?, रथिणा भणितो–कुमार ! एते एतंमि चेव कज्जे उवकज्जंति, न एत्थ दोसो, तेणवि से मोदगा दिण्णा, सो भणति-पोयणासमवासीहिं मे कुमारेहिं एतारिसाणि चेव फलाणि ॥४५७॥
दत्तपुव्वाणित्ति, वच्चंताण य से एक्कचोरेण सह जुद्धं जातं, रथिणा गाढप्पहारो कतो, सिक्खागुणपरितोसिओ भणति-अत्थि विउलं धणं तं गेण्हसु स्वरत्ति, तेहिं तीहिंवि जणेहिं रहि भरितो, कमेण पत्ता पोतणं, मोल्लं गहाय विसज्जितो, उडयं मग्गामुत्ति

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक-चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥४५८॥

वल्कलची-रिवृत्तं

सो भमन्तो गतो गणियाधरे-तात! अभिवादये,देह इमेण मुल्लेण उडयंति,गणियाए भणिओ-दिज्जति नि(न्नि)वेसत्ति,तीय कासवओ सद्दाविओ, ततो अणिच्छंतस्स कतं णहपरिकम्मं, अवणीयवक्कलो य वत्थाभरणविभूसितो गणियादारियाय पाणिं गाहितो, ण्हवितो य, मा मे रिसिवेसं अवणेहित्ति जंपमाणो ताहिं भण्णति-जे उडगत्था इहमागच्छंति तेसिं एरिसो उवयारो कीरति, ताओ व गणियाओ उवगायमाणीओ वधूवरं चिट्ठति, जो य कुमारविलोभणनिमित्तं रिसिवेसो जणो पेसितो सो आगतो कहेति रण्णो- कुमारो अडविं अतिगतो, अम्हेहिं रिसिस्स भएण न तिण्णो सद्दाविउं, ततो राया विसण्णमानसो भणति-अहो अकज्जं, न य पितुसमीवे जातो न य इहं, न णज्जति किं पत्तो होहितित्?, चिंतापरो अच्छति, सुणति य मुतिंगसद्दं, तं च से सुतिए वट्टमाणं, भणति-मते दुक्खिते को मण्णे सुहितो गंधव्वेण रमतित्ति?, गणियाए अ हितेण जणेण कहितं, सा आगता पादपडिता, रायं पसन्नचंद विन्न-वेति-देव! नेमित्तिसंदेसो मे-जो तावसरूवो तरुणो गिहमागच्छेज्जा तस्समेव दारियं देज्जासि, सो उत्तमपुरिसो, तं संसित्ता विउलसोक्खभागिणी होहितित्ति, सो य जहा भणिओ णेमित्तिणा अज्ज मे गिहमागतो,तं च संदेसं पमाणं करेंतीए दत्ता से मया दारिया, तन्निमित्तं उस्सवो, न याणं कुमारं पणट्ठं, एत्थ मे अवराहं मरिसेहत्ति, रण्णा संदिट्ठा मणुस्सा जेहिं आसमे दिट्ठपुव्वो कुमारो, तेहिं गतेहिं पच्चभियाणिओ, निवेदितं च पियं रण्णो, परमपीतिमुव्वहंतेण य वधूसाहितो सगिहमुवणीओ, सरिसकुलरूव-जोव्वणगुणाण य रायकण्णयाण य पाणिं गाहितो, कतरज्जसंविभागो य जहासुहमभिरमइ, रहिओ य चोरदत्तं दव्वं विक्किणंतो रायपुरिसेहिं चोरोत्ति गहितो, चीरिणा मोइतो पसण्णचंदविदितं, सोमचंदोवि आसमे कुमारं अपस्समाणो सोगसागरविगाढो सन्नचंदसंपेसितेहिं पुरिसेहिं नगरगतवक्कलचीरिनिवेदतेहिं कहंचि संठवितो, पुत्तमणुसंभरंतो अंधो जातो, रिसीहिं साणुकंपेहिं ॥४५८॥

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

कलफलसंविभागो तत्थेव आसमे निवसति, गतेसु य बारससु वासेसु कुमारो अड्डरत्ते पडिविबुद्धो पितरं चिंतेतुमारद्धो-किह मण्णे
तातो मता णिग्घिणेण विरहितो अच्छातीत्ति पिउदंसणसमुस्सुगो पसण्णचंदसमीवं गंतूणं विण्णवेति-देव ! विसज्जेह मं उक्कंठितोहं
तातस्स, तेण भणितो- समयं वच्चामो, गता य आसमपदं, निवेदितं च रिसिणो- पसण्णचंदो पणमातीत्ति, चलणोवगतो य णेण
पाणिणा परामुट्ठो, पुत्त ! निरामयोसित्ति?, वक्कलचीरी पुणो अवदासिओ, चिरकालधरियं च से बाहं मुयंतस्स ओमिल्लाणि णयणाणि,
पस्सति ते दोवि जणा, परमतुट्ठो पुच्छति य सव्वं गतं कालं, वक्कलचीरीवि कुमारो अतिगतो उडयं, पस्सामि ताव तातस्स ताव-
सभडयं अणुवेक्खिज्जमाणं केरिसं जातंति, तं च उत्तरीयंतेण पडिलेहेउमारद्धो जतिविव पत्तं पायकेसरियाए, कत्थ मण्णे मया
एरिसं करणं कतपुव्वंति विधिमणुसरंतस्स तदावरणक्खएण पुव्वजातिस्सरणं जातं, सुमरती य देवमाणुस्सभवे य, सामण्णं पुरा
कतं संभरितूण वेरग्गमग्गं समोतिण्णो, धम्मज्झाणविसतातीतोवि विसुज्झमाणपरिणामो य बितियसुक्कज्झाणभूमिमतीक्कंतो,
नट्ठमोहावरणविग्घो केवली जातो य, परिकहिति धम्मो जिणप्पणीतो पितुणो पसन्नचंदस्स य रण्णो, ते दोऽवि लद्धसम्मत्ता
पणता सिरेहिं केवलिणो सुट्ठु मे दंसितो मग्गोत्ति, वक्कलचीरी पत्तेयबुद्धो गतो पितरं गहेतूण महावीरवद्धमाणसामिस्स पासं,
पसन्नचंदो नियकपुरं, जिणो य भगवं सगणो विहरमाणो पोतणपुरे मणोरमे उज्जाणे समोसरिओ, पसन्नचंदो वक्कलचीरिवयण-
जणितवेरग्गो परममणहरतित्थगरभासितामतवाड्ढितुच्छाहो बालं पुत्तं रज्जे ठविऊण पव्वइतो, अधिगतसुत्तत्थो तवसंजमभावि- ॥४५९॥
तमती मगहपुरमागतो, तत्थ य सेणिएण सादरं वंदितो आतावेंतो, एवं निक्खंतो जाव भगवं नरगामरगतीसु उक्कोसट्ठितिजोग्गतं
झाणपच्चयं पसण्णचंदस्स वण्णेति ताव य देवा तंमि पदेसे उवतिता, पुच्छितो य अरहा सेणिएण रण्णा- किण्णामित्तो एस देव-

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

संपादोत्ति ?, सामिणा भणितं- पसण्णचंदस्स अणगारस्स णाणुप्पत्तीहरिसिता देवा उवागतत्ति । तत्तो पुच्छति–एयं महाणुभावं केवलनाणं कत्थ मण्णे वोच्छिज्जिहिति ?, तं समयं बंभिंदसमाणो विज्जुमाली देवो चउहिं देवीहिं सहितो वंदितुमुवगतो उज्जोवेन्तो दस दिसाओ, सो दंसिओ भगवता, एवमादि जहा वसुदेवहिंडीए, एत्थ पुण वक्कलचीरिणो अहिगारो । एवं अणुभूते लंभो भवति । कम्माणं खए जथा चंडकोसितस्स, उवसमे जहा अंगरिसिस्स, मणवइकायजोगेहिं पसत्थेहिं देवता वा अणुकंपति चतुसु ठाणेसु, एतेसिं निगमणं—

माणुस्स० ॥ ८३१ ॥ आलस्स० ॥ ८४१ ॥ जाण० ॥ ८४३ ॥ दिट्ठे सुत० ॥ ८४४ ॥ एते चत्तारि ठाणा, अहवा इमेहिं कारणेहिं बोही सुदुल्लहावि लब्भति— अणुकंपऽकाम० ॥ ८-१६२ ॥ ८४५ ॥ तत्थ अणुकंपाए ताव जथा— सो वाणरजूभवती० ॥ ८-१६४ ॥ ८४७ ॥

वारवती णगरी कण्हो वासुदेवो, तस्स दो वेज्जा-धन्नंतरी य वेतरणी य, धन्नंतरी अभविओ वेतरणी भविओ, वेतरणी साधूण गिलाणाण पिएण साहति,जं जस्स कातव्वं तं तस्स सव्वं साहति, जहा साधूणं फासुतं तथा साहति, फासुतेण पडोयारेण साहति, जदि सो अप्पणो ओसहाणि अत्थि तो देति । सो पुण धन्नन्तरी जाणि सावज्जाणि ताणि साहति असाहुप्पायोग्गाणि; जाहे भण्णति-अम्हं कतो? ताहे भणति-न मए समणाणं अट्ठाए वेज्जयसत्थं अज्झाइयं, ते दोवि महारंभा महापरिग्गहा य सव्वाए वारवतीए तिगिच्छं करेंति । अण्णदा कण्हो वासुदेवो तित्थगरं पुच्छति- एते बहूणं ढंकाण य जाव वहकरणं कातूण कहिं गच्छिहिति ?, ताहे सामी साहति-एस

वल्कलचीरिवृत्तं अनुकंपाद्याः हेतवः

॥४६०॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

॥४६१॥

धन्नंतरी अपतिट्ठाणे णरए उववज्जिहिति, एस पुण वेतरणी कालंजरवत्तणीए गंगाए महानदीए विंझयस्स अंतरा वाणरत्ताए पच्चायाहिति, ताहे सो उम्मुक्कबालभावो सयमेव जूहपतित्तणं काहिति, तत्थण्णदा साहुणो सत्थेण समं वीतिवयंति, तत्थ एगस्स साहुस्स सल्लो पादेसु भग्गो, ताहे ते भणंति-अम्हे पडिच्छामो, सो भणति- मा सव्वे मरामो, वच्चह तुब्भे, अहं भत्तं पच्चक्खामि, ताहे निब्बंधं णातूणं सोवि सल्लो न तीरति नीणेतुं पच्छा थंडिल्लं पावितो छाहिं च, तेवि गता । ताहे सो वानरगजूहवती तं पदेसं एति जत्थ सो साधू जाव पुरिल्लेहिं दट्ठुं किलिकिलाइयं, ताहे सो किलकिलेंते दट्ठूण रुट्ठो जा दिट्ठो सो तेण साधू, तस्स तं साधुं दट्ठूणं ईहावूहा, कहिं मए एरिसो दिट्ठो ?, ताहे तस्स सुभेणं परिणामेणं जातिस्सरणं समुप्पण्णं, सव्वं बारवतिं संभरति, ताहे तं साहुं वंदति, तं च से सल्लं पेच्छति, ताहे सो तिगिच्छं सव्वं संभरति, ताहे गिरिं विलग्गो सल्लुद्धरणाणि ओसहाणि संरोहणि य उत्तारेति, ताहे सल्लुद्धरणं(काउं)पाए अल्लियावेंति, ताहे सो सल्लो एगन्ते पाडितो, संरोहणीय पउणावितो, ताहे तस्स साहुस्स पुरतो अक्खराणि लिहति जहाऽहं वेतरणी नाम वेज्जो होसुं पुव्वभवे बारवतीए, एतेहिवि सो सुयओ, ताहे सो साधू से धम्मं कहेति, ताहे सो भत्तं पच्चक्खाति, तिण्णि रातिंदियाणि जाव सहस्सारं गतो, ताहे ओहिं पउंजति जाव पेच्छति तं सरीरगं तं च साहुं, ताहे आगतो तं देविड्ढिं दाएति, भणति-तुब्भं पभावेण, भणह किं करेमि ?, ताहे साहरिओ जहिं ते अण्णे साहवो, ते पुच्छंति- किहसि आगतो ?, ताहे सव्वं साहति, एवं तस्स सम्मत्तसामाइयसुतअभिगमो जातो, अणुकंपाए मोइओ अप्पा, अंतराणि रायपायोग्गाणि, ततो चुतस्स चरित्तसामाइयं भविस्सति सिद्धी य ॥

॥४६१॥

अकामनिज्जराए वसंतपुरं नगरं, तत्थेगा इब्भवधूगा नदीए ण्हाति, अण्णो य तरुणो तं दट्ठूण भणति-सुण्हातं ते पुच्छति

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥४६२॥

एस नदी मत्तवारणकरोरु । एते य नदीरुक्का वयं च पाएसु ते पणता ॥ १ ॥ ताहे सावि तं भणति-सुभगा होंतु नदीओ चिरं च जीवंतु जे नदीरुक्खा । सुण्हायपुच्छगाणं घत्तीहामो पियं कातुं ॥२॥ ताहे सो तीए णं घरं वा बारं वा न जाणतित्ति । अन्नपानैर्हरेद्बालां, यौवनस्थां विभूषया । वेश्यास्त्रीमुपचारेण, वृद्धां कर्कशसेवया ॥ १ ॥ तीसे य पीतिज्जगाणि चेडरूवाणि रुक्खे फलोएंताणि अच्छंति, तेण तेसिं पुप्फाणि फलाणि य दिण्णाणि, पुच्छिताणि य– का एसा? कस्स वा?, तेहिं भणितं-अमुगस्स सुण्हा, ता सो तीसे अतियारं णो लभेति, चिंतेति, चरिगा भिक्खस्स एति, सा च- कुसुंभसदृशप्रभं तनुसुखं पटप्रावृता, नवागरुविलेपनेन शरदिंदुलेखा इव । यथा हसति भिक्खुणी सललितं चिटैर्वंदिता, ध्रुवं सुरतगोचरे चरति गोचरान्वेषिणी ॥ १ ॥ तं ओलग्गति, सा तुट्ठा भणति– किं करेमि ?, अमुगस्स मं भणाहि, सा गता, भणिता य-जहा अमुओ ते एवंगुणजाती पुच्छति, तीए रुट्ठाए पत्तुल्लगाणि धोवंतीए मसिलित्तेण हत्थेण पट्ठीए आहता पंचंगुलियं, पच्छादारेण य निच्छूढा, सा गता साहति-नामंपि न सहति, तेण णातं जहा कालपंचमीए, ताहे पंचमदिवसे पुणरवि पत्थविता पवेसजाणणाणिमित्तं, ताए सलज्जाए आहणितूणं असोगवणिताए छिंडियाए निच्छूढा, सा गता साहति जथा नामंपि न सहति आहणित्ता य अवरदारेण धाडितामि, तेण णाओ पवेसो, तेण सो अवद्दारेणं अतिगतो असोगवणिताए, सुत्ताणि जाव ससुरेण दिट्ठाणि, तेण णातं, जहा- न होति मम पुत्तोत्ति, ताहे से पादाओ णेउरं गहितं, चेतियं च ताए भणितो य सो- नास लहुं, सहायकिच्चं करेज्जासि, पच्छा इतरी गंतूण भत्तारं भणति– घम्मो एत्थ असोगवणितं जामो, गताणि य सुत्ताणि य, जाहे सो सुत्तो ताहे उट्ठवेति, उट्ठवेत्ता भणति– तुब्भ एतं कुलाणुरूवं जं ममं सुत्तियाए ससुरो पादातो नेउरं गेण्हति?, सो भणति-सुयाहि, पभाए लभिहिसि, थेरेण सिट्ठं, सो रुट्ठो भणति–

अकामनिर्जरायां मेंठः

॥४६२॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥४६३॥

अनुकंपायां मेंठः

विचरीतोसि थेरा!, सो भणति- मते अण्णो दिट्ठो, ताहे विवादे सा भणति-अहं अप्पाणं सोहेमि, एवं करेहि, ताहे ण्हाता जक्खघरं गता, जो कारी सो लग्गति अंतरंडेण वोलेंतओ, अकारी मुच्चति, सा पहाविता, ताहे सो पिसायरूवं काऊणं साडएणं गेण्हति, ताहे सो तत्थ जक्खं भणति- जो मम मातापीतीहिं दिण्णल्लओ तं च पिसायं मोत्तूणं जदि अण्णं जाणामि तो मे तुमं जाणसित्ति, जक्खो विलक्खो चिंतेति- पेच्छह जारिसाणि मंतेति, अहयंपि वंचितो णाए, नत्थि सतित्तणं खु धुत्तीए, जाव चिंतेति तात्र सा सरिडित्ति निप्फिडिता, ताहे थेरो सव्वेणं लोगेण हीलितो, तस्स ताए अद्धितीए निद्दा नट्ठा, ताहे रण्णो कण्णं गतं, ताहे रण्णा अंतेपुरपालओ कतो, आभिसेक्कं च हत्थिरयणं वासघरस्स हेट्ठा बद्ध अच्छति, देवी हत्थिमेंठेण आसत्तिया, नवरि रत्तिं हत्थिणा हत्थो गवक्खेण पसारिओ, सा उतारिता, पुणरवि पभाते पडिविलइया, एवं वच्चति, अण्णता चिरं जातंति हत्थिमेंठेण हत्थिसंकलाए आहता, सा भणति-सो एरिसओ तारिसओ थेरो न सुयति, मा रूसह, तं थेरो पेच्छति, सो चिंतेति–जदि एताओवि किन्नु ताओ अतिभद्दिकाओत्ति, एवं चिंततो सुत्तो, पभाते लोगो सव्वो उट्ठितो, सो न उट्ठेति, रण्णो सिट्ठं, राया भणति-सुवतु, सत्तमे दिवसे उट्ठितो, रण्णा पुच्छितो, कहितं, जहा एगा देवी ण जाणामि कतरावि, एवं संववहरति, ताहे रण्णा भिंडमतो हत्थी कारितो, सव्वाओ अंतेपुरियाओ भणिताओ- एतस्स अच्चणियं करेत्ता ओलंडेह, सव्वाहिं ओलंडीओ, सा णेच्छति, भणति-अहं बीहेमि, किं च-शकटं पञ्चहस्तेन, दशहस्तेन शृंगिणम् । हस्तिनं शतहस्तेन, देशत्यागेन दुर्जनम् ॥ १ ॥ ताहे रण्णा उप्पलनालेन आहता, मुच्छिता किल पडिता, ताहे से उवगतं जहा एसा कारित्ति, भणिता य–मत्तगयमारुभंतिया, भंडमयस्स गयस्स भायसी । इह मुच्छिय उप्पलाहता, तत्थ न मुच्छति संकलाहता ॥ १ ॥ पुट्ठी से जोइया, जाव संकलप्पहारो दिट्ठो, ताहे रण्णा हत्थी मेंठो ॥४६३॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

सा य तिण्णिवि छिण्णकडए विलइताणि, मेंठो भणितो—पाडेहि हत्थिं, दोहिं पासेहिं वेलुयग्गाहा ठिता, जाव एगो पादो आगासे कतो, जणो भणति- किं एस तिरिओ जाणति ?, एताणि मारेतव्वाणि, तहावि राया रोसं न मुयति, ततो दो पादा आगासे, ततियवाराए तिण्णि आगासे, एगेण ठितो, ताहे लोगेण अक्कंदो कतो, भणितो— किं एतं रतणं विणासेह ?, ताहे रण्णो चित्तं ओगलितं, भणितो-तरसि हत्थिं नियत्तेउं ?, भणति— जदि अभयं देसि ?, दिण्णं, तेण अंकुसेण नियत्तिओ, जहा भमित्ता थले ठितो, ताणि उत्तारित्ता णिव्विसताणि कताणि। एगत्थ पच्चन्तगामे सुण्णघरे ठिताणि, तत्थ य रत्तिं गामेल्लयपरद्धो चोरो तं सुण्णघरं अतिगतो, तेहिं भणितं-वेढेउं अच्छामो, मा कोइ पविसतु, गोसे पेच्छामो, सोवि चोरो लोट्टंतो किहवि तीसे ढुक्को, तीए फासो वेदिओ, सो ढुक्को पुच्छितो- को सि तुमं ?, चोरोऽहं, तीए भणितो- तुमं मम पती होहि, एतं साहामो जहा चोरोत्ति, तेहिं पभाते मिंठो गहितो, एताए उव्वइट्ठोत्ति। विचढंतो सूले भिण्णो।

तेण समं सा वच्चति जाव अंतरा नदी, ताहे सा तेण भणिता-एत्थ सरत्थंबे अच्छ जाव अहं एताणि वत्थाणि आभरणाणि य उत्तारेमि, सो गतो, उत्तिण्णो पधावितो, सा भणति- पुण्णा नदी दीसति कायपेज्जा, सव्वं पियाभंडग तुज्झ हत्थे। जहा तुमं पारमतीतुकामो, धुवं तुमं भंडग हंतुकामो ॥ १ ॥ सो भणति-चिरसंथुओ वाऽलियसंथुतेणं, मेल्लेवि ताव ध्रुव अध्रुवेणं। जाणेप्पि तुज्झं प्रकृतिस्वभावं, पण्णो नरो को तुह विस्ससेज्जा? ॥१॥ सा भणति-कहिं जासि ?, सो भणति- जहा सो मराविती एवं ममंपि कहिंवि मारावेहिसि। इतरो तत्थ विद्धो उदगं मग्गति, तत्थ एगो सड्ढो भणति-जदि नमोक्कारं करेसि ता ते देमि, सो उदगस्स अट्ठा गतो, जाव तंमि एंते चेव नमोक्कारं करेन्तो कालगतो, वाणमन्तरो जातो, सो य सड्ढो आरक्खियपुरिसेहिं गहितो, सो ॥४६४॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥४६५॥

बालतपसि इन्द्रनागः

ओहिं पउंजति जाव पेच्छति तं सरीरगं तं सड्डुं वज्झं, ताहे सिलं विउव्विता मोएति। तं च सरत्थंबमज्झे पेच्छति, ताहे से घिणा उप्पण्णा, सियालरूवं विउव्विता मंसपेसीहत्थगता उदगतीरेण वोलेति जाव मच्छयं पेच्छति, तं मंसपेसिं मोत्तुं तस्स मच्छस्स पधावितो, तंपि सेणेण हरितं, मच्छोवि जलं अतिगतो, ताहे सियालो झायति, तीए भणितं-मंसपेसिं परिच्चज्ज, मच्छं पत्थेसि जंबुका! । चुक्को मच्छं च मंसं च, कलुणं झायसि कोल्हुका ? ॥ १ ॥ तेण भण्णति- पत्तपुडिपरिच्छण्णे, सरत्थंबे अपाउए। चुक्का पतिं च जारं च, कलुणं झायसि बंधुकी ॥ १ ॥ एवं भणिता विलिता जाता, ताहे सो सयं रूवं दंसेति, पण्णाविता भणिता-पव्वताहित्ति, तेण सो राया तज्जिओ, तेण पडिवण्णा, सक्कारेण निक्खंता, दियलोगं गता। एवं अकामनिज्जराए मेंठस्स ॥

बालतवेणं जिण्णपुरं नगरं, सेट्ठिघरं मारिए उच्छादितं, तत्थ इंदनागो दारओ, सो छुहिओ गिलाणो पाणियं मग्गति जाव सव्वाणि मताणि पेच्छति, बारंपि लोगेण कंटियाहिं घट्टितं, ताहे पुण छिड्डेण निग्गतो, ताहे नगरे कप्परेण भिक्खं हिंडइ, एवं लोगो देति सुतपुव्वोत्ति, संवड्ढति, लोगो से अणुकंपाए देति। अण्णदा रायगिहाओ वाणियओ एति, सो य वाणियओ रायगिहं जातितुकामो नगरे घोसावेति, तेण तं घोसणतं सुतं, ताहे तेण सत्थेण समं पत्थितो, तत्थ तेण सत्थे कूरो लद्धो, सो जिमितो, बितिते दिवसे न जीरति, ताहे अच्छति, तं तं सेट्ठी पेच्छति, उववासं करेतित्ति जाणिएल्लओ, सो य अव्वत्तलिंगी, बितियदिवसे हिंडंतस्स सेट्ठिणा बहुं निद्धं च दिन्नं, सो तेण दुवे दिवसा अजिण्णएण अच्छति, सेट्ठी जाणति-एस छट्ठण्णकालिओ, तस्स अत्था जाता, ततियदिवसे हिंडंतो सत्थवाहेण सद्दावितो-कीस मे कल्लं नागतो ?, तुण्हिक्को अच्छति, जाणति-छट्ठं कतेल्लयं, ताहे से पहाणं निद्धं च दिण्णं, तेणवि अण्णे दो दिवसे अच्छावितो, पच्छा लोगोऽवि पणतो, अण्णस्स निमंतन्तस्सवि ण गेण्हति, अण्णे ॥४६५॥

भणंति-एगपिंडओ सो, तेण य तं अट्ठापयं लद्धेल्लयं, वाणियएण भण्णति-मा अण्णस्स खणं गेण्हेज्जासि जाव नगरं गंमति, नगरं गता, तेण से नियघरे मढो कतो, ताहे सीसं मुंडेति कासायाणि य करेति, ताहे सो विक्खातो जातो, ताहे तस्सवि णेच्छति, ताहे जद्दिवसं पारणयं तद्दिवसं लोगो नीणेति, सो पडिच्छति, ताहे अतिगतंपि न जाणंति, ताहे लोगेण जाणणानिमित्तं भेरी कता, जो देति सो तालेति, ताहे लोगोऽतिपविसति, एवंकालो वच्चति। सामी य समोसढो, ताहे साहू संदिसावेन्ता भणिता-मुहुत्तं अच्छह, अणेसणा, तंमि जिमिते भणिता-उत्तरह, गोतमो य भणितो-ममं वयणेण भणिज्जासि-भो अणेगपिंडिता! एगपिंडिओ तं दट्ठुमिच्छति, ताहे गोतमेण भणितो, रुट्ठो भणति-तुब्भे अणेगपिंडसताणि भुंजह, अहं च एगत्थ भुंजामि, तो अहं चेव एगपिंडिओ, मुहुत्तंतरे उवसंतो चिंतेति-न एते मुसं वदंति, किह होज्जा ?, जाव लद्धा सुती, होमि अणेगपिंडिओ, जद्दिवसं मम पारणगं तद्दिवसं अणेगाणि पिंडसताणि कीरंति, एते पुण अकारितं एगं भुंजंति, तं सच्चं भणंतित्ति चिन्तेन्तेण जाती सरिया, पत्तेयबुद्धो जातो, अज्झयणं भासइ! 'इंदनागेण अरहता वुइतं,' सिद्धो य, एवं तेण बालतवेण सामाइयं लद्धं।

दानेन सम्यक्त्वे कृतपुण्यः

दाणेण लद्धं, जथा एगाए वच्छवालियाए पुत्तो, लोगेण उस्सवे पायसो उक्खडितो, तत्थ आसण्णपुरे दारगरूवाणि, पायसं जेमिन्ताणि दारगरूवाणि पासति, ताहे मातरं वड्डति-ममवि पायसं देहि, ताहे नत्थित्ति सा अद्धितीए परुण्णा, ताओ सयज्जियाओ पुच्छंति, निब्बंधे कहितं, ताहे अणुकंपाय अण्णाएवि २ आणितं दुद्धं सालि तंदुला य, ताहे थेरीए पायसो रद्धो, सो य ण्हवितो थालं च से घतमहुसंजुत्तस्स भरितं, सो ताव उवट्ठितो, साहू य मासक्खमणी आगतो, जाव थेरी अंतो वाउला ताव तेणवि ॥४६६॥
धम्मोऽवि मे होतुत्ति ताहे तिभागो दिण्णो, पुणोऽवि चिन्तितं-अवि थोवं, बितितु तिभागो दिण्णो, पुणोवि चिंतेति-एत्थं अण्णंपि

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥४६७॥

न जाति अम्बक्खलगमादि, ताहे ततिओ तिभागो दिण्णो, ताहे तेणं दव्वसुद्धेण आलावओ, ताहे माता से जाणति-जिमितो, पुणरवि भणितं, ताहे तेण अतीव रंकत्तणेण पोट्टं भरितं, ताहे रत्तिं विसूतियाए मओ, देवलोगं गतो, चुतो रायगिहे पहाणस्स धणावहनामस्स पुत्तो भद्दाए जातो, लोगो य गब्भगए भण्णति-कतपुण्णो जीवो जो एत्थं उववण्णो, जातो कतनामतो चेव कतपुण्णउत्ति नाम, संवड्डिओ, कलाओ गहिताओ, परिणीतं, माताए वयंसिएहि य गणियाघरं नीतो, बारसहिं वरिसेहिं निद्धणं कुलं कतं, सोवि न निग्गच्छति, ताणि मताणि, भज्जा से आभरणगाणि सहस्सं च चरिमदिवसे पेसेति, गणियामाताए णातं-णिस्सारो जातोत्ति, ताहे ताणि य अण्णं च सहस्सं विसज्जितं, गणियामाताए भण्णति-एस निच्छुब्भतु, सा निच्छति, ताहे तीसे चोरियाए नीणिओ, भणितो-जह घरं सज्जिज्जति ओसर, सो ओतिण्णो बाहिं अच्छति, ताहे दासीए भण्णति-निच्छूढोवि अच्छसि?, ताहे नियगघरं गतो, भज्जा से ससंभमेण उट्ठिता, ताहे सव्वं कहितं, ताहे सोगेणं अप्फुण्णो भण्णइ-अत्थि किंचि जा अण्णहिं जातित्ता ववसामि, ताहे जाणि आभरणाणि गणियामातुए य जं सहस्सं कप्पासमुल्लं दिण्णेल्लयं तं से दरिसितं, सत्थो य तद्दिवसं उच्चलितासतो, सो तेण सत्थेण समं ताणि गहाय पत्थितो, बाहिं देउलियाए खट्टं पाडेतूण वुत्थो। अण्णस्स वाणियस्स माताए सुतं, जहा तव पुत्तो वहणे भिण्णे मओ, तं एतस्स दव्वं दिण्णं, भणितो-मा कासति कहेज्जासित्ति, ताए चिंतियं-मा अत्थो अपुत्ताए राउलं पविसिहिति, ताहे रत्तिं एत्थं एति-जा कंचि अणाहं पवेसेमि, ताहे तं पासति, पडिबोहेत्ता पवेसितो, ताहे घरं नेतूण रोवति-चिरनट्ठगोत्ति पुत्ता !, सुण्हाणं च चतुण्हं ताणं कथेति-एस देवरओ भे चिरनट्ठओ, ताओ तस्स लाइताओ, तत्थवि य बारस वरिसाणि, तत्थ एक्केकाए चत्तारि पंच चेडरूवाणि जाताणि, थेरीए भणितं-एत्ताहे निच्छुब्भतु, ताओ न तरंति उव्वरितुं, ताहिं संबलं मोदगा कता,

दानेन सम्यक्त्वे कृतपुण्यः

॥४६७॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥४६८॥

दाने कृतपुण्यः विनये पुण्यशालः

अंतो अणग्घेताण रतणाण भरिता, वरं से एतं होन्तं, ताहे वियडं पातेत्ता ताए चेव देउलिताए ओसीसए संबलं ठवेत्ता पडिगता, सो सीतलएण वाएणं संबुद्धो, पभातं च, सोऽवि य सत्थो तद्दिवसं आगतो, एयाएवि गवेसओ पत्थविओ, ताहे उट्ठवेत्ता घरं आणितो, भज्जा से संभमेण उट्ठिता, संबलं गहितं, पविट्ठा अब्भंगादीणि कीरति, पुत्तो य से तदा गुब्विणीए जातओ, सो एक्कारसवरिसो लेहसालाए आगतो रोवति-देहि कूरं माऽहं हंमीहामि, ताए से तत्तो मोदओ दिण्णो, सो तं खातंतो निग्गतो, तं रयणं पेच्छति, लेहिच्चएहिं दिट्ठं, तेहिं पूवितस्स दिण्णं दिवसं २ पूयलियाओ देहित्ति, इमोऽवि जिमितो, मोदए भिंदति, तेण दिट्ठाणि, भणति-सुंकभएण छूढाणि, तेहिं रतणेहिं तहेव पवित्थरिओ॥ सेयणतो य गंधहत्थी णदीए तंतुएण गहिओ, राया अद्दण्णो, अभओ भणति-जदि जलकंतो अत्थि तो नवरि मुच्चति, सो राउले अतिबहुगत्तेण रतणाणं चिरेण लब्भतित्ति, ताहे पडहओ निप्फेडिओ-जो जलकंतं देति तस्स राया अद्धं रज्जस्स धूतं च देति, ताहे पूविएण णीणिओ, उदगं पणासितं, तंतुओ जाणेति जहा अहं थलं नीतो, ताहे मुक्को, सो राया चिन्तेति-कतो पूवितस्स ?, ताहे पूविओ पुच्छितो-कतो एस तुज्झं ?, निब्बंधे सिट्ठं-कतपुण्णगपुत्तेण दिण्णोत्ति, राया तुट्ठो भणति-कत्तो अण्णस्स होहितित्ति ?, ताहे रण्णा से सद्दावेत्ता धूता दिण्णा, दिण्णो विसओ य, ताहे भोगे भुंजति, पच्छा गणियावि आगता, सा उवट्ठिता भणति-अहं एच्चिरं कालं तुज्झच्चएण अच्छिता, एस वेणी मेवि बद्धेल्लिया, मए य सव्व-वेतालीओ तुज्झच्चएण गवेसाविताओ, नवरि एत्थ सि दिट्ठो, ताहे अभयं भणति-एत्थ मम नगरे चत्तारि महिलाओ, तं च अहं न जाणामि, ताहे चितियं घरं कतं, लेप्पगजक्खो य कतपुण्णगसरिसो कतो, तस्स अच्चणिता घोसाविता, दो य दाराणि कताणि-एगेणं पवेसो एगेणं निप्फेडो, ताहे अभओ कतपुण्णओ य एगत्थ दारब्भासे आसणवरगता अच्छंति, ताहे कोमुती आणत्ता, पडि- ॥४६८॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥४६९॥

दाने कृत-पुण्यः विनये पुण्यशालः

मापत्रेसा अच्चणितं करेह, नगरे घोसितं-सव्वमहिलाहिं सडिक्करूवाहिं एतव्वं, ताहे लोगो एति, ताओवि आगताओ, ताहे ताणि चेडरूवाणि तस्स बप्पोत्ति उच्छंगे निविसंति, एवं नाताओ, ताहे अभएण थेरी अंबाडिता, ताओवि आणिताओ, पच्छा जहासुहं भोगे भुंजति। एवं सो विपुलभोगसमण्णागतो, वद्धमाणसामी तत्थ आगतो, समोसरणं, ताहे कतपुण्णओ भट्टारगं पुच्छति-मम संपत्ती विपत्ती किं कारणं?, भगवता कहितं-पायसदाणं, संवेगेण पव्वइतो। एवं दाणेणवि बोही होज्जा।

विणएण जहा मगहाए गोब्बरगामो, तत्थ पुप्फसालो गाहावती, भद्दा भारिया, पुत्तो जातो, नामं च से पुप्फसालसुतोत्ति, सो मातापितरं पुच्छति-को धम्मो?, तेहिं भणितं-मातापितरं सुस्सूसितव्वं-दो च्चेव देवताणि माता य पिता य जीवलोगंमि। तत्थवि पिता विसिट्ठो जस्स वसे वट्टती माता ॥ १ ॥ ताहे सो ताण पदे मुहधोवणादि विभासा, देवताणि जहा सुस्सूसति। अण्णदा तत्थ गामभोइओ आगतो, ताणि संभंताणि तस्स पाहुण्णं करेंति, ताहे सो चिंतेति-एताणवि एस देवतं, एतं पूजेमि तो धम्मो होहिति, तस्स सुस्सूसं पकतो, अण्णदा तस्स भोइतो, तस्सवि अण्णो जाव सेणियरायाणं ओलग्गिउमारद्धो, तत्थ सामी समोसढो, सेणिओ इड्ढीए निग्गओ, सामिं वंदति, इतरो सामिं भणति-अहं तुज्झं ओलग्गामि, सामिणा भणितो-अहं खु रतहरणपडिग्गहमाताए ओलग्गिज्जामि, ताण सुणणाए संबुद्धो। एवं विणएणं ॥ ॥४६९॥

विब्भंगेण ॥ विभंगेण जहा—तेणं कालेणं तेणं समएणं हत्थिणापुरं नाम नगरं, तत्थ णं सिवे नामं राया महता० वण्णओ, तस्स धारिणी नामं देवी, सिवभद्दे नामं पुत्ते होत्था, तते णं तस्स सिवस्स रण्णो अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि रज्जधुरं

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥४७०॥

विभंगे शिव-राजर्षिः

चिंतेमाणस्स अयमेतारूवे जाव समुप्पज्जित्था-अत्थि ता मे पुरापोराणाणं सुचिण्णाणं सुप्परकंताणं सुभाणं कल्लाणाणं कडाणं कम्माणं कल्लाणे फलविसेसे जण्णं हिरण्णेणं वड्ढामि सुवण्णेणं वड्ढामि जाव संतसारसावतेज्जेणं अतीव अतीव अभिवड्ढामि, तं किण्णं अहं पुरापोराणाणं सुचिण्णाणं जाव कडाणं कम्माणं एगंतसोक्खतं उवेहमाणे विहरामि ?, तं जाव ताव अहं हिरण्णेणं वड्ढामि तं चेव जाव अभिवड्ढामि जावं च मे सामन्तरायाणोवि वसे वट्टंति ताव ता मे सयं कल्लं पादु जाव जलंते सुबहुलोहकडाहिकडुच्छुयं तंपि य तावसभंडयं घडावेत्ता सिवभद्दं कुमारं रज्जे ठवेत्ता तं तावसभंडगं गहाय जे इमे गंगाकूला वाणपत्था तावसा भवंति, तं०-होत्तिया गोत्तिया जथा उववाइए जाव कट्ठसोल्लियंपिव अप्पाणं करेमाणा विहरंति, तत्थ णं जे ते दिसापोक्खिया तावसा तेसिं अंतियं मुंडे भवित्ता दिसापोक्खियतावसत्ताए पव्वइत्तए, पव्वातिएवि य णं समाणे अयमेतारूवे अभिग्गहं अभिगिण्हिस्सामि-कप्पति मे जावज्जीवाए छट्ठंछट्ठेणं अनिक्खित्तेणं दिसाचक्कवालएणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय २ सूराभिमुहस्स जाव विहरित्तएत्तिकट्टु एवं संपेहेति संपेहेत्ता कल्लं जाव घडावेत्ता सोभणंसि तिहिकरणदिवसनक्खत्तमुहुत्तंसि विपुलं असणं ४ उवक्खडावेति २ मित्तणाइ जाव खत्तिए य आमंतेति २ कतबलिकम्मे जाव सक्कारेति संमाणेति जाव आपुच्छित्ता भंडगं गहाय दिसापोक्खियतावसत्ताए पव्वइए जाव तं चेव अभिग्गहं गेण्हति २ पढमं छट्ठक्खमणउवसंपज्जित्ताणं विहरति, तते णं पारणगंसि आतावणभूमिओ पच्चोरुभति २ त्ता वाकलवत्थनियत्थे जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छति, किढिणसंकाइयं गेण्हति, गेण्हेत्ता पुरत्थिमं दिसिं पोक्खेति, पोक्खेत्ता पुरत्थिमाए दिसाए सोमो महाराया पत्थाणपत्थितं अभिरक्खतु सिवं रायरिसिं अभि० २, जाणि य तत्थ कंदाणि य मूलाणि य तयाणि य पत्ताणि य जाव हरिताणि य अणुजाणतुत्तिकट्टु पुरत्थिमं दिसं

॥४७०॥

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥४७१॥

विभंगे शिव-राजर्षिः

पसरति २ कंदादीणि गेण्हति २ किढिणसंकाइयं करेति, करेत्ता दब्भे य कुसे य समिहाओ य पत्तामोयं च गेण्हति, सयं उडयं उवागच्छति, उवागच्छेत्ता बलिं उद्देति, उवलेवणसम्मज्जणं करेति, करेत्ता दब्भकलसहत्थगते गंगाए उवागच्छाति, जलमज्जणं करेति, आयंते चोक्खे सुतिभूते देवतापितिकतकज्जे सदब्भकलसहत्थगते उडयं उवागच्छति, दब्भेहि य कुसेहि य वालुयाए य वेदिं रएति, सरएणं अरणिं मथेति अग्गिं पाडेति समिहाकट्ठाइं पक्खिवति अग्गिं उज्जालेति अग्गिस्स दाहिणे पासे ससंगाइं समादधे, तं०-सकहं वक्कलं ठाणं सज्झाभंडं कमंडलुं दंडदारुं तवप्पाणं, अह ताइं समितो समादधे मधूण य घतेण य तंदुलेहि य अग्गिं हुणति चरुं साहेति बलिं विस्सदेवं करेति अतिहिपूयं करेति, ततो पच्छा अप्पणा आहारेति । ततो दोच्चं छट्ठक्खमणं, एवं जथा पढमं, नवरं दाहिणं दिसिं पोक्खेति, जमे राया, सेसं तं चेव । एवं तच्चं, दिसा पच्छिमा राया वरुणो। चउत्थं उत्तरा दिसा वेसमणो महाराया । ततेणं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं दिसाचक्कवालएणं तवोकंमेणं जाव आयावेमाणस्स पगतिभद्दताए जाव विणीतताए अण्णया कदायी तदावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ईहा-वूहमग्गणगवेसणं करेमाणस्स विभंगे नामं अण्णाणे समुप्पण्णे, से णं तेणं पासति अस्सिं लोए सत्त दीवे सत्त समुद्दे, तेण परं न जाणति, तते णं से रायरिसी हत्थिणापुरे णगरे सिंघाडगातिय जाव पहेसु अण्णमण्णस्स एवं आइक्खइ- एवं खलु देवाणुप्पिया! अस्सिं लोए सत्त दीवा सत्त समुद्दा, तेण परं दीवा य सागरा य वोच्छिण्णा, तते णं बहुजणो अण्णमण्णस्स एवं आतिक्खति- एवं खलु तं चेव जाव तेण परं वोच्छिण्णा, से कहमेतं मण्णे एवं ? । ॥४७१॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढो, जाव परिसा पडिगता, तेणं कालेणं तेणं समएणं गोतमो जाव अडमाणो बहुजणस्स

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥४७२॥

विभंगे शिव-राजर्षिः

सद्दं निसामेति, तं चेव, तते णं गोतमे जातसड्ढे भगवंतमाह-से कहमेतं भंते ?, भगवानाह-एवं खलु गोतमा ! तस्स सिवस्स सव्वं भाणितव्वं जाव तं मिच्छा, अहं पुण गोतमा ! एवमाइक्खामि--जंबुद्दीवादीया दीवा लवणादीया समुद्दा, संठाणतो एगविधे, वित्थारतो अणेगविधविहाणो दुगुणा दुगुणं पडुप्पाएमाणे २ एवं जहा जीवाभिगमे जाव सयंभुरमणपज्जवसाणा अस्सिं तिरियलोके असंखेज्जा दीवसमुद्दा समणाउसो !, तते णं से परिसा एयमट्ठं सोच्चा हट्ठा भगवं वंदति जाव पडिगता। तते णं बहुजणो अण्णमण्णस्स एवं आइक्खति-जण्णं सव्वं भाणितव्वं जाव समणाउसो!, ततेणं से सिवे एतमट्ठं निसामित्ता संकिते जाव कलुसमावण्णे यावि होत्था, ततेणं विब्भंगे खिप्पामेव परिवडिते, ततेणं तस्स अब्भत्थिए समुप्पज्जित्था- एवं खलु समणे भगवं जाव इह सहसंबवणे उज्जाणे विहरति, तं गच्छामि णं सामिं वंदामि पज्जुवासामि, एतं णे इहभवे परभवे य जाव भविस्सतित्तिकट्टु जाव सव्वं भंडोवगरणं गहाय जेणेव भगवं तेणेव उवागच्छति, तिक्खुत्तो वंदति, वंदित्ता नच्चासण्णे जाव पंजलिकडे पज्जुवासति, ततेणं भगवता धम्मे कहिते, ततेणं सिवे धम्मं सोच्चा जहा खंदओ उत्तरपुरत्थिमं जाव तं सव्वं एडेति,सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेति, एवं जहा उसभदत्तो तहेव पव्वतिओ, तहेव एक्कारस अंगाइं अधिज्जति, तहेव जाव सव्वदुक्खप्पहीणे। एवं विभंगेणं सव्वस्स लाभो।

संजोगेणं वियोगेण लंभो होज्जा। जथा दो महुराओ, तत्थ उत्तराओ वाणियओ दक्खिणं गओ, तत्थवि तत्थ्रतिमो वाणियओ, तेण से पाहुणयं कतं, ताहे ते निरंतरमित्ता जाता, अम्हं थिरतरा पीती होहित्ति जदि अम्हं पुत्तो धूता य जाति तो संजोगं करेस्सामो, ताहे दक्खिणेणं उत्तरस्स धूता वरिता, तेण दिण्णा, बालाणि, एत्थंतरे दक्खिणमहुरओ वाणियओ मतो, पुत्तो से तंमि ठाणे ठितो, अण्णदा सो ण्हाति, चउद्दिसिं सोवण्णिता कलसा, ताण बाहिं रुप्पमता ताण बाहिं तंबिता ताण ॥४७२॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥४७३॥

संयोग-वियोगयोः माधुरौ

बाहिं मट्टियामया, अण्णदा ण्हाणविही रयिता, तस्स पुव्वाए दिसाए सोवण्णिओ कलसो आगासेण नट्ठो, एवं चउदिसिंपि, एवं सव्वे णट्ठाओ, उट्ठितस्स ण्हाणपीढमवि णट्ठं, तस्स अद्धिती जाता, नाडइज्जाओ वारिताओ जाव घरं पविट्ठो, ताहे उवट्ठवितो भोयणविधी, ताहे सोवण्णियरुप्पमताणि रइयाणि, एक्केक्कं भायणं नासितुमारद्धं, ताहे सो ते णासंतए पेच्छति, जावि स मूलपाती साวि से णासितुमारद्धा, ताहे तेण गहिता, तं हत्थेण गहितं तत्तियं लग्गं, सेसं नट्ठं, ताहे सिरिघरं गतो जोएति जाव सोवि रीक्कओ, जंपि निधाणपउत्तं तंपि नट्ठं, जंपि आभरणं तंपि नत्थि, जंपि वड्ढिपउत्तं तेवि भणंति- तुमं न जाणामो, जोवि सो दासीदासवग्गो सोवि से णट्ठो, ताहे चिंतइ- पव्वइयामि, धम्मघोसाणं अंते पव्वइतो, सामाइयमादीणि एक्कारस अंगाणि अधीयाणि, तेण खंडेण हत्थगएणं कोतुहलेणं जदि पेच्छिज्जामि विहरंतो उत्तरमहुरं गओ, ताणिवि तस्स रयणाणि ससुरकुलं गयाणि, ते य कलसा, ताहे सो माधुरो उवगिज्जंतो मज्जति जाव ते आगता कलसा, ताहे सो तेहिं चेव पमज्जितो, ताहे भोयणवेलाए तं भोयणभंडगं उवट्ठवितं, जहापरिवाडीय ठितं, सोवि साधू तं घरं पविट्ठो, तस्स सत्थाहस्स धूता पढमजोव्वणे वट्टमाणी वीयणगं गहाय अच्छति, ताहे सो साधूवी भोयणभंडगं पेच्छाति, सत्थवाहेण से भिक्खं नीणावितं, गहितेवि अच्छाति, ताहे सत्थाहो भणति- किं भगवं! एतं चेडिं पलोएह ?, ताहे सो भणति-नत्थि ममं चेडीय पयोयणं, भंडगं पलोएमि, ताहे पुच्छति- कतो एतस्स तुज्झ आगमो ?, सो भणति- अज्जगपज्जगागतं, तेण भणितं- सब्भावं साहह, तेण भणितं- ममं ण्हातंतस्स एवं चेव ण्हातविधी उवाट्ठिता, एवं सव्वाणिवि, जेमणवेलाए भोयणविधी जाव सिरिघराणि भरिताणि, निक्खेवाणिवि दिट्ठाणि, अदिट्ठपुव्वा य धारणया आणेत्ता देंति, ताहे सो भणति-एतं सव्वं मम आसी, किंत्थ ?, ताहे कहेति सो ण्हाणादी, जदि न पत्तियासि तो इमं पादीखंडं ॥४७३॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥४७४॥

व्यसने गंगदत्तः

पेच्छ जाव ढोइतं, चडत्ति लग्गं, पितुणो य नामं साहति, ताहे नातं- एस सो जामातुओ, ताहे सो उट्ठेत्ता अवतासेतूणं परुण्णो, पच्छा भणति-एयं सव्वं तदवत्थं अच्छति, अच्छह, एसा तव पुव्वादिण्णा चेडी, सो भणति-पुरिसो वा पुव्वं कामभोगे विप्पजहति, कामभोगा वा पुव्वं पुरिसं विप्पजहंति, ताहे सोऽवि संवेगमावण्णो, ममंपि एमेव विप्पजहिस्सति ?, ताहे सो विप्पजहितो, एवं ते संजोगविप्पयोगेणं ।

वसणेणवि होज्जा, दो भाउगा सगडेण वच्चंति, एगा य यमलुंडी सगडवज्जए लोलति, महल्लेण भणितं-उव्वत्तेहि भंडीं, इतरेण वाहिया भंडी, सा सण्णी सुणाति, ताहे चक्केण छिण्णा मता इत्थी जाता हत्थिणापुरे नगरे, सो महत्तरओ पुव्विं मरित्ता तीसे पोट्टे आयातो, पुत्तो जातो, इट्ठो, इतरोवि मतो, तीए चेव पोट्टे आताओ, जं चेव उववण्णो तं चेव सा चिंतेति--सिलं व हानिज्जामि, गब्भपाडणेऽवि ण पडति, एवं सो जातो, ताहे ताते दासीहत्थे दिण्णो, जहा छड्डेह, उच्छाइओ, पाड्डितो, एसो सेट्ठिणा णीणिज्जंतो दिट्ठो, ताए से सिट्ठं, तत्थ तेण अण्णाए दासीए दिण्णो, सो तत्थ संवड्ढति, तत्थ महल्लस्स नामं रायललितोत्ति, इतरस्स गंगदत्तो, सो महल्लो जं किंचि लभति तत्तो तस्सवि देति, तीसे पुण अणिट्ठो, जहिण्णं पेच्छति तहिं कट्ठेण वा पत्थरेण वा आहणति, पच्छा अण्णदा इंदमहो जातो; ताहे पिता से भणति--आणेह तं अप्पसारितं भुंजिहिति, ताहे सो आणिओ, तेणं आसंदगस्स हेट्ठा कतो, ओहाडियओ जेमाविज्जति, ताहे किहवि दिट्ठो, ताहे गहाय कड्ढिऊणं बाहिं चंदणियाए पविट्ठो, ताहे सो तं ण्हाणे रोवयति य । एत्थंतरा साधू समुदाणस्स अतिगतो, ताहे सो पुच्छति--भगवं ! अत्थि पुत्तो मातुयाए अणिट्ठो भवति ?, ॥४७४॥ हन्ता भवति, किह पुण ?, ताहे भणति—यं दृष्ट्वा वर्धते क्रोधः, स्नेहश्च परिहीयते। स विज्ञेयो मनुष्येण, एष मे पूर्ववैरिकः॥१॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥४७५॥

व्यसनेन सामायिकलाभे गंगदत्तः उत्सवेनाभीराः

यं दृष्ट्वा वर्धते स्नेहः, क्रोधश्च परिहीयते । स विज्ञेयो मनुष्येण, एष मे पूर्वबांधवः ॥ २ ॥ ताहे सो भणति—भगवं! एतं पव्वावेध?, बाढंति विसज्जितो, ताहे सो पव्वावितो, तेसिं आयरियाण य पासे मायावि से णेहेण पव्वइतो, ते साधू ईरियासमिता अणिस्सितं तवं करेंति, ताहे सो तत्थ निदाणं करेति-जदि अत्थि इमस्स फलं तो आगमेस्साणं जणनयणाणंदणो भवामि, निदाणं करेति, घोरं च तवं करेति, ताहे कालगतो देवलोकं गतो, चुतो वसुदेवपुत्तो वासुदेवो जातो, इतरोऽवि बलदेवो, एवं तेण वसणेणं सामाइयं लद्धं ॥

उस्सवे जहा पच्चांतियाणि आभीराणि, ताणि साहूण पासे धम्मं सुणेंति, ताहे देवलोगे वण्णेति, एवं तेसिं अत्थि तंमि धंमे बुद्धिः, अण्णदा कदाइ इंदमहे वा अण्णम्मि वा उस्सवे ताणि णगरिं गताणिं, जारिसा बारवती, तत्थ लोगं पेच्छंति मंडियपसाहियं सुगंधविचित्तणेवत्थं, ताणि तं दट्ठूण भणति-एवं एस देवलोगो जो सो तदा साहूहिं वण्णितो, एत्ताहे जदि वच्चामो तो सुंदरतरं करेमो जा अम्हेवि देवलोगे उववज्जामो, ताहे ताणि गताणि साहंति तेसिं साधूणं--जो तुब्भेहिं अम्हं कहितो देवलोको अम्हेहिं पच्चक्खं दिट्ठो, ताहे ते भणंति-न तारिसो देवलोगो, अण्णारिसो, ततो अणंतगुणो, ताहे ताणि अब्भहियजतिहरिसाणि पव्वइताणि, एवं उस्सवेण सामाइयलंभो ॥

इड्ढित्ति, तेणं कालेणं तेणं समएणं दसण्णपुरं नाम नगरं होत्था रिद्धत्थिमियसमिद्धं मुदितजणुज्जाणजाणवदं आइण्णजणमणूसं हलसतसहस्ससंकट्ठविकट्ठलट्ठपण्णत्तसेतुसीमं कुक्कुडसंडेययगामगोउलइक्खुजवसालिमालिणीयं गोमहिसगवेलकप्पभूतं आयारवन्त-

॥४७५॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक-चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥४७६॥

ऋद्ध्या दशार्णभद्रः

चेतियजुवतीसंनिविट्ठबहुलं उक्कोडितपावगंठिभेदयभडतक्करखंडरक्खरहितं खेमं निरुवद्दुतं सुभिक्खं वसित्थसुहावासं अणेगकोडी-कुडुंबियाइण्णं निव्वुतसुहं णंदणवणसण्णिभप्पकासं उव्विद्धविरलगंभीरखाइयफलिहं चक्कगयामुसलमुसुंढिओरोहसतग्घिजमलक-वाडघणदुप्पवेसं धणुकुडिलवंकपागारपरिक्खित्तं कविसीसयवट्टरइतसंठितचिरायमाणअट्टालयचरियदारगोपुरतोरणउण्णतसुविभत्तरा-यमग्गं छेयायरियरयितदढफलिहइंदकीलं विवणिवणिछेयसिप्पियाइण्णनिव्वुतसुहं सिंघाडयतियचउक्कचच्चरपणियावणविविहवे-सपरिमंडियं सुरम्मं नरवतिपविइण्णमहापहं अणेकनरतुरयमत्तकुंजररहपहकरसीयसंदमाणियाइण्णजाणजुग्गं विमउलनवनलिण-सोभितजलं पंडरवरभवणसंणिवहितं उत्ताणयनयणपेच्छणिज्जं पासादीयं दरिसणज्जं अभिरूवं पडिरूवं ॥ तस्स णं दसण्ण-पुरस्स नगरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे दसण्णकूडे नामं पव्वते होत्था, तुंगे गगणतलमणुलिहंतसिहरे नाणाविहरुक्ख-गुच्छगुम्मलतावल्लियपरिगते हंसभिगमयूरकोंचसारसचक्कागमयणसालकोइलकुलोवगीते अणेकतडकडगविसमउज्झरपवातपब्भार-सिहरपउरे अच्छरगणदेवसंघविज्जाहरामिहुणसंविभिण्णे निच्चुण्णए दसण्णवरवीरपुरिसतेलोक्कबलवगस्सासमे सुभगे पियदंसणे सुरूवे पासादीये ॥ तस्स णं पव्वतस्स अदूरसामंते णंदणवणे णामं वणसंडे होत्था, से णं किण्हे किण्होभासे एवं नीले हरिते सीते निद्धे जाव तिव्वे तिव्वोभासे किण्हे किण्हच्छाते घणकडितकंकडच्छाए रम्मे महामेहणिउरुंबभूते सव्वोउयपुप्फफलसमिद्धे रम्मे णंदणप्पगासे पासादीए ॥ तत्थ णं पादवा मूलवंतो एवं कंद० खंद० तया० सालप्पवालपत्तपुप्फफलबीयवंतो- मूले कंदे खंधे तया य साले तथा पवाले य । पत्ते पुप्फे य फले बीये दसमे तु नातव्वे ॥ १ ॥ अणुपुव्वसुजातरुइलवट्टभावपरिणता एकखंधी अणेगसाला अणेगसाहप्पसाहविडिमा अणेगनरवामसुप्पसारितभुजागेज्झघणविउलवट्टखंधी पादीणपडिणायतसाला उदीणदाहिण-

॥४७६॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥४७७॥

ऋद्धया-दशार्णभद्रः

विच्छिण्णा ओणतणतपणतविप्पधाइतओलंबमाणसाहप्पसाहविडिमा अवायीणपत्ता अणुदीणपत्ता अच्छिद्दपत्ता अविरलपत्ता निद्धूतजरढपंडुपत्ता नवहरितभिसंतपत्ता, भारंधकारसस्सिरिया उवणिग्गततरुणिपत्तपल्लवकोमलकिसलतचलंतउज्जलसुकुमाल-पवालसोभितवरंकुरग्गसिहरा निच्चं कुसुमिता निच्चं मोरिया निच्चं लवइता निच्चं थवइता निच्चं गोच्छिता निच्चं जमलिता निच्चं जुवलिया निच्चं विणमिया निच्चं पणमिता निच्चं कुसुमितमाइतलवइयथवइयतगुलुइतगोच्छितजमलितजुवलिताविणमि-तपणमितसुविभत्तपिंडमंजरिवडंसयधरा सुकबरहिणमदणसालकोइलमणोहरा रइतमत्तछप्पयकोरंटयाभिंगारगकोणालजीवंजीवकनंदि-मुहकविलपिंगलक्खयकारंडकचक्कवायकलहंससारसअणेगसउणगणमिहुणवितरितसद्दुण्णइतमधुरसरनादिता सुरंमा संपिंडितद-रितभमरमधुकारिपहयरिपरिलेन्तमत्तछप्पदकुसुमासवलोलमधुकरिगणगुमुगुमेन्तगुंजतदेसभागा अब्भंतरपुप्फफला बाहिरपत्तोच्छ-ण्णा निरोदया सादुफला अकंटया णाणाविहगुच्छगुंमंमंडवयरंमसोभितविचित्तसुहसेतुकेतुबहुला वावीपोक्खरिणीदीहियासु य सुणिवे-सितरंमजालघरया पिंडिमणीहारिमं सुगंधिं सुहसुरभिमणहरं च महता गंधद्धणिं मुयंता अणेगसगडरहजाणजुग्गगोल्लिथेल्लियसीय-संदमाणियहरिसोदणा सुरंमा पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥ तस्स णं वणसंडस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं महं एगे असोगवरपादपे होत्था, दूरोगतमूलकंदवट्टलट्ठसंठितसिलिट्ठघणमसिणनिद्धनिव्वणसुजातनिरुवहओविद्धपवरखंधी अणेकनरपवर-भुयगेज्झे कुसुमभरसमोनमंतपत्तलविसालसाले महुकरिभमरगणगुमगुमाइतनिलेंतउड्डेंतसस्सिरीए णाणासउणगणमिहुणसुमधुरकण्ण-सुहपलेंतसद्दपउरे कुसविकुसविसुद्धरुक्खमूले पासादीये दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे। से णं असोगवरपादवे अण्णेहिं बहूहिं तिल-एहिं लउसेहिं छत्तोदएहिं सिरीसेहिं सत्तिवण्णेहिं दहिवण्णेहिं लोध्धेहिं धएहिं चंदणेहिं अज्जुणेहिं निव्वेहिं कुडएहिं कलंबेहिं भव्वेहिं

॥४७७॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक-चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥४७८॥

पणसेहिं दालिमेहिं सालेहिं तालेहिं तमालेहिं पियएहिं पियंगूहिं पारेवएहिं रायरुक्खेहिं णंदिरुक्खेहिं सव्वतो समंता संपरिक्खित्ते, ते णं तिलता जाव णंदिरुक्खा कुसविकुसविसुद्धरुक्खमूला मूलवंतो जाव बीयवंतो अणुपुव्वसुजातरुयिलवट्टभावपरिणता सोभितवरंकुरग्गहिरा निच्चं कुसुमिता जाव वडेंसयग्गधरा सुतबरहिणमदणसालकोइल एवमादि जथा वणसंडपादवा जाव अभिरूवा। ते णं तिलया जाव नंदिरुक्खा अण्णाहिं वहूहिं पउमलताहिं नागलताहिं असोगलताहिं चंपयलताहिं चूतलयाहिं वणलताहिं वासंतियलताहिं अतिमुत्तयलताहिं कुंदलताहिं सोमलताहिं सव्वतो समंता संपरिक्खित्ता, ताओ णं पउमलताओ जाव समं० लताओ निच्चं कुसुमिताओ जाव वडिंसयधरीओ संपिंडितदरितभमरमधुकरीपहकरपरिलेंतमत्तछप्पदकुसुमासवलोलमहुकरिगणगुमगुमेन्तगुंजंतदेसभागाओ संपिंडियनिहारिमं जाव मुयंतीओ पासातीयाओ जाव पडिरूवाओ।तस्स णं असोगवरपादवस्स उवरिं अट्ठट्ठमंगलगा पण्णत्ता, तंजथा- सोत्थिय सिरिवच्छ नंदियावत्त वद्धमाणय भद्दासण कलस मच्छ दप्पण सव्वरतणामया पासादीया जाव पडिरूवा। तस्स णं असोगवरपादवस्स उवरिं बहवे किण्हचामरज्झया, एवं नीललोहितहालिद्दसुक्किल्लचामरज्झया अच्छा सण्हा रुप्पवट्टवइरामयदंडा जलयामलगंधिया सुरूवा। तस्स णं असोगवरपादवस्स उवरिं बहवे छत्तादिछत्ता पडागातिपडागाओ घंटाजुयला चामरजुयला उप्पलहत्थया पउमहत्थया एवं कुमुयणलिणसुभगसोगंधियपुंडरीयहत्थया सतपत्तसहस्सपत्तहत्थया सव्वरयणामया अच्छा जाव सउज्जोया पासादीया। तस्स णं असोगवरपादवस्स हेट्ठा एत्थ णं महेगे पुढविसिलापट्टए पण्णत्ते, ईसीखंधसमल्लीणे विक्खंभुस्सेहसुप्पमाणे कण्हे अंजणयघणकुवलयहलधरकोसेज्जसरिसआकासकेसकज्जलकक्केतणइंदनीलरिट्ठगअसिकुसुमप्पगासे भिंगंजणभंगभेदरिट्ठयनीलगुलियगवलातिरेगभमरनिकुरंबभूते जंबुप्फलअसणकसणबंधणनीलुप्पलपत्तनिगरमरगतसासगगणहितरासिवण्णे

ऋद्धया दशार्णभद्रः

॥४७८॥

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

श्री
आवश्यक
चूर्णौ
उपोद्घात
निर्युक्तौ

॥४७९॥

ऋद्ध्या
दशार्णभद्रः

निद्धोप्पण्णे अज्झुसिरे रूवयपडिरूवदरिसणिज्जे आयंसतलोवमे सुरम्मे सीहासणसंठिते सुरूवे मुत्ताजालखइयंतकण्णे आयीणकरुय-
बूरणवणीततूलतुल्लफासे सव्वरतणामए अच्छे सण्हे लण्हे घट्ठे मट्ठे नीलइए निम्मले निप्पंके निक्कंकडच्छाए सप्पभे समोरिईए सउ-
ज्जोवे जाव पडिरूवे। तत्थ णं दसण्णपुरे नगरे दसण्णभद्दे नामं राया होत्था, महताहिमवंतमहन्तमलयमंदरमहिंदसारे अच्चंतवि-
सुद्धरायकुलवंससमप्पसूते निरंतरं रायलक्खणविराइतंगमंगे बहुजणबहुमाणपूजिते सव्वगुणसमिद्धे खत्तिए मुदिते मुद्धाभिसित्ते माउ-
पितुसुजाते दयामते सीमंकरे सीमंधरे मणुस्सिंदे जणवदपिता जणवदपुरोहिते सेउकरे केउकरे णरवरे पुरिसवरे पुरिससीहे पुरिसवग्घे पुरि-
सासीविसे पुरिसवरपुंडरीए पुरिसवरगंधहत्थी अड्ढे दित्ते वित्ते विच्छिण्णविउलभवणसयणासणजाणवाहणाइण्णे बहुधणबहुजातरूवरयते
आयोगपयोगसंपउत्ते विच्छड्डितपउरभत्तपाणे बहुदासीदासगोमहिसगवेलयप्पभूते पडिपुण्णजंतकोसकोट्ठागारायुधधरे बलवदुब्बल-
पच्चामित्ते ओहयकंटयं निहतकंटयं मलियकंटयं उद्धियकंटयं अप्पडिकंटयं अकंटयं ओहयसत्तुं उद्धितसत्तुं निज्जितसत्तुं पराजितसत्तुं
ववगतदुब्भिक्खचोरमारिभयविप्पमुक्कं खेमं सिवं सुभिक्खं पसंतडिंबडवरं फीतं पुरो जाणवदं रज्जं पसासेमाणे विहरति। तस्स णं
दसण्णभद्दस्स रण्णो मंगलावती नामं देवी होत्था सुकुमालपाणिपादा अधीणपडिपुण्णपंचेंदियसरीरा लक्खणवंजणगुणोववेता
माणुम्माणप्पमाणपडितुज्झा(पुण्णा)सुजातसव्वंगसुंदरंगी ससिसोम्माकारकंतपियदंसणा सुरूवा करतलपरिमितपसत्थतिवलीयवलि-
तमज्झा कुंडलुल्लिहियपीणगंडलेहा कोमुदिरयणिगरविमलपडिपुण्णसोम्मवदणा सिंगाराकारचारुवेसा संगतगतहसितभणितचिट्ठित-
विलाससललितसंल्लावणिपुणजुत्तोवयारकुसला सुंदरथणजहणवदणकरचरणणयणलायण्णरूयजोव्वणविलासकलिता दसण्णभद्देण रण्णा
सद्धिं अणुरत्ता अविरत्ता इट्ठे सद्दप्फरिसरसरूवगंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणा विहरति। तस्स णं दसण्ण-

॥४७९॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

ऋद्धया-दशार्णभद्रः

भद्दस्स रण्णो एगे पुरिसे विउलकयवित्ती भगवतो पउत्तिवाउए तद्देवसियं पउत्तिं निवेदेति, तस्सणं पुरिसस्स बहवे अण्णे पुरिसा दिण्णभतिभत्तवेतणा भगवतो पउत्तिवाउया भगवतो तद्देवासियं पउत्तिं निवेदिंति । तेणं कालेणं तेणं समएणं दसण्णभद्दो राया बाहिरियाए उवट्ठाणसालाए अणेगगणणायगदंडणायगराईसरतलवरमाडंबियकोडुंबियमंतिमहामंतिगणकदोवारियअमच्चचेढपीढमद्दनगरनियमसेट्ठिसेणावतिसत्थवाहदूतसंधिपाल सद्धिं संपरिवुडे विहरति ।

तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे आदिकरे तित्थकरे सहसंबुद्धे, पुरिसुत्तमे पुरिससीहे पुरिसवरपुंडरीए पुरिसवरगंधहत्थी, लोगुत्तमे लोगणाहे लोगप्पदीवे लोगप्पज्जोतकरे, अभयदए चक्खुदए मग्गदए जीवदए सरणदए(बोहिदए), धम्मदए धम्मदेसए धम्मनायगे धम्मसारही धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टी, दीवो ताणं सरणं गती पइट्ठा अप्पडिहतवरनाणदंसणधरे वियट्टछउमे अरहा जिणे केवली सव्वण्णू सव्वदरिसी सत्तुस्सेहे एवं जथा निक्खमणे जाव तरुणरविकिरणसरिसातिये अणासवे अममे अकिंचणे छिण्णगंथे निरुवलेवे वत्रगतपेम्मरागदोसमोहे निग्गंथस्स पवयणस्स देसए णायए पतिट्ठावए समणगणपती समणगणवंदपरिवड्ढए चोत्तीसबुद्धातीसेसपत्ते पणतीससच्चवयणातिसेसपत्ते आगासगएणं छत्तेणं आगासफलियामएणं सपादपीठेणं सीहासणेणं सेतवरचामराहिं उद्धुव्वमाणीहिं२ पुरतो धम्मज्झएणं पकढिज्जमाणेणं अणेगाहिं समणअज्जियासाहस्सीहिं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेण विहरमाणे दसण्णपुरस्स नगरस्स बहिता उत्रणगरग्गामं उवगते नगरं समोसरितुकामे। तते णं से पउत्ति० वेसाहिं कणगगिरिसंसिताहिं उप्पतित्तुरियचवलमणपवणजइणसिग्घवेगाहिं विणीताहिं हंसवहुगाहिं चेव कलितो णाणामणिकणगरतणमहरिहतवणिज्जुज्जलविचित्तदंडाहिं वत्तीयाहिं नरपतिसरिससमुदयप्पमासणगरीहिं महग्घवरपट्टणुग्ग-

॥४८०॥

प्रत सूत्रांक [-] दीप अनुक्रम [-]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता...........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥४८१॥

ऋद्ध्या दशार्णभद्रः

ताहिं समिद्धरायकुलसेविताहिं कालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कधूवडज्झंतसुरभिमघमघेंतगंधुद्धुताहिरामाहिं सललिताहिं उभओ पासिंपि चामराहिं उक्खिप्पमाणाहिं सुहसीतलवातवीजितंगे मंगलजयसद्दकतालोए अणेगगणणायगजावसंपरिवुडे धवलमहामेहनिग्गते विव गहगणदिप्पंतरिक्खतारागणाण मज्झे ससिव्व पियदंसणे णरवती मज्जणघराओ पडिणिक्खमति, २ जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव आभिसेक्के हत्थिरयणे तेणेव उवागच्छति, अंजणगिरिकूडसण्णिभं गयवतिं नरवति दुरूढे। तते णं तंमि तस्स दूरूढस्स समाणस्स तप्पढमताए इमे अट्ठट्ठ मंगलगा पुरतो अधाणु०, एवं महिंदज्झयदेवादिवज्जं जथा सामिस्स निक्खमणे जाव पुरिसवग्गुरापरिक्खित्ता दसण्णभद्दस्स रण्णो पुरतो य मग्गतो य पासतो य अहाणुपुव्वीए संपट्ठिता, तते णं तस्स पुरतो महं आसा आसवारा जाव रहसंगेल्ली अथा०, ततेणं दसण्णभद्दे राया हारोत्थयसुकतरइतवच्छे कुंडलउज्जोतिताणणे मउडदित्तसिरए णरसीहे णरवती णरिंदे णरवसभे मरुयरायवसभरायकप्पे अब्भहितं रायतेयलच्छीए दीप्पमाणे हत्थिखंधवरगते जाव से कोरंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं सेतवरचामराहिं उद्धुव्वमाणीहिं सव्विड्डीए जाव सव्वारोहेणं सव्वपुप्फ जाव णिग्घोसणाइतरवेणं दसण्णपुरं नगरं मज्झंमज्झेणं जाव दसण्णकूडे पव्वते जणेव सामी तेणेव पहारेत्थ गमणाए। ततेणं तस्स तथा निग्गच्छमाणस्स सिंघाडगजाव पहेसु बहवे अत्थत्थिता कामत्थिता जाव घंटियगणा ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुण्णाहिं मणामाहिं मणाभिरामाहिं ओरालाहिं कल्लाणाहिं सिवाहिं धण्णाहिं मंगल्लाहिं सस्सिरीयाहिं हिययगमणिज्जाहिं हिययपल्हादणिज्जाहिं अट्ठसतियाहिं अपुणरुत्ताहिं मितमहुरगंभीराहिं गाहियाहिं वग्गूहिं अभिणंदंता य अभित्थुणंता य एवं वयासी- जय जय णंदा! जय जय भद्दा! अजितं जिणाहि जितं पालयाहि जितमज्झंमि त वसाहि तं देव! सयणमज्झे, इंदो विव देवाणं चंदो विव ताराणं चमरो विव असुराणं धरणो

॥४८१॥

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

श्री
आवश्यक
चूर्णौ
उपोद्घात
निर्युक्तौ

॥४८२॥

ऋद्ध्या
दशार्णभद्रः

विव नागाणं भरहो विव मणुयाणं अणहसमग्गो हट्ठतुट्ठो परमाउं पालयाहि इट्ठजणसंपरिवुडो बहूइं वासाइं बहूइ वाससयाइं बहूइं वाससहस्साइं दसण्णपुरस्स णगरस्स अण्णेसिं च बहूणं गामागर जाव सण्णिवेसाणं राईसरसत्थवाहपभितीणं च आहेवच्चं जाव आणाईसरसेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे विहराहित्तिकट्टु जयजयसद्दं पयुंजंति। तते णं से दसण्णभद्दे राया वयणमालासहस्सेहिं अभिथुव्वमाणे २ जाव दसण्णपुरं नगरं मज्झंमज्झेणं जेणेव दसण्णकूडे पव्वते जाव तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता छत्तादीए तित्थगरातिसए पासति, पासित्ता हत्थिरतणं विट्ठंभेति २ ततो पच्चोरुभति, पच्चोरुभित्ता अवहट्टु पंच रायककुधाइं, तं०- खग्गं जाव वीयणीयं, एगसाडियं उत्तरासंगं करेति, करेत्ता आयंते चोक्खे परमसुइभूते अंजलिमउलियहत्थे सामिं पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगच्छति, तं०- हत्थिविक्खं० जाव एगत्तीभावकरणेणं, जेणेव सामी तेणेव उवागच्छति, सामिं तिक्खुत्तो आदाहिण जाव करेति जाव तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासइ।

तते णं ताओ मंगलावतिपामोक्खाओ देवीओ अंतपुरवरगताओ सतपागसहस्सपागेहिं तेल्लेहिं अब्भंगिताओ समाणीओ सुकुमालपाणिपादाहिं इत्थियाहिं चउव्विहाए सुहपरिकम्मणाए संवाहणाए संवाधिया समाणा बाहुगसुभगसोवत्थियवद्धमाणगपूसमाणगजयविजयमंगलसतेहिं अभिथुव्वमाणी २ चउहिं उदएहिं मज्जाविया समाणा अंगपरालूहितांगीओ महरिहभद्दासणे निविट्ठाओ कप्पितच्छेदायरियरइतगत्ताओ महरिहगोसीससरसरत्तचंदणाउवरिवण्णगातसरीराओ महरिहपडसाडपरिहिताओ कुंडलउज्जोविताणणाओ हारोत्थयसुकतरइयवच्छाओ मुद्दियापियलंगुलीओ आविद्धमणिसुवण्णसुत्ताओ पालंबपलंबमाणसुकतपडउत्तरिज्जाओ कप्पितच्छेदायरियरयिअऽम्मातमल्लदामाओ णाणाविहकुसुमसुरभिमघमघितीओ महता गंधद्धणिं मुयंतीओ भोगलच्छिउवगूढसव्व-

॥४८२॥

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥४८३॥

ऋद्धया दशार्णभद्रः

देहाओ बहूहिं खुज्जाहिं चिलायाहिं वडाभिताहिं वामणियाहिं पप्परीहिं बउसियाहिं जोणियाहिं पण्हवियाहिं ईसिणियाहिं थरुणियाहिं लासियाहिं देविलीहिं सिंहलीहिं आरबीहिं पुलिंदीहिं पक्कणीयाहिं बहलीहिं मुरुंडीहिं सबरीहिं पारसीहिं णाणादेसिवेसपरिमंडिताहिं इच्छितचिंतितपत्थियवियाणियाहिं सदेसणेवत्थगहितवेसाहिं विणीताहिं चेडियाचक्कवालवरिसधरकंचुइज्जमहयरगवंदगपकिन्नाओ अंतेउराओ निग्गच्छंति २ जेणेव ताइं जाणाइं तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता जाव पाडिएक्कं २ जुग्गाइं जाणाइं दुरूहंति २ नियतपरियाल सद्धिं संपरिवुडाओ नगरं मज्झंमज्झेणं जाव सामेंतेणेव उवागच्छंति, छत्तादीए जाव पासित्ता जाणादीणि विट्ठंभंति, तेहिं पच्चोरुभित्ता पुप्फतंबोलमादीयं पाहाणाउ पविसज्जेंति २ आयंता जाव पंचविहेणं अभिगच्छंति, तं०-सच्चित्ताणं दव्वाणं विउसरणताए एवं जहा पुव्विं जाव एगत्तीभावेणं जेणेव से भगवं तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता समणं भ० म० तिक्खुत्तो आदाहिणं पदाहिणं करेंति करेत्ता वंदंति णमंसंति २ दसण्णभद्दरायं पुरतो काउं ठिताओ चेव सपरिवाराओ सुस्सूसमाणीओ णमंसमाणीओ अभिमुहाओ य विणएण पंजलियडाओ तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासंति ॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं सक्के देविंदे जाव विहरति, ततेणं दसण्णस्स रण्णो इमं एयारूवं अणुट्ठितं जाणित्ता एरावणं हत्थिरायं सद्दावेति २ एवं वयासि-गच्छाहि णं भो तुमं देवाणुप्पिया! चोवट्ठिं दंतिसहस्साणि विउव्वाहि, एगमेगाए बोंदीए चोवट्ठिं अट्ठ दन्ताणि अट्ठ सिराणि विउव्वाहि, एगमेगे दंते अट्ठट्ठ पुक्खरिणीओ, एगमेगाए पुक्खरिणीए अट्ठट्ठ पउमाणि सतसहस्सपत्ताणि, एगमेगे पउमपत्ते दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवज्जुत्तीं दिव्वं देवाणुभागं दिव्वं बत्तीसतिविहं नट्टविहिं उवदंसेहि, पुक्खरकण्णियाए य पासादवडेंसगं, तत्थ सक्के अट्ठहिं अग्गमहिसीहिं सद्धिं जाव उग्गिज्जमाणे उवनच्चिज्जमाणे जाव पच्चप्पिणाहि, सेवि जाव तहेव करेति । तते णं से ॥४८३॥

सक्के हरिणेगमेसिं सद्दावेति, सद्दावेत्ता एवं व०- खिप्पामेव भो सभाए सुहम्माए जोयणपरिमंडलं जथा उसभसामिस्स आभिसेगे जाव सामिंतेण उवागतो। ताहे एरावणविलग्गे चेव तिक्खुत्तो आदाहिणपदाहिणं करेति, ताहे सो हत्थी अग्गपादेहिं भूमीए ठितो, ताहे तस्स हत्थिस्स दसण्णकूडे पव्वते पदाणि देवतप्पभावेण उट्ठिताणि, ताहे से णामं जातं गयत्थपतउत्ति।

तते णं से दसण्णभद्दे राया पुव्वं निग्गते पासति सक्कस्स देविंदस्स दिव्वं देविड्ढिं जाव एगमेगेसु णट्टविधिं, सक्कं च देविंदं एरावणहत्थिवरगतं सिरीए अतीव अतीव उवसोभेमाणं पासति २ विम्हिते समाणे अणिमिसाए दिट्ठीए देहमाणे चिट्ठति, ततेणं तस्स रण्णो राइड्ढी सक्कस्स देवरण्णो दिव्वेणं पभावेणं हतप्पभा जाव लुप्पप्पभा जाता यावि होत्था, तते णं सक्के देविंदे दसण्णभद्दरायं एवं वयासी—हं भो दसण्णभद्दराया! किण्णं तुमं न याणसि जथा—देविंदअसुरिंदनागिंदवंदिता अरहंता भगवंतो, तथावि णं तव इमे अज्झत्थिए-गच्छामि णं भंते भगवं महावीरं वंदए जथा ण अण्णेण केणइ, गच्छतित्ति, ततेणं से राया लज्जिते विलिए वेड्डे तुसिणीए संचिट्ठति, चिंतेति य—कतो एरिसी अम्हारिसाण इड्ढित्ति ?, अहो कएल्लओ णेण धम्मो, अहमवि करेमि, भणति-(पइण्णा) पालणं च कतं होहितित्ति सव्वं पयहिऊण पव्वइतो। एवं सामाइयं इड्ढीए लब्भतित्ति।

सक्कारेणं, एक्को धिज्जाइओ तथारूवाणं थेराणं अंतिके सोच्चा पव्वइओ समहिलो उग्गं उग्गं पव्वज्जं करेति, नवरमवरोप्परं पीतितो ओसरति, महिला मणागं धिज्जाइणित्ति गव्वमुव्वहति, मरिऊण देवलोगं गताणि, जहाउगं भुत्तं, इतो य इलावद्धनगरं, तत्थ इला देवता, तं एगा सत्थवाही पुत्तमलभमाणी उवाणति, सो चइऊण पुत्तो से जातो, इलापुत्तो नाम कतं, कलाओ अधिज्जितो, इतरावि लंखगकुले जाता, दोवि जोव्वणं पत्ताणि, अण्णदा सो तीए रूवे अज्झोववण्णो, सा मग्गिज्जंतीवि ण लब्भति, ता

॥४८४॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णी उपोद्घात निर्युक्तौ

॥४८५॥

सत्कारेण सामायिके इलापुत्रः

भणंति—जतियं तुलति तत्तियं देमो, ताणि भणंति--एसा अम्हं अक्खयणिधी, जा तादि परं सिप्पं अम्हेहि य समं हिंडति तो देमो, सो तेहिं समं हिंडाति सिक्खितो य, ताहे विवाहनिमित्तं रण्णो पेच्छणयं करेहित्ति भणितो बेण्णातडं गताणि, तत्थ राया पेच्छति संतेपुरो, सो दरिसेति, रायादिट्ठी दारियाए उवरिं, राया ण देति, साधुक्काररातं वट्टति, भणितो- लंख ! पडणं करेहि, तं च किर वंससिहरे अट्टं कट्ठं, तत्थ य दो खीलगा, सो पाउआओ आविंधति, तत्थ य मूले विगिट्ठगाओ, ततो असिखेडगहत्थगतो आगासं उप्पतित्ता खीलगा पओगणालियाए पएसेतव्वा सत्त अग्गिमोव्विद्धे काऊणं, जदि फिट्टइ तो पडितो स तथा खंडिज्जति, तेण तं कतं, रायावि दारियं पलोएति, लोएण कलकलो कतो ण य देति राया न देतित्ति, राया चिंतेति--जदि एस मरति तो णं अहं लएहामि, भणति--न दिट्ठं, पुणो करेहि, पुणोऽवि कतं, तत्थवि न दिट्ठं, ततियंपि कतं, चउत्थियाए भणितं, रंगो विरत्तो, ताहे सो इलापुत्तो वंसग्गलए ठितो चिंतेति–धिरत्थु भोगाणं, एस राया एत्तियाहिं महिलाहिं न तित्तो, एताए रंगोवजीवियाए लग्गितुं मग्गति, एताए कारणा ममं मारेतुमिच्छति, सो य उवट्ठिओ, एगत्थ सेट्ठिघरे साहुणो पडिलाभिज्जमाणे पासति सव्वालंकारविभूसिताहिं, साधू य पसन्तचित्तेण पलोएमाणे पासति, ताहे भणति--अहो धण्णा निःस्पृहा विसएसु, अहं सिट्ठिसुतो सयणं परिचइत्ता आगतो, एत्थवि एसा अवत्था, तत्थेव विरागं गतस्स केवलणाणं उप्पण्णं, ताएवि चेडीए विरागो विभासा, अग्गमहिसीएवि, रण्णोवि पुणरावत्ती, चत्तारिवि केवली जाया सिद्धा य। एवं सक्कारेण। अहवा तित्थगरादीणं देवासुरेहिं सक्कारं दट्ठूणं जथा मरिहस्स। अहवा इमेहिं कारणेहिं लंभो—

॥४८५॥

अब्भुट्ठाणे विणए० ।८-१६५॥८४८॥ अब्भुट्ठाणं आसणपरिच्चाओ, आसणत्थं वांदित्ता विणएण पुच्छति, ताहे विणीउत्ति

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥४८६॥

विनयादीनि कारणानि सामायिकस्थितिश्च

साधू कहेति, विणओ नाम अंजलिप्रग्रहप्रणिपातादिः, परक्कमो परा (मा) क्रमतीति पराक्रमः, के च परे ?, कषायादयः, अथवा साधुसमीवं चंक्रमणेन, गमनेनेत्यर्थः, साहुसेवणा जत्थ ठिता तत्थ खणविखणं सेवति, एवं लंभो सम्मदंसणस्स चरिताए मीसगस्स य। सीसो चोदेति-एवं पाठोऽस्तु 'सम्मत्तस्स तु लंभो सुतचरणे देसविरतीए' अत्रोच्यते, सुतसामाइयं मिथ्यादृष्टेः सम्यग्दृष्टेश्च भवति, चरित्राचरित्राणि तु नियमात् सम्यग्दृष्टेः, अतः श्रुतसामायिकद्वैविध्यार्थं तद्ग्रहणं न कृतं, अथवा (य) ग्रहणात्प्रत्येतव्यं, अथवा सम्यग्दर्शनं यत्र तत्र नियमात् श्रुतसामायिकं, कथं ?, उच्यते, जत्थाभिणिबोहियणाणं तत्थ सुतणाणं, अथवा आभिणिबोहियनाणग्रहणे नियमा सुतग्गहणं कयं,-एवं जिणपण्णत्ते सद्दहमाणस्स भावतो भावे। पुरिसस्साभिणिबोहे दंसणसद्दो हवति जुत्तो ॥ १ ॥ कहंति गतं। इदाणिं केच्चिरंति दारं, तस्सेवं लद्धस्स केच्चिरं अवट्ठाणं? —

सम्मत्तस्स सुतस्स य० ।८-१६६।८४९। सम्मत्तस्स य सुतस्स य जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं छावट्ठिसागरोवमा अहिता, जेण अणुत्तरेसु उक्कोसट्ठितिगो दो वारे होज्जा, इह य मणुस्साउगेण अधियाइं, तं च तिण्णि पुव्वकोडीओ वासपुहुत्ताणि वा, चरित्तसामाइयस्स जहण्णेणं समओ, उक्कोसेणं पुव्वकोडी देसूणा, विरताविरतीओ जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं देसूणा पुव्वकोडी, जेण एताणि एगभवग्गहणे, पढमबितिया णाणाभवग्गहणाणि, जेण 'इहभविए भंते ! णाणे०' आलावओ, इदाणिं णाणाजीवाणं भण्णति, तत्थ चत्तारिवि सव्वद्धं। **इदाणिं कतित्ति दारं—**

कतित्ति संखा, एत्थ तिण्णि विसेसा-पुव्वपडिवण्णगा पडिवज्जमाणगा पडिपडितित्ति वा, पडिवत्तिओ य पुव्वपडिवण्णगा पडिपडिता य होंति तेण पडिवत्ती ताव भण्णति-संमत्तस्स देसविरतीए पडिवज्जमाणगा सिय अत्थि सिय णत्थि, जदि अत्थि

॥४८६॥

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

सामायिक-वतां संख्या

||४८७||

जहण्णेण एगो वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण खेत्तपलिओवमस्स असंखेज्जतिभागे जावतिया आगासपदेसा एवतिया एगसमएणं पडिवज्जेज्जा, चरित्ताचरित्ता सम्मद्दिट्ठी असंखेज्जगुणा, सुतस्स सिय अत्थि सिय नत्थि, जदि अत्थि जहण्णेणं एगो वा दो वा तिण्णि वा उक्कोसेणं लोगसेढीए असंखेज्जतिभागे जावतिया आगासपदेसा एवतिया एगसमएणं पडिवज्जेज्जा, किं कारणं?, उच्यते, सुबहुतरा सुतं मिच्छादिट्ठिस्स, चरित्ते सिय अत्थि सिय नत्थि, जदि अत्थि एगो वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं सहस्सपुहुत्तं पडिवज्जेज्जा। इदाणिं पुव्वपडिवण्णगा संमत्ते चरित्ताचरित्ते य, ते पुण पडिवज्जमाणएहिंतो नियमा असंखेज्जगुणा तेण असंखेज्जा भण्णंति, ते जहण्णपदेवि असंखेज्जा उक्कोसपदेवि असंखेज्जा, जहण्णपदाओ उक्कोसपदे विसेसाधिया, ते पुण जावतिया एगसमएणं पडिवज्जंति ततो असंखेज्जगुणा, सुए जहण्णपदेवि उक्कोसपदेवि जावतिया एगस्स लोगागासपतरस्स असंखेज्जतिभागे लोगागासपदेसा एवतिया होज्जा, जहण्णपदातो उक्कोसपदे विसेसाधिका, ते पुण पडिवज्जमाणएहिंतो नियमा संखेज्जगुणा, पडिपडिता संमत्तचरित्तस्स मीसगस्स य जे पडिता ते नियमा अनंतगुणा, जे संसारी ते सव्वे सुतपडिपडिता, कहं?, जे मिच्छद्दिट्ठी अभविगा वा तेवि एक्कारसंगाणि पढंति, उड्डुचंगमादि वा, जे पुण जहण्णपदातो उक्कोसपदे अधिया ते चउत्थि सम्मं पडुच्च, तदा बहवे मणुया अजितसामियकाले। कतित्ति दारं गतं।

इदाणिं अंतरं, सम्मत्तस्स चरित्तस्स मीसगस्स एगं जीवं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं अवड्ढं परियट्टं देसूणं, सुतस्सवि सम्मत्तपरिगहितस्स एच्चिरं, मिच्छत्तपरिगहितस्स जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सतिकालो, णाणाजीवाणं णत्थि अंतरं महाविदेहं पडुच्च॥ इदाणिं अविरहितंति दारं, केच्चिरं विरहितो पडिवत्तिकालो अविरहितकालो य?, तत्थ अविरहितकालो पडिव-

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता..........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णिः-1

श्री आवश्यक-चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥४८८॥

ज्जिन्ताणं सुतसामाइयस्स जहण्णेणं दो समया उक्कोसेण असंखेज्जसमए निरंतरं पडिवज्जेंति, तं पुण णाणाजीवे प्रति भण्णति, ते पुण समया आवलियसमयाणं असंखेज्जतिभागे, एवं चेव संमत्तदेसविरतावि, अविरहितकाले चरित्ते जहण्णेणं दोण्णि समया, उक्कोसेणं अट्ठ समया निरंतरं पडिवत्ती । इदाणिं विरहितकालो संमत्तसुताणं—जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं सत्त अहोरत्ता, एतंमि समए न लब्भति अवरो विधी, जंमि समए एगो वा अणेगा वा पडिवण्णा संमत्तसुते तातो जहण्णेणं ततिए समए एगस्स वा अणेगस्स वा अणेगाण वा पडिवत्ती, अजहण्णेण चउत्थे वा पंचमे वा, उक्कोसेणं जाव सत्तमस्स अहोरत्तस्स चरिमो समओ, अतो परं नियमा अण्णेण पडिवज्जितव्वं, विरताविरतीए जहण्णेणं ततिए समए, उक्कोसेणं बारसण्हं अहोरत्ताणं, चारित्ते जहण्णेणं ततिए समए उक्कोसेणं पण्णरस अहोरत्ते, एवं विरहितकालो ।

इदाणिं कस्स कइ भवाणि लंभो भवेज्जा ?, सम्मत्तस्स जहण्णेणं एगं भवं, उक्कोसेण खेत्तपलितोवमस्स असंखेज्जतिभागे जावतिया आगासपदेसा एवतियाणि भवाणि लंभो भवेज्जा, एवं देसविरतीएवि जहण्णुक्कोसा लंभो, चारित्ते जहण्णेणं एक्कं भवं उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाणि अविराधेन्तो, सुते जहण्णेणं उक्कोसेणं अणंताइं, एक्कं जथा मरुदेवाए, सेसाणि जहा चित्ततरगंडियाए ।

इदाणिं आगरिसा, आकर्षणमाकर्षः, ग्रहणमोचनमित्यर्थः, ते दुविहा-एगभवग्गहणिया नाणाभवग्गहणिया य, सुतसामाइयं एगभवे जहण्णेणं एक्कसिं आगरिसेति, उक्कोसेण सहस्सपुहुत्तवाराए, एवं सम्मत्तस्सवि, देसविरतीए विरईए य जहण्णेणं एक्कसिं उक्कोसेण सतपुहुत्तं वारा, णाणाभवग्गहणिता सुतस्स जहण्णेणं दोण्णि उक्कोसेणं तं चेव सहस्सपहुत्तं असंखेज्जएणं गुणिज्जति,

सामायिक-स्यान्तरं ॥४८८॥

प्रत सूत्रांक [-] दीप अनुक्रम [-]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता...........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥४८९॥

सामायिक-स्याकर्षाः

जम्हा पलितस्स असंखेज्जतिभागमेत्त भवा सम्मत्तपरिग्गाहितस्स सामायिकस्स लंभोत्तिकाउं, जंपि सम्मदिट्ठिस्स सुतसामायिकं तस्सवि एसेव कालो, ते पुण कहं ?, एत्थ आलावओ-अत्थि णं भंते! समणा निग्गंथा कंखामोहणिज्जं कम्मं वेदेंति?, हंता अत्थि, कहं णं भंते !०, गोयमा! तेसु तेसु णाणंतरेसु चरित्तंतरेसु लिंगंतरेसु पवयणंतरेसु पावयणंतरेसु कप्पंतरेसु मग्गंतरेसु भंगंतरेसु णय-न्तरेसु वादंतरेसु पमाणंतरेसु संकिता कंखिता जाव कलुसमावण्णा वेदेंति' एवं पुव्वकोडायू मणूसा पुणो २ पडिवज्जंति। जोवि असंखेज्जवासाउओ सोवि पुव्वकोडिसेसाउओ पडिवज्जति, तस्स नत्थि आगरिसा जो खइएण उववज्जति, एवं चरित्ताचरित्तेवि, चरित्ते णाणाभव० जहण्णेणं दोण्णि उक्कोसेणं सहस्सपुहुत्तं वारा, सुते णाणाभवग्गहणिता अणंता आगरिसा एवं।

इदाणिं फासणा-॥ ८-१७६ ॥ ८५९ ॥ स्पर्शना प्राप्तिरवगाहो लंभ इत्यर्थः, संमत्तसामाइयपडिवण्णो उ जीवो लोगस्स कतिभागं फुसेज्जा ?, किं संखेज्जतिभागं० असंखेज्जतिभागं फुसति संखिज्जे भागे० असंखिज्जे भागे० सव्वं लोगं०?, एगं जीवं पडुच्च णो संखेज्जइभागं फुसति, असंखेज्जइभागं फुसति, णो संखेज्जभागे फुसति, सव्वओ लोगं वा फुसति, णाणाजीवेवि एमेव भयणाए सव्वलोगं फुसति, तं पुण केवलिसमुग्घातं प्रति, एवं चरित्तसामाइयस्सवि, छाउमत्थियसमुग्घायं प्रति एगजीवो वा सव्वजीवा वा नियमा असंखेज्जतिभाए लोगस्स फुसेज्जा, सेसेसु चउसुवि नत्थि, सुतं चरित्ताचरित्तसामाइयं च नियमा लोगस्स असंखेज्जतिभागे भोज्जा, अण्णे पुण भणंति-एगं जीवं पडुच्च संखेज्जतिभागं वा फुसति असंखेज्जतिभागं वा संखेज्जे वा भागे असंखेज्जे वा० सव्वलोगं वा, णाणाजीवे सव्वस्स लोगं फुसति, तं पुण केवलिसमुग्घातं पढमबिइयततियचउत्था भागा, वेयणादिमारणंतियसमुग्घायं प्रति पंचमभागो, केवलिसमुग्घायं प्रति अण्णतरो, एगो जीवो समोहण्णति वा ण वा, नाणाजीवाणं

॥४८९॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक-चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥४९०॥

सामायिक-वतां स्पर्शना

पुण अवस्ससमोहतका अत्थित्तिकाउं, एवं चेव देसविरतिएवि, णवरं सव्वलोगो णत्थि, एवं सुतेऽवि सव्वलोके नात्थि, चरित्तं जथा सम्मत्तं, केवलिस्स दो सामाइयगाणि संमत्तचरित्ताणि, तेण लोको सव्वो भणति, अहवा इमा अण्णा फासणविधी-लोको सत्तचोद्दसभागे कीरति हेट्ठा, उवरिं च सत्त चेव, कहं ?, रतणप्पभा जाव से उवासंतरं, एवं सव्वं पढमो भागो, एवं सेसासुवि, एते सत्त भागा, उवरिं इमा विही-रतणप्पभाए उवरिमतलाओ आरब्भ जाव सोहम्मो एस पढमो भागो, सोहम्मगाणं विमाणाणं उवरिं जाव सणंकुमारमाहिंदा बितिओ, एवं तितीओ बंभलोगलंतओ, चउत्थो महासुक्कसहस्सारो, पंचमो आणतादी, चउरो कप्पा छट्ठो, गेवेज्जा सेसो जाव लोगंतो सत्तमो, एसा विधी, अहवा रतणप्पभादीपुढवी सत्त पतराणि कता उवरुवरिं ठविता जथा चक्कतिरिविडी, सत्तमा किर लोगंतं फुसति, एवं हेट्ठावि, अहवा रज्जुविहाणेण सत्त भागा कीरंति, सयंभूरमणसमुद्दसुयीविक्खंभपमाणाए रज्जुए सत्त अहोलोगो अधियाओ, उड्ढलोगो ऊणओ होति रयणातो, तत्थ संमचरित्तपडिवण्णओ चोद्दसवि फुसति केवलिसमुग्घातं पडुच्च, देसविरतो पंच उवरिं, संमत्तचरित्तसहियसुतपडिवण्णओ सत्तवि फुसति, उवरिमो छउमत्थो जो सुतपडिवण्णओ इह समोहतो इलिकादिट्टंतेण सव्वट्ठसिद्धे उववज्जति सो सत्त, सत्तमाए वा, ऊणा सत्त केवलसुतपडिवण्णओ, उवरिमगेविज्जे वा सम्मत्तसुतपडिवण्णओ उवरिं हेट्ठा य पंच, देसविरओ हेट्ठा ण उववज्जति तेणं पंच उवरिं अच्चुतं जा इति, एवं खेत्तजा फुसणा भणिता।

इदाणिं एतोसिं चउण्हं सामाइयाणं कतरं सामाइयं केवइएहिं जीवेहिं पुट्ठं ?, पत्तपुव्वंति भणितं होतित्ति, भण्णति—

सव्वजीवेहिं० ॥ ८-१७७ ॥ ८६० ॥ सुतं मिच्छादिट्ठीवि लब्भति तेण सव्वजीवेहिं सुतं फासितं, संमत्तं चरित्तं च सव्व-

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[-]

सिद्धेहिं फासिताइं, जेण तेहिं विरहितस्स णेव्वाणं णत्थि, जे पुण सिद्धा देसविरतिं फासेत्ता सिद्धिगतिं गता ते कित्तिया ?, सव्वसिद्धा बुद्धिच्छेदेणं असंखेज्जा भागा कता, ताण असंखेज्जाणि ठाणाणि, तत्थ असंखेज्जेहिं चेव ठाणेहिं देसविरतिं काउं ठातेछया होज्जा, तेवि य पच्छा चरित्तं पडिवज्जित्ता गता; जे पुण सुद्धाइं चेव संमत्तचरित्ताइं फासेतूण गता ते देसविरतिसिद्धाणं असंखेज्जतिभागो । फोसणा गता । (स्पर्शना- निरुक्ती)

इदाणिं निरुत्ती--निश्चिता उक्तिः निरुक्तिः, निरुत्ताणि किंनिमित्तं ?, उच्यते, असंमोहत्थं, यथा चन्द्रः शशी निशाकरः उडुपतिः रजनिकर इत्येवमादिः, आदित्यस्य सविता भास्करः दिनकर इत्येवमादीनि, एवं सर्वत्र योज्यते । यो हि शशिपर्यायाभिज्ञो भवति तस्य एकस्मिन् शशिपर्याये आकारिते सर्वेष्वेव प्रत्ययो भवति, न मुह्यति, एवं चतुर्णां सामायिकानां पर्यायाभिज्ञः एकस्मिन् पर्याये आकारिते न मुह्यति, यथा सत्यपि प्रकाशकत्वे आदित्य इत्युक्ते नोक्तं भवति चन्द्रमाः, चन्द्रमा इति वा नादित्य इत्युक्तं भवति, एवं श्रुतसामायिकमित्युक्ते नोक्तं भवति चरित्रसामायिकं, चरित्रे वा श्रुतं सत्यपि सामाइकसामान्ये, एवमसंमोहार्थं निरुक्तावतारः । तत्र सम्यक्त्वसामायिकपर्यायाः—

सम्मद्दिट्ठी अमोह० ॥ ८-१७८ ॥ ८६१ ॥ **सुत्तसा०** ॥ ८-१७९ ॥ ८६२ ॥ **अक्खरसण्णी०** ॥ ८-१८० ॥ ८६३ ॥ ॥४९१॥
चरित्ते सामाइकं समइयं० ॥ ८-१८१ ॥ ८६४ ॥ आदिल्लाणं तिण्हवि जथाविधीए विभासा कातव्वा, ततो चरित्ते तत्थ ताव सामाइके उदाहरणं, जथा केण समभावो कतो ?—

***सामायिक शब्दस्य पर्याया: कथानकं सहितेन कथयते

***चूर्णि-संकलित निर्युक्ति-क्रमांक (यहां चूर्णिमे जो निर्युक्ति-क्रम दिये है वे वृत्तिमे दिये निर्युक्ति क्रमांकन से आगे-पीछे है |

प्रत सूत्रांक [-] दीप अनुक्रम [-]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता...........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥४९२॥

समभावे दमदन्तो-दाहरणं

तेणं कालेणं तेण समएणं हत्थीसीसयं नगरं, दमदन्तो राया विक्कंतो, हत्थिणपुरे पांडवा, तेसिं च तत्थ य वेरं, तेहिं दमदन्तस्स रायगिहं गतस्स जरासंघमूलं सो विसओ दड्डो लूडिओ य, अण्णदा दमदन्तो आगतो, तेण हत्थिणपुरं रोहितं, ते भएण ण णिन्ति, भणति-सियाला ! मम सुण्णयं विसयं लूडेह, इदाणिं णीह, ते ण णिन्ति, ताहे सविसयं गतो। अण्णदा निव्विण्णकामभोगो पव्वइतो, अण्णदा एगल्लविहारं पडिवण्णो, विहरंतो हत्थिणपुरमागतो, बाहिं च पडिमं ठितो, जुधिट्ठिलेणं अणुजत्तानिग्गतेणं वंदितो, पच्छा सेसएहिं चउहिं वंदितो पंडवेहिं, जाहे दुज्जोहणो आगतो तस्स मणुस्सेहिं कहितं, जथा-एस दमदन्तो, तेण मातुलिंगेण आहतो, पच्छा खंधावारेण एंतेण पत्थरं पत्थरं खिवंतेणं पत्थररासीकतो, जुधिट्ठिलो नियत्तो पुच्छेति-एत्थ साधू दिट्ठो आसि, कहितं से जहा एसो सो पत्थररासीकतो दुज्जोहणेणं, ताहे अंबाडिओ सो, ते य अवणीया पत्थरा, तेल्लेणं अब्भंगितो खामितो य। तस्स दिट्ठो किर भगवतो दमदन्तस्स दुज्जोहणे पंडवेसु वा समो भावो आसि, एवं कातव्वं।

समइए-साकेते नगरे चंदवडेंसओ राया, तस्स धारिणी महादेवी, से दुवे पुत्ता-गुणचंदो मुणिचंदो य, गुणचंदो जुवराया, मुणिचंदस्स उज्जेणी दिण्णा कुमारभोत्तीए, अण्णे य दो पुत्ता अण्णाए देवीए, सो राया माहमासे पडिमं ठितो सागारं करेति जाव दीवओ जलति, दासी चिंतेति-सामी पडिमं ठिओ, अंधकारे मा अभिमरो पविसेज्जा, पुणरवि तेल्लं दिण्णं, बितियं जामं जलति, ततिएवि दिण्णं, चउत्थे य दिण्णं, राया सुकुमारो निराभीभूतो मतो यं। पच्छा गुणचंदो राया जातो महताहिमवन्त०, सो ताणं डहरगाणं मातं भणति-रज्जं गेण्हह अहं पव्वतामि, सा णेच्छति एतेण रज्जं आतत्तन्ति, सो राया अतिजाणनिज्जाणेसु रायलच्छीए अतीव दिप्पति, सा तं रायसिरिं पासित्ता चिंतेति-मते पुत्ताणं रज्जं दिज्जंतं न इच्छितं, तेवि एवं सोभन्ता, इदाणिंपि ॥४९२॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥४९३॥

समतायां मेतार्यो-दाहरणं

मारेमि, छिद्दाणि मग्गति, सो य राया छुहालू, तेण सूतस्स संदेसओ दिण्णो-एत्तो च्चेव पुव्वण्हितं पत्थवेज्जासि, जह विरावेमि, तेण अप्पितं चेडीय हत्थे, ताहे सा तं निज्जंतं पेच्छति, तं चेडिं भणति-दे पेच्छामि केरिसो?, तीए उवणीतो, अहो सुरभी मोयगो विसलित्तेहिं हत्थेहिं मक्खेइत्ति, चेडी य णिप्फडति, राया य अतीति, सा णियत्ता रायाए समं चेतियघरं जाति, सा बारे अच्छति, निप्फिडंतस्स निवेदितं एत्तोत्ति, ते य दो कुमारा छायाव पासे ओलग्गंति, चिंतेति-अण्णे अहं खाइस्सं, एआणं यच्छामि, पच्छा तेसिं कुमाराणं भागे कातूण देति, ते हत्थिखंधवरगता खाइउमारद्धा बालत्तणेणं जाव विसवेगा आरद्धा, संभंतेणं वेज्जा सद्दाविता, सुवण्णं पाइता, सज्जा, पच्छा य दासी सद्दाविता, पुच्छिता भणति-न कोति पेच्छति, नवरं एताणं माताए परामुट्ठो, सा सद्दाविता, णाता जहा एसा कारित्ति, ताहे अंबाडिता, भणिता य, जथा-पावे! तदा नेच्छसि, मा णामऽकतसंबलो संसारे छूढो' होन्तो, तेसिं रज्जं दातूणं पव्वइतो सागरचंदाण समीवे। अण्णदा संघाडओ साधूणं उज्जेणीओ आगतो, सो पुच्छितो-तत्थ निरुवसग्गं?, भणति-णवरं रायपुरोहियपुत्तो य बाहेति पासंडत्थे साहुणो य, सो गतो, अमरिसेण विस्सामितो, ते य संभोइया साधू, भिक्खवेलाए भणितो-आणिज्जउ, भणति-अत्तलाभितो भि, णवरं ठवणपडिकुट्ठाणि दावेह, कोइ चेल्लओ दिण्णो; सो तं पुरोहितघरं दंसेत्ता आगतो, इमोऽवि तत्थ पविट्ठो वड्डेणं सद्देणं धम्मलाभोत्ति, अंतेपुरियाओ निग्गताओ हाहाकारं करेंतीओ, सो वड्डवड्डेणं सद्देणं भणति-किं एतं साविएत्ति, निग्गता बारं बाहिं बंधंति--इमोवि अब्भंतरे, ते भणंति--नच्चसु, परिग्गाहगं ठवेत्ता पणच्चितो, ते ण जाणंति वाएउं, भणंति-जुज्झामो, दोवि एक्कसराए आगता, मम्मेहिं आहता, जहा जंताणि तथा खलाविया, निसड्ढं हणितूणं दाराणि उग्घाडेत्ता गतो, उज्जाणे अच्छति, रायाए कहितं, तेण मग्गावितो, साधू भणंति-पाहुणओ, न याणामो, तेहिं गवे-

॥४९३॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥४९४॥

संतेहिं उज्जाणे ठितो (दिट्ठो), राया गतो, खामितो य, नेच्छति मोत्तुं, जदि पव्वयंति ततो मुयामि, ताहे पुच्छति, पडिस्सुयं, एगत्थ गहाय चालिया जहा सट्ठाणे पडियाणि, लोओ कओ, पव्वइया, रायपुत्तो सम्मं करेति-ममं पितियएत्ति, पुरोहितसुतो दुउंछति-अम्हे एतेण कवडेण पव्वाविता, दोवि मता, गता देवलोगं, संगारं करेंति-जो चयति पढमं सो संबोधितव्वो, पुरोहितसुतो तीए दुगुंछाए रायगिहे मेतीपोट्टे आगतो, तीसे एगा सेट्ठिणी वयंसिया, किह जाता ?, सा मंसं विकिणति, ताए भण्णति-मा अण्णत्थ हिंडाहि, अहं सव्वं किणामि, दिवे दिवे आणेति, एवं तासिं पीती घणा जाता, तेसिं चेव घरस्स समोसिताणि ठिताणि, सा य सेट्ठिणी णिंदू, ताहे मेतीए रहस्सियं पवावती, से पुत्तो दिण्णो, इतरीएवि धूता मतिया दिण्णा, पच्छा सेट्ठिणीए पादेसु पाडिओ तवप्पभावेण जीवउ, तेण से नामं कतं मेतिज्जोत्ति, संवड्ढितो, कलाओ गाहितो, देवेण संबोहितो, न संबुज्झति, ताहे अट्ठण्हं इब्भकण्णगाणं पाणिं गेण्हाविओ, सिबियाए नगरे हिंडाति, देवो मेतं अणुप्पविट्ठो, जदि ममवि धूता जीवंती तीसेवि अज्ज विवाहो कओ होन्तो, भत्तं च नातगाणं दिण्णं होन्तं, ताहे ताए मेताए सिट्ठं, ताहे रुट्ठो देवाणुभावेणं गंतुं सिबिताए पाडितो, भणितो-तुमं असरिसीओ परिणेसित्ति खड्डाए छूढो, ताहे देवो भणति-किह ?, सो भणति-अवण्णोत्ति, तत्थ संबुद्धो भणति-एत्तो मं मोएहि, किंचि य कालं अच्छामि, बारस वरिसाणि, तो भण-किं करेमि ?, भणाति-रण्णो धूतं दवावेहि, तो सव्वा अकिरिया ओहाडिया भविस्सतित्ति, ताहे छगलओ दिण्णो, सो रतणाणि वोसिरति, तेण रतणाणं थालं भरितुं पितु कहिओ-रण्णो धूतं वरेति, सो रतणाणं थालं गहाय गतो, भणितो-किं मग्गसि ?, तेण भणितं-धूतं, ताहे निच्छूढो, एवं दिवसे लं गेण्हति, ण य देति, अभएण भणितं-कत्तो तुज्झ रतणाणि ?, तेण भणितं-छगलओ हगति, भणति-अम्हवि दिज्जतु, दिण्णो

समतायां मेतार्योदाहरणं ॥४९४॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

॥४९५॥

समतायां मेतार्यः

जाव मडगगंधाणि वोसिरति, अभयो भणति-देवाणुभावो, किं पुण?, परिक्खिज्जउ, किह?, ताहे भणितो-राया दुक्खं वेहारं सामी-वंदओ जाति, रहमग्गं करेहि, सो कतो, अज्जवि दीसति, भणति-पागारं सोवण्णं करेहि, कतो, पुणोवि भणितो- देमो जदि समुद्दं आणेसि, तत्थ ण्हातो सुद्धो होहिसि तो देहामो, आणीतो, वेलाए ण्हाताणं विवाहो, सिबिगाए हिंडंताणं ताओवि अण्णाओ आणियाओ, एवं भोगे भुंजति बारसवरिसाणि, पच्छा बोहितो महिलाहिं बारसवरिसा मग्गिता य, चउव्वीसाए वासेहिं सव्वाणि पव्वइयाणि, नवपुव्वीओ जाव एगल्लविहारं पडिवण्णो, तत्थेव रायगिहे हिंडति, एगं सुवण्णगारगिहं भिक्खस्स अतिगतो, सो य सेणियस्स अट्ठसतं सोवण्णियाण जवाण करेति चेतियअच्चणितानिमित्तं, तं परिवाडीए सेणी करेति तिसंझं, तस्स गिहं साधू अतिगतो, ताणि तस्स एगाए वायाए भिक्खं ण णीणेंति, सो अतिगतो, ते य जवा कोंचएण खइता, ण य पेच्छाति, रण्णो य वेला ढुकति, भणति-अज्ज अहं अट्ठखंडाणि कीरामि, सो साहुं संकति, पुच्छति, साधूवि तुण्हिक्को अच्छति, ताहे तेण रुट्ठेण तस्स सीसावेढो बद्धो, साह-केण गहिता?, तहवि तुण्हिक्को अच्छति, ताहे तेण तथा आढवितो जथा अच्छीणि भूमिए पडिताणि, कोंचओ य दारुगं खोडेंताणं सलिकाए गलगे आहतो, तेण वंता, लोगो भणति-पावा! एते ते जवा, सोऽवि भगवं तं वेदणं अधियासेंतो कालगतो, सिद्धो य, लोगो आगतो, दिट्ठो मेतज्जो, रण्णो कहितं, वज्झाणि आणत्ताणि, घरं ठएत्ता पव्वइताणि, ताहे भणति-धम्मलाभो सावगा!, मुक्काणि, भणिताणि य-जदि उप्पव्वयह तो भे कवल्लीए कड्ढेमि। एवं सामाइयं अप्पए य कतं परे य कतं। ॥४९५॥

सम्मत्वाद्दो संमावाद्दो-तुरुविणी नगरी, जितसत्तू राया, तस्स भज्जा धिज्जातिगिणी, पुत्तो सो य दत्तो नामओ, अज्ज-कालओ माउलओ तस्स दत्तस्स, सो य पव्वइओ, सो य दत्तो जूयपसंगी ओलग्गिउमारद्धो, पधाणदंडो जातो, कुलपुत्तए

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

पभिंदित्ता राया धाडितो, सो राया जातो, जण्णा णेण बहू जट्ठा । अण्णदा तं मामयं पेच्छतितुं रुट्ठो भणति-धम्मं सुणेमित्ति, जण्णाण किं फलं ?, सो भणति- किं धम्मं पुच्छासि ?, धम्मं कहेति, पुणोवि पुच्छति, नरगाण पंथं पुच्छासि?, अधम्मफलं साहति, पुणोवि पुच्छति, भणाति- असुभाणं कम्माणं उदयं पुच्छासि?, तं परिकहेति, पुणोवि पुच्छति, ताहे रुट्ठो भणति- निरया फलं जण्णस्स, सो रुट्ठो भणति- को पच्चतो?, जथा तुमं सत्तमे दिवसे सुणगकुंभीपाके पच्चिहिसि, को पच्चतो ?, जथा तुब्भं सत्तमे दिवसे सण्णा मुहंमि आतिगच्छिहिति, ताहे रुट्ठो भणति- तुज्झं का मच्चू?, सो भणति-अहं सुचिरं कालं पव्वज्जं कातुं दियलोगं गच्छामि, ताहे रुट्ठो भणति- रुंभह, ते दंडा तस्स निव्विण्णा, तेहिं सोच्चेव राया आवाहितो- एहि जा ते एतं बंधित्ता अप्पेमो, सो य पच्छण्णे अच्छति, तस्स दिवसा विस्सरिता, सो सत्तमदिवसे ते रायपहे सोधाविय मणुस्सेहि य रक्खावेति, एगो य देउलिओ पुप्फकरंडगहत्थगतो पच्चूसे पविसति, सो सण्णाइओ वोसिरित्ता पुप्फेहिं ओहाडेति, रायावि सत्तमे दिवसे पए आसचडगरेण जाति तं समणगं मारेमि, वोल्लितो जाति जाव अण्णेण आसकिसोरेण सह पुप्फेहिं उक्खिवित्ता खुरेणं पादो भूमीए आहतो, सण्णा तस्स मुहं आतिगता, तेण णातं जथा सच्चं मारिज्जामित्ति, ताहे दंडाणं अणापुच्छाए णियत्तिउमारद्धो, ते दंडा जाणंति- णूणं रहस्सं भिन्नं जाव घरं न जाति ताव णं गेण्हामो, तेहिं गहितो, इतरो राया जातो, ताए कुंभीए सुणए छुभित्ता बारं बद्धं, हेट्ठा अग्गी जालितो, ते ताविज्जंता खंडखंडेहिं छिंदंति, एस संमावादो कालगज्जस्स ॥

समासो-एगो धिज्जाइओ पंडितमाणी सासणं खिंसति, सो वादे पतिण्णाए उग्गाहेतूण पराइणित्ता पव्वावितो, पच्छा देवता वंदेंतस्स उवगतं, दुगुंछं न मुचति, सण्णायगा से उवसंता, अगारी से णेहं ण छड्डेति, कंमणं दिण्णं, किह मे वसे होज्जा ?, मतो, ॥४९६॥

श्री आवश्यक चूर्णी उपोद्घात निर्युक्तौ

॥४९७॥

समासे चिलातितनयः

देवलोगे उववण्णो, सावि तंनिव्वेदं पव्वइता, अणालोइया चेव कालं कातूण देवलोगे उववण्णा, ततो रायगिहे धणो सत्थवाहो, पंच से पुत्ता, सुंसमा त, चिलातिया दासी, तीसे पुत्तो चिलायगो सुंसमाए बालग्गाहो, सो अणाडियाओ करेति, ताहे णिच्छूढो, सीहगुहं चोरपल्लि गतो, तत्थ अग्गप्पहारी य नेसंसो य जातो, सो य चोरसेणावती मतो, सो सेणापती जातो । अण्णदा चोरे भणति-रायगिहे धणसत्थवाहस्स घरं हणामो, तुब्भं धणं मम सुंसुमा, एवं ते ओसोवणिं दातुं अतिगता, नामं सावेत्ता णंसह पुत्तेहिं ओससित्ता तेवि घरं पविसित्ता चेडिं च गहाय पधाविता, धणेण णगरउत्तिया सद्दाविता, मम धूतं नियत्तेह, तुब्भं धणं, तेहिं चोरा भग्गा, लोगो धणं गहाय नियत्तो, इतरोऽवि पुत्तेहिं समं चिलाइतगं नासंतं सुंसुमं गहाय पिट्ठओ लग्गति, एत्थ इहंवि-(दूरंपि)जाहे चिलाओ न तरति सुंसमं वहितुं इमेवि आसण्णा ताहे सुंसुमाए छिंदित्ता तं सीसं गहाय पट्ठितो, इतरेवि धाता नियत्ता, छुहाए य परिताविज्जंति, ताहे धणो पुत्ते भणति-ममं मारेत्ता खाह ताहे णगरं वच्चह, ते णेच्छंति, जेट्ठो भणति-ममं खाह, एवं जाव डहरओ, ताहे पिता से भणति- मा अण्णमण्णं मारेमो, एयं चिलायएणं ववरोवितं सुंसुमं खामो, एवं ते आहारिता पुत्तीमंसं एवं साधूस्सवि आहारो पुत्तमंसोवमो कारणिओ, तेणं आहारेणं गता नगरं, पुणरवि भोगाणं आभागी जाता, एवं साधूवि नेव्वाणसुहस्स सोऽवि चिलातओ तेणं सीसेणं हत्थकतेणं दिसीमूढो जातो जाव एगं साधुं आतावेंतं पेच्छति, तं भणति-ममं संखेवेणं धम्मं कहेहि, मा एवं सीसं पाडिस्सामि, साधुणा भणितो- उवसमो विवेगो संवरो, सो एताणि पदाणि गहाय एगंतं गतो, तत्थ चिंतेतुमारद्धो-उवसमो कातव्वो कोधादीण, अहं च कुद्धओ, विवेगो धणसयणस्स, ताहे तं सीसं असिं च छड्डेति, संवरो इंदिओ नोइंदिओ य, एवं झायति जाव तं लोहितगंधेण कीडियाओ खाइतुमारद्धाओ, सो ताहिं जथा चालणी तथा कतो पादसिराहिं ॥४९७॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥४९८॥

जाव सीसकरोडी ताव गताओ अड्ढाइज्जेहिं राइंदिएहिं कालं किच्चा सहस्सारे उववण्णो ।

संखेवो-चत्तारि बालतवस्सी सतसहस्से गंथे काउं जियसत्तुस्स उवट्ठिता, अम्ह सत्थाणि सुणेहि, तुमं पंचमो लोगपालो, तेण भणितं-केत्तियं ?, ते भणंति-चत्तारि संधिताओ सतसहस्साओ, सो भणति-एच्चिरेणं ममं रज्जं सीदति, एवं अद्धद्धं उसरंतं जाव एक्केक्को उ सिलोगो, तंपि णत्थि, ताहे चतुण्हंवि एगो सिलोगो-जिण्णे भोयणमत्तेओ, कविलो पाणिणं दया । विहस्सतीरविस्सासो, पंचालो त्थीसु मद्दवं ॥ १ ॥ एवं चेव इमं सामाइयं चोद्दसण्हं पुव्वाणं संखेवो ।

संक्षेपानवद्ययोः तपस्विधर्मरुच्योः

अणवज्जे-वसंतपुरं नगरं, जितसत्तू राया, धारिणी देवी, तेसिं पुत्तो धम्मरुयी, सो राया थेरो जातो, अण्णदा ताव सो पव्वइतुकामो धम्मरुइस्स रज्जं दातुमिच्छति, सो मातरं पुच्छति-कीस रज्जं पजहति ?, सा भणति-एतं संसारवंधणं, सो भणति-ममवि न कज्जं, ताहे सह तेण पिता तावसो जातो, तत्थ अवमासाए गंडओ उग्घोसेति आसमे-कल्लं अमावसातो पुप्फफलाणं संगहं करेह, कल्लं छिंदितुं न वट्टति, सो चिंतेति-जदि सव्वकालं न छिंदेज्जा तो सुंदरं होज्जा, अण्णदा साधू अमावासाए तावसासमस्स अदूरेण वोलेंति, ते धम्मरुती पेच्छति, ताहे भणति-भगवं ! तुब्भं अणाउट्टी णत्थि तो अडविं जाह?, तेहिं भणितं-अम्हं जावज्जीवमणाउट्टी, सो संभंतो चिंतउमारद्धो, साधुवि गता, जाति संभरिता, पत्तेगबुद्धो जातो ।

सोऊण अणाउट्टीं० । ८-१९६ ॥ ८७७ ॥ अणंत-कम्मं तस्स भीतो अणवज्जं-अगरहितं धंमम्मुवगतो धम्मरुई । परिण्णाए इलापुत्तो, सो जथा हेट्ठा, परिजाणितूण जीवे० ।८-१९७॥ ८७८॥ जाणणापरिण्णाए णाता पच्चक्खाणपरिण्णाए पच्चक्खाता सावज्जजोगकरणं परिजाणति से इलापुत्तो । ॥४९८॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ

॥४९९॥

इदाणिं पच्चक्खाणे-तेतलिपुरं नगरं, कणगरहो राया, पउमावती देवी, राया भोगलाभो पुत्ते जाते २ वियंगेति, तेतलि अमच्चो, कलारो मूसियारे सेट्ठी, तस्स धूता पोट्टिला, आगासतलए दिट्ठा, मग्गिता लद्धा य, अमच्चं पउमावती य भणति-एगं कुमारं किहवि सारक्ख, तो तव मम भिक्खाभायणं भविस्सति, मम उदरे पुत्तो, एतं रहिस्सगं सारवेमो, संपत्तीय पोट्टिला य देवी य समं चेव पसूता, पोट्टिलाए दारिया देवीए दिण्णा, कुमारो पोट्टिलाए, संवड्डति, कलाओ य गेण्हति। अण्णदा पोट्टिला तेतलिस्स अणिट्ठा जाता, नामवि ण गेण्हति, अण्णदा पव्वइयाओ पुच्छति-अत्थ किंचि जाणह जेण अहं पिता होज्जा, ताओ भणंति-अम्हं एतारिसं न वट्टति, ताहे से धम्मो कहितो, सा य संवेगमावण्णा, आपुच्छति-पव्वयामित्ति, सो भणति-संबोहेज्जासि, ताए पडिस्सुतं, सा सामण्णं कातूणं दियलोगं गता। सो राया मतो, ताहे तं कुमारं पउरस्स दंसेति रहस्सं च भिंदाति, ताहे सो अभिसित्तो, कुमारमाता भणति-तेतलिस्स सुट्ठु वट्टेज्जा, एतस्स पभावेण तंसि जातो, तस्स णामं कणगज्झओ, ताहे सो सव्वगतो जातो, देवो तं संबोहेति, न संबुज्झति, ताहे रायाणगं विप्परिणामेति, सो तं णो आढाति, वीधीएवि न कोइ आढाति, बाहिरियावि परिसा दासपेसादिगा जाव अब्भंतरिगावि पुत्तसुण्हादिगा, एवं चेव वित्तंपि न लभति, ताहे विसण्णो तालपुडगं विसं खाति, न मरइ, कंको असि खंधे नस्सति, सोवि न छिंदति, वेहासं करेंतस्स रज्जु छिण्णो, पच्छा पाहाणं गलए बंधित्ता अत्थाहं पाणियं पविट्ठो, तत्थवि थाहो जातो, ताहे तणकूडे अग्गि दातुं पविट्ठो, तत्थवि न डज्झति, ताहे अडविं पविसति, तत्थ पुरतो छिण्णगिरिसिहरकंदरप्पवाते पिट्ठतो कंपेमाणेव्व मेदिणितलं आकड्डतव्व पादवगणे विफोडेमाणेव्व अंबरतलं सव्वतमोरासिव्व पिंडिते पच्चक्खमिव सतं कतंते भीमे भीमारवं करेंते महावारणे समुट्ठिते, दोसु चक्खुनिवातेसु पयंडधणुजुत्तविप्पमुक्को पुंखमेत्तवसेसा धरणितलपवेसाणि

प्रत्याख्याने तेतलीपुत्रः

॥४९९॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता..........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

श्री आवश्यक-चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥५००॥

प्रत्याख्याने तेतलीपुत्रः

सराणि पतंति, हुतवहजालासहस्ससंकुलं समंततो पलित्तंव धगधगेति सव्वारण्णं, अइरुग्गतबालसूरगुंजद्धपुंजनिगरप्पगासं झियाति इंगालभूतं गिहं, ताहे चिंतेति-पोट्टिला जदि मे नित्थारेज्जात्ति, एवं वयासी-आउसो पोट्टिला! आहता आयणाहि, ततेणं सा पोट्टिला पंचवण्णाइं सखिंखिणीयाइं जाव एवं वयासी-आउसो तेतलिपुत्ता ! एहि ता आदाणाहि, पुरतो छिण्णगिरिसिहरकंदरप्पवाते तं चेव जाव इंगालभूतं गिहं तं आउसो तेतलिपुत्ता! कहिं वयामो, ततेणं से तेतली एवं वयासी-सद्धेतं खलु भो समणा वयंति, सद्धेयं खलु भो माहणा वयंति, अहमेगो असद्धेयं वदिस्सामि, एवं खलु अहं सह पुत्तेहिं अपुत्तो को मे तं सद्दहिस्सति?, एवं सह मित्तेहिं० सह दारेहिं० सह वित्तेण०, सह परिग्गहेण० सह दासेहिं जावदाणमाणसक्कारोवयारसंगहिते तेतलिपुत्तस्स सयणपरियणेवि तगं गते को मे तं स० ?, एवं खलु तेतलिपुत्ते कणगज्झतेणं अवज्झातके को मे तं स० कालक्कमणीतिसत्थविसारदे तेतलिपुत्ते विसादं गतेति को मे तं स० ?, ततेणं तेतलिपुत्तेणं तालपुडे विसे खइते सेवि य पडिहतेत्ति को मे तं स० ?, एवं असी वेहासे जले अग्गी जाव रण्णेवि पुरतो पवाते एमादि को मे तं सद्दहि० ?, जातिकुलरूवविणओवयारसालिणी पोट्टिला मुसिकारधूता मिच्छं विप्पडिवण्णा को मे तं सद्दहिस्सति ?, ताहे पोट्टिला भणति-एहि ता आदाणाहि, भीतस्स खलु भो पव्वज्जा ताणं, आतुरस्स भेसज्जं किच्चं अभिउत्तस्स पच्चयकरणं संतस्स वाहणकिच्चं महाजले वाहणकिच्चं माइस्स रहस्सकिच्चं उक्कंठितस्स देसगमणकिच्चं छुहितस्स भोयणकिच्चं पिवासितस्स पाणकिच्चं सोहातुरस्स जुवतिकिच्चं परं अभियुंजितुकामस्स सहायकिच्चं खंतस्स दंतस्स गुत्तस्स जितेंदियस्स एत्तो एगमवि न भवाति। सुट्ठु सुट्ठु तण्णं तुमं तेतलिपुत्ता ! एवमट्ठं आदाणाहित्तिकट्टु दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयति, वयेत्ता जामेव० तामेव पडिगता। ततेणं तस्स अण्णं चिंतेमाणस्स सुद्धेण परिणामेणं जाव जातिस्सरणे समुप्पण्णे-एवं खलु अहं

॥५००॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता..........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

श्री आवश्यक चूर्णौ उपोद्घात निर्युक्तौ ॥५०१॥

तेतलिसुतोदाहरणं सूत्रस्पर्शिकाद्याः

जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे पुक्खलावतिंमि पुडरीगिणीए महापउमे णाम राया होत्था, थेराणं अंतिके पव्वातिते सामाइयमादीयाइं चोद्दस पुव्वाइं अहिज्जित्ता बहूइं वासाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए आलोइयसमाहिपत्ते कालं किच्चा महासुक्के कप्पे देवत्ताए उववण्णे, ततेणं ताओ चइत्ता इहेव जंबुद्दीवे भरहे तेतलिपुरे तेतलिस्स अमच्चस्स दारके जाते, तं सेतं खलु पुव्विं दिट्ठाइं सतमेव उवसंप्पज्जित्ताणं विहरित्तएत्तिकट्टु तहेव करेति करेत्ता जेणेव पमदवणे तेणेव उ० २ असोगपादवस्स अहे सुहनिसन्ने, तत्थ अणुचिन्तेमाणस्स पुव्वाधीताइं चोद्दस पुव्वाइं सतमेव अभिसमण्णागताइं, ततेणं से सुहेणं जाव केवली जाते, अथासाण्णिहितेहिं देवेहिं महिमा कता, इमीसे कहाए लद्धट्ठे कणगज्झए माताए समं निग्गते सव्विड्ढीए, खामेति, धम्मे कहिते सावगे जाते जाव पडितागते, भगवंपि तेतली अज्झयणं भासति जथा—को कं ठावेति?, पण्णत्थ सगाइं कम्माइं, एवमादि जहा रिसिभासितेसु, पच्छा सिद्धे, एवं तेण पच्चक्खाणेण समता कता सावज्जजोगा परिण्णाता। निरुत्तिदारं गतं। एवं च दारविही गतो। गता य उवग्घातनिज्जुत्ती ॥

इयाणिं सुत्तफासियनिज्जुत्ती इच्छावेति, जा सुत्तं फुसति निज्जुत्ती सा सुत्तफासियनिज्जुत्ती भन्नति, असति य सुत्ते सा किं फुसतु ?, तेणं सुत्तं उच्चारेयव्वं पच्छा फुसिस्सति तेण सुत्त०, तं चेव भन्नति। तत्थ य सुत्ताणुगमस्स अवतारो, एत्थ य सुत्ताणुगमो सुत्तालावगानिप्फन्नो निक्खेवो सुत्तफासितनिज्जुत्ती य समयं गच्छंति, कह ?, जदा संथिता सव्वा उच्चारिता भवति तत्थ सो सुत्ताणगमो, जो पदे छिंदिऊण अत्थो भन्नति, जो पदं पदेण णामादीहिं निक्खिप्पति सो सुत्तालावगनिप्फण्णो निक्खेवो, सो चेव जदा निज्जुत्तीए वित्थारिज्जति तदा सुत्तफासियनिज्जुत्ती, सुत्ते य अणुगते सुत्तालावगनिप्फन्नो निक्खेवो सुत्तफासिय- ॥५०१॥

अत्र उपोद्घात-निर्युक्ति: समाप्ता:, अथ सूत्रफ़ास-निर्युक्ति: आरभ्यते

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता..........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णिः-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां ॥५०२॥

निज्जुत्ती य भवति, तम्हा सुत्तं अणुगंतव्वं। तं च पंचनमोक्कारपुव्वं भणंति पुव्वगा इति सो चेव ताव भन्नइ, सो य इमेहिं एक्कारसदारेहिं अणुगंतव्वो, तंजहा—

उप्पत्ती निक्खेवो० ।९-१।८८७ तत्थ पढमं दारं उप्पत्ती, उत्पाद उप्पत्ती, उत्पादनमुद्‌धृतिरित्यर्थः, तत्थ नमोकारो किं उप्पन्नोऽणुप्पन्नोत्ति, एत्थ नयेहिं मग्गणा, केइ उप्पन्नं इच्छंति केइ अणुप्पन्नं, नया य पुव्वभणिता सत्त णेगमादी मूलणया, तत्थ णेगमो अणेगाविहो, तत्थ आदिणेगमस्स अणुप्पन्नो नो उप्पन्नो. कहं ?, जहा—पंचत्थिकायाणि वा, एवं नमोकारोवि न कयाइ नासी ३ ण एस ताव केणइ उप्पाइएत्तिकट्टु, जदावि भरहेरवएहिं वोच्छिज्जति तदावि महाविदेहे अवोच्छित्ती, तम्हा अणुप्पन्नो, सेसाणं णेगमाणं छण्हं च नयाणं विसुद्धाण उप्पन्नो कीरति, अविसुद्धाणं पुण आदिणेगमे चेव अवयारो, कहं ?, पन्नरससुवि कम्मभूमीसु पुरिसादिभावं पडुच्च, जदि उप्पन्नो कहं उप्पन्नोत्ति ?, तिविहेण सामित्तेण-समुत्थाणसामित्तेण वायणासामित्तेण लद्धिसामित्तेण, एत्थ को णयो कं उप्पत्तिं इच्छति ?, तत्थ जो पढमवज्जा णेगमा संगहो ववहारो य ते तिविहंपि उप्पत्तिं इच्छंति, समुट्ठाणं नाम संमं आयरियादीण उपस्थापनमित्यर्थः तेन, वायणाए वायणायरियणीसाए, जहा भगवता गोयमणसामी वायितो, लद्धी जहा भविकस्स, अभविकस्स णत्थि, उवदेसमंतरेणावि भविकस्स किंचि निमित्तं लद्धूण णमोकारावरणिज्जाणं कम्माणं खयोवसमेणं नमोकारलद्धी समुप्पज्जति, जहा सयंभुरमणसमुद्दे पडिमासंठिया साहुसंठिया य मच्छा, पउमपत्तावि, सव्वाणिवि किर संठाणाणि अत्थि, मोत्तूण वलयं संठाणं, एरिसं णत्थि जीवस्सेति, ताणि संठाणाणि दट्ठूण कस्सति णमोकारलद्धी भवति, उज्जुसुतो पढमं समुत्थाणं णेच्छति, किं कारणं ?, जतो से समुट्ठाणेवि सति वायणालद्धिमंतरेण ण उप्पज्जति, तेण दुविहं- वायणा-

नमस्कारे उत्पन्नद्वारं ॥५०२॥

मू. (१) नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं
एसो पंच नमुक्कारो, सव्व पावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं

***मूलसूत्र -(१) "नमस्कार सूत्र" हमने पूज्यपाद आचार्य सागरानंदसूरीश्वरजी संपादित "आगममंजुषा" पृष्ठ-१२०५ के आधार से यहां लिखा है |

*** अत्र नमस्कार-निर्युक्ति आरब्धः

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता..........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णिः-1

नमस्कार व्याख्यायां ॥५०३॥

सामित्तं लद्धिसामित्तं च, तिण्णि सद्दणया लद्धिमिच्छंति, जेण समुट्ठाणे वायणाए य विज्जमाणे अभविगस्स ण उप्पज्जति, लद्धि-अभावात् । एवं उप्पण्णस्स वा अणुप्पण्णस्स वा दारं । णिक्खेवो स्थापना न्यास इत्यनर्थान्तरं, सो णिक्खेवो चतुव्विधो-णामणमोकारो०, णामट्ठवणा गताओ, दव्वणमोकारो जाणगसरीर० भविय० वतिरित्तो, दव्वणमुक्कारो दव्वणिमित्तं दव्वभूतो वा अणुवउत्तो वा जं करेति, अहवा णिण्हगादीणं, उग्घट्टओ वा दव्वणमोकारो, णिण्हगआदिग्गहणेणं बोडिगा आजीविगा य सूयिता । तत्थ दव्वणमोकारे इमं उदाहरणं—

उत्पन्नद्वारे निक्षेपाः द्रव्य-नमस्कारे द्रमकः

वसंतपुरं नगरं, जियसत्तू राया, धारिणी देवी, तस्सहितो ओलोयणं०, दमगपासणं, अणुकंपा णदिसरिसत्ति रायाणो भणति देवी, रण्णा आणावितो, कतालंकारे दिण्णवत्थतेहिं उवणीतो, सो य कच्छूए-गहितेल्लओ तेल्लं लग्गाविज्जति, कालंतरेण रायाए से रज्जं दिण्णं, पेच्छति दंडभडभोइए देवयायतणपूयाओ करेमाणे, सो चिंतेति- अहं कस्स करेमि ?, रण्णो करेमि, आयतणं करेति, तस्स देवीए पडिमा कता, पडिमापवेसे आणिताणि, पुच्छंति, साहति य, तुट्ठो सक्कारेति, तिसंझं अच्चेति, पडियरणं, तुट्ठेण सव्व-ट्ठाणगाणि दिण्णाणि । अण्णदा राया दंडजत्तं गतो, सव्वंतेपुरट्ठाणेसु ठवेऊणं, तत्थ य अंतेउरियाओ णिरोहं असहमाणीओ तं चेव उवचरति, सो णेच्छति, भत्तं गुत्ताओ ण गेण्हंति, पच्छा सणयं पविट्ठो, विद्दाओ य, राया आगतो, सिट्ठे विणासितो । रायत्था-णीओ तित्थकरो, अंतपुरत्थाणीता छ काया अधवा संकादयो पदा, मा सेणियादीणवि दव्वणमोकारो भविस्सति, दमगत्थाणीया ॥५०३॥ साधू, कच्छुत्थाणीयं मिच्छत्तं, भासुरथाणीयं सम्मत्तं, विणिवाओ दंडो संसारो,एतस्स दव्वणमोक्कारो। भावणमोकारो जं उवजुत्तो सम्मदिट्ठी करेति, तत्थ दिट्ठंतो तं चेव पसत्थं, तस्स सम्मदिट्ठिस्स उवजुत्तस्स भावणमोक्कारो ॥ एत्थ णयेहिं मग्गणा-णेगमो

द्रव्य-नमस्कारस्य व्याख्यान (द्रष्टांत सहितं)

प्रत सूत्रांक [-] दीप अनुक्रम [१]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता..........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

नमस्कार व्याख्यायां ॥५०४॥

निक्षेपे-नयाः

दव्वादि चउव्विहंपि इच्छति णिक्खेवं, संगहववहारा ठवणावज्जं इच्छंति, उज्जुसुत्तो ठवणदव्ववज्जं इच्छति, तिण्णि सद्दणया भावणिक्खेवं इच्छंति, सेसे तिण्णि णिक्खेवे णेच्छंति, तत्थ इमा णयगाथा-चउरोऽवि णेगमनया ववहारो संगहो ठवणवज्जं। उज्जुसुत्त पढमचरिमे इच्छति भावं च सद्दणया ॥९॥५॥ (न हारि०वृत्तौ) पदमिदाणिं, पज्जवत इति पदं पाति वा तमर्थं पदं, तं पंचविधं पदं-णामिकादि, जथा अणुयोगद्दारे, एत्थ कतरं पदं?, णामिकमाख्यातिकमौपसर्गिकं नैपातिकं मिश्रं चेति णमोक्कारो, णिवाइयपदं नम इति, अहवा अरहंताइसु पंचसु णम इति, सो पुण णमोक्कारो कति पदाणि?, छ वा दस वा, तत्थ छप्पदाणि णमो अरहंताणं सिद्धाणं आयरियाणं उवज्झायाणं सव्वसाधूणं, एते छप्पदा, इमाणि दस पदाणि-णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं एवं दस । दारं । इदाणिं पदार्थः, णम इति कोऽर्थः?, नमः पूजायां नम प्रह्वत्वे, योऽस्य नमस्कारस्य प्रभुः कर्ता तस्य नमस्करणमित्युक्तं भवति, तस्य पुनः द्रव्यभावसंकोचने, एत्थ चतुभंगो-दव्वं णाम एगे संकोचेति णो भावं, पढमे भंगे पालओ, बीए भंगे अणुत्तरा, ततिए संबो, चउत्थो सुण्णो, अहवा केवलं णम इति भासति । दारं ।

इदाणिं परूवणा-साधु प्रकृष्टा प्रधाना प्रगता प्ररूपणा वर्णानां प्ररूपणा, सा य णमोकारस्स छहिं य णवहि य पदेहिं कातव्वा, तत्थ छहिं दारेहिं परूवणा इमा-किं णमोकारो? कस्स णमोकारो? केण वा णमोकारो? कहिं वा णमोकारो? केवचिरं णमोकारो? ॥५०४॥
कतिविहो णमोकारो ?, तत्थ किंशब्दः क्षेपप्रश्ननपुंसकव्यापारणेषु, तत्रेह प्रश्ने, किं णमोक्कारो?, जीवो तप्परिणओ, जथा सामाइयं तहा सणयं सोदाहरणं विभासेज्जा, अण्णे भणंति-किं णमोकारो ? किं दव्वं णमोकारो खंधो गामो ?, दव्वं णमोकारो, णोखंधो णोगामो, दव्वं जीवो, खंधो पंच अत्थिकाया णमोकारे ण भवंति, ण य तेसिं खंधाणं अत्थंतरभूतो तेण णोखंधोत्ति देसं पडिसेहयति,

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां ||५०५||

चोद्दसविहो भूतग्गामो, ण य णमोकारो चोद्दसवि, ण य तेसिं अत्थंतरभूतो तेण णोगामो णमोक्कारो। एत्थ णयमग्गणा तेहिं चेव सत्तहिं, तत्थ णेगमो संगहितो असंगहितो य, संगहिओ संगहं पविट्ठो, असंगहितो ववहारे, तेण छहिं णएहिं मग्गिज्जति, संगहस्स एगस्स एगो णमोकारो, बहूणंपि एगो णमोक्कारो, जेण संगहितपिंडियत्थं संगहवयणं, जथा-एगोवि साली साली बहुगावि साली साली चेव, एवमादि, ववहारस्स एगस्स एगो णमोक्कारो बहुगाणं बहुगा णमोकारा, उज्जुसुत्तस्स पत्तेयं जीवाणं णमोकारो, जथा- चोद्दस पुव्वाणि एगस्सवि बहुगाणंपि, तिण्हं सद्दणयाणं णमोक्कारपरिणतो जीवो णमोकारो, सेसाण अणुवयुत्तोवि होज्ज आगमतो। दारं। कस्स णमोक्कारो ?, कस्सेति षष्ठी विभक्तिः, सा च तत्त्वे उभयत्वेऽन्यत्वे, यथा- तैलस्य धारा शिलापुत्रकस्य सशरीरिणमित्येवमादि, अन्यत्वे यथा भिक्षोः पात्रं भिक्षोः वस्त्रमित्येवमादि, उभयतो यथा- देवदत्तस्य सकुंडलं शिरः एवमादि, एवं नमस्कारः किमेकत्वे उभयत्वेऽन्यत्वे, एत्थ णया, तत्थ णेगमस्स बाहिरवत्थुमधिकिच्च अट्ठसु भंगसु- स्याज्जीवस्य १ स्यादजीवस्य २ स्याज्जीवानां ३ स्यादजीवानां ४ स्याज्जीवस्य चाजीवस्य च ५ स्याज्जीवस्य चाजीवानां च ६ स्यादजीवस्य च जीवानां ७ स्याज्जीवानां स्यादजीवानां च ८, जीवस्य यथा-एकस्य साधोः, अजीवस्य यथा एकस्याः प्रतिमायाः, जीवाणं बहूणं साधूणं, अजीवाणं बहूणं पडिमाणं, जीवस्य अजीवस्य सपडिमस्स साधूस्स, जीवस्य च अजीवानां एकस्य तीर्थकरस्य चक्रध्वजादीनां, जीवानां चाजीवस्य साधूणं पडिमाय, जीवाणं अजीवाणं च बहूणं सपडिमाणं साधूणं, संगहस्य तहेव संगहवयणं, ववहारस्स एगस्स एगो बहूणं बहुगा, उज्जुसुत्तस्स पत्तेयं पत्तेयं, तिण्हं सद्दणयाणं आत्मभावो, पडिवज्जमाणगं पडुच्च जीवस्स च जीवाण वा, पुव्वपडिवण्णगं पडुच्च णियमा जीवाणं। दारं॥ केन नमस्कार इति तृतीया विभक्तिः यथा गिरिकेण काणामेघेण

नमस्कार-प्ररूपणायां नयाः कस्य केनेतिद्वारे ||५०५||

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां ॥५०६॥

केन कस्मिन् कियच्चिर- मिति- द्वाराणि

उग्घाडितं नभः, केण णमोकारो लब्भति?, णाणावरणिज्जस्स दंसणमोहणिज्जस्स य खयोवसमेणं लब्भति, तेसिं दुविहाणि फड्डगाणि- देसघातीणि य देसं घातयति सव्वघातीणि सव्वं घातयति, तेहिं उदिण्णेहिं पच्छा अण्णाणि होंति मिच्छादिट्ठी य, कदा पुण लब्भति ?, सव्वघातीहिं निरवसेसेहिं उग्घाडितेहिं देसघातीहिं अणंतेहिं भागेहिं उग्घाडितेहिं समये २ अणंतगुणविसोधीए विसुज्झमाणस्स २ पढमं णकारलंभो भवति, एवं णमोक्कारस्सवि, एवं सेसाणवि अक्खराणं । दारं ॥ कस्मिन्नमस्कार इति सप्तमी विभक्तिर्भवति, सा च एकत्वे अन्यत्वे उभयत्वे, एकत्वे जीवे ज्ञानं जीवे दर्शनं, अन्यत्वे कुंडे बदराणि, उभयत्वे गृहे स्थूणा आत्मभावे च, एवं नमस्कारः किमेकत्वे अन्यत्वे उभयत्वे ?, अत्र णया- णेगमो बाहिरवत्थुमाभिकिच्चा अट्ठवि भंगे इच्छति स्याज्जीवे स्यादजीवे एवं सण्णिहाणेण अट्ठवि, संगहस्स जीवे णमोकारो जीवेसुवि णमोकारो, तहेव संगहवयणं सालिदिट्ठंता, ववहारस्सावि तहेव-एगजीवे एगो णमोकारो बहुसु जीवेसु बहवे, उज्जुसुतस्स सव्वेसुवि णमोकारेसु पत्तेगं णमोकारो, तिण्हं सद्दणयाणं पुव्वं एगो णमोकारो, बहवेसु जीवेसु पडिवज्जमाणगे पडुच्च जीवे वा जीवेसु वा उवउत्तेसु, सेसाणं अणुवउत्तेऽवि होज्जा॥दारं॥ इदाणिं केच्चिरं कालं णमोकारोत्ति,, एगस्स जीवस्स उवओगं पडुच्च जहण्णुकोसहिं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं छावट्ठिसागरोवमाहिया,विजयादिसु दोवारा उववज्जतित्ति, णाणाजीवाणं उवओगं पडुच्च जहण्णुकोसं अंतोमुहुत्तं, लद्धिं पडुच्च सव्वद्धा, एत्थ णया-अर्प्पितश्चानर्प्पितश्च, मनुष्ये नमस्कार इति अर्पितः, अनित्यः, अनर्पितो नित्यः, यथा सुवर्णं अंगुलेयकत्वेन अर्प्पितमनित्यं सुवर्णत्वेनानर्पिते नित्यमेवमादि ॥ इदाणिं कतिविहो णमुक्कारो ?, अरहंतादि पंचविधो, छप्पदा परूवणा गता । इदाणिं णवपदा ॥५०६॥
परूवणा-संतपयपरूवणा दव्वप्पमाणं खेत्तं फुसणा कालो अंतरं भागं भावे अप्पबहुगंति, सदिति सद्भूतं, संतस्स पदस्स परू-

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां ॥५०७॥

नवषट्पंच- चतुष्पदा प्ररूपणा

वणा संतपदपरूवणा, संतपदपरूवणाए किं णमोकारो अत्थि णत्थि ?, कुतः संदेह ?, इह द्विविधमभिधानं भवति- सतां, यथा— जीवादीनां, असतां, यथा-शशविषाणादीनां, अतो नः संशयः, भण्णति- णियमा अत्थि, जदि अत्थि तो कहं होज्जा ?, तत्थ सो इमेसु ठाणेसु मग्गिज्जति, गतिमादीसु—

गति इंदिए य काए० ॥ ९-१० ॥ १४ ॥ जाव चरिमोत्ति, जहा पंढीए आभिणिबोधितणाणे तथा इहंपि १। दव्वपमाणमिदाणिं- णमोकारपडिवण्णया जीवा केत्तिया होज्जा ?, जावतिया सुहुमस्स खेत्तपलिओवमस्स असंखेज्जतिभागे आकासपदेसा एवतिया णमोक्कारपडिवण्णया जीवा, २ दारं। खेत्तओ हेट्ठा लोगस्स सत्तभागो, उवरिंपि सत्तभागा, जेसु ओगाढा ३। जधा खेत्तं तथा फुसणावि, णाणत्तं चरिमंतेसुवि जे पदेसा तेवि पुट्ठा, जथा एगो धम्मपदेसो आगासपदेसेहिं णियमा सत्तहिं ४। कालतो जथा छप्पदपरूवणताए ५। अंतरं एगं जीवं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं देसूणं अद्धपोग्गलपरियट्टं, णाणाजीवे पडुच्च णत्थि अंतरं, दारं ६। कस्मिन् भावे नमस्कारो ?, खयोवसमिए भावे णमोक्कारो, जम्हा सव्वसुतं खयोवसमियंति, अण्णे पुण भणंति- उवसामिए वा खइए वा खयोवसमिए वा, खइए जथा- सेणियादीणं, उवसामिए जथा अणागाराणं, खयोवसमिए जथा अस्मदादीनामिति दारं ७। णमोक्कारपडिवण्णगा जीवा सेसगजीवाणं कतिभागे होज्जा ?, अणंतभागे, दारं ८। अप्पाबहुं, एतेसिं पडिवण्णगाणं जीवाणं अपडिवण्णगाण य कतरे०, सव्वत्थोवा णमोक्कारपडिवण्णगा अपडिवण्णगा अणंतगुणा, एसा णवपदा सम्मत्ता। ॥५०७॥

अहवा चसद्दसूइया पंचविधा परूवणा, तंजथा- आरोवणा भयणा पुच्छणा दावणा णिज्जवणा य, तत्थ आरोवणा- किं जीवो णमोक्कारो ? णमोक्कारो जीवो ?, आरोवणा गता, भयणा- जीवः स्यान्नमस्कारो स्यादनमस्कारो, नमस्कारो नियमा

नमस्कारस्य विविध प्ररुपणा

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[१]

नमस्कार व्याख्यायां

॥५०८॥

नमस्कारे पंचवस्तूनि

जीवो, खतिरवनस्पतिवत् । पुच्छणा दावणा णिज्जवणा य एगट्ठा वच्चंति, पुच्छणा कतरे खाइ मि जीवे णमोक्कारे ?, एस पुच्छा, दावणा णमोक्कारपरिणते जीवे णमोक्कारे, एस दावणा, णिज्जावणा एस खाइं से णमोकारपरिणते जीवे णमोकारे ।

अहवा चउव्विधा मग्गणा, तीए इमो दिट्ठंतो ताव भण्णति, चउव्विहं पुण मग्गणं भणिहिति, तत्थ दिट्ठंतो-घडो णोघडो अघडो णोअघडो, संपुण्णो घडो, तस्सेव देसो णोघडो, घडवतिरित्तं दव्वं अघडो, णोअघडो घडदेसो, तद्व्यतिरिक्तं च अण्णं दव्वं, एवं णमोकारस्सवि चतुव्विधा मग्गणा, णमोकारो णोणमोकारे अणमोकारे णोअणमोकारो, णमोकारोत्ति णमोकारपरिणतो जीवो घेप्पति, णोणमोकारोत्ति तस्स देसपदेसा, अणमोकारेत्ति णमोकारपरिणतजीववतिरित्तं अण्णदव्वं, णोअणमोकारोत्ति णमोकार-परिणतस्स देसपदेसा तव्वतिरित्तं च अण्णं दव्वं दव्वाणि व । एत्थ णएहिं मग्गणा-णेगमो तहेव, संगहस्स एते चत्तारिवि भंगा संगहवयणेणं, ववहारस्स णमोकारपरिणतो जीवो णमोकारो, जीवो वा णमोकारो, बीतीभंगे एगस्स देसपदेसा बहुगाणं च देसप-देसा णोणमोकारो,[णोअणमोकारो], ततिए अणमोकारो अणमोकारपरिणतो जीवो अणमोकारपरिणता वा जीवा तव्वतिरित्तं वा दव्वाणि विभासेज्जा, चउत्थे णमोकारपरिणतस्स जीवस्स देसपदेसा णोअणमोकारो जीवाणं वा देसपदेसा णोअणमोकारो तव्व-तिरित्तं दव्वं च दव्वाणि य घेप्पंति, उज्जुसुत्तस्स णमोकारोत्ति णमोकारपरिणताणं जीवाणं पत्तेयं एगेगं णमोकारं इच्छिज्जति, णोणमोकारोत्ति तेसिं देसपदेसा, अणमोकारेत्ति अण्णे जीवा दव्वा य, णोअणमोकारेति णमोकारप० जीवस्स जे देसपदेसा अण्णं च दव्वं दव्वाणि वा, तिण्हं सद्दणयाणं सम्मदिट्ठी जीवो भावतो णमोकारे उवउत्ते, तेहिं चेव चउहिं भंगेहिं णमोकारो णोणमोकारो अणमोकारो णोअणमोकारो, अहवा एते दोवि णवपदा भवंति । परूवणत्ति गतं । ॥५०८॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां ॥५०९॥

अटव्यां देशकत्वं

एवं परूवितस्स णमोक्कारस्स वत्थू, तत्थ वत्थू आरिहो भायणं जोग्गो गत्तति वा एगट्ठं उच्यते, वत्थू अरहंतादी, कहं ते वत्थू ?, जेणं तेसु कारणमायत्तं, हेतुर्निमित्तं कारणमेकोऽर्थः, किं च तेसु कारणं?, मग्गोपदेसका अरहंता, सिद्धा एतंमग्गं अविग्घेण संपत्ता, जं णत्थि अण्णेसिं तेण गुणेण अधिगात्ति अरिहा, आयारं उवदिसंति पंचविहं,उवज्झाया विणयंति, पंचविहो आयारो, साधुणो संजमाट्ठितस्स सहायकिच्चं करेंति, इहलोकिकेण परलोकिकेण य, एतेण कारणेण अरिहा, एते सामासिया गुणा। इदाणिं पत्तेयं पत्तेयं वित्थारेण गुणा उवदंसिज्जंति। अरहंताणं ता वित्थरेण गुणकित्तणं कीरति, तत्थ दारगाथा—

अडवीए देसियत्तं तहेव णिज्जामकं समुद्दंमि। छक्कायरक्खणट्ठा महगोवा तेण वुच्चंति ॥ ९ ॥ २३ ॥ ९०४ ॥

तत्थ कहं अडवीए देसियत्तं कतं ?, तत्थ अडवी दुविहा- दव्वाडवी भावअडवी य, तत्थ दव्वओ अडवीए उदाहरणं--वसंतपुरे धण्णो सत्थवाहो, णेव्वुतिनगरं गंतुकामो घोसणं जधा णंदिफलणाते, सो तेसिं मिलियाणं पंथगुणे कहेति- एगो पंथो उज्जुओ एगो पंथो वंको, जो सो वंको तेण पुण सुहंसुहेण गमति खंतेहि य पियंतेही य, तत्थवि कति रुक्खा अण्णाणि य कारणाणि परिहरितव्वाइं, चिरेण पुण पाविज्जति, अवसाणे य सो चेव ओतारितव्वो, जो पुण उज्जुओ तेण लहुं गम्मति, दुक्खं च सहितव्वं, जतो तत्थ बहवे णंदिफला णाम रुक्खा किण्हा किण्होभासा जाव णिकुरुम्बभूता पत्तिया पुप्फिया फलिता हरिता जाव सिरीए अतीव २ उवसोभेमाणा २ चिट्ठंति, तं जे णं देवाणुप्पिया तेसिं रुक्खाणं मूलाणि वा कंदाणि वा जाव बीयाणि आहारेति तासु वा विसमति तस्स णं आवाते भद्दए भवति, ततो पच्छा परिणममाणे परिणममाणे अड्डवसड्डे अकाले चेव जीविताओ ववरोविज्जति, अण्णे य रुक्खे जो तेसिं वातेणवि छित्तो सोवि मरति, अण्णे परिसडित० पण्णत्ता, तेसिं छाहीए अच्छितव्वं, ॥५०९॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां ॥५१०॥

फलाणि य विवण्णाणि आवातविरसाणि विवायसुहावयाणि पाणियाणि य महिता कुड्डिता विणट्ठा णिद्धखारकडुयअंबराणि, भूमीओ य णिण्णुण्णतविसमाओ तासु सुवितव्वं, सत्थिया खणंपि ण मोत्तव्वा, कालतो दिवसं गम्मति, रत्तीएवि ततिए यामे णिद्दामोक्खं कातूण पुणोवि वहितव्वं, जतो छिण्णावाता दूरद्धाणा बहुपच्चवाया य अडवी, भावतो सीयाणि य उसिणाणि य छुहा मारा सावयभयाणि य अवरोप्परो य संणिरोहो सहितव्वो, जो सो वंको तेणवि वच्चंताणं केति रुक्खा परिहरितव्वा अण्णाणि य जाणि पव्वाणि चिरेण पाविज्जंति, अवसाणे सो चेव ओतरितव्वो, मणोहररूवधारिणो मधुरवयणा य एत्थ मग्गतडट्ठिता बहवे पुरिसा हक्कारेंति तेसिं ण सोतव्वं, दुरंतो य पावो दवग्गी अप्पमत्तेहिं उल्हवेयव्वो, अणोल्हविज्जंतो य णियमेण डहति, पुणो य दुग्गुच्चपव्वओ उवउत्तेहिं चेव लंघेतव्वो, अलंघणे णियमा मरिज्जति, पुणो महतिअतिगुविलगव्वरा वंसकुडंगी सिग्घं लंघेतव्वा, तंमि ठिताणं बहुदोसा, ततो य बहुगो खड्डो, तस्समीवे मणोरहो णाम बंभणो णिच्चं सण्णिहितो अच्छति, सो भणति-मणागं पूरेह एतान्ति, तस्स ण सोतव्वं, सो ण पूरेतव्वो, सो हु पूरिज्जमाणो महल्लतरो भवति, पंथातो य भज्जिज्जति, फलाणि य एत्थ दिव्वाणि पंचपगाराणि णेत्तादिसुहकारगाणि मणागंपि नो पेक्खितव्वाणि ण भोत्तव्वाणि, बावीसं च एत्थ घोरा महाकराला पिसाया खणं खणमभिद्दवंति तेवि णं ण गणेतव्वा, भत्तपाणं च णत्थि, विभागतो विरसं दुल्लभंति, अपदाणगं च ण कातव्वं, अणवरतं च गंतव्वं, (रत्तीएवि दोण्णि जामा सुवियव्वं, सेसदुगं च गंतव्वमेव) एवं च गच्छंतेहिं देवाणुप्पिया! खिप्पामेव अडवी लंघिज्जति, लंघित्ता य तमेगंतदोगच्चवज्जितं तं पसत्थं सिवपुरं पाविज्जति, तत्थ य पुणो ण होति कोति किलेसत्ति, ततो तत्थ केइ तेणं समं पयट्टा जे उज्जुगं पधाविता, अण्णे पुण इतरेण, ततो सो पसत्थि दिवसे उच्चलितो, पुरतो वच्चंतो मग्गं आहणति,

अटव्यां देशकत्वं ॥५१०॥

नमस्कार व्याख्यायां ॥५११॥

सिलासु रुक्खेसु य अक्खराणि लिहंति, पंथस्स दोसगुणे, एत्तियं गतं एत्तियं सेसंति विभासा, एवं जे तस्स णिद्देसे वट्टिता ते तेण समं अचिरेण तं पुरं गता, जेवि लिहिताणुसारेण सम्मं गच्छंति तेवि पावेंति, जे ण वट्टिया ण वा वहंति छायादिपडिसेविणो ते ण पत्ता ण वा पावेंति । गतो य एस दव्वमग्गोवदेसगो, एस दिट्ठंतो, एवं भावमग्गोवदेसगा, सत्थवाहत्थाणीया अरहंता उग्घोसणत्थाणीया धम्मकहा पिंडियत्थाणिया जीवा अडवित्थाणिओ संसारो उज्जुग्गो साधुमग्गो वंको सावगमग्गो पप्पपुरत्थाणीओ मोक्खो मणोहररुक्खच्छायात्थाणीओ थीगाइसंसत्तवसहीओ पडिसडियादित्थाणीयाओ अणवज्जवसहीओ अण्णरुक्खच्छायाथाणीयाओवि अंगणाओ विवण्णअरसविरसफलथाणीया फासुएसणिज्जा आहारा कुहियथाणीयाणि फासुएसणिज्जाणि पाणियाणि णिन्नुण्णयादिभूमियाथाणीयाओ वसहिभूमीओ सत्थियत्थाणीया साधु वहियव्वथाणीयं दिवसं सव्वं पढितव्वं भिक्खाणीहारपडिलेहवज्जं ततिए जामे णिद्दामोक्खो सीतोसिणादिसहणथाणीयो पव्वज्जाकिलेसो मग्गतडत्थहक्कारणपुरिसत्थाणीया पासत्थकुतित्थियादी अकल्लाणमित्ता दवग्गादित्थाणीया कोहादयो कसाया फलथाणीया विसया पिसायथाणीया बावीसं परिसहा भत्तपाणिएसणिज्जा अपयाणगत्थाणीओ णिच्चुज्जमो पत्ताणं मोक्खसुहंति । तत्थ य तं पुरं गंतुकामो जणो उवदेसदाणादिणा परमोवगारी सत्थवाहेत्ति परमविणएणं तस्स णिद्देसे वट्टति बहु मण्णति य, एवमादिविभासा । एवं मोक्खत्थीहिं भगवं विभासा । एत्थ गाथाओ—

संसाराडवीए० ॥ ९-२३ ॥ ९०९ ॥ सम्मद्दंसण ॥ ९-२४ ॥ ९१० ॥ सम्मत्तेण दिट्ठो णाणेण णाओ, अक्खरत्थाणीयाणि चोद्दस पुव्वाणि, चरणकरणेणं पहतो महापहो जातो सो णेव्वाणपथो । चरणकरणाणि पुण- वयसमणधम्मसंजमवेयावच्चं च बंभगुत्तीओ । णाणादितियं तवकोहणिग्गहादी चरणमेतं ॥१॥ पिंडविसोधी समिती भावण पडिमा य इंदियणिरोहो । पडिले- ॥५११॥

महानिर्यामकत्वं

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां ||५१२||

महागोपत्वं

हण गुत्तीओ अभिग्गहा चेव करणं तु ॥ २ ॥ तेण कारणेण तित्थकरा महासत्थवाहा जेण बहवे जीवा संसाराडवीए खज्जमाणे य लुप्पमाणे य सुहंसुहेण णेव्वाणपट्टणं पावेंति।

इदाणिं निज्जामगा, ते य दुविहा--दव्वणिज्जामगा भावणिज्जामगा य, तत्थ दव्वणिज्जामए उदाहरणं तहेव घोसणयं विभासा, तहेव भावणिज्जामएणं उवसंहारोवि ।

मिच्छत्तकालियावात०।९-७।९१३। एत्थ वाता अट्ठ वण्णेतव्वा, तंजहा--पादीणवाते दाहिणवाते पदीणवाते उत्तरवाते, जो उत्तरपुरच्छिमेणं सो सत्तासुतो, दाहिणपुव्वेणं तुंगारो, दाहिणअवरेणं वीतावो, अवरुत्तरेण गज्जहो, एवं एते अट्ठ वाता। अण्णे वि-दिसासु अट्ठ चेव, तत्थ उत्तरपुव्वेण दोण्णि, तंजथा-उत्तरसत्तासुओ पुरत्थिमसत्तासुओ य, इयरीएवि दोण्णि-पुरत्थिमतुंगारो दाहिण-तुंगारो य, अवरदाहिणे दाहिणवितावो अवरवीतावो य, अवरुत्तरे अवरगज्जभो उत्तरगज्जभो य, एते सोलस वाता॥ तत्थ जहा जलहिंमि कालियावातरहिते, कालियो नाम पणुकूलो, गज्जभाणुकूलवाते णिउणणिज्जामगसहितो णिच्छिद्दपोतो जदिच्छितं पट्टणं पावेति, एवं मिच्छत्तकालियावातविरहिते सम्मत्तगज्जभपवाते णिज्जामगरयणअमूढमणमतिकण्णधारासहितो जीवो पोतो एगसमएण सिद्धिवसहिपट्टणं पावतित्ति। एत्थ—णिज्जामगरयणा।णं०।९-२८-९१४। तेण कारणेण अरहंता महाणिज्जामगा तहेव विभासा ।

इदाणिं महागोवत्ति वुच्चंति, तत्थ दव्वगोवा गावीण जाणंति, जहिं गुणा हवंति तहिं णेंति, एवं भावगोवा जाणंति, छज्जीव-णिकाया जथ रक्खिज्जंति तथा उवदिसंति, जेण सारक्खति संगोवेति णेव्वाणवाडगं च पावेति तेण महागोवा। एत्थ गाथा— ||५१२||

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां ॥५१३॥

पालेंति जथा० ॥ ९-२९ ॥ ९१५ ॥ जीवणिकाया० ॥ ९-३० ॥ ९१६ ॥ अहवा जथा उवासगदसासु सद्दालपुत्त- महागोपत्वं
गोसालाणं, तंजथा- भगवं महामाहणे जण्णं उप्पण्णणाणदंसणधरे जण्णं तीतपच्चुप्पण्णमणागतभावजाणगे जं णं सदेवमणुया-
सुरस्स लोगस्स अच्चणिज्जे जण्णं तच्चकम्मसंपयासंपउत्ते तं णं एवं वुच्चति--भगवं महामाहणे, तहा सामी महागोवो, जण्णं
संसाराडवीए मिच्छत्तनाणमोहितपहाए बहवे जीवे णस्समाणे विणस्समाणे खेज्जमाणे लुप्पमाणे धम्मितं डंडं गहाय सारक्खमाणे
संगोवेमाणे अणुपालेमाणे अणुकंपमाणे णेव्वाणमहावाडं पावेति तं णं महागोवेत्ति । तथा भगवं धम्मकही, जण्णं महतिमहालयंसि
संसारंसि बहवे जीवा णस्समाणे खेज्जमाणे पिज्जमाणे उम्मग्गपडिवण्णे सप्पहविणट्ठे मिच्छत्तमलाभिभूते अट्ठविहकम्मतमपडलपडो-
च्छण्णे बहूहिं अट्ठेहिं वा हेतूहि य कारणेहि य वागरणेहि य चतुरंतातो संसारकंतारातो साहत्थु णित्थारेति तं णं भगवं महाधम्म-
कही । तहा भगवं महासत्थवाहे, जं णं भगवं महतिमहालयंसि संसारकंतारंसि बहवे जीवे णस्समाणे जाव लुप्पमाणे जाव विलु-
प्पमाणे धम्ममएणं वाहणेणं धम्मियं पत्थाणं देच्चा सारक्खमाणे संगोवेमाणे णिव्वाणमहापट्टणं साहत्थि पावेति तण्णं महासत्थ-
वाहे । तहा भगवं महासंजत्तिए, जं णं महतिमहालयंसि संसारसागरंसि बहवे जीवे णस्समाणे जाव विलुप्पमाणे णिवज्जमाणे
उप्पियमाणे परिप्पवमाणे उम्मग्गपाडिवण्णे धम्ममइयाए णावाए सारक्खमाणे सुहंसुहेणं णेव्वाणमहातीरं साहत्थि पावेति तं महासं-
जत्तए इच्चादि-- ॥५१३॥

ता उवगारित्तणतो० ।॥ ९-३१ ॥ ९१७ ॥ णिगमणं । अहवा इमाणि कारणाणि जेहिं तेहिं अरिहा णमोक्कारस्स--
रागद्दोसकसाए० ॥ ९-३२ ॥ ९१८ ॥ तत्थ रागो ताव 'रंज रागे' रज्जंते तेन तस्मिन् वेति रागः, स य दुविहो- दव्व-

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां ॥५१४॥

राग-निक्षेपाः

रागो य भावरागो य, दव्वरागो दुविहो- कम्मदव्वरागो य णोकम्मदव्वरागो य, कम्मदव्वरागो रागवेदणीयं कंमं बध्धं ण ताव उदिज्जति, णोकम्मदव्वरागो दुविहो- पयोगरागो वीससारागो य, तंजहा- तत्थ प्रयोग उपाय इत्यनर्थान्तरं, सो य कुसुंभरागो लक्खारागो हालिद्दरागो एवमादि विभासा, विससारागो संझाअब्भरुक्खादि विभासा, भावरागो रागवेदणीयं कम्मं उदिण्णं जाए वेलाए वेदेति, सो तिविहो-दिट्ठिरागो विसयरागो सिणेहरागो, दिट्ठिरागो-असियसयं किरियाणं अकिरियवादीणमाहु चुलसीती । अण्णाणिय सत्तट्ठी वेणइयाणं च बत्तीसं ॥ १ ॥ स्वकीयायां दृष्टौ रक्ता ह्येते, यतो-जिणवयणबाहिरमतिमूढा णियदरिसणाणुरागेण । सव्वण्णुकहितमेते मोक्खपहं ण प्पवज्जंति ॥ १ ॥ विसयरागो णाम यो यस्मिन् शब्दाद्ये विषये रक्तः २ सिणेहरागो नाम यो यस्मिन् भावे मूर्च्छितो, तत्थ सिणेहरागे उदाहरणं–

खितिपतिट्ठियं णगरं, तत्थ दो भाउगा- अरहण्णओ अरहमित्तो य, महन्तस्स भारिया खुड्डलए रत्ता, अब्भत्थेति, सा बहुसो उवसग्गेति, भणति- किं ण पेच्छसि भाउतं मे?, ताहे विसेण मारेत्ता भणति इत्थं- संपयं इच्छ, सो तेण णिव्वेदेणं पव्वइतो, साधू जातो, सा अट्टवसट्टा मरित्ता सुणगी जाता, साधुणो य तं गामं गता, सुणियाए दिट्ठो, ताहे तस्स मग्गामग्गिं सा उवसग्गेति, रत्तिं णट्ठो, तत्थ मया मक्कडी जाता अडवीए, तेवि कम्मधम्मसंजोगेणं तीए अडवीए मज्झेण वच्चंति, तीए दिट्ठो, ताहे कंठे लग्गा, तत्थवि किलेसेण पलातो, तत्थ मता जक्खिणी जाता, तं ओधिणा पेच्छति सा, तत्थ छिद्दाणि मग्गति, सो अप्पमत्तो, सा छिद्दं ण लभति, सा सव्वादरेण तस्स छिद्दं मग्गति, एवं च जाति कालो, तस्स य जे सरिसव्वया समणा ते हसितूणं तरुणा भणंति- धण्णोसि अरहमित्ता! जंसि पिओ सुणयमक्कडाणं च। सोभग्गस्स पडागो तुमे हितो जीवलोगस्स ॥ १ ॥ अण्णदा सो ॥५१४॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां

॥५१५॥

साधू विवरयं उचरति, तत्थ य पादविक्खंभं पाणियं, तेण पादो पसारितो गतिभेदेणं, तत्थ य देवयाए छिद्दं लभिऊणं उरू छिण्णो, सो भणति- मिच्छादुक्कडं मा आउक्काए पडितो भोज्जात्ति, अण्णाए सम्मद्दिट्ठियाए दिट्ठा, सा धाडिता, तहेव सप्पदेसो लइतो, रूढो य देवतापभावेणं, अण्णे भणंति–भिक्खाए गतस्स अण्णं गामं गतस्स ताए वंतरीए तस्स रूवं छाएत्ता तस्स रूवेणं पंथे तलाए ण्हाति, अण्णेहिं दिट्ठो, तेहिं गुरूणं सिट्ठं, आवस्सए आलोएहि अज्जोत्ति भणितो, सो उवउत्तो मुहणंतगादि, भणति- न संभरति खमासमणो!, तेहिं पडिभणिओ भणति-णत्थित्ति, आयरिया अणुवट्ठितस्स पायच्छित्तं ण देंति, सो चिंतेति-किं किं हवेत्ति, सा उवसंता, साहति य-मए कतंति, साविगा जाता, आदितो आरब्भ परिकहेति॥ एस तिविहोवि अप्पसत्थो, तस्स अप्पसत्थस्स इमा णिरुत्ती-रज्जंति असुतिकलिमलकुणिमाणिट्ठेसु पाणिणो जेणं। रागोत्ति तेण भण्णति जं रज्जति तत्थ रागत्थो ॥१॥ पसत्थो रागो-अरहंतेसु आयरिएसु सुस्सुतबहुस्सुते या पवयणे एवमादि, अह रागो किं वट्टति ?, आयरिया आह-कहिवि वट्टति, उक्तं च- पुणस्सासवहेतू अणुकंपासुद्धए बहिययोगो। विवरीतो पावस्साति आसवहेतू वियाणाहि ॥ १ ॥ दिट्ठंतो अगडखणएणं, जदिवि अजुत्तं किंचि पसत्थरागणिमित्तं पुण्णं बंधति तंपि अगडखणणादिट्ठंतेणं सव्वं विसोहेति, जथा लित्ते(चित्तं) तत्थेव धावेति,-अरहंतेसु य रागो रागो साधूसु बंभयारीसु। एस पसत्थो रागो अज्ज सरागाण साहूणं ॥ १ ॥ जेहिं एवंविहो संसारपकड्ढओ रागो णामितो ते अरिहा॥ इदाणिं द्वेषः, 'दुष वैकृत्ये' 'द्विष अप्रीतौ वा' सो दुविधो–दव्वदोसो भावदोसो य, दव्वदोसो दुविधो, कम्मदव्वदोसो णोकम्मदव्वदोसो य, कम्मदव्वदोसो दोसवेदणिज्जं कम्मं बद्धं ण ताव उदयं देति सो कम्मदव्वदोसो, णोकम्मदव्वदोसो दुट्ठं बिलं दुट्ठा रुग्गा दुट्ठा छुधा एवमादि, भावदोसो दोसवेदणिज्जं उदिण्णगं, तस्स इमाणि णिरुत्ताणि-हितकज्जसुगइमग्गं दुसओ

स्नेहरागे अरहन्नक-दृष्टान्तः

॥५१५॥

नमस्कार व्याख्यायां ॥५१६॥

द्वेषनिक्षेपाः धर्मरुचि-दृष्टान्तः

णाणाइआअधम्मस्स । दोसो सो णादव्वो सव्वासुभमूलकम्मं तो ॥ १ ॥ जो सो असंतिकरणो अणुवसमो घातओ असंपत्ती । दोसो सो णायव्वो, कोधो माणो य से भेदा ॥ २ ॥ दूसेती दूसयती जम्हि य दूसज्जितित्ति पुण दोसो । अहवा संसारसुहस्स दूसओ भण्णती दोसो ॥ ३ ॥ एसो अपसत्थो दोसो, पसत्थो दोसो अण्णाणं अविरती मिच्छत्तं च दूसेति, संसारं विसए य जं द्विषति । तत्थ अपसत्थदोसे उदाहरणं—

णंदो णाविओ, गंगाए लोगं उत्तारेति, तत्थ य धम्मरुयी णाम अणगारो एति, सोवि णावाए उत्तिण्णो, जणो मोल्लं दातूण गतो, साधू रुद्धो, फिडिया भिक्खावेला, तथावि ण विसज्जेति, सो वालुयाए उण्हे छुहाइओ तिसाइओ य रुट्ठो, तेण रुट्ठेण जोइओ, सोवि दिट्ठीविसलद्धिओ, रुट्ठेण जोइओ मतो एगाए सभाए घरकोइलो जातो, सोवि किर एवं केणवि कहिंचि रोसियओ, सो साधू विहरंतो तं गामं गतो, भिक्खं समुद्दाणेत्ता तं सभं गतो, भोत्तुमारद्धो, तेण दिट्ठो, सो तं पेच्छंतो चेव आसुरुत्तो, साधू भोत्तुमारद्धो, सो तस्स उवरिं कयारं पाडेति, साधू अण्णपासं गतो, तत्थवि एवं चेव करेति, सो साधू कहिंचिवि ओवासं ण लभति, सो तं रुट्ठो पलोएति- को रे एस णाविगणंदमंगुलोत्ति दड्ढो, जत्थ समुद्दे गंगा पविसति तत्थ वच्छरे २ अण्णेण मग्गेण वहति, चिराणगा जा सा सा मतगंगा भण्णति, तत्थ हंसो जातो, सोवि माहमासे सत्थेण समं पाभातियं जाति, तेण दिट्ठो, पाणियस्स पक्खे भरितूण सिंचति, तत्थवि उद्दविओ, पच्छा सीहो अंजणपव्वते जातो, सोवि सत्थेण समं तं पदेसं वितीवयति, सीहो तं साधुं दट्ठूण उट्ठितो, सत्थो भिज्जति, सोवि साधुं ण मुंचति, तत्थवि दड्ढो सतो वणारसीए बडुओ जातो, तत्थवि तं ॥५१६॥
साधुं भिक्खं हिंडंतं अण्णेहिं चेडरूवेहिं समं भणाति, धूलिं च छुभति, रुट्ठेण दड्ढो, तत्थेव राया जातो, जातिं सरति, सव्वाओ

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां ॥५१७॥

धर्मरुचि-दृष्टान्तः

तिरियजातीओ असुभाओ संभरति, ताहे चिंतेति-जदि संपदं मारोहिति तो बहुगं फिट्टो भवामित्ति, ताहे तस्स जाणणाणिमित्तं समस्सं लंबेति, जो एतं पूरेति तस्स रज्जस्स अद्धं देमि, तत्थ इमो अत्थो- 'गंगाए णाविओ णंदो, सभाए घरकोइलो। हंसो मतंगतीराए, सीहो अंजणपव्वते ॥ १ ॥ वाणारसीय बडुओ राया तत्थेव आहतो' एवं गोधा पढंति, अण्णदा सो साधू विहरंतो आगतो, उज्जाणे ठितो, आराधिओ य, पढति, साधुणा पुच्छितो-सो साहति, साधुणा भणितं-अहं पूरेमि, 'एतेसिं मारओ जो सो, भवओ देसमागतो' सो आरामितो तं पाढं घेत्तुं रण्णो पासे आगतो पढति, राया तं सुणेत्ता मुच्छितो, सो हम्मति,–सो भणति हम्ममाणो कव्वं कातुं अहं ण याणामि। लोगस्स कलिकरंडो एसो समणेण मे दिण्णो ॥१॥ राया आसत्थो वारेति, पुच्छिओ-केणं कओत्ति ?, साहति- समणेणंति, राया तत्थेव मणूसे विसज्जति, जदि अणुजाणह तो वंदतो एमि, अह भणति–जथासुहं, सो आगतो, सड्ढो जातो, साधूवि आलोइयपडिक्कंतो सिद्धो। एवं संसारवद्धणो दोसो जेहिं णामितो ते अरिहा॥ एत्थ रागदोसा णयेहिं मग्गितव्वा, णेगमो संगहे ववहारे य पविट्ठो, संगहस्स कोधो माणो य दोसो, माया लोभो य रागो, ववहारस्स तिण्णिवि आदिमा दोसो, लोभो रागो, उज्जुसुतस्स कोधो दोसो, माणो माया लोभो य णवि रागो ण य दोसो, भयितव्वा, तिण्हं सद्दणयाणं कोधो य दोसो माणो दोसो माया दोसो, लोभो सिय रागो सिय दोसो।

कसाया इदाणिं, कसंतित्ति कसाया, 'कष गतौ' या अप्रशस्ता गतिः तां नयंतीति तेन कषायाः, अथवा शुद्धमात्मानं कलुषीकरोतीति कषायः, तेसिं अट्ठविधो णिक्खेवो-णामकसायाठवणदव्वसमुपात्तिपच्चयादेसे। रसभावकसाए या णयेहिं छहिं मग्गणा तेसिं ॥ १ ॥ हवति उदिण्णुवसंतए बज्झ उदिरिज्जमाणए भावे। पाणियरातीमादी कालो य गती चतुण्हंपि ॥२॥ एत्थ णयेहिं ॥५१७॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां ॥५१८॥

कषाय-निक्षेपाः

मग्गणा-णेगमो सव्वेवि इच्छति, संगहववहारा आदेसं उप्पत्तिं च णेच्छंति, उज्जुसुतो आदेसं समुप्पत्तिं च ठवणं च णेच्छति, तिण्हं सद्दणयाण णामकसायो भावकसायो एते वत्थू , सेसा अवत्थू। णामट्ठवणाओ गताओ, दव्वकसायो दुविहो-कम्मदव्वकसाओ णोकम्मदव्वकसायो य, कम्मदव्वकसायो कसायवेदणिज्जं बद्धअणुदिण्णं, णोकम्मदव्वकसायो सज्जकसायो लिंबकसायो य एवमादी, समुप्पत्ती जण्णिमित्तं कसाओ उप्पज्जाति, जथा–कट्टे अप्फिडितो कट्ठो कसायो, एवं जत्थ जत्थ,-किं एत्तो कट्ठतरं जम्मूढो खाणुयंमि आवडितो। खाणुस्स तस्स रूसति ण अप्पणो दुप्पमादस्स ॥ १॥ पच्चयकसायो णाम जदि पुव्वबद्धो पच्चया ण होज्जा ता ते णोदेज्जा, यथा- इह इंधने असति अग्नेः प्रज्वलनाभावः, आदेसकसाया णाम जथा केतवेण संदट्ठोट्ठभिउडी कसायमंतरेणावि तथा आदिश्यते एवंविध इति, रसकसायो कविट्ठादी, भावकसाया चत्तारिवि उदिण्णा कोधादी, तस्स कोधस्स णिक्खेवो चउव्विधो, दोण्णिवि गता, णोकम्मदव्वकोधो चम्मारकोधादी, कम्मदव्वकोधो चउव्विहो- अणुदिण्णो उवसंतो बज्झमाणो उदीरिज्जमाणो, अणुदिण्णो जो ण वेदिज्जति, उवसंतो जो य उवसामिओ, बज्झमाणो तप्पढमताए, उदीरिज्जमाणो उदीरणावलियापविट्ठो ण ताव वेदिज्जति, भावकोहो उदिण्णो, तस्स चत्तारि विभागा-उदगरातिसमाणो वालुय० पुढविरातिसमाणो पव्वयरायसमाणो, उदगे कड्डिता अनंतरं, वालुयाए दिवसेहिं केहिवि, पुढवी केहि छहिं मासेहिं, पव्वतो जावज्जीवाए, जो ताए वेलाए उवसमति सो उदगरातिसमाणो, पक्खिए वालुया, चाउम्मासियाए पुढवी, संवत्सरिए वोलीणे जो ण उवसमति सो पव्वतराति, देवगतिमणुयतिरियनरएसु गच्छंति यथासंख्यं कोवोदएणं, कोवेति तत्थ उदाहरणं— ॥५१८॥

वसंतपुरे उच्छिण्णवंसो एगो दारओ देसंतरं संकममाणो सत्थेणं उज्झितो तावसपल्लिं गतो, तस्स णामं अग्गियओत्ति, ताव-

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां

॥५१९॥

सेणं संवड्डितो, जमो णाम तावसो, जमस्स पुत्तोत्ति जम्मदग्गितो, सो घोरागारं तवच्चरणं करेति, विक्खातो जातो। इतो य देवा वेसाणरो सड्ढो धन्नंतरी तावसभत्तो, ते दोवि अवरोप्परं पण्णवेंति, सो तावसभत्तो भणति—परिक्खामो, सड्ढो भणति-जो अम्हं सव्वंतिमो जो य तुब्भं सव्वप्पधाणोत्ति परिक्खामो। इतो य मिहिलाए णगरीए तरुणधम्मो पउमरहो राया, सो य पवच्चति वासुपुज्जसामिस्स मूले पव्वयामित्ति, तेहिं सो परिक्खिज्जति भत्तेण पाणेण य, पंथे य विसमे,सुकुमालओ दुक्खाविज्जति, अणुलोमे य ते उवसग्गे करेंति, सो धणिततरागं थिरो जातो, सो तेहिं ण खोभितो, अण्णे भणंति-सावओ भत्तपच्चक्खाइओत्ति सिद्धपुत्तरूवेण गता अतिसए साहंति, भणंति जथा- चिरं जीवियव्वंति, सो भणति- बहुओ धम्मो होहिति, ण सक्कितो। गतो जमदग्गिस्स मूलं, सउणरूवाणि कताणि, कुच्चे से घरओ कओ, सउणो भणति-भद्रे! अहं हिमवंतं जामि, तुमं अच्छ, सा ण देति, मा ण एहिसित्ति, सो सवहा करेति गोघातकादि जथा एमित्ति, सा भणति-ण एतेहिं पत्तियामि, जदि एतस्स रिसिस्स दुक्कयं पियसि ता विसज्जेमि, सो रुट्ठो, तेहिं दोहिवि हत्थेहिं गहिताणि, पुच्छिताणि भणति- महारिसि ! अणवच्चोसित्ति, सो भणति-सच्चयं,खोभिओ,देवो सावओ जातो। इमोवि ताओ आतावणाओ उत्तिण्णो मिगकोट्ठगं णगरं गतो,तत्थ जियसत्तू राया, तस्स सगासं गतो, राया उट्ठितो किं देमित्ति?, तेण भणितं- धूतं वि(मे)देहित्ति, तस्स धूतासतं, रण्णा भणितो-जा तुब्भे इच्छति सा तुब्भंति, सो कण्णंतेपुरं गतो, ताहिं दट्ठूण णिच्छूढं, किं ण लज्जिसित्ति य भणितो, तेण रुट्ठेण ताओ कुज्जिताओ कताओ, तत्थेगा रेणूए रमति तस्स धूता, तीसेऽणेण फलं पणामितं, इच्छसित्ति य भणिता, ताए हत्थो पसारितो,सो भणति-एसा ममं इच्छतित्ति गहिता, खुज्जाओ उवड्ढिताओ सल्लीरुवओ दायव्वोत्ति, सो भणति-ममं णत्थि, ताहिवि भणिओ-विखुज्जीकरेहि, विखुज्जीकताओ, इतरी-

क्रोधे जमदग्न्यादि:

॥५१९॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां ॥५२०॥

क्रोधे जमदग्न्यादिः

वि आसमं नीया, रण्णा सेसगो परिजणो दिण्णो, संवड्डिता, जाहे सा जोव्वणपत्ता जाता ताहे विवाहो कतो, अण्णदा उदुंमि जमदग्गिणा भणिता-अहं ते चरुं साहेमि जेण ते पुत्तो बंभणो पधाणो होति, तीए भणितं-एवं कज्जतुत्ति,मज्झ य भगिनी हत्थिणापुरे णगरे अणंतवीरियस्स भज्जा, तीसेवि साहेहि खत्तियचरुंति, तेण साहितो, सा चिंतेति- अहं ताव अडवीमिगी जाता, मा मे पुत्तोवि एवं णासतुत्ति तीए खत्तियचरुओ जिमितो, इतरीएवि बंभणचरू पेसितो, दोण्हवि पुत्ता जाता, ताए रेणुगाए रामो इतरीए कत्तवीरिओ, सो य रामो संवड्डति, अण्णदा दो विज्जाहरा तत्थ समोसढा, तत्थ एगो पडिभग्गो तंमि आसमे, सो रामेण पडिचरितो, तेण से तुट्ठेण परसुविज्जा दिण्णा, सरवणे छूढो अच्छति, तत्थ सरवणे साधिता, अण्णे भणंति-जमदग्गिस्स परंपरागता परसुविज्जा, सो रामो तेण पाढितोत्ति, सा रेणुका भगिणीघरं गता, तेण रण्णा सद्धिं संपलग्गा, ससुता जमदग्गिणा आणिता, रुट्ठो, सा रामेण सपुत्तिया मारिता, सो य किर तत्थेव ईसत्थं सिक्खति, तीए भगिणीए सुतं, रण्णो कहितं, सो आगतो, आसमं विणासेत्ता गावीओ घेत्तूण पधाविओ, रामस्स कहितं, तेण धावितूण परसुणा मारितो, अणंतवीरियपुत्तो कत्तविरितो राया जातो, तस्स देवी तारा, अण्णदा से पितुमरणं कहियं, तेण आगंतुं जमदग्गी मारिओ, रामस्स कहितं, तेणागतेणं जलंतेणं परसुणा कत्तविरितो मारितो, सयं चेव रज्जं पडिवण्णो। इतोवि सा तारादेवी तेण संभमेण पलायंती तावसासमं गता, पडितो य से मुहेण गब्भो, तेहिं से णामं कतं सुभोमोत्ति, अण्णे भणंति-भूमिघरे संवड्डितो जातो यात्ति सुभूमो जातो, रामस्स य परसू जहिं जहिं खत्तियं पेच्छाति तत्थ तत्थ जलति,अण्णदा तावसासमस्स पासेणं वीतिवयाति जाव परसू उज्जलितो,सो तावसासमं गतो, तावसा भणंति- अम्हे च्चिय खत्तिया, तेण रामेण सत्तवारा णिक्खत्तिया पुढवी कता, दाढाणं च थालं भरितं, एवं ॥५२०॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां ॥५२१॥

किर रामेणं कोवेणं खत्तिया वहित्त, एरिसो कोधो दुरंतओ जेहिं णामितो ते अरिहा ।

माणो चउव्विधो- कम्मदव्व० तहेव णोकम्मे जाणि दुण्णामाण्णि दव्वाणि, भावओ उदिण्णो, तत्थ माणस्स चत्तारि विभागा- तिणिसलतासमाणो दारुथंभसामाणो अट्ठिथंभसामाणो सेलथंभसामाणो, तहेव उववातोवि, तत्थ उदाहरणं-सुभोमो तत्थ संवड्ढति, इतरोवि, विज्जाहरसेढीए मेहरहो नाम विज्जाहरो, तस्स धूता पउमसिरी, ताए भूताए कण्णाकालो, संभिण्णसोतं णाम णेमित्तियं पुच्छति- को पउमसिरीए वरो भविस्सति ?, सो भणति- सुभोमणामचक्किस्स भज्जा भविस्साति, सो कहिं ?, तावसासमे भूमिघरे संवड्ढति, एवं सुणेत्ता विज्जाहरो आगतो, तदप्पभितिं मेहरहो सुभोमं ओलग्गति सव्वत्थ रक्खति अण्णपाणादीणि य से देति । एवं सो विज्जाहरपरिग्गाहितो संवड्ढति, अण्णदा विसादादीहिं परिखिज्जति । इतो य रामो णेमित्तियं पुच्छति-कतो मम विणासो होहितित्ति, तेण भणितो- जो एत्थ सीहासणे णिवेसिहिति एयाओ य दाढाओ पायसीभूताओ जो खाहिति ततो ते भयं णिच्छयं कतं, तत्थ सीहासणं धुरे ठवितं, दाढाओ य से अग्गओ ठविताओ, एवं कालो वच्चति । इतो य सुभोमो मातं पुच्छति- किं एत्तिलओ चेव लोगो ? अण्णोवि अत्थित्ति?, ताए सव्वं कहितं, ता मा णीसरिहिसि, मा मारिज्जिहिसि, सो अण्णदा रममाणो हत्थिणपुरं गतो तं सभं, तत्थ सीहासणे उवविट्ठो, देवता रडिऊण णट्ठा, ताओ दाढाओ परमन्नं जातं, तो तेवि माहणा कट्ठादीहिं पहता, तेहिं विज्जाहरेहिं ताणि कट्ठाणि तेसिं चेव उवरिं पाडिज्जंति, सो वीसत्थो भुंजति, रामस्स कहितं, रामो सण्णद्धो आगतो, परसुं मुयति, विज्झाइओ, इमो तं चेव थालं गहाय उट्ठितो, चक्करयणं जातं, ॥५२१॥

माने सुभूमः

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां ॥५२२॥

मायायां शुकः

तेण रामस्स सीसं छिण्णं, पच्छा तेण सुभोमेण माणेणं एक्कवीसं वारा णिब्बंभणा पुहवी कता, गब्भा य फालिया, एरिसो दुरंतो माणो जेहिं णामितो ते अरिहा णमोक्कारस्स।

माया चउव्विधा- कम्म० तहेव णोकम्मे जाणि णिधाणपउत्ताणि दव्वाणि, भावमाताए इमे विभागा- अवलेहणिया गोमुत्तिया मेंढविसाणं वंसीमूलं, गतीओ तहेव, मायाए उदाहरणं पंडरज्जा, जथा तीए भत्तपच्चक्खाइताए पूयानिमित्तं लोगो आवाहितो, आयरिएहि य णाए आलोयाविया, ततियं च वारं णालोयितं, भगति य-एस पुव्वब्भासेण आगच्छति, सा य मायासल्लदोसेण किब्बिसिणी जाता, एरिसी दुरंता मायत्ति॥ अहवा सुयगो-एगस्स खंतस्स पुत्तो खुड्डओ,सो सुहलालियए जाव अविरतियत्ति खंतेण धाडिओ, सो लोगस्स पेसणं करेंतो हिंडितूण अट्टवसट्टो मतो रुक्खकोटरे सुतओ जातो, सो य अक्खाणगाणि धम्मकहाओ य जाणाति जाइसरत्तणेणं, पढति, वणयरएण गहिओ, तेण पादो कुंठिओ अच्छिं च काणं कतं, वीधीए उड्डवितो, ण कोइ इच्छति, सो तं सावगस्स आवणे ठवित्ता मुल्लस्स गतो, तेण तस्स अंतिए अप्पओ जाणाविओ, तेण कीतो, पंजरए छूढो, सयणो से मिच्छदिट्ठिओ, तो तेसिं धम्मं कहेति, ताणि उवसंताणि, अण्णदा तस्स सड्डस्स पुत्तो माहेसरधूतं दट्ठूण उम्मत्तो जातो, तेण सव्वे तद्दिवसं धम्मं ण सुणेंति,णेव पच्चक्खायंति,तेण पुच्छियं,तेहिं सिट्ठं,सो भणति-सुत्थाणि अच्छह,तेण सो दारओ सिक्खवितो-- सररक्खाणं ढुक्काहि ठिकिरियं च अच्चेहि, ममं च पच्छतो इट्टं उक्खणितूण णिहणाहि, तेण तहा कतं, सो य सरक्खसड्डो पायपडियओ विण्णवेति, जथा- धीयाए मे वरं देहि, सुअतो भणति- जिणदासमाहेसरस्स देहेति, तेण दिण्णा, सा गव्वं वहति, जथाऽहं देवदिण्णा, अण्णदा तेण हसितं, णिब्बंधे कहितं, सा तस्स अमरिसं वहति, संखडीए वक्खित्ताणि, हराति,

॥५२२॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां ॥५२३॥

मायायां शुकवृत्तं

भणति- तुमंसि पंडियओत्ति पिच्छं उप्पाडितं, पुणवि आढत्तो, सो चिंतेति- कालं हरामि, भणति-णाहं पंडितओ, सा ण्हाविती पंडितिया । एगा ण्हाविती, कूरं छेत्तं णेति, चोरेहिं गहिता, सा भणति- अहंपि एरिसे मग्गामि, रत्तिं एह तो रूवते लएत्ता जाई-हामो, ते यागया, ताए वातकाणएण णक्काणि छिण्णाणि, अण्णे भणंति- खत्तमुहे खुरेण छिण्णाणि, बितियदिवसे पुणो गहिया सा, सीसं कोट्टंती भणति-केण तुब्भेत्ति, तेहिं समं पधाइया, एगंमि गामे भत्तं आणेमित्ति कल्लालकुले विक्कीया सा, ते रूवए घेत्तूण पलाता, रत्तिं रुक्खं विलग्गा, तेवि पलाता ओलग्गंति, ते गावीओ हरितूण तत्थेवं आवासिता रुक्खहेट्ठे वीसमंति मंसं च खायंति, एको मंसं घेत्तूण विलग्गो रुक्खं, दिसाओ पलोएति, तेण दिट्ठा, सा से रूवए दाएति, सो ढुको, तीए जिब्भाए दंतेहिं गहितो, तेण पडंतेण एसत्ति भणिए इतरे आसत्ति काऊण णट्ठा, इतरा मोसं घेत्तुं घरं गता, सा ण्हाविती पंडितिता, णाहं पंडितओ। ताए पुणोऽवि लोमं उक्खित्तं पंडियओसित्ति, भणति-णाहं पंडियओ ण्हाविती पंडिता, पुणरवि बितिया ण्हाविता भणिता । तहा लोमु-क्खणणेणं तुमं पंडितो, सो भणति- णाहं पंडितो सा वाणियदारिया पंडितिया, कहं ?, वसंतपुरे एगो वाणियओ, तेण अण्णवा-णिएण समं पणिययं छिण्णं-माघमासे जो रत्तिं पाणिए अच्छाति तस्स सहस्सं देमि, सो दरिद्दवाणियओ अच्छितो, इतरो चिंतेति-किह एरिसे एसो सीते अच्छितो ? ण य मतोत्ति, सो तं पुच्छति, भणइ--एत्थ णगरे एगत्थ दीवओ जलति तं अहं णिहालिंतो अच्छितो, देहि तं सहस्संति, इतरो ण ठितोत्ति भणाति ण देमि, किं कारणंति, तुमं दीवकप्पभावेण अच्छितो, इतरो न लद्धंति अद्धितिं पत्तो घरं गतो, तस्स य धीया कुमारी, ताए भण्णति-तात ! किं अद्धितिं करेह ?, सो भणति- णिरत्थयं अहं पाणिमज्झे अच्छितोत्ति, सा भणति-मा अद्धितिं करेह, उण्हकालए आगते भत्तं कीरतु णिमंतिज्जतु य अण्णेहिं वाणियएहिं समंति, जेमेंताण ॥५२३॥

नमस्कार व्याख्यायां ॥५२४॥

य चक्खुपहे पाणियं ठविज्जतु, जदा तिसिओ पाणियं मग्गति ताहे भणिज्जह-एतं पाणितंति, तेण कतं भत्तं, णिमंतिया य जिमिता, ताहे तेण पाणियं मग्गितं, सो भणति—एतं पाणियं पेच्छिज्जतो ते तिसा णस्सतु, सो भणति—किह पेच्छंतस्स तिसा णस्सति ?, इतरो भणति- जदि तुज्झ पाणियं पेच्छंतस्स तिसा ण णस्सति तो ममं दीवगं पासंतस्स किह सीतं णतिथात्ति भंणति, जितो दवावितो य दीणारसहस्सं। सो चिंतेति—एसो णिव्विन्नाणो केण एतस्स बुद्धी दिण्णा ?, कहियं से जथा- धीयाएत्ति, सो तीसे पदोसमावन्नो, सो तं रोसेण दारियं वरेति, पिता से ण देति-मा मस्सातियाए दुक्खियं काहेतित्ति, इतरीए पिता भणितो- देहि मम एतस्स, किं मारेज्जत्ति?, दिण्णे इतरे घरे कूवं खणावेंति, दारियाए भणियं- गवेसह किं मज्झ घरे वट्टति ?, गविट्ठं सिट्ठं जहा कूवं खणंति, ताहे ताएवि सगिहाओ आढत्ता सुरंगा ताव खणाविता जाव से कूवो, ताव से परिणीया, तेण परिणेत्ता कूवे छूढा, कप्पासस्स सयभारो दिण्णो, भणति य-तुमं किर पंडितिया किह ते सांप्रतं?, पच्छा भणति- अहं दिसाजत्ताए जामि, तो तेण कप्पासेणं कत्तिएणं तिहि य पुत्तेहिं ममं जातएहिं जह एमि तह करेज्जासि, घरे यणेण संदिट्ठं- जहा एताए कोद्दवसेतियाए कूरं कंजितं दिवसे २ देज्जहत्ति गतो, सावि सुरंगाए पितुघरं गता भणति- एतं सुत्तं करेह भत्तग- सेतियं च पडिच्छह, अहमावि गच्छामित्ति गणियावेसेणं गता पुरतो एगत्थ णगरे, तत्थ भाडएणं घरं गहियं, सोवि तीए उवचितो, णियघरं णीतो, सो तं पुच्छति- तुमं का कण्णगा ?, सा भणति- अहं पुरिसद्वेषिणी, तुमं मम भावितो, सो तीए आराहितो, बहूणि य वरिसाणि ताए समं अच्छति, पुत्ता य तिन्नि जाता, दव्वं चणाए सव्वं आकड्ढितं, अण्णदा वाणियओ पडिएति, सावि तेणेव सत्थेण पडियागया, अग्गतरागं पितिघरं गता, सुत्तं गहाय पुत्ते य सुरंगाए तमेव कूवं गता ठिता, वाणियओवि सगिहं

मायायां शुकवृत्तं ॥५२४॥

नमस्कार व्याख्यायां ॥५२८॥

गतो, सा यऽणेण संभरिया, किआ य से जाता, ताहे पुच्छति-तं भत्तगं कोवि एत्थ पडिच्छति ?, तेहिं कहितं-जहा पडिच्छति, ताहे रज्जूए आसंदतो उत्तारिओ, पढमं सुतं उत्तारियं, पच्छा पुत्तो, पुणो बितियओ, ततियएण सहप्पणा ओतिण्णा, ताहे सो तुट्ठो, गिहसामिणी कता । एवं सा पंडिया, णाहं, लोमं तहेव जाव कोलगिणि पंडितिता, किह ?- एगा कोलिगिणी कुमारी, तीसे माता-पितरो गामं गताणि, सा एक्कलिया अच्छाति, चोरो य गिहं पविट्ठो, सा अप्पणो परिपदणयं करेति-अहं मातुलपुत्तस्स दिज्जिहामि, तो मम पुत्तो जाहिति, तस्स चंदओत्ति णामं कज्जिहिति, तो णं अहं सद्दावेस्सामि-एह चंद्रा!, तं सुणेत्ता सएज्झगचंदो सद्दं करेंतो आगतो, चोरो णट्ठो, सा पंडिया णाहं । पुणो भणति-सा कुलपुत्तगदारिया पंडिता, कहं ?, वसंतपुरं णगरं जियसत्तू राया, तस्स कुलपुत्तओ, तस्स कूलधूता, राया भणति, जथा- जो ममं असंतेण पत्तियावेति तस्स भोगं देमि, सो कुलपुत्तओ अण्णदा ओसूरे घरं गतो, धूता पुच्छति- किं ओसूरे आगतत्ति, तेण सिट्ठं, राया भणति- जो असंतेण पत्तियावेति तस्स भोगं देमि, तेण ओसूरो जातोत्ति, सा भणति- अहं पत्तियावेमि, तेण रन्नो मूलं नीता, सा रन्नो अक्खति- अहं वड्डकुमारी, अण्णदा मातुलपुत्तस्स दिण्णा, मम य माता पिता पवसिता, सो पाहुणओ आगतो, हिदएण ममंति किण्ण करेमि ?, ताहे पाहुणं कतं, सो य रत्तिं सप्पेण खइतो, मतो, णीतो मए सुसाणं, तत्थ सिवादीणि भीमाणि उट्ठिताणि, राया भणति- कहं ण भीता ?, सा भणति- जति सच्चं होंतं, जितो राया, वाणियदारिया णेपुरइत्तिया सा पंडितिया तिलक्खाइया य, एवमादीणि पंचअक्खाणगसताणि अक्खाति, रत्ती विगता णिप्पिच्छितो मुक्को, सेणेण गहितो, दोण्हं सेणाण भंडताण असोगवणियाए पडितो पेसिल्लियपुत्तेण दिट्ठो, तेण भणितो- संगोवाहि अहं ते कज्जं काहामि, तेण संगोवितो, अण्णस्स रज्जे दिज्जमाणे भिंडमए मयूरे विलग्गेऊणं रत्तिं

मायायां शुकवृत्तं ॥५२९॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता..........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] “आवश्यक” निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

नमस्कार व्याख्यायां ॥५२६॥

मायायां सर्वांग-सुंदरी

राया भणितो-पेसिल्लियपुत्तस्स रज्जं देहित्ति, रण्णा दिण्णं, सूतएण सत्त दिवसाणि भग्गियं रज्जं, ते दोवि कुलाणि पव्वावितामि-सड्ढकुलं माहेसरकुलं च, तेण सूयएण भत्तं पच्चक्खायं, सहस्सारे उववण्णो ।

अहवा सव्वंगसुंदरित्ति, वसंतपुरं णगरं, जियसत्तू राया, जियवत्ति धणावहा भातरो सेट्ठी, धणसिरी य तेसिं भगिणी, सा य बालरंडा परलोगरता य, पच्छा कप्पागयधम्मघोसायरियसगासे पडिबुद्धा, भातरोवि सिणेहेण सह पव्वातितुमिच्छंति, ते संसारणेहेण ण देंति, सा य धम्मवयं खद्धं खद्धं करेति, भातुजाताओ य कुरकुरायंति, तीए चिंतियं- पेच्छामि ताव भातुगाण चित्तं, किं मे एताहिंति?, पच्छा णियडीए आलोइऊण सोवणगपवेसकाले वीसत्थं खद्धं धम्मगयं जंपितूण ततो णट्ठतुंडेण जहा से भाता सुणेति तहेगा भाओज्जातिया भणिता- किं बहुणा ? साडियं रक्खेज्जासि, तेण चिंतियं- णूणमेसा दुच्चारीणत्ति, वारियं च भगवता असतीपोसणंति, ततो णं परिट्ठवेमित्ति पल्लंके उवविसंती निवारिया, सा चिंतेति- हा किमेतंति ?, पच्छा तेण भणियं- घरातो मे णीहि, सा चिंतेति-किं मए दुक्कडं कतंति ?, ण किंचि पासति, ततो तत्थेव भूमीगयाए किच्छेण णीता रतणी, पभाते ओलुग्गंगी णिग्गता, धणसिरिए भणिया- कीस ओलग्गंगित्ति ?, सा रुयंती भणति- ण याणामो अवराहं गेहाओ य धाडिया, तीए भण्णति- वीसत्था अच्छाहि, अहं ते भलिस्सामि, भाता भणितो- किमेयमेवंति ?, तेण भणियं- अलं मे दुट्ठसीलाए, तीए भणितं-कहं जाणासि ?, तेण भणियं-तुब्भ चेव सगासाओ, सुता मे देसणा णिवारणं च, तीए भणियं- अहो ते पंडियत्तणं वियारक्खमयं धम्मयापरिणामो, मए सामण्णेण बहुदोसमेतं भगवया भणितं तीसे उवादिट्ठं वारिया य, किमेतावतेव दुच्चारिणी होति, ततो सो लज्जितो मिच्छादुक्कडं से दवाविओ, चिंतियं च णाए-एस ताव मे कसिणधवलपडिवज्जगो। बितिओ- ॥५२६॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता..........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

नमस्कार व्याख्यायां ॥५२७॥

वि एवं चेवं चेव विण्णासितो, णवरं सा भणिता- किं बहुणा ?, हत्थं रक्खेज्जसित्ति, सेसविभासा तहेव जाव एसोवि मे कसिण-धवलपडिवज्जगोति । एत्थ पुण इमाए णियडिअब्भक्खाणदोसतो तिव्वं कम्ममुवणिबद्धं, पच्छा एतस्स अपडिकमितभावतो पव्वइया, भातरोवि से सह जाताहिं पव्वइया, अहायुगं पालित्ता सुरलोगं गयाणि । तत्थवि ता अहातुगं पालित्ता भातरो से पढमं चुता साकेते णगरे असोगदत्तस्स इब्भस्स समुद्दत्तसागरदत्ताभिधाणा पुत्ता जाता, इतरीवि चइतूण गयपुरे णगरे संखस्स इब्भसावगस्स धूता आयाता, अतीव सुंदरित्ति सव्वंगसुंदरित्ति से णामं कतं, इतरीओवि भातुज्जायाओ चविऊण कोसलाउरे णंदणाभिधाणस्स इब्भस्स सिरिमतिकांतिमतिधूताओ आआताओ, जोव्वणं पत्ताणि, सव्वंगसुंदरी कहंचि साकेयाओ गतपुरमागतेणं असोगदत्तसेट्ठिणा दिट्ठा, कस्सेसा कण्णगत्ति?, संखस्सत्ति सिट्ठे सबहुमाणं समुद्दत्तस्स मग्गिता, लद्धा विवाहो य कतो, कालंतरेण सो विसज्जायगो आयओ, उवयारो से कतो, वासहरं सज्जियं, एत्थंतरम्मि य सव्वंगसुंदरीए उदिण्णं तं णियडिवंचणं पढमकम्मं, तयो भत्तारेण से वासगिहट्ठिएण वोलेंती देवगी पुरिसच्छाया दिट्ठा, ततो णेण चिंतितं-दुट्ठसीला मे महिला, कोवि अवलोएतूण गतोत्ति, पच्छा सा आगता, ण तेण बोल्लाविया, ततो अट्टदुहट्टहियाए धरणीए चेव रतणी गमिता, पभाते से भत्तारो अणापुच्छिय सयणवग्गं एगस्स धिज्जातियस्स कहेत्ता गतो साकेयं णगरं, परिणीता यऽण्णेण कोसलाउरे णंदस्स धूता सिरिमतित्ति, भातुणा य भगिणी कंतिमती, सुतं च णेहिं, ततो गाढतममद्धिती जाता, विसेसतो तीसे, पच्छा ताणं गमागमसंववहारो वोच्छिण्णो, सा धम्मपरा जाता, पच्छा पव्वइया । कालेण विहरंती पवित्तिणीए समं साकेतं गया, पुव्वभाउज्जाओ से उवसंताओ, भत्तारा य तासिं ण सुट्ठु, एत्थंतरम्मि य तीसे उदितं णियडिणिबंधणं वितियकम्मं, पारणगे भिक्खट्ठं पविट्ठा, सिरिम-

मायायां सर्वांग-सुंदरी ॥५२७॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां ॥५२८॥

लोभे लुब्धनंद:

ती य वासघरं गता हारं पोयति, तीए अब्भुट्ठिता, सा हारं मोत्तूण भिक्खट्ठमुट्ठिया, एत्थंतरम्मि चित्तकम्मोइण्णेणं मयूरेणं सो हारो ओइलिओ, तीए चिंतियं-अच्छरीतामियं, पच्छा साडगद्धेण ठइयं, भिक्खा पडिग्गहिता, णिग्गया य, इतरीए जोइयं जाव णत्थि हारोत्ति, तीए विचिंतियं-किमेयं वट्टखेडं ?, परियणो पुच्छितो, सो भणति-ण कोति एत्थ अज्जं मोत्तूणागओ, तीए अम्बाडिओ, पच्छा फुट्टं, इतरीएवि पवत्तिणीए सिट्ठं, तीए भणियं-विचित्तो कम्मपरिणामो, पच्छा उग्गतरतवरता जाता, तेसिं चाणत्थभीयाण तं नेहं न उग्गाहेति, सिरिमतिकंतिमईओ भत्तारेहिं हसिज्जंति, ण य विपरिणमंति, तीए उग्गतरतवरयाए कम्मसेसं कयं, एत्थंतरंमि सिरिमती भत्तारसहाया वासहरे चिट्ठति जाव मोरेणं चित्ता ओयरिऊण णिगिलिओ हारो, ताणि संवेगमावण्णाणि, अहो से भगवतीए महत्थता जं ण सिट्ठमिदंति खामितुं पयट्टाणि, एत्थंतरंमि से केवलमुप्पण्णंति देवेहिं महिमा कता, तेहिं पुच्छियं, तीएवि साहितो परभववुत्तंतो, ताणि पव्वइयाणि । एरिसा दुहावहा मायात्ति ।

कम्मदव्वे तहेव, णोकम्मे आकरलोहं, एवमादी, अण्णे भणंति-णोकम्मे अकरमोत्ती एवमादि, अकरमोत्ति चिक्कणिका, भावे उदिन्नो, तस्स चत्तारि विभागा-हलिद्दारागो खंजण० कद्दम० किमिरागो, गतीओ तहेव, तत्थ उदाहरणं लुद्धणंदो-पाडलिपुत्ते णंदो वाणियओ, जिणदासो सावओ, राया जियसत्तू, तलागं खणेति, फाला दिट्ठा, सुरामोल्लंति दो गहाय गता वीथीए, सावगस्स उवणीया, तेण णेच्छिता, ताहे णंदस्स उपणीया, तेण गहिता, णाता य, ते य भणिता-जदि अण्णेवि अत्थि तो आणेज्जाह, अहं चेव गेण्हामि, एवं से दिवसे २ ते फाला गेण्हति, अण्णदा अब्भरहिते सयणिज्जामंतणए बलामोडीय णीतो, पुत्ता भणिया-फलं गेण्हहत्ति, सो आगतो, तेहिं फाला ण गहिया, आकुट्ठा य गता पूवियसालं, तेहिं ऊणगं मोल्लंति एगंते एडिता, किट्ठ पडियं, ॥५२८॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां ॥५२९॥

दिट्ठा, रायपुरिसेहिं गहिया, जहावत्तं कहितं रन्नो से, णंदो आगतो, सो भणति-गहिता णविन्ति, तेहिं भण्णति-किं अम्हेवि गहेण गहिया ?, तेणं अतिलोलताए एतस्स लाभस्स फिट्टो दो पादाण दोसेणंति, एक्काए कुसीए पादा भग्गा दोवि, सयणो विलवति । इतो रायपुरिसेहिं सो सावओ णंदो य राउलं णीया, पुच्छिया, सावओ भणति-मज्झ इच्छाप्पमाणातिरित्तं, अविय कूडमाणंति ते ण गहिया, सो णंदो शूले भिण्णो सकुलो उच्छाइओ, सावओ सिरिघरिओ कतो, एरिसो लोभो जेहिं णामितो ते अरिहा णमोकारस्स ।

इदाणिं इंदियाणि, इन्द्रस्येदं इन्द्रियं, इन्द्रो जीवः, तेन इन्द्रो इयर्ति अनेनेति इंद्रियं, इ गतौ, इन्द्रियाणि दुविहाणि-दव्विदियाणि भाविंदियाणि य, दव्विंदियं दुविहं-णिव्वत्तणाए उवकरणे य, णिव्वत्तणाए जहा लोहकारो भणितो एतेण लोहेण परसुं वासिं थोभणयं सूइं च णिव्वत्तेहित्ति, तेण तं गहात तेहिं पमाणेहिं खंडियाणि जाव कम्मस्स समत्थाणि सा णिव्वत्तणा, कज्जसमत्थाणि जायाणि उवगरणाइं, भाविंदियं दुविहं-लद्धीए उवयोगतो य, जाणि जेण जीवेण लद्धाइं इंदियाणि सा लद्धी, एगिंदियाणं एगा फासिंदियलद्धी, बेइंदियाणं०तेइंदियाणं०चउरेंदियाणं०पंचेंदियाणं०,पंचविहो उवयोगो, जाहे जेण इंदिएण उवजुज्जति, सव्वजीवा य किर उवयोगं पडुच्च एगिंदिया, ताणि य इंदियाणि पंच-सोइंदियाईणि, श्रूयते अनेनेति श्रोत्रेन्द्रियं, तत्थ सोइंदिए उदाहरणं-

श्रोत्रेन्द्रिये पुष्पशालः

पुप्फसालो नाम गायणो, सो अतीव सुस्सरो विरूवो य, तेण वसंतपुरे णगरे जणो हतहिदतो कतो, तत्थ य णगरे एगो सत्थवाहो दिसाजत्तं गतेल्लओ, भद्दा य से भारिया, तीए केणवि कारणेण दासीओ पयट्टियाओ, ताओ सुणेंतीओ अच्छंति कालं ण याणंति, चिरेण पडिगताओ, ताओ अंबाडिताओ भणंति-मा य भट्टिणी रूसह, जं अज्ज अम्हाहिं सुतं पसूणवि लोमणिज्जं, किमंग ॥९२२॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां ||५३०||

पुण सकण्णविण्णाणाणं ?, कहंति ?, ताहिं से कहियं, सा हिदएण चिंतेति-किह पेच्छेज्जामीत्ति । अण्णदा य तत्थ जत्ता कस्सति जाया, सव्वं णगरं गतं, सावि गता, लोको य पणिवतिऊणं वच्चति, पभायदेसकालो य वट्टति, सोवि गाइऊण परिसंतो परिसरे सुत्तो, सा य सत्थवाही दासीहिं समं आगया पणिवतित्ता पदाहिणं करेति, चेडीहिं दाइओ एस सोत्ति, सा संभंता, ततो गया पेच्छति विरूपं दंतुरं, तं पेच्छिऊण भणति-दिट्ठं से सरूवेण चेव गेयंति तीए निच्छूढं, तं च तेण चेतियं, कुसीलएहि य से कहियं, तस्स अमरिसो जातो, तीसे घरस्स मूले पच्चूसकालसमए गातुमारद्धो पउत्थपतियाणिबद्धं जहा आपुच्छति जहा तत्थ चिंतेति जहा लेहं विसज्जति जहा आगतो घरं पविसति, सा चिंतेति-सच्चयं वट्टतित्ति ताहे अब्भुट्ठेमित्ति आगासतलगाओ अप्पा मुक्को, सा मया, एवं सोतिंदियं दुद्दमं, तीसे पतिणा सुतं जहा एतेण मारियात्ति, तेण सो सद्दावितो, विसिट्ठं जेमणं जेमावितो जाव कंठोत्ति, तेण भणितो-गायंतो उवरिं चडाहित्ति, सो रत्तो गायति विलग्गति, उड्डेणं सासेणं सिरं फुडियं मतो ।

चक्षुरिन्द्रिये उदाहरणं

चक्ष्यतेऽनेनेति चक्षुरिन्द्रियं, चक्खिदिए उदाहरणं- मथुरा णगरी, भंडिरवडेंसियं चेतियं, जणो जत्ताए जाति, तत्थ य एगंमि वाहणे एगाए इत्थियाए सणेपूरो सालत्तओ पादो निग्गतो, तत्थ य एगो वाणियपुत्तो तं पेच्छति, सो चिंतेति-जीसे एस अवयवो सा सच्चं देवीणवि अतिरेगरूवा होज्जत्ति तेण गविट्ठा, णाता य, तत्थ समासियगं आवणं गेण्हति, तीसे दासचेडीणं दुगुणं देति, ताओ तेणं हतहितताओ कताओ, तीसेवि साहंति-एरिसरूवो वाणियओ, अण्णदा सो भणति-को एताओ पुडियाओ उग्घाडेति ?, ताहिं भाणियं- अम्हं सामीणित्ति, तेणं एक्काए पुडियाते लेहो भुज्जपत्ते लिहितूण छूढो इमेण अर्थेण-काले प्रसुप्तस्य जनार्दनस्य, मेघांधकारासु च शर्वरीषु । मिथ्या न भाषामि विशालनेत्रे !, ते प्रत्यया ये प्रथमाक्षरेषु ॥ १ ॥ पादे पादे च पादे च, पादे च ||५३०||

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां

॥५३१॥

प्रथमाक्षरे। तत्त्वां विज्ञापयिष्यन्ति, यन्मे मनसि वर्तते ॥१॥ कालोऽयमानन्दकरः शिखीनां, मेघांधकारश्च दिशि प्रवृत्तः। मिथ्या न वक्ष्यामि विशालनेत्रे !, ते प्रत्यया ये प्रथमाक्षरेषु॥ ३॥ ताहे से पडिलेहितो- न शक्यं त्वरमाणेण, प्राप्तुमर्थान् सुदुर्लभान्। भार्यां च रूपसंपन्नां, शत्रूणां च पराजयम् ॥ १ ॥ नेहलोके सुखं किंचिच्छादितस्यांहसा भृशम्। मृतं च जीवितं नृणां, तेन धर्मे मतिं कुरु ॥२॥ चेडीहिं पुडिआओ अप्पिताओ, इतरस्स चित्तं सा णेच्छातित्ति विसण्णो, पोत्ताणि फालेतूणं णिग्गतो, अण्णं रज्जं गतो। सिद्ध- पुत्ताणं वक्खाणे ढुक्को, तत्थ णीतीए एस 'सिलोगो न शक्यं त्वरमा०' वण्णिज्जति, जहा-वसंतपुरे णगरे जिणदत्तो णाम सत्थवाह- पुत्तो, सो य समणसड्डो, इतो चंपाए परममाहेसरो धणो णाम सत्थवाहो, तस्स य दुवे अच्छेरगाणि-चउसमुद्दसारभूता मुत्तावली धूता य कण्णा हारप्पभत्ति, जिणदत्तेण सुताणि, बहुप्पगारं मग्गितो ण देति, सतो णेण वंठवेसो कतो, एगागी सयं चेव चंपं गतो, अंचितं च वट्टति, तत्थेको उवज्झायगो तस्स उवट्ठितो पढामित्ति, सो भणति-भत्तं मे णत्थि, जदि णवरं कहिंपि लभिसित्ति, धणो य सरक्खाणं देति, तस्स उवट्ठितो-भत्तं मे देहि ता विज्जं गेण्हामि, जं किं (१२०००) चि देमित्ति पडिसुतं, धूता संदिट्ठा, तेण चिंतियं- सोभणं संवुत्तं, वल्लूरेण दामितो बिरालोत्ति, सो तं फलादिगेहिं उवचरति, सा ण गिण्हति उवगारं, सो य अतुरितो णीयडिग्गाही थक्के थक्के उवचरति, सरक्खा य णं खरंटेंति, तेण सा कालेण आवज्जिया, अज्झोववण्णा भणति- पलायम्ह, तेण भणितं- अजुत्तमेयं, अतो वीसत्था होहि, न शक्यं त्वरमाणेन० श्लोकः, किं तु तुमं उम्मात्तिया होहि, विज्जेहिं मा पउणिज्जिहिसि, तहा कयं, वेज्जेहिं पडिसिद्धा, पिता से आद्धितिं गतो, चट्टेण भणितं-मम परंपरागता विज्जा अत्थि, दुक्करो य से उवयारो, तेण भणियं- अहं करेमि, सो भणति- पयुंजामो, किं तु बंभयारीहिं कज्जं, तेण भणियं- जदि कहवि अबं-

चक्षुरिन्द्रिये उदाहरणं

॥५३१॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां ॥५३२॥

चक्षुरिन्द्रिये उदाहरणं

भचारिणो भवंति दो कज्जं ण सिज्झति, ते य परियाविज्जंति, जे सुंदरा ते आणेमि, कतिहिं कज्जं ?, चतुहिं, आणिता, सद्वेहिणो य दिसावाला, मंडलं कयं, दिसापाला भणिया- जत्तो सिवासद्दो तं मणागं विंधेज्जह, सरक्खा य भणिया- हुं फडुत्ति कते सिवारुतं करेज्जह, डिक्करिका भणिया- तुमं तह चेव अच्छेज्ज, तहा कतं, विद्धा सरक्खा, ण पउणा चेडी, विपरिणओ धणो, चट्टेण वुत्तं-भणियं मए जदि कहवि अबंभचारिणो भवंति तो कज्जं न सिज्झति इत्यादि, धणेण भणियं-को उवाओ ?, चट्टेण भणियं-एरिसा बंभचारिणो भवंति, गुत्तीओ कहेति, दगसोयरातिसु गवेसिया, णत्थि, साहूण ढुक्को, तेहिं सिट्ठाओ-वसहिकहणिसेज्जिंदिय कुड्डंतरपुव्वकीलितपणीते । अतिमाताहारविभूसणाइं णव बंभगुत्तीओ ॥ १ ॥ एतासु वट्टमाणो सुद्धमणो जो य बंभयारी सो । जम्हा तु बंभचेरं मणोणिरोहो जिणाभिहितं ॥ २ ॥ उवगते भणिता- बंभचारीहिं मे कज्जं, साहू भणंति-ण कप्पइ णिग्गंथाणमेतं, चट्टस्स कहितं-लद्धा बंभचारी, ण पुण इच्छंति, तेण भणियं- एरिसा चेव परिचत्तलोगवावारा मुणयो भवंति, किंतु पूइतेहिंपि तेहिं सकज्जसिद्धी होति, तण्णामाणि लिखंति, ण ताइं खुद्दवंतरी अक्कमति, पूयिया, मंडलं कतं, साहूणामाणि लिहिताणि, सा बाला ठविया, ण कुविते सिवाए, पउणा चेडी, धणो साहूणमल्लियंतो सड्ढो जातो, धम्मोवगारी इमोत्ति चेडी मुत्तावली य दिण्णा, एवं अतुरंतेणं सा तेणं बोधितत्ति सिलोगत्थो । किं च- अडवीए सूतो कप्पडिएण आराहितो, एसो मोररूवेण णच्चितुं सोवण्णं पिच्छं पाडेति दिने २, तस्स चित्तं जातं-केच्चिरं अच्छिहामित्ति सव्वाणि पिच्छाणि गेण्हामित्ति पडिजग्गितो, ॥५३२॥
तेण कलावो गहितो, काको जातो, ण किंचि देतित्ति, अतः-अत्वरा सर्वकार्येषु, त्वरा कार्यविनाशिनी । त्वरमाणेन मूर्खेण, मयूरो वायसीकृतः ॥ १ ॥ इति । सो एस सुणितूण परिणामेति, अहंपि सदेसं गंतुमतुरंतो तत्थेव किंचि उवायं चिन्तिस्सा-

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां ॥५३३॥

मिति गतो सदेसं, तत्थ विज्जासिद्धा पाणा दंडरक्खा, तेण ते ओलग्गिया, भणंति- किं ते अम्हेहिं कज्जं ?, सिट्ठं, अम्हं तं घडेह, तेहिं मारी विउव्विया, लोगो मरितुमारद्धो, रन्ना पाणा समादिट्ठा, तेण भणियं- जाणामो ताव किं आदेशा वत्थव्वात्ति उद्दावणिया, तेणं साहिस्सामो, तेहिं (पढम) रत्तिं एसा सा बाहिरियं पविट्ठा, बितियाए रत्तियाए णगरं पविट्ठा एसा सा, ततीयाए रत्तीए घरं एसा सा, चउत्थीए रत्तीए माणुसहत्थसीसपादा य सयणिज्जे दीसंति, ते हत्थपादादीण साहरणं करेंति, रण्णो कथितं, भणति- सविधीए विभाडेह, तो खाइं मंडले भज्झरत्तम्मि अप्पसागारिके वावाएज्जा, तहत्ति पडिस्सुतं, णीता सगिहं, रत्तिं मंडलं, सो य तत्थ पुव्वालोचितकतकवडो गतो, सा खलियारेउमारद्धा, तेण भणियं- किं एताए कयंति ?, तेहिं भणितं- मारि एसत्ति मारिज्जति, सो भणति-किमेताए आगितीए मारी हवइत्ति ?, केणवि अवसद्दो वा से दिण्णो, ता मा मारेह, मुयह एतं, ते णेच्छंति, गाढतरं लग्गो, अहं भे कोडिमुल्लं अलंकारं देमि, सुप्पह मे तं, बलामोडीए अलंकारो उवणीतो, तीएवि तस्स निक्कारणवच्छलोत्ति पडिबंधो जातो, पाणेहिं भणियं-जदि ते णिब्बंधो तो ण मारेमो, किंतु णिव्विसयाए गंतव्वं, पडिसुयं, मुक्का, सो तं गहाय पलातो, पाणप्पदो वच्छल्लगोत्ति दढतरं पडिबद्धा, आलावादीहिं घडिया, देसंतरंमि भोगे भुंजंते अच्छंति, अण्णदा सो पेच्छणगे पयट्टो, सा णेहेण गंतु ण देति, तेण हसियं, तीए पुच्छियं- किमेतं ?, णिबंधणे सिट्ठं, निव्विन्ना, तहारूवाणं अज्ञाणं अन्तिए धम्मं सोच्चा पव्वइया, इतरोऽवि अट्टदुहट्टो मरिऊण तद्दोसा चेव णरगे उववत्तो । एवं दुक्खाय चक्खिदियन्ति । ॥५३३॥

चक्षुरिन्द्रिये उदाहरणं

घाणिंदिए उदाहरणं--कुमारो गंधप्पितो, सो अणवरयं णावाकडएण खेल्लति, मातिसवत्तीए य मंजूसाए विसं छोढूण णदीए पवाहियं, तेण एगंतेण दिट्ठा, उत्तारिया, उग्घाडिऊण पलोएतुं पवत्तो पडिमंजूसादि एगगंठिओ समुग्गको दिट्ठो, सो णेण

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां ॥५३४॥

घ्राणेन्द्रियादिषु उदाहरणानि

उग्घाडितूण जिंघितो, मतो य, एवं दुक्खाय घाणेंदियं ।

जिब्भिंदिए उदाहरणं-सोदासो राया मंसपितो, अमाघातो, सुयस्स मंसं बिरालेण गहितं, साकरिएसु मग्गियं, ण लद्धं, पच्छा डिंभरूवं मारिय सुसंभितं, जिमितो, पुच्छति-कहिते पुरिसा दिण्णा मारेहित्ति, णगरेण णातो भिच्चेहि य, रक्खसोत्ति मधुं पाएत्ता अडवीए पविट्ठो, चच्चरे ठितो गयं गहाय दिणे २ माणुसं मारेति, केइ भणंति-विविहजणं मारेति, तेणंतेण सत्थो जाति, तेण सुत्तेण न चेइओ, साधू य आवस्सयं करेंता फिडिया, ते दट्ठुं ओलग्गति, तवतेएण ण सकति अल्लिइतुं, चिंतेति, धम्मकहणं, पव्वज्जा, अन्ने भणंति-सो भणति वच्चंते-ठाह, साहू भणंति-अम्हे ठिया, तुमं ठाहि, चिंतेति, संबुद्धो, सातिशया आयरिया ते ओहिणाणी, केत्तियाणमेवं होतित्ति । एवं दुक्खाय जिब्भिंदियंति ।

फासिंदिए उदाहरणं-वसंतपुरे णगरे जियसत्तू राया, सुमालिया से भज्जा, अतीव सुकुमालो फासो, राया रज्जं ण चिंतेति, सो ताण णिच्चमेव परिभुंजमाणो संवाहिज्जमाणो य तीसे फासे मुच्छितो अच्छति, रायकज्जाणि ण चिंतेति, एवं कालो वच्चति, भिच्चेहिं स मंतेतूण तीए सह निच्छूढो, पुत्तो से रज्जे ठवितो, ते अडवीए वच्चंति, सा तिसाइया, जलं मग्गियं, अच्छीणि से बद्धाणि, मा बिभेहित्ति, सिरारुधिरं पज्जिया, रुधिरे मूलिया छूढा जेण ण थिज्जति, छुधाइयाए ऊरुमंसं दिण्णं, अरुगं संरोहणीए रोहियं, जणवयं पत्ताणि, आभरणगाणि सारवियाणि, एगत्थ वाणितत्तं करेति, पंगू य से वीधीसोधगो घडितो, ॥५३४॥
सा भणति-ण सक्कुणोमि एगागिणी गिहे चिट्ठितुं, बितिज्जयं लभाहि, चिंतियं चणेण-णिरवातो पंगू सोभणो, ततो णेण णेड्डपालो णिउत्तो, तेण गीतच्छालितकथादीहिं आवज्जिया, पच्छा तस्सेव लग्गा, भत्तारस्स छिद्दाणि मग्गति, जाहे ण लभति ताहे उज्जा-

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[१]

नमस्कार
व्याख्यायां
॥५३५॥

णियाए गतो सुविसत्थो बहुमज्जं पाएत्ता गंगाए पक्खित्तो, सावि य दव्वं खातितूणं वहति गायति य घरे २, पुच्छिता भणति-
अम्मापितीहिं एरिसो दिण्णो, किं करेमि?, सोऽवि राया एगत्थ णगरे उच्छलिओ, रुक्खच्छायाए सुत्तो, ण परावत्तति छाता, राया
तत्थ मयओ अपुत्तो, आसो अहिवासितो तत्थ गतो, जयजयसद्देण पडिबोहिओ, राया जातो, ताणि तत्थ गताणि, रन्नो कहियं,
आणावियाणि, पुच्छिया साहति-अम्मापितीहिं दिन्नो, राया भणति-बाहुभ्यां शोणितं पीतं, ऊरुमांसं च भक्षितम्। गंगायां वाहितो
भर्ता, साधु साधु पतिव्रते! ॥ १ ॥ णिव्विसियाणि आणत्ताणि, एवं दोण्हवि से सओ सुकुमालियाए दुक्खाय फासेंदियं, जेहिं एते
दुज्जता दुरंता संसारवद्धणा इंदिया जिता णामिता ते अरिहा नमोक्कारस्स।

इदाणिं परिसहा, परिस्समंता 'सह मर्षणे' मार्गाच्यवननिर्जरार्थं च परिषोढव्याः परीसहाः, मार्गाच्यवनार्थं दर्शनपरीसहः
पण्णापरीसहो य, 'णत्थि णूणं परलोगे०' सेसा निर्जरार्थं, एते बावीस प० तंजथा-दिगिंछापरीसहे १ पिवासापरीसहे २ सीत० ३
उण्ह० ४ दंसमसग० ५अचेल० ६अरति० ७इत्थी० ८चरिया० ९ णिसीहिया० १० सेज्जा० ११ अक्कोस० १२वह० १३ जायण०
१४ लाभ० १५ रोग० १६ तृणस्पर्श० १७ मल० १८ सक्कारपुरस्कार० १९प्रज्ञा० २०अण्णाण० २१ दंसणपरीसहे२२। दव्वपरी-
सहा इहलोगनिमित्तं जो सहति परव्वसो वा वहबंधणादीणि, तत्थ उदाहरणं, जहा--चक्के सामाइए इंददत्तपुत्ता, भावपरीसहा जो
संसारवोच्छेदनिमित्तं अणाइलो सहइत्ति, तेण चेव उवणतो पसत्थो, जहा वा उत्तरज्झयणे सुतघोसणयं सोदाहरणं विभासिज्जा। ॥५३५॥

इदाणिं उवसग्गा, उप सामीप्ये 'सृज विसर्गे' उपसरंतीति उवसग्गा, उवसृजंति वा अनेन उवसर्गाः, तेवि परीसहेहिं चेव
समोतरंति अक्कोसादी, णवरं किंचि विसेसा उवसग्गत्ति भण्णंति, ते चतुर्विधा- दिव्वा माणुसा तिरिया आत्मसंवेदनीया, दिव्वा

स्पर्शनेन्द्रियं परि-
षहोप-
सर्गाश्च

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां ॥५३६॥

उपसर्गाश्च ॥५३६॥

चउव्विधा–हासा पओसा वीमंसा पुढोवेमाता। हासा-खुड्डगा अण्णं गामं भिक्खाचरियाए वच्चंति, वाणमंतरिं ओवायंति–जदि फव्वामो तो चिब्भडडंडेरगकण्हवण्हएण य अच्चणियं देहामो, लद्धं, सा मग्गति, ते ण देंति, अण्णमण्णस्स कहणं, मग्गिऊण दिण्णं, एतं ते तंति, ताहे सयं चेव तं पक्खाइया, कंदप्पिया देवया तेसिं रूवं आवरेत्ता रमति, वियालो जातो, तेहिं मग्गिया ण दिट्ठा, देवताए आयरियाण कहियं। पदोसे संगमओ वीसा, एगत्थ देउलियाए साहू वासावासं वसित्ता गता, तेसिं च एगो पुव्वपेसितो ततो चेव वरिसारत्तं आगतो, ताए देवताए आवासितो, सा देवता चिंतेति-किं दढधम्मो णवत्ति सड्ढीरूवेण उवसग्गेति, सो णेच्छति, तुट्ठा वंदति। पुढोवेमाता हासेण कातुं पदोसेण करेज्जा, एवं संयोगो ॥ माणुसा चउव्विहा-हासा पदोसा वीमंसा कुशीलपडिसेवणा, हासे-गणियाधुता खुड्डगं भिक्खस्स गयं उवसग्गेति, तेण हया, रन्नो कहियं, खुड्डओ सद्दावितो, सो सिरिधरादिट्ठंतं कहेति। पदोसे गयसुकुमालो सोमभूतिणा ववरोविओ, अहवा एगो धिज्जातीओ एगाए अविरतियाए सद्धिं अकिच्चं सेवमाणो साधुणा दिट्ठो, पदोसमावन्नो साधुं मारेमित्ति पधावितो, साधुं पुच्छति-किं तुमे अज्ज दिट्ठंति ?, साधू भणति- 'बहुं सुणेति कन्नेहिं०' सो भणति किं निमित्तं एतं, एस अम्ह उवदेसो तित्थकराणं, उवसंतभद्दओ जाओ। वीमंसाए चंदउत्तो राया चाणक्केण भणितो-पारत्तियं करेज्जसि, सुसीसो य किर आसि, अंतेपुरे धम्मकहणं, उवसग्गिज्जंति, अण्णतित्थिया विणट्ठा णिच्छूढा य, साधू सद्दाविया भणंति- जदि राया अच्छति तो कहेमो, अतिगयो, राया उस्सरितो, अंतेपुरियाओ उवसग्गेंति, हयातो, सिरिघरदिट्ठंतं कहेति। कुसीलपडिसेवणाए ईसालुगभज्जाओ चत्तारि, रायसण्णातं तेण घोसावितं-सत्तघतिपरिक्खित्तं घरं ण लभति कोई पवेसं, अयाणंतो साहू वियाले वसहिनिमित्तं अतिगतो, सो य पविसिअछुओ, तत्थ पढमे

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता..........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णिः-1

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[१]

नमस्कार व्याख्यायां ॥५३७॥

उपसर्गाश्च

जामे पढमा आगया भणति- पडिच्छ, साधू कच्छं बंधेतूणं आसणं कुंमबंधं कातूणं अहोमुहो ठितो चीरवेढेणं, ण सक्कियं, कीसित्ता गता, पुच्छंति-केरिसो ?, सा भणइ- अण्णो मणूसो नत्थि, एवं चत्तारि जामे कीसितूणं गयाओ, पच्छा एगतो मिलियाओ साहंति, उवसंताओ सड्डीओ जाताओ ॥ तेरिच्छा चउव्विहा- भएण सुणगादी दसेज्जा, पदोसा चंडकोसिओ मक्कडादि वा, आहारहेउं सीहादी, अवच्चलेणसारक्खणहेउं काकिमादी ॥ आत्मना क्रियन्त इति आत्मसंवेदनीया, जहा उद्देसिए चेतिए पाहुडियाए य, ते चउव्विहा-घट्टणया पवडणया थंभणया लेसणया, घट्टणया अच्छिमि रओ पविट्ठो, चमढियं, दुक्खितुमारद्धं, अहवा सयं चेव अच्छिम्मि गलए वा किंचि सालुगादि उट्ठितं घट्टति, पवडणया ण पयत्तेण चंकमति, तत्थ दुक्खाविज्जति, थंभणया णाम ताव बइट्ठो अच्छतो जाव सुक्खिबिट्ठो जातो, अहवा हणुगाजंतमादी, लेसणया पादं आउंटावेत्ता अच्छिते जाव तत्थ वायेण लइओ, अहवा णट्टं सिक्खामित्ति अवणामितं किंचि अंगं तत्थेव लग्गं ॥ अहवा आयसंवेतनीया वातियपित्तियसिंभियसंनिवातिया, एते दव्वोवसग्गा, भावतो उवजुत्तस्स एते चेव । अहवा इंदियाणि कसाया य ते जेहिं०, अहवा अणेण कारणेणं अरिहा नमस्कारस्य- इंदियविसया कसाया परीसहा वेदणा ३ सरीरगादि अहवा सीता ३ उवसग्गा ते चेव, एवमादी अरयः ते हंता इतिका- तूणं अरिहा णमोकारस्य, अर्हन्तीति वा अर्हन्ताः, ते दुविधा- दव्वारिधा भावारिहा य, दव्वारिहा दुविहा- पसत्था अपसत्था य, दव्वारिहा पसत्था हिरण्णअस्समादीणि, अपसत्था वधबंधतालणाइयं, भावेवि अप्पसत्था अक्कोसादीणं, पसत्था वंदणणमंसणा- ॥५३७॥
दीणं । तत्थ गाहा—

अरिहंति वंदणणमंसणाणि० ॥ ९-३५ ॥ ९२१ ॥ वंदणं सिरसा, णमंसणं वयसा, पूया वत्थादीहिं, सक्कारो अब्भुट्ठा-

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां ॥५३८॥

दीहिं, केहिं कीरंतस्स वंदणादिस्स ते अरिहा?, उच्यंते, देवासुरमणुयाणं, अरिहंति पूयं, जहा सुरुत्तमा, मणुयाण रायाणो उत्तमा, ताणं देवा, देवाणं रिसतो, रिसीणं परमरिसी, ते अरिहंता चेव, अरी च पूर्वोक्ता हंता, रजं हन्ता, रजः कर्म, रतस्स हंता तेणवि अरिहंता, अरिहंतिवि इमे य शारीरा अतिशया, तथा ते य उप्पण्णा जहा-चारुसुजायंमाणं सिरिवच्छंकितविसालवच्छाणं। तेलोक्कसक्कयाणं णमोत्थु देवाहिदेवाणं ॥ १ ॥ तस्स णमोकारस्स किं फलं?, जं तस्स फलं तं उवरिं सट्ठाणे भण्णिहिति सउदाहरणं, पंचण्हवि सामण्णं पयोयणफलं णमोकारो, इमं पत्तेयफलं वण्णिज्जति—

अर्हन्नमस्कार फलं

अरिहंतनमोक्कारो जीवं मोएइ० ॥ ९-३७ ॥ ९२३ ॥ भवाणं सहस्सा भवसहस्सा, सो य संसारो, अणंतेसु किं भवसहस्सगहणं कतं?, उच्यते, पसत्थाणि एवं, इतराणि अणंताणि, किं सव्वेवि मोयति?, णेति, भावेण जो कीरति सो फलदो जीवं मोताति, अह णवि मोएति तो इमं अन्नं फलं होति, पुणरवि बोधिलाभाए, बोधी णाम संमत्ताहिगमो ॥ किं चान्यत्—

अरिहंतनमोक्कारो धण्णाण० ॥ ९-३८ ॥ ९२४ ॥ धणेण धण्णो, णाणदंसणचरित्ताणि धणं एतेण धणेण धण्णो, भवखपणं करेंताणं, भवक्खयो संसारक्खयो, जदा हिदयं ण मुंचति तदा किं करेति?, विसोत्तियं णिरुंभति, दव्वविसोत्तिया णिकाकंड, तेण संकरेण पाणियं रुद्धं अण्णतो वच्चति, ते रोवगा सुकंति, एवं भावविसोत्तियावि संसयादी कडुत्थाणीया पच्छा अपसत्थपावरुक्खा सुक्खंति, एवं विसोत्तियं वारेति अरहंतणमोक्कारो इति। एवमादीहिं गुणेहिं महत्थोत्ति वण्णितो, अहवा इमेणवि कारणेणं जहा संगामेमाणो पुरिसो आतुरे कज्जे जाते अजेज्जं अपडिहतं आयुहं तेण कज्जं करेति, एवं इमेणवि चोद्दस पुव्वाणि गहियाणि, ॥५३८॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां

॥५३९॥

ण य मरणकाले तेहिं कज्जं कीरति, उक्तं च-ण य तम्मि देसकाले सक्को बाहरविहो सुतक्खंधो। सक्को अणुचिंतेतुं धन्तंपि समत्थ-चित्तेणं ॥ १ ॥ जेण णमोकारो तम्मि देसकाले कीरति तेण सो महत्थो, एवं सो अरहंतणमोकारो सव्वपावाणि पणासेति, जाणि दव्वभावमंगलाणि लोगे लोउत्तरे य एतेसिं पढमं मंगलं अरहंतनमोक्कारो।

इदाणिं सिद्धाण णमोकारो, 'राध साध संसिद्धौ' सिद्धः प्राप्तणिष्ठ इत्यनर्थान्तरेण, जो जस्स पारं गतो सो सिद्धो भवति, तस्स सिद्धस्स इमो णिक्खेवो चोद्दसधा-णामसिद्धो ठवण० दव्व० कम्म० सिप्प० विज्जा० मंत० जोग० आगम० अर्थ० जत्ता० अभिप्पाए तवे कम्मखयेत्ति य। णामट्ठवणाओ गताओ, दव्वसिद्धो उस्सेइमं संसेइमं उवक्खडं वत्थसिद्धोत्ति, तत्थ उस्सेइमं जथा मिरोलगादि, संसेइमं जहा तिलादी, उवक्खडं जहा पदाणादी, वत्थसिद्धं जं रुक्खे चेव पच्चति, एताणि दव्वाणि णिट्ठं पत्ताणि। कम्मसिद्धो जो कम्मस्स णिट्ठं गतो, अनाचार्यकं कर्म, तत्थ उदाहरणं—

कोंकणा एगम्मि दुग्गे सज्झस्स भंडं रुंभंति विलयति य, ताणं च किर यदि रायावि एति तेण पंथेण दातव्वो, तत्थ एगो सेंधवओ पुराणो, सो पडिभज्जंतो चिंतेति-तहिं जामि जहिं कम्मेण एस जीवो भज्जति, सुहं ण विंदति, सो तेसिं मिलितो, सो भणति-गंतुकामो कुंदुरुक्खपडिबोहिछओ, सिद्धओ भणति-सिद्धियं देहि मम, जं सिद्धयं सिद्धया गता सज्झयं, सो य तेसिं भारव-हाणं महत्तरओ सव्ववड्डं भारं वहति, तेण अण्णदा साधूण मग्गो दिन्नो, ते रुट्ठा, राउले कहंति, ते भणंति-अम्हं रायावि मग्गं देति भारेण दुःखाविज्जन्ताणं, तुमं पुण समणगस्स रिक्कविरिक्कस्स मग्गं देसि, रण्णा भणियं-दुट्ठु भे कतं, तेण भणितं-देव! तुमे

सिद्ध-नमस्कारे कर्मसिद्धः

॥५३९॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां ॥५४०॥

गुरुभारवाहित्ति काऊणमेतमाणत्तं?, रण्णा आमंति पडिसुतं, तेण भणियं-जदि एवं ता ते गुरुतरभारवाही, कहं ?, जं सो अवी- समन्तो अट्ठारससीलंगसहस्साणि भारं वहति जो मएवि वोढुं ण पारितोत्ति, धम्मकहा, भो महाराय !-वुज्झंति नाम भारा ते पुण वुज्झंति वीसमंतेहिं । सीलभरो वोढव्वो जावज्जीवं अविस्सामो ॥ १ ॥ राया पडिबुद्धो, सो य संवेगं गतो अब्भुट्ठितोत्ति । एमो कम्मसिद्धोत्ति ॥ शिल्पमाचार्यकं तस्य निष्ठां प्राप्तः २, शिल्पसिद्धं प्रति उदाहरणं, कोकासो सोप्पारए रहकारो, तस्स दासीए बंभणाण जातो दासचेडो, सो पगूढभावेण अच्छति, सो ण जीहामित्ति सो अप्पणो पुत्ते सिक्खावेति, ते मंदबुद्धी ण लएंति, दासेण सव्वं गहितं, सो रहकारो मतो, रायाए दासस्स तं घरं सव्वं दिण्णं, सो सामी जातो । इतो य पाडलिपुत्ते राया जियसत्तूत्ति, इतो य उज्जेणीए राया सावगो, तस्स चत्तारि सावगा-एगो महाणसिओ, सो रंधेति, जदि रुच्चति जिमितमेत्तं जीरति, जामेण २-३-४ वा, जदि रुच्चति ण चेव जीरति १ बितियओ अब्भंगेति, सो तेल्लस्स कुलवं छुभति, तं चेव पुणो णीणेंति २, ततियओ सेज्जं रयेति, जहा पढमे वा २-३-४ जामे वुज्झति, अहवा सुवती चेव ३, चउत्थो य सिरिघरो कतो, जो तं अतिगतो किंचि ण पेच्छति, एते गुणा तेसिं, सो पाडलिपुत्तओ तस्स णगरं रोहति, सावओ चिंतति-किं मम जणक्खएणं कतेणंति भत्तं पच्चक्खायं देवलोगं गतो, णागरेहिं से णगरं दिण्णं, ते सावगा सद्दाविता, पुच्छति-किं कम्मं ?, सूतेण अक्खायं, भंडारिएण पवेसिओ, किंचिवि ण णेच्छति, अण्णेण दारेण दंसितं, सेज्जापालेण कहियं, अब्भंगतेण एक्कातो पदातो तेल्लं णीणियं, एक्कातो ण णीणितं, जो मम सरिसो सो णीउत्ति, चत्तारिवि पव्वतिया । सो तेण तेल्लेण उज्झंतो कालगो जाओ, काकवण्णो से णामं जायं, पढमं से जियसत्तुत्ति णामं आसि पश्चात्काकवर्ण इति ।

शिल्प- सिद्धः

॥५४०॥

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[१]

नमस्कार व्याख्यायां

॥५४१॥

शिल्प-सिद्धः

इतो य सोपारए दुब्भिक्खं जातं, कोक्कासो उज्जेणिं गतो, किह रायं जाणावेमित्ति कवोतेहिं गंधसालिं अवहरेति, कोट्ठाकारिएणं कहियं, मग्गंतेणं दिट्ठो, आणितो, रण्णा णातो, वित्ती दिण्णा, गरुडो कतो, सो राया तेण कोक्कासेण देवीए य समं हिंडति, जो से ण णमति तं भणति-अहं आगासेण आगतो मारेमि, सव्वे वसमाणिया, तं देविं सेसिगाओ पुच्छंति जतो हिंडति, एगाए वच्चंतस्स एसा णियत्तणखीलिया गहिया, गतो, णियत्तणवेलाए णातं, कलिंगे ईसि तला पक्खो भग्गो, तत्थ पडितो, णगरं गतो, तस्स रहकारो रहं णिम्मवेति, एगं चक्कं णिम्मवियं, एगस्स सव्वं घडिएल्लियं, किंचि किंचि णवि, ततो सो उवगरणाणि मग्गति, तेणं भणियं-जाव घरातो आणेमि, इमाणि राउलाओ ण लब्भंति निक्कालिऊणं, सो गतो, इमेण तावेवं संघातियं उद्धं कतं जाति, अप्फिडियं पडिणियत्तति, पच्छामुहयंपि ण पडति, इतरस्स सव्वयं जाति अफिडियं पडति, सो आगतो जाव तं णिम्मातं पेच्छति, अवक्खेवेणं गतो, रण्णो कहियं -जहा कोक्कासो आगतो, तस्स बलेणं सव्वरायाणगा तेणं वसमाणीया, सो गहितो, तेण हम्मंतेण अक्खायं, ताहे सह देवीय राया गहितो, भत्तं रोधीयं, णागरेहिं अयसभीतेहिं कागपिंडिया पवत्तिया, कोक्कासो भणिओ-मम पुत्तस्स सत्तभूमिगं पासादं करेहि, मम य मज्झे, तो सव्वरायाणए आणावेस्सामि, तेण णिम्मवितो, कागवण्णपुत्तस्स सउणगजंतं कातूण लेहो विसज्जितो, एहि जाव अहं एते मारेमि, तो इमं पियं च ममं च मोएहिसित्ति दिवसो दिन्नो, पासायं सपुत्तओ राया विलइतो, खीलिया आहता, संपुडो जातो, सपुत्ततो मतो, कागवण्णपुत्तेणवि तं णगरं गहितं, पिता य कोकासो पमोइया, अण्णे भणंति-कोक्कासेण णिव्विण्णएणं अप्पा तत्थेव मारितो। **एस सिप्पासिद्धो।** ॥५४१॥

विज्जासिद्धो अज्जखउडो, तेसिं पासादेण विज्जा कण्णाहाडिया, विज्जासिद्धस्स णमोक्कारेणवि किर विज्जा उवट्टंति, सो

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां ॥५४२॥ | विद्यासिद्धः

विज्जातित्थयरो, सो त भाइणेज्जं ठवेत्ता पडिव्वायओ वादे पराजितो,(सा परि०)अद्धीइए कालगतो, गुडसत्थे णगरे वड्डकरओ वाणमंतरो जातो, तेण तत्थ सव्वे साहुणो परद्धा, तं सुणेत्ता अज्जखउडा तहिं गता, तेण जातितुं तस्स कन्ने उवाहणाओ ओलतियाओ, देवकुलिओ आगतो पेच्छति, गतो लोगं घेत्तूण आगतो, ते जतो जतो उग्घाडेंति तओ २ अधिट्ठाणं, णगरे कहितं, तेहिवि तहेव दिट्ठं, कट्ठलट्ठीहिं पहता, ते य रायकुले संकमेंति, मुक्का, पविट्ठो वड्डकरओ, अण्णाणि य वाणमंतराणि पच्छतो सपडिमाणि गच्छंति, लोगो पायवडितो विण्णवेति-मुयाहित्ति, सो य अण्णतो विप्परिणामेति, सो चिंतति-आयरिओ ण सक्कति मोयावेतुंति, तस्स देवकुले महाविस्संदा दो दोणीओ महतिमहालियाओ पाहाणमतीओ, सो य वाणमंतराणि खडखडावेंताणि, पच्छओ सपडिमाणि हिंडंति, जणेण विण्णवितो, ताणि मुक्काणि, दोणीवि आरतो आणेत्ता छड्डिया, मम सरिसो णेहितित्ति, मुक्को। इतो य जत्थ भाइणेज्जो ठवितो सो आहारगिध्धो भरुअच्छे तच्चण्णिओ जातो, अयःपात्राणि आगासेणं उवासगाणं घरेसु भरियाणि एंति, लोगो तंमुहो बहुगो जातो, संघेणं अज्जखउडाणं पेसितं, आगतो, अक्खायं-एरिसी अकिरियत्ति उड्डिता, तेसिं कप्पराणं अग्गतो मत्तओ सेतेणं वत्थेणं अच्छाइओ जाति, टोप्परिया गता सव्वपधाणिया, आसणे ठिया, अण्णत्थ कया, कयाइ पुणो पुणो पंति भरिया आगता, आयरिएहिं अंतरा पाहाणो ठवितो सव्वाणि भिण्णाणि, सोवि चेल्लओ भीतो णट्ठो, आयरिया तत्थ गता, तच्चण्णिया भणंति-एहि बुद्धस्स पादेहि पडाहित्ति, आयरिएहिं भणितं-एहि पुत्ता! सुद्धोदणसुता वंद ममं, बुद्धो णिग्गतो, पादेसु पडितो, तत्थ थूभो बारे, सोवि भणतितो-एहि पाएहिं पडाहित्ति, सोवि पडितो, उट्ठेहित्ति भणितो अद्धोणओ ठितो, एवं अच्छहत्ति भणितो ठितो, पासल्लिगो ठितो, सो णियंठणामितो णामेण संजातो॥ मंतसिद्धो एगंमि नगरे रायाणएण ॥५४२॥

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[१]

नमस्कार व्याख्यायां

॥५४३॥

संजती गहिया, संघसमवाए कए एगेण मंतसिद्धेण रायंगणि थंभा अच्छंति ते अभिमंतिता खडखडेंति, पासखंभावि य चलिया, तेण भीएण मुक्का, संघो य खामितो ॥

जोगसिद्धो आभीरविसए कण्हाए बेण्णाए य अंतरदीवए तावसा, एगो पायलेवेणं पाणिए चंकमति एति जाति य, लोगो आउट्टो, सड्ढा हीलिज्जंति, अज्जसमिता वइरसामिस्स मातुलगा विहरंता आगता, सड्ढा उवट्ठिता अकिरियत्ति, आयरिया णेच्छंति, भणति- किं अज्जो ! ण ठाह ?, एस जोगेण केणवि मक्खेति, तेहिं अट्ठपदं लद्धं, आणितो अम्हे दाणं देमोत्ति, अह सो सावओ भणति- भगवं ! पादा धोव्वंतु, अम्हे अणुग्गहिया होमो, तस्स अणिच्छंतस्स पादा पाउयाओ य सोइयाओ, गतो, पाणिते बुड्डो, उक्कड्ढिकलकलो कतो, एवं डंभएहिं लोगो खज्जतित्ति, आयरिया णिग्गता, णदी भणिता- अहं पुत्ता ! पुरिमं कूलं जामि, दोवि तडा मिलिता, गता आयरिया, ते तावसा पव्वइता, बंभदीवगवत्थव्वत्ती बंभदीवगा जाता ॥

आगमो चोद्दस पुव्वा णिट्ठं पत्ता जाव सयंभुरमणेवि जं मच्छओ करेति तंपि जाणति ।

अत्थसिद्धो मंमणवणिओ, जत्ताए जो बारसवारे समुद्दं जाति, अहवा जहा तुंडिएणं जले पट्टं जले मग्गिज्जतित्ति सतसाहस्सीओ वाराओ भिण्णाओ, परिहीणो, सयणिज्जेहिं दिज्जमाणेवि णेच्छति, पेडएणं लोगं उत्तारेति, देवता उवसंता, सव्वं दिण्णं, भणितो- अण्णंपि देमि, सो भणति- जो मम णामेण मुयति सो अविग्घेणं एतु । ॥५४३॥

इदाणिं अभिप्पायसिद्धो, अभिप्पाओ णाम बुद्धीए पज्जाओ, अभिप्पायोत्ति वा बुद्धित्ति वा एगट्ठं, स च अभिप्रायश्चतुर्विधः-

योगागमाथाभिप्रायसिद्धाः

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[१]

नमस्कार व्याख्यायां ||५४४||

औत्पात्ति की बुद्धिः

उप्पत्तिया वैनयिकी कर्मजा पारिणामिकी, एसा चतुव्विधा बुद्धी, पंचमा नास्ति। योऽर्थो येन भावेन उत्पत्तुकामः तमर्थं तद्देव अनुगच्छति, अवबुध्यतीत्यर्थः, सोऽर्थोऽपूर्वं अदृष्टः अश्रुतः अविदितः अविचालितः तस्मिन्नेव समये तमर्थं गृह्णाति, तस्य फलं अव्याहतं ण यण्णधा भवति, एवंविधा उप्पत्तिया, सा जहा उप्पज्जति तथा इमाणि उदाहरणाणि भण्णंति—

भरहसिलपण० ॥ ९-५४ ॥ ९४० ॥ उज्जेणी णगरी जणवए अवंतीए, तत्थ णडाणं गामो, तत्थ एगस्स णडस्स भज्जा मता, तस्स य पुत्तो डहरओ, तेण अन्ना आणिता, सा तस्स दारगस्स ण वट्टति, तेण दारएण भणियं-ममं लट्ठं न वट्टसि?, तहा ते करेमि जहा मम पादेसु पडिसिसि त्ति, तेण रत्तिं पिता सहसा भणितो-एस गोहो त्ति, तेण णायं महिला विणट्ठत्ति सिढिलो रागो जातो, सा भणति-मा पुत्त! एवं करेहि, तेण भणितं-ण लट्ठं वट्टसि, भणति-वट्टेहामि, अहंपि लट्ठं करीहामि, सा वट्टितुमारद्धा, अण्णदा छाहा चेव एस गोहेत्ति २ भणित्ता कहेति, पुट्ठो छाहिं दरिसेति, ततो पिया से लज्जितो सोवि एवंविधोत्ति, तीसे घणं रागो जातो, सोवि अविसंभितो पिताए समं जेमेति। अण्णदा पिताए समं उज्जेणिं गतो, दिट्ठा णगरि, णिग्गता पिता पुत्तो, पिता पुणोवि अतिगतो किंपि ठावितगं विस्सरियंति, सो सिप्पाए णदीए पुलिणे णगरिं सव्वं आलिहति, तेण णगरी सचच्चरा लिहिया, ततो राया एति, तेण राया वारितो, भणितो-मा राउलमज्झेणं एहित्ति, रण्णा कोतुहल्लेणं पुच्छितो, सचच्चरा सव्वा कहिया, रण्णा भणितो-कहिं वससित्ति?, तेण भणितं-अमुगगामे, पिया से आगतो, ते गता, रायाए य एगूणगाणि पंच मंतिसताणि, एगं मग्गति, जो य सव्वप्पहाणो होज्जत्ति, चिंतियं-एस होज्जत्ति, तस्स परिक्खणणिमित्तं इमाणि पेसति— ||५४४||

सिलमिंढकुक्कुडतिलवालुयहत्थि अगडवणसंडे। परमन्नपत्तलेंडगखाइला पंच पियरो य ॥ ९४१ ॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां ॥५४५॥

औत्पात्ति की बुद्धिः

लेहं विसज्जेति, जथा--तुज्झ गामस्स बहिं महिह्ली सिला, तीए मंडवं करेह, ते आदण्णा, सो दारतो रोहतो छुहातितो, पिता से गामेण समं अच्छति, उस्सूरे आगतो, सो रोवितिं--अम्हे छुहाइया अच्छामो, सो भणति--तुमं सुहितोसि, किह ?, तेण से कहियं, भणति--वीसत्था अच्छह, हेट्ठा खणह खंभे ठवेत्ता थोवथोवेतेण भूमी कया, उवलेवणकतोवतारे रण्णो निवेदितं, केण कतं ?, रोहएणं भरहगदारएणं १ । ततो मेंढतो पेसितो, एस पक्खेण एत्तिओ चेव पच्चप्पिणेतव्वो, तेहिं भरहो पुच्छितो, तेणवि विरुवेण समं बंधावितो, जवसं दिण्णं, तं चरंतस्स ण हायति बलं, विरूवं च पेच्छंतस्स भएण ण वड्ढतित्ति २ । एवं कुक्कुडो अद्दाएण समं जुज्झावितो ३ । तिलसमं तेल्लं दातव्वंति तिल्लमद्दाएण पणामियं ४ । वालुयाए वरहुए पडिहत्थं देह ५ । हत्थिम्मि जुण्णहत्थी गामे छूढो, हत्थी अप्पाउओ मरिहितित्ति अप्पितो, मतोत्ति ण णिवेदितव्वं, हत्थी मतो, तेहिं णिवेइयं जथा ण चरति ण णीहारेति ण ऊससति ण णीससति, रण्णा भणितं--मतो ?, तेहिं भणितं-तुब्भे भणहत्ति ६ । अगडे आरण्णओ ण तीरति एकल्लतो णागरं अगडं देह७ । वणसंडे पुव्वावासे गतो गामो ८ । परमण्णं कारिसउम्हाए पलालुम्हाए यत्ति ९। एवं परिक्खिऊणं समादिट्ठं--रोहगेणं आगंतव्वं, तं पुण ण सुक्कपक्खे ण कण्हपक्खे णो राति ण दिवा ण छायाए ण उण्हेणं ण छत्तेण ण आगासेणं ण पादेहिं ण जाणेणं ण पंथेणं ण उप्पहेणं ण ण्हाएणं ण मलिणेणं, पच्छा अंघोलिं कातूण चक्कमज्झभूमीए पडिक्कमेणं एगं पादं कातूण चालणीणिम्मितुत्तिमंगो, अन्ने भणंति--समदुलट्टणीपदेसबद्धओ छाइयपडगेणं संझासमयंसि अमावासाए आगतो, रण्णा पूजितो, आसण्णे य से ठितो, यामविउद्धेण रण्णा सद्दाविओ-सुत्तो? जग्गासि ?, भणति--जग्गामि, सो सुत्तो विबुद्धो उट्ठितो, रण्णा भणितो--जग्गसित्ति ?, जह आणवेह--किं तुण्हिक्को अच्छसि ?, तेण भणियं--चिंतेमि, किं चिंतेसि ?, भणइ-असोत्थपत्ताणं किं विंटो ॥५४५॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां ॥५४६॥

औत्पाति की बुद्धिः

महल्लो उदाहु छिहा ?, किह ते चिंतियं ?, भणइ--दोवि समाणि, बीए जामे छालियालिंडियाओ, वातेणं, ततीए खाडइला जत्तीया पंडरगा तत्तिया कालगा, जत्तियं पुच्छं तत्तीयं सरीरंपि आयामेणं, चउत्थजामे सद्दाविओ वायं ण देति, तेण कंटियाए पच्छिन्नो उट्ठितो, भणति- किं जग्गसि सुयसि ?, भणति-जग्गामि, किं करेसि ?, चिंतेमि, किं चिन्तेसि ?, कतिहिं सि जातो ?, तो कतिहि ?, तेण भणियं--पंचहिं, केण केण ?, रण्णा वेसमणेणं चंडालेणं रयएणं विंछिएणं, तेण माया पुच्छिता, णिब्बंधे कहितं, सो पुच्छति--किह ते णायंति ?, सो भणति--येन यथान्यायेन रज्जं पालयसि तेण णज्जसि रायपुत्तोत्ति, वेसमणो दाणेणं, रोसेणं चंडाले णं, सव्वस्स हरणेणं रययो पुण, जेण ममं उच्छुंपसे तेण विंछितोत्ति, तुट्ठो राया, सव्वेसिं उवरिं ठवितो भोगा य से दिण्णा ॥

पणितए दोहिं पणियं बद्धं, एगो भणति- जो एताए लोमसियाए खाति तस्स तुमं किं देसित्ति ?, इयरो भणति- जो जिव्वति तेण जो णगरदारे मोदओ ण णीति सो दातव्वो, एगो जीतो, इतरो मग्गति, सो से रूवगं देति, इतरो णेच्छति, ताहे दोण्णि, जाहे ण तेहिं तूसति ताहे तेण जूयकारा ओलग्गिता, बुद्धी दिण्णा, ताहे पूवियावणाओ एगं मोदगं गहाय इंदखीले ठवेति, भणितो- णीहि मोदगा !, ण णीति, जीतो ॥ रुक्खे फलाणि, मक्कडा ण देंति, पाहाणेहिं हया, तेहिं फला खित्ता । ॥५४६॥

खड्डुए पसेणती राया, पुत्तो से सेणिओ, रायलक्खणसंपण्णो, तस्स किंचि ण देति-मा मारिज्जिहित्ति, सो अद्धिइए णिग्गतो, बेण्णातडं आगतो, वणियसालयाए ठितो, तस्स लाभो तप्पभावेणं, सो भत्तं देति, धूताए संपक्को, दिण्णा, रायाए लेहो विसज्जितो, सो आपुच्छति, सा भणति- तुब्भेहिं कहिं ?, सो भणति- अम्हे पंडरकुंडगा रायगिहे गोवाळा पसिद्धा, गतो य, आवण्ण-

नमस्कार व्याख्यायां ||५४७||

औत्पाति की बुद्धिः

सत्ताए दोहलो देवलोगचुयस्स अभयं सुणेज्जामि, वाणितो दव्वं गहाय उवट्ठितो रण्णो, रण्णा गहियं, उग्घोसावियं, पुत्तो जातो, अभयोत्ति णामं कतं, पुच्छति- मम पिता कहिंति ?, ताए कहितं, भणति- वच्चामोत्ति, सत्थेण समं वच्चति, रायगिहस्स बहिया ठिता, णगरगवेसतो गतो, राया मंती मग्गति, सुक्ककूवे खुड्डगं पाडियं, जो गेण्हति हत्थेणं तडे ठितो तस्स राया वित्तिं देति, अभएण दिट्ठं, आहतं छाणेणं, सुक्के पाणियं मुक्कं, तडे संतएण गहियं, रण्णो समीवं णीतो, पुच्छति- तुमं को ?, भणति-तुम्ह-पुत्तोत्ति, किह वा किं वा ?, सव्वं पडिकहियं, तुट्ठो उच्छंगे कतो, माता पवेसिज्जंती मंडेति, तेण वारिया, अमच्चो जातो ।

पडे, दो जणा ण्हायंति, एगस्स दढो पडो, एगस्स जुण्णो, जुण्णइतो दढं गहाय पट्ठिओ, इतरो मग्गति, सो ण देति, ववहारो, महिलाओवि कंताविताओ, दिण्णो जस्स जो,अण्णे भणंति- सीसाणि ओलिहिताणि, एगस्स उण्णपडओ बीयस्स सोत्तिओ ।

सरडो, सण्णं वोसिरंतस्स सरडा भंडती, एगो तस्स अधिट्ठाणस्स हेट्ठा बिलं पविट्ठो, पुच्छिण छिक्को, घरं गतो, अद्धितीए दुब्बलो जातो, वेज्जो पुच्छितो भणति- जदि सतं देह, दिण्णं, तेण घडए सरडो छूढो लक्खाए विलेपित्ता, विरेयणं दिण्णं, वोसिरियं, सरडो कप्परे दिट्ठो, लट्ठीहूतो ॥ बितिओ सरडो, भिक्खुणा खुड्डओ पुच्छितो (भणति) एस सरडो किं सीसं चालेइ?, तेण भणितं- तुमं जोएंति- किं भिक्खु भिक्खुणित्ति ॥ ||५४७||

कागे, तच्चण्णिएण खुड्डओ पुच्छितो- अरहंताः सर्वज्ञाः ?, बाढं, तो किंत्तिया इहं कागा? ,सट्ठिं कागसहस्साइं इहयं विण्णातडे परिवसंति । जदि ऊणगा पवसिता अब्भाधिता तत्थ पाहुणगा ॥ १ ॥ बितिओ णिहिम्मि दिट्ठे महिळं परिक्खति- रहस्सं

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां ||५४८||

औत्पात्ति की बुद्धिः ||५४८||

घरेति णविंत्ति , सो भणति- ममं पंडरओ कागो अहिट्ठाणं पविट्ठो, ताए सुहिज्जितागं कहितं जाव रण्णा सुयं, पुच्छितो, कहियं, रण्णा से सुकं मुक्कं, मंती य निउत्तो। ततिओ विट्ठविक्खरणे भागवतो खुड्डगं पुच्छति, खुड्डगो भणति- एस चिंतेति- एत्थ विण्हू अत्थि णत्थित्ति ।।

उच्चारे, धिज्जातियस्स भज्जा तरुणी, गामंतरं णिज्जमाणी धुत्तेण समं लग्गा, गामे ववहारो, विभत्ताणि पुच्छिताणि, आहारविरेयणं दिण्णं, तिल्लमोदगा, इयरो धाडिओ।

गये, हत्थी महतिमहालओ जो तोलति तस्स सतसहस्सं देमि, णावाए तोलति, लंछित्ता णावाए उत्तारितूण पाहाणाणं भरिया, जाव से लेहा, पाहाणा तोलिया, एत्तियं तुलति, जितो।

घतणो भंडो सव्वरहस्सितो, राया देवीय गुणे कहेति- णिरामयं, सो भणति- ण भवति, किह ?, जया पुप्फाणि केस- वाते ढोएति, तहत्ति विण्णासियं, णाए हसियं, णिबंधे कहियं, णिव्विसओ, सुणति, उवाहणाण भारेण उवड्डितो, उड्डाहभीताए रुद्धो।

गोलओ णक्कं पविट्ठो जतुमतो,सलागाए तावेत्ता कड्डितो।

खंभो तलागमज्झे, जो तडे संतओ बंधति तस्स सयसहस्सयं दिज्जति, तंमेव खीलगं बंधितूण पडिबंधितूण बद्धो, जितो।

खुड्डए, परिव्वाइया भणति- जो जं करेति तं मए कायव्वं कुसलकम्मं, खुड्डओ गतो भिक्खस्स, पडहओ वारितो, गओ राउलं, दिट्ठा, सा भणति- कतो गिले ?, तेण सागारियं दातियं, जिया, काइएण य पउमं लिहियं, सा न तरति, जिता।

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[१]

नमस्कार व्याख्यायां

॥५४९॥

मग्गोत्ति एगो भज्जं गहाय पवहणेण गामंतरं वच्चति, सा सरीरचिंताए ओतिण्णा, तीए रूवेण वाणमंतरी विलग्गा, इतरी रडति, ववहारो, दूरं हत्थो पसारितो, णातं ।

इत्थित्ति मूलदेवो अप्पबितिज्जितो वच्चति, इतो य एगो पुरिसो समहिलो आगच्छीत, दिट्ठो, तीए रूवे मुच्छितो, एगंते उव्वत्तिऊण अच्छति, तेण बितियएण भण्णति महिला-इत्तो मम महिला वितातुकामा एयं विसज्जिहित्ति, तेण विसज्जिया, सा तेण समं अच्छति, इतरीवि मूलदेवेण समं रमितूण आगता, णिग्गंतूण य तत्तो पडयं घेतूण कंडरियस्स धुत्ती भणति हसंती-पियं खु णे दारओ जातो ।

पतित्ति, दोण्हं भातुगाणं एगा भज्जा, लोगे फुडं- दोण्हवि समा, रण्णा सुतं, परं विस्सयं गतो, अमच्चो भणति-कतो एवं होहित्ति?, अवस्सं विसेसो, तेणं लेहो दिण्णो जहा गामं गंतव्वं, एगो पुव्वेणं एगो अवरेण, भज्जाए अह्लीविओ, तीए जो पिओ सो अवरेणं पेसिओ, जो वेसो सो पुव्वं पेसितो, वेसस्स गच्छंतस्स आगच्छंतस्सवि निडाले सूरो, असद्दहंतेसु पुणोवि पट्ठवितूण समगं पुरिसा पेसिता, ते भणंति-ते दढं अपडुगा. एसो मंदसंघयणोत्ति भाणितुं तं चेव पवण्णा, एवं णायं ।

पुत्ते जाए एगो वाणियओ भज्जाहिं समं अण्णं रज्जं गतो, तत्थ मतो,ताओ दोवि भणंति-मम पुत्तोत्ति,पुत्तणिमित्तं ववहारो, णेच्छति, अमच्चो भणति--दव्वं विरिंचित्तु दारगं दो भागे करेह करकचएणं, एगा भणति-एवं होतु, माता भणति--एतस्स पुत्तो, मा मारिज्जतु, तीसे विदिण्णो । ॥५४९॥

औत्पातिकी बुद्धिः

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[१]

नमस्कार व्याख्यायां

॥५५०॥

मधुसित्थो काई कोलिगिणी उब्भामइला य, तेणेव विहाणेण दरिसितं, नाता उब्भामइलत्ति ।

मुद्दियाए पुरोहिते णिक्खेवए घेत्तूणं अण्णेसिं ण देति, अण्णदा दमएण ठवियं, पडियागतस्स ण देति, सो पिसायो जातो, अमच्चो वीधीए जाति, भणति--दावेह पुरोहिता ममयं सहस्सं, तस्स किवा जाता, रण्णो कहितं, रण्णा भणितं--देहि, ण गेण्हामित्ति, मग्गेति, अण्णदा रायाए समं जूतं रमति, णाममुद्दागहणं, रायाए अलक्खगं गहाय मणूसस्स हत्थे दिण्णा, अमुगं कालं साहसो णउलओ दमएण ठवितो तं देहि, इमं अभिण्णाणं, दिण्णो, आणितो, अण्णाणं णउलाणं मज्झे कतो, सो सद्दावितो, पच्चभिण्णातो, पुरोहितस्स जिब्भा छिन्ना ।

अंको तहेव एगेण णिक्खित्तं लंछेतूणं, इतरेण हेट्ठा गहिया, ओसिव्वित्ता कूडरूवगाणं भरितो, पच्छा तहेव सीवितं, आगतस्स अल्लिवितो, सा मुद्दा उग्घाडिया जाव कूडगरूवगा, ववहारो, पुच्छितो केत्तिया रूवगा?, सहस्सं, गणिऊण भरिए ऊणगं जातं, तधा तडितेउं ण तीरति सव्वे तु, एवं णातं ।

णाणए तहेव णिक्खेवओ, पणा छूढा, आगतस्स दिण्णो,अण्णो णउलतो, पणे पुच्छा, राउले ववहारो,कालो को आसि?,अमुगो, अहुणत्तणगा पणा, से चिराणओ कालो, दंडिओ ।

भिक्खू तहेव णिक्खेवगं न देति, जूतकरा ओलग्गिया, तेहिं पुच्छिएणं सब्भावो कहितो, ते रत्तपडगवेसेणं गता सुवण्णस्स खोड्डियाओ गहाय, अम्हे वच्चामो, चेइयं वंदामो, इमं अच्छउ, सो य पुव्वभणितो,एतंमि अंतरे आगतेण मग्गितं तए, लेभे-

औत्पातिकी बुद्धिः

॥५५०॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां ||५५१||

औत्पाति की बुद्धिः

ल्लंताए दिण्णं, अण्णेवि भिक्खू एंतगा तो एगाए मंजूसाए चेव कज्जिहिति णिग्गता। चेडगणिधाणे, दो मित्ताणि, तेहिं णिधाणगं दिट्ठं, कल्ले सुनक्खत्ते लेहामोत्ति, एगेण रत्तिं उक्खणिऊण इंगाला छूढा, बितियदिवसे गता, इंगालं पेच्छंति. सो धुत्तो भणति- अहो अम्हं मंदपुण्णया, इंगाला जाता, तेण णातं, हिययं न दरिसेति, तस्स पडिमं करेति, दो मक्कडए गेण्हति, तस्स उवरिं भत्तं देति, ते छुहाइया तं पडिमं चडंति,, अण्णदा भोयणगं सज्जितं, दारगा तस्सच्चया आणिता, संगोविता, ण देति, भणति-- मक्कडगा जाता, आगतो, तत्थ लेप्पगट्ठाणे आवेसावितो, मक्कडगा मुक्का, किलकिलंता तस्स उवरिं विलग्गा, णातं, दिण्णो भागो।

सिक्खा, अत्थि धणुव्वेओ एगो राजपुत्तो, जथा सेणिओ तथा हिंडंतो एगत्थ उ ईसरपुत्तए सिक्खवेति, दव्वं विढत्तं, तेसिं पिती, मिसगा चिंतेति- बहुतं दव्वं एतस्स दिण्णं, जइया जाहिति ततिया मारिज्जिहिति, तेण णातं, संचारितं णातगाणं- जहाहं रत्तिं छाणपिंडए णदीए छुभीहामि ते लएज्जह, तेण लोलगा वालिता, एसा अम्ह विधित्ति तिहिपव्वणीसु दारएहिं समं णदीय छुभति, एवं णिव्वाहेतूण णट्ठो।

अत्थसत्थे एगेण पुत्तेण दो सवित्तीओ, ववहारो ण छिज्जइ, इतो य देवी गुव्विणी उज्जाणियं गता, ताओ उवट्ठिताओ, ||५५१||
सा भणति- मम पुत्तो जो होहिति सो अत्थसत्थं सिक्खिहिति, एतस्स असोगस्स हेट्ठा णिविट्ठो ववहारं छिंदिहिति ताव दोवि अविसेसेणं खाह पिवहात्ति, जीसे ण पुत्तो सा चिंतेति- एत्तितो ताव कालो लद्धोत्ति पडिसुतं, णाता, ण एसी।

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

इच्छाए, एगाए भत्तारो मओ, वड्डिपउत्तं तं ण उग्गमति, पतिमित्तो भणितो- उग्गमेहि, तेण भणितं-मज्झ तिभागं देहि, ताए भणितं- जं तुमं इच्छसि तं ममं देज्जासि, तेण उम्मग्गितं, सतं दिण्णं, सा णेच्छति, ववहारो, आणावितं, दो पुंजा कता, कतरं तुमं इच्छसि?, भणति- बहुं, ताए भणितो- एतं चेव ममं देहित्ति, दवावितो।

सतसहस्संति, एगो परिभट्ठतो, तस्स सतसाहस्सं खोरं, सो भणति- जो मम अपुव्वं सुणावेति तस्स एतं देमि, अण्णदा एगं णगरं गतो, तत्थ उग्घोसेति, सिद्धत्थपुत्तेण सुतं, भणति- मज्झ पितुं तुज्झ पिता धारेति अणूणगं सतसहस्सं। जादि सुतपुव्वं दिज्जतु अह ण सुतं खोरयं देहि ॥ १ ॥ जिओ। उप्पात्तिया गता।

इदानीं वैनयिकी, विनयात् निष्पन्ना वैनयिकी, को विनयः?, गुरुशुश्रूषाविनयादिः, पच्छा सो गुरू तस्य बुद्धिं तस्मिन् शास्त्रे विनयति गमयति प्रापयतीत्यर्थः सा विनयिकी, सा य केवंविहा भवति?, उच्यते--भरस्य निस्तरणसमर्था, भरो णाम अतिगुरुकं कज्जं, तस्या धारणी, त्रिवर्गो नाम धर्मार्थकामा, अहवा लोगो वेदो समयो, सूत्रं अर्थः तदुभयं, एतेसिं पेयालना, पेयालनं परिज्ञानं अभिगमनमित्यर्थः, उभयोलोगफलवती इमो परो वा, कोई इहलोइओ तीसे फलवतीओ, कोई परे, तत्थिहलोगो सक्कारा दव्वं देति, परलोगे स्वर्गमोक्षौ च, कहं?, निमित्तं जाणति, अमुगत्थ विहरितव्वंति एवमादि परलोइयं, विनयात्समुत्थानं ॥५५२॥
यस्याः सा भवति विनयसमुत्था, बुध अवगमे, सा य बुद्धी, कहं फलवती भवति?, तत्थ उदाहरणाणि, न शक्यं दृष्टान्तिकोऽर्थो दृष्टान्तमन्तरेणोपपादयितुं तेन तीसे इमाणि उदाहरणाणि--

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां ॥५५२॥

वैनयिकी बुद्धिः

णिमित्ते अत्थ० ॥ ९-५८ ॥ ९४४ ॥ णिमित्ते, एगस्स सिद्धपुत्तस्स दो सीसगा णिमित्तं सिक्खंति,अण्णदा तणकट्ठस्स वच्चंति, तेहिं हत्थियपदा दिट्ठा, एगो भणति- हत्थिणियाए पादा, कहं ?, कायएण, सा हत्थिणी काणी, कहं ?, एगपासेण तणाइं खइताइं, तेण काइएण णातं जथा- इत्थी पुरिसो य विलग्गाणि, सोवि णातो, सो य जुव्वाणत्ति णातो, हत्थीणिं रुंभित्ता उट्ठिता, दारओ से भविस्सति जेण दक्खिणपादो गुरु, पोतरत्ता दसि रुक्खे लग्गा। णदीतीरे एगाए थेरीए पुत्तो पवासितओ, तस्स आगमणं पुच्छिया, तत्थ घडओ भिण्णो, तत्थ य एगो भणति- तज्जातेण य तज्जातं, तण्णिभेण य तण्णिभं। तारूवेण य तारूवं, सरिसं सरिसेण णिद्दिसे ॥ १ ॥ मतओत्ति परिणामेति, बितिओ भणति-जाहि वुड्ढे ! सो घरं आगतेल्लओ, सा गता, दिट्ठो, तुट्ठा, तओ सा जुवलगं रूवए य गहाय आगता, सक्कारिओ, बितिओ भणति-मम सब्भावं ण कथेति, तेणं पुच्छियं, तेहिं जथाभूतं कहितं, एगो भणति-भूमिजो भूमिं चेव मिलितो, एवं सोवि दारतो, भणितं च-'तज्जाएण य तज्जातं०' सिलोगो।

अत्थसत्थे कप्पओ दधिकुंडगउच्छुकलावग एवमादि। लेहे जथा अट्ठारसलिविजाणओ। एवं गणिएवि। अण्णे भणंति वट्टेहिं रमंतेण अक्खराणि सिक्खावियाणि गणियाइ य। कूवे खायजाणएणं पमाणं भणितं, जथा एदूरे पाणियंति, तेहिवि खतं, तो वोलीणं, तस्स कहियं, पासे आणहहत्ति भणिता,धब्बसगसद्देण जलमुट्ठाहियं। आसे, आसवाणियगा बारवतिं गया, सव्वे कुमारा थुल्ला वड्डे य गेण्हंति, वासुदेवेण जो दुब्बलङ्गो लक्खणजुत्तो सो गहितो। गद्दभे राया तरुणप्पितो, अण्णत्थ उद्धाइता सिणपल्लिते ॥५५३॥ जारिसे, तिसाए पीडिया, थेरं पुच्छंति, घोसावितं, एगेण पियपुत्तेण आणितओ, तेण कहियं, थेरो भणति-मुयह गद्दभे, जत्थ गद्दभा उस्सिंघेंति जहिं लुठिंति य तत्थ पाणितं, खयं,पीता य। अण्णे भणंति-उस्सिंघणाए चेव जलासतं गता॥ लक्खणे पारसविसए

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां

॥५५४॥

वैनयिकी बुद्धिः

आसरक्खओ, धीताए तस्स समं संपत्ति, ताए भणितो- वीसत्थाणं घोलचम्मं पाहाणाणं भरेतूणं रुक्खाओ मुयाहि, तत्थ जो ण उत्तसति तं लएहि, पडहं च तालेहि, धुज्झावेह य खक्खरएणं जो ण उत्तसति तं लएहि, सो वेतणगकाले भणति--मम दो देहि, असुगं २ वा, तेण भणितं- सव्वे गिण्हाहि, किं ते एतेहिं ?, णेच्छति, भज्जाए कहणं, धीता से दिज्जतु, सा णेच्छति, सो तीसे वड्ढति, दारकं कहेति, लक्खणजुत्तेणं कुडुंबं परिवड्ढातित्ति ॥ एगस्स मातुलएणं धूया दिण्णा, कम्मं ण करेति, भज्जाए चोइतो दिवे दिवे अडवीओ रित्तओ एति, छट्ठे मासे लद्धं कुलवो, सतसहस्सेणं सेट्ठिणा लइओ, अक्खयणिहित्ति॥ गंधम्मि, पाडलिपुत्ते णगरे पालित्तगा आयरिया अच्छंति,इतो य जोणिएहिं इमाणि विसज्जियाणि पाडलिपुत्तं-सुत्तं मोहितगं लट्ठी समा मुद्दिओ समुग्गओत्ति, केणइ ण णाता, पालित्तयआयरिया सद्दाविता-तुब्भेहिं जाणह भगवंति?, बाढं जाणामि, सुत्तं उण्होदए छूढं,मयणं विरायं, दिट्ठाणि अग्गिमाणि, दंडओ पाणिए छूढो, मूलं गरुयं, समुग्गतो जतुणा घोलितो उण्होदए, कढितो उग्घाडितो य । तेणविय लाउयं राइछेऊण रयणाणि छूढाणि, तेण य सिव्विणीए सिव्वेऊण विसज्जितं, अभिंदंता फेडह, ण सक्कितं ॥ अगदे, परबलं णगरं रोहेतुं एतित्ति रायाए पाणियाणि विणासितव्वाणि, विसकरो पाडितो, पुंजा कता, वेज्जो जवमेत्तं गहाय आगतो, राया रुट्ठो, वेज्जो भणति- सतसहस्सवेधी, कहं ?, खीणाऊ हत्थी आणितो, पुच्छवालो उप्पाडिओ, तेणं चेव वालग्गेणं तत्थ विसं दिण्णं, विवण्णं करेंतं दीसति, एस सव्वो विसं, जोवि खाएति सोपि विसं, एवं सतसहस्सवेधी, अत्थि णिवारणविधी ?, बाढं तत्थेव ॥५५४॥
अगदो दिण्णो पसमंतो जाति ॥ रहिय गणिया एक्कं चेव, पाडलिपुत्ते दो गणियाओ-कोसा उवकोसा य, कोसाए समं थूलभद्द-सामी अच्छितओ आसि, पच्छा पव्वइतो, ताहे वरिसारत्तो तत्थ गतो, साविका जाया, अबंभस्स पच्चक्खाइ, णण्णत्थ रायाभि-

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां

॥५५६॥

वैनयिकी बुद्धिः

योगेणं, रधिएण राया आराहितो, दिण्णा, सा थूलभद्दसामिस्स अभिक्खणं २ गुणे गेण्हति, तं ण तथा उवचरति, सो ताए अप्पणो विण्णाणं दंसेतुकामो असोगवणियभूमीगतेणं अंबपिंडि च्छोडिता, कण्डपुक्खं अण्णोण्णं लाएंतेणं हत्थब्भासं आणेत्ता अद्धचंदेण छिण्णे गहिया, तं तथावि ण तूसति, भणति- किं सिक्खियस्स दुक्करं?, सा भणति- पेच्छ ममंति, सिद्धत्थगरासिंमि णच्चिता, सूचीण अग्गयंमि य, कणियारपुप्फपोइयासु, सो आउट्टो, सा भणति- ण दुक्करं तोडिय अंबपिंडी, ण दुक्करं णच्चितु सिक्खियाए। तं दुक्करं तं च महाणुभागं,जं सो मुणी पमयवणं निविट्ठो॥१॥सीया साडी दीहं च तणं अवसव्वगं च कोंचस्स एक्कं चेव, रायपुत्ता आयरिएणं सिक्खाविया, दव्वलोभी य सो राया, तं मारेतुं इच्छति, ते दारगा चिंतेंति- एतेण अम्हं विज्जा दिण्णा, उवाएण णित्थारेमो, जाहे से जेमओ एति ताहे ण्हाणसाडियं मग्गति, ते सुक्खयं भणंति- अहो सीया साडी, बारमुहं तणं देंति, भणंति- अहो दीहं तणं, पुव्वं कोंचतेणं पदाहिणीकरेंति, तद्दिवसं अपदाहिणीकतो, परिगतं जधा विरत्ताणि, पंथो दीहो सीताणं वं ममं कातुं मग्गातित्ति, णट्ठो॥ णिव्वोदए, वणियभज्जा चिरपउत्थे पतिम्मि दासीए सब्भावं कहेति-पाहुणगं आणेहित्ति भणिता, ताए पाहुणओ आणियओ, आयसं च से कारियं, रत्तिं पवेसितो, तिसाइओ णिव्वोदगं दिण्णं, मओ, देउलियाए उज्झितो, अहुणा कयकम्मोत्ति ण्हाविया पुच्छिता- केण आउसं कारियं, तेण भणितं- दासीए, सा पहता, ताए कहियं, वाणिगिणी पुच्छिया, साहति सब्भावं, तयाविसो गोणसोत्ति, दिट्ठो य ॥ गोणे घोडगरुक्खपडणं च एक्कं चेव, एगो अकतपुण्णो जं कम्मं ॥५५५॥
करेति तं विवज्जति, मित्तस्स जाइएहिं बतिल्लेहिं हलं वाहेति, विगाले आणिया, वाडे छूढा, सो य मित्तो से जेमिति, सो लज्जाए ण ढुको, तेणवि दिट्ठा, णिप्फिडिता वाडाओ, हरिया, गहितो देहित्ति, राउलं णिज्जति, पडिपहेणं घोडएणं पुरिसो एति, सो तेण

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता..........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णिः-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां ॥५५६॥

कर्मजा-बुद्धिः

पाडितो आसेणं, सो पलाओ, तेण भणितो- आहणाहि, तेण मम्मे आहतो, मतो, तेणवि लतितो, विगालोत्ति णगरस्स बाहिरियाए वुत्था, तत्थ लोमंधिया सुत्ता, इमेवि तहिं चेव, सो चिंतेति-जावज्जीवं बंधणे करिस्सामि, वरं मे अप्पा उब्बद्धो, तेसु सुत्तेसु डण्डि-खंडेण तम्मि वडरुक्खे अप्पाणं उक्कलंबेति, तं दुब्बलं, तुट्टंतेण पडंतेण लोमंथितमहत्तरओ मारितो, तेहिवि गहितो, पभाते करणं णीतो, तेहिवि कहितं जथावत्तं, सो पुच्छितो भणति-आमंति, कुमारामच्चो भणेति- तुमं बलिद्दं देहि, एतस्स अच्छीणि उक्कमंतु, बितिओ भणितो- एतस्स आसं देतु, तुज्झ जीहा उक्कमतु, इतरे भणिया-एस हेट्ठा होतु तुब्भं एगो उब्बंधतु, णिपडि-भोगोत्ति मंतणा कातुं मुक्को। वेणतिया गता।

कम्मया णामं कर्माज्जाता कर्मजा, सा 'उवयोगदिट्ठसारा' उवयुज्जत इत्युपयोगो, उवयोगेन यासां दृष्टो सारः सा भव-ति उपयोगदृष्टसारा, सारो नाम सद्भावः, निष्ठेत्यर्थः, कर्मप्रसंगो नाम अभिक्खयोगः, परिघोलणा णामं सहावपरिमग्गणं, तेण विसाला फलवती हवति बुद्धी, ताए फलं साहुक्कारो, साधु सोभणं कतंति। एगेणं चोरेणं खत्तं पउमागारेणं छिण्णं, सो जण-वातं णिसामेति, करिसओ भणति- किं सिक्खितस्स दुक्करं ?, चोरेण सुतं, पुच्छितो, गंतूण छुरियं अंछितूण भणति-मारेमि, तेण पडयं पत्थरेत्ता वीहियाणं मुट्ठी भरितो, भणति- किं परंमुहा वडंतु ? आरंमुहा ?, पासिल्लया, तहेव कतं, तुट्ठो। कोलितो ॥५५६॥
मुट्ठीणा गहाय तंतू जाणति-एत्तियाएहिं कण्डएहिं वुणिहितित्ति। डोए वड्ढति जाणति-एत्तियं माहिति। मोत्तियं आयणिंतो आगा-से ओक्खिवित्ता तथा णिक्खिवति जथा कालवाले पडति। घतं सगडे संतओ जदि रुच्चति कुण्डिताए णालए छुभति धारं। पवओ आगासे ताणि करणाणि करेति। तुंणाओ पुव्वं थुल्लाणि पच्छा जहा ण णज्जति सूयीए, तत्तियं गेण्हति जत्तिएण समप्पति, जथा

नमस्कार व्याख्यायां ॥५५७॥

साभिस्स तं दूसं धीयारेणं कारितं। वड्ढई अमवेतूण देवकुलरथाण पमाणं जाणति। घडगारो पमाणेण मट्टितं गेण्हति भाणस्सवि माणं अमविता करेति। चित्तकारो पच्छा अमवेतूणं पमाणजुत्तं करेति, तत्तियं वा वण्णयं करेति जत्तिएणं समप्पति॥ कम्मया समत्ता॥

इदाणिं परिणामिता, परिणामनिष्पन्ना पारिणामिता, मनसो परिणामात् वयसश्च, सा य एवंविधा—

अणुमाणहेतु०। ९-६२॥ ९४८॥ अणुमाणहेतुदिट्ठंतेहिं साध्यमर्थं साधितीति अणुमाणहेतुदिट्ठंतसाधिगा, तत्थ अणुमाणं अविणाभावणिच्छियातो लिंगातो लिंगिणाणं, हेतू कारणं उवाओ, दिट्ठंतो साधम्मेण वैधम्मेण य, एतेहिं जो जेण साध्यो अत्थो तं तेण साधेति या सा तथा, वयविपाकेण य परिणामो जीए सा तथा, जथा जथा वयो विपच्चति तथा तथा विपरिणमितित्ति जं भणितं, फलं णिदंसेति 'उभयोलोगफलवती' पुव्वं वण्णितं, अहवा हियणिस्सेयसफलवती, कायहिता भवति, ण सुखा आवाते जहा कडुकरोहिणी चेवमायोज्जामिति॥ तीसे इमाणि णिदरिसणाइं—

परिणामिकी बुद्धिः

अभए०॥ ९-६३॥ ९४९॥ खमए०॥ ९-६४॥ ९५०॥ चलणाहण०॥ ९-६५॥ ९५१॥ अभयस्स कहं पारिणामिया बुद्धी?, जदा पज्जोतो गतो, रायगिहं रोहितं, तदा अभएणं खंधावारणिवेसजाणएणं पुव्वं णिक्खंता कूडरूवगा धूमिया, कहियं च से जथा भेदिता खंधारा, दावितेसु नट्ठो, एस वा, अहवा जाहे गणियाहिं कवडेण णीयो बद्धो ताव तोसिओ चत्तारि वरा, चिंतियं चाणेणं- मोयावेमि अप्पाणं, वरो मग्गिओ- अग्गी अतीमित्ति मुक्को, ताहे भणति- अहं तुमं छलेण आणितो, अहं पुण दिवसतो पज्जोतो हरातित्ति कंदंतं नगरमुज्झेण नेमि, गतो रायगिहं, दासो उम्मत्तओ कतो, गणियाओ दारि- ॥५५७॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां ॥५५८॥

याओ गहियाओ, वाणियओ गओ, रडंतओ हितो, एवमादिगाओ बहुगाओ अभयम्मि पारिणामियाओ बुद्धीओ। सेट्ठित्ति कट्ठो णामं सेट्ठी एगत्थ णगरे वसति, तस्स णं वज्जा णामं भज्जा, तस्स णेव्वइल्लो देवसम्मो बंभणो, सेट्ठी दिसाजत्ताए गतो, भज्जा से तेण समं संपलग्गा, तस्स य घरे तिण्णि य पक्खी- सूयओ मयणसालिया कुक्कुडओ, सो ताणि अप्पाहेत्ता गतो, सो धिज्जातिओ रत्तिं अतीति, मयणसालिया भणति-को ताया ण बीहेति ?, सूयओ वारेति- जो अत्तियाए दयितो अम्हंपि पियल्लओ होति, सा मयणसलाइया अणाथितासिता धिज्जातितं परिस्सवति, तीए मारिया, सूयओ ण मारिओ, तीसे पुत्तो लेहसालाए पढति, अण्णदा तस्स (घरं) साधुणो भिक्खस्स अतिगता, तं कुक्कुडगं पेच्छितूण एगो भणति-जो एयस्स सीसं खाइ सो राया होतित्ति, तं तेण धिज्जातिएणं किहवि अंतरिएणं सुतं, अविरतियं भणति-मारेहि जाव खामि, सा भणति- अण्णं आणिज्जतु मा पुत्तभंडं व संवड्ढितं, णिब्बंधे मारिओ जाव ण्हाउं गतो, ताव सो दारओ लेहसालाओ आगतो, तं च मंसं सिज्झति, सो रोवति, तस्स सीसं दिण्णं, इतरो आगतो, भाणए छूढं, सीसं मग्गाति, भणति- चेडस्स दिण्णं, सो रुट्ठो भणति- मए एतस्स कज्जे मारावितो, पच्छा भणति- जति परं एतस्स दारगस्स सीसं खातेज्जा तो कतं होज्ज, णिबंधे ववसिता, दासीए सुतं, सा तं दारगं ततो चेव घेत्तूण पलाया, अण्णं णगरं गताणि, तत्थ राया मरति, आसेण परिक्खितो, सो तत्थ राया जातो। इयरोवि सेट्ठी आगतो जाव सडितपडितं पासति, सा पुच्छिता- ण कहेति, सुएण पंजरमुक्केण कहितो बंभणाइसंबंधो, सो तहेव चिंतेति, अहं एतीसे कतेण, एसा पुण एवंति पव्वतितो, इतराणिवि तं चेव णगरं आगताणि सव्वं गहाय, अण्णदा विहरंतो सो साधू तत्थ गतो, तीए पच्चभिण्णातो, भिक्खेण समं मासगा दिण्णा, पच्छा कूवितं, गहितो, रायाए सूलं नीतो, धातीए णातो, इतराणि

परिणामिकी बुद्धिः

॥५५८॥

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[१]

नमस्कार व्याख्यायां ॥५५९॥

परिणामिकी बुद्धिः

णिव्विसताणि आणत्ताणि, पिया भोगेहिं णिमंतितो, णेच्छति, राया सड्डो कतो, वरिसारत्ते पुण्णे वच्चंतस्स अकिरियाणिमित्तं धिज्जातिएहिं उवक्खरियाए परिभट्टियारूवकतगुव्विणी य तय। अणुव्रजति, तीए गहितो, सो पवयणस्स उड्डाहो होहित्ति भणति- जदि मए तओ जोणीए णीतु, अह ण होति ममं तो पोट्टं भिंदित्ता णीउ, एवं भणितो पोट्टं भिन्नं, मया, वण्णो य जातो। कुमारो खुड्डगकुमारो जहा जोगसंगहेहिं। देवी, पुप्फभद्दे णगरे पुप्फसेणो राया, अग्गमहिसी य पुप्फवती देवी, तीसे दो चेडरूवाणि- पुप्फचूलो पुप्फचूला य, ताणि अणुरत्ताणि भोगे भुंजंति, देवी पव्वइया, देवलोगे उववण्णा, देवो जातो, सो देवो एवं चिंतेति- जदि एताणि एवं मरंति तो नरगतिरिएसु उववज्जिहंति, सुविणए सो देवो णरए देवलोए य उवदंसेति, सा भीता जाता, पुच्छति पासंडिते, ण जाणंति, अण्णियपुत्ता तत्थ आयरिया, ते सद्दाविता, तहेव सुत्तं कड्ढंति, सा भणति-किं तुब्भेहिवि सिविणओ दिट्ठो?। सो भणति- अम्हं एरिसं सुत्ति दिट्ठं, पव्वइया। देवस्स पारिणामिता॥ पुरिमतालं नगरं, उदितोदितो राया, सिरिकंता देवी, दोण्णिवि सावगाणि, परिव्वाइगा जिता, दासीहि य मुहमक्कडिताहिं वेलंबिता, णिच्छूढा, पदोसमावण्णा, वाराणसीते धम्मरुई राया, तत्थ गया, फलयपट्टियाए रूवं सिरिकंताए लिहितूण दाएति धम्मरुइस्स रण्णो, सो अज्झोववण्णो दूतं विसज्जेति, पडिहतो निच्छूढो, ताहे सव्वबलेण आगतो, णगरं गहेति, सो सावओ चिंतेति उदिओदिओ राया- किं एवड्डेणं जणक्खएणं?, उववासं ठिओ, वेसमणेणं देवेणं सणगरं साधिओ, उदितोदयस्स पारिणामिया॥ साधू णंदिसेणेत्ति, सेणियपुत्तो णंदिसेणो, सीसो ॥५५९॥
य तस्स ओधाणुप्पेधी, तस्स चिंता-भगवं जदि (रायगिहं) एज्जा तो देवीओ अण्णाणि य अतिसए पेच्छितूण जदि थिरो होज्जात्ति, भट्टारओ आगतो, सेणीओ सअंतेपुरो णीति, अण्णे य कुमारा संतेपुरा, णंदिसेणस्स अंतेपुरं सेतं वरवसणं, पउमिणिमज्झे हंसीओ

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां ||५६०||

परिणामिकी बुद्धिः ||५६०||

वा ओमुक्कआभरणाओ सव्वासिं छायं हरंति, से ताओ दट्ठूणं चिंतेति-जदि मट्टारएणं ममायरिएण एरिसियाओ मुक्काओ किमंग पुण मज्झ मंदभग्गस्स असंताणं परिच्चइयव्वयाणंति णिव्वेगमावण्णो, आलोइय पडिक्कंतो थिरो जातो। धणदत्तो सुसुमाए परिणामेति- जदि एतं ण खामो तो अंतरा मरामोत्ति ॥ सावओ सावयवयंसियाए मुच्छितो, तीसे परिणामो जातो- मा अट्टवसट्टो मरिहिति, तो णरएसु वा उववज्जिहिति, संसारं हिंडिहिति, तीसे आभरणेहिं विणीतो, संवेगो, कहणं च ॥ अमच्चोत्ति वरधणुगपिया जतुघरे कते चिंतेति-एस कुमारो मारितो होहिति, कहिंपि रक्खिज्जतित्ति सुरंगाए णीणिओ, पलातो, अण्णे भणंति- एगो राया देवी से अतिपिया कालगता, सो य मुद्धो, सो तीए वियोगदुक्खितो न सरीरट्ठितिं करेति, मंतीहिं भणितो-देव ! एरिसी संसारट्ठितित्ति, किं कीरतु ?, सो भणति- नाहं देवीए ठितिं अकरंतीए करेमि, मंतीहिं परिचिंतियं- ण अण्णो उवाओत्ति, पच्छा भणितं- देव ! सग्गं गता, तं तत्थ ठिताए चेव से सव्वं पेसिज्जतु, लद्धकयदेवीट्ठितिए पच्छा करेज्जसुत्ति, रण्णा पडिसुतं, मातिट्ठाणेण एगो पेसितो, रण्णो आगंतूण साहेति- कता सरीरट्ठिती देवीए, पच्छा राया करेति, एवं पतिदिणं करेंताण कालो वच्चति, देवीपेसणववदेसेण वत्थं कडिसुत्तगादि खज्जति, एगेण चिंतियं-अहंपि खतिं करेमि, पच्छा राया दिट्ठो, तेण भणितं- कुतो तुमंति ?, सो भणति- देव ! सग्गातो, रण्णा भणितं-देवी दिट्ठत्ति ?, सो भणति तीए चेव पेसितो कडिसुत्तयादिनिमित्तंति, दावितं से जहिच्छितं, किंपि न संपडति, रण्णा भणितं- कदा गमिस्सति ?, तेण भणितं- कल्लं, रण्णा भणियं- कल्लं ते संपाडिस्सं, मंती आदिट्ठो- सिग्घं संपाडेह, तेहिं चिंतियं- विणट्ठं कज्जं, को एत्थ उवाओऽत्थि ?, विसण्णा, एगेण भणियं- धीरा होह, अहं भलिस्सामि, तेणं तं संपाडेतूण राया भणितो-

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता..........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां ||५६१||

देव ! एस कह जाहिति ?, रण्णा भणितं- अण्णे कह जंतगा ?, तेण भणितं- अम्हे जं पडुवेंता तं जलणप्पवेसेणं, ण अण्णहा सग्गं गम्मतित्ति, रण्णा भणियं- तहेव पवेसेह, तहेव आढत्तो, सो विसण्णो, अण्णो य धुत्तो वायालो, रण्णो समक्खं बहुं उवहसति, जधा देवि ! भणिज्जासि सिणेहवंतो ते राया, पुणोवि जं कज्जं तं संदिसेज्जासि, अण्णं च इमं च बहुविहं भणेज्जासि, तेण भणितं- देव ! णाहमेत्तिगमविगलं भणितुं जाणामि, एसो चेव लट्ठो पेसिज्जतु, रण्णा पडिसुतं, सो तहेव णिज्जितुं आढत्तो, इतरो मुक्को, इतरस्स माणुसाणि विसण्णाणि विलवंति- हा देव ! अम्हे किं करेज्जामो ?, तेण भणितं -नियतुंडं रक्खेज्जह, पच्छा मंतीहिं खरंटिय मुक्को, मडगं दट्ठुं, मंतिस्स परिणामिया ॥ खमए खमओ चेल्लएणं समं भिक्खं हिंडति, तेणं मंडुक्कलिया मारिया, आलोयणवेलाए णो आलोएति, खुड्डएणं भणितो- आलोएहित्ति, सो रुट्ठो आहणामेति पधावितो, (थंभे अभिभडिओ) एगत्थ विराहितसामण्णाणं सप्पाणं कुलं, तत्थ उववण्णो, दिट्ठीविसो सप्पो जातो, अपरोपरेण जाणंति, रत्तिं चरंति मा जीवे मारेहामोत्ति, फासुगमाहारेन्ति । अण्णदा रण्णो पुत्तो अहिणा खाइतो, मतो य, राया सप्पाणं पदोसमावण्णो भणति- जो सप्पं मारेति तस्स दीणारं देमि, अण्णदा आहितुंडिएणं ताणं रेहाओ दिट्ठाओ, तं बिलं ओसधीहिं धम्मति, सीसाणि णिग्गच्छंताणं छिंदति, सो अभिमुहो ण णीति- मा कंचि मारेहामोत्ति जातिस्सरत्तणेण, तं णिग्गयं छिंदति, पच्छा तेण रण्णो उवणीताणि, से राया णागदेवताए बोधिज्जति, मा मारेहि, णागदिण्णो ते कुमारो होहित्ति, सो खमगसप्पो मतो समाणो तत्थ रायाणियाए पुत्तो जातो, उम्मुक्कबालभावो साधुं दट्ठुं जातिं संभरित्ता पच्छा पव्वइओ य, सो छुधालुओ अभिग्गहं गेण्हति- ण मए रुसितव्वंति, दोसीणस्स पहिंडति, तत्थ आयरियस्स गच्छे चत्तारि खमगा- मासिओ २३४ त्ति, रत्तिं देवता आगता, ते अण्णे खमए अति-

परिणामिकी बुद्धिः ||५६१||

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[१]

नमस्कार व्याख्यायां ॥५६२॥

परिणामिकी बुद्धिः

कमेत्ता तं वंदति, खमएण णिग्गच्छंती हत्थे गहिया, भणिया य- कडपूयणे ! एयं तिकालभोइं वंदसि, इमे महातवस्सी ण वंदसि?, सा भणति- अहं भावखमयं वंदामि, ण दव्वखमएत्ति, गता, पभाते दोसीणस्स गतो, णिमंतेति, एगेण पायं गहाय खेलो छूढो, सो भणति- मिच्छामि दुक्कडं, जं मए खेलमल्लयं तुब्भ णोवणीयं, एवं सेसेहिवि, सो जिमेतुमारद्धो, तेहिं वारितो, णिव्वेगमावण्णो । पंचवि सिद्धा । विभासा ॥ अमच्चपुत्तो वरधणुओ, तस्स तेसु २ प्रयोजनेसु पारिणामिया, जथा माता मोतावित्ता, सो पलाविओ, एयमादी सव्वं विभासियव्वं । अण्णे भणंति- एगो मंतिपुत्तो कप्पडियरायकुमारेणं समं हिंडति, अण्णदा णेमित्तिओ घडितो, रत्तिं देसकुडिठियाणं सिवा रडति, कुमारेण णेमित्तिओ पुच्छितो-किं सा भणतित्ति ?, तेण भणितं- इमं भणति--इमंमि णदितित्थंमि पूराणीयं कलेवरं चिट्ठतित्ति, एयस्स कडीए सयं पायंकाणं, कुमार ! तुमं गेण्हाहि, तुज्झ पायंका मम य कलेवरंति, सुद्दियं पुण ण सक्कुणोमित्ति, कुमारस्स कोड्डं जातं, ते य वंचिय एगागी गतो, तहेव जातं, पायंके घेत्तूण पच्चागतो, पुणो रडति, पुणोवि पुच्छितो, सो भणति- चप्फिलगाइयं कहति, एस भणति- कुमार ! तुज्झवि पायंका संजाता मज्झवि कलेवरंति, कुमारो तुसिणीओ जाओ, अमच्चपुत्तेण चिंतियं--पेच्छामु से सत्तं, किं किविणत्तणेण गतो आउ सोंडीरताए ?, जदि किविणत्तणेण कतं ण तस्स रज्जंति णियत्तामि, पच्चूसे भणति- वच्चह तुब्भे, मम पुण सूलं रुजति, ण सक्कुणोमि गंतुं, कुमारेण भणियं- ण जुत्तं तुमं मोत्तूण गंतुं, किं तु मा एगत्थ कोइ जाणिहित्ति तेण वच्चामो, पच्छा कुलपुत्तघरं णीतो, समप्पिओ, तं च सव्वं पेज्जामुल्लं दिण्णं, मंतिपुत्तस्स अवगतं जथा सोंडीरताएत्ति, भणितं चणेण- अत्थि मे विसेसो अतो गच्छामि, पच्छा गतो, कुमारेण रज्जं पत्तं, भोगावि से दिण्णा । एतस्स पारिणामिगी । ॥५६२॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां ॥५६३॥

परिणामिकी बुद्धिः

चाणक्के गोल्लविसए चणियग्गामो, तत्थ चणिओ माहणो, सो य सावओ, तस्स घरे साधू ठिता, पुत्तो से जातो सह दाढाहिं, तेण साधूण पाएसु पाडिओ, तेहिं भणितं–राया होहितित्ति, तेण चिंतियं-मा दोग्गतिं जाइस्सइत्ति दंता घट्ठा, पुणोवि आयरियाणं कहितं, तेहिं भणितं–किं कज्जतु?, एत्ताहेवि बिंबंतरितो भविस्सतित्ति, उम्मुक्कबालभावेण चोद्दस विज्जाठाणाणि आगमियाणि, सोवि सावओ संतुट्ठो, एगाओ भद्दमाहणाओ आणिया भज्जा से, अण्णदा कम्हीऽ कोतुए भज्जा से मातिघरं गता, केति भगिति-भातिविवाहे गता, तीसे य भइणी अण्णेसिं खद्धादाणियाणं दिण्णेल्लियाओ, ता अलंकितभूसिताओ आगताओ, सव्वो परिजणो ताहिं समं लवति, सा एगंते अच्छति, तीसे अद्धिती जाता, घरं आगता, अद्धितिलद्धा अच्छति, णिब्बंधे सिट्ठं, तेण चिंतियं-णंदो पाडलिपुत्ते देति तत्थ वच्चामि, गतो, कत्तियपुण्णिमाए पुव्वण्णत्थे आसणे पढमे णिविट्ठो, तं च तस्स साल्लियातस्स राउरुस्स सता ठविज्जति, सिद्धपुत्तो य णंदेण समं तत्थ आगतो भणति–एस बंभणो णंदवंसस्स छायं अक्कमिऊण ठितो, दासीए भणितो-भगवं! बितिए आसणे णिवेसाहित्ति, अत्थित्ति बितिए आसणे कुंडियं ठवेति, एवं ततिए दंडगं, चउत्थे गणेत्तियं, पंचमे जण्णोवइयं, धिट्ठोत्ति निच्छूढो, पादो पढमो उक्खित्तो, भणति य–कोशेन भृत्यैश्च निबद्धमूलं, पुत्रैश्च मित्रैश्च विवृद्धशाखम्। उत्पाट्य नंदं परिवर्तयामि, हठाद् द्रुमं वायुरिवोग्रवेगः ॥ १ ॥ णिग्गतो, पुरिसं मग्गति, सुतं च णेणं बिंबंतरितो राया होहामित्ति, नंदस्स मोरपोसगा, तेसिं गामं गतो परिव्वायलिंगेणं, तेसिं महतरस्स धीताए चंदपीयने डोहलो जातो, सो समुदाणेंतो गतो, ताणि तं ॥५६३॥
पुच्छंति, जदि ममं दारगं देह तो णं पाएमि चंदं, पडिसुणेंति, पडमंडवो कतो, तद्दिवसं पुण्णिमा, मज्झे छिद्दं, मज्झण्हं गते चंदे सव्वरसालूहिं दव्वेहिं संजोएत्ता आसण्णे थालं भरितं कतं, सद्दाविता, पेक्खति पियति य, उवरि पुरिसो उच्छाडेति, अव-

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां

॥५६४॥

णीते पुत्तो जातो, संवड्ढति, इमोऽवि धातुविलागे मग्गति, सो य दारएहिं समं रमति, रायणीती विभासा, चाणक्को य पडिएइ, पेच्छति, तेण विमग्गितो, अम्हवि दिज्जउ, भगति--गावीओ लहेहि, मा मारेज्ज कोति, भगति--वीरभोज्जा पुहवी, णातं जथा विण्णाणं से अत्थि, तो कस्सति दारएहिं कहितं -परिव्वायगपुत्तो एस, अहं परिव्वाओ, जामु जा ते रायाणं करेमि, चलिया, लोगो मिलितो, पाडलिपुत्तं रोहितं, णंदेणं भग्गो परिव्वायगो, आसेहिं पुट्ठीए लग्गो, चंदउत्तो य पउमसरे णिबुड्डो, इमो उवस्सरति, सण्णाए भगति--बोलियत्ति, उत्तिण्णा णासंति, अण्णे भणंति--चंदउत्तं पउमिणीसंडे छुभित्ता रयओ जातो, पच्छा एगेण जच्च-किसोरगगतेण आसवारेण पुच्छितो भणति--एस पउमसरे पविट्ठो, ततो तेण दिट्ठो, ततो घोडगो चाणक्कस्स अल्लिविओ, तत्थेव खग्गं मुक्कं, जले पवेसणट्ठयाए कंचुयं मुयति ताव खग्गेण दुहाकतो, चंदगुत्तो वाहित्ता चडावितो, पळाया, पुच्छितो-तंवेलं किं तुमे चिंतितंति ?, भणति--धुवं एतं चेव सोभणं, अज्जो चेव जाणतित्ति, णातो जोग्गो, ण एस विपरिणमतित्ति, पच्छा छुहाइओ चाणक्को तं ठवेत्ता अतिगतो, बीभेति--मा एत्थं णज्जेज्जामोत्ति, माहणस्स बहिं निग्गयस्स पोट्टं फालितं, दधिकरंबं गहाय गतो, जिमितो, अण्णत्थ गामे रत्तिं समुदाणेति, थेरिय पुत्तभंडाणं विलेवितं देति उण्हं, एक्केण मज्झे हत्थो छूढो, दड्ढो रोवति, ताए य भण्णति-चाणक्कमंगलोसि, पुच्छियं, भगति--पासाणि पढमं घेप्पंति, गता हिमवंतकूडं, पव्वइओ राया, तेण समं मित्तया जाता, भगति-समं समेण विभयामो रज्जं, ओतवेन्ताणं एगत्थ णगरं ण पडति, पविट्ठो तिदंडी, वत्थूणि जोएति, इंदकुमारियाओ, तासिं तणएग ण पडति, माताए णीणावियाओ, पडितं णगरं, पाडलिपुत्तं रोहितं, णंदो धम्मदुवारं मग्गति, एगेण रहेण जं तरसि तं णीणेहि, दो भज्जातो एगा कण्णा दव्वं च णीणेति, कण्णा चंदउत्तं पलोएति, भणिता जाहित्ति, ताए विलग्गंतीए चंदगुत्तस्स रहे णव अरगा

परिणामिकी बुद्धिः

॥५६४॥

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[१]

नमस्कार व्याख्यायां

॥५६५॥

भग्गा, तिदंडी भणति--मा वारेहि णव पुरिसजुगाणि तुज्झं वंसो होहितित्ति, अतिगता, दो भागा कता। एगा कन्नगा विसभाविया, तत्थ पव्वतगस्स इच्छा, सा तस्स दिण्णा, अग्गिपरियंचणे विसपरिगतो मरितुमारद्धो, भणति--वयंसग ! मरिज्जति, चंदगुत्तो रुं-भामित्ति ववसितो, चाणक्केण भिगुडी कता, णियत्तो, दो रज्जाणि तस्स जाताणि। णंदमणूसा य चोरिगाए जीवंति, सो चोरग्गाहं मग्गति, तिदंडी बाहिरियाए णलदामं मुइंगमारगं दट्ठुं आगतो, रण्णा सद्दावितो, दिण्णं आरक्खं, वीसत्था कता, भत्तदाणे सकुडुंबा मारिया। आणाए-वंसिहि अम्बगा परिक्खित्ता, विपरीते कते रुट्ठो, पलीवितो सव्वगामो, तेहि य गामेल्लतेहिं तस्स कप्पडियत्तणे भत्तं ण दिण्णंति काउं।

कोसनिमित्तं परिणामिता बुद्धी, जूतं रमति कूडपासएहिं, सोवण्णं थाले दीणारभरितं, जो जिणति तस्स, अहं जिणामि एक्को दायव्वो, अतिचिरंति अण्णं उवायं चिंतेति, नागराणं भत्तं देति, मज्जपाणं च दिण्णं, मत्तेसु पणच्चितो भणति गायंतो-दो मज्झ धातुरत्ताओ कंचणकुंडिया तिदंडं च, राया मे वसवत्ती, एत्थवि ता मे होलं वाएहि ॥१॥ अण्णो असहमाणो भणति-गयपोयगस्स (मद्दस्स मन्थरगइए उ) जोयणसहस्सं। पदे पदे सतसहस्सा एत्थवि ता मे होलं वाएहि ॥१॥ अण्णो असहमाणो भणति-तिलआढगस्स वुत्तस्स णिप्फण्णस्स बहुसइतस्स। तिले तिले सतसहस्सं एत्थवि ता मे होलं वाएहि ॥ १ ॥ अण्णो भण्णति-णवपाउसंमि पुण्णाए गिरिनइयाए य सिग्घवेगाए। एगाहमहितमेत्तेणं णवणीतेण पालिं बंधामि ॥ १ ॥ जच्चाण वरकिसोराणं तद्दिवसं तु जायमेत्ताणं। ॥५६५॥
केसेहिं णभं छाएमि एत्थवि ता मे होलं वाएहि ॥ १ ॥ दो मज्झ अत्थि रतणाणि सालिपसूई य गद्दभिया य। छिण्णा छिण्णावि रूहंति एत्थवि ता मे होलं वाएहि ॥ १ ॥ सेतसुकिल्लो णिच्चसुगंधो, भज्ज अणुव्वय णत्थि पवासो। णिरिणो य दुपंचसतो य,

परिणामिकी बुद्धिः

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता..........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

नमस्कार व्याख्यायां ॥५६६॥

परिणामिकी बुद्धिः

एत्थवि ता मे होलं वाएहि ॥१॥ एवं णाऊणं रयणाइं मग्गिऊणं गोट्ठागाराणि सालीणं भरियाणि रयणाइं गद्दभियादीणि पुच्छितो छिण्णाणि २ जायंति, आसा एगदिवसजाता मग्गिता, एगदिवसियं णवणीतं मग्गितं । एस परिणामिता चाणक्कस्स बुद्धी ॥

थूलभद्दस्स सामिस्स परिणामिता, पितुंमि मरिते कुमारो भण्णति-अमच्चो होहिति, सो असोगवणियाए चिंतेति-केरिसा भोगा वाउलाणंति?, ताहे पव्वइतो, राया भणति-पेच्छह, मा कवडेणं गणियाघरं जाएज्जा, णिंतस्स सुणगमडगो वावण्णो, णासं न विकूणेति, पडिलेहेत्ता रण्णा भणितं-विरत्तभोगोत्ति, सिरिओ ठाविओ ।

णासिक्कणगरं, णंदो वाणियओ, सुंदरी से भज्जा, सुंदरीणंदो से नामं जातं, तस्स भाता पुव्वपव्वइतो, सो सुणेति-जथा तीए अज्झोववन्नो, पाहुणओ आगतो, पडिलाभितो, भाणं तेण गाहितं, एहि एत्थ विसज्जेहितित्ति उज्जाणे णीतो, सो भोगगिद्धो णगरं जाहितित्ति अधिगतरेणं उवप्पलोभेमि, सो य वेउव्वियलद्धी, मक्कडिं दरिसेत्ता पुच्छति-का सुंदरित्ति?, सुंदरी, पच्छा विज्जाधरीए, तुल्ला, पच्छा देवीए, देवी अतिसुंदरत्ति, पुच्छितो भणति-कहं एसा लब्भतित्ति?, धम्मेणत्ति पव्वइतो। साधुस्स पारिणामिका।

वइरसामिस्स परिणामिया, माता णाणुवत्तिया, मा संघो अवमाणिहितित्ति, पुणो देवेहिं उज्जेणीए वेउव्वियलद्धी दिन्ना, पाडलिपुत्ते मा परिभविहित्ति वेउव्वियं कयं, पुरियाए पवयणओभावणा मा होहितित्ति सव्वं कहियव्वं ॥ ॥५६६॥

चलणाहणणे, राया तरुणेहिं वुग्गाहिज्जति, जथा थेरा कुमारा य अवणिज्जंतुत्ति, सो तेसिं मतिपरिक्खणणिमित्तं भणति-जो रायं सीसे पाएण आहणति तस्स को दंडो ?, तरुणा भणंति-तिलतिलं छिंदियव्वओ, थेरा पुच्छिया, चिंतमोत्ति ओसरिया,

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां

॥५६७॥

चिंतेति-णूणं देवीए को अण्णयरो आहणतित्ति, आगता भणंति-सक्कारेयव्वओ, रण्णो तेसिं च पारिणामिया बुद्धी ॥ आमलगं किंत्तिमं, एगेण णातं, अकालो, बिंबो होहिंत्ति ॥ मणिम्मि सप्पो पक्खीणं अंडगाणि खाति रुक्खं विलग्गिता, तत्थ गिद्धेण आलयं विलग्गो, मारिओ, तत्थ मणी पडितो, हेट्ठा कूवो, तं पाणितं रत्तीभूतं, कूवातो णीणितं साभावितं, दारएणं थेरस्स कहितं, तेण विलग्गिऊण गहितं ॥ सप्पो चंडकोसिओ चिंतेति-एरिसो महप्पा ॥ खग्गो सावगपुत्तो जोव्वणबलुम्मत्तो धम्मं णेच्छति, मतो खग्गीसु उववन्नो, पट्ठस्स दोहिवि पासेहिं जधा पक्खरा तधा चम्माणि लंबंति, अडवीते चउमुहंपहे जणं मारेति, साहुणो य तेणेव पहेण अइक्कमंति, वेगेण आगतो, तेएण ण तरति अल्लवितुं, चिंतेति, जाती संभरिया, पच्चक्खाणं देवलोगगमणं ॥ थूभे वेसालीए णगरीए णगरणाभीए मुणिसुव्वयसामिस्स थूभो, तस्स गुणेण कूणियस्स ण पडति, देवता आगता आगासे, कूणियं भणति-समणे जइ कूलवारए, मागहिया गणियं रमेहिती। राया त असोगचंदए, वेसालिं नगरिं गहेस्सती ॥ १ ॥ सो मग्गिज्जति, का तस्स उप्पत्ती ?-एगस्स आयरियस्स चेल्लओ अविणीओ, आयरिओ अंबाडेति, वेरं वहति, अण्णदा आयरिया सिद्धसिलं तेण समं वंदगा विलग्गा, ओयरंताणं पवाए सिला मुक्का, दिट्ठा, आयरिएणं पादा ओसारिया, इहरा मारितो होंतो, सावो दिण्णो- दुरात्मा इत्थीहिंतो विणस्सिहिसित्ति, मिच्छावादी भवतुत्तिकातुं तापसासमे अच्छति, णदीए कूलए आतावेति, पंथब्भासे जो सत्थो एति ततो आहारो होति, णदीकूलए आयावेमाणस्स णदी अण्णतो पवूढा, तेण कूलवालओ जातो, तत्थ अच्छंतओ आगमितो, गणियाओ सद्दावियाओ, एगा भणाति-अहं आणेमि, कवडसाविगा जाया, सत्थेण गता, वंदति, उद्दाणे भोतिगामि चेइयाइं वंदामि, तुब्भे य सुता, आगया मि, पारणए मोदगा संजोइया, अतिसारो जातो, पयोगेण ठवियो, उव्वत्तणादीहिं संभिण्णं चित्तं, आणितो,

परिणामिकी बुद्धिः

॥५६७॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां

भणितो-रण्णो वयणं करेहि, किं ?, जथा वेसाली घेप्पतु, थूभो णीणावितो, गहिता । इंदमातुगाओ चाणक्केण पुव्वभणियाओ । एसा पारिणामिया । अभिप्रायसिद्धाः परिसमाप्ताः ॥

तपः सिद्धः कर्मक्षय-सिद्धश्च

॥५६८॥ इदाणिं तवासिद्धो, जो य तवेण ण किलम्मति सो तवासिद्धो, जहा एगो दढप्पहारी चोरसेणावती सेणाए समं गामं हंतुं गतो, तत्थ एगो दरिद्दो, तेण पुत्तभंडाणं पायसं मग्गंताणं दुद्धं जाएत्ता पायसो सिद्धो, सो य ण्हातुं गतो, चोरा य तत्थ पडिया, एगेण तत्थ सो पायसो दिट्ठो, छुधितत्ति तं गहाय पधावितो, ताणि चेडरूवाणि रोवंताणि णिग्गताणि, पायसो हितोत्ति चोरेण, मारेमित्ति पहाविओ, महिला अवतालेतुं अच्छति तथावि जाति, सो चोरसेणावई गाममज्झे अच्छति, तेण गंतूण महासंगामो कओ, सेणावइणा चिंतियं-एतेण मम पुरतो चोरा परिभविज्जंतित्ति सह महिलाए असिणा छिण्णो, गब्भोवि दो भागे कतो फुरुफुरेति, तस्स किवा जाता, मते अधम्मो कतोत्ति, ताहे पव्वइतो, तत्थेव विहरति, हीलिज्जति हम्मति घोराकारं च तवकिलेसं करेति, सिद्धो ॥ कम्मक्खयसिद्धो जो अट्ठण्हं कम्मपगडीणं खएणं सिद्धो, तत्थ गाथा—

दीहकालरयं जं तु० ॥ ९। ६७ ॥ ९५३ ॥ एत्थ दीहकालं- अतीतकालितं, रजं वट्टमाणकालियं, कम्मं आत्मना आलिंगितं सव्वायपदेसेहिं पुट्ठंति भणितं, न केवलं सेसितं, तथा अहवा सितं 'सित वर्णबंधनयोः' अट्ठहा बद्धं-अट्ठहा परिणामितं णियदुक्खं, तुशब्दान्निधत्तानिकाचितादिवि घेप्पंति, तं तथाभूतं कम्मं धंता, धंता णाम झाणाणलेण दहित्ता, अकम्मीकातूणेत्यर्थः, इंति- एवं सिद्धस्स सतो योग्यतामंगीकृत्य सिद्धत्तमुवजायती, निष्पन्नार्थत्वं संपज्जते ॥ कहं पुण अट्ठविहं कंमं खवेति, ॥५६८॥

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[१]

नमस्कार व्याख्यायां

॥५६९॥

कर्मक्षय-सिद्धः

भण्णति- जदा केवलं णाणं उप्पाडेंति तदा चत्तारि घातिकंमे खवेंति, तं च जधा खवगसेढीए तत एवं षोढाप्रकल्पद्रव्यगणं यथास्वं द्वितयपर्यायकलापविभूतिवशीकृतं प्रतिस्वं शेषविधिना लोकालोकं प्रकाश्य भगवंतोऽचिन्त्यभूतिविशेषाः जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षेण देशोनां पूर्वकोटीं केवलिपर्यायमनुभूय समवाप्नुवंति सिद्धिमजागरामिति । अथ सिध्यतां को विधिरिति प्रश्ने सिध्यद्विधिप्रक्रियादर्शनार्थं पश्चिमस्कंधनिरूपणा क्रियते, अथ किमिदं पश्चिमस्कंध इति प्रश्ने व्याख्यायते-औदारिवैक्रियाहारकतैजसकार्मणानि शरीराणि स्कन्ध इत्याचक्ष्महे, पश्चिमशरीरं पश्चिमभव इति यावदुक्तं स्यात् तावदिदं पश्चिमस्कन्ध इति, कथम् ?, इह यस्मादयमनादौ संसारे परिभ्रमन् स्कंधान्तराणि भूयांसि गृह्णाति मुंचति च, तस्माद्यमवाप्य स्कन्धमाविर्भूतासाधारणज्ञानदर्शनचारित्रबलः भूयः स्कन्धान्तरमन्यदात्मा नोपादत्ते स पश्चिमस्कन्ध इति शब्द्यते, स्वोपात्तमनुष्यायुषोऽन्तः प्रक्षयवशाद् भुक्तस्यान्तर्मुहूर्तशेषे सिध्यत्पर्यायाभिमुखा अवश्यकरणं कुर्वंतीति । कथमिदमवश्यकरणमिति प्रश्ने प्रदर्श्यते, अन्वर्थत्वादवश्यकरणसंज्ञायाः, भास्करवत्, अवश्यकरणीयत्वादवश्यकरणं, कथमियमन्वर्थेति दर्श्यते, अर्थमनुगता या संज्ञा साऽन्वर्था, अर्थमंगीकृत्य प्रवर्तत इत्यर्थः, कथम् ?, इह यथा भास्करसंज्ञा अन्वर्था, कथमन्वर्था ?, भासं करोतीति भास्कर इति यो भासनार्थः तमंगीकृत्य प्रवर्तत इत्यन्वर्था, तथाऽवश्यकरणमिति इयं संज्ञा अन्वर्था, कथमिति चेत्, ब्रूमहे, अवश्यं क्रियत इत्यवश्यकरणं इति योऽवश्यकरणार्थोऽवश्यकर्तव्यता तमंगीकृत्य प्रवर्तते यस्मात् तस्मात्सर्वकेवलिभिः सिध्यद्भिरवश्यं क्रियमाणत्वादवश्यकरणमित्यन्वर्थसंज्ञासिद्धिः, अथवा अवश्यंभाव आवश्यकं 'द्वंद्वमनोज्ञादिभ्यश्चे'ति मनोज्ञादेरधिकृतत्वात् वुञि सत्यावश्यकसिद्धिः, आवश्यकं करणं आवश्यककरणं, कुतः ?, लोके दृष्टत्वात् मल्लस्य कक्षाबन्धकरणवत्, यथा मल्लो युयुत्सुर्नाबद्ध्वा साटकं युध्यते, स

॥५६९॥

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[१]

नमस्कार व्याख्यायां

॥५७०॥

कर्मक्षय-सिद्धः

हि प्रथममेव साटकेन कक्षो बध्वा अतः परं कृतावश्यककक्षाबन्धकरणः योद्धुमारभते, तथाऽन्तर्मुहूर्तायुःशेषेण केवलिना सिध्यता प्रथममेवेदं करणं अवश्यं कर्तव्यमित्यावश्यककरणमिति। केचिदावर्जितकरणमिति वर्णयंति, तेषामप्यावर्जितशब्दस्याभिमुखपर्यायवाचित्वात् आवर्जितकरणसिद्धिः, कथम्?, आवर्जितमनुष्यवत्, यथा लोके दृष्टमेतद् आवर्जितः मनुष्यः,अभिमुखः कृत इति, तथा च सिध्यतः सिध्यत्वपर्यायपरिणामाभिमुखीकरणं यत्तदावार्जितकरणं, येन कारणेन परिणत आत्मा नियमात् सिध्यत्पर्यायपरिणामाभिमुखो भवतीत्यर्थः, सर्वे च भगवंतः सिध्यन्तः केवलिनस्तीर्थकराश्च नियमादावश्यककरणं कुर्वन्ति, समुद्घातं तु केचित्कुर्वन्ति केचिन्नेति ॥ तत आवश्यककरणे कृते ये केवलिनः समुद्घातं कुर्वन्ति तत्प्रक्रियाऽऽविष्करणार्थमिदं प्रयते- येऽन्तर्मुहूर्तमादिकृत्वोत्कर्षेण आ मासेभ्यः षड्भ्यः आयुषोऽवशिष्टेभ्यः अभ्यन्तर आविर्भूतकेवलज्ञानपर्यायाः ते नियमात्समुद्घातं कुर्वन्ति, ये तु षण्मासेभ्य उपरिष्टादाविर्भूतकेवलज्ञानाः शेषास्ते समुद्घातकाद् बाह्याः, ते समुद्घातं न कुर्वन्तीत्यर्थः, शेषाः समुद्घातं प्रति भाज्याः, कस्माद्?, यस्मात् षाण्मासिकावशिष्टे आयुषि आविर्भूतकेवलज्ञानपर्यायेभ्यः सकाशात् षड्भ्यो मासेभ्यः ये उपरि समयोत्तरवृद्ध्याऽवशिष्टे आयुषि शेषे आविर्भूतज्ञानाः केवलिनः ते शेषाः समुद्घातं प्रति भाज्याः, केचित्समुद्घातं कुर्वन्ति केचिन्नेति, अतः केचित्समुद्घातं कृत्वा केचिदकृत्वैव समवाप्नुवन्ति सिद्धिं, अथवा येषां बहु संवेद्यमस्ति आयुश्चाल्पमवतिष्ठते ते नियमात्समुद्घातं कुर्वंति, नेतर इति ॥ ॥५७०॥ अथ ये समुद्घातं कुर्वन्ति तेषां को विधिरिति प्रश्ने तदाविष्करणार्थमाचक्ष्महे-ते दंडकादिक्रमेण कुर्वन्ति, तत्र प्रथमसमये औदारिककाययोगस्थाः दंडकं कुर्वन्ति, अथ दंडक इति कोऽर्थः?, दंडक इव दंडकः, क उपमार्थः?, यथा मूलमध्याग्रे ऊर्ध्वाधः समप्रदेशः परिवृत्तपर्यायः स दंडकः, तथा समुद्घातकरणवशान्निर्गतानामात्मप्रदेशानां दंडकसंस्थानेनावस्थानादंडकत्व-

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[१]

नमस्कार व्याख्यायां ॥५७१॥

सिद्धिः, अथ दंडककरणे को विधिरिति प्रश्ने ब्रूमहे-इह व्यावहारिकनयवशात् ये असंख्येया जीवप्रदेशाः ते सर्वेऽपि बुध्ध्या असंख्येया भागा निर्गच्छन्ति, असंख्येयभागोऽवतिष्ठते, ततस्तैरेव असंख्येयैर्जीवप्रदेशभागैः स्वशरीरान्निर्गतैर्हि दंडकमभिनिर्वर्तयंतः अष्टौ जीवमध्यप्रदेशान् सांततिकपरस्पराावियोगिनो रुचकसंस्थितान् चक्रीवैडूर्यपटलयोरुभयो रत्नाद्यवस्थायिषु रुचकसंस्थितलोकमध्यप्रविष्टाष्टाकाशप्रदेशेषु संस्थाप्य चतुर्दशरज्ज्वायतं दंडकं कुर्वतीति। ततो द्वितीयसमये कपाटं कुर्वन्ति, तत्समय एव चौदारिकमिश्रकाययोगो भवति, कपाटकमिति कोऽर्थः ?, कपाटमिव कपाटकं, कउपमार्थः ?, यथोभयोः प्राक्प्रत्यग्दिशोस्तिर्यग्विस्तीर्य अपागुदग्दिशयोर्ह्स्वमूर्ध्वाधोदिशयोरुच्छ्रितं कपाटमिति शब्द्यते, तथा समुद्धातकरणवशान्निर्गतानामात्मप्रदेशानां पूर्वापरदक्षिणोत्तरासु दिक्षु कपाटसंस्थानेनावस्थानात्कपाटकत्वसिद्धिः, अथ कपाटकरणे को विधिरिति प्रश्ने ब्रूमहे, अतः प्रथमसमयनिर्गतात्मप्रदेशसकाशात् योऽसंख्येयभागोऽवशिष्टोऽवतिष्ठत इत्युक्तं स बुद्धया पुनरपि असंख्येयान् भागान् गतः, ततो द्वितीयसमये कपाटकारकाणां असंख्येया भागा निष्क्रामंति, असंख्येयभागोऽवतिष्ठते, नैकैरसंख्येयैर्भागैर्निर्गतैरेतैः कपाटकं कुर्वन्ति, तत्र ये निर्गतास्ते प्रथमसमयनिर्गतात्मप्रदेशसकाशात् असंख्येयगुणहीनाः, असंख्येयभाग इत्यर्थः, अथ तृतीयसमये प्रतरं कुर्वन्ति तत्सामयिकश्च कार्मणकाययोगो भवति, अथ प्रतरमिति कोऽर्थः ?, प्रतरमिव प्रतरं, क उपमानार्थः?, यथा घननिचितनिरन्तरप्रचितावयवसंस्थितापरिवृत्तं स्थालकं स्फलकं वा लोके प्रतरमित्युच्यते तथाऽऽकारमपरमपि परस्परप्रदेशसंसर्गविच्छेदपरिवृत्तपर्यायेणावस्थितं प्रतरमिति प्रसिद्धं, अथ तृतीयसमये प्रतरपूरकाणां को विधिरिति प्रश्ने प्रतिब्रूमहे, ततो द्वितीयसमये निर्गतात्मप्रदेशसकाशात् योऽसंख्येयभागोऽवशिष्टोऽवतिष्ठते इत्युक्तं असावपि बुद्ध्या पुनरसंख्येयभागाः कृताः, ततस्तृतीयसमये प्रतरकारकाणाम-

समुद्घातः

॥५७१॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां ॥५७२॥

समुद्घातः

संख्येयभागा निष्क्रामंति, असंख्येयभागोऽवतिष्ठते, तैरसंख्येयैर्भागैर्निर्गतैरेतैः प्रतरं पूरयंति, तत्र ये निष्क्रान्तास्ते द्वितीयसमयनिष्क्रान्तात्मप्रदेशसकाशादसंख्येयगुणहीनाः, ततश्चतुर्थसमये कार्मणकाययोगस्थान एव आकाशप्रदेशान् निष्कुटसंस्थानसंस्थितान् लोकव्यपदेशभाजोऽपूरितान् पूरयंतीति लोकपूरकाः, तथा तेषां को विधिरिति प्रश्नेऽभिदध्महे-ततस्तृतीयसमयनिर्गतात्मप्रदेशसकाशात् योऽसंख्येयभागोऽवतिष्ठत इत्युक्तं, असावपि बुद्ध्या पुनरप्यसंख्येया भागाः क्रियन्ते, ततश्चतुर्थसमये लोकपूरकानामसंख्येयभागा निष्क्रामन्ति, असंख्येयभागोऽवतिष्ठते, ततस्तैरसंख्येयभागैर्निष्क्रान्तैरेते लोकनिष्कुटान् पूरयंति, तत्र ये निष्क्रान्तास्ते तृतीयसमयनिष्क्रान्तात्मप्रदेशसकाशादसंख्येयगुणहीनाः, यश्चाधुना असंख्येयभागोऽवतिष्ठतेऽसौ स्वशरीरावगाह्यावकाशप्रमाण इति ।

तस्येदानीं मनुष्यावस्थायां या पल्योपमासंख्येयभागमात्रा कर्मत्रयसत्कर्मस्थितिरवतिष्ठते सा बुद्ध्या असंख्येयभागाः क्रियन्ते, ततः प्रथयसमये दंडककारकसत्कर्मस्थितेरसंख्येयान् भागान् हन्ति, असंख्येयभागोऽवतिष्ठते, यश्चायुष्यामवस्थायां कर्मत्रयानुभवः स बुद्ध्या अनन्तभागाः क्रियन्ते, ततोऽस्यासद्वेद्यन्यग्रोधसातिकुब्जवामनहुंडसंस्थानवज्रनाराचार्धनाराचकीलिकासंप्राप्तसृपाटिकासंहनना-प्रशस्तवर्णगंधरसस्पर्शोपघाताप्रशस्तविहायोगत्यपर्याप्तकास्थिरासुभदुर्भगदुःस्वरानादेयायशःकीर्तिनीचैर्गोत्रसंज्ञिकानां(?) पंचविंशतेरप्रशस्तानां प्रक्रीडनसमये दंडककारकानुभवस्यानन्तान् भागान् हन्ति, अनन्तभागोऽवतिष्ठते, तत्समयिकेमव सद्वेद्यमनुष्यदेवगति-पंचेन्द्रियजात्यौदारिकवैक्रियाहारकतैजसकार्मणशरीरसमचतुरस्रसंस्थानौदारिकवैक्रियकाहारकशरीरांगोपांगवज्रर्षभसंहननप्रशस्तवर्ण-गन्धरसस्पर्शमनुष्यदेवगतिप्रायोग्यानुपूर्व्यगुरुलघुपराघातातपाद्योतोच्छ्वासप्रशस्तविहायोगतित्रसबादरपर्याप्तप्रत्येकशरीरस्थिरशुभसु-भगसुस्वरादेययशःकीर्तिनिर्माणतीर्थकरोच्चैर्गोत्रसंज्ञिकानामेकचत्वारिंशतः(?)प्रशस्तानामपि प्रकृतीनां योऽनुभवः तस्याप्रशस्तप्रकृत्यनुभ- ॥५७२॥

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[१]

नमस्कार व्याख्यायां ॥५७३॥

समुद्घात

वघातनानुप्रवेशेनैव घातनं ज्ञेयं। अथ द्वितीयसमये कपाटकारकस्य स्थित्यनुभावघातने को विधिरिति प्रश्नेऽभिदध्महे-प्रथमसमयघातितसत्कर्मस्थितेः सकाशात् योऽसंख्येयभागोऽवतिष्ठते इत्युक्तं असावपि बुद्ध्या पुनरसंख्येयभागाः क्रियन्ते, तस्य कपाटकारकोऽप्यसंख्येयान् भागान् हन्ति, असंख्येयभागोऽवतिष्ठते, ततोऽनुभवस्यापि प्रथमसमयघातनानुभवसकाशात् योऽवशिष्टोऽनंतोऽनुभवोऽवतिष्ठत इत्युक्तं असावपि बुद्ध्या पुनरनन्तभागाः क्रियन्ते, तस्य कपाटककारोऽनंतान् भागान् हन्ति, अनन्तभागोऽवतिष्ठते, अयमपि चाप्रशस्तप्रकृत्यनुभवघातनानुप्रवेशनेनैव प्रशस्तप्रकृत्यनुभवघातनं करोतीति ज्ञेयं, अथ तृतीयसमये प्रतरपूरकस्य स्थित्यनुभवघातने को विधिरिति प्रश्नेऽभिसंवादीयते, ततो द्वितीयसमयघातितसत्कर्मस्थितेः सकाशात् योऽसंख्येयभागोऽवशिष्टोऽवतिष्ठत इत्युक्तं असावपि बुद्ध्या पुनरसंख्येयभागाः क्रियते, तस्य प्रतरपूरकोऽसंख्येयान् भागान् हन्ति, असंख्येयभागोऽवतिष्ठते, ततोऽनुभवस्यापि तृतीयसमयघातितानुभवसकाशात् योऽवशिष्टोऽनन्तोऽनुभवोऽवतिष्ठते इत्युक्तं असावपि बुद्ध्या पुनरनन्तभागाः क्रियते, तस्य लोकपूरकोऽनन्तान् भागान् हन्ति, अनन्तभागोऽवतिष्ठते, अयमपि च अप्रशस्तप्रकृत्यनुभवघातनानुप्रवेशनेनैव प्रशस्तप्रकृत्यनुभवघातनं करोतीति ज्ञेयं, एवं पूर्णलोकस्य कर्मत्रयसत्कर्म आयुषः सकाशात् संख्येयगुणं जातं, अनुभवोऽनन्तः ॥ एवं चत्वारः समया भवन्ति, अतः परं प्रतिनिवृत्तः पंचमे समये प्रतरे तिष्ठति कार्मणकाययोगस्थः, अथास्यामवस्थायां स्थित्यनुभवघातने को विधिरिति प्रश्ने निगद्यते- अतश्चतुर्थसमयघातितस्थितिसत्कर्मणः सकाशात् या असंख्येयभागप्रमाणावशिष्टा स्थितिरवतिष्ठत ॥५७३॥
इत्युक्तं सा बुद्ध्या संख्येया भागाः क्रियन्ते, पंचमसमये प्रतरस्थः संख्येयान् भागान् हन्ति, संख्येयभागोऽवतिष्ठते, यश्चतुर्थसमयघातितानुभवसकाशात् अनन्तोऽवशिष्टोऽनुभवोऽवतिष्ठते इत्युक्तं असावपि बुद्ध्या अनन्ता भागाः क्रियन्ते, तस्य पंचमसमये

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां ॥५७४॥

प्रतरस्थोऽनन्तान् भागान् हन्ति, अनन्तभागोऽवतिष्ठते, एषु दंडकादिषु पंचसु समयेषु सामयिकं कण्डकमुत्तीर्णमितिकृत्वा समये समये स्थित्यनुभवकंडकघातको ज्ञेयः । अथ किमिदं कण्डकमिति प्रश्ने ब्रूमहे-कण्डकमिव कण्डकं, क उपमार्थः ?, यथा लोके तरोः खण्डभागः अंशः कंडकमित्याभिधीयते तथा कर्मतरोरपि खण्डं कण्डकमिति सिद्धं, अतः परं षष्ठसमयादारभ्य स्थितिकण्डकमनुभावकण्डकं वा आन्तर्मुहूर्तिकमुत्किरति, कण्डकं यतः किरति खिपति विनाशयतीत्यर्थः, एवं षष्ठे कपाटसमये औदारिकमिश्रकाययोगस्थः सप्तमे औदारिकमिश्रकाययोगस्थः अष्टमे च स्वशरीरप्रवेशसमये स्थितिकण्डकमनुभावकण्डकं च नाशार्थं स्पृष्टं सत् अनन्तरसमय एव नंष्टुमारब्धं न तावत्कार्त्स्न्येन नश्यति, किंतु षष्ठादिषु समयेषु कर्मतरुकण्डकस्य स्पृष्टस्य सकलसमयेष्विति, एवं तावत्समये दलमुपैति यावदन्तर्मुहूर्तः पूर्ण इति । तदनेन विधिनाऽन्तर्मुहूर्तपूरणचरमसमयानन्तरमेव कृत्स्नं कण्डकं उत्कीर्णमित्यवसेयं, उत्कीर्णं नष्टमित्यर्थः । एवं प्रतिसमयमन्तर्मुहूर्तिकः स्थित्यनुभवकण्डकघातको ज्ञेयः तावद्यावत्सयोगिनोऽन्त्यसमय इति । एवमेतानि सर्वाण्यपि संख्येयानि स्थित्यनुभवकण्डकानि ज्ञेयानि, ततः स्वशरीरं प्रविष्टोऽन्तर्मुहूर्तमास्ते, तत उपर्यनन्तरसमय एव बादरवाग्योगान् रोद्धुमारब्धः, ततोऽन्तर्मुहूर्तपूरणसमय एव बादरकाययोगबलाधानाद्बादरवाग्योगो निरुध्यमानो निरुद्धः, ततो बादरवाग्योगं निरुध्यान्तर्मुहूर्तमास्ते, न बादरयोगनिरोधः प्रवर्तत इत्यर्थः, तत उपर्यनन्तरं बादरमनोयोगं निरोद्धुमारब्धः, ततोऽन्तर्मुहूर्तस्यान्त्ये समये बादरकाययोगोपष्टंभात् बादरमनोयोगो निरुध्यमानो निरुद्धः, ततोऽन्तर्मुहूर्तं स्थित्वोपर्यनन्तरसमय एव उच्छ्वासनिश्वासौ निरोद्धुमारब्धः, ततोऽन्तर्मुहूर्तस्यान्त्ये समये बादरकाययोगोपष्टंभात् उच्छ्वासनिश्वासौ निरुध्यमानौ निरुद्धौ, ततोऽन्तर्मुहूर्तं स्थित्वोपर्यनन्तरसमय एव बादरकाययोगं निरोद्धुमारब्धः, ततोऽन्तर्मुहूर्तस्यान्त्ये समये बादरकाययोगो निरुध्यमानो निरुद्धः,

समुद्घातः ॥५७४॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां ||५७५||

समुद्घात

तत्स्थः तमेव क्षपयतीति अयुक्तमिति चेत् न, दृष्टत्वात्, तद्यथा- कारपत्रिकः क्रकचेन स्तंभे छिदिक्रियां प्रारभमाणः तत्स्थस्तमेव छिनत्ति, तथा काययोगोपष्टंभात्काये गतिरोधोऽप्यवसेयः । अत्र काययोगं निरुंधन् पूर्वस्पर्धकानामधस्तादपूर्वस्पर्द्धकानि करोति, अथ किमिदं स्पर्द्धकमिति प्रश्ने व्याचक्ष्महे- स्पर्धकमिव स्पर्द्धकं, क उपमार्थः ?, यथा लोके शालिफलककाणशानां समुदायात् मुष्टिर्भवति या स्पर्द्धकमिति शब्द्यते, कथमिति तद्विवृण्महे-'स्पर्द्ध-संहर्षे' इति शब्दाद् भवति स्पर्द्धकं, संहर्षः समुदायः पिण्ड इत्यनर्थान्तरं, अथ केषां संघर्षः इति प्रश्ने व्याचक्ष्महे, इह यथा बहूनां समुदायः क्षणे (कंडकं) संभवति, बहूनां च काण्डकस्थककाणशानां समुदायात् मुष्टिरिति भवति, तथा शालिफलकणतुल्याणामसंख्येयानां लोकानां ये प्रदेशास्तत्प्रमाणप्रमितानामविभागपरिच्छेदानां भावपरमाणुसज्जितानां समुदायात् काणसतुल्या वर्गणा भवति,एवमसंख्येया वर्गणा श्रेण्या असंख्येयभागप्रमाणा एकजीवे भवंति, तासां च बहुकाण्डस्थकणकाणशसमुदायोत्पन्नमुष्टितुल्यानां असंख्येयानां वर्गणानां श्रेण्याः असंख्येयभागमात्राणां समुदायादेकं स्पर्द्धकं भवति, एवमसंख्येयानि स्पर्द्धकानि श्रेण्या असंख्येयभागमात्राण्येकजीवे सन्ति. अथ किमिदं पूर्वपूर्वकं स्पर्द्धकानि अपूर्वस्पर्द्धकानीति च प्रश्ने व्याचक्ष्महे-यानि पर्याप्तिपर्यायेण परिणमितात्मना पूर्वमेव योगनिर्वर्तनार्थमुपात्तानि यानि चानादौ संसारे पुनः पुनर्योगनिर्वृत्त्यर्थं पूर्वमुपात्तान्यात्मना तानि पूर्वस्पर्द्धकानि इत्यभिधीयंते, तानि च स्थूलानि, यान्यधुना क्रियन्ते तानि सूक्ष्माणि, न च तथालक्षणानि अनादौ संसारे परिभ्रमता आत्मना कदाचिदप्युपात्तानि इत्यतोऽपूर्वस्पर्धकानि व्याख्यायन्ते, अथापूर्वस्पर्द्धककरणे को विधिरिति प्रश्नेऽभिदध्महे-अधस्तात्पूर्वस्पर्द्धकानामादिवर्गणा यास्तासां अविभागपरिच्छेदा ये तेषामयं योगजधर्मानुग्रहादसंख्येयान् भागानाकर्षति, असंख्येयभागं स्थापयति, जीवप्रदेशानामपि च असंख्येयभागमाकर्षयति, असंख्येयान् भागान् स्थापयति, एवं प्रथमसमये, द्विती- ||५७५||

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां ॥५७६॥

समुद्घात

यसमये प्रथमसमयाकृष्टाविभागपरिच्छेदानां असंख्येयेभ्यो भागेभ्यः सकाशादसंख्येयगुणहीनं भागमाकर्षयति, असंख्येयभागमाकर्षय-तीत्यर्थः, जीवप्रदेशानामपि च प्रथमसमयाकृष्टजीवप्रदेशासंख्येयभागसकाशादसंख्येयगुणभागमाकर्षयति, असंख्येयभागानाकर्षयतीत्यर्थः, एतेन विधिनाऽऽकृष्य योगजधर्म्मानुग्रहादपूर्वस्पर्धकानि करोति, एवं समये समये भागं करोति यावत्पूर्णोऽन्तर्मुहूर्त इति, कियन्ति पुनः स्पर्द्धकानि करोतीति प्रश्ने ब्रूमहे-श्रेण्या असंख्येयभागमात्राणि, श्रेणिवर्गमूलस्याप्यसंख्येयभागमात्राणि, पूर्वस्पर्धकानामप्यसंख्येय-भागमात्राणि, एवमपूर्वस्पर्द्धककरणे समाप्ते अत ऊर्ध्वमुपर्यनन्तरसमयमेव कृष्टीः कर्तुमारब्धोऽन्तर्मुहूर्तेन सर्वाः करोति । अथ किमिदं कृष्टि-रिति प्रश्नेऽभिधीयते-कर्मणः कर्शनं कृष्टिः, अल्पीकरणमित्यर्थः, अथ कृष्टेः करणे को विधिरिति प्रश्ने व्याचक्ष्महे, पूर्वस्पर्द्धकानामपूर्वस्प-र्धकानां चाधस्तात् या आदिवर्गणाः तासामविभागपरिच्छेदा ये तेषामयं योगजधर्मानुग्रहात् असंख्येयान् भागान् कर्षति, असं-ख्येयभागं स्थापयति, जीवप्रदेशानामप्यसंख्येयान् भागान् कर्षति, असंख्येयं भागं स्थापयति, एवमादिकृष्ट्या प्रथमसमये कृष्टीः करोति, अथ द्वितीयसमये प्रथमसमयाकृष्टानामविभागपरिच्छेदानामसंख्येयेभ्यो भागेभ्यः सकाशात्संख्येयगुणहीनं भागमाकर्ष-यति, असंख्येयभागमाकर्षयतीत्यर्थः, जीवप्रदेशानामपि प्रथमसमयाकृष्टजीवप्रदेशासंख्येयभागसकाशादसंख्येयगुणं भागमाकर्ष-यति, असंख्येयान् भागानाकर्षयतीत्यर्थः, एवमनेन विधिनाऽऽकृष्याकृष्य कृष्टीः करोति, एवं समये २ कृष्टयः क्रियमाणाः क्रियन्ते तावद्यावच्चरमसमयकृष्टिरिति, तत्र प्रथमसमयाः कृष्टयः कृता असंख्येयगुणास्ततो द्वितीयसमये असंख्येयगुणहीनाः, ॥५७६॥
एवं समये समये असंख्येयगुणहीनया श्रेण्या कृतास्तावद्यावदन्तर्मुहूर्त्त इति , तत्र याः कृष्टयः प्रथमसमयकृतास्ता असंख्येयगुणाः कृताः द्वितीयसमयकृताभ्यः सकाशाद् , अथ याः द्वितीयसमयकृतास्ताः प्रथमसमयकृतकृष्टिप्रमाणाः कथं भवंतीति प्रश्नेऽभिधीयते-

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां ॥५७७॥

अयोगि- गुणस्थानं

पल्योपमस्य संख्येयभागेन गुणिताः, प्रथमसमयकृताः कृष्टयः श्रेण्या असंख्येयभागप्रमाणाः, एवं द्वितीयादिष्वपि समयेषु श्रेण्या असंख्येयभागप्रमाणाः तावद्यावत्कृष्टिकरणस्यांतश्चाशेषो युगपन्नष्टः ॥ अधुनाऽऽयुषा समाणि कर्माणि जातानि, अधुना सूक्ष्मक्रिया-प्रतिपातिध्यानादिसप्तप्रकारार्थोच्छित्त्यनन्तरसमय एव योगिनः अयोगिनः, अयोगिगुणस्थानपर्यायमास्कन्दन्तः अयोगिपर्यायेण विनाशस्तेनैव चोत्पादः केवलिपर्यायेणावस्थानं, अयोगिपर्यायेत्यनन्तरमेव सैलेस्यपर्यायमवाप्नोति व्युपरतक्रियानिवृत्तिं च ध्यानं ध्यायति, चिन्ताव्यापाराभावात् ध्यानाभाव इति चेत् न, कर्मक्षपणसामान्याद् ध्यानमिव ध्यानमिति तत्सिद्धेः, कथम् ?, इह यथा पृथक्त्वैकत्ववितर्कपूर्वशुक्लध्यानद्वयपरिणत आत्माऽर्थान् चिन्तयन् सांपरायिकं दहति यथा वा धर्मस्य ध्याने परिणतः कर्मपर्वतं क्षपयति तथा सूक्ष्मक्रियाप्रतिपातिव्युपरतक्रियानिवृत्तिध्यानद्वयपरिणतोऽप्यात्मा असत्यामपि चिन्तायां कर्म क्षपयतीत्यतः कर्म-क्षपणसामान्यात् ध्यानमिव ध्यानमिति सिद्धं, अथवा दृष्टत्वादुपयोगवत् ध्यानमिव ध्यानं, इहासर्वज्ञस्य उपलिप्सोराभोगकरणमु-पयोगः,न च ज्ञानावरणातीतत्वाद्भगवानुपलिप्सुः,कथं?,सर्वार्थप्रत्यक्षत्वाद्, अथ च पदार्थावगमसामान्यमनुभवति,उपयोग इवोपयोगः, क उपमार्थः ?, इह यथा क्षायोपशमिकोपयोगपरिणत आत्माऽर्थानेकदेशेन संगच्छमान उपयुक्त इति शब्द्यते तथा केवलज्ञानपरि-णतोऽप्यात्माऽर्थान् साकल्येन संगच्छमानोऽसत्यामप्युपलिप्सायां अर्थावगमसामान्यादुपयुक्त इति शब्द्यते, न चोपलिप्सापूर्वक उपयोगो भगवति नास्तीत्यत उपयोगाभावः प्रतिज्ञायते, साकाराष्टतयोपयोगप्रतिज्ञानात्, न चोपयोगं कृत्वा क्षायोपशमिकोप-योगतुल्यताऽस्य प्रतिज्ञायते, न वा क्षायोपशमिकातुल्यतया अस्योपयोगाप्रच्युतिर्यथा भवति तथा चिन्ताव्यापारनिरुत्सुकस्यापि भगवतो ध्यानमिति युक्तं, कर्मदहनसामान्यात्, कथम् ?, इह यथा पूर्वशुक्लध्यानद्वयपर्यायपरिणत आत्मा कर्म दहति ॥५७७॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां ॥५७८॥

अयोगि-गुणस्थानं

तथोत्तराभ्यां कर्म दहतीत्यतः कर्मदहनसामान्याद् ध्यानमिव ध्यानं, न च कर्मदहनसामान्याद् ध्याने एते इतिकृत्वा पूर्वध्यानवंच्चिताकृतो व्यापारोऽप्यनयोरावश्यकः प्रतिज्ञायते, न च चिन्ताव्यापाररहिते एते इतिकृत्वा पूर्वयोरपि चिन्ताव्यापाररहितताभ्यनुज्ञायते, न च पूर्वयोश्चिन्ताकृतो व्यापार इतिकृत्वा तयोरपि चिन्तातो व्यापारो भवितुमर्हतीत्यतोवशीयते, तदेवमेतेन न्यायेन चिन्ताव्यापाराभावेऽपि कर्मदहनसामान्यमिव युक्तं ध्यानं, अथवा पूर्वप्रयोगात् ध्यानमिव ध्यानमिति सिद्धं, कथं ?, कुलालचक्रभ्रान्तिवत्, यथा बाह्याभ्यन्तरभ्रमणकारणपरिणामसान्निध्ये स्वयमपि तथापरिणामात् बाह्यपौरुषप्रयत्नद्रव्यदंडादिभ्रमणकारणसंबंधापादितभ्रान्तिपर्यायं कुलालचक्रं विनिवृत्तेऽपि द्वितये भ्रमणकारणे भ्राम्यते च, तथैवात्र चिन्तानिरोधो यो ध्यानविशेषापादकस्तदभावेऽपि पूर्वप्रयोगात् ध्यानमिव ध्यानमिति सिद्धं। एवमयं असांपरायिकसद्भवस्थकेवली अलेश्यं पर्यायमवाप्नोति, अथ किमिदमलेश्यपर्याय इति, नास्मिन् लेश्याऽस्ति भवस्थकेवल्ययोगिपर्याय इति सोऽलेश्यः, तमवाप्यान्तर्मुहूर्तमवतिष्ठते, तस्य सद्वेद्येन सिध्यतश्चरमसमये सद्वेद्यं नश्यति, द्विचरमसमये असद्वेद्यं, तथा यद्यसद्वेद्येन सिध्यति ततोऽस्यासद्वेद्यं चरमसमये द्विचरमसमये सद्वेद्यं,असद्वेद्यस्य वेदयितत्वाद् दुःखजमिति चेत् न तत्कृतं दुःखं,तेनास्य सम्बन्धेऽपि दुःखाभावात्, कथं ?, क्षीरपूर्णे घटे यवमात्रनिम्बदलंप्रक्षेपेऽपि सति कटुकत्वाभावात्, तथा च सर्वप्राणिभ्योऽप्यनन्तगुणं सूक्ष्मसंपरायप्रविष्टक्षपकचरमसमयार्पितसद्वेद्यं वेदयतोऽस्य योऽसद्वेद्योदयः असद्वेद्यसत्कर्मसान्निध्यादापतति ततोऽन्यस्य दुःखं प्रपद्यत इति सिद्धं, तदेवमस्यायोगिनः असद्वेद्यदेवगत्यौदारिकवैक्रियकाहारकतैजसकार्मणशरीरसमचतुरस्रन्यग्रोधसातिकुब्जवामनहुंडसंस्थानौदारिकवैक्रियाहारकशरीरांगोपांगनिर्माणदेवगतिप्रायोग्यानुपूर्व्यौ वज्रर्षभनाराचअर्द्धनाराचकीलिकासंप्राप्तसृपाटिकासंहननवर्णगन्धर- ॥५७८॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता...........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णिः-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां ॥५७९॥

सस्पर्शागुरुलघूपघातपराघातोच्छ्वासप्रशस्तविहायोगत्यपर्याप्तप्रत्येकशरीरस्थिरास्थिरशुभाशुभदुर्भगसुस्वरानादेयायशःकीर्तिनीचैर्गोत्र- योग-निरोधः
संज्ञाः चत्वारिंशत् प्रकृतयो द्विचरमसमये व्युपरतक्रियानिवर्तिध्यानं ध्यायतोऽशेषतः संक्षीणाः, अथ सद्वेद्यमनुष्यायुर्मनुष्यग-
तिपञ्चेन्द्रियजातिमनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वीत्रसबादरपर्याप्तसुभगादेययशःकीर्तितीर्थकरोच्चैर्गोत्रसंज्ञास्त्रयोदश प्रकृतयः चरमसमये
संक्षीणाः, परिमितत्वादन्तर्मुहूर्तस्य भेदाभाव इति चेत् न, एकस्यान्तर्मुहूर्तस्यासंख्येयभेदप्रतिज्ञानात्, अतः केवलिन्यन्त-
र्मुहूर्तायुष्यपि यथोक्तभूयसामन्तर्मुहूर्तानां प्रसिद्धिरिति । ततो भावलेश्यापर्यायाद्धायां संक्षीणायां सर्वकर्मविप्रमुक्तः जलधरघनपटल-
निरोधविनिर्मुक्त इव चंद्रमा नीरुजो निरुपम एकसमयेन भवसमुद्रमुत्तीर्य सिध्यतीति । एत्थ गाथा—

णातूण वेदणिज्जं० ॥ ९-६८ ॥ ९५४ ॥ दंडकवाडे० ॥९-६९ ॥ ९५५ ॥ जह उल्ला० ॥ ९-७० ॥ ९५६ ॥
लाउय० ॥ ९-७१ ॥ ९५७ ॥ अण्णे पुण एत्थ पत्थावे एतं सामण्णेणं भणंति-जहा णेव्वाणं गंतुकामो जीवो कोपि समुद्घातं क-
रेति कोति णवि, समुद्घातेति को अत्थो ?, समो आयुषो कर्मणां उद्घातः समुद्घातः, सव्वे जीवपदेसे विसारेति, एवं सिग्घं
कम्मं खविज्जति तो समुग्घाओ, तं च कम्हि काले करेति?, मुहुत्तावसेसाउओ, अण्णे भणंति- जहण्णेणं अन्तोमुहुत्तं उक्कोसेण
छम्मासावसेसाउओ, एयं सुत्ते ण होति दिट्ठेल्लयं ॥ आउज्जति-उवयोगं गच्छति पढममेव अंतोमुहुत्तियमुदीरणावलिकायां क-
म्मपक्खेवाइरूवं परिस्पन्दनं गच्छतीत्यर्थः समुद्घातकरणकातुकामो। तत्थ गाथा—

णातूण वेदणिज्जं विसमं च समं करेति बंधणठितीहि य विसमं वेदणीज्जं अब्भहियं समं करेति आउगेणं, केण ?,
बंधणेहिं ठितीहि य, ठितीघाउयबंधट्ठितिकम्मस्स जावतियं आउतं सेसं जं, तंमि समये तत्तीयाओ आवलियाओ करेति जावतियं २ ॥५७९॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां ॥५८०॥

योग-निरोधः

समएणं कम्मं खवेति,सेसं समुग्घाते छुभति, एतान्निमित्तं समुग्घायकरणं ॥ कोति समुग्घातं कातूण सिज्झति, कोऽपि ण चेव समुग्घा-
तं करेति, जम्हा अगंतूण० ॥ समुग्घातो अट्ठसमयितो, तत्थ दारगाथा–दंड कवाडे मंथंतरे य०॥ पढमसमये सरीरपमाणं हेट्ठा-
हुत्तं उवरिहुत्तं च जाव लोगंतो ताव दंडं करेति, बितिए कवाडं एगओ वा, एगओ वा दिसं, पुव्वावरं वा उत्तरदाहिणं च, ततिए
मंथं, चउत्थे य ओवासंतराणि पूरेति, एवं तं वेदणिज्जं वेदिज्जति, जं आउगनामगोत्तेहिंतो अब्भतितं तं सडति, जथ-उल्ला साडी-
या० ॥ एत्थ सव्वो समुग्घातो विभासितव्वो, तत्थ समुग्घातस्स मणवइजोगे णत्थि, ततियचउत्थपंचमेसु अणाहारो भवति,
तत्थ समुग्घातगतेणं जं अतिरित्तं कंमं तं सव्वं खवितं, सेसगंपिहऽसारं कतं, जथा अग्गिस्स परिपेरंतेहिं जे तणा, एवं तेणं तं च कम्मं
सेसं जात्तिया आउस्स समया एत्तियाओ सेसकम्माणं आवलियाओ करेति, ततो समये समये एक्केकं वेदेति, ततो पडियागतो ति-
विहंपि जोगं जुंजति, वइजोगस्स सच्चाइ जोगं जुंजति, चउत्थं आमंतणमादी, मणेवि एते चेव जोगे दोण्णि, ते पुण किह होज्ज ?,
मणसा पुच्छेज्ज कोइ,तेसिं मणसा वागरेति,अणुत्तरो अण्णो वा देवमणुयो, कायजोगं गच्छेज्ज वा चिट्ठणट्ठाणणिसीयणतुयट्टणाणि,
गच्छणे उक्खेवणसंखेवणउल्लंघणपल्लंघणतिरियणिक्खेवणादीणि, पाडिहारियं वा पीठकादि पच्चप्पिणेज्जा,सो य सजोगी ण सिज्झति
ततो भगवं अचिन्त्येण ऐश्वर्येण योगनिरोधं करोति,सो पुव्विं संणिस्स पढमसमयपज्जत्तगस्स हेट्ठा जाणि मणपायोग्गाणि दव्वाणी
यं वा मण्णेति तेसिं ता संखेज्जाणि ठाणाणि पुव्विं अविसुद्धाणि थूलाणि य पच्छा विसुज्झमाणस्स सण्हतरगाणि विसुद्धतरगाणि
य, ततो सेढी आवलिगाओ ओसरंति, जहा विसपरिगयस्स पदेसपदेसेणं विसं ओसरइ एवं सोवि रुंभमाणाणि २ ताव ओसरति ॥५८०॥
जाव एगाए आवलियाए ठितो,जथा तलाए पढमं बिंदु ठितं, वड्ढमाणे भरियं,एवं सो ओसरणाओ ताव आणेति जाव जो से पढम-

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[१]

नमस्कार व्याख्यायां ॥५८१॥

योग-निरोधः

समए पज्जत्तगस्स मणो आसी, ततोवि ओसरति पच्छा अमणो भवति, एवं बेंदियस्सवि पज्जत्तगस्स वइजोगट्ठाणेसु णिरुंभित्ता जा वइयजोगी भवति, पच्छा सुहुमस्स पणगजीवस्स पढमसमयोववण्णगस्स जावतिया सरीरोगाहणा तावतियाए अप्पणगं कायजोगं हासेंते २ निरुंभंति, अण्णे पुण भणंति-तस्स पढमसमये चेव पणगस्स हेट्ठा असंखेज्जगुणं कायजोगं णिरुंभंतो णिरुंभए, तस्स किल वीरियावरणोदएणं भंदो जोगपरिप्फंदो तेण अप्पो कायजोगो भवइ, केवलिस्स पुण अंतराइयपरिक्खएणं अणुत्तरं निरावरणं जोगवीरियं, तेण अचिंतेण जोगसामत्थेणं जा सा केवलिस्स वीरियसदव्वयाए अणुवरतं पदेसपरिफुरणा तं एगिंदियजोगपप्फंदा ओसरेऊण णिरंतरं णिरुंभति, जाइं च से सरीरे कम्मणिव्वत्तियाइं मुहसवणसिरोदरादिछिद्दाइं ताणि वियोएमाणो २ तिभागूणं पदेसोगाहणं करोति, ताहे आणपाणुणिरोहं काउं अजोगी भवति। एवं सो योगत्रयनिरोहा सुक्कज्झाणस्स ततियभेयं सुहुमकिरियं अणियट्टिं अणुपविट्ठो करेति, पच्छा समुच्छिन्नकिरियं झाणं अणुप्पविट्ठो जावतिएणं कालेणं अतुरियं अविलंबितं ईसी पंचरहस्सक्खरा क ख ग घ ङ एते उच्चारिज्जंति एवतिकालं सेलेसिं पडिवज्जति, शैलेशी नाम 'शील समाधौ' 'ईस ऐश्वर्ये' शीले ईशस्तद्भावः शैलेशी, तस्सि काले परं शीलं भवति, अथवा शैलेश इव तस्मिन् काले निष्प्रकम्पः, नान्यत्र, परप्रयोगात्, सेव अलेसी सेलेसी, लेश्या णाम परिणामो २ परि समंता नामो, परिणामं लेस्सा, सा दुविहा-दव्वतो भावतो य, तत्थ वण्णादिगुणपरिणामो लेस्सा, ते वण्णादिणो द्रव्ये संश्लेषं परिणता तेणं सा दव्वलेसा, ते चेव द्रव्या जीवेनात्मसंश्लेषभावपरिणामतः शुभाशुभेण शुभाशुभा य लेश्या भवति, द्रव्यात्मगुणसंश्लेषपरिणामो भावलेश्या, ण तु दव्वपरिणामविरहिया भावलेस्सा भवति, सो य जहा पुव्वनिव्वत्तिएणं हत्थेणं पदीवं ॥५८१॥
गहाय अंधारए णयणविसयं फुडीकरेति, एवं सजोगी जीवो पुव्वणिवत्तिएण दव्वसंगेण अण्णेसिं दव्वाणं गहणं कातुं भावलेस्सा

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां ॥५८२॥

योग-निरोधः

परिणामो, एत्थ पुण जं एजति उट्ठति णहति एस जोगस्स विसओ भाणितव्वो, लेसासंजुत्तस्स पुण यो परिणामो एस अणादीओ वा अपज्जवसितो लेसापरिणामो, भणितं च-जोगेण पदेसग्गं कम्मस्स कसायओ य परिणामं। जाणाहि बज्झमाणं लेसं च ठितीविसेसं वा ॥ १ ॥ केवलिस्स पुण बाहिरदव्वग्गहणं भयणाए परपच्चयणिमित्तं वा होज्जा, सो णिच्चं सुद्ध-सुक्कलेसो अविदितअहक्खायचरणो होति, अजोगि पुण जोगनिरोहाणंतरं जो सो पंचक्खरुच्चारणकालो तं कालं बाहिरदव्वगहण-विरहितं पुव्वोपचितं दविंधणसावसेसजीवप्पदेसपरिणामगतं परमसलेस्सपरिणतो अजोगी सलेस्से भवति, ततो पच्छा करणवीरि-यणिरोहलद्धीवीरियसहितो अल्लेसी अंतोमुहुत्तं दव्वसंश्लेषविरहितजीवप्पदेसणिरुद्धं समुच्छिण्णकिरियं परमसुक्कं सुक्कस्स चउत्थं अंतिमं झाणभेदं झाति, तवज्झाणकम्मवक्खरणपुव्वप्पयोगेण कुलालचक्कवेगवद्धयति नौप्रेरणवत्, तंमि काले पुव्वरयितं आवलियगु-णसेढियं च णे कंमं तीसे सैलेसिमद्धाए असंखेज्जकंमंसे खवयंते वेदणिज्जाउयणामगोत्ताइं चत्तारि कम्मंसे एगसमएणं जुगवं खवेति, अंसो पच्छिमो भाओ एगेगस्स कम्मणो, ओरालितेयगकम्मगाणि सव्वाहिं विप्पजहणाहिं विप्पजहति, जो च्चेव कम्मज-हणासमयो स एव सरीराणं, सव्वविप्पजहणा णाम अंगोवंगबंधणसंघातसंठाणवण्णगंधरसफासा गहिया, पुव्वं मोत्तूण पुणोवि गेण्हति, संपइ अपुणागमा पमुक्काणि, णवणीतोदाहरणवद्, द्रव्यं सुवण्णधातू वा, जथा उज्जुसेढिपत्तो जत्तिए जीवो अवगाहे ॥५८२॥ तावतियाए अवगाहणाए उड्ढं उज्जुगं गच्छति, ण वंकं, अफुसमाणगती बितियं समयं ण फुसति, अहवा जेसु अवगाढो जे य फुसति उड्ढमवि गच्छमाणो ततिए चेव आगासपदेसे फुसेमाणो गच्छति, शरीरेऽपि ण ततोऽधिके परिपेरंतेण बहिं, एगसम-एणं अशरीरेणं अकुडिलेण वा उड्ढं गंता, न तिर्यग् अधो वा, भ्रमति वा, सागारोवउत्ते सिज्झति। तत्थ सिद्धे भवति सादीए, सव्वे

प्रत सूत्रांक [-] दीप अनुक्रम [१]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता...........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

नमस्कार व्याख्यायां ॥५८३॥

आलावगा भाणितव्वा। बितियदिट्ठंतो य। आह- कहं अकंमस्स गती पण्णायति ?, तत्थ गाथा—

लाउयएरंडफले० । ९—७१ ॥ ९५७ ॥ जहा पण्णत्तीए तहा विभासितव्वं, पूर्वप्रयोगा कुलालचद् भुवते, असंगत्वा-दलाबुकवत्, बन्धच्छेदात् बीजवत्, तथागतिपरिणामात्, नाधः गुरुत्वाभावात्, न ऊर्ध्वं, यावद्धर्मास्तिकायः गतिसद्भावात्, न पर-तस्तदभावात्। आह—

कहिं पडिहता सिद्धा ?० ॥ ९—७२ ॥ ९५८ ॥ उच्यते-अलोए पडिहया० ॥ ९—७३ ॥ ९५९ ॥ ईसी पब्भारा विभासितव्वा जधा पण्णवणाए। ईसीपब्भाराए० ॥ ९—७४ ॥ ९६० ॥ णिम्मलदगरय० । ९—७५ ॥ ९६१ ॥ एगा जोयण० । ९—७६ ॥ ९६२ ॥ बहुमज्झदेस० ॥ ९—७७ ॥ ९६३ ॥ गंतूण० । ९—७६ ॥ ९६४ ॥ ईसीपब्भा-राए० ॥ ९—७९ ॥ ९६५ ॥ उत्ताणओ व० । ९-८१ ॥ ९६७ ॥ दीहं वा हस्सं वा० । ९-८४ ॥ ९७० ॥ जे किर णिण्णा अब्भितरपविट्ठायपदेसा पदेसा पविशति, तेणं अंगस्स वा उवंगस्स वा जे संठाणविसेसा आसी ते सव्वे विभागरहिता होंति, समणिच्चयपदेसओ णिग्गुणेणं।

तिण्णि सता तेत्तीसा० ॥ ९-८५ ॥ ९७१ ॥ मरुदेविमादीण। चत्तारि य रयणीओ० ॥ ९-८६ ॥ ९७२ ॥ सत्तरत-णियाण। एगा य होति रयणी ए० ॥ ९-८७ ॥ ९७३ ॥ वामणकुम्मगसुयमादीयाण। ओगाहणाए सिद्धा भवत्तिभागेण० ॥ ९-८६ ॥ ९७४ ॥ जत्थ य एगो सिद्धो तत्थ य णंता उ० ॥ ९-८९ ॥ ९७५ ॥ अवरोप्परं जह- धम्माधम्मागासा ॥

सिद्धानामवगाहः सुखं च ॥५८३॥

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[१]

नमस्कार व्याख्यायां

॥५८४॥

फुसति अणन्ते० ॥ ९-९० ॥ ९७६ ॥ सरिसाए ओगाहणाए सरिसोगाहणओ अणंते,जे तेण देसपदेसेण पुट्ठा ते असंखेज्जगुणा, एगस्स सिद्धस्स एगेणं जविपदेसेणं अणंता पुट्ठा, सो य सिद्धो असंखेज्जपदेसो तेण तावइया असंखेज्जा रासी तेणं आदिट्ठएणं सव्वपदेसपुट्ठे एतेण भिज्जमाणा ॥

सिद्धानामवगाहः सुखं च

असरीरा० ॥ ९-९१ ॥ ९७७ ॥ केवलंमि लक्खणं भणितं- सागारा अणगारं । इदाणिं सुहं भण्णति—

णवि अत्थि माणु० ॥ ९-९२ ॥ ९८० ॥ सुरगण० ॥ ९-९५ ॥ ९८१ ॥ तीयवट्टमाणाणागयाणं देवाणं विसयसुहं असब्भावपट्ठवणाए घेत्तूण रासी कतो, सो अणंतगुणिते सिद्धस्स य एगस्स असरीरं सुहं गहियं, तं अणंताणंतभागीकयं, तस्स एगभागे णवि तुल्लं चेव सुहरासीसुहमिति, बितियं वा माणं- सुरगणसुहं समस्तं सव्वद्धापिंडितं एगम्मि आगासपदेसे छूढं तेणप्पमाणेणं सिद्धस्स सुहं भिज्जमाणं लोगालोगागासेवि ण माति एगस्स, णणु यदि णाम तं केवली विंदति तो किण्ण ओवम्मेणं दरिसिंति ?, भण्णति, णत्थि तस्स उवमाणं, किह णत्थि ?, जहा एगो महारण्णवासी मेच्छो रण्णे चिट्ठति, इओ य एगो य राया आसेण अवहरितो तं अडविं पवेसितो, तेण दिट्ठो, सक्कारेऊणं वंदिओ, रण्णावेसो णगरं(णीओ),पच्छा उवगारित्ति गाढमुवचरितो, जहा राया तह चिट्ठति धवलघरादिभोगेणं, विभासा, कालेणं रण्णं सरितुमारद्धो, रण्णा विसज्जितो, ततो रण्णिगा पुच्छन्ति- केरिसं णगरंति ?, सो वियाणंतोवि तत्थोवमाभावात् ण सक्कति णगरगुणे परिकहेतुं, एस दिट्ठंतो, अयमेत्थोवणओ, एवं सिद्धाणवि सोक्खस्स विसयसुहे ण उवमा, नत्थि सरीरावयवेरुदाहरणं, सो य मेच्छो जहा किंचिमेत्तेण डुंगरादीणि दावेत्ता पत्तियावेति, एवं इहइंपि किंचिमेत्तेण उदाहरणं क्रियते—

॥५८४॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां ॥५८५॥

आचार्य-नमस्कारः

जह सव्वकामगुणियं० ॥ ९-९९ ॥ ९८५ ॥ सव्वकामगुणितं णाम सव्वाभिलासणिव्वत्तगं, भोयणं णाम भुज्जत इति भोयणं- विसयं संसारोत्ति, तण्हाछुहाविमुक्को णाम णिरभिलासो णिरुओ य, जहा सो परमाणंदितो अमयतित्तोव्व।

इय सव्वकालतित्ता ॥ ९-१०० ॥ ९८६ ॥ सिद्धत्ति० ॥ ९-१०१ ॥ ९८७ ॥ फलमिदाणिं, जहा अरहंतेसु पुव्वं। आयरियाणं संखेवेण भणितं,जहा ते णमोक्काराारिहा,इदाणिं वित्थरेण भण्णति,आङ् मर्यादाभिविध्योः 'चरिर्गत्यर्थः'मर्यादया चरन्तीति आचार्याः, आचारेण वा चरंतीति आचार्याः, ते चतुव्विहा, णामट्ठवणाओ गताओ, द्रव्यभूतो वा द्रव्यनिमित्तं वा द्रव्यमेव वा दव्वं, आयारवंतं भन्नति अनायारवंतं च. नामनं प्रति तिणिसलया य एरंडो य, धावणं प्रति हारिद्दारागो किमिरागो य, वासणं प्रति कवेल्लुगा वइरं च, सिक्खावणं प्रति मदणसलागा वायसादी य; करणं प्रति सुवर्णं घंटालोहं च, अविरोधं प्रति खीरं सक्करा य, विरोधं प्रति तेल्लं दधि य, एवमादि, एत्थ गाथा- णामणधावणवासणसिक्खावणसुकरणाविरोधीणि। दव्वाणि जाणि लोए दव्वायारं वियाणेहि ॥ १ ॥ अहवा दव्वायरिओ तिविहो- एगभविओ बद्धाउओ अभिमुहणामगोत्तो, एगभविओ जो एगेणं भवेणं उववज्जिहि, णिबद्धाउओ उ जेण आउयं बद्धं, अभिमुहणामगोत्तो जेण पदेसा उच्छूढा, अहवा मूलगुणणिव्वत्तितो उत्तरगुणनिव्वत्तिओ य, सरीरं मूलगुणो चित्तकम्मादि उत्तरगुणो, अहवा जाणओ भविओ वतिरित्तो, मंगुवायगाणं समुद्दवायगाणं नागहत्थिवायगाणं जथासंखं आदेसो, भावायरिओ दुविहो- आगमतो णोआगमतो य, आगमतो तहेव, णोआगमतो दुविहो- लोइओ लोउत्तरो य, लोइतो सिप्पाणि चित्तकम्मादिसत्थाणि वइसेसियादि जो उपदिशति, उत्तरिओ जो पंचविधं णाणादियं आयारं आयरति पभासति य अण्णेसिं, आयरियाण आचरितव्यानि दर्शयति-एवं गंतव्वं एवमादि, तेण ते भावायरिया, तेसिं फलं तहेव ॥ ॥५८५॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां

॥५८६॥

उपाध्याय साधु नमस्कारः

इदाणिं उवज्झाओ जथा अरिहो तहा, वित्थरेणं भण्णति-तमुपेत्य शिष्टा अधीयन्त इत्युपाध्यायः, सो चउव्विहो, नामट्ठवणाओ गताओ, दव्वउवज्झाओ दव्वभूतो जहा लोइया अण्णतित्थिया य उवज्झाया, णिण्हगादी वा, भावे वा बारसंगो० ॥ ९-११५ ॥ ॥ १००१ ॥ बारसंगो- आयारादि जिणक्खातो- तित्थकरभासितो सज्झातो- सुतं कहितो बुधैः, बुधा-गणधरादी, तं उवदिशंति समीवत्थं, ते उवज्झायत्ति जम्हा तेण उवज्झाया वुच्चंति। उत्ति उवओगकरणे० ॥ ९-११६ ॥ १००२ ॥ उवत्ति उवयोगकरणे झायत्ति झाणस्स णिद्देसे, उवउत्तो झायतित्ति, एतेण कारणेण उवज्झातो उ एसो अण्णोऽवि पज्जाओ। अहवा एतं निरुत्तं उत्ति उवयोगकरणे वत्तिय पावपरिवज्जणे होति। झत्ति य झाणस्स कते ओत्ति य ओसक्कणा कम्मा ॥ १ ॥ १००३ ॥ उवओगपुव्वगं पावपरिवज्जणतो झाणाराहणेणं कंमं ओसरेतित्ति उवज्झाओ, एवमादिपर्यायाः उपाध्यायस्य, सेसं तहेव।

इदाणिं वित्थरेण साहुणमोक्कारो भण्णति- 'राध साध संसिद्धौ' साधयतीति साधुः, सो चतुव्विहो, णामट्ठवणाओ गताओ, दव्वसाहू घटद्रव्यं साधयतीति, एवं पटरहमादीणि, अहवा जो दव्वभूतो बोडिगणिण्हगादी वा दव्वसाहू, भावो- मोक्खो तं साधयतीति भावसाहू। तत्थ निरुत्तीगाहा--णिव्वाणसाहए० ॥ ९-१२४ ॥ १०१० ॥ आह-अरहंता सिद्धा आयरिया उवज्झाया य गुणाधिया ततो णमोक्कारकरणे अरिहा, समाणे गुणतवे संजमे अधिगयरे वा, किं साधूणं पणमसि ?, उच्यते-तहावि ते वंदनारिहा, जतो अतिशयगुणजुत्ता, तथा च- विसय० ॥ ९-१२६ ॥ १०१२ ॥ असहाये० ॥ ९-१२१ ॥ १०१३ ॥ फलं तहेव णमोक्कारे ॥ साहुणिरुत्तगाहाओ- सामायारिविहिण्णू संतिमाचारिया वरायारा। आयारमायरंता आयरिया तेण वुच्चंति

॥५८६॥

प्रत
सूत्रांक
[-]

दीप
अनुक्रम
[१]

नमस्कार व्याख्यायां ॥५८७॥

॥१॥ णायोवत्रण्णवक्खाण पहाणगुण सीससंगहकराणं । आयारदेसगाणं आयरियाणं णमो तेसिं ॥ २ ॥ णायोवदेसगाणं दुविहमव-ज्झायविप्पमुक्काणं । सततमुवज्झायाणं णमामि अज्झेण(ज्झप्प)सुद्धाणं ॥३॥ कायं वायं च मणं इंदियाइं च पंच दमयंति । धारंति पंचभारं संजमपत्ती कसाए य ॥ ४ ॥ एवमादि ॥

एवं एयेण णमोक्कारस्स वत्थुतो भणिया । इदानीं आक्षेपः, 'क्षिप प्रेरणे' मर्यादोपदिष्टमर्थं आक्षिपति न सम्यगेतदिति, किमाक्षिपति ?, आह- द्विविधमेव सूत्रं- यद्वा संक्षेपकं यद्वा विस्तारकं, संक्षेपकं सामाइकं, विस्तारकं चतुर्दश पूर्वाणि, एवमेष नमस्कारः नापि संक्षेपेनोपदिष्टः नापि विस्तरतः, एतावतोऽवरि कल्पना तृतीया नास्ति, नमो सिद्धाणंति णिव्वुया गहिया, णमो साहूणंति संसारत्था गहिया, एवं संखेवो, एत्थेगतरेणं कायव्वो, जेण ण कीरति तेण दुट्ठोत्ति आक्खेवो ॥दारं॥ इदाणिं पसिद्धी, संखेवेण मए णमोक्कारो कतो, गुणावलोयणेणं, ण तुमं जाणासि, कहं ?, अरहंता ताव णियमा साहू, साहू पुण सियऽरहंता सिय णो अरहंता, णमो साधूणंति णमोक्कारं करेंतेण जे साहूहिंतो अब्भहियगुणा अरहंता ण तेण ते पूइया होंति, विरुद्धकरेंतेणं अरहंता पूइया भवंति, साहूविय सद्धाणे, एवं आयरिए विभासा, उवज्झाए विभासा, एवमादि, एतेणं कारणेणं पंचविहो णमोक्कारो कीरइ जुत्तो, किं च- पुव्वं जे हेतू भणिया मग्गे अविप्पणासो आयार विणयता सहायत्तान्ति, अरहंतेहिंतो मग्गो सिद्धेहिंतो अविप्पणासो आयरिएहिंतो आयारो उवज्झाएहिंतो विणयो साहूहिंतो सहायत्तं, एतेणवि कारणेण पंचविहो णमोक्कारो जुत्तो, किं च- जं भणासि- न संखेवो न वित्थरोत्ति, तं ण सोभणंति, उक्तंच- संक्षेपोक्तं मतिं हंति, विस्तरोक्तं न गृह्यते । संक्षेपविस्तरौ हित्वा, वक्तव्यं यद्विवक्षितम् ॥ १ ॥

नमस्कारे आक्षेपादि ॥५८७॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां ॥५८८॥

नमस्कारे प्रयोजनादि

इदाणिं कमो, आह- एस णमोक्कारो णेव पुव्वाणुपुव्वी, णेव पच्छाणुपुव्वी, दुविहं च विहाणं, जं वा पुव्वाणुपुव्वी जं वा पच्छाणुपुव्वी, जहा- 'उसभमजियं' एवमादि पुव्वाणुपुव्वी, पच्छाणुपुव्वी वीरो पासो एवमादि । एवं णमोक्कारो पुव्वाणुपुव्वीए- णमो सिद्धाणं णमो अरहंताणं आयरिय०उवज्झाय०साहूणंति,जेणव तित्थंकरो चरित्तं पडिवज्जंतो सिद्धाणं पणमति, एवं पुव्वाणुपुव्वीए भवति, पच्छाणुपुव्वीए नमो सव्वसाहूणं उवज्झायाणं आयरियाणं अरहंताणं सिद्धाणंति, एवं करेंताण पसत्थो भवति, इयरहा विपरीतः ?, उच्यते, अणुपुव्वी एसा, ण य तुमं जाणसि, कहं ?, जेण अरहंताणं उवदेसेणं सिद्धा णज्जंति तेण उवदेसगत्ति पुव्विं कता, ततो सिद्धा गुरू, कमेण च सेसगावि , अविय- णवि लोए परिसं पुव्वं पणमिऊणं परिसणायओ पणमिज्जति, पुव्वं णायओ पच्छा परिसा, एवं जहा लोए तहा सत्थेऽवि । एवं पसाधियं पसिद्धिदारं ॥

आह- किं पयोयणं णमोक्कारं कीरति ?, पयोयणं णाम प्रयोज्यते येन तत्प्रयोजनं, अनन्तरकार्यमित्यर्थः, उच्यते- णाणावरणादिकम्मक्खयनिमित्तं, एकैकाक्षरोच्चारणे अनंतपुद्गलरसफड्डकघातसद्भावात्, मंगलं च होहिति महारिसीणं पणामेणंति, एस एव अम्हं सव्वसत्थाणं पुव्विं उच्चारिज्जति,जहा मरुयाण उंकारो जहा लोगे तहा लोउत्तरेवित्ति । दारं ॥ इदाणिं फलेत्ति दारं, 'फल निष्पत्तौ', किं निष्पादयति एषा नमस्कारस्मृतिः ?, उच्यते, इहलोइयं परलोइयं च फलं, इहलोइयं ताव अत्थावहो कामावहो आरोग्गावहो होति , अथ कामारोग्याः किं निष्पादयंति ?, उच्यते- अभिरतिः, परलोइओ सिद्धिगमणं वा देवलोगगमणं वा, सोभणे वा कुले आयाति, पुण बोहिलाभो वा एवमादि, इहलोगंमि तिडंडी० ॥ ९-१३८ ॥ १०२४ ॥ णमोक्कारो अत्थावहो कहंति ?, उदाहरणं, जथा— ॥५८८॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता...........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां ॥५८९॥

नमस्कार-फले त्रिदंड्यादि

एगस्स सावगस्स पुत्तो धम्मं न लएति, सो य सावओ कालगओ, सो विवाहितो, एवं चेव विहरति, अण्णदा तेसिं दारसमीपे परिव्वाओ आवासितो, सो तेण दारएण समं मित्तिगं करेति, अण्णदा सो परिव्वाओ तं दारगं भणति- जा णिरुवहतं अणाधमतगं आणेह जा ते इस्सरं करेमि, तेण गविट्ठं, लद्धं, उवबद्धओ मणुस्सो, आणितो, मसाणं णीओ, जं च तत्थ पाउग्गं, सोवि दारओ पिताए सिक्खावितो णमोक्कारं, जाहे बीभेसि ताहे णमोक्कारं करेज्जासित्ति, सो तस्स मतगस्स पुरतो ठवितो, मतगस्स य हत्थे असी दिण्णो, परिव्वाओ विज्जं परियत्तेति, वेतालो उट्ठेतुमारद्धो, सो दारओ भीओ णमोक्कारं परियट्टेति, सो वेतालो पडिओ, पुणो जवेति, पुणोवि उट्ठिओ, सुट्ठुतरागं परियट्टेति, तिदंडी पुच्छति- किंचि जाणसि ?, सो भणति- ण जाणामि, एवं सुचिरं वट्टति, वाणमंतरेण रुट्ठेण सो तिदंडी दोखंडो कतो, सुवण्णा खोडी जाता, अंगोवंगाणि से जुत्तगाणि, सव्वरत्तिं वूढं, ईसरो जाओ णमोक्कारफलेणं, जदि णमोक्कारो ण होंतो तो वेतालेण मारिज्जंतो, सोवण्णं जातं। एत्तो कामणिप्फत्तीए सादेव्वं, कहं ?, एगा साविया, तीसे भत्थारो मिच्छादिट्ठिओ अण्णं भज्जं आणेतुं मग्गति, तीसेच्चएणं ण लभति ससवत्तगं, चिंतेति- किह मारिज्जामित्ति, अण्णदा तेण कण्हसप्पो घडए छुभित्ता आणितो, संगोवितो, जिमितो भणति-आणेह पुप्फाणि अमुगघडए ठवियाणि, सा पविट्ठा, अंधकारंति णमोक्कारं करेति, जदि किंचिवि खाएज्जा तोवि मरंतीए णमोक्कारो ण णस्सिहिति, हत्थो छूढो, सप्पो देवताए अवहितो, पुप्फमाला साहिया, ताए गहिया, दिण्णा य, सो संभंतो चिंतेति-अण्णाणि, कहियं, गतो पेच्छति घडगं पुप्फगंधं, णवि एत्थ कोइ सप्पो, ताहे आउट्ठो पादपडितो सव्वं कहेति खामेति य, पच्छा सा चेव घरसामिणी जाता, एवं कामावहो ॥ ॥५८९॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां ॥५९०॥

आरोग्गाभिरतीए एगं णगरं णदितडे, खरकंमितेणं सरीरचितानिग्गतेण नदीए वुज्झंतं मातुलिंगं दिट्ठं, रायाए उवणीतं, सूयस्स हत्थे दिण्णं, पमाणेण य अतिरित्तं, वण्णेण य गंधेण य अतिरित्तं, तस्स मणुस्सस्स तुट्ठो, भोगा दिण्णा, राया भणति- अण्णं णदीए मग्गह जाव न लद्धं, पत्थयणं गहाय पुरिसा गया, दिट्ठो वणसंडो, जो गिण्हति फलाणि सो मरति, आगता, रण्णो कहियं भणति- अवस्सं मम आणेतव्वं, अक्खपडिया वच्चउ, एवं गता आणेंति, एगो पविट्ठो बाहिं उच्छुभति, अण्णे आणेंति, सो मरति, एवं कालो वच्चति, सावगस्स परिवाडी जाया, गओ तत्थ, चिंतेति-मा विराहितसामण्णो कोई होज्जाचि णिसीहियं णमोक्कारं करेंतो ढुक्कति, वाणमंतरस्स चिंता, संबुद्धो, वंदति, भणति- अहं तव तत्थेव साहरामि, गतो, रण्णो कहितो सब्भावो, तस्स ऊसीसए दिणे दिणे, एवं तेण जीतं अभिरती भोगा य लद्धा, जीविता णाम किं अण्णं आरोग्गं?, रायावि तुट्ठो॥ परलोए णमोक्कारस्स केण फलं पत्तं ? –

वसंतपुरे राया, गणिया साविया, चंडपिंगलेण चोरेण समं वसति, एवं कालो वच्चति, अण्णदा तेण रण्णो घरं हतं, हारो णीणितो, भीतेहिं संगोविज्जति, अण्णदा ऊजाणीयाए गमणं, सव्वाओ गणियाओ विभूसियाओ वच्चंति, तीए सव्वाओ अतिसतामित्ति हारो आविद्धो, जीसे देवीए सो हारो तीसे दासीए णाओ, रण्णो कहिओ य, केण समं वसती ?, कहेति, चंडपिंगलो गहितो, सूले भिण्णो, तीए चिंतियं- मम दोसेण मारिओत्ति सा से णमोक्कारं देति, भणति य- णिदाणं करेहि जथा एतस्सेव रण्णो पुत्तो पच्चायामि, कतं, अग्गमहिसीत उदरे पच्चायातो, दारओ जातो, सा से साविया कीलावणधाती जाता। अण्णदा चिंतेति- कालो समो गब्भस्स य मरणस्स य, होज्ज कदाइत्ति रमावेंति भणति-मा रोव चंडपिंगल! चंडपिंगलत्ति, संबुद्धो,

नमस्कार फले आरोग्यादि ॥५९०॥

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [१]

नमस्कार व्याख्यायां ॥५९१॥

राया मतो, सो राया जातो, सुचिरेण दोवि पव्वतियाणि। एवं सुकुलपच्चायाती तंमूलागं च सिद्धिगमणं ॥ अहवा बितियं उदाहरणं- महुरा णगरी, तत्थ सावओ सव्वजीवस्सरण्णो, तत्थ हुंडि चोरो णगरं मुसति, अण्णदा गहितो, सूले भिण्णो, पडियरह बितिगावि से णज्जिहिंति, पच्छण्णा माणुसा पडितरंति, सो सावओ तस्स अदूरवत्ती वयति, सो भणति- सावगा! तुमंसि अणुकंपओ, अहं तिसाइओमि, देहि मम पाणितं जा मरामी, सावओ भणति-इमं णमोक्कारं पढ जतो पाणितं आणेमि, जदि विस्सारेसि आणितंपि न देमि, सो ताए लोभयाए भणति, सावओ पाणितं गहाय आगतो, तं वेलं पाहामित्ति णमोक्कारं पढंतस्स विणिग्गतो जीवो, जक्खभवणे जक्खो जाओ, सो य सावओ तेहिं मणुस्सेहिं गहितो चोरभत्तदायगोत्ति, रण्णो णिवेदियं, भणति- एयंपि सूले भिंदथ, आघातणं णिज्जति, जक्खो ओधिं पउंजति, जाव सावगो य अप्पणो य सरीरं पेच्छति, ताहे पव्वयं उप्पाडेऊण णगरस्स ओप्पिं ठितो, ता तुब्भे मम एयं भट्टारकं ण जाणह?, खमावेह, मा से सव्वे चूरेहामी, ताहे खामेंति। देवणिसीयस्स पुव्वेण य से आयतणं कतं। एवं फलं भवति णमोकारेण परलोएवि।

नमस्कार फले आरोग्यादि

॥ इति नमोकारनिज्जुत्ती सम्मत्ता ॥

इदाणिं सुत्तं भणति—

नंदिमणुयोगदारं विहिवदुवघातियं च णातूण। कातूण पंचमंगलमारंभो होति सुत्तस्स॥ १० ॥ १ ॥ १०२८ ॥

कतपंचनमोक्कारो करेति सामाइयंति सोऽभिहितो। सामाइयंगमेव य जं सो सेसं तओ वुच्छं ॥१०॥२॥१२०६॥ ॥५९१॥

***अत्र नमस्कार-निर्युक्ति समाप्ता:

*** अत्र अध्ययनं -१- 'सामायिकं' आरभ्यते ***

प्रत सूत्रांक [१]

दीप अनुक्रम [२]

सामायिक व्याख्यायां ॥५९२॥

संहिता-पदादि

प्रागुपदिष्टं च--एत्थ य सुत्ताणुगमो सुत्तालावगनिप्फण्णो निक्खेवो सुत्तफासियनिज्जुत्ती समकं गमिष्यंतीति, तथात्र सामायिकसूत्रमुच्चारयितव्यं अक्खलितयं अमिलितं एते आलावगा जथा पेढियाए दव्वावस्सगे तहा विभासितव्वा जाव सामाइयपयं णोसामाइयपयं वा, तं च इमं 'करेमि भंते ! सामाइय' मिच्चादि, ततो तंमि उच्चारिते केसिंचि भगवंताणं केई अत्थाधिगारा अधिगता भवंति, केई पुण अणधिगता, ततो तेसिं अधिगमत्थं अणुयोगो, एवं च 'जिणपवयणउप्पत्ती' एसावि गाथा एत्थ गता भविस्सतित्ति, सो य अणुयोगो एवं-संहिता य पयं चेव, पयत्थो पदविग्गहो। चालना य पसिद्धी य, छव्विहं विद्धि लक्खणं ॥ १ ॥ तत्थ पुव्वं संहिता, संहितेति कोऽर्थः ?, पूर्वोत्तरपदयोः वर्णयोः परः संनिकर्षः संहिता, अक्खलियपयोच्चारणमित्यर्थः, तत्थ संहिता-'करेमि भंते ! सामाइयं, सव्वं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणसा वयसा कायसा न करेमि न कारवेमि करेंतमवि अण्णं ण समणुजाणामि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि' त्ति, एसा संहिता ॥

इदाणिं पदच्छेदो, करेमित्ति पदं भदंत इति पदं सामाइयंति पदं सव्वंति पदं सावज्जंति पदं जोगमिति पदं पच्चक्खामित्ति पदं जावज्जीवाएत्ति पदं तिविहंति पदं तिविहेणंति पदं मणसत्ति पदं वयसत्ति पदं कायसत्ति पदं ण करेमित्ति पदं न कारवेमित्ति पदं करेंतमण्णं ण समणुजाणामित्ति पदं तस्सत्ति पदं भदंत इति पदं पडिक्कमामित्ति पदं निंदामित्ति पदं गरिहामित्ति पदं अप्पाणंति पदं वोसिरामित्ति पदं ॥ इदाणिं पयत्थो, पद्यतेऽनेनार्थ इति पदं, गम्यते परिच्छिज्जते इतियावत्, एत्थ य आयरिया पदत्थमेवं वण्णयंति--यथा किर सव्वा अत्थसिद्धी सविसए जहासत्तीए पवित्तिनिव्वित्तीहिं दिट्ठा, अतो एत्थंपि मोक्खत्थमु- ॥५९२॥

*** सामायिक अध्ययने प्रथमं सूत्रम् "करेमि भन्ते" निर्दिश्यते

प्रत सूत्रांक [१]

दीप अनुक्रम [२]

सामायिक व्याख्यायां

॥५९३॥

ज्जुतो एवमब्भुवगमं दरिसेति, जथा--करेमि भंते ! सामाइयमित्यादि, तत्थ 'डुकृञ् करणे' तस्य गुणादौ कृते करोमीति भवति, करोमि अभ्युपगच्छामीत्यर्थः, भंतेत्ति भदंत भयान्त भवान्त इति पूज्यस्यामन्त्रणं, हे भदंत इत्यादि, सामायिकमिति णाणदंसणचरणाणि भावसमं तस्स आयः समाय इत्येतस्य इकण्प्रत्ययांतस्य नैरुक्तविधानेन सामायिकमिति भवति, तत्किमुक्तं ?- हे पूज्य ! ज्ञानदर्शनचारित्रलाभं अभ्युपगच्छामि, अनेन मोक्षसाधनज्ञानदर्शनचारित्रलाभविषयं प्रवृत्त्यभ्युपगमं दर्शयति, सर्वशब्दोऽत्रापरिशेषवाची, सावज्जमिति अवद्यं--गर्हितं मिच्छत्तं अण्णाणं अविरती सह अवद्येन सावद्यस्तं, कोऽसौ ?-योगः-व्यापार इत्यर्थस्तं, किमिति ?-पच्चक्खामित्ति पच्चक्खाणं करेमि, प्रतीपमाख्यानं प्रत्याख्यानं, ज्ञपरिज्ञया परिज्ञानं प्रत्याख्यानपरिज्ञया परिहरणमित्यर्थः, तत्किमुक्तं ?-अपरिशेषं मिथ्यात्वाज्ञानअविरतिसहचरितं व्यापारं ज्ञात्वा निवर्तयामीति, अनेन तु संसारकारणमिथ्यात्वाज्ञानाविरतिसहगतव्यापारविषयं निवृत्त्यभ्युपगमं दर्शयति, नणु सावज्जजोगो तिकालविसओ संखातीतभेदो यतो कहं तस्स निरवसेसस्स पच्चक्खाणं ?, अशक्यमित्यभिप्रायः, किं च-तथात्रिधेण करणेण कत्ता कज्जं साहेति, न तं विणा, तदपि संख्यातीतभेदं, कस्यचित्कार्यस्य किंचित्साधकतमं, तदत्र नियतभेदं किं तथाविधं करणमित्याह--जावज्जीवाए इत्यादि, अत्र जावज्जीवाएत्ति न करेमि न कारवेमि करेंतंपि अन्नं न समणुजाणामि इत्यत्र योज्यते, यावत् परिमाणमर्यादावधारणेषु, जीव प्राणधारणे, जीवनं जीवो यावन्मम जीवनं जीवनपरिमाणं-जीवनमर्यादां, जीवनमात्रमित्यर्थः, किं ?, संख्यातीतभेदमपि जाइभेयविवक्षया त्रिविधं-त्रिप्रकारं करणकारणानुमतिलक्षणं सावद्यं योगं, करणस्याप्यनेकविधत्वेऽपि तथैव त्रिविधेन त्रिप्रकारेण, करणेनेत्यर्थः, तेनाप्यस्य कार्यस्य प्रसाधकतमेनैव मणसा वयसा कायेण एते विभासितव्वा, एतेषामेकैकेनैव, अत एव मणसा वयसा

पदच्छेदः पदार्थश्च

॥५९३॥

प्रत सूत्रांक [१]

दीप अनुक्रम [२]

सामायिक व्याख्यायां ॥५९४॥

कायेणेत्यत्र भिन्नविभक्तिको निर्देशः, न करेमि आत्मना न कारवेमि परैः करेंतंपि अण्णं न समणुजाणामि, अपिशब्दात्कारवेंतमवि समणुजाणंतमवि अण्णं ण समणुजाणामि, अन्यग्रहणात् एव अन्यपरंपरयापीति, तत्किमुक्तं ?-वर्तमानसमयादारभ्य यावन्मरणकाल एतावंतं कालं यावत्सावद्यं योगं करणकारणअनुमतिभेदात् त्रिप्रकारं त्रिविधेन करणेनानेनैवास्य प्रसाधकेन मनोवचनकायरूपेण एकैकेन न करेमि न कारयामि करेंतंपि अण्णं ण समणुजाणामीति, यश्चातीतकालविषयः **तस्स पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि, पडिक्कमामित्ति** प्रतीपं क्रमामि प्रतिनिवृत्ते **वोसरामीतियावत्** 'निंदा आत्मसंतापे' 'गर्हा प्रकाशने' आत्मसाक्षिकी निंदा, परसाक्षिकी गर्हा, तत्कोऽर्थः ?-योऽतीतकालविषयः त्रिविधः सावद्ययोगस्तस्मात् त्रिविधेन करणेन पडिनियत्तामि, तमेव चात्मसाक्षिकं निंदामि परसाक्षिकं गर्हामीति, अपराधपदविशुद्ध्यर्थं चात्मानं वोसिरामित्ति, अयमभिप्रायः-एवमपि यदा आत्मानं अपराधपदेहिं अविसुद्धं संभावयामि तदा अधारिहं पायच्छित्तं पडिवज्जामि, न तुण आतपडिबंधेण तं न पडिवज्जामि, अतो आतपडिबंधपरिहारेण पायच्छित्तपडिवत्तीए आलावो सिद्धो चेव भवतित्ति अप्पाणं वोसिरामीत्याह, अनेन च यथा शक्तिर्दर्शिता भवतीति पदार्थः । अण्णे पुण एत्थ केयी अवयवा अण्णधा संपवयंति वण्णयंति य, जथा किर करेमि भंते! सामाइयं तिविहं- नाणदंसणचरणभेदेणं, सव्वं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि तिविहं, मिच्छत्तअन्नाणअविरतिसहगतत्वात्सोऽपि त्रिविधः, मणवयकाययावारभेदेण वा तिविधो, तिविधेण मणसा करणकारणाणुमतिपवत्तेण, एवं वयसा कायेणवि, सामाइयं करेमि सावज्जं जोगं पच्चक्खामि । सेसं पूर्ववत् ॥ अण्णे पुण-करेमि भंते ! सामाइयं जावज्जीवाए, सव्वं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि जावज्जीवाए, कहं ?, तिविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए कायेणं, वट्टमाणसमयादारभ्य जावज्जीवाए न करेमि जाव न समणुजाणामि, पुव्वकतस्स

पदार्थः ॥५९४॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता..........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

प्रत सूत्रांक [१]

दीप अनुक्रम [२]

सामायिक व्याख्यायां ||५९५||

पुण पडिक्कमामि जाव गरिहामि एवं संबंधयंति, शेषं पूर्ववत् । एवमाद्यन्यथाऽपि दृश्यते । एष पदार्थः, पदविग्रहो यत्र संभवति तत्र वक्तव्यः । इदानीं **सुत्तफासियनिज्जुत्ती** जा एतं सुत्तं अणुफुसतित्ति भणित्ता ततो पच्छा चालणा भण्णिहिति, एत्थ इमा सुत्तफासिए गाथा—

करण- निरूपणं

करणे भए य अंते सामाइय सव्वए य वज्जे य । जोए पच्चक्खाणे जावज्जीवाए तिविहेणं ॥१०॥४॥१०२८॥

एसा गाथा विभासितव्वा, तत्थ करणं छव्विहं, नामकरणं ठवणा० दव्व० खेत्त० काल० भावकरणं, तत्थ नामट्ठवणाओ गताओ,जाणगसरीरभवियसरीरवातिरित्तं दव्वकरणं दुविहं-सण्णाकरणं च णोसण्णाकरणं च, सण्णाकरणं अणेगविहं- जंमि जंमि दव्वे करणसंज्ञा भवति तं सण्णाकरणं, जथा- कडकरणं अट्ठकरणं पेलुकरणं एवमादि, णोसण्णाकरणं दुविहं-वीससाकरणं पयोगकरणं च, विगत ससना विससा, विगतप्रयोगकरणमित्यर्थः, तं दुविहं- अणादीयं सादीयं च, अणादीयं जथा धम्माधम्मागासादीणं, तेसु का करणविही ?, उच्यते- परप्रत्ययादुपचारतः करणं, अहवा धम्माधम्मागासाण य अण्णमण्णगमणं तं अणादीयं वीससाकरणं, अहवा धंमादीण य भवणं, एयं अणादीयं वीससाकरणं, सादीयं दुविहं- चक्खुफासियं अचक्खुफासियं च, चक्खुफासियं अब्भा अब्भरुक्खा एवमादि, चक्षुषा यन्न स्पृश्यते तदचक्षुःस्पर्शिकं, जथा परमाणुपोग्गलाणं दुपदेशियाणं तिपदेशियाणं एवमादीणं, एतेसिं जं संघातेणं भेदेणं संघातभेदेण वा करणं उप्पज्जति तन्न दीसति छउमत्थेणं तेण अचक्खुफासियं, बादरपरिणतस्स पुण अणंतपदेसियस्स चक्खुफासियं भवति । पयोगकरणं दुविहं- जीवपयोगकरणं अजीवपयोगकरणं च, जीवपयोगकरणं दुविहं- मूलपयोगकरणं च उत्तरपयोगकरणं च, मूलं नाम मूलमादिरित्यनर्थान्तरं, मूले पंच सरीराणि ओरालियादीणि, उत्तरपयो- ||५९५||

प्रत सूत्रांक [१]

दीप अनुक्रम [२]

सामायिक व्याख्यायां ॥५९६॥

करण-निरूपणं

गकरणं नाम जं निप्फण्णातो उत्तरं निप्पज्जति, तं एतेसिं चेव ओरालियवेउव्वियआहारगाणं तिण्हाण उत्तरकरणं, सेसाणं णत्थि, एतं अट्ठविहं करणं। अहवा मूलकरणं अट्ठंगाणि, अंगोवंगाणि उवंगाणि य उत्तरकरणं, ताणि जथा- सीस १ सुरो २ दर ३ पट्ठी ४ बाहाओ दोण्णि ६ ऊरुया दोण्णि ८। एते अट्ठंगा खलु अंगोवंगाणि सेसाणि ॥१॥ १६० भा.। होंति उवंगा अंगुलि कण्णा नासा य पजणणं चेव। णहदंतकेसमंसू अंगोवंगेवमादीणि ॥ २ ॥ अहवा इमं उत्तरकरणं- दंतरागो कण्णवड्ढणं नहकेसरागो, एतं ओरालियवेउव्वियाणं, आहारए णत्थि एताणि, आहारगस्स पुण गमणादीणि, एस पुण विसेसो- ओरालियस्स चेव उत्तरकरणं विसेणं ओसहेण वा पंचण्हं इंदियाणं विणट्ठाण वा पुणो करणं निरुवहताण वा विणासणं, एवमादि। तत्थ पुण ओरालियवेउव्वियआहारगाणं तिण्हं तिविहं करणं- संघातकरणं परिसाडणकरणं संघातपरिसाडकरणं, उवरिल्लाणं दोण्हं सरीराणं संघातणा णत्थि, उवरिल्लाणि दो अत्थि, एताणि तिण्णिवि करणाणि कालतो मग्गिज्जंति--ओरालियसंघातकरणं एगसमयं, जं पढमसमयोववण्णस्स, जथा तेल्ले ओगाहिमओ छूढो तप्पढमताए आययति, एवं जीवोऽवि उववज्जंतो पढमे समये गेण्हति ओरालियपाओग्गाणि दव्वाणि, न पुण मुंचति किंचिवि, पडिसाडणा जहण्णेणं समयो उक्कोसेणवि समयो, मरणकालसमए एगंतसो मुयति, न गेण्हति, मज्झिमे काले किंचि गेण्हति किंचि मुयति, जहण्णेणं खुड्डगं भवग्गहणं तिसमयूणं, तिसमयूणं कहं ?, दो विग्गहंमि समया समयो संघातणाए तेहूणं। खुड्डागभवग्गहणं सव्वजहण्णो ठितीकालो ॥ ४ ॥ उक्कोसेणं तिण्णि पलितोवमाइं समयूणाणि, कहं ?, उक्कोसो समयूणो जो सो संघातणासमयहीणो। किह न दुसमयविहीणो साडणसमएऽवणीतंमि ? ॥ ५ ॥ भण्णंति- भवचरिमंमि बिसमये संघातणपरिसाडणं चेव। परभवसमते साडणमतो तदूणो न कालोत्ति ॥ ६ ॥ जदि परपढमे साडो ॥५९६॥

प्रत सूत्रांक [१]

दीप अनुक्रम [२]

सामायिक व्याख्यायां ॥५९७॥

करण-निरूपणं

निव्विग्गहतो य तंमि संघातो । णणु सव्वसाडसंघातणा उ समये विरुद्धाओ ॥७॥ आ० जम्हा विगच्छमाणं विगतं उप्पज्जमाण-
मुप्पण्णं । तो परभवादिसमये मोक्खादाणाणमविरोहो ॥ ८ ॥ चुतिसमये णेहभवो इहदेहविमोक्खतो जथातीते । जदि परह-
वोवि न तहिं तो सो को होतु संसारी ? ॥ ९ ॥ णणु जह विग्गहकाले देहाभावेवि परभवग्गहणं । तह देहाभावंमी होज्जेहभवोवि
को दोसो ? ॥१०॥ आ०-जंपिय विग्गहकाले देहाभावेवि तो परभवो सो । चुतिसमएवि ण देहो ण विग्गहो जदि स को होतु ?
॥ ११ ॥ अंतरं- ओरालियसंघातकरणस्स जहण्णेणं खुड्डागभवग्गहणं तिसमयूणं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाणि पुव्वकोडि-
समयाधियाणि, सव्वसाडस्स जहण्णेणं खुड्डागं भवग्गहणं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं पुव्वकोडिअहिताइं । कहं ?, संघातं-
तरकालो जहण्णतो खुड्डयं तिसमयूणं । दो विग्गहंमि समया ततिओ संघातणासमयो ॥ १२ ॥ तेहूणं खुड्डभवं धरित्तु परभवमवि-
ग्गहेणेव । गंतूण पढमसमये संघातयतो स विण्णेयो ॥ १३ ॥ उक्कोसेणं तेत्तीस समयाधिय पुव्वकोडि अधियाइं । दो सागरो-
वमाइं अविग्गहेणेह संघातं ॥१४॥ कातूण पुव्वकोडिं धरिउं सुरजेट्ठमातुयं तत्तो । भोत्तूण इहं ततिए समए संघातयंतस्स ॥१५॥
सव्वसाडस्स कहं- खुड्डागभवग्गहणं जहण्णमुक्कोसयं च तेत्तीसं । तं सागरोवमाइं संपुण्णा पुव्वकोडी य ॥ १६ ॥ इहाणंतरातीत-
भवचरिमसमये ओरालियसरीरसव्वसाडं कातूण खुड्डागभवग्गहणिएसु उववण्णो, तस्स पज्जंते सव्वसाडं करेति, ततो खुड्डागभव-
ग्गहणमेव भवति, उक्कोसेणं पुण कोइ ओरालियसव्वसाडं कातूण तेत्तीससागरोवमट्ठितीएसु वेउव्विएसु उववण्णो, पच्छा तओ ॥५९७॥
पुव्वकोडाउएसु ओरालियसरीरिसु उववण्णो, पुव्वकोडिअंते ओरालियसव्वसाडं करेतित्ति । इदाणिं उभयस्स अंतरं--जहण्णेण
एक्कं समयं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाणि समयाधियाणि, कहं ?- उभयंतरं जहण्णं समयो निव्विग्गहेण संघाते । परमं सति-

प्रत सूत्रांक [१]

दीप अनुक्रम [२]

सामायिक व्याख्यायां ॥५९८॥

समयाइं तेत्तीसं उदधिनामाइं ॥ १७ ॥ अणुभवितुं देवादिसु तेत्तीसमिहागतस्स ततियंमि । समए संघातयतो णेयाइं समयकुस- | करण-निरूपणं
लेहि ॥१८॥ न्ति । वेउव्वियसंघातो जहण्णेण समओ उक्कोसेण दोण्णि समया, विउव्वमाणस्स अणगारस्स पढमे समए मरणं जातं देवेसु उववण्णो, तत्थवि पढमे समए संघातेति एस बितितोत्ति, परिसाडणा जहेव ओरालिए, संघातपरिसाडणा जहण्णेणं दस वाससहस्साइं तिसमयऊणाइं, एवं- ताव देवनारगेसु तिरियमणुएसु पत्थडं पडुच्च एगं समयं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं समउणाइं, कहं ?, उभयं जहण्ण समओ सो पुण दुसमय विउव्वियमयस्स । परमयराइं संघातसमयहीणाइं तेत्तीसं ॥१९॥ अंतरं सव्वबंधंतरं जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं अणंतं कालं अणंताओ जाव आवलियाए असंखेज्जतिभागे, कहं ? संघातंतरसमओ समयविउव्वियमयस्स ततियंमि । सो दिवि संघातयतो ततिए व मयस्स ततियंमि ॥ २० ॥ अविग्गहेण संघातयतो बितिओ संघातपरिसाडसमओ चेव अंतरं, उक्कोसं पुण वणस्सइकालो । एवं देसबंधतरंपि, साडस्स पुण जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं एवं चेव, कहं ?- उभयस्स चिरविउव्वियमयस्स देवे सविग्गहवतस्स । साडस्संतमुहुत्तं तिण्हवि तरुकालमुक्कोसत्ति ॥ २१ ॥ आहारगतस्स संघातो समओ, परिसाडणा जथा ओरालिए, संघातपरिसाडणा जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं, अंतरं सव्वबंधंतरं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अणंतं कालं अणंताओ उस्सप्पिणीओसप्पिणीओ कालओ,खेत्तओ अवड्ढं पोग्गल-परियट्टं देसूणं, एवं देसबंधन्तरंपि साडबंधन्तरंपीति । तेयगकम्मगाणं परिसाडणाय संघातपरिसाडणाए-तेयगसरीरं, जे कम्मत्ताए पोग्गले गेण्हति तेयगसरीरेण उण्हवेति ततो संघातं गच्छति, अयस्पिण्डवत् , एवं तेयगसरीरगं, अहवा जा सरीरुम्हा तेयगलद्धी वा, कम्मगसरीरं णाम अट्ठविहं कम्मं, कालो अणातीओ वा अपज्जवसितो अभवियाणं, अणातीओ वा सपज्जवसितो भवियाणं, ॥५९८॥

प्रत
सूत्रांक
[१]

दीप
अनुक्रम
[२]

सामायिक व्याख्यायां

॥५९९॥

परिसाडणा तहेव समयो भवति, दोण्हवि अंतरं नत्थि, एतेसिं दोण्हवि अंगोवंगा णत्थि, अहवा तदंतर्गता एव तेजसकार्मका जीवप्पयोगकरणं, जतो जीवेण पयोगसा आत्मसात् नीयंते, आए वेइति। अहवा इमं जीवप्पयोगेणं निव्वत्तियं चउव्विहं करणं- संघातणाकरणं परिसाडणाकरणं संघातपरिसाडणाकरणं णेव संघातो णेव परिसाडो णोसंघातपरिसाडणाकरणं, जथा पडो संखो सगडं थूणत्ति यथासंख्यं, पडो संघातितो, संखो परिसाडेत्तूण घट्टितो, सगडं संघातपरिसाडणेण निव्वत्तियं, थूणा उभयनिसेहेण उद्धीकता, एवं वितिरिच्छीकता , एवमादि विभासा । अजीवपयोगकरणं अजीवे पयोगेण किरति जथा वण्णकरणाति जं वण्णं कुसुंभचित्तकारकादीण, एवं गंधरसफासावि विभासितव्वा । एतं दव्वकरणं ।

करण-निरूपणं

खेत्तकरणं खेत्तं आगासं तस्स किर करणं णत्थि, तहवि वंजणपरियावण्णं, जम्हा ण विणा खेत्तेण करणं कीरति, अहवा खेत्तस्सेव करणं खेत्तकरणं, वंजणपरियावण्णं नाम जं खेत्तंति अभिलप्पति, तंजहा-उच्छुखेत्तकरणमादी य, सालिखेत्तकरणं तिल-खेत्तकरणं एवमादि, अहवा जंमि खेत्ते करणं करेति वंणिज्जति वा । कालकरणं कालोऽवि अकित्तिमो, तथावि तस्स वंजणपरिया-वण्णं जं जावतिएण कालेण कीरति जंमि वा वंणिज्जति एवं ओहेण, णामओ पुण इमे एक्कारस करणा, तत्थ य गाथाओ-कालो जो जावतितो जं कीरति जंमि जंमि कालंमि । ओहेण णामओ पुण इमे उ एक्कारसकरणा ॥ १ ॥ बवं च बालवं चेव, कोलवं थी-विलोयणं। गरादि वणियं चेव, विट्ठी हवति सत्तमा ॥ २ ॥ सउणि चउप्पयनागं, किन्छुग्घं करणं तथा। चत्तारि धुवा एते, सेसा ॥५९९॥
करणा चरा सत्त ॥ २ ॥ किण्हचउद्दसिरत्तिं सउणिं पडिवज्जती सया करणं । एत्तो अहक्कमं खलु चउप्पयं नाग किन्छुग्घं ॥ ३ ॥
सुचराष्टदिवैकरपूर्णदिवा, कृतरासदिवादरभूतदिवा। यदि चन्द्रगतिश्च तिथिश्च समा, इति त्रिष्टिगुणं प्रवदन्ति बुधाः ॥४॥ पक्खातिहओ

सामायिक व्याख्यायां ||६००|| — करण-निरूपणं

दुगुणिया दुरूवरहिता य सुक्कपक्खंमि । सत्तहिते देवसियं तं चिय रूवाहितं रत्तिं ॥ ५ ॥ किण्हे दुरूवहीणा न कातव्वा, जे गता पक्षतिहयो वट्टमाणतिहिणा सह सत्तण्हं चलाण करणाण वत्तव्वता स सत्तहिं भागे हिते जं सेसं तं करणं, णो जं लद्धं तं कालकरणं ।

भावकरणं दुविहं-जीवभावकरणं च अजीवभावकरणं च, अजीवभावकरणं वण्णादी णेतव्वं, जीवभावकरणं दुविहं-सुतकरणं च नोसुतकरणं च, सुतकरणं दुविहं-लोइयं च लोउत्तरियं च, एक्केक्कं दुविहं-बद्धं अबद्धं च, बद्धं णाम जत्थ सत्थेसु उवणिबंधो अत्थि । अबद्धं जं एयं चेव विपरीतमिति, नत्थि उवणिबंधो। तत्थ बद्धसुतस्स करणं दुविहं-सद्दकरणं निसीहकरणं च, सद्दकरणं नाम जं सद्देहिं पगडत्थं कीरति, न पुण गोवितं, संकेतितं, जथा उप्पाएति वा भूतेति वा विगतेति वा परिणतेति वा उदात्ता अनुदात्ताः प्लुताश्च, निसीहं जं पच्छण्णं गोवितं संकेतितं, तत्थ सुत्ते अत्थे तदुभए य, जथा निसीहणामं अज्झयणं भवति, अहवा जथा अग्गेणीते विरिते अत्थिणत्थिप्पवायपुव्वे य पाढो-जत्थ एगो दीवायणो भुंजति तत्थ दीवायणसयं भुंजति जत्थ सयं दीवायणा भुंजंति तत्थ एगो दीवायणो भुंजति, एवं हंमइत्ति जाव तत्थ एगो दीवायणो हम्मति। सेत्तं बद्धकरणं, लोतियअबद्धकरणं बत्तीसं अड्डिताओ बत्तीसं पच्चड्डियाओ सोलस करणाणि, लोगप्पवाए वा एत्थ छट्ठाणाणि, तंजहा-विसाहं समपदं मंडलं आलीढं पच्चालीढं, दाहिणं पादं अग्गतोहुत्तं कातुं वामपादं पच्छओ हुत्ता ओसारेति, अंतरं दोण्हवि पादाणं पंच पदा, एयं आलीढं, एतं चेव विपरीतं ||६००|| पच्चालीढं, वइसाहं पण्हीओ अभिन्तराहुन्तीओ समसेढीओ करेति, अग्गिमतला बाहिरहुत्ता, मंडलं दोवि पादे दाहिणवामहुत्ते ओसारेत्ता ऊरुणावि आउण्टावेति जथा मंडलं भवति, अंतरं चत्तारि पादा, समपदं दोवि पादे समं णिरंतरं ठवेति, एताणि पंच

प्रत सूत्रांक [१]

दीप अनुक्रम [२]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता...........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

सामायिक व्याख्यायां

॥६०१॥

कृताकृतादिनिरूपणं

ठाणाणि, लोगप्पवादे सयणकरणं छट्ठं ठाणं। अरिहप्पवयणे पंच आदेससताणि, तत्थ एगं मरुदेवा, णवि अंगे णवि उवंगे पाठो अत्थि एवं- मरुदेवा अणादिवणस्सइकाइया अणंतरं उव्वट्टित्ता सिद्धत्ति, तहा सयंभूरमणमच्छाण पउमपत्ताण य सव्वसंठाणाणि णलयसंठाणं वलयसंठाणं मोत्तुं, करडकुरडा य कुणालाए, एते जथा भणामि-करडुकरडाण निद्धमणमूली वसही, देवयाणुकंपणं, रुट्ठेसु पन्नरसदिवसवरिसणं, कुणालाणगरिविणासो, ततो ततियवरिसे साएए नगरे दोण्हवि कालकरणं, अहे सत्तमपुढविकालनरगगमणं, कुणालानगरिविणासकालाओ तेरसमे वरिसे महावीरस्स केवलनाणुप्पत्ती, एतं अबद्धं, एतं सुतकरणं ॥ णोसुतकरणं दुविहं-गुणकरणं च जुंजणाकरणं च, गुणकरणं दुविहं-तवकरणं च संजमकरणं च, दोन्नि विभासितव्वा जहा ओहनिज्जुत्तीए। जुंजणाकरणं तिविहं-मणजुंजणाकरणं वयजुंजणाकरणं कायजुंजणाकरणं, मणो सच्चादी ४, एवं वयीवि ४, कायो सत्तविधो ओरालियादि ॥

एत्थ कतरेणं करणेण अहिगारो ?, भावकरणेणं, तत्थवि सुतकरणेणं, तत्थवि सद्दकरणेणं, नोसुतेवि गुणकरणेणं, जुंजणाएवि जहासंभवं विभासेज्जा। तं इमाए पाहुडियाए अणुगंतव्वं। जथा-कताकतं १ केण कतं २ केसु व दव्वेसु कीरती ३ वावि। काहे व कारओ ४ णयतो ५ करणं कतिविहं ६ व कहं ७ ॥१०२९॥ ति, ग्रा इति सत्तपदा, तत्थ सामाइयं कतं कज्जति?, एत्थ नएहिं मग्गणा, जथा नमोक्कारे उप्पण्णाणुप्पण्णो, जदि उप्पण्णो कतस्स करणं नत्थि, अणुप्पण्णेऽवि ससविसाणादीणं जह नमोक्कारे, दारं। केण कतं सामाइयं ?, अर्थं समाश्रित्य जिनवरैः, सुत्तं गुणहरेहिं। केसु दव्वेसु कीरति सामाइयं ?, तत्थ णेगमस्स उट्ठाणेणं बलेणं वीरिएणं पुरिसक्कारपरक्कमेणं मणुण्णेसु य दव्वेसु, जथा-मणुण्णं भोयणं भोच्चा, मणुण्णं सयणासणं। मणु-

॥६०१॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता...........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

प्रत सूत्रांक [१]

दीप अनुक्रम [२]

सामायिक व्याख्यायां ||६०२|| | कृताकृता-दिनिरूपणं

ण्णंसि अगारंसि, मणुण्णं झायते मुणी ॥१॥ एवं णेगमो इच्छति, संगहादीया सेसा सव्वदव्वेसु, नो सव्वपज्जवेसु, जेण दव्वाण केइ पज्जवा सुभा केसि असुभा, सामाइयं च सुभपज्जवेसु कीरति, णो असुभपज्जवेसु, दव्वाणि पुण परिणामवसेणं सुभा असुभावि भवंति, सव्वदव्वाणिवि असुभपरिणामिहोतूण सुभपरिणामानि भवंति, दुगंधावि पुग्गला सुगंधत्ता परिणमंतीत्यादिवचनात्। दारं

काहे व कारओ भवति ?, एत्थ णयमग्गणा णेगमस्स उद्दिट्ठे सामाइए पढउ वा मा वा पढतु करेतु मा वा करेतु कारओ चेव, संगहववहाराणं वंदणगं दातूणं निव्विट्ठो गुरुपादमूले पढतु वा मा वा पढतु करेतु वा मा वा करेउ , कारतु चेव, उज्जुसुतस्स अपुव्वे सामाइयपज्जवे समए समए अक्कममाणस्स उवउत्तस्स वा सामाइयं भवति, अण्णे भणंति-तदा णो सामाइयं भवति, सम्मत्ते सामाइयं, तिण्हं सद्दणयाणं अपुव्वे सामाइयं, पज्जवे समए समए अक्कममाणस्स नियमा संमद्दिट्ठिस्स उवउत्तस्स नो सामाइयं, संमत्ते कारओ सामाइयस्स। एते चेव नया, अहवा इमं अट्ठविहं नेयाइयं लक्खणं , तंजथा—

आलोयणा य विणए खेत्त दिसाभिग्गहे य काले य। रिक्खगुणसंपदावि य अभिवाहारे य अट्ठमए॥ १० ॥ ४३ ॥

न्यायेन चरतीति नैयायिकः,एवंगुणसंपन्नाय एभिः प्रकारैः,एवं आलोइयपडिक्कंतस्स जो सामाइयं देति सो नायकारी नायवादी भवति, सा आलोयणा दुविहा- गिहत्थालोयणा संजतालोयणा य, गिहत्थे का आलोयणा ?, परिक्खिज्जति अरिहो सामाइयस्स अणारिहोत्ति, तत्थ गाथा- अट्ठारस पुरिसेसुं वीस इत्थीसु दस नपुंसेसु। पव्वावणाइ अणारिहा०, कातुं अरिहातु वा ?, विवरीतं, संजतस्स का ?, उवसंपदा, सामाइयस्स अत्थनिमित्तं उवसंपज्जति सो आलोयाविज्जति, अहवा अणागतकालअत्थं सूएति, ||६०२||

प्रत सूत्रांक [१]

दीप अनुक्रम [२]

सामायिक व्याख्यायां ॥६०३॥

कृताकृतादिनिरूपणं ॥६०३॥

जथा होहिंति ते मणूसा जेसिं सामाइयस्स सुत्तनिमित्तं उवसंपदा होहिति, से य अद्धपाढितेवि संजता चेव, जुगमासज्ज तेसिं सोधीकए भविस्सति, जो जत्तियं जाणति सो तावतिएणं पडिक्कमति जाव न समाणेति, जथा पुव्वं सामाइयं चोद्दसहिं पुव्वेहिं विभासिज्जति, संपति थोवेणं, तथावि उवसंपज्जिज्जति, एवं एस्सेऽवि काले होहिति, सा य सामाइयस्स तिण्हं निमित्तं उवसंपज्जिज्जति- सुत्तस्स अत्थस्स उभयस्स इति, सो चउव्विहं सोधिं करेति- दव्वातियारस्स खेत्त० काल० भावतियारस्सत्ति, पायच्छित्तं दिज्जति, दव्वं चेतणमचेतणं वा, खेत्ततो जणवतं वा अद्धाणं वा, कालो सुभिक्खं दुब्भिक्खं वा, भावतो हट्ठेण वा गिलाणेण वा, एवं आलोइए विणीतस्स दिज्जती, णो अविणीतस्स, सो जथा-अणुरत्तो भत्तिगतो अमुई अणुयत्तओ विसेसंणू। उज्जुत्तमपरितंतो इच्छितमत्थं लभति साधू ॥ १ ॥ एतव्विवरीतस्स न दातव्वं, दारं ॥ केरिसके खेत्ते तप्पढमताए सामाइयं कातव्वं, तं दुविहं पण्णत्तं-पसत्थं अपसत्थं च, तत्थ अपसत्थं-भग्गघरं तणरासी० एवमादि अमणुण्णा। पसत्थं चेतितघरं चेतियरुक्खं वा, गाथा-उच्छुवणे सालिवणे पउमसरे पुप्फफलितवणसंडे। गंभीरसाणुणादे पदाहिणावत्तउदगादी ॥ १ ॥ दारं ॥ दिसाभिग्गहो- तिण्णि दिसाउ अभिगिज्झ उद्दिसितव्वं--पुव्वं वा उत्तरं वा चरिन्तियं वा, चरेंतिया जाए दिसाए तित्थगरो मण० ओहि० चोद्दस० दस० णव० जाव एगपुव्वी, जो वा जुगप्पहाणो आयरिओ जाए दिसाए। दारं ॥ कालो पडिकुट्ठेल्लयदिवसे वज्जेज्जा, अट्ठमिं च नवमिं च छट्ठिं च चउत्थिं बारसिंपि दोण्हंपि पक्खाणं, पसत्थेसु मुहुत्तादिसु, तव्विवरीते ण वट्टति, रिक्खेसु केसु ?--मिगसिर अद्दा पूसो तिण्णि य पुव्वाइं मूलमस्सेसा। हत्थो चित्ता य तथा दस विद्धिकराइं नाणस्स ॥ १ ॥ जस्स वा जत्थ अणुकूलं, विवरीतमप्पसत्थं, अहवा-संझागतं रविगतं विड्डेरं सग्गहं विलंबिं च। राहु-

प्रत सूत्रांक [१]

दीप अनुक्रम [२]

सामायिक व्याख्यायां ॥६०४॥

आचार्यादि करणं लाभहेतुः भदन्त-व्याख्या

हतं गहभिण्णं च वज्जते सत्त नक्खत्ते ॥ १ ॥ दारं ॥ गुणसंपदा णाम पुव्वं विणयो, जदि विणीतो इमे य से गुणा भवंति तो उद्दिसति, तंजथा-पियधम्मो दढधम्मो संविग्गो वज्जभीरु असढो य । खंतो दंतो दाविमादि थिरव्वत जितिंदिओ उज्जू ॥ १ ॥ असढस्स तुलसमस्स य साधुसंगहरतस्स (अममस्स) । एसो गुणसंपण्णो तव्विवरीओ असंपण्णो ॥ ४ ॥ दारं ॥ अभिव्वाहरो नाम पसत्थेसु सउणेसु अभिनिव्वाहारन्तेसु, अहवा उद्दिसंतो अभिलवति कालियसुते-सुत्तेणं अत्थेणं तदुभएणं उद्दिसामि, दिट्ठिवादे दव्वेहिं गुणेहिं पज्जवेहिं । दारं ॥

इदाणिं करणं कतिविहंति दारं, आयरियस्स चउव्विहं, तंजथा- उद्देसणाकरणं समुद्देसणाकरणं वायणाकरणं अणुण्णाकरणं, सीसेवि चउव्विहं, तंजथा- उद्दिसिज्जमाणकरणं समुद्दिस्समाणिज्जकरणं वाइज्जमाणकरणं अणुण्णविज्जमाणकरणं । दारं ॥ कहंति सामाइयस्स करणं कहं संभवति, सामाइयस्स आवरणे णाणावरणं दंसणावरणं च, तेसिं दुविहाणि फड्डगाणि- देसघातीणि य सव्वघातीणि य, सव्वघातिफड्डएहिं उदिण्णेहिं सव्वेहिं उग्घातिएहिं देसघाइफड्डएहिं अणंतेहिं उग्घाइएहिं अणंतगुणपरिवड्ढीए समए समए विसुज्झमाणो २ पढमअक्खरलाभं ककारलाभं भवति, ततो पच्छा अणंतगुणविसोहीए विसुज्झमाणो रेकारं लभति, एवं सेसक्खरेऽवि । एवं करणं सम्मत्तं ॥

'करेमि भंते ! सामाइक'मिति सीसो सामाइयं करेतुकामो गुरुं आमंतेति, भंतेत्ति 'भदि कल्याणे सौख्ये च' अहो कल्याणवंत इत्यामंत्रणं करोति, पाइतसेलीए वा भयस्यांतो गतो इति भयांतो भवतित्ति, 'भी भये' तस्स छव्विहो निक्खेवो नामादि,

॥६०४॥

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता...........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

प्रत सूत्रांक [१]

दीप अनुक्रम [२]

सामायिक व्याख्यायां ॥६०५॥

मदन्त-व्याख्या

दव्वभयं भयमोहणीयं कम्मं बद्धं न ताव उदिज्जति, अण्णे भणंति- जो जस्स दव्वस्स बीभेति सचित्तादिस्स, खेत्तभयं जंमि खेत्ते, जो वा जस्स खेत्तस्स बीभेति, जंमि वा खेत्ते भयं वण्णिज्जते, एवं कालेवि भाणितव्वं, जच्चिरं वा कालं बीभेति, भावभयं- भयमोहणिज्जेणं कम्मेणं उदिण्णेणं सत्तविहं, तंजहा- इहलोगादी, इहलोगभयं जं पुरिसो पुरिसस्स बीहेति १ परलोगभयं- सीहवग्घदेवादीणं जं बीभेति २ आदाणभयं जो आदेयस्स चोरादीणं बीभेति ३ एवं चेव अगुत्तिभयं, नगरपाकारो .आदाणभएण कीरति ४ अकस्माद्भयं जथा विज्जुमाइओ तथा मरणमिति महब्भयं 'नराणां०' वृत्तं, दोवि एक्कं ५ वेदणभयं सीतादीणं बीभेति ६असिलोगभयं-जदि एवं काहामि ता मे अयसो होहितित्ति बीभेति ७ एतस्स सत्तविहस्स अंतं गतो भदंतो। अहवा भवान्तो, सो य भवो चउव्विहो-नामादि, दव्वभवो एगभवियादी, भावभवो- चउव्विहो संसारो, जो चउगइस्स भवस्स अंतं गतो सो भवंतो, भवानामंते वर्त्तते, कथमसावंते वर्तते ?, अंत इव अंतो। सो अंतो छव्विहो, नामठवणाओ गताओ, दव्वस्स अंतो घडस्स पडस्स एवमादि, खित्तंतो जथा- तिरियलोगंतो उड्ढ०, खेत्तं वा विणट्ठं चिराणगं तथावि सो अंतो, कालंतो वासंतो जाव मुहुत्तस्स अन्तो एवमादि, भावंतो जो जस्स उदातियादिस्स भावस्स सव्वंतिमे कंडए वट्टति। अहवा भंतो सक्कएण भ्रान्तो, सो छव्विहो, दव्वभंतो जो जातो दव्वाओ भ्रांतः, न याणइ किं तं अण्णंति ?, अहवा जो जातो दव्वाओ भ्रष्टः, खेत्ताओ गामाओ नगराओ एवमादि दिसामोहेण वा, कालाओ हेमंताओ साहरिओ वा अण्णंमि काले, मूढो वा कालं न याणाति, भावभ्रान्तो दुविहो- ठाणभंतो गुणभंतो य, ठाणभंतो ईसरतलवरादिट्ठाणाओ, गुणभंतो दुविहो- अप्पसत्थो गुणभंतो णाणादिभंतो, पसत्थो अण्णाणादिभंतो ॥ सत्तभयविप्पमुक्केण अधिगारो, भयंतेणवि भवंतेणवि, अप्पसत्थगुणभंतेणं भदंतेण य। एरिसयं को भणति करोमि भंते सामाइयं?, गोतमसामी भट्टारगं ॥६०५॥

प्रत
सूत्रांक
[१]

दीप
अनुक्रम
[२]

सामायिक
व्याख्यायां

॥६०६॥

भणति, सेसगा अप्पणो आयरिए, आह शिष्यः--यदा परोक्षो गुरुस्तदा कमामंत्रयतीति, उच्यते-दुविहः सेवा-पच्चक्खा य परोक्खा य, पच्चक्खा रायादीणं, परोक्खा अण्णत्थ गतस्सवि तस्स आणं अणुपालेति, अहवा जथा विज्जा परिजविज्जइ, एवं लोगुत्तरेवि पच्चक्खे परोक्खिवि तंमि भावं निवेशयति, यथा विद्यां साधयन् पूर्वाचार्यान् मनसीकरोति, एवं अम्हं, अण्णेसिं पुण अण्णहाविय, ते आहुः--अप्पाणं चेव भणति- करेमि भंते सामाइयंति, जस्सवि जातिस्सरणं सोवि पुव्वायरियं आमंतेति ॥ भदंतो गतो ।

इदाणिं सामाइयं, तस्य प्रकृतिप्रत्ययविभागं दर्शयति- तत्थ पगती सामं समं च संमं, पच्चओ इकमिति, तत्थ प्रकृति-प्रत्ययद्वितयं सामातियस्स एगट्ठं, नामप्रकृतिप्रत्ययाभ्यां एकोऽर्थः साध्यते, अहवा सामं समं च संमं एते शब्दा इकमित्यनेन सह गता सामाइयस्स एगट्ठा भवंति, सामाइकार्थं प्रतिपादयंतीत्यर्थः, तत्थ मूलवत्थू चत्तारि विभासितव्वा । सामं चउव्विहं, णामट्ठ-वणाओ गताओ, दव्वसामं जाणि मधुरपरिणामीनि दव्वाणि, भावसामं आओवम्मेण सव्वसत्ताणं दुक्खस्स अकरणं, अकरणं नाम परिहरणं, सामेण ताव गिण्हाहि, मधुरेणेत्यर्थः, अतः सव्वसत्तेसु महुरभावत्तणं भावसामं । संमंपि चउव्विहं, दो गताणि, दव्वसंमं तुला कोकासचक्कं वा, भावसंमं जो भावो इतो ततो न पलोट्टति, रागाइहिवि आयभावाओ ण चालिज्जइ, एवं रागदो-समाध्यस्थ्यं भावसामाइयं तं । इकं चउव्विहं, दो गताणि, दव्वइकं जथा दोरे हारस्स पोयणं मणियाण वा, भावइकं भावसामादीण जो आयो तस्स पवेसणं, तत्परिणमनमित्यर्थः ।

इदाणिं सामाइयस्स एकार्थाभिधायकाः शब्दा उच्यंते, जथा- चंदो ससी सोमो उडुपती एवमादी, अभिहाणकतो अत्थवि-सेसोवि भवति, तंजथा-समता समत्त पसत्थ संति सिव हित सुहं अनिंद्य। अदुगुंछितमगरहित अणवज्जं चेव एकट्ठा

सामादि-
निकारका-
द्यन्यान्यत्वे

॥६०६॥

प्रत
सूत्रांक
[१]

दीप
अनुक्रम
[२]

सामायिक व्याख्यायां ||६०७|| कारकाद्यन्यान्यत्वे

||१० || ५६ || १०४३ || एत्थ अक्खेवाभिप्पायेण पुच्छति-को कारओ ?, उच्यते, करेंतो, कार्यं कुर्वन्नित्यर्थः, किं कज्जं ?, भण्णति, जं तु कीरति तेणं, यत् कर्त्रा निवर्त्यते, तुशब्दात्किं करणं येन कर्ता कार्यं निर्वर्तयति, यद्येवं ततः किं कारयो य करणं च होति ?, तंजथा- अण्णमण्णणं ते, चशब्दात्कर्म च, अयमभिप्रायः- जदि कारओ य कंमं च करणं च अणण्णं तो करणं ण भवति, जेण अणण्णं ते एते विभागा कहं भविस्संति ?, अतः सामाइयं जीवस्स किं एगत्ते वट्टति ?, अण्णत्ते वट्टइ ?, जइ एगत्ते तो करणं नत्थि, न हु लोणं लोणिज्जति न हु तुप्पिज्जइ घतं व तेल्लं वा । जदि अण्णं ते तेण आया सामाइयं न भवति, जथा घडकारओ घडो न भवति । अत्रोच्यते—

आया हु कारओ० || १०-५९ || १०४७ || एत्थ सामाइयकरणप्रस्तावे आत्मैव कारकः, सामाइयं कंमं, करणं च आत्मैव, णणु कहं एगो आया कारओ करणं कंमं च भविस्सति ?, उच्यते, परिणामे सति आत्मा सामाइकमेघ, तुशब्दात्करणमेव, अयमभिप्रायः-एकोऽप्यात्मा कर्तृपरिणामे सामाइकपरिणामे करणपरिणामे च सति कर्तृकर्मकरणव्यपदेसावह इति, नणु किं एकस्यापि परिणामे सति एते व्यपदेशा दृष्टाः ?, उच्यते, एगत्ते दृष्टाः, जह मुट्ठिं करेति, यथा देवदत्तः हस्तेन मुष्टिं करोति , न च देवदत्तहस्तमुष्टयो भिन्नाः, किं तु परिणामस्तथा, एवं भिगुडिं करेति रोसं करोति अप्पाणं पत्तं करेति, जथा- अप्पाणमेव दमए, अप्पा हु खलु दुद्दमो । अप्पा दंतो सुही होइ, अस्सिं लोए परत्थ य ||१|| एवं ता अण्णत्तेवि करणं दिट्ठं । पर आह-तो किं कारक- ||६०७||
कारणकंमाणं अणण्णत्तमिच्छामो ?, उच्यते, कत्थवि अण्णत्तंपि, जथा अत्थंतरे घडकरणं, घडादिकरणं अत्थंतरेपि दिट्ठं यथा कुलालश्चक्रचीवरादिना घटं करोति, एतेषां भिण्णता । णणु जदि एवं तो सामाइककरणे किमिति पिहत्तता नेष्यते ?, उच्यते-दव्व-

प्रत सूत्रांक [१]

दीप अनुक्रम [२]

सामायिक व्याख्यायां ||६०८||

सर्वपद-व्याख्या

त्थंतराभावे गुणस्स किं केण संबद्धं ?, अयमभिप्रायः-एतद्धि करणं गुणो, अपि च यदि द्रव्याद्भिण्णो गुणो नेष्यते ततः कस्य केन संबंधः स्यादिति, सामाइयंति गतं ।

इदाणिं सव्वं, सत्तविहं तं०-नामसव्वगं ठवणस० दव्वस० देसस० निरवसेस०सव्वधत्तास०भावसव्वगमिति, नामस्थापने पूर्ववत् , दव्वसव्वे चत्तारि विकप्पा, तंजथा-सकलं दव्वं देससव्वं १ असकलं दव्वं दव्वसव्वं तु २ , सकलदव्वदेसो दव्वदेससव्वं ३ असकलदव्वदेसो दव्वदेससव्वं ४ ॥ अत्र दृष्टान्तः-प्रकारकात्स्न्र्यविवक्षायां समस्तप्रकारं सकलं पृथिव्यादिद्रव्यं द्रव्यसर्वं द्रव्याकात्स्न्र्यविवक्षायां तु असमस्तप्रकारमपि पृथिवीत्वाद्यन्यतरप्रकारापन्नप्रकारापेक्षया असकलमपि पृथिव्यद्यन्यतरत् द्रव्यं द्रव्यापेक्षया द्रव्यसर्वं, एवं सकलदव्वदेसो असकलदव्वदेसो य विभासितव्वो । अण्णे पुण भणंति-दविते चतुरो भंगा-'सव्वमसव्वे य दव्वदेसे य' त्ति, एत्थ इमा भावणा- इह जं विवक्खितं दव्वं अंगुल्यादि तं परिपुण्णमणूणं सएहिं अवयवेहिं सर्वमुच्यते, सकलमित्यर्थः, एवं तस्स चेव दव्वस्स कोइ देसो स्वावयवपूर्णतया यदा सकलो विवक्ष्यते तदा देसोवि सर्व एव, उभयस्मिन् द्रव्ये तद्देसे च सर्वत्वं, तयोरेव यथास्वमंपरिपूर्णतायामभिसंबन्धः, ततो चतुर्भंगी-दव्वं सव्वं, दव्वमसव्वं, देसो सव्वो, देसो असव्वो, एत्थ यथाक्रममुदाहरणं-संपुण्णं अंगुलीदव्वं सर्वं तदेव देशोनं दव्वमसव्वं, तथा देसो सव्वं तं संपुण्णं देससव्वं, असंपुण्णं अदेससव्वं । आदेससव्वगं जथा सव्वो गामो आगतो, सव्वो कूरो जिमितो, सव्वभवासिद्धिया सिज्झिहिंति, आदेसो नाम उवयारो ववहारो, ||६०८||
सो य बहुतरेसु पहाणेसु वा आदिस्सति देसेवि । निरवसेससव्वगं दुविहं-सव्वापरिसेससव्वगं च तद्देसापरिसेससव्वगं च,सव्वापरिसेससव्वगं जथा सव्वदेवाऽणिमिसणयणा,तद्देसापरिसेसव्वगं सव्वे असुरकुमारा काला बिंबोट्ठा,तेषामेव देवानां देसो विभागस्तद्देशः

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता..........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्ति: एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णि:-1

प्रत
सूत्रांक
[१]

दीप
अनुक्रम
[२]

सामायिक व्याख्यायां

॥६०९॥

अवद्ययोग-पद व्याख्या

सव्वधत्तासव्वगं नो सव्वधत्तासति पडोयारो आहितात्ति वदेज्जा,ता सव्वधत्ता दुपडोयारो आहितात्ति वदेज्जा, तंजथा-जीवा य अजीवा य, जम्हा जं किंचि धरति तं सव्वं जीवा अजीवा य सव्वं धरेतीति सव्वधत्ता। दव्वसव्वगस्स सव्वधत्तासव्वगस्स य को विसेसो ?, सव्वधत्तेहिं सव्वं संगहितं, दव्वसव्वगेण घडपडादीया सव्वदव्वा चेव, भावसव्वगसव्वो उदइभावो सुभो असुभो य उदयलक्खणो, उवसमिओ सव्वो सुभो, उवसमलक्खणो उवसमिओ, सव्वो सुभो उवसमलक्खणो, खाइओ सव्वो सुभो अणुप्पत्तिलक्खणो, खाइओवसमिओ सव्वो सुभो असुभो य देसविसुद्धिलक्खणो, पारिणामिओ सव्वो सुभो असुभो य परिणामलक्खणो ॥ एत्थ निरवसेससव्वगेण अहिगारो, अण्णेहिवि जहसंभवं विभासितव्वो। इदाणिं अवज्जंति, तत्थ गाधा—

कम्ममवज्जं जं गरहितं च लोहादिणो व चत्तारि ॥ इति, एत्थं कम्मबंधो सव्वं वा पगीतिट्ठितिअणुभागपदेसकंमं तं अवज्जं, उक्तं च-"**पावे वज्जे वयरे पंके पणये खुहे दुहमसाते। संगे धुण्णे य रए कंमे कलुसे य एगट्ठा ॥१॥**" अहवा जे गरहितं वत्थु, गरहितंति वा अकथ्यंति वा अविविचंति वा परिहरणीयंति वा एगट्ठा, अहवा कोहादिणो चत्तारि कसाया, एतेहिं सह यो योगः वच्छमाणलक्खणः 'पच्चक्खाणं हवति तस्स' त्ति अयमभिप्रायो- यो हि कम्मसहगतो योगो तस्सवि निरवसेसस्स पच्चक्खाणं भवति अयोगिं पडुच्च, यतो योऽविय कसायसहगतो तस्सवि पच्चक्खाणं भवति, अहक्खायचरित्तं पडुच्च यो पुण गरहितसहगतो योगो तस्स निरवसेसस्स पच्चक्खाणं भवति, सामाइयसंजताओ जाव अहक्खायचरित्ता इति ॥

इदाणिं जोगोत्ति, युज्यत इति योगः, दव्वजोगो तिण्हं चउण्हं वा जोगाणं जोगो। अहवा मणवइकायपायोग्गाणि दव्वाणि भावयोगो-"**योगो विरियं थामो उच्छाह परक्कमो तहा चेट्ठा। सत्ती सामत्थंति य योगस्स हवंति पज्जाया ॥१॥**"

प्रत सूत्रांक [१]

दीप अनुक्रम [२]

सामायिक व्याख्यायां ॥६१०॥

सो य संमत्तादिअणुगतो पसत्थो , मिच्छत्तअण्णाणअविरति० अपसत्थो ।

इदाणिं पच्चक्खाणं , तं छव्विहं, दो गताणि, दव्वपच्चक्खाणं रयहरणेणं०अणुवउत्तो वा, जो वा सचित्तादिदव्वं पच्चक्खाति निण्हगादीणं वा, एवमादि दव्वपच्चक्खाणं । खेत्तपच्चक्खाणं खेत्ते पच्चक्खाणं निव्विसयादिगमणं एवमादि । अदिच्छपच्चक्खाणं अतित्थ० बंभणाण पडिसेहो न देमित्ति । भावपच्चक्खाणं दुविहं-सुतपच्चक्खाणं च णोसुत्तपच्चक्खाणं च, सुतपच्चक्खाणं दुविहं-पुव्वसुतपच्चक्खाणं णोपुव्वसुतपच्चक्खाणं च, पुव्वसुतपच्चक्खाणं पुव्वं, णोपुव्वसुतपच्चक्खाणं अणेगविहं आतुरपच्चक्खाणादीयं, नोसुतपच्चक्खाणं दुविहं-मूलगुणपच्चक्खाणं उत्तरगुणपच्चक्खाणं, मूलगुणा साधूण सावगाण य भाणितव्वा, उत्तरगुणा विभासितव्वा । दव्वभावपच्चक्खाणे उदाहरणं रायधूता, वरिसं मंसं न खाइया, पारणगे अणेगाणं जीवाणं घातो कतो, साहूहिं बोहिता पव्वइया, पुव्वं दव्वपच्चक्खाणं पच्छा तीसे भावपच्चक्खाणं, भावपच्चक्खाणस्स अत्थो पडिनियत्तामि-अकरणताए अब्भुट्ठेमित्ति एवमादि, अतो उवसंतो पच्चक्खाणं भवतित्ति। पच्चक्खाणंति गतं । इदाणिं जावज्जीवाएत्ति, जावदवधारणंमी जीवणमवि पाणधारणे भणितं । अप्पाण धारणाओ पावनिव्वत्ती इहं अत्थो ॥ १०५४ ॥

तं जीवितं दसविहं, तंजथा-नामजीवितं एवं ठवणा० दव्व० ओह० भव० तब्भव० भोग० संजम० असंजमजीवितं जसकित्तीजीवितं, दो गताणि, दव्वजीवितं तिविहं- जेण जस्स सचित्तादिणा जीतमायत्तं, सचित्तं जथा-मम पुत्तेण जीतमायत्तं, आचित्तेण हिरण्णादिणा जीतमातत्तं, मीसेण सचामरआसादिणा । अहवा इमं तिविहं-दुपदस्स चतुप्पदस्स वा अपदस्स वा जं जीवितं, अहवा जीवपायोग्गा दव्वा दव्वजीवितं । ओघजीवितं नाम सव्वे संसारत्था जीवा आउसदव्वजीवियाए जीवंति । भवजीवितं चतु-

प्रत्याख्यान-जीवित-पद व्याख्या ॥६१०॥

प्रत
सूत्रांक
[१]

दीप
अनुक्रम
[२]

सामायिक व्याख्यायां ॥६११॥

प्रत्या-ख्यान भंगाः

व्विहं नेरइयादीणं । तब्भवजीवियं जो तत्थेव मतो आयाति तत्थ जं जीवितं तब्भवजीवितं, तिरियणराणं जस्स जति भवग्गहणाणि । भोगजीवितं चक्कीण बलदेववासुदेवाणं । संजमजीवितं संजताणं तद्धम्मजीवियं । असंजमजीवियं असंजताणं अधंमेण । जसो कीत्ति, जहा अज्जवि महावीरवद्धमाणसामिस्स भगवतो तेल्लोकेऽवि जसो जरति, तथा अण्णेसिंपि-भद्दं सरस्सतीए सत्तस्सरवासवयणवसहीए । जीए गुणेहिं कइवरा मतावि माणेहिं जीवंति ॥ १ ॥ संजमजीविएणं मणूसभवजीवितेण य अधिगारो ।

इदाणिं तिविहेणंति वंणिज्जाति, एतेण तिविहं तिविधेण इच्चादिसुत्तं फुसितं, एत्थ य सीयालं भंगसतं भवति जोगतियकरणतियकालतिएहिं, तंजथा-तिविहं जोगं तिविहेणं करणेण मणेणं वायाए काएणं ण करेमि ण कारवेमि करेंतंपि अण्णं ण समणुजाणामि इत्यादि । अतीतकाले वट्टमाणे एस्से य काले जथासंभवसायोज्जं-सीयालं भंगसतं पच्चक्खाणंमि जस्स उवलद्धं । सो किल एत्थ उ कुसलो सेसा सव्वे अकुसला उ ॥१॥ सीयालं भंगसतं पच्चक्खाणस्स भेदपरिमाणं । तं च विधिणा इमेणं भावेतव्वं पयत्तेणं ॥२॥ तिण्णि तिया तिण्णि दुया तिण्णिक्केक्का य होंति जोएसु । तिदुएगं तिदुएगं तिदुएक्कं चेव करणाइं॥३॥ एते खलु जोगा ३३३ २२२ १११ करणा ३२१ ३२१ ३२१ फलं १३३ ३९९ ३९९ एत्थ भावणा-न करेति न कारवेति करेंतंपि अण्णं ण समणुजाणाति मणेणं वायाए काएणं, एस पढमो भंगो साधूणं, अहवा कंमि विसए केसिंपि सावगाणवि, चो० न करेइच्चादितिगं गहिणो कह होति देसविरतस्स ?। आ०-भणनति विसयस्स बहिं पडिसेहो अणुमतीएवि ॥ १ ॥ केई भणंति गिहिणो तिविहं तिविहेण णत्थि संवरणं । तं ण जतो निद्दिट्ठं पण्णत्तीए विसेसेउं ॥ २ ॥ तो किह निज्जुत्तीएऽणुमतिनिसेहो ? विसेसविसयंमी । सामण्णेणं नत्थि हु तिविहं तिविहेण को दोसो? ॥ ३ ॥ ॥६११॥

प्रत
सूत्रांक
[१]

दीप
अनुक्रम
[२]

सामायिक व्याख्यायां ॥६१२॥

पुत्ताइसंतइणिमित्तमेत्तमेगादर्सि पवण्णस्स। जंपंति केइ गिहिणो दिक्खाभिमुहस्स तिविहेणं ॥ ४ ॥ आह कहं पुण मणसा करणं कारावणं अणुमती य। जह वतितणुजोगेहिं करणादी तह भवे मणसा ॥ ५ ॥ तयहीणत्ता वइतणुकरणाईणं तु अहव मणकरणं। सावज्जजोगमणणं पण्णत्तं वीतरागेहिं ॥ ६ ॥ कारवणं पुण मणसा चिंतेति करेतु एस सावज्जं। चिंतेती य कते पुण सुट्ठु कतं अणुमती एसा ॥७॥ इदाणिं बितियभेदो--न करेति न कारवेति करेंतंपि अण्णं ण समणुजाणति मणेणं वायाए, एस एक्को १, तथा मणेणं काएणं एस बितिओ २ तथा वायाए काएणं एस ततिओ ३, बितिओ मूलभेदो गतो। इदाणिं ततिओ-न करेति न कारवेति करेंतंपि अण्णं ण समणुजाणति मणेणं १ वायाए बितिओ २ काएण ततिओ ३ तितएवि मूलभेदो गतो। इदाणिं चउत्थो-न करेति न कारवेति मणेणं वायाए काएणं एक्को, न करेति करेंतं ण समणुजाणति बितिओ २ न कारवेति करेंतं नाणुजाणति ततिओ ३, एस चउत्थो मूलभेदो। इदाणिं पंचमो-न करेति न कारवेति मणेणं वायाए एस एक्को, न करेति करेंतं नाणुजाणति एस बितिओ, न कारवेति करेंतं णाणुजाणए एस ततिओ, एवं एते तिण्णि भंगा मणेणं वायाए लद्धा, अण्णेवि तिण्णि मणेणं काएण एमेव लब्भति, तथाऽवरेवि वायाए काएण य लब्भंति तिण्णि, एवमेव गते सव्वे णव, एवं पंचमोप्युक्तो मूलभेद इति। इदाणिं छट्ठो, न करेति न कारवेति मणेण एस एक्को, तहय न करेति करेंतं णाणुजाणति मणेणं एस बितिओ, न कारवेति करेंतं णाणुजाणति मनसैव तृतीयः, एवं वायाए, काएणवि तिण्णिवि भंगा लब्भंति, उक्तः षष्ठो मूलभेदः। अधुना सप्तमोऽभिधीयत इति, न करेति मणेणं वायाए काएण य एक्को, एवं न कारवेति मणादीहिं एस बितिओ, करंतं णाणुजाणतित्ति ततिओ, सप्तमोऽप्युक्तो मूलभेद इति। इदानीमष्टमः-न करेति मणेण वायाए

प्रत्याख्यान भगाः ॥६१२॥

प्रत
सूत्रांक
[१]

दीप
अनुक्रम
[२]

सामायिक व्याख्यायां ॥६१३॥

प्रत्याख्यान भंगाः

य एको, तथा मणेण काएण य एस बितिओ, तथा वायाए काएण य एस ततिओ, एवं न कारवेतिवि एत्थवि तिण्णि भंगा एवमेव लब्भंति, करेंतं णाणुजाणाति तत्थवि तिण्णि, एष उक्तोऽष्टमः इदाणिं नवमः–न करेति मणेण एको, न कारवेति बितिओ, करेंतं णाणुजाणति एस ततिओ, एवं वायाएवि तियं, काएणवि होति ततियमेव, नवमोऽप्युक्तः ॥ इदाणिमागतगुणना क्रियते- लद्धफलमाणमेतं भंगा उ भवंति अउणपण्णासं। तीताणागतसंपातिगुणितं कालेण होति इमं ॥ १ ॥ सीतालं भंगसतं, कहं ? कालतिएण होति गुणणाओ । तीतस्स पडिक्कमणं पच्चुप्पण्णस्स संवरणं ॥२॥ पच्चक्खाणं च तहा होइ य एस्सस्स एव गुणणाओ। कालतिएणं भणितं जिणगणहरवायएहिंति॥३॥एत्थ मणो नाम दव्वमणो भावमणो य, दव्वमणो मणपाउग्गाणि दव्वाणि, भावमणो मण्णिज्जमाणाणि, वईवि दुविहा, दव्वे वइपाउग्गाणि दव्वाणि मिच्छादिट्ठिस्स वा, भाववई ताए निसिरिज्जमाणाणि, दव्वकायो कायग्गहणपायोग्गाणि, निकाइज्जमाणाणि भावकायो, एवमादि विभासिज्जा।

एत्थ य 'करेमि भंते! सामाइयं'ति पंच समितीओ गहिताओ, सव्वं सावज्जं इच्चादिणा तिन्नि गुत्तीओ गहिताओ। समितीओ पवत्तणे निग्गहे गुत्तीओ, समिओ नियमा गुत्तो गुत्तो समियत्तणंमि भइयव्वो। कुसलवइमुदीरंतो जं वइगुत्तोवि समितोवि॥१॥ एताओ अट्ठ पवयणमाताओ, जहिं सामाइयं चोद्दस य पुव्वाणि माताणि, माउगाओ वत्ति मूलंति भणितं होति ॥

सुत्तफासियनिज्जुत्तिगाथा गता एवं ॥ एत्थ चोदगो सुत्तपदं अक्खिपति— ॥६१३॥

तिविधेणंति न जुत्तं० ॥ १०-७६ ॥१०५८॥ आह-तिविधेणंति पदं न युज्यत इतिकातुं, जतो मणेणं वायाए काएणं एवं प्रतिपदविधिना त्रैविध्यं गतमेव भवति, गतार्थत्वात् त्रिविधेनेति ग्रहणं न कर्तव्यं, उच्यते-अत्थविकप्पणताए गुणभावणयत्ति को

प्रत सूत्रांक [१]

दीप अनुक्रम [२]

सामायिक व्याख्यायां ॥६१४॥

शंका-समाधाने

दोसो?, अयमर्थः-अत्थस्स मणवयणकायलक्खणस्स विकप्पणत्थं-भेदकहणत्थं, जथा किर तिविधेण मणेण तिविधेण वयसा तिविधेण काएण करणकारणअणुमतिपवत्तेण, अण्णहा अण्णथा संभावणा स्याद्, यथा मणेणं वायाए काएणं यथासंख्यं न करेमि न कारयामि करेंतंपि अण्णं न समणुजाणामित्ति, अहवा मणेणं वायाए काएणंति एतेसिं अत्थविकप्पणसंगहत्थं, संगहभेदेहिं सुत्तभणणंतिकातुं, किं च- गुणभावना पुनः पुनरभिधानाद्भवतीति न दोष इत्यादि भाष्यं ॥ अपर आह-जावज्जीवाएत्ति पदं न करेमीत्यस्य पूर्वसंबद्धमेव किमिति न कृतं येन व्यवहितसंबंधमिति, अन्यपदैरपि संबन्धेऽस्येष्यत इति, किं च- ववहितमपि अर्थसंबंधेन संबंधयित्वा व्याख्येयमिति ज्ञापनार्थं, यतो अनन्तगमपज्जयं सुत्तं गमनिका अपि व्याख्यानांगमिति च संदर्शितं भवतीत्यादि भाष्यं । तस्स पडिक्कमामि तस्स अतीतस्स सावज्जजोगस्स अण्णाणताए असवणताए एवमादिणा कतस्स प्रतीपं क्रमणं निवर्तनमित्यर्थः, तं चतुर्विधं, दव्वपडिकमणं यो यस्य दव्वस्स पडिकमति अपत्थस्स य नियत्तति दव्वभूतो वा यं वा निण्हगादी पडिकमेतूण वा पुणो पुणो तं चेव करेति, एयं तं दव्वपडिकमणं , उक्तं च-" जं दुकडंति मिच्छा तं चेव निसेवते पुणो पावं । पच्चक्खमुसावातो मायानियडीपसंगो य ॥ ७ ॥ २३ (६८५ ॥)" एत्थ दव्वपडिकमणे कुंभकारमिच्छादुकडं उदाहरणं-एगस्स कुंभकारस्स कुडीए साधुणो ठिता, तत्थेगो चेल्लगो तस्स कुंभकारस्स कोलालाणि अंगुलधणुभएण पाहाणएहिं विंधति, कुंभकारेण पडियग्गितुं दिट्ठो, भणितो य-कीस मे कोलालाणि काणेसि ?, खुड्डओ भणति-मिच्छादुकडंति, सो पुणो पुणो विंधेतूण मिच्छादुकडं देति, पच्छा ॥६१४॥ कुंभकारेण तस्स खुड्डगस्स कण्णाउडओ दिण्णो, सो भणति-दुक्खावितोऽहं, कुंभकारो भणति-मिच्छादुकडं, एवं सो पुणो पुणो कण्णामोडयं दातूण मिच्छादुकडं करेति, पच्छा चेल्लओ भणति-केरिसं ते मिच्छादुकडं?, कुंभकारो भणति- तुज्झवि एरिसं चेव मिच्छा

प्रत सूत्रांक [१]

दीप अनुक्रम [२]

सामायिक व्याख्यायां

॥६१५॥

दुक्कडंति, पच्छा ठितो विंधितव्वस्स। भावपडिक्कमणं समद्दिट्ठी तच्चित्तो तम्मणो समाहितप्पा जो पडिक्कमति, उक्तं च-"जतिय पडिक्कमि- (द्रव्यभाव-
तिव्वं अवस्स कातूण पावयं कंमं। तं चेव न कातव्वं तो होइ पए पडिक्कंतो ॥ १ ॥" तत्थ मिगावती उदाहरणं, तं च इमं-भगवं (निन्दादि)
वद्धमाणसामी कोसंबीए समोसरितो, तत्थ चंदसूरा भगवंतं वंदगा सविमाणा उत्तिण्णा, तत्थ मिगावती अज्जा उदयणमाता
दिवसोत्तिकातुं चिरं ठिता, सेसाओ साधुणीओ तित्थगरं वंदितूण सनिलयं गताओ, चंदसूरावि तित्थगरं वंदितूण पडिगता, सिग्घ-
मेव वियालीभूतं, संभंता गता अज्जचंदणासकासं, ताओ य ताव पडिक्कंताओ, मिगावती आलोइउं पवत्ता, अज्जचंदणाए भण्णाति-
कीस अज्ज चिरं ठितासि ?, न जुत्तं नाम उत्तमकुलप्पसूताए एगागिणीए चिरं अच्छितुंति, सा सब्भावेण मिच्छादुक्कडंति भण-
माणी अज्जचंदणाए पाएसु पडिता, अज्जचंदणा य ताए वेलाए संथारं गता, ताए निद्दा आगता, पसुत्ता, मिगावतीएवि तिव्व-
संवेगमावण्णाए पादे पडिताए चेव केवलनाणं समुप्पण्णं। सप्पो य तेणंतेणमुवागतो, अज्जचंदणाए य संथारगाओ हत्थो लंबति,
मिगावतीए मा खज्जिहितित्ति सो हत्थो संथारगं चडावितो, सा विबुद्धा भणति-किमेतंति ?, अज्जवि तुमं अच्छसित्ति मिच्छादु-
क्कडं, निद्दापमाएणं न उट्ठवितासि, मिगावती भणति- एस सप्पो मा ते खाहितित्ति हत्थो चडावितो, सा भणति- कहिं सो ?,
सा दाएति, अज्जचंदणा अपेच्छमाणी भणति- अज्जे! किं ते अतिसतो ?, सा भणति- आमंति, किं छउमत्थिओ केवलितोत्ति ?,
भणति-केवलितो, पच्छा चंदणा पाएसु पडिता भणति- मिच्छादुक्कडं केवली आसाइतोत्ति, तीए केवलनाणं, एतं भावपडि- ॥६१५॥
क्कमणं ॥ इदाणिं णिंदा आत्मसंतापे, निंदा चतुव्विहा, नामनिंदा ४, दव्वनिंदा जो दव्वनिमित्तं निंदति, न पुण धम्मनिमित्तं,
निंदित्ता वा भुज्जो भुज्जो आसेवति, दव्वनिंदाए चित्तगरदारिया उदाहरणं, जथा-पडिक्कमणे 'पडिक्कमणा पडियरण' (१२४९) एतीए

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलिता..........आगमसूत्र - [४०], मूलसूत्र - [०१] "आवश्यक" निर्युक्तिः एवं जिनभद्रगणि-रचिता चूर्णिः-1

प्रत
सूत्रांक
[१]

दीप
अनुक्रम
[२]

सामायिक व्याख्यायां ||६१६||

गाथाए नियत्तिदारे, भावनिंदा 'हा दुट्ठु कतं हा दुट्ठु कारितं दुट्ठु अणुमतं वत्ति । अंतो अंतो डज्झति पच्छाता-वेण निंदंतो ॥१॥ गरहा प्रकाश्ये, परपागडीकरणं, सा चउव्विहा, दव्वभूता परपच्चया वा आलोएति गरहति, जथा-आणंदपुरे मरुओ ण्हुसाए समं संवासं कातूण उवज्झायस्स कहेति, जथा-सुविणए ण्हुसाए समं संवासं गतोमित्ति, भावगरिहा-गंतूण गुरुस-मीवं कातूण य अंजलिं विणयमूलं । जह अप्पणा तह परे जाणवणा एस गरहा उ॥१॥ भावगरहाए साधू उदाहारणं । द्रव्यभाव-व्युत्सर्गौ नयाश्च

'अत सातत्यगमने' अततीति आत्मा, तं वोसिरामित्ति, दव्वविउस्सग्गो गणउवधिसरीरभत्तपाणाण विउस्सग्गो, जो वा धम्मा-णुट्ठाणपवत्तो काउस्सग्गादिट्ठितो अट्टवसट्टो तस्सवि दव्वविउस्सग्गो, अणुवउत्तो वा, तत्थेव उदाहरणं पसण्णचंदो, भावविउ-स्सग्गो मिच्छत्तअन्नाणअविरतीणं, अहवा कसायसंसारकंमाण वा विउस्सग्गो, तत्थ पडियागतो पसण्णचंदो उदाहरणं भवति-जथा अणुभूतो वक्कलचीरिकट्ठाणगे ॥

आह—किमिति सामाइककरणाभ्युपगमं पूर्वं दर्शयति पच्छा सावज्जजोगवेरमणं ?, भण्णति—यतः सामायिकात्मैव सन् सावज्जजोगविरतो तिविहं तिविहेण वोसिरिय निपावो भवति, न पुण सामाइयरहितो । एवं एसो अणुगमो परिसमत्तो । नया इच्छितव्वा, तत्थ नेगमादीया नया सत्त, तेसिं विभासा कातव्वा जहा हेट्ठा, इमं सामण्णलक्खणं--सामान्यं प्रविभागः प्रत्युत्पन्नं यथा वचः शब्दः । शब्दार्थं च वचः (खलु) प्रत्येकं संग्रहादीनाम् ॥ १ ॥ एवं सव्वे नया परूवेऊण तो सामाइयस्स एगमेक-पदं नएहिं सत्तहिं मग्गितव्वं, न केवलं सामाइयस्स, सव्वज्झयणाण सुतक्खंधाणं च । एत्थ दारे णयमग्गणा कातव्वा । अहवा ||६१६||
ते सव्वेवि दोसु समोयरंति, विज्जानये चरणणए य, तत्थ णाणणयो--

प्रत सूत्रांक [१]

दीप अनुक्रम [२]

सामायिक व्याख्यायां ॥६१७॥

णायम्मि गिण्हितव्वे अगेण्हियव्वंमि चेव अत्थंमि। जतियव्वमेव इति जो उवएसो सो नयो नामं॥१०-८०॥१०६५॥
करणनयो-सव्वेसिंपि नयाणं बहुविहवत्तव्वयं निसामेत्ता। तं सव्वनयविसुद्धं जं चरणगुणट्ठितो साधू॥१०॥८३॥१०६६॥
एवं जथा सामाइयं विभागेण य ओघेण भणितं एवं सव्वज्झयणा सट्ठाणे पत्तेयं पत्तेयं।॥ इति सामाइयनिज्जुत्ती सम्मत्ता॥

द्रव्यभाव-व्युत्सर्गौ नयाश्च

इति श्रीजिनदासगणिमहत्तरकृतायामावश्यकचूर्णौ सामायिकचूर्णिः समाप्ता

॥ समाप्तश्च पूर्वभागः ॥

॥६१७॥

मुनिश्री दीपरत्नसागरेण पुन: संपादित: (आगमसूत्र ४०)

"आवश्यक-चूर्णि: [भाग-१]" परिसमाप्ता:

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य आनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरूभ्यो नम:

40

पूज्य आगमोध्धारक आचार्य श्री सागरानंदसूरीश्वरेण संशोधित: संपादितश्च

"आवश्यक मूलसूत्र" [निर्युक्ति एवं जिनदासगणि-रचिता चूर्णि: (भाग-१)]

(किंचित् वैशिष्ठ्यं समर्पितेन सह)

मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलिता

"आवश्यक" निर्युक्ति एवं चूर्णि: नामेण

परिसमाप्ता:

Remember it's a Net Publications of 'jain_e_library's'